

# VĀNMA YĀRNAVAH

*by*

MAHĀMAHOPĀḌHYĀYA PĀNDEYA RĀMĀVATĀR SARMĀ

VARANASI (I d )

JNANAMANDAL LIMITED

ज्ञानमण्डल ग्रन्थालय १ ईश्वर ग्रन्थ

श्रीविश्वविद्यापराभिध  
**वाङ्मयार्णव**

महामहोपाध्यायपाण्डेयश्रीरामाग्रतारशमिरचित



वाराणसी  
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मू य रूप्यकशतकम्—१ )

प्रथम सस्वरणम् सवत् २ २

प्रकाशक शानमण्डल लिमिटेड कबीरचौरा वाराणसी

मद्रक ओम्प्रकाश कपूर शानमण्डल लिमिटेड वाराणसी—६३ २ २१

## प्रकाशकीय वक्तव्य

सन १९५९ म ज्ञानमण्डल लिमिटेडके प्रबन्धकारी सचालक श्री सत्यद्रकुमारजी गुप्तन मुझसे कहा कि सुना है कि महामहोपाध्याय पाण्डय रामावतार शर्माका बनाया हुआ कोई सस्कृत कोश अभीतक अप्रकाशित पडा है, यदि वह मिल तो आप उसे अपन यहाँसे प्रकाशित कराइय । कुछ दिनोके बाद पटनाम म महामहोपाध्यायजीके सुपुत्र हि दी जगत्के लक्षप्रति आलोचक और निबन्धकार विद्वद्वर आचार्य नलिनविलोचन शर्मासे मिला और उक्त ग्रंथ प्रकाशित करनकी इच्छा प्रकट की । आचार्य नलिनजी मेरे अभिन्न मित्र थ । उन्होन मेरी प्रार्थना स्वीकार करते हुए कहा कि यदि ज्ञानमण्डलसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो तो मझ अपार हर्ष होगा । क्योंकि पिताजीन एक बार मझसे कहा था कि यह सस्कृतका बाडमयाणव नामक विश्वकोश स्वनामधन्य स्वर्गीय श्री शिवप्रसादजी गप्त (ज्ञानमण्डल लिमिटेडके संस्थापक) के आग्रहसे तयार किया गया है । बिहार सरकारन इसे प्रकाशित करनका निश्चय किया है और इसके प्रकाशनका भार मिथिला सस्कृत प्रतिष्ठान दरभंगाको सौपा गया है । किंतु कई वष बीत गय अभी उक्त ग्रन्थम हाथ नही लगाया गया । मैं तो अब निराश हो गया हू ।

सन १९६ में जब म फिर पटना गया तो श्री नलिनजीन जिद बधी हुई पाण्डलिपि दिख लायी और कहा कि इसम इतना अधिक गिचपिच लिखा गया है कि इससे कम्पोज कराना असम्भव है । म अपनी देख रेखम इसकी सुपाठ्य प्रतिलिपि कराकर और उसका संशोधन करके आपके पास भज दूंगा । इस काममें एक वष अवश्य लगगा ।

म सन्तुष्ट होकर काशी वापस आया । श्री नलिनजीन अपन वचनके अनुसार अपन विश्वासी शिष्य श्री रजनजीसे प्रतिलिपि कराना शुरू करा दिया । किन्तु उसके कुछ ही दिन बाद श्री नलिनजीका १२ सितम्बर १९६१ ई में निधन हो गया । उनके निधनका समाचार पाकर मझ बहुत दुःख हुआ और मनम निराशा हुई कि अब उक्त पाण्डलिपि प्रकाशनाथ शायद ही मिल । किन्तु पटनाम जब म श्री नलिनजीकी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती कुमुद शर्मासे मिला तो उन्होन कहा कि आप श्री रजनजीसे मिलकर प्रतिलिपिके साथ मूल प्रति ल और उसे प्रकाशित करानेका प्रबन्ध करें । यह सुनकर मझ सन्तोष हुआ । श्री रजनजीन अस्वस्थ रहनपर भी आठ नौ महीनम प्रतिलिपि तैयार करके मुझ सौंप दी ।

मूल पाण्डलिपि सहित प्रतिलिपि तो मुझे प्राप्त हो गयी किन्तु श्री नलिनजीके न रहनसे म विषम स्थितिम पड गया । यह प्रतिलिपि किससे शुद्ध करायी जाय यह एक भारी समस्या उपस्थित हो गयी । क्योंकि पाण्डलिपि ऐसी है जिसे पढ़नम यत्रतत्र भूल होनकी पूरी सम्भावना है । दूसरे नलिनजीन यह कहा था कि पाण्डलिपिके अनुसार ही ग्रन्थ छपना चाहिय । बहुत सोच



समझकर यह काय डॉ. रामचन्द्र पाण्डेय (प्रधानाचार्य सस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय) को सौंपा गया। श्री पाण्डेयजीन बड़ परिश्रमसे लगभग एक वर्षम प्रतिलिपिका सशोधन मूल पाण्डलिपिसे मिलाकर किया किन्तु बहुतसे स्थलोपर सदिग्धामक चिह्न लगाकर छे दिया। इसके बाद पण्डित राधारमण पाण्डेय आदि तीन चार अधिकारी विद्वानाको दिखलाया। इसस बहुतसे सदिग्धामक पाठ तो मूल प्रतिके अनुसार ही ठीक सिद्ध हुए फिर भी कुछ स्थल शेष रह गये। इसी प्रकार ग्रन्थके प्रूफ सशोधनम भी बड़ी कठिनाइयोका सामना करना पड़ा। किसी शब्दको कुछ विद्वान तो कहते थे कि अशुद्ध है किन्तु उसे अय विद्वान् शुद्ध सिद्ध कर देते थे। इस ग्रन्थके प्रूफ रीडर पोष्टाचार्य प. गोमतीप्रसाद मिश्रस काशीके मानिंद विद्वान् स्वामी महेश्वरानन्दजी (पूर्वनाम श्री महादेव शास्त्री) न कहा था कि यह ग्रन्थ बहुत बड़ विद्वान्का लिखा हुआ है तुम कहीं भी अपना पाण्डेय न दिखलाना नहीं तो अथका अनर्थ हो जायगा। अस्तु इस प्रकार किसी किसी फामका प्रफ १ १२ दिन विद्वानोके ही पास घूमता रह जाता था उसके बाद निष्कर्ष पर पहुँचनकी नौबत आती थी। यही कारण है कि प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशित करनेम कम्पनातीत व्यय और समय लगा। हृष है कि ग्रन्थ तयार होकर विद्वज्जनाके समक्ष हम उपस्थित कर रह ह।

पाण्डलिपिमें ग्रीक लैटिन जमन तथा फ्रचके बहुतसे शब्द ह जो नहीं दिय जा सके। बहुत प्रयत्न करनेपर भी उक्त भाषाओंके ज्ञाता हमें नहीं मिल। ऐसी दशाम उह छोड़ देना ही उत्तम समझा गया। क्योंकि एन की जगह य और यू के स्थानपर एन पड़ जानपर भारी अनर्थ हो जाता। अशुद्ध छापनकी अपेक्षा उसे न छापना ही श्रयस्कर प्रतीत हुआ। इसी प्रकार ग्रन्थकारन आरम्भम चित्र देनका उल्लख किया है और वे चित्र पाण्डलिपिम बन भी ह किन्तु कई अनिवाय कारणोसे व चित्र नहीं दिय जा सके। जो हो ग्रन्थ प्रकाशित हो गया इतनसे ही हम परम सन्तोष है। विद्वानोका मत है कि यह ग्रन्थ सस्कृत वाङ्मयका एक अनूय रत्न है। इसम बहुतसे शब्द और शब्दाद्य ऐसे ह जो अय किसी भी कोशम नहीं मिलत। भारतके प्रथम राष्ट्रपति डा. राज ब्रह्मसाद इस महाग्रन्थको प्रकाशित करानके लिए बहुत चिन्तित रहा करते थे। उह भय था कि कहीं इस ग्रन्थकी पाण्डलिपि इसी तरह नष्ट न हो जाय। खब है कि वह इसका प्रकाशित रूप नहीं देख सके। हम हर्ष है कि उनके सामन इस ग्रन्थका प्रकाशन आरम्भ हो गया था और इसकी सूचना उन्हें दे दी गयी थी।

अन्तमें हम डा. रामचन्द्र पाण्डेयके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते ह जिन्होने आद्योपान्त प्रतिलिपिका सशोधन किया। प. गोमतीप्रसाद मिश्र प. राधारमण पाण्डेय तथा श्रीकृष्ण पन्तन प्रूफ सशोधन तथा अनक्रमणिका बनानका काय सम्पन्न किया है एतदथ हम उक्त तीनों विद्वानाके अनुगृहीत है। काशीके मानिंद विद्वान् स्वामी महेश्वरानन्दजी (पूर्वनाम प. महादेव शास्त्री) ने ग्रन्थके थोड़ेसे अशका शुद्धिपत्र तयार करनकी कृपा की है। स्वामीजीन कहा कि शर्माजी तो मेरे गुस्से थे। अतः मैं इस ग्रन्थका सशोधन यथावकाश कर दूँगा किन्तु वह द्वितीय संस्करणमे काम आ सकेगा। क्योंकि इस कार्यमें पर्याप्त समय लगगा। ग्रन्थके एक एक शब्दपर गम्भीर बिचार करना पड़ता है। स्वामीजीकी इस महती कृपाके लिए हम किन शब्दोंमें उनके प्रति आभार प्रदर्शित कर समझम नहीं आता। शुद्धि पत्रसे पाठकोको मालम हो जायगा कि इस ग्रन्थम किस तरहकी

टियाँ अधिक रह गयी ह । आचाय हजारीप्रसाद द्विवेदीके भी हम चिर श्रुणी ह जिहोन अपन  
यस्त जीवनम महीनो परिश्रम करके सारगर्भित भूमिका लिखी है ।

हम ग्रन्थकारकी पुत्रवध (आचाय नलिविलोचन शर्माकी धर्मपत्नी) श्रीमती कुमद शर्माको  
भी धन्यवाद दिय बिना नहीं रह सकते जिहोन बड़ी श्रद्धा भक्तिसे प्रेरित होकर परिश्रम और  
लगनके साथ ग्रन्थकारकी जीवनी लिखनके लिए प्रामाणिक सामग्री जुटाकर दी । उहीकी  
दी हुई सामग्रीके आधारपर मैं शर्माजीकी तथा उनके सुपुत्र (श्रीमती कुमद शर्माके पति)  
आचाय नलिविलोचन शर्माजीकी जीवनी लिखकर इस ग्रन्थम दे सका हू ।

**घना त्रयण द्विवेदी**

यवस्थापक

(प्रकाशन विभाग)



महामहोपाध्याय पाण्डेय  
श्रीरामावतारशर्मा

तदात्मज



आचार्यनलिन  
विलोचनशर्मा

## प्र थकारका परिचय

म ।महोपाध्याय पाण्डय रामावतार शर्मा ससारके उन नर रनोम ह जिनकी प्रतिभा और अलौकिक "योतिसे सम्पूर्ण भूमण्डल आलोकित होता आ रहा है । उनके निधनके बाद किसी लखकन लिखा था आप साहित्यम पण्डितराज जगन्नाथके समान "याकरणम बालशास्त्रीके समान यायम गदाधरके समान वेदान्तम शकराचार्यके समान धर्मशास्त्रम हारातके समान "योतिषम भृगुमनिके समान पुरात वा दधणम भण्डारकरके समान गद्य लखन शलाम बाणभट्ट के समान वाद विवादकी तर्क पद्धतिमें डाक्टर जानसनके समान सूक्ति कथनम शुक्रदेवके समान स्मरणशक्तिकी प्रबलताम मकालके समान विज्ञान महत्ता प्रतिपादनम बकनेके समान कविताम कालिदासके समान वेदाथ त व विवेचनम यास्क और सायणाचार्यके समान जा यभिमानम लोकमान्य तिलकके समान सामाजिक क्रांतिम लथरके समान विधवा विवाह समथम विद्या सागर और महात्मा गांधीके समान पुनजम खण्डनम चार्वाकके समान मनीषिताम शिवाजीके समान और दयालताम गोखलेके समान थ । इस उद्धरणसे यह बात सहज ही जाना जा सकती है कि शर्माजीकी सर्वतोमखी प्रतिभा थी और अनकानक विषयोंम अद्भुत जानकारी थी । जिन लोगोको उनके धनिष्ठ सम्पकम रहनका सुयोग मिला था व जानते ह कि ससारका शायद ही कोई ऐसा विषय होगा जिसका ज्ञान उन्हें नहीं था । डाक्टर काशीप्रसाद जायसवालन कहा था कि शर्माजीके साथ रहनपर जान पड़ता है कि सचमुच महर्षि कपिल कणादके साथ ह ।

प्रकाण्ड विद्वान् होते हुए भी शर्माजीम देहाती किसानकी सी सादगी थी । शर्माजी साधारण धोती और मोट कपडका कुर्ता पहनते थ । प्राय नग पौव गगास्नान करन जाते थ । आपका जम ६ माच सन् १८ ई म सरयूपारीण ब्राह्मण परिवारम हुआ था । इनके पिताका नाम प देवनारायण शर्मा था । व छपराके निवासी थ । प्रारंभिक शिक्षा आपन घरपर ही अपन पिता तथा पण्डित रामद्वार ओझासे पायी । वहीसे आपन सन् १८८९ ई म सस्कृतकी प्रथमा परीक्षा दी और प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए । उस समय शर्माजी केवल बारह वर्षके थ । बाकीपुर पटनासे आपको छात्रवृत्ति भी मिली । उसके बाद आप काशी आय और वही स कालजम नाम लिखाया । १८९ ई म आपन प्रथम श्रेणीम मध्यमा की । आपको वही स कालज वाराणसीसे छात्रवृत्ति भी मिली । सन् १८९१ म बाँकीपुर पटनासे मध्यमाकी परीक्षा दी और पदक तथा छात्रवृत्तिके साथ प्रथम श्रेणीम उत्तीर्ण हुए । सन १८९३ में आपन कलकत्ता सस्कृत कालजसे प्रथम श्रेणीम काव्यतीथ किया । इसम इन्हें अथराशि पुरस्कार भी मिला । सन् १८९५ म आपन कलकत्ता विश्वविद्यालयसे एन्ट्रस द्वितीय श्रेणीम पास किया । उ होन पुन उसी साल इलाहाबाद विद्यालयसे एंट्रस प्रथम श्रेणीम पास किया । इससे उन्हें छात्रवृत्ति भी मिली । १८९ म आपन

काशीसे साहित्याचार्य किया और उसके बाद यावरणाचार्यके प्रथम खण्डका भी पराक्षा दी। साहित्याचार्यम आप सवप्रथम आय। १८९८ में आपन पञ्जाबयनिर्वसिटीसे एफ ए पास किया। सस्कृतम सवप्रथम आनके कारण इह पुरस्कार भी मिला। १९ म कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणीम बी ए किया। इस परीक्षाम उहोन सस्कृत सम्मान के साथ छात्रवृत्ति तथा आर के स्वर्ण पदक प्राप्त किया। १९ १ म एम ए किया। इसम वह सवप्रथम रह औ कलकत्ता विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक तथा अनक पारितोषिक उह प्राप्त हुए।

१९ १ में आप सेन्टल हिन्दू कालज वाराणसीम सस्कृतके अध्यापक नियुक्त हु। १९ ५ तक आप उस पदपर रह और काशाके प्रमुख विद्वानोमे सवप्रमुख सभा पंडित मान गय। १९ ६ म आप पटना कालजके प्रोफसर नियुक्त हुए और अपन जीवनके अततक (१९२९ ई तक) उस पदपर बन रह। बीचम दो बार छट्टी लकर आप बाहर भी रह। क बार १९ से १९ ९ तक कलकत्ता विश्वविद्यालयम वसु मलिक याख्याता होकर और दूसरी बार महामना पण्डित मदनमोहन मालवीयके विशष अनरोघसे १९१९ से १९२२ तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालयम ओरियण्टल कालजके प्रिंसिपल होकर। आप पी एच डी के सवमाय परीक्षक समझ जाते थ। अनक विश्वविद्यालयोके परीक्षक भी थ। सन १९१६ म जबलपुरम आयोजित अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलनके सप्तम वार्षिक अधिवेशनम सभापति थ। १९११ म प्रयागम आयोजित सम्मेलनके द्वितीय वार्षिक अधिवेशनम हिंदीके अपूण अगाकी पूर्त्तिके विषयम एक निबन्ध प्रस्तुत किया था। जिसम लखकोके पथ प्रदर्शनके अभिप्रायसे एक सौ विषया की एक सूची सम्मिलित की गयी थी।

शर्माजीको सन् १९१९म महामहोपाध्यायकी उपाधि मिली थी। इस उपाधिके अतिरिक्त जगम विश्वकोश सप्तम दशक सस्थापक स्वतंत्र बुद्धि विद्वान् प्रतिपक्षिभयवर आदि भी कहा जाता था। आप अनक भाषाओके ज्ञाता थ जसे सस्कृत पालि हिंदी बगला अगजी जमन लैटिन फ्रच ग्रीक आदि। इनम अधिकाश भाषाओम उनकी रचनाएं पायी जाती ह। दशक काय साहित्य याकरण इतिहास पुराण पुरातन नशास्त्र शिक्षा धर्म सभ्यता सस्कृति भाषा विज्ञान भूगोल खगोल ज्योतिर्विद्या गणित आदि बहूतसे विषयोंका आपका अच्छा ज्ञान था। आपन ब तसे विदेशी शब्दोका सस्कृतीकरण किया था। जैसे—नवजीवन भूमि (यूजीलण्ड) औष्ट्रालय द्वीप (ऑस्ट्रेलिया) कम्बोज (कम्बोडिया) आरण्य (अ विद्या) अजपुत्र (इजिप्ट) भयलनपुर (बविलोनिया) अलीकचन्द्र (अलक्जंडर) उक्षप्रतर (ऑक्सफोर्ड) नन्दन (लन्दन) कात (काट) साकृतीज (सौक्रटीज) शायक (सयुकस) त्रीनकुर्सित (त्रोन क्विक्सौट) आदि। शर्माजीके सम्बन्धम किंचित् परिवर्तनके साथ ही दो श्लोक कह गय है

भारतस्य न भा भाति विहारोहारपणित ।

रामावतारे स्वयसि मूर्च्छितैव सरस्वती ॥

पलायध्व पलायध्व भो भो तार्किकदिग्गजा ।

रामावतार आयासि सिद्धान्तवनकेसरी ॥

यो तो आपकी अगणित रचनाएँ हैं किन्तु जिन ग्रन्थोंके नाम प्राप्त हो सके हैं व रचनाकालके अनुसार क्रमशः नीचे दिय जा रह है

(क) संस्कृत—

- १ विविध गद्य पद्य रचनाएँ—रचनाकाल १९३६ ई । काशीकी मित्रगो ी एव सन्तिसूत्रा नामक मासिक पत्रिकाओमें प्रकाशित ।
- २ सवुक्तिकर्णामृत—रचनाकाल १९३१-१ । एशियाटिक सोसाइटी आव बंगालके लिए । प्राचीन पाण्डलिपिके आधारपर सम्पादित ।
- ३ प्रियदर्शिप्रशस्तय —१९११ ई । मूल पालि लखका संस्कृतानुवाद अग्रजी अनुवाद भी । कलकत्ता विश्वविद्यालयके लिए ।
- ४ परमार्थदशनम्—१९११ १३ ई म काशीसे प्रकाशित । सूत्रवद्ध दशन ग्रन्थ पद्यमय वार्त्तिक सहित भाष्यका प्रथम अध्याय संस्कृत सजीवन नामक संस्कृत मासिक पत्रमें १९४३ ई म प्रकाशित । (सप्तम दशनके रूपमें स्वीकृत )
- ५ वाङ्मयानव—श्लोकवद्ध संस्कृत विश्वकोश । रचनाकाल १९११ से जीवन पयत ।
- ६ मुद्गरदत्तम् —(व्ययकाव्य) कालिदासके मेघदूतकी व्याकृति (पराङ्गी) शारदा पत्रिकाम प्रकाशित । पुन पुस्तक रूपमें प्रकाशित ।  
भारतीयमितिवृत्तम्—संस्कृतम भारतवर्षका इतिहास ।
- ८ सरस्वत्यष्टकम् उद्बोधनम् संस्कृत शिक्षा कथयुपयुक्तता भवेत् ? इत्यादि संस्कृत गद्यपद्यात्मक रचनाएँ १९२३ से १९२५ म सुप्रभातम् संस्कृत पत्रिकाम प्रकाशित ।
- ९ प्रकीर्ण प्रबन्धा निघनान्तर १९५६ म प्रकाशित ।

(ख) हिन्दी—

- १ यूरोपीय दशन १९५६ ई प्रथमतः काशी नागरी प्रचारिणी सभासे प्रकाशित द्वितीयतः १९५२ ई म बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटनासे प्रकाशित ।
- २ हिन्दी भाषा-तत्त्व ( या यान रूपमें ) १९५६ ई काशी नागरी प्रचारिणी सभासे प्रकाशित ।
- ३ हिन्दी याकरण १९६६ ई कलकत्ताके देवनागर नामक मासिकपत्रमें प्रकाशित ।  
हिन्दी याकरण और रचनाकी शिक्षण पद्धति १९११ ई बंगालके शिक्षा विभागके लिए प्रस्तुत ।
- ५ मुद्गरानन्दचरितावली १९१२ १३ ई नागरी प्रचारिणी पत्रिका काशी ।
- ६ भारतवर्षका इतिहास दिसम्बर १९१२ जनवरी १९१३ नागरी हितविणी पत्रिका आरा ।  
पौरस्थ और पाश्चाय दशन १९१५ ई पाटलिपुत्र के विद्यापीठमें प्रकाशित ।
- ८ शिक्षाविषयक भारतीयोंका सद्य कर्तव्य शिक्षाका संमेलनाङ्क ख २ स १ ।
- ९ साहसार्द्ध चरित चर्चा १९१३ प्रभा ।
- १ भारतोत्कर्ष (कविता) भारवाडी अप्पवाल आषाढ़ सवत् १९९१ ।

११ पद्ममय मन्त्रभारत ।

१२ कालिदासक समयका निरूपण १९ ९ ई सरस्वती म प्रकाशित ।

१३ श्रीरामावतार शर्मा निबन्धावली

(निबन्धांतर प्रकाशन) १९५ ई बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् । म ग्रंथम सङ्कति त निबन्ध हैं

१ -योतिर्विद्या । २ भूगोलविद्या । ३ भगवत विद्या । ४ हिंदीकी वर्तमान दशा । ५ हिन्दीम विश्वकोषकी अपेक्षा । ६ हिन्दीम उच्च शिक्षा । हिन्दीकी उन्नति और प्रचार । ८ हिन्दी भाषा विज्ञान । ९ सभ्यताका विकास । १ शान्त धर्म प्रश्नोत्तरावली । ११ उपनिषदांत । १२ हिन्दी व्याकरणसार । १३ पील विजय । १४ हमारा संस्कार । १५ पुराण नव । १६ अथ श्रीसत्यदेवकथा । १ मुद्गरानन्दचरितावली । १८ कानावकरीयम् । १९ धर्म और शिक्षा । २ पौरुष और पाश्चात्य दशन । २१ खुली चिट्ठी । २२ परमाथ सिद्धांत । २३ भारतवर्षका इतिहास । २४ शिक्षाविषयक भारतीयका सद्यः कसब्य । २५ शाश्वत धर्म प्रश्नोत्तरावली । २६ साहसार्क चरित चर्चा । २ गतकाली कीयधर्मशास्त्रम् (हिन्दी अनुवाद सहित) । २८ भारतीयकष । २९ जगत्तम विज्ञानका विकास । ३ भूगर्भ विद्या । ३१ नरशास्त्र । ३२ सरस्वत्यष्टकम् । ३३ सरस्वत्यष्टकम् हिन्दी । ३४ उद्बोधनम् संस्कृत । ३५ उद्बोधन हिन्दी । ३६ संस्कृत शिक्षा कथमुपयुक्ता भवेत् संस्कृत । ३ संस्कृत भाषा कसे उपयुक्त हो सकती है ? हिन्दी । ३८ परिशिष्ट ।

१४ वैज्ञानिक निबन्ध सरस्वतीम समय समयपर जीवन कालम ही प्रकाशित ।

(ग) अंग्रेजी

१ Philosophy of the P (पुराणदशन) १९ २ ई B o h M t phys s P द्वारा पुरस्कृत ।

२ Chapters from Indian Psychology (भारतीय मनोविज्ञानक कुछ अंश) १९ ४ ई B o h Met phy P i e द्वारा पुरस्कृत ।

३ Gr p l V Mall k L o t r e s V e d a t m (वेदांतपर -याध्ययन) १९ ८ ई कलकत्ता विश्वविद्यालयसे प्रकाशित ।

४ A the s o t h f K l d (कालिदासक समयका निरूपण) १९ ९ ई H d t h R e v e w म प्रकाशित ।

५ E l m t y T t B o k o f U t e a l L v (परमाथ दशनकी अंग्रेजी भूमिका) ।

उपयुक्त कृतियोंक अतिरिक्त शर्माजीकी बहुत-सी रचनाएं ऐसी हैं जिनमें अधिकांश अप्रकाशित हैं । शर्माजीन काम-दकीय नीतिसार का अंग्रेजीम और रघुवश का लैटिनम अनुवाद किया था ।

शर्माजी ३ अप्रैल १९२९ ई म केवल ५२ वर्षकी अवस्थाम स्वर्गवासी हुए ।

## आचार्य नलिनबिलोचन शर्मा

प्रस्तुत महाग्रंथम आचार्य नलिनबिलोचन शर्माका संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक प्रतीत हो रहा है क्योंकि उन्हींकी महती कृपासे यह ग्रंथ प्रकाशित करनेका अधिकार मिला था। आचार्य नलिनजी महामहोपाध्यायक सुपुत्र थे। इनका जन्म १८ फरवरी १९१६ म बहरवा पटना शहरम हुआ था। इन्हू आरम्भिक शिक्षा पितासे प्राप्त हुई। १९३१ म पटना कालजिएटसे मट्रिक १९३८ म पटना विश्वविद्यालयसे संस्कृत एम ए पास किया। १९२ म हिंदीसे एम ए किया। श्री अनन्तप्रसाद बनर्जीके निदेशनम कौटिल्यक अर्थशास्त्रम दण्ड विधान पर शोध-काय किया।

आचार्य नलिनजीन जन कालज आराम प्राध्यापक समय रंगमंच तथा नाटक पर शोध काय किया। १९४२ म सबसे पहलू हर्प्रसाद जन कालज आराम संस्कृत विभागम प्राध्यापकके रूपम आपकी नियुक्ति हुई। सितम्बर सन् १९४६ तक ये वहीं रहे। उसके बाद आप पटना कालेजम नियुक्त हुए। १९४ म आपका राँची कालेजम स्थानांतरण हुआ। १९४८ म आप फिर पटना कालेजम आ गये। १९५९ म पटना विश्वविद्यालयम हिंदी विभागाध्यक्ष हुए और अततक उसी पदपर काय करते रहे। इनके लिखे हुए मौलिक ग्रंथ ये हैं —

- १ दृष्टिकोण (साहित्य कला मनोविज्ञान सम्बन्धी आलोचना) प्रकाशन १९७ ई।
  - २ विषक बात (कहानी संग्रह) प्रकाशन १९५१ ई।
  - ३ सत्रह असंग्रहीपूण छोटी कहानियाँ। प्रका १९६ ई।
  - ४ जगजीवनराम (जीवनी अग्रजीम) प्रका १९५४ ई।
  - ५ नकनके प्रपद्य (प्रपद्य संग्रह) प्रका १९५६ ई।
  - ६ साहित्यका इतिहास दशन (साहित्यतिहासका दशनालोचन) प्रका १९६ ई।
- मानवण्ड (निबन्ध संग्रह)

सम्पादित ग्रंथ—

- १ लोक कथा कोश प्र १९५९।
- २ लोक साहित्य आकर साहित्य सूची प्र १९५९ ई।
- ३ लोक गाथा परिचय प्र १९५९ ई।
- ४ प्राचीन हस्तलिखित पोथियोका विवरण प्र १९५९ ई।
- ५ सबल मिश्र ग्रन्थावली प्र १९६ ई।
- ६ लालचदास कृत हरिचरित्र अपूण (साहित्य और परिषद् पत्रिकाम प्रकाशित)।
- ७ गोस्वामी तुलसीदास प्र १९६१ ई।
- ८ भारतकी प्रतिनिधि कहानियाँ—



९ हिन्दीकी उत्तम कहानियाँ ।

१० उपन्यास कथाकुञ्ज

११ निबन्ध मानस ।

सम्पादित ग्रन्थ

१ सत पर परा और साहित्य (धर्म व अभिनन्दन-ग्रन्थ) प्र १९६ ई ।

२ आयोध्याप्रसाद खत्री स्मारक-ग्रन्थ प्र १९६ ई ।

३ हिन्दीके प्रतिनिधि कथाकार ।

४ पढ़ो और सीखो ।

५ रूपक-कथाकुञ्ज ।

६ भारतक महापुरुष प्र १९५८ ई ।

राष्ट्रभाषा साहित्य-संग्रह प्र १९५६ ई ।

८ राष्ट्रभाषा साहित्य सरिता प्र १९५६ ई ।

९ पद्याभरण प्र १९५९ ई ।

१० स्वर्णमञ्जूषा प्र १९५५ ई ।

११ हिन्दी रचना कोश प्र १९५९ ई ।

१२ दिवकिंग मन प्र १९५४ ई ।

१३ भारतीय साहित्य परिशीलन तथा अवेषण प्र १९६ ई ।

१४ हिन्दी साहित्य परिशीलन तथा अवेषण ।

सम्पादित पत्रिकाएँ

१ साहित्य त्रमासिक पटना ।

२ दृष्टिकोण ।

३ कविता ।

पटना कालज पत्रिका वार्षिक पटना ।

५ परिषद पत्रिका त्रमासिक पटना ।

संस्था-सम्बद्धता—

प्राचार्य—बदरीनाथ सबभाषा महाविद्यालय पटना ।

प्रधान मंत्री बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना ।

निदेशक—शोध विभाग बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ।

सदस्य भारतीय हिन्दी परिषद् ।

निर्णायक मंगलाप्रसाद पारितोषिक ।

संस्थापक—सदस्य—अखिल भारतीय हिन्दी शोध मण्डल ।

सभापति—सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन ।

अध्यक्ष रेलवे स्टाल बुक सेलवशन बोर्ड ।

अ यक्ष शोध-गोष्ठी वल्लभविद्यानगर आनन्द (भारतीय हिन्दी परिषदक अ दश  
वार्षिक अधिवेशन) ।

अध्यक्ष—हिन्दी विभाग पटना कालज ।

अध्यक्ष—हिन्दी विभाग पटना विश्वविद्यालय ।

अध्यक्ष—हिन्दी साहित्य परिषद् प न कालज ।

सदस्य—कार्यसमिति पटना जिला हिन्दी साहित्य स मे न ।

विशेष—

१ हिन्दीम वेशम नाट्य (Ch mb d m ) क प्रथम प्रयोक्ता तथा  
भाष्यकार ।

२ हिन्दीकी विशिष्ट पद्यविद्या प्रपद्यवाद के प्रवक्तक तथा प्रयोक्ता ।

३ लक्ष्यकचक्षुष्कताके आधारपर मनोप्रथिमूलक छोटी कहानियाके लखक ।

४ सूत्र समीक्षा पद्धतिके प्रयोक्ता ।

आपका निधन १२ सितम्बर १९६१ ई म पटनाम हुआ । शर्माजी हिन्दी-जगत्के लघु  
प्रतिष्ठ आलोचक और निबन्धकार थ । आपक निधनसे बिहार प्रांतको बहुत बड़ी क्षति पहुची  
जिसकी पूर्ति नही हो सकी ।



## भूमिका

स्वर्गीय महामहोपाध्याय प रामावतार शर्मा विलक्षण प्रतिभाशाी विद्वान् थ । उनका ज्ञान भाण्डार बहुत विस्तीर्ण और समृद्ध था । उनकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी उनके समान मनीषी विद्वान् क्वचित् कदाचित् ही ससारम आते ह । व स्वतन्त्र विचारक थ और विभिन्न शास्त्रोपर उनका व्यापक अधिकार था । संस्कृत हिंदी अंग्रेजी जर्मन फ्रेंच टिन ग्रीक आदि कई भाषाओके ज्ञाता थ और भारतवर्षकी विभिन्न भारतीय भाषाओसे भी परिचित थ । यद्यपि उन्हें केवल ५२ वर्षकी आयु मिली थी किंतु फिर भी उनकी कीर्ति देश देशांतरम फल गयी थी । संस्कृत भाषापर उनका विलक्षण अधिकार था । संस्कृत भाषाके मायमसे उन्होंने आधुनिक ज्ञान विज्ञानको संस्कृतश्रोतक पहुंचाना चाहा था । बाङ्गमयाणव नामक प्रस्तुत कोश ग्रन्थ उनके दीर्घकालीन अध्ययन मनन और चिंतनका फल है । दुर्भाग्यवश उनका जीवनकालम यह प्रकाशित नहीं हो पाया । अब ज्ञानमण्डल न इस ग्रन्थका प्रकाशन किया है । व जिस रूपम इसे प्रकाशित करना चाहते थ उस रूपम इसका प्रकाशन तभी हो सकता था जब वे स्वयं इसके प्रकाशनको देखते । फिर भी ज्ञानमण्डल न यथासाध्य प्रयत्न किया है कि पुरतक अधिकसे अधिक निर्दोष और उपयोगी होकर प्रकाशित हो ।

शर्माजीन इस कोशको विश्वविद्या (इसाइक्लोपीडिया) कहा है । इसके लिए उन वैदिक और लौकिक संस्कृत साहित्यका तथा आधुनिक कालकी नया नया आलोचना तथा मथन किया था । इसम कोई सन्देह नहीं कि य कोश अबतकके संस्कृत कोशोकी तुलनाम सर्वाधिक वैज्ञानिक और उपयोगी है । कोशके उपक्रमम उन्होंने बताया है कि इस कोशका निर्माण ह क्यों आवश्यक जान पड़ा । संस्कृतके अनकानक महत्वपूर्ण कोश ग्रन्थ क्या पहल से ही विद्यमान नहीं ह ? और फिर आजकलके विद्वानोंन क्या महत्वपूर्ण शब्दकोशका निर्माण ही किया है ? शर्माजीने इन नये और पुरान कोशोका गम्भीर अध्ययन किया था । परंतु उन्हें दोनों प्रकारके कोशोम कुछ त्रुटियाँ दिखी थी । पुरान कोश पद्य बद्ध ह परंतु उनम न तो प्रयोग और उदाहरण ही दिय गये और न आधुनिक ढंगकी वर्णक्रम पद्धति को ही अपनाया गया है । वर्णक्रमकी नयी पद्धतिसे शब्दोंके खोजनम आसानी होती है । पुरान कोशोम यह पद्धति नहीं अपनायी गयी । जहाँ अपनायी भी गयी है वहाँ वह केवल आद्य वर्णके निवशतक सीमित है । शर्माजीन देखा था कि पुराने कोशोकी इस कमीके कारण जिज्ञासुके लिए अपरिचित शब्दोका खोजना कठिन हो जाता है । फिर आधुनिक युगके निरंतर स्फीयमान बाङ्गमयके शाब्द भी नभ नहीं मिलते । नय कोशोम उदाहरण और सन्दर्भ वनकी जो प्रथा है वह तो उनम है ही नहीं । इसीलिए उन कोशोसे आधुनिक कालके जिज्ञासुका काम नहीं चलता । इसर नये कोशोम शाब्द वर्णानुक्रमसे सजाये जाते

कोश शर्माजीक अभिमत थे। उन्होंने ग्रन्थके पादग्रह 'श्रीकम जिम कोशोको कोश रचनाके' में 'ए अयत आवश्यक बताया है' उनमें 'शम य मग्नहो की चर्चा है। इस शब्द से वे प्रसिद्ध संस्कृत जमन काश स पिटसवग शिवशतरा' जस सभ्र' की बात कहते जान पड़ता है। परन्तु इन कोशोंमें भी उन्हें दो बात खटकी। एक तो वे बहुत विस्तीर्ण हैं फिर उनमें दाम इतन अधिक होते हैं कि संस्कृतके विद्यार्थीकी पहुँचक बाहर होते हैं। फिर पद्य बद्ध हानके कारण पुरान कोशोको जिस प्रकार कठस्थ कर लिया जा सकता है उस प्रकार इन्हें नहीं किया जा सकता। इस प्रकार उन्होंने वर्णानुक्रमके अनुसार पद्य बद्ध कोशका आवश्यकता अनुभव की। इस प्रयोजनके लिए उन्होंने वदिक तथा लौकिक साहित्य धर्मशास्त्र आयुर्वेद यातिष नय विज्ञान आदि विभिन्न शास्त्रोंके शब्द भी समेटे। उन्हें पद्य बद्ध किया परिशिष्ट में नक प्रयोगोंके उदाहरण दिये तथा संस्कृतकी सजातीय प्राचीन भाषाओंके समानरूप शब्दांक साथ तु ना भी की और इस 'विश्वविद्या' को पूर्णाङ्क बनाया।

आधुनिक कालमें संस्कृत साहित्यका अध्ययन केवल भारतवर्षतक ही सीमित नहीं है। अयाय सम्म देशोंमें भी इसका पठन पाठन हो रहा है और वदिक साहित्य एक अनक शब्दाकी नयी व्याख्या सुझायी जा रही है। नय विद्वानाक सुझावके आधार कई प्रकारके हैं—(१) ग्रीक, लटिन अवेस्ता आदिके शब्दोंके साथ तुलना (२) बद्ध परवर्ती कि तुलनाधारित बद्ध विशास्त्र म या परवर्ती कालके स्मृति पुराण आदिम प्राप्त प्रयोगोंके साथ तु ना (३) प्राचीन हिल्ला खोम पाये जानवाले शब्दोंके साथ साम्य (४) पार्श्ववर्ती और समकालीन आयतन भाषा आसे शब्दोंके ग्रहण किय जानकी सम्भावना और (५) भाषा शास्त्रीय नियमोंकी छान बीनसे परिष्कृत शब्दोंके साथ सम्बन्ध इत्यादि। इनमें बहुतसे सुझाव तो अटक से अधिक मह बके अधिकारी ही हैं। परन्तु कुछ ग्रहणीय भी हैं। शर्माजी जसा अधिकारी विद्वान ही यह निणय कर सकता है कि कौन सा सुझाव प्राह्य है और कौन-सा अटकलपचू कल्पनामात्र। इसीलिए कोशके प्रारम्भ ही उन्होंने अतिव्रत भावसे या या सहित समाम्नायके मनोयोगपूर्वक अध्ययनपर जोर दिया है। वे शीघ्र ही कहते हैं कि जो ऐसा नहीं कर सकता वह कोश रचनाका अधिकारी भी नहीं है।

मूल वदिक-साहित्याओ ब्राह्मण और उपनिषद ग्रन्थोंके विशाल शब्दभाषाओंके अतिरिक्त परवर्ती संस्कृत साहित्यका और भी विपुल शब्द भाण्डार है। फिर शब्द शास्त्र बणव बौद्ध आदि आगमोंकी शब्द राशि है जो शोध कायम लग हुए विद्वानोंके प्रयत्नसे लगातार बढ़ती जा रही है। बौद्ध जन आदि अवदिक सम्प्रदायोंके साहित्य और पुराणोंके दशना ग्रन्थोंके अथशास्त्र कामशास्त्र आयुर्वेद आदि शास्त्रोंमें प्रयुक्त होनेवाली विशाल शब्दावली है। कभी कभी पालि प्राकृत अपभ्रंश और लोक भाषाओंमें बच हुए ऐसे अनक शब्द मिल जाते हैं जो मूल संस्कृत शब्दोंकी याद दिलाते हैं। इस प्रकार संस्कृत कोशका निर्माण बहुत ही श्रमसाय हु तर काय है। ग्रन्थके आरम्भमें शर्माजीन सामान्य रूपसे शब्द चयनके इन विभिन्न स्रोतोंकी चर्चा कर दी है।

इस देशमें कोशोंकी परम्परा बहुत पुरानी है। विद्वानोंमें इनका आरम्भ ग्राह्यके निरुद्धत में पायी जानवाली निघण्टु शब्दावलीसे माना है। वदिक शब्दोंके अथ बोधके लिए इनका बहुत

महत्व है। परन्तु परवर्ती कालक कोशोका उद्देश्य इनसे भिन्न था। व काव्योके अध्ययनके लिए भी उपयोगी बनाय जाते थे और कवियोंको श्लेष यक्त काव्य रचनामें सहायता पहुँचानेके लिए भी। साधारणतः व श्लोक (अनुष्टुप) बद्ध होते थे पर कभी कभी आर्या छंद भी लिख जाते थे। पुरान कोशोको दो वर्गोंमें विभाजित किया जा सकता है (१) समानाथक (२) नानाथक। प्रायः प्रसिद्ध समानाथक कोशोमें एक अध्याय नानाथका भी जो दिया जाता था। विषय विभाजन सबत्र एक ही सिद्धांतपर आधारित नहीं हुआ करता था। कई कोशोमें शब्दोंको वाच्यार्थके अनुरूप सामान्य वर्गोंके अनुरूप सजाया जाता था। जैसे देव वन मनु य वर्ग नदी वर्ग आदि। कुछ कोशोमें यह वर्गीकरण अक्षर-संख्याके अनुसार भी किया गया है। कभी आद्य वणक अनुसार और कभी अन्त्य वणके अनुसार उद्देश्य सजा दिया जाता था। परन्तु पूर्ण रूपसे वे आधुनिक वण क्रमके अनुसार नहीं होते थे। निघंटुनाम और धनुषदत्तों में मिल जाते थे परन्तु परवर्ती कोशोमें केवल नाम और अव्ययका ही समावेश होता था। शर्माजीन अपन कोश में विशुद्ध आधुनिक पद्धतिके वर्णानुक्रमको अपनाया है। शब्दोंके विभिन्न अर्थ एक ही स्थान पर मिल जाते हैं। इसीलिए उन्होंने कहा है कि यह कोश सपर्याय भी है और नानाथकदित भी। उन्होंने पुरान कोशोकी अथ निवश पद्धतिको अपनाया है अर्थात् जिन शब्दोंका अर्थ बताना है वह प्रथमा विभक्तिमें दिये हुए हैं और उनका अर्थ सप्तमी विभक्तिमें। यथा प्रसङ्ग लिङ्ग निवश भी पुरान कोशोके ढंगपर ही दे दिया है। इस प्रकार उन्होंने नयी और पुरानी पद्धतिका सामञ्जस्य किया है।

यद्यपि इस देशमें कोश निर्माणकी परंपरा बहुत प्राचीन है किन्तु दुर्भाग्यवश सभी कोश उपलब्ध नहीं होते ताममाला (काव्यायन) शाब्दाणव (वाचस्पति) ससारावत (बिज्जमादित्य) उपलिनी (यति) आदि कोशोका विभिन्न गद्यो या टीकाओंमें उल्लेख तो मिल जाता है पर वे अब लुप्त ही हो गये हैं। काशगरसे प्राप्त बबरके हस्तलिखित-संग्रहमें एक कोशका चूटित अंश भी प्राप्त हुआ है पर यह निश्चित नहीं हो पाया कि वह किसका लिखा है और पूरे कोशका नाम क्या था। अमरसिंहका प्रसिद्ध कोश नाम लिङ्गानुशासन या अमरकोश नामसे अधिक प्रसिद्ध है कदाचित् सबसे पुराना उपलब्ध कोश है। अमरसिंह बौद्ध थे इस विषयमें किसीको बहुत संदेह नहीं है। पर उनका आविर्भाव कालके सम्बन्धमें भी तामसतर्क है। यह काल तत्काल काण्डा में विभाजित है। जिन्हें हमन ऊपर समानाथक कोश कहा है यह सी श्रणीका है। इसपर अनक टीकाएँ लिखी गयी थी जिनमें क्षीरस्वामी (११वीं शताब्दी) बृहत्पद्यटीय सर्वा द (११५९) और राय मुकुटमणि (१३१) की टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। पुरुषोत्तमदेवन इसके परिशिष्ट रूपमें त्रिकाण्डशेष की रचना की थी जिसमें अमरकोश में न आये हुए शब्द दिये गये हैं। शाश्वतका अनकाथ समुच्चय भी काफी पुराना है। यह नानाथक वण का कोश है। इसकी विभाजन पद्धति निराली है। पहले उन शब्दोंको लिया गया है जो पूरे श्लोकमें अटते हैं। फिर आधे श्लोकवाले और फिर एक चरणवाले। यह कोश भी पुरानी टीकाओंमें बहुत उद्धृत किया जाता है। हलायुध (९५ ई.) की अभिधान रत्नमाला भी काफी लोकप्रिय रही है। शर्माजीक समकालीन पण्डित समाजमें मुख्य रूपसे अमरकोश का प्रचलन रह गया था। शाश्वत

हं । युद्ध मन्त्रिणी आदिकी भी थी । बहुत पूछ थी । ऐसा जान पड़ता है कि शर्माजीक मनम कुछ क्षोभ सा था कि जो लोग कोश निर्माणका कार्य करते हैं वे बहुत थोड़े से सन्तुष्ट हैं । जब वे कुछ विषय ग्रन्थोंका नाम लेते हैं तो उनका तात्पर्य यही जान पड़ता है कि जो लोग उनके समयमें कांश रचनाका दावा करते हैं वे प्रचलित ग्रन्थोंसे ही सन्तोष कर लेते हैं । ह उन महान् कांशकी जानकारी नहीं थी जो अनेक नये शब्दों और उनके अर्थोंको दनम समर्थ हैं । अ यधिक परिचित और प्रचलित कोशों का नाम देना आवश्यक नहीं था । जो कोश उन्हें जान पड़े उनमें वजयन्ती का नाम उन्होंने पहल दिया है । यादवप्रकाशके इस बृहदाकार ग्रन्थका संपादन जो आपटन किया था । उसका प्रकाशन सन् १८९३ में मद्राससे हो चुका है । इसमें शब्दोंको प्रारम्भिक वर्णोंके अनुसार सजाया गया है । इसकी रचना ११ वीं शताब्दीमें हुई थी । इसके बाद उन्होंने मख नाम लिया है । यह १२ वीं शताब्दीके कोशकार हैं । इनका अनकाथ कोश १८९ ई. में वियनासे प्रकाशित हुआ । इसपर इनकी स्वयंकी बहुत अच्छी टीका (अनकाथ करवाकरकौमुदी) है । मख ने अपने पूर्ववर्ती कोशकारोंसे सामग्री संग्रह की है ।

केशव स्वामीका नानार्थणव सक्षप १२वीं शताब्दीका ग्रन्थ है । शर्माजीन इसका भी विषय रूपसे उल्लेख किया है । परन्तु कदाचित् उन दिनोंके लिख गये कोशोंमें हेमचन्द्रका अभिधानचिन्तामणि सर्वोत्कृष्ट है । इसकी टीका भी स्वयं उहीकी लिखी है । यह छ का श्लोक लिखा गया समानार्थक वगैरे का कोश है । इसके परिशिष्ट रूपमें निम्न शेष लिखा गया है जिसमें वनौषधियोंके नाम हैं ।

ऐसा जान पड़ता है कि शर्माजी जब ऐसा लिख रहे थे तो उनके सामने संस्कृतके दो प्रसिद्ध कोशोंकी बात थी—शब्दकल्पद्रुम और वाचस्पय । सर राजा राधाकांतदेव बहादुरके द्वारा तैयार कोश शब्दकल्पद्रुम में जिन २९ कोशग्रन्थोंसे शब्द संग्रह किये गये थे उनमें वजयन्ती (यान्त्रिक प्रकाश) अनकाथ कोश (मख) अनकाथकरवाकर कौमुदी (मख) नानार्थणव सक्षप (केशव स्वामी) के नाम नहीं हैं । अभिधानचिन्तामणि (हेमचन्द्र) का नाम अवश्य है । तारानाथ तकरवाचस्पतिके वाचस्पय कोश में विलसनकी संस्कृत इतिहासिक विज्ञानरी और राजा राधाकांतदेवके शब्दकल्पद्रुम से सहायता ली गयी थी पर उन्होंने अथ शास्त्रीय शब्दोंका संग्रह किया था जो इन दोनों कोशोंमें नहीं हैं । उनका अधिक बल पाणिनि समेत व्युत्पत्तिपर था । उन्होंने उन प्राचीन कोशोंके नाम नहीं गिनाये जिनसे अतिरिक्त शब्द संग्रह किये गये थे । विषय सूची उन्होंने अवश्य दी है । उस सूचीमें बौद्ध जैन शास्त्रोंके नाम नहीं हैं । यद्यपि इन कोशोंमें अलङ्कारशास्त्र और नाटयशास्त्र की चर्चा है पर मूलकाय ग्रन्थोंका उल्लेख ही है । प्रारम्भ में शर्माजीन इन कोशकारोंकी इस प्रकारकी त्रुटियोंका परिगणन कर दिया है ।

शमण्य-संग्रह कहकर शर्माजीन जर्मन विद्वानों और कदाचित् विज्ञान मानियर विलियम्स आदि विद्वानोंके प्रति आदर प्रकट करना चाहते हैं । दो महान् जर्मन विद्वान् ओट्टो बोत्तलिक (Otto Böttler) और रुडोल्फ रॉथ (Rudolf Roth) ने अनेक जर्मन विद्वानोंके सहयोगसे जिनमें सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् ए. वेबेर (A. Weber) भी थे एक महान् संस्कृत-जर्मन शब्दकोशका निर्माण किया था जो सात जिंदोंमें छपा था । प्रसिद्ध अग्रज कोशकार मोनियर विलियम्सके शब्दकोशकी योजना इस कोशसे भिन्न थी फिर भी

उद्भूत उक्त महान कोशसे सहायता ली थी। मोनियर विलियमसकी संस्कृत इंग्लिश वश नरी का दूसरा परिवर्द्धित संस्करण १८९९ ई. में प्रकाशित हुआ था। यरोपियन पंडितोंके ये कोश बड़े ही परिश्रमसे लिखे गए हैं। शर्माजीन अत्यंत गौरवके साथ इनका स्मरण किया है जो उचित ही है। परंतु इन कोशोंके प्रणयनके समय बहुत सा साहित्य और कोश-ग्रंथ प्रकाशित नहीं हो सका था। इन विद्वानोंको बहुत बार हस्तलिखित ग्रंथोंकी भी सहायता लनी पड़ी थी। शर्माजीन उसके बादके प्रकाशित कोशों और बौद्धादि शास्त्रोंसे अनेक नये शब्दोंका भी चयन किया है।

इन कोशोंके अतिरिक्त शर्माजीन चार ग्रंथकारोंका विशेष रूपसे लिखे किया है। यह हरनाकर, मल सोमदेव और भारवि। इनमें हरनाकर सम्भवतः हरविजय का यक्षरचित्य है। इनका समय नवम शताब्दीका मध्य भाग है। इन्हें राजानक वागीश्वर हरनाकर कहते थे। हरविजय पचास सर्गोंका महाकाव्य है। कविवक्की दृष्टि से तो यह बहुत अच्छा कोशिक ग्रंथ नहीं कहा जा सकता पर अनेक विरल शब्दोंके प्रयोगके कारण कोशकारके लिए यह बहुत उपयोगी है। इस काव्यपर माघ और बाणका प्रचुर प्रभाव है। माघसे आशय वास्यायन नागमल का ज्ञान पड़ता है। निस्संदेह इनके कामसूत्र में अनेक विरल प्रयोग शब्दोंका संधान मिलता है। सोमदेव कथासरित्सागर नामक प्रसिद्ध कथाग्रंथके लेखक हैं। यह ग्रंथ गणादय की बहुतकथा पर आधारित ग्रंथोंपर आधारित होना चाहिये। सोमदेवन जालंधरकी रानी स्यमतीके शोकाकुल चित्तको बहुतानक लिए ११वीं शताब्दीके अंतिम चरणमें इस ग्रंथकी रचना की थी। कोशकारके लिए यह ग्रंथ भी एक निधि ही है। भारवि तो काव्यदासके वाग्य संस्कृतके सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि हैं। इनका किराताजनीय काव्य भाषा प्रसिद्ध है।

अर्हातक शब्दोंके संग्रह और उनके अर्थ लिखनेका प्रश्न है कोई भी कोशकार एकदम मौलिकताका दावा नहीं कर सकता। अधिक से अधिक कुछ अधिक शब्द और कुछ नवीन प्रयोग और सन्दर्भ प्राप्त अर्थ देनेका ही दावा कर सकता है। पर फिर भी कोशनिर्माण एक विशिष्ट कला है और प्रत्येक उल्लेख योग्य कोशकार कुछ मौलिकताका परिचय दे सकता है क्योंकि जसा कि मोनियर विलियमसन लिखा है शब्दोंके अर्थ बतानेकी पद्धति और उनके क्रम वियोजन और सजावटसे कोशकारकी वास्तविक मौलिकताका पता चल सकता है। शर्माजीन नये शब्दोंके सङ्कलन उनके क्रम वियोजन सन्दर्भ प्राप्त अर्थ और व्युत्पत्ति आदिमें विशिष्ट मौलिकताका परिचय दिया है। फिर शब्दों और अर्थोंको प्राचीन पद्धतिसे श्लोकबद्ध करके और सन्दर्भ आदिका पथक विचार करके एक बिलकुल नयी पद्धतिका प्रवर्तन किया है। जिसमें प्राचीनता और नवीनताके उत्तम पक्ष समा गये हैं।

इस प्रकार प्रचुर अध्ययन मननके पश्चात् यह अपूर्व कोश लिखा गया है। इसके प्रकाशनमें बहुत विलम्ब हो गया था। ज्ञानमण्डल के अधिकारियोंन इसके प्रकाशनका निश्चय करके बहुत उत्तम कार्य किया है। वे संस्कृत साहित्यके अध्ययताओंके लिये धन्यवादके पात्र हैं।





अथ

## वाङ्मयार्णवः

उपक्रम

सूर्याच द्रावतसा जलधरमलिना कालिकाविश्रता या  
निस्त द्रां विष्णुमूर्तिं शरदि निजगदुर्यां शशाङ्काकनेत्राम् ।  
रौद्री यस्याश्च मूर्ति शिशिरकरकलामात्रविश्रा तताया  
वैराजी सत्समष्टिजयति भवमयी सा शिवा च स्वभूश्च ॥१॥  
या शि पशास्त्रादिपयोमहाहं स दुह्यते योजितबुद्धिबसै ।  
वैज्ञानिकैर्विश्वहिताय भूय सा भारती कामदुघा ममास्तु ॥२॥  
गोविन्ददेवीश्रीदेवनारायणसमाख्ययो ।  
पित्रो स्मरन्गुरोश्चैव श्रीगङ्गाधरशास्त्रिण ॥३॥  
आ ऋषेरा च विपुला लोका साम्प्रतिकादपि ।  
निर्मथ्य वाङ्मयार्णव श्रीविश्वविद्या समारभे ॥४॥  
नानार्था अर्थपर्याया ये दृष्टा लोकवेदयो ।  
वणक्रमेण ते सर्वे पद्यैश्च न कुत्रचित् ॥५॥  
उपयुक्तोदाहरणै पद्यकोषा न भूषिता ।  
विस्तीर्णा अतिमूल्याश्च नयकोषा न सुस्मरा ॥६॥  
वर्णानुक्रमविन्यस्तैर्लोकवेदोभयोद्धृतै ।  
पद्यबद्धै सपर्यायैर्नानार्थैश्चटितो महान् ॥ ॥  
विशेषशास्त्रायुर्वेदप्रभृतीना पदैयुत ।  
सोपयुक्तोदाहृतिभिष्टिप्पणै समलङ्कृत ॥८॥  
सचित्र प्रचुरार्वाच्यवैज्ञानिकपदोच्चयः ।  
परिशिष्टैश्च बहुभि कोष एष परिष्कृत ॥९॥

## प्रारम्भ

मनसा न समाभ्नायो य सयारयोऽनुशीलत ।  
 श्रुतिभ्य श्रुदमणयो नोचिता यरतद्रित ॥१॥  
 स्मृतौ तन्त्र पुराणेषु दशने याकृतावपि ।  
 योतिषे प्राकृते बौद्धजैनसाहित्यकानने ॥११॥  
 पदग्रन्थनाञ्जलयो नाष्टद्विर्यरुकीकृता ।  
 वैजयन्ती न दृष्टा यैनैव मङ्गोऽप्रलोकित ॥१॥  
 नेक्षिता यरनेकार्यकैरवाकरकौमुदी ।  
 नानार्थाणवसक्षेपो नैवाभ्यस्त परिश्रमात् ॥१३॥  
 सयारयो नैवाभिधानचिन्तामणिरपीक्षित ।  
 न च राजनिघण्टूना विहित चावगाहनम् ॥१४॥  
 नैव केशवकपद्रु कपितो हृदये मुहु ।  
 शर्मण्यसङ्ग्रहा नैव कृता ग्रहणगोचरा ॥१५॥  
 रत्नाकरस्य मल्लस्य सोमदेवस्य भारवे ।  
 नेक्षिता कृतयो यैश्च कोश किं कुयुरीदृशा ॥१६॥

अ

अशु स्रग्नादिस्त्रक्षमाशेऽप्येकदेश लतादिन ।  
चद्रे सूर्ये पुमाद्रे तु मयूखे च द्यतावपि ॥१॥  
अशुक श्लक्ष्णवस्त्रे स्याद्वस्त्रमात्रोत्तरीययो ।  
अशुमास्तु पुमा सूर्ये च द्रे चाद्यमहीपतौ ॥२॥  
दिलीपारयस्य नृपतेस्तातेऽथाशुमती स्त्रियाम् ।  
पृथिनपर्णीशालपर्ण्योरशुयुक्त तु भेद्यवत् ॥३॥  
अ स्यादभावे स्व पाऽर्थे निषेधे च नञ्यथकम् ।  
अ यय चानुकम्पायामिदमर्थे त्वन ययम् ॥४॥  
अ स्याद्विष्णौ विरिञ्चे च प्रथमे च स्मरे (तथा)पुमान् ।  
अक पापे च दु खे च तथैव प्रत्ययान्तरे ॥५॥  
अकनिष्ठा बौद्धदेवविशेषेषु नृभूमनि ।  
केषांचिपुसि बुद्धेऽपि वा यव उकनिष्ठके ॥६॥  
अकल्क क कहीने त्रिरकका कौमुदी स्त्रियाम् ।  
अकुल स्या जले पोते कुलहीने तु वा यवत् ॥७॥  
अकुल पुसि शम्भौ स्यास्त्री गौर्यामकुला मता ।  
अकूपार पुमा सर्पे कूर्मराजेऽ (म्बुधावथ) िधकूर्मयो ॥८॥  
त्रिगम्भीरेऽप्यपारेऽथाकूपाराङ्गिरस स्त्रियाम् ।  
अकूवार कूवरे नाऽकूवारा स्यात्स्त्रिया भुवि ॥९॥  
अकृत त्रि वजनिते क्लीब त्वकृतमि यद ।  
यवत्रीह्यादि सतुषहविष्ये परिकीर्तितम् ॥१॥  
अक्त व्रेते द्वयोरक्ता निशि त्रिअक्षितादिषु ।  
अक्तुर्ना केशवे शक्ते प्रकाशे स्त्री तु दिङनिशा ॥११॥  
अक्ष पुमानामलके द्यूतभेदे वराटके ।  
आधारे यवहारे च शकटे च विभीतके ॥१२॥  
रथादिचक्र कर्षारयमानद्यूतशलाकयोः ।  
चतु शताङ्गले मानभेदे चैव रथादिन ॥१३॥

चक्रधारकदण्डे च रुद्राक्षैर्द्राक्षयोरही ।  
 अक्ष नपुसरु तुत्थ स्या सौवचल इन्द्रिये ॥१४॥  
 नित्येऽपि कैश्चिदुक्तोऽय तत्र स्यादभिधेयत् ।  
 अक्षजस्तु पुमा वज्रे विष्णौ च परिकीर्त्तित ॥१५॥  
 अक्षत तण्डुले धाये लाजेषु क्लीबयोषितो ।  
 अहिसिते त्रि पण्डे तु न द्वयोना यत्रे स्मृत ॥१६॥  
 स्त्रीत्वे त्वक्षतयो यां सा क यायामक्षता मता ।  
 अक्षमाला च सूत्रेऽरु ध यां वत्सस्य मातरि ॥१७॥  
 अक्षयो विष्णुवासे वा क्षयहीने त्रिलिङ्गक ।  
 अक्षया तिथिभेदेऽपि स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥१८॥  
 स्यादक्षयगुण पुसि शिवे योगे तु वायवत् ।  
 अक्षरस्तु शिवे विष्णौ खडगे वेधस्यथाक्षरा ॥१९॥  
 वायना क्ली विषां धर्मे वर्णेऽम्बुतपसो क्रतौ ।  
 अक्षरात्त्ये सामभेदे खे मोक्षे मूलकारणे ॥२०॥  
 परमाणौ ब्रह्मणि च प्रणवे तु नृशण्डयो ।  
 त्रिनिक्षरे चाग्निनाशि यपि चापरिणामिनि ॥२१॥  
 स्त्रियामक्षरपङ्क्ति स्याच्छन्दोभेदे त्रियौगिके ।  
 स्त्री स्यादक्षरती घृतक्रोडाया त्रि तु यौगिके ॥२२॥  
 अक्षि नेत्रे तथेक्षादे काण्डस्यावयवा तरे ।  
 इन्द्रियोपनिषद्भेदद्विसरयास्तु नपुमकम् ॥२३॥  
 अक्षित क्षितभिन्ने त्रि क्ली लक्षप्रयुते जले ।  
 अक्षोष वशिरे शिग्रौ ना त्रिलिङ्गस्तु निर्मदे ॥२४॥  
 अक्षु पुमाऽसमृद्धे च वज्रे च परिकीर्त्तित ।  
 अक्ष्ण नेत्रेऽक्ष्णा तु रजौ रोगेऽक्ष्णस्त्रि वस्त्रण्डिते ॥२५॥  
 अखात देवखाते स्यात्त्रि तु खातेतरे मतम् ।  
 अखिल वायवत्कृत्स्ने गर्ह्येऽपि परिकीर्त्तितम् ॥२६॥  
 अगः सूर्याद्रिकुम्भाऽहिपादपेषु पुमा मत ।  
 तथैव सप्तसरयाया त्रि तु स्यादगतिक्षमे ॥२७॥

अगमो ना गिरौ वृक्षे गतिहीने तु भेद्यवत् ।  
 अगस्त्य कुम्भज वज्रसेनद्रौ तारका तरे ॥२८॥  
 प्रसवे त्वस्य वृक्षस्यागस्त्य गस्य नपुसकम् ।  
 अगस्तिवद्वज्रसेनफलादौ तु नपुसकम् ॥२९॥  
 अगाढोऽनवगाढे चाप्यमृशे चाभिधेयवत् ।  
 अगाध विवरे क्लीब त्रिस्तलस्पशवर्जिते ॥३०॥  
 अग्निभदे त्वगाधोऽय पुष्टिञ्ज परिकीर्तित ।  
 अगुरु क्ली शिशपाया जाङ्गके पुनपुसकम् ॥३१॥  
 त्रिलिङ्ग तु लघु यत्रागुर्वी चैवागुरु स्त्रियाम् ।  
 अगौका शरभ द्वे स्यात्पक्षिपञ्चास्ययोरपि ॥३२॥  
 अग्नार्या स्त्री भवत्स्वाहादेव्या त्रेतायुगेऽपि च ।  
 अग्निर्वैश्वानरेऽपि स्याच्चित्रकारयौषधा पुमान् ॥३३॥  
 अभिगधो वह्निगधे कणजीरणनाम्नि च ।  
 सूक्ष्मजीरकभदे ना त्रिस्त्वग्निसमगधके ॥३४॥  
 अभिज्वाला धातकीद्रा वह्निवाले तु सा द्वयो ।  
 अभिमथो मथनेऽग्नेना श्रीपणतरावपि ॥३५॥  
 भल्लातकेऽग्निमुख्युक्ताऽग्निमुखा देवविप्रयो ।  
 क्लीबमग्निशिख प्रोक्त कुसुम्मे कुङ्कुमेपि च ॥३६॥  
 विशल्यालाङ्गलिक्यग्निज्वालास्वग्निशिखा स्त्रियाम् ।  
 अग्निष्ठ पुस्युपस्थायसङ्गयूपद्वया तरे ॥३७॥  
 स्थितयूपे वाच्यवत्तु पावकावस्थिते भवेत् ।  
 अग्निहोत्रन्त्वाहिताग्नेर्नित्यहोमे नपुसकम् ॥३८॥  
 अग्निहोत्री होमधेनावग्निहोत्राऽग्निह ययो ।  
 अग्नौ हुते वग्निहोत्र वाच्यवत्परिकीर्तितम् ॥३९॥  
 अग्र पुरस्तादुपरि पलमानेयु सहतौ ।  
 आलम्बनाधिक्यश्रैष्ठ्यप्रा तेषु स्यान्नपुसकम् ॥४॥

अधिके तु प्रधाने च प्रथमे चाभिधेयवत् ।  
 अग्रजन्मा विरिञ्च ना द्वयोस्त्रग्रनविप्रयो ॥४८॥  
 अग्रत प्रथमे चाग्रे लिङ्गहीनमुदाहृतम् ।  
 स्त्री त्वग्रेदिधिषु रुढाऽनूढा स्याज्ज्यायसी यदि ॥४९॥  
 नात्वग्रेदिधिषूरग्रदिधिषुश्चानुजो मत ।  
 यो ायस प्रमीतस्य परिगृह्णाति योषितम् ॥४९॥  
 स च द्विज पुनर्भारया द्विर्यूढा यकुडुम्बिनी ।  
 अथ तु व्यसने दखे दुरिते च नपुसकम् ॥४९॥  
 अघपानोऽस्त्रिया बाहौ ऋषिभदे पुमान्स्मृत ।  
 अङ्को रूपकमदाङ्गचिह्नरेखाजिभूषण ॥४९॥  
 रूपकां शान्तिकोत्सङ्गापराधस्थानवक्षसि ।  
 अङ्कतिर्नाऽनिले ब्रह्मण्युक्तो बह्वादिषु स्त्रियाम् ॥४९॥  
 अङ्कपालि परीरम्भे धात्रीवैदिकयो स्त्रियाम् ।  
 अङ्को नपुसक सात सयुगे स्वाङ्गभिद्यपि ॥४९॥  
 अङ्कुरस्त्वस्त्रियां बीजप्ररोहे किं च शाखिनाम्  
 प्रतानमेदे क्लीब तु रुधिरे रोम्भि वाारिणि ॥४९॥  
 अङ्कुरी तु वसते ना वृक्षे च त्रि तु साङ्कुरे ।  
 अङ्कुर्य स्यादङ्कनीये त्रिस्स्यान्मृदङ्गातर पुमान् ॥४९॥  
 अङ्ग शरीरावयवे शरीरापाययागुणे ।  
 वैयाकरणसंज्ञायां प्रदेशे च नपुसकम् ॥४९॥  
 नीवृद्धमेदे च पुभूमि तद्राज तु पुमानयम् ।  
 अतिकेऽङ्गवति त्रि स्यादथाऽङ्गेत्ययय मतम् ॥४९॥  
 सम्बोधने च हर्षे च सम्भ्रमास्त्रययोरपि ।  
 अङ्गज रुधिरेऽथाङ्गज केशे कामरोगयो ॥४९॥  
 स्यात्त्रिलिङ्गोऽङ्गसंज्ञाते द्वे अपत्येऽङ्गजोऽङ्गजा ।  
 अङ्कतिर्ना हरौ ब्रह्मण्यग्निहोत्रिणि पावके ॥४९॥

अङ्गदो बालिपुत्रे स्यात्केयूरेऽङ्गदमिष्यते ।  
 अङ्गदा वामनभस्य पया च द्रुकलान्तरे ॥५४॥  
 अङ्गन प्राङ्गणे याने कल्याण्यमङ्गना स्त्रियाम् ।  
 स्यादङ्गनाप्रियाऽशोकाग्रयोस्त्रिषु तु योगिके ॥५५॥  
 अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपे नृयतोऽङ्गहृतौ तथा ।  
 अङ्गारस्तु पुमाभौमे स्यादुष्णपुण एव च ॥५६॥  
 त्रिस्तु तद्वति निर्वाणवाले वग्नौ नृशण्डयो ।  
 अङ्गारोऽङ्गारमियेतन्निवाणाग्रावपीधने ॥५७॥  
 अङ्गारक कुरण्टे चाल्पुकाश ना खग द्वयो ।  
 तथा करञ्जभदेऽङ्गारवलरिरुदीरिता ॥५८॥  
 अङ्गारवल्ली भाङ्गीति प्रसिद्धे भषजातरे ।  
 भवेदङ्गारिका त्विक्षुकाण्डे किंशुककोरके ॥५९॥  
 अङ्गारिणी हसन्त्यां च भास्करव्यक्तदिश्यपि ।  
 अङ्गारित तु दग्धे च पलाशकलिकोद्रमे ॥६०॥  
 वासन्त्या तु लतामात्रेऽङ्गारिताप्यापगान्तरे ।  
 शरीरिशेषिणोरङ्गी वाच्यवच्याङ्गवत्यपि ॥६१॥  
 अङ्गिरा ऋषिभेद ना सकारातो बृहस्पतौ ।  
 तद्वश्येषु तु पुभूमिन् स्युरङ्गिरस इयमी ॥६२॥  
 अङ्गुद्वयो पक्षिणि स्याद्विसार्धे तु पुमानयम् ।  
 अङ्गुलोऽङ्गी तिर्यगष्टयवमाने पुमास्तु स ॥६३॥  
 पक्षिलस्वामिनि तथाऽङ्गुष्ठऽश्वत्थद्रुमेऽङ्गुलौ ।  
 कायायने च चाणक्ये केचिपुस्यङ्गल जगु ॥६४॥  
 अङ्गुलि स्यादङ्गुलीवच्छाखासु करपादयो ।  
 कराग्रे कणिकारयऽपि करिण स्त्रीवमिष्यते ॥६५॥  
 अङ्गुलीय तूर्मिकाया त्रिषु त्वङ्गुलियोगिनि ।  
 अङ्गुषस्तु पुमान्दस्ते पक्षिमदेऽङ्गुषी द्वयो ॥६६॥



अङ्घ्रिर्ना पादतुर्यांशतरुमूलेषु नाङ्घ्रिगत् ।  
 अचलो विष्णुकीलाद्रिष्यथ भुव्यचला स्त्रियाम् ॥६७॥  
 देव्या च काञ्चिकस्थानस्थिताया त्रिस्तु निश्चले ।  
 अच्छ स्यात्स्फटिके पुसि द्वे भङ्गे त्रि निर्मले ॥६८॥  
 अच्छायय चाभिमुखयेच्छा दीर्घे सहिताकृत ।  
 अच्युतस्तु पुमान्विष्णौ स्यात्स्थिर त्वभिधयवत् ॥६९॥  
 अजो हरी द्रब्रह्मेशकामे समपितामहे ।  
 अजय क्लीबमुत्पाते त्र्यनुत्पाद्यविजययो ॥ ॥  
 अजपस्त्रिपुरध्यतर्यजपाले च निजपे ।  
 अजपा तु स्त्रियामेषा हसमन्त्रे प्रकीर्त्तिता ॥ १॥  
 अजमोदा यवाया स्यान्निर्यासे शामलेरपि ।  
 अजा स्त्रिया स्यात्प्रकृतो छाग द्व त्रि त्वजन्मनि ॥ २॥  
 अजितस्तु पुमान्विष्णौ दूवायामजिता स्त्रियाम् ।  
 अजिन जिनहीने त्रि क्लीबे पापेऽपि चर्मणि ॥ ३॥  
 अजिर पवनेऽथ क्ली शरीरविषयाङ्गणे ।  
 शीघ्रये पुरेऽजिरा तु स्त्री पार्वत्या न सरित्यपि ॥ ४॥  
 त्रिलिङ्गोऽज्जरे शीघ्र द्वे मृगान्तरभक्षयो ।  
 अजिष्णुस्तु पुमानग्रावुदके तु नपुसकम् ॥ ५॥  
 अजिह्वग शरे पुसि त्रि तु स्यादजुगामिनि ।  
 अङ्गो जडे च मूर्खे चाप्यभिधेयवदिष्यते ॥ ६॥  
 अञ्चतिर्नाऽनिलेऽग्नौ च स्त्रिया बह्वादिषु स्मृत ।  
 अञ्चन त्वचने तद्वद्गतावपि नपुसकम् ॥ ॥  
 अञ्जन कज्जले चाक्तौ सौवीरे च रसाञ्जने ।  
 क्ली स्त्रियोस्त्वञ्जयत्यर्थे त्रिषु त्वञ्जनसाधने ॥७८॥  
 पुसि येष्ठादिग्गाजयोरञ्जना तु हनूमत ।  
 जनन्यामपि जन्तौ च हालाहलसमाह्वये ॥ ९॥  
 ईदन्तस्त्वञ्जनीश दो लेप्यनार्या भवेत्स्त्रियाम् ।  
 अञ्जलिस्तु पुमान् हस्तसपुट कुडवेऽपि च ॥८॥ ॥

अञ्जले कतरि प्रोक्ता त्रिलिङ्गाञ्जलिकारिका ।  
 क्षुद्रजन्तुविशेषे तु गजायुर्वेदभाषिते ॥८१॥  
 नमस्कारीसमारये च क्षुद्रवल्ल्यन्तरे स्त्रियाम् ।  
 अञ्जसेयव्यय प्रोक्त तवतूर्णार्थयोरपि ॥८२॥  
 अञ्जि 'शफ पुमानागकसराह्वयपादपे' ।  
 त्रिस्तृज्जा व्यञ्जके शुक्ले पषण्या तु स्त्रियामियम् ॥८३॥  
 अट्टो नातिशये घाते क्षौमसङ्गगृहान्तरे ।  
 शुष्कस्फुटितभूभागे त्रिषु पक्वौदने तु नप् ॥८४॥  
 अड्डन त्वतियोग स्याच्छस्त्राणां च निवारण ।  
 वेत्रादिरचिते खेटभेदे तत् क्लीबलिङ्गकम् ॥८५॥  
 अणिरक्षाग्रकीले द्वे सीमन्यथ क्ल्यश्रिरूप्ययो ।  
 'वद्धमानतिथिप्रायपक्षेप्याणिवदवना । ॥८६॥  
 'चिक्रोडारये प्राणिभेदे पुस्त्रियोरणिरुच्यत ।'  
 अणीचिस्तु पुमाविष्णौ त्रिषु शाकटिके मत ॥८७॥  
 अणु पुमाधान्यभेदे परमाणा समीरण ।  
 क्लीब त्वम्भोधिलवण स्यात्सूक्ष्मे त्वमिधेयवत् ॥८८॥  
 तत्र स्त्र्यर्थेऽणुरण्वी वा रश्मौ वणव्यङ्गुला तथा ।  
 अणुको निपुण चापे त्रिलिङ्ग परिकीर्तित ॥८९॥  
 अण्डमण्डो विहङ्गादे पेशीकोशे च मुष्कके ।  
 अण्डजोऽहौ द्वयोर्मत्स्ये सरटे विहग तथा ॥९०॥  
 अण्डजा मृगनाभौ स्यादण्डाज्जातेऽण्डजस्त्रिषु ।  
 अण्डीरमण्डीरा ङीरस्त्रिषु शक्तिमति स्मृतम् ॥९१॥  
 अण्डीर पुरुषे पुसि सज्जने मुष्कवत्पशौ ।  
 अण्डुक पुसि मुष्केऽथ द्रयाष्टिविभक्तयो ॥९२॥  
 अततिस्तु पथि स्त्री स्यादतधातौ पुमान्मत ।  
 अतसो ना वनस्पत्यन्तरे स्यादतसी स्त्रियाम् ॥९३॥  
 उमारये धान्यभेदे क्ली त्वत्तस वनमुच्यते ।  
 अत्यव्यय प्रशसाया प्रकर्षे लङ्घनेऽपि च ॥९४॥

निता तासप्रतिक्षेपवाच्यप्येतत्प्रयुज्यते ।  
 अतिगण्डो योगमदे बृहदण्ड तु वायवत् ॥९५॥  
 अतिथि कुशपुत्र स्यात्तथैव गृहमागत ।  
 अब धौ भोक्तुकामे च यागार्थे तु यथायथम् ॥९६॥  
 प्रबलेऽतिबल प्रोक्ताऽतिबला भषजान्तरे ।  
 त्रिनि सङ्गऽतिमुक्तोऽथ वासया तिमिश च ना ॥९७॥  
 अतिवेलो भृश वेलामतिक्रातेऽपि वायवत् ।  
 अतिसजनमुक्त क्ली दानेपि न वधपि च ॥९८॥  
 अत्ता श्वश्या मातरि च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।  
 नाद्योक्त्या बृद्धवेश्याया येष्ठाया च स्वसर्षपि ॥९९॥  
 अलुर्वायावामनि च पुष्टिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 अत्ययोऽतिक्रमे दण्डे विनाशे दोषकृद्भयो ॥१००॥  
 अत्याकारस्त्वधिक्षेपेऽवज्ञाया च पुमान्त ।  
 अत्याकृतिमति वेष भयवत्परिकीर्त्तित ॥१०१॥  
 अत्यारूढ समारूढेऽभ्यधिकेऽपि च वायवत् ।  
 अत्याहित महाभीया प्राणानाकाङ्क्षकर्मणि ॥१०२॥  
 अत्पूहो गजमह ना त्रि वत्यर्थोहनादिषु ।  
 अत्पूहा नीलिकाया स्त्री नीलकण्ठखग द्वयो ॥१०३॥  
 अत्वरस्तु वराहीने त्रि द्वे तु महिषे स्मृत ।  
 अथाथो सशये स्यातामधिकारे च मङ्गले ॥१०४॥  
 विक पानन्तरप्रश्नकात्स्न्यारम्भसमू चये ।  
 अथर्वणिर्नाऽथवज्जब्राह्मण च पुरोधसि ॥१०५॥  
 अथर्वा वृषिमेदे स्याद्वेदमेदे तथा पुमान् ।  
 अथर्वभदमन्त्रेषु तदप्येतर्थापि स्मृत ॥१०६॥  
 अद शब्द त्रिषु प्राहुरत्र तत्र परत्र च ।  
 अदिति स्त्री भवान्यां स्यात्पृथिव्या देवमातरि ॥१०७॥

सुरभौ वाचि होमाथ समिद्रक्षणकर्मणि ।  
 धावापृथिव्योरदिती इत्यथ त्रिषु निर्दिता ॥१८॥  
 अदृष्ट वह्नितोयादि दवभीता महीशुजाम् ।  
 धर्माधर्मावदृष्ट स्यात्त्रिवदृष्टमवीक्षिते ॥१९॥  
 असौम्येक्ष्ण्यदृष्टि स्त्री दृष्टिहीने तु भद्यवत् ।  
 अद्वाऽयय स्यात्प्रत्यक्षे सत्येपि च तथामतम् ॥११॥  
 अद्भुतो वैश्वदेवाग्रौ त्रित्वाश्चर्ये महत्यपि ।  
 अद्भुतारये रसे त्वेष पुष्टिङ्ग परिकीर्तित ॥१११॥  
 अद्भानिस्तु पुमानग्रा जयहस्तिन्यथ स्त्रियाम् ।  
 पशूना भक्षण द्रोण्या तथा तालुनि कीर्तिता ॥११२॥  
 अद्रि पुमान्स्मृत शैले रवावम्बुधर द्रुमे ।  
 अद्रिजा तु भवान्या स्त्री क्ली शिलाजतुनि स्मृतम् ॥११३॥  
 अधमो गर्हणीये स्यान्नीचे चाप्यभिधेयम् ।  
 ओष्ठेऽधरो नाऽनूर्ध्वे तु त्रिहीने दीनवादिनि ॥११४॥  
 अधि स्यादधिकारे चापीश्वरेऽप्यधिकेपि च ।  
 अथाधिकरण द्रव्य आधारेऽधिकृतौ च नप् ॥११५॥  
 अधिके कुरण न स्त्री बहुब्रीहौ तु भद्यवत् ।  
 अधिराङ्ग सारसनसङ्गे कवचधारिणि ॥११६॥  
 मध्यबद्धेऽधिके चाङ्गे क्ली त्रि त्वन्यपदाथकम् ।  
 अघ्यक्षेऽधिकृतस्त्रिश्च स्वरितेनानुवर्तिते ॥११॥  
 अधिक्षिप्त प्रणिहिते कुत्सिते भसिते त्रिषु ।  
 त्रिर्नाथेऽधिपति पुसि मूधस्यावर्त्तविप्रयो ॥११८॥  
 अधिरोहणमारोहे नि श्र या त्वधिरोहणी ।  
 अधिवासो निवासेऽपि गन्धधूपादिसंस्कृतो ॥११९॥  
 क्लीबेऽधिभ्रयण पक्तु स्थाल्यादे परिकीर्तितम् ।  
 स्त्री त्वधिभ्रयणी चुल्ल्या चु यामारोपण पुन ॥१२॥  
 अधिष्ठान तु नगरे रथचक्रप्रभावयो ।  
 अध्यासने च काश्मीरप्रसिद्धनगरान्तरे ॥१२१॥

कश्चि वारोपणप्याह यवस्थापन एव च ।  
 अधीरो वाच्यवद्भीरौ चञ्चलेपि प्रकीर्तित ॥१२२॥  
 अधृष्या तटिनीभदे प्रगभप्यभिधेयवत् ।  
 अध्यक्षोऽधिकृत चैव प्रयक्षे चाभिधेयवत् ॥१३॥  
 अध्यण्डा वामगुप्तायामामलक्यामपि स्त्रियाम् ।  
 पुमानध्यवसाय स्यादुत्साहे निश्चयेपि च ॥१२४॥  
 अध्यायोऽध्ययनेपि स्यादग्रथावच्छेदभिद्यपि ।  
 अध्यातरि तथा ध्यायहीने वायग्रदिष्यते ॥१५॥  
 अध्यारूढ समारूढेऽभ्यधिके चाभिधेयवत् ।  
 अध्यूढा कृतसापत्त्यनार्यामध्यूढ ईश्वरे ॥१६॥  
 अध्वा ना पथि सस्थाने स्यादवस्कन्दकालयो ।  
 अध्वरस्त्रि सावधाने वसुभिद्यज्ञयोस्तु ना ॥१७॥  
 आकाशे त्वध्वरमिति नपुसकमुदीरितम् ।  
 अनघो निर्मलापापमनोज्ञेष्वभिधेयवत् ॥१८॥  
 अनघो नाशिवे साध्य ग धव मनुजान्तरे ।  
 अनङ्गो मदनेऽनङ्गमाकाशमनसोरपि ॥१२९॥  
 अङ्गहीने वनङ्गस्त्रिरङ्गभिन्ने नपुसकम् ।  
 अनञ्जन तु क्ली व्योम्नि त्रि तु स्याद्विगताञ्जने ॥१३॥  
 अनडवाभायुषेऽध्वन्यायामनडवाह्वनडुह्यपि ।  
 अनन्त केशवे शेषे बलदेवे च वासुकौ ॥१३१॥  
 विश्वेदेवातरे सि दवारेऽर्द्धनृपभेदयो ।  
 क्ली त्वभ्रके खेज्जता तु पौणमास्या महद्दिशि ॥१३२॥  
 भृगुश्च्योर्विशल्याया शारिवादूर्वयोरपि ।  
 कणादुरालभापध्यापार्वत्यामलकीषु च ॥१३३॥  
 लाङ्गल्यामभिमध्ये च तारादव्यामपि स्त्रियाम् ।  
 जनमेजयपत्न्यां चाथातेनरहिते त्रिषु ॥१३४॥  
 अनपालिस्तु धात्र्यां स्त्री तथा पाल्या गदद्रुहि ।  
 अनयो यसनानीतिदैवाशुभविपत्सु च ॥१३५॥

अनलश्चित्रके वह्नौ पुमान्वस्वन्तरेपि च ।  
 अनोऽन्ने शकटं सात क्लीबमभ्युनि चौदने ॥१३६॥  
 भवेदनिमिषो दध्न मस्ये चाप्यनिमेषवत् ।  
 द्वयं तु तत्त्रिलिङ्गं स्यान्निमिषणं विवर्जिते ॥१३७॥  
 अनिरुद्धं पुमान्पयावुषायास्त्रित्ववारिते ।  
 अनिलं पुंसि पवने स्मृतो वस्वन्तरेपि च ॥१३८॥  
 अनीकोऽस्त्री रणं सैन्ये वृन्दे बाणाङ्गमिधपि ।  
 अनीकस्थो रणगते हस्तिशिक्षा विचक्षणो ॥१३९॥  
 राजरक्षिणि चिह्ने च वीरमदनकेपि च ।  
 अनीकिनी सैन्यमात्रेऽक्षाहिण्या दशमेशके ॥१४०॥  
 अनुं हीने सहार्थे च पश्चात्सादृश्ययारपि ।  
 लक्षणेऽथभूतभाषाभाषावीप्सास्वनुक्रमे ॥१४१॥  
 आयामे च समीपे च समुदाहृतम् ययम् ।  
 अनुं प्राणे पुमानुक्तो मनुष्ये तु द्वयोर्मत ॥१४२॥  
 अनुकर्षो रथाद्यस्थदारुण्यप्यनुकर्षण ।  
 अनुक्रोशं कृपाया नास्यादनुक्रोशनेपि च ॥१४३॥  
 सामान्तरे त्वनुक्रोशं नपुंसकमुदाहृतम् ।  
 अनुगो वाच्यवप्रोक्तोऽनुगामिनि च सेवके ॥१४४॥  
 भवेदनुचरो वाच्यलिङ्गाऽनुगसहाययो ।  
 अनुजीवी सहाये च सेवके चाभिधायवत् ॥१४५॥  
 अनुतर्षस्तु चषके मध्ये तृष्णाऽभिलाषयो ।  
 उपयुदीच्यश्रेष्ठानां विपरीतेऽयनुत्तर ॥१४६॥  
 श्रेष्ठे च विपरीते तु प्रतिवाचो नपुंसकम् ।  
 बहुव्रीह्यादीदृशानां प्रयोगस्त्रिषु समत ॥१४७॥  
 अनुदात्तो निघातादयस्त्रे तद्वति तु त्रिषु ।  
 भिनेऽप्युदात्तादतस्य प्रयोगस्त्रिषु समत ॥१४८॥  
 अनुद्वेषो द्वेषमात्रे दीघद्वेषानुबन्धयो ।  
 पश्चात्तापे तथा देशमदेपि च पुमान्मत ॥१४९॥

याच्चोपतापैश्चयाशी ञ्जनुनाथनमि यते ।  
 भवेदनुपमा सुप्रतीकिया त्रिषु तूत्तमे ॥१५॥  
 अनुबधस्तु बधे स्यादोषोत्पादे विनश्वरे ।  
 मुरयानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानिवृत्तने ॥१५१॥  
 अनुबधो तु हिक्काया तृष्णायामपि योषिति ।  
 अनुभाव प्रभावे स्यान्निश्चये भावबाधके ॥१५॥  
 अथानुमतिराम्ले स्यादनुज्ञायामपि स्त्रियाम् ।  
 पूर्णिमाया कलाहीनच द्रायामपि सोच्यते ॥१५३॥  
 अनुरूपस्तु सदृशे भववपरिकीर्तित ।  
 स्याद्बहिष्यवमानस्य द्वितीये सतृच पुमान् ॥१५४॥  
 अनुवत्सर इत्युक्तो वसरे वसरात्तरे ।  
 अथानुवासन स्नेहवस्तिधूपनयोर्मतम् ॥१५५॥  
 भवेदनुशयो द्वेषे पश्चात्तापानुबधयो ।  
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवृत्तने ॥१५६॥  
 अनुष्टुप छन्दसि द्वात्रिंशद्वर्णे वाचि च स्त्रियाम् ।  
 अनूक तु कुले शीले कण्ठाम्यर्णाङ्गभिद्यपि ॥१५७॥  
 अनूकस्तु गते जन्मन्येष पुंसि प्रकीर्तित ।  
 अनूचानो विनीते च साङ्गवेदपटौ त्रिषु ॥१५८॥  
 अनूपो महिषे द्वे स्यात्त्रिस्त्वम्बुप्रायदशके ।  
 अनृत तु कृषौ क्लीबमसत्ये च त्रिषु त्वद ॥१५९॥  
 असत्ययुक्तेष्वनृतप्यपुसत्वेप्यनृता स्त्रियाम् ।  
 अनेडमूक स्यादधे वक्तुश्रोतुमशिक्षिते ॥१६॥  
 त्रिलिङ्ग एष कथित शठ च श्रुतिवजिते ।  
 अनेधास्तु पुमानग्नौ वाते च त्रिस्त्वनिघने ॥१६१॥  
 अनेहा काल इन्द्र च पुमान्सान्तादनेहस ।  
 अन्तोऽवसाने मरण स्वरूपे निश्चयेऽतिके ॥१६२॥  
 धर्मे प्रधाने च पुमान्केवाचिपुनपुसकम् ।  
 कोटेरारम्य दशमे स्थाने दशगुणोत्तरे ॥१६३॥

सरयाभदे समुद्रारयसख्याया वपरे विदु ।  
 सा च सख्याष्टम स्थान कोटरारभ्य कीर्त्तिता ॥१६४॥  
 एतयो पूर्वसख्यायां विकपेनाभ्यधुस्त्रिषु ।  
 छान्दोग्योपनिषद्भुक्त सर्वेष्वतेष्वितीदृशम् ॥१६५॥  
 तत्राथश्चिन्तनीयोऽन्य पदार्थो मन्वते परे ।  
 अ-ता तु नृस्त्रियोर्बधे घञ्याकारेपि चातते ॥१६६॥  
 अन्तनाया तु पुल्लिङ्गो भेद्यवत्तु पचाद्यचि ।  
 अ-तरययमेत च स्त्रीकारे मध्य उच्यते ॥१६७॥  
 अ-तर तु मत प्रत्यासत्तौ मध्यावकाशयो ।  
 तादर्थ्येऽवसरे कालभद म-व-तराह्वये ॥१६८॥  
 विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनाशयो ।  
 अवधौ च त्रिषु पुनस्तुल्येऽपपरिधानयो ॥१६९॥  
 बाह्ये स्त्रीये प्रतिभुवि नृनपोऽवन्तरात्मनि ।  
 अन्तरिक्ष तु गगने क्ली साम्नोरुभयोरपि ॥१७०॥  
 वैरूपाष्टकवर्गस्य ये साम्नी उपरिस्थिते ।  
 वास्तुदेवविशेष तु पुंसि स्यासवदक्षिणे ॥१७१॥  
 कोष्ठ यो वर्त्तते प्राय कोष्ठपङ्क्तोर्हि वास्तुन ।  
 अ-तरीप भवेद्वीपे तथान्तर्वारिणस्तट ॥१७२॥  
 अन्तरेणा-यय विद्याद्विनामध्याथयोरपि ।  
 अन्तर्गत विस्मृतेऽत प्रविष्टेऽपि च वाच्यवत् ॥१७३॥  
 अन्तश्च्यया मृतौ भूमिशय्याया पितृकानने ।  
 अ-तरस्था तु स्त्रिया प्रोक्ता यरयोलवयुक्तयो ॥१७४॥  
 तथाच्छ-दो विचित्यां च द्व्यक्षरप्रभृतिष्वपि ।  
 षड्विंशतौ च छन्द सु चतुर्वृद्धेषु दृश्यते ॥१७५॥  
 प्रयोगे ब्राह्मणोपस्थानीयाजीयके तथा ।  
 त्रिष्वन्तावस्थिते चापि तथैवान्तरवस्थिते ॥१७६॥  
 अन्तावसायिन्य-तावसायी द्वे नापिते तथा ।  
 चाण्डालेपि चाण्डालाभिषादी भुवि सकरे ॥१७७॥



मुनिभदे तु पुल्लिङ्गोऽन्तावसायी प्रकीर्तित ।  
 अतिक्रान्तिकटे त्रिष्यतिका स्त्री शीतलाषधौ ॥१८॥  
 चुया येष्टभगिया तु नाट्योक्त्या कथ्यतेऽतिका ।  
 अतेवासी त्रि शिष्ये चण्डालेऽतेवासिनी द्वयो ॥१७९॥  
 अयस्तु पुंसि मुस्ताया त्र्यतोदभूतेऽधमऽपि च ।  
 अदू पदभूषणभिदि करिणो निगडे स्त्रियाम् ॥१८॥  
 अध स्यात्तिमिरे क्लीब चक्षुर्हनि तु भयवत् ।  
 अधिको दत्त्यभदे ना नृभूमि क्षत्रभिद्यपि ॥१८१॥  
 अधिकीति स्त्रिया रूप नर्कया प्रायते दिशि ।  
 अधिका द्यतभेदे स्त्री रजयामपि कीर्त्तिता ॥१८२॥  
 अधुरुधसि कूपेपि त्रणपि च पुमान्मत ।  
 अध्रस्त्रयनयपूर्वाया निषाद्या जनिते द्वयो ॥१८३॥  
 वैदेहनाथ पुभूमि नीष्टदभेदथ तनूपे ।  
 ना तद्देशनिवासे तु जनेऽग्री भवेद्वयो ॥१८४॥  
 अन भोज्ये जले भक्ते भुक्ते वन्न त्रिषु स्मृतम् ।  
 अन्नादो ना त्रतान्ताग्नावन्नस्यात्तरि तु त्रिषु ॥१८५॥  
 मनुष्ये तु द्वयोरन्नादाऽन्नादीति प्रकीर्त्तितम् ।  
 अयस्त्वसदृशे भिन्नेऽन्यायच त्रिषु स्मृतम् ॥१८६॥  
 अयथा प्रितथपि स्यात्परार्थेऽप्ययय मतम् ।  
 अवयस्त्वन्ववाये स्यात्सम्बन्धेऽनुगमे तथा ॥१८॥  
 अवासन स्नेहवस्तावुपास्तावनुशोचने ।  
 अवाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेऽच दक्षिणा ॥१८८॥  
 अथ स्त्रियां बहुव्याप सलिलेच्छन्दसोरपि ।  
 शताक्षरेऽष्टनवति स्वरे ह्रीबेर एव च ॥१८९॥  
 भूमेरधस्ता लोकेषु मुस्ते व्योमनि च क्वचित् ।  
 अप स्यादपकृष्टार्थे वजनार्थवियोगयो ॥१९॥  
 विपर्यये च विकृतौ चौर्ये निर्देशद्वयो ।  
 अपकारोऽन्यपीडायां तथा स्यादन्यत कृतौ ॥१९१॥

अपकृष्टोऽधमेपि स्यात्त्रिषु चैव पृथक्कृते ।  
 अपक्रम कुक्रमे निर्नाऽपगत्या पलायने ॥१९२॥  
 स्त्रियामपचिति पूजानिष्कृत्योश्च व्यये क्षये ।  
 एकाहयज्ञयोरप्यपचिति सप्रयुज्यते ॥१९३॥  
 अपटी स्त्री काण्डपटे निष्पटे त्वपटा त्रिषु ।  
 अपत्य तु भवेत्तोके सामगानां च विश्रुते ॥१९४॥  
 आरण्यके सामभदे उच्चतेजत्यृचि ।  
 अपदान कर्मणि स्यादिति वृत्तेऽवखण्डने ॥१९५॥  
 अपदेश पुमालक्षे निमित्तव्याजयोरपि ।  
 अपध्वस्त धिक्कृते चाप्युज्झितप्यवचूणिते ॥१९६॥  
 निन्दिते कैश्चिदेतच्च वाच्यलिङ्ग प्रकीर्तितम् ।  
 अपभ्रशस्तु पतने भाषाभेदापशदयो ॥१९७॥  
 अपर गजपञ्चार्द्धे सिद्धात्तेऽथापरा स्त्रियाम् ।  
 जरायामितरस्मिस्तु त्रि पूर्वप्रतियोगिनि ॥१९८॥  
 अथापराजित पुंसि हरे विष्णौ स्त्रिया पुन ।  
 छान्दोग्यकीर्तितब्रह्मपुरि योक्ताऽपराजिता ॥१९९॥  
 तथैवासनपर्ण्याख्यक्षुद्रवृक्षे जये द्वयो ।  
 गिरिकर्णी लताया चाप्यशान्या दिशि च त्रि तु ॥२००॥  
 अजिते राजित यस्मादपेत तत्र यस्य च ।  
 गहिंते राजित तत्र राजिते गहिंतेऽप्यथ ॥२०१॥  
 गहिंते राजने क्लीबमपराजितमुच्यते ।  
 अपर्णा गिरिजाया स्यात्पर्णहीने तु मद्यवत् ॥२०२॥  
 अपलाप प्रेमणि स्यात्तथैवायमपह्नुवे ।  
 अपवर्ग क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयो ॥२०३॥  
 अपवर्जनमित्युक्त क्ली दानयागमुक्तिषु ।  
 अपवादस्तु निन्दायामाज्ञाविस्रम्भयोरपि ॥२०४॥

१ [अवदानं अवदानकल्पलता उदीच्यानाम्—अपदान दाक्षिणात्यानाम्]

उत्सगस्य निषेधेऽपि पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 ननाऽपवारणाऽन्तर्धा त्रिषु निर्वाण मता ॥२५॥  
 त्रिषु त्वपशदो नीचऽथ स्यादपशदो द्वयो ।  
 वर्णानामानुलोम्येन षट्सु जातासु जातिषु ॥२६॥  
 अपष्टो नाङ्कुशाग्रे स्यात्पष्ठहीने तु वायवत् ।  
 अपष्ठु पुसि कालेऽथ वामे स्यादयलिङ्गक ॥२७॥  
 अपसजनमारयात परिवजनदानयो ।  
 अपसर्पश्चारभेदे कीर्त्तितोऽप्यपसर्पण ॥२८॥  
 अपेतसपके वेष वालिङ्ग प्रकीर्त्तित ।  
 अपसय छतकानौ पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥२९॥  
 प्रतिकूले दक्षिणे च तनोरेष त्रिलिङ्गक ।  
 अपस्नान मृतस्नाने तथा तत्स्नानवारिणि ॥२१॥  
 अपह्ववस्तु पुलिङ्ग स्मृत स्नेहापलापयो ।  
 अपागमस्तु पुलिङ्गो वहनौ वाते च कीर्त्तित ॥२११॥  
 अपाङ्गस्यङ्गहीनेथ नेत्राते तिलके च ना ।  
 अपादान तु विश्लेषावधावपहृतौ तथा ॥२१२॥  
 अपान तु गुदे क्लीब वृषणपि पुमापुन ।  
 आरण्यके सामभदे शारीरपवनात्तरे ॥२१३॥  
 अपायस्त्रिर्गतामे ना विश्लेषे विद्रवे यये ।  
 अपारस्तु समुद्रे ना त्रिषु पारविजिते ॥२१४॥  
 अपावृतस्तु पिहिते स्वतन्त्रेपि च वाच्यवत् ।  
 अपात्रयस्तु ना मत्तवारणेऽपाश्रितावपि ॥२१५॥  
 अपेताश्रयके वेष त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 अपासन निरसने वधे क्ली त्रिगतासने ॥२१६॥  
 अपि सभावनाप्रश्नशङ्कागर्हासमुच्यये ।  
 तथायुक्तपदार्थेऽपि कामचारकृतावपि ॥२१७॥  
 अपुष स्यात्पुमानग्नौ ना सा रुज्यपुषा त्रिषु ।  
 अपूप पिष्टकमिदि मधुच्छत्रे तथा पुमान् ॥२१८॥

अपोगण्डस्तु बलिभे विकलाङ्गे शिशावपि ।  
 अम्र सात क्ली क्रियाया रूपेऽपत्ये च कीर्तितम् ॥२८९॥  
 अप्नु पुमान्याचके च कालेऽपि परिकीर्तित ।  
 अप्पतिवरुणे चैव समुद्रे च प्रकीर्तित ॥२२॥  
 त्रिष्वप्रतिरथो योग ऋषिभदे तु पुस्ययम् ।  
 आशु शिशान इत्यादि सूक्तेऽप्रतिरथ मतम् ॥२२१॥  
 अग्रहृष्टस्तु काके द्वे त्रित्वप्रमुदिते भवेत् ।  
 अप्वा नद्या भये रोगे स्त्रियामेषा प्रकीर्तिता ॥२२२॥  
 अबद्ध बधनाभावे नपुसकमुदीरितम् ।  
 अनयबधे तु भवेत्त्रिनिर्र्थकवाचि च ॥२२३॥  
 अबलो बलहीने त्रिर्ना तु भार्याग्रजन्मनि ।  
 स्त्री तु चर्वितताम्बूलरसे योषिति चाबला ॥२२४॥  
 अबलोर्णं तु चूर्णे क्ली ताम्बूलस्यापि चर्विते ।  
 अबलोण पुमान्वाच्यस्फुटाया परिकीर्तित ॥२२५॥  
 अबालो वायवग्रौढे नालिकेरद्रुमे पुमान् ।  
 अज क्ली लवणे पद्मे ना तु शङ्खशशाङ्कयो ॥२२६॥  
 धन्वतरौ च निचुले त्रिस्वब्जो जलसम्भवे ।  
 अब्ज सात भवेत्क्लीब रूपे चैव सरोरुहे ॥२२७॥  
 अब्द पुमावारिदे स्याद्रत्सरे मुस्तके तथा ।  
 ऋषिभेदे पुरोडाशभेदे चावयवे तरो ॥२२८॥  
 अध कूपे पुमान्धा स्त्रिया सरिति कीर्तिता ।  
 अधि समुद्रेपि पुमास्तथा सरसि कीर्तित ॥२२९॥  
 कोटस्तथाष्टमे स्थाने सरया स्यादधिनामिका ।  
 अधिजा तु स्त्रिया लक्ष्म्या मेघवत्तु समुद्रज ॥२३॥  
 अधिमण्डूक्यधिजाया शुक्तौ द्वे त्वधिदुर्दुरे ।  
 अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ ब्रह्मण्यात्त्वितरे त्रिषु ॥२३१॥  
 अभक्तो भक्तहीनेपि निर्विभागेपि वाच्यवत् ।  
 अभक्तस्यविभक्तासबद्धभक्तोज्झितेष्वपि ॥२३२॥

अभक्ष्य तु कुभो-येष्यशक्यभक्ष्येपि वाच्यवत् ।  
 अभङ्गु रत्वविषमभङ्गशीलान्ययोस्त्रिषु ॥२३३॥  
 अभया तु हरीतक्या पार्वत्या च शिवेऽभय ।  
 धर्मपुत्रे बिम्बिसारे पारस्त्रैणयकेपि च ॥२३४॥  
 उशीरे वभय क्लीब भयहीने तु वाच्यवत् ।  
 स्यादभावस्त्वसत्ताया विष्णोर्भावे तथामृतौ ॥२३५॥  
 अभीथम्भूतकथने चाभिद्युरयाभिलाषयो ।  
 अभिक्रमोऽभिक्रमण पुमानारोहणपि च ॥२३६॥  
 शताक्षरच्छन्दसि चाभिकारे भिद्यति स्त्रियाम् ।  
 अभिक्रमोऽभिगमनास्कदारम्भषु कीर्तित ॥२३७॥  
 अभिक्रोशोभिशापेपि विलोपपि प्रकीर्तित ।  
 अभिक्षेप स्यादभिप्रेरणेऽप्यभिभवेपि च ॥२३८॥  
 अभित्याकीर्तिविरयातिप्रज्ञासज्ञाद्युतिष्वियम् ।  
 ज्ञानेप्यभिगमो ग्राम्यधर्मपैशु-ययोरपि । ॥२३९॥  
 गोमयेनोपलेपारयोपासनाङ्गाभियानयो ।  
 अथाभिगमन देवमूत्युपासनवर्त्मनि ॥२४॥  
 ऋत्विक् प्रोत्साहनाया तत्कत्तर्यभिगर पुमान् ।  
 अभिगान तु गानेभिलक्ष्य स्यान्मोहनेपि च ॥२४१॥  
 अभिग्रहोऽभिग्रहणेऽभियोगेऽपि च गौरवे ।  
 अधिकारेऽपि शपथ घषणास्कन्दलुण्ठने ॥२४२॥  
 घर्षणेऽपि तथा प्रेताद्यावेश्वभिघषणम् ।  
 अभिघात प्रतिहतौ ताडनेपि क्षतावपि ॥२४३॥  
 अभिगृह्योच्चारण च क्ली घादे कादिभिद्युतौ ।  
 अभिघाती तु शत्रौ नाऽभिहन्तरि तु वाच्यवत् ॥२४४॥

१ (वीप्सायामपि) ।

२ [मैत्रास छात्र्या f अयगर] [on h t ng]

३ (अभिघात स्यादूर्ध्वं वेद द्विच्यञ्चिधवर्णाश्चेत् । नानावर्णाणां परतो धरणीच-द्र  
 द्विरामाख्या) ॥ (केर ) (Comb at on of 4th w th 1 or 3 d 2nd  
 w th 1 t 3rd w th 2 d of th s mo ol s )

अभिधारो घृतेपि स्यासेकेपि च घृतादिभि ।  
 अभिचक्षणमाक्रोश आह्वानेप्यवलोकने ॥२४५॥  
 सानुग्रहावलोकथ शकुनेक्षामिचक्षणम् ।  
 अथाभिचरण द्रोहे चापये मोहने गमे ॥२४६॥  
 रयातावभिजनो जमभूकुलघजयो कुले ।  
 कुलजे पूर्वजे कीर्त्तौ कुलीनेपि प्रकीर्त्तित ॥२४७॥  
 अथाभिधेयव चैष प्रवीणाभिजनो मत ।  
 अभिजात कुलीने स्यान्याय्यपण्डितयोस्त्रिषु ॥२४८॥  
 जन्मलघेऽथाऽभिजातमभिरूपे [तु वायवत्] ।  
 अभिजित्क्रतुमेदे च स्यामुद्धर्त्तान्तरे पुमान् ॥२४९॥  
 नक्षत्रमेदे तद्युक्तकालमात्रे च कीर्त्तित ।  
 अभिजिन्नक्षत्रजाते वभिजिद्वायवद्भवेत् ॥२५०॥  
 अभिज्ञा तु स्त्रिया स्मृत्या निपुण वभिधेयवत् ।  
 अभिज्ञा तु भजेज्ज्ञानेऽङ्गीकारे स्मरणेपि च ॥२५१॥  
 पञ्चात्मके बुद्धगुणे यत्र स्याकामरूपता ।  
 सवशदश्रुति सर्वदृष्टिरन्यमनोग्रह ॥२५२॥  
 भूतभव्यजनुर्ज्ञानपञ्चभिघटिता च सा ।  
 अभित शीघ्रसाकल्यसमुखोभयतोऽन्तिके ॥२५३॥  
 अभितापस्तु तापेपि वरेप्यश्वस्य कीर्त्तित ।  
 अभिधा तु भवेदुक्तौ सज्ञायामपि च स्त्रियाम् ॥२५४॥  
 अभिधान नामवचोबन्धनेषु नपुसकम् ।  
 अभिधानी तु रजो स्त्री पशूनां परिकीर्त्तिता ॥२५५॥  
 व्यञ्जकोभिनयो यस्तु स्रयार्थाभिनय स च ।  
 वणमात्रे विसर्गे चाभिनिष्ठान प्रकीर्त्तित ॥२५६॥  
 अभिनीत त्रिषु याय्ये सस्कृतामर्षिणोरपि ।  
 अभिपन्नोपराद्धेभिग्रस्ते चापद्रते त्रिषु ॥२५७॥  
 अभिप्लवस्त्वनुचरे त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 पुमांस्त्वभिमुखप्लुत्यक्रतोश्चाहर्गणान्तरे ॥२५८॥

भवेदभिमरो युद्धे वधे स्वबलसाध्वसे ।  
 अभिमदस्तु पुंसि स्यात्सपरायेऽवमदने ॥२५९॥  
 अभिमानो भवेद्वर्पाज्ञानप्रणयहिंसने ।  
 अभियुक्त परिचिते चाप्ते रुद्धे पररपि ॥२६॥  
 यवहारप्रवृत्तानां तथवोत्तरवादिनि ।  
 अभियोक्ता विवादेषु पूववादि यपि द्विष ॥२६१॥  
 परिक्षेप्तरि सैन्यैश्च सप्रयुक्तोभिधेयवत् ।  
 अभियोग पृतनया यानेप्यन्यायधर्षित ॥ ६२॥  
 वेदने ग्राह्यविवाकाय पुमा परिचयेपि च ।  
 अभिरूपो बुधे तद्वद्रमणीयेभिधेयवत् ॥२६३॥  
 अभिशस्तोऽभिशास्ते त्रिविवाद्युत्तरवादिनि ।  
 अभिशस्ति प्रार्थनायामभिशापे च दूषणे ॥२६४॥  
 अभिषङ्ग पुमान् दु खे शापे सङ्गे परामवे ।  
 आक्रोशेपि तथैवाभि वणपि प्रयुज्यते ॥ ६५॥  
 स्नानेऽभिषवो मद्यसधाने सवने पुमान् ।  
 अभिषिक्तो द्वयोर्विप्रक्षत्रियाव्यभिचारजे ॥२६६॥  
 कृताभिषेके शब्दोय वा यवत्परिकीर्त्तित ।  
 काञ्चिकेऽभिषवे चाभिषुत त्रिवस्य कर्मणि ॥२६७॥  
 अभिष्यन्दोऽतिषूद्धौ स्यादास्त्रावेऽक्षिगदेपि च ।  
 अभिसधानमुदितमभिसधिशराख्ययो ॥ ६८॥  
 अभिसारक इत्येष स्यात्त्रिलिङ्गोभिगन्तरि ।  
 कान्तार्थिनी तु या याति सकेत साऽभिसारिका ॥२६९॥  
 देवरे च नियुक्ताया यात्यन्य साऽभिसारिका ।  
 अभिहार सनहने चौर्ये वैराभियोगयो ॥२॥  
 गजशायनकालेपि पुंलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 पुमास्तु ऋषिभेदे स्यात्सामगेपि कवौ तथा ॥२७१॥  
 अभीक्षणस्तु भृशे नित्यतद्युक्तक्रिययोस्त्रिषु ।  
 अभीक्षण मुहुरश्रान्ते प्रकर्षे त्वरितेऽव्ययम् ॥२७२॥

अभीतोऽभिगतेपि स्यान्निभयप्यभिधेयवत् ।  
 अभीसु प्रग्रहे रश्मा बाहा नाथाऽङ्गलो स्त्रियाम् ॥२३॥  
 अभ्यग्राऽभिमुखे नव्ये समीपऽप्यभिधेयवत् ।  
 सामीप्ये पुनरभ्यग्र नपुसकमुदीरितम् ॥२४॥  
 अभ्यागमो विरोधाभिघाताभ्युद्गमनातिके ।  
 अभ्याधानमभियासे बह्वर्थं चेध्मसग्रहे ॥२५॥  
 स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सपदा ।  
 अभ्याशो व्यसने पुसि सामीप्येऽप्यतिकेपि च ॥२६॥  
 अभ्यासा गुणने घातो द्वित्रे पूर्वत्र च स्मृत ।  
 पुस्यभ्युपगम स्कीकारऽन्तिकोपगमेपि च ॥२७॥  
 लाजेषु क्लीबमभ्योष नाऽऽज्याम्भ पेयसक्तुषु ।  
 अन्न मुस्ताम्बुद योमकाञ्चनान्नकधातुषु ॥२८॥  
 अग्नि स्त्री काष्ठकुदाले स्यात्कूपे तु पुमानयम् ।  
 ग्रावाणो ये च सुत्यार्थमभयस्ते प्रकीर्त्तिता ॥२९॥  
 अभ्वा तु गमने चैव सलिले च स्त्रिया मता ।  
 अमत पुसि मृत्या स्याद् द्वे मर्त्ये त्रिर्मतेतरे ॥३०॥  
 अमतिस्वभिघाते ना द्वयोऽश्लागे च चातके ।  
 अज्ञानलिङ्गरूपे च प्रावृषि त्रिस्तु निर्मता ॥३१॥  
 अमति पुस्त्रियोरग्ना रोगे च परिकीर्त्तित ।  
 अमनि पशुवङ्मण्या जलपात्रे च दारवे ॥३२॥  
 अमरस्त्वस्थिसहारकुलिशद्रुमयो पुमान् ।  
 देवाना कञ्चे मेकलाद्रौ चामरकण्टक ॥३३॥  
 अमरा स्त्र्यमरावया स्थूणादूर्वाजरायुषु ।  
 गुडूच्या चामरी तु स्त्रीपुसयोर्देव इष्यते ॥३४॥  
 अमल त्वन्नके लक्ष्म्या वमला त्रिस्तु निर्मले ।  
 अमाऽन्यय संहर्त्ये च समीपार्थे च कीर्त्तितम् ॥३५॥



अमाय स्याद्वि सचिवे राज्ञोऽथ त्रिष्णमाभन ।  
 अमावास्या स्त्रिया दर्शे जाते त्वत्र त्रिषु स्मृता ॥२८६॥  
 अमृत याम्नि दवाने यज्ञशप रसायने ।  
 अयाचिते जले जग्धो मोक्षे हेम्नि च गोरसे ॥२८७॥  
 धारोष्णदुग्धप्यमृतौ दुग्धमात्रे नपुसकम् ।  
 अमृतस्तु द्यार्देवे पुसि धन्वन्तरा स्मृत ॥२८८॥  
 अमृता मागधी पथ्या गुड्ढ्यामलकीषु च ।  
 स्यासुरामिक्षयो सूर्यरश्मिभित्स्वमृता स्मृता ॥२८९॥  
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।  
 शत शत वृष्टिवहा आरयाता याश्चिरतन ॥२९॥  
 अमृतोद्भवमेतत् क्ली लशुन त्रि सुधाद्भवे ।  
 अमोघ सफले वाच्यलिङ्ग स्यास्त्री तु पाटला ॥२९१॥  
 पथ्याविडङ्गयोश्चैवाऽमाघा ग्राहे त्वय द्वयो ।  
 अम्बक नयने क्लीबमम्बिका मातरि स्मृता ॥ ९ ॥  
 पावत्या मातुलान्या च कनिष्ठाया स्वसूर्यपि ।  
 अम्बर वाससि व्योम्नि सुगन्धिद्रव्यकान्तर ॥ ९३॥  
 अम्बरीषोनुतापऽश्वसाधके निरयातरे ।  
 आम्रातके तैलपर्ण्या सूर्ये राजान्तरे पुमान् ॥ ९४॥  
 क्ली रण तृणमदे च वर्षे रोधसि वाससि ।  
 चुल्या भ्राष्टमहाभ्राष्टे कुले द्वे तु किशोरके ॥२९५॥  
 अम्बष्ठो देशमदे नाम्बष्ठम्बष्ठा द्वयोभवेत् ।  
 विप्रोद्वैश्याजे किं वा विप्रोद्वैश्याभवे ॥२९६॥  
 सवणनाम्नि महिष्यारये वैश्याज च हस्तिपे ।  
 अम्बष्ठा शार्ङ्गष्ठिकायां पाठायुथिकयोभवेत् ॥ ९ ॥  
 चाङ्गेरी चुक्रिकाकाकीमयूरविदलासु च ।  
 अम्बा मातरि चाप्युक्ता ज्येष्ठस्वसरि च स्त्रियाम् ॥२९८॥

१ अम्बष्ठ हस्तिपे अपहय कुवल्यापीठ कृष्णोम्बष्ठप्रणोदितम् ।

उव च हस्तिप वाचा—इत्यादि । भाग एक १ पृ ४३।२ ३ ।

वाचा मध्यमिकाना च सप्तानामेकवाचि च ।  
 अम्बुच्छन्दोविशेषे क्ली नवत्यक्षरलक्षित ॥ ९९॥  
 लग्नाचतुथराशौ च द्वीबेर सलिलेपि च ।  
 अम्बुक काकनासायामरण्डेपि पुमान्मत ॥३ ॥  
 अम्बुज कमले क्लीबे काटेदशगुणोत्तरे ।  
 सरयाभदे सप्तमेऽथ पुमान्त्रिलक्षद्वयो ॥३ १॥  
 स्यादम्बुजोम्बुजा तु स्त्री कमलाया प्रकीर्तिता ।  
 अम्बुप्रियो वेतसेना त्रिलिङ्ग साललप्रिये ॥३ ॥  
 अम्भ सात भवेत् क्लीब द्वीबेरे सलिलेपि च ।  
 द्व्यशीतिस्वरके छन्दस्यष्टाशीत्यक्षरेपि च ॥३ ३॥  
 अम्भसी इति तु द्यावा पृथिव्योर्द्विवाचातकम् ।  
 अम्ली स्त्री चुक्रिकाया त्रि साम्लेऽम्लो ना रसान्तरे ॥३ ४॥  
 अम्लानोऽम्लानिमयेष भेद्यवपरिकीर्तित ।  
 महासहाया वम्लानोऽम्लान तु प्रसवेस्य च ॥३ ५॥  
 अम्लिका तित्तिडीकाम्लोद्गारचाङ्गे रिकासु च ।  
 अय शुभावहे दैव धूतऽक्षपतने गतौ ॥३ ६॥  
 पुमा गतरि तु प्रोक्तोऽयशदोऽय त्रिलिङ्गक ।  
 अयतेरप्ययेरेतेरीयतेश्च पचाद्यचि ॥३ ॥  
 अयतिस्तु पुमानुक्तश्चद्रे कालं तथैव च ।  
 अयन निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागता ॥३ ८॥  
 स्या सावसरिकाद्येषु सत्याख्यक्रतुकर्मसु ।  
 एषा प्रयोगभद च गतिमात्रे च दृश्यते ॥३ ९॥  
 अयोऽगरुणि लोहे च पपटे मरिच च नप् ।  
 अयि प्रश्नानुनययोस्तथा सबोधनेपि च ॥३१ ॥

१ अम्लिष्टकेमलपदावल्लिख्युल्लेन प्रत्यक्षरक्षरद्वयवसुधारसन ।

सख्य समस्तजन र्णरसायनेन नाहारि कस्य हृदय हरिभाषितेन ॥

(अम्लिष्ट स्पष्टोच्चारित जीवगो) (भक्तिरस वक्षि १३)

धु-ध स्वान्तध्वान्त लग्नम्लिष्टविरिधफाण्ट बाढ निम-थमनस्तम

सत्ताविस्पष्टस्वरानायासगृधेय पा

अयुत दशसाहस्रे क्लीब त्रिपु युतेतरे ।  
 अय क्रोधे विवादे च सभ्रमे स्मरणपि च ॥३११॥  
 अयोगो ना वियाग त्रिविंशुरादिलष्टलोहगे ।  
 अयोमयस्त्वयस्का ते रत्ने तनाम्नि पुस्त्रियो ॥३१२॥  
 अर तु वरिते मधवदसत्त्वञ्च नप्स्मृतम् ।  
 चक्रनमेस्तु विष्कम्भकाष्टेऽर पुसि कीर्त्तित ॥३१३॥  
 अरणिर्वह्निम थपि ना मुहुलपनेपि च ।  
 यज्ञाग्निमथकाष्टे तु पुस्त्रियोररणिर्मत ॥३१४॥  
 अथानिवाहकयाया निस्पृहाया स्वत स्त्रियाम् ।  
 अरतिस्तु स्त्रिया क्रोधे चाऽसुखे त्रिस्तु नीरतो ॥३१५॥  
 अरत्नि पुस्त्रियोहस्ते सप्रकाष्ठतताङ्गलौ ।  
 चतुर्विंशत्यङ्गले च माने कीले च कूपरे ॥३१६॥  
 अरर सोममज्ञे स्याद्यज्ञाङ्गञ्चनौ रणे पुन ।  
 पुष्टिङ्गक्लीबयोस्तद्व लोहलोहशलाकया ॥३१७॥  
 अथार्यरर चेति कवाटे स्त्रीनपुसके ।  
 आरायामरगस्त्र्येव शीघ्रे स्याद्ग दलिङ्गकम् ॥३१८॥  
 अररुस्त्वसुरे द्वे च मथनेऽथायुधे नपि ।  
 अरविन्द जले प्रोक्तमम्बुजेपि नपुसकम् ॥३१९॥  
 अरालो यक्षधूपारयनिर्यासे पुस्यय तथा ।  
 नटाना हस्तविन्यासमदे भुग्ने तु मधवत् ॥३२०॥  
 अतिप्रमाणकाये तु गजभेदे द्वयोरयम् ।  
 अरिर्ना खदिरे शत्रौ द्वे मर्येऽथ त्रिरीश्वरे ॥३२१॥  
 अरिष्टस्तु पुमान्निम्बे फेनिलाख्ये महीरुहे ।  
 लशुने दैत्यभेदे च कृष्णेन विनिपातिते ॥३२२॥  
 स्याद्देशवधने चाथ क्लीब मरणलाञ्छने ।  
 अप्यारण्यकयो साम्नो पवित्रे तक्रगुत्थयो ॥३२३॥  
 अशुभे च शुभे वर्णविकारेऽञ्जनसंनिभे ।  
 वर्णे निकारे मद्ये च स्रुतिगेहे स्त्रियां पुन ॥३२४॥

अरिष्टनेमिर्विष्णौ ना बहुव्रीहौ तु वाच्यवत् ।  
 अरिष्टा कटुकानागबलयोरस्त्रिया विदम् ॥३२५॥  
 तक्रौषधद्रवभिदोर्द्वे तु काके त्रिषु त्वयम् ।  
 अरुणा स्त्री विषायां च भञ्जिष्ठात्रिष्टुतोरपि ॥३२६॥  
 क्ली तु ताम्रे पुमास्तु स्यात्सूर्ये सूर्यस्य सारथौ ।  
 शशिजे चाप्युषसि च काण्डर्षिष्वपि केषुचित् ॥३२७॥  
 अव्यक्तरागवर्णे च सध्यारागे च लोहिते ।  
 कपिले चाथोक्तवणव सु त्रिष्वपि नीरवे ॥३२८॥  
 अरुधद्वाच्यवदरोधके स्यात्स्त्री त्वरुन्धती ।  
 वचाया च वसिष्ठस्य भार्यायामपि कीर्त्तिता ॥३२९॥  
 अरुल सलिलेपि स्यापोतेपि च नपुसकम् ।  
 अरुषस्तु पुमात्सूर्ये वर्णेपि त्रिस्तु निष्क्रुधि ॥३३॥  
 रूपवत्यप्यथाश्वे द्वे अरुषीत्युषसि स्त्रियाम् ।  
 अरुष्कर पुमाभलातके त्रिर्गणकारिणि ॥३३१॥  
 अरुषस्तु यवे त्रिस्तु रूढभिन्नेप्यरोहणे ।  
 अरेऽव्ययमसूयाया तथैवापाकृतावपि ॥३३२॥  
 अरोचकस्त्रिष्वरोचि तदिनात्यरुचौ मत ।  
 अक सूर्ये च ताम्रे च चन्द्रे चेन्द्रे च पावके ॥३३३॥  
 येष्टे भ्रातरि वज्रेऽन्ने स्फटिके स्तुतिमन्त्रयो ।  
 अघ्नयुक्रमभदेकर्णसज्ञ च गुल्मके ॥३३४॥  
 वसिष्ठजमदग्यादिसामभेदेषु केषुचित् ।  
 नपुसके त्वर्कपर्णगुल्मस्य फलपुष्पयो ॥३३५॥  
 अर्कपुष्प वकपुष्पे न स्त्री साम्नोर्द्वयोरपि ।  
 अर्गला चार्गल द्वारकवाटद्वयबधने ॥३३६॥  
 क्लीब तु द्वारपटले विदण्डे तु त्रिलिङ्गिका ।  
 अध पुमाभवेन्मूल्ये तथा पूजाविधावपि ॥३३॥  
 अर्यं त्रिषु जलेऽर्घ्यार्थेऽर्घाहं च बहुमूल्यके ।  
 क्लीबमापाण्डुतिक्ते स्यान्मद्येऽर्घ्या तु स्त्रियां गवि ॥३३८॥

अर्चा तु प्रतिमाया स्त्री पूजायामपि कीर्त्तिता ।  
 अर्चिन ना भासि शस्त्र नालायामपि कीर्त्तिता ॥३३९॥  
 अजकस्त्रयजयितरि पुमान्सितकठिञ्जर ।  
 अजु नस्तु पुमान्कार्त्तवीर्ये मध्यमपाण्डवे ॥३४ ॥  
 मातुरेकसुते शोक्ये यमेपि ककुभद्रुमे ।  
 क्ली वजु न तण रूपे हेम्नि ण्डिस्त्रातरे ॥३४१॥  
 अजुनी बाहुदा नद्या कुट्टिन्या सुरभावपि ।  
 रात्रावुषस्यथ स्यात्रिण्यग्रे शुक्लेपि चाजु न ॥३४२॥  
 मयूरे वजुन स्त्रीपुसयोरप प्रयुज्यत ।  
 अर्णश्छन्दस्यष्टसप्ततिस्त्रे क्ली जलेपि च ॥३४३॥  
 अणवोऽधा षण्णवतिस्वरेच्छ दाक्षरोप च ।  
 अर्त्तिर्ना ऋच्छतौ धातौ स्त्री धनुष्कोटिपीडयो ॥३४४॥  
 अथ फले धने शास्त्रे वस्तुमात्र प्रयोजने ।  
 हृदये साधने मोक्षे कायस्वर्यनिष्ठात्तपु ॥३४५॥  
 वाच्ये हेतावभिप्राये याचने विषये तथा ।  
 अथवाद परार्थोक्तैर्वेदाशे च विधीतरे ॥३४६॥  
 अर्थी ना याचके दासे व्यवहाराभियोक्तरि ।  
 अर्थ्यस्त्रिष्वनपेतेऽर्थाद्विद्वदात्मवतारपि ॥३४ ॥  
 न्याप्ये कृकणारये तुर्यक्षमेदे द्वयोरयम् ।  
 शिलाजतुनि तु क्लीबमर्थ्यमित्यतदिष्यते ॥३४८॥  
 अर्दो गतौ याचनेऽथ वैराग्येर्दं नपुसकम् ।  
 अदन तु गतौ क्लीब याचनाहिंसयो न ना ॥३४९॥  
 अर्दित याचने गत्या हिंसने वातजामये ।  
 त्रिलिङ्ग तु गते चैव हिंसिते याचिते तथा ॥३५ ॥  
 अदिति स्यात्पुमानग्नौ शस्त्रभद च याचने ।  
 अर्थ पुमान्स्यात्शकले समांशे तु नपुसकम् ॥३५१॥  
 रूपकार्थेऽप्यर्थमेतत्क्लीब रुढित उच्यते ।  
 अर्धचन्द्र क्षुरप्रेषौ गलहस्तेर्धचन्द्रके ॥३५२॥

अधचन्द्रा लताभेदे मसूरविदलाह्वये ।  
 अधजाह्व्यधगङ्गाकावेर्यो परिकीर्त्तिता ॥३५३॥  
 अधपारावतश्चित्रकण्ठ तिच्चिरिपक्षिणि ।  
 अधसूचीति सूयर्धे चासने यत्र सहतौ ॥३५४॥  
 मुखपाणितलावूर्ध्वक्षौ प्रदेशान्तरस्थितौ ।  
 अर्धहस्ता पञ्चहस्तमानेनाधकरे नृनप् ॥३५५॥  
 अर्धेदु स्यादतिप्रौढस्त्रीयो यकुलियोजने ।  
 अर्पिष बालवत्साया दुग्धे स्यादग्रमांसके ॥३५६॥  
 अर्पिषश्चापिषी चेति प्राहुर्दन्तावले द्वयो ।  
 अर्बुदो स्त्री मासकीलरोगे चाक्षिरुजान्तरे ॥३५७॥  
 ना शैलभेदे क्लीकोटौ कोटीना दशकेपि वा ।  
 अर्भोऽल्पके बालके च वायवत् सप्रयुज्यते ॥३५८॥  
 अभमस्त्रीस्थले ग्रामे नेत्रे रोगातरेपि च ।  
 अभक कथितो बाले मूर्खेपि च कृशेपि च ॥३५९॥  
 अर्यो महाशास्तरि ना द्वयार्वेक्ष्ये यदा वयम् ।  
 वैश्यजातिस्त्रियामर्या स्यादर्याणी च सा तदा ॥३६०॥  
 यदा तु वृत्ति पुयोगात्तदार्या त्रिषु तु प्रभौ ।  
 अवती कुम्भदास्या च वडवायामपि स्त्रियाम् ॥३६१॥  
 अर्वा नात कुत्सितो त्रि पुसि वज्रे मृनावपि ।  
 अर्शो दुर्नाम्नि च व्याधिमात्रे सात नपुसकम् ॥३६२॥  
 अशसायशसानो द्वे विप्रेऽग्निमनसो पुमान् ।  
 अर्शोऽग्न सूरणे पुसि तक्र तु स्यान्नपुसकम् ॥३६३॥  
 अर्शोऽग्नी मुसलीस्तम्बे स्त्र्यथ त्रिर्घातकेऽशस ।  
 अर्हो योग्ये त्रिरर्हा तु नृ स्त्रियोरहणे मता ॥३६४॥  
 अर्हस्तु क्षपण बुद्धे पुसि मान्योऽन्यलिङ्गक ।  
 अहन्त सुगते पुसि क्षपणेऽपि प्रयुज्यते ॥३६५॥  
 अल वृश्चिकपुच्छस्थकण्ठके हरितालके ।  
 अलका पू कुबेरस्यालका स्युश्चूणकुन्तला ॥३६६॥

अलङ्कारस्तु हारादाबुपमादावलङ्कृता ।  
 अलभूषणपर्याप्तिवारणष्वयय स्मृतम् ॥३६७॥  
 तथा निरथकत्वपि प्रभुवपि प्रयुज्यत ।  
 अलम्बुस प्रहस्ते च छदने राक्षसांतर ॥३६८॥  
 अलबुसा तु गुण्डीर्या स्वर्गवाराङ्गनान्तरे ।  
 अलर्को गाथनृपता रोमारो च सिताकके ॥३६९॥  
 अलर्क प्रसवे त्वस्य शाकमदेपि कीर्त्तितम् ।  
 द्वयोरलर्कोऽलकाति प्रयुक्त रोहिते शुनि ॥३७०॥  
 अलसो वर उष्ट्रस्याडिप्ररुग्भदे द्रुमदया ।  
 असाध्यजिह्वा रुग्भदेऽथालस्यवति वायवत् ॥३७१॥  
 अलसा तु स्त्रिया हसपाद्यामेया प्रयुज्यते ।  
 अलातमुल्लुके क्लीबमनात त्वभिधयवत् ॥३७२॥  
 अलि सुरापुष्पलिहो पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 अलिङ्ग क्ली प्रधाने स्यात्सख्यानां त्रिविलिङ्गके ॥३७३॥  
 अलियली वृश्चिकेऽलौ ना राशा मेपताष्टमे ।  
 अलिन्दो भोजनस्थाने गृहाङ्गे प्रधणाह्वये ॥३७४॥  
 द्वयोरलिपको भृङ्गे कोकिले चापि हस्तिनि ।  
 अलिप्रिय पुमाश्चूते काकजम्बूकदम्बयो ॥३७५॥  
 अलिनस्तु प्रियाया स्त्री त्रि प्रियालियलौ प्रिये ।  
 द्वयोरलिपको भके पिकेपि भ्रमरोप च ॥३७६॥  
 क्लीब तु पद्मकिञ्जल्के मधूकेलिमक पुमान् ।  
 अलीक त्वनृतेऽपि स्याल्ललाटेऽप्यप्रियेपि नप् ॥३७७॥  
 अलुमोज्जनौ नापित च तथा पुसि प्रसाधने ।  
 भवेदवकर पुस्यवकीर्णित्वेवचूर्णिते ॥३७८॥  
 समार्जनीनिरस्तस्य तृणपाखादिवस्तुन ।  
 राशाबुल्लकटाभिरये कीर्त्तितोऽवकरो बुधै ॥३७९॥  
 अवकाऽम्बुतृणे चिञ्चोटिकारये शैवले तथा ।  
 वैवाहिकप्रतिसरप्रथौ च परिकीर्त्तिता ॥३८०॥

अवकीर्णमवज्ञानेप्यवाकीर्णेपि वाच्यवत् ।  
 भवेदवक्रयो मूल्ये स्रजनिर्दिष्टावक्रये ॥३८१॥  
 क्रयभदेप्यदत्तार्धाधिकमूये च हाटके ।  
 स्त्री चवक्षेपणी घोटकुशया क्ली तु भसने ॥३८२॥  
 अवखातस्तु खाते त्रिर्ना शूर्पारयजलाशये ।  
 अवगाथोऽवगथवद्रथयाने तथा पथि ॥३८३॥  
 स्याप्रातः सवनेप्यक्षसघातेपि नृलिङ्गक ।  
 अवगाहो जलद्रोण्या तलाम्बाद्यवगाहने ॥३८४॥  
 निर्वादे क्लयवगीत त्रिमुहुदृष्ट च गहिंते ।  
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबधे गजालिके ॥३८५॥  
 अवग्रहणमित्येत प्रतिराधेप्यनादरे ।  
 अवज्ञाऽनादरेपि स्यात्तथैवापह्नवे मता ॥३८६॥  
 अयट स्यात्खिले गर्ते कूपे कुहकजीविनि ।  
 पक्षिपोते चतुर्विंशत्यङ्गुलेऽपि च मानके ॥३८७॥  
 कृकाटिकायामवटु पिण्डारीति प्रकीर्त्तिता ।  
 अवतसो स्त्रियामुक्त कणपूरे च शेखरे ॥३८८॥  
 अथावतरण भूतादिग्रहे वसनाञ्चले ।  
 प्रद्युयतेऽवतीर्णं च शब्द एष नपुसके ॥३८९॥  
 अवतारोवतरणे तीर्थे भूतादिके ग्रहे ।  
 भूतादिग्रहवस्त्राञ्चलाचनेष्ववतारणम् ॥३९०॥  
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।  
 अवदात सिते पीते शुद्ध मुख्ये च वाच्यवत् ॥३९१॥  
 अवदात सिते वर्णे पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 अवदान कर्मणि स्यादिति वृत्तञ्चखण्डने ॥३९२॥  
 अग्रधानेऽव्युत्ते कर्मण्यपि स्यादपदानवत् ।  
 ननाऽवदारणामेदे क्ली खनित्रेऽवदारणम् ॥३९३॥  
 अवदाहस्तु दहनेऽथोशीरे स्यान्नपुसकम् ।  
 अवद्यमपशब्दे च गर्भे चाप्यभिधेयवत् ॥३९४॥



अवधिस्त्ववधाने स्यात् नीलिकाले विले पुमान् ।  
 अवध्यमवधार्ये स्यादनथकचस्यपि ॥३९५॥  
 अवध्वस परित्यागे निन्दने चावचूणने ।  
 अवध्वस्त परित्यक्ते निदिते चूणिते त्रिषु ॥३९६॥  
 अवन रक्षणे तप्तौ ग्रीतौ याश्चादिषु स्मृतम् ।  
 अवनिस्त्ववनीव स्यात्प्रियङ्गवाश्च क्षितावपि ॥३९७॥  
 अवन्तिर्ना राजभेदे नीवृद्धेदे तु भूमि च ।  
 स्त्रियां त्ववतिराजस्य स्यादवतीस्त्र्यपयके ॥३९८॥  
 नगरेष्वुज्जयिन्यारये येष्टस्वसरि चेष्यते ।  
 अवपातस्तु हस्त्यर्थे गर्त्ते छन्ने तृणादिना ॥३९९॥  
 गर्त्तमात्रे विपनने प्रपातपि गिरे पुमान् ।  
 अथाऽन्यव इत्येष एकेशाऽप्रधानयो ॥४००॥  
 पृथग्भावे पृथग्भूते तथा पुंसि प्रयुज्यते ।  
 अवर त्र्यप्रशस्तेऽन्त्ये जङ्घाते तु गजस्य नप् ॥४०१॥  
 अवरोधस्तिरोधाने राजदारेषु तद्गहे ।  
 तथैव स्त्रीकृतावेष पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४०२॥  
 अवरोहोऽन्तरण पादपस्य लतोद्गमे ।  
 मूलादग्रे गतायां च लताया किं च शाखिनाम् ॥४०३॥  
 शाखाजातशिफायां च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 अवलग्नोऽस्त्रियां मध्ये त्रिषु स्याललग्नमात्रके ॥४०४॥  
 अवलेपो भूषणे च लेपे गर्वे तिरस्कृतौ ।  
 निरीक्षिते त्रिलिङ्गो ना लोकनाथेऽवलोकित ॥४०५॥  
 अवश्यमन्य नित्ये प्रधाने च प्रकीर्त्तितम् ।  
 अवश्यायस्तु नीहारेष्वभिमानेपि पुंस्ययम् ॥४०६॥  
 अवष्टब्धस्त्रिर्विदूरेष्याक्राते चावलम्बिते ।  
 अवष्टम्भ समालम्बे स्तम्भे स्तब्धौ च हेमनि ॥४०७॥

पुमास्तथव प्रारम्भे स्तम्भादौ षस्तु नोचित ।  
 अवस क्ली भये चापे ना पाथवाशनीयके ॥४८॥  
 भवेदवसर पुसि ग्रस्तावे वर्षणे क्षणे ।  
 उपलादौ मन्त्रभदेप्यय शब्द प्रयुज्यते ॥४९॥  
 अवसा तु वसाहीने वाच्यवपरिकीर्त्तिता ।  
 अवसानस्तु शेषपि समाप्तौ निश्चयेपि च ॥४९॥  
 ऋद्ध ज्ञाते समाप्ते चावसित वाच्यवत्स्मृतम् ।  
 निश्चिते स्यादवसित समाप्त उचितेपि च ॥४९१॥  
 अवस्कन्दो नगर्यादेरपहारे च सौप्तिके ।  
 विशेषवाचि भाषायामङ्गीकृत्य च कीर्त्तित ॥४९२॥  
 अवस्करस्तु विष्ठायां तथा गुह्यरहस्ययो ।  
 मलप्रक्षेपणस्थानेप्यय पु लिलङ्ग इष्यते ॥४९३॥  
 अवस्कार पुमा गुह्ये वर्चस्केपि प्रकीर्त्तित ।  
 अवघातेऽग्रहणन मुसले हृदयेपि च ॥४९४॥  
 अवहार पुमांश्चौर्ये द्यतयुद्धादिविश्रमे ।  
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥४९५॥  
 अवाच्य त्रिरगर्हो नावाच्यमप्यकथ्यके ।  
 अवि पुस्यवतौ सूर्ये शैलमूषिककम्बले ॥४९६॥  
 प्राकाराद्रिमरुद्धा सु स्त्री तु पुष्पवतीश्रुवो ।  
 अविद्वकर्णी पाठायां त्रित्वविद्वश्रुतौ भवेत् ॥४९७॥  
 अविन पावकेऽध्वजौ विधाने वविन मतम् ।  
 गुप्तौ चाप्स्वथ भासारयविहगे च मृगे द्वयो ॥४९८॥  
 अविनीतस्तूद्धते त्रिरविनीताभिसागिका ।  
 अविलम्बितशुद्ध डे शीघ्रे च परिकीर्त्तितम् ॥४९९॥  
 अविषो नाऽम्बुधौ शैले द्वे तु दिव्यविषो विषा ।  
 अविषा निर्विषे त्रि स्यात्स्त्रीभूमाऽविषी मता ॥४९९॥

अविष्टसे द्वयोरश्वे पुलिङ्गस्त्वपहोतरि ।  
 अवीरा पतिपुत्राया स्त्रीसत्त्वराहते त्रिषु ॥४ १॥  
 अवेले पुस्यपालापे स्त्र्यवेलापूगचूणके ।  
 अयत्र चैव वेलाया वेलाहीने तू भद्यवत् ॥४ २॥  
 अय स्यात्पङ्कजे पुास तथा रम्ये च नाविके ।  
 अयक्तस्तु पुमान्विष्णां परमा मनि कूरे ॥४ ३॥  
 क्ली तु प्रधाने सारयाना त्रिस्त्वस्पष्ट च बालिशे ।  
 अयथ स्याद्वयो सर्पे निर्यथ त्वभिधेयवत् ॥४ ४॥  
 पुमान्कुरवके स्त्री तु चारटी पथ्ययोभवेत् ।  
 सुखाध्यर्का अव्यथिषा अव्यथिष्या निशाक्षिणी ॥४ ५॥  
 अव्ययोऽस्त्री स्वराद्यर्थेष्वीश्वरे च दशस्त्रपि ।  
 ज्ञान वैराग्यमश्चर्यं तप सत्य धृति क्षमा ॥४ ६॥  
 स्रष्टु वमात्मसम्बन्धो ह्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।  
 एतेषु त्रि तु यस्यास्ति नाययस्तत्र वस्तुनि ॥४ ७॥  
 अशनं भोजनेपि स्यादोदनेपि नपुसकम् ।  
 अशिरोऽग्नौ पुमानुक्त क्लीरश्मिहविषोभवेत् ॥४ ८॥  
 अशिरोऽग्नौ पुमानुक्तो राक्षसे भास्करेपि च ।  
 अशोक पुास कङ्कलितरौ मार्यनृपातरे ॥४ ९॥  
 अशोका कदुरोहिण्यामशोक पारदे मतम् ।  
 वीतशोकेत्यशोकोय भद्यवत्परिकीर्तित ॥४ १०॥  
 अश्नोऽग्नौ भूधरे चैव पुल्लिङ्ग परिधीर्त्तित ।  
 अश्मज त्वश्मजाते त्रि क्ली शिलाजतुनि स्मृतम् ॥४ ११॥  
 ना सोमाभिषवग्राणि पाषाणेश्माऽम्बुदेपि च ।  
 अश्मतमशुभे चुर्यां क्षेत्रेऽप्यनवधौ मृतौ ॥४ १२॥  
 स्यादश्मन्तकमुद्धाने मल्लिकाच्छादनेपि च ।  
 अश्विस्तु स्त्री मता कोट्यां धारायामपि कीर्त्तिता ॥४ १३॥  
 अश्वो विष्णवतारे ना पुजातावश्वकन्दके ।  
 तुरङ्गे च द्वयोरश्वस्तथाऽश्वौ चेति कीर्यते ॥४ १४॥

भवेदश्वतरो वेसरके नागातरेपि च ।  
 अश्वथ पिप्पलेऽश्विन्या स्या मुहूर्त्तान्तरेपि च ॥४३५॥  
 पौणमास्या त्वाश्वयुज्यामश्वथा स्यात्स्त्रियामियम् ।  
 अश्वयुक् त्वश्विनी ऋक्षजाते स्यादभिधयवत् ॥४३६॥  
 अश्वारोहाऽश्वगन्धाम्या त्रिष्वश्ववाहके तथा ॥  
 अश्वी त्वश्ववति स्त्री स्याद्वनूराशौ तु पुंस्ययम् ॥४३॥  
 दस्रयोश्चाश्विनी तु स्त्री नक्षत्रेऽश्वयुगाह्वये ।  
 अश्वीयमश्ववृद्धे स्यात्त्रिस्त्वश्वस्य हिते भवेत् ॥४३८॥  
 अश्वीया तु स्त्रियामश्वलाञ्छने परिकीर्तिता ।  
 अषाढाऽद्वैवते तद्वनक्षत्रे वैश्वदेवके ॥४३९॥  
 तद्युक्ते कालसामान्ये ताम्या यज्ञद्विजमनाम् ।  
 अग्निघेष्टकाभेदप्यथ स्याद्भग्नलिङ्गकम् ॥४४॥  
 असोढरि तथाषाढा युक्तकालजवस्तुनि ।  
 अष्टका स्त्री मागशीर्ष्या कृष्णाष्टम्या परत्र या ॥४४१॥  
 तिस्रस्तासु च कत्तये चासुश्चाद्वैप्यस्रत्रके ।  
 अष्टावयवके क्लीबमथाष्टावयवस्य च ॥४४२॥  
 सङ्घस्याध्येतरि त्र्यष्टावृत्तिकाध्ययनस्य च ।  
 अष्टमङ्गलशदो द्वे घोटमदऽस्य लक्षणम् ॥४४३॥  
 पुच्छोरसुरकेशास्ये सितघोटोष्टमङ्गल ।  
 क्लीब नक्षमगमरयाते पूणकुम्भादिके भवेत् ॥४४४॥  
 द्विगौ तु ग्रासलिङ्ग स्यासमास इति निणय ।  
 अष्टमी तु तिथौ रुद्रस्याष्टानां पूरणे त्रिषु ॥४४५॥  
 अष्टापदोऽस्त्रीकनके शारीपाफलकेपि च ।  
 अष्टापदी च द्रमल्या द्वयोस्तु शरभे कपौ ॥४४६॥  
 स्त्री त्वष्टी स्याफलस्यास्थिन् जानुकूपरकास्थिन् च ।  
 अससारयप्रधाने क्ली त्रिस्तु सत्तातियोगिनि ॥४४७॥  
 पुश्रल्यां त्वसतीत्येषा स्त्रीलिङ्गे सप्रयुज्यते ।  
 असनो ना पीतसालवृक्षे क्ली वसन मतम् ॥४४८॥

क्षेपणेऽपि गता दीप्ता तथैव ग्रहणपि च ।  
 असपृक्तस्तु रहसि श्लिष्टभिन्ने पुनस्त्रिषु ॥४४॥  
 असिक्वयत पुन्रेष्या नदीभद्रात्रिषु स्त्रियाम् ।  
 असित कृष्णपक्ष स्यादक्षराकं च नृपान्तर ॥४५॥  
 मध्वासवे शनौ कृष्णऽथ त्रि तद्वयसयते ।  
 असु पुमास्याग्रज्ञायामसवा भूमि जीविते ॥४५॥  
 असुरस्तु पुमान्मघे वास्तु वातरं य य ।  
 कोष्ठपङ्क्तौ पश्चिमाया कोष्ठे षष्ठ हि दक्षिणात ॥४५॥  
 विडारयलवणे चैव कृत्रिमाघपराभिधे ।  
 द्व तु दये गज च क्ली पुन कास्यारयलोहके ॥४५॥  
 असुरा रजनीराश्या स्त्रीलिङ्गे पारकीर्त्तिता ।  
 असृक स्याद्योगभेदे ना रक्त तु स्यान्नपु सकम् ॥४५॥  
 अस्त यवसिते क्षिप्रेऽप्यस्ताद्री ना ग्रहे तु नप् ।  
 अस्तु स्यादभ्यनुज्ञानऽप्यस्रयापीडयोरपि ॥४५॥  
 प्रतिक्षेपे प्रशसायां प्रकर्षे लक्षणेऽपि च ।  
 असप्रत्यथ एतच्चाव्यय सपरिकीर्त्तितम् ॥४५॥  
 अस्त्र प्रहरण चापे करवाले नपु सकम् ।  
 अस्थान तु त्रिषु प्रोक्त स्थानहीने जलाश्रये ॥४५॥  
 अगाधे शून्यमूले तु सैन्ये स्थानात्परे च नप् ।  
 अस्थिमास्त्र्यस्थिसयुक्ते नाऽस्थिसघातवीरुधि ॥४५॥  
 अस्थिसहनन क्ल्यस्थिसनाहे ना लतात्तरे ।  
 अस्रोऽङ्कुशे कचे कोणे पुसि क्ली रुधिरेश्चुणि ॥४५॥  
 अक्षपा तु जलौकायां डाकिन्यां राक्षसे तु ना ।  
 अह प्रशसाक्षिपयोर्नियोगे च विनिग्रहे ॥४६॥  
 अहत वायवदहिसिते चाभिनवे पटौ ।  
 अहिसायां पुन क्लीभयहत सप्रकीर्त्तितम् ॥४६॥  
 अहतिर्मासदानव्याधिषु स्त्री नाऽहिधातुके ।  
 अहल्या तु सरोमेदे भार्यायां गौतमस्य च ॥४६॥

न हन्यत इति व्युपत्त्याऽहल्या स्यादुपस्यपि ।  
 अहहेत्यद्भुते खेदे परिक्लेशप्रकर्षयो ॥४६३॥  
 तथा सबोधनार्थोप प्रयुक्तमिदमव्ययम् ।  
 अहार्यं पुंसि शैले स्यादद्वयं पुनस्त्रिषु ॥४६४॥  
 अहिजिह्वा हरौ शक्रे त्रिलिङ्गस्त्वहिजतरि ।  
 अहितो ना भवेच्छत्रावपथ्ये त्वभिधेयवत् ॥४६५॥  
 अहिद्विडं गरुडे पुंसि शक्रे च नकुले पुन ।  
 द्वे मयूरे त्रिषु पुनरहर्द्वेषस्य कारिणि ॥४६६॥  
 भवेदहिभयं भीतौ स्वपक्षजभयेपि नप् ।  
 अहिभृगगरुडेऽथ द्वे मयूरे यहिभोजान ॥४६७॥  
 यज्ञेष्वहीनं पुलिङ्गं प्राक् त्रयोदशरात्रत ।  
 द्विरात्रादप्यथ त्रि स्यादयूनेऽहीश्वरे तथा ॥४६८॥  
 अहूला स्यादस्खलने भल्लातक्यामपि स्त्रियाम् ।  
 अहो प्रश्ने त्वतर्के च परिकीर्तितम् ययम् ॥४६९॥  
 अहो बतानुकम्पायां खेदे सबोधने तथा ॥४७०॥

## आ

आ शिवे स्यात्पुमानातु स्त्रिया लक्ष्म्या प्रकीर्तिता ॥४॥  
 आ प्रगृह्य स्मृतौ वाक्येऽनुकम्पाया समुचये ।  
 आकरं श्रेष्ठनिवहोपत्तिस्थानेषु कथ्यते ॥४७१॥  
 आकष शारिफलके द्यते च द्यूतपाशके ।  
 आकृष्टाविद्रिये पाश्वर्के कोदण्डाभ्यासवस्तुनि ॥४७२॥  
 ये सप्तभागाः करिण ऊर्ध्वदशे वराङ्गुले ।  
 द्वितीयेऽप्याद्यतस्तेषामाकर्षेऽपि नृपान्तरे ॥४७३॥  
 आकर्षकस्त्रिष्वाकषकुशले चुम्बके तु ना ।  
 बृहत्कथाप्रसिद्धे वाकषिका नगरातरे ॥४७४॥  
 अनाप्याकलना बधे सख्यानज्ञानयोरपि ।  
 शब्दे तु समूहे च क्लीबमाकलनं मतम् ॥४७५॥

आक प कपने पुसि वेपे च परिकीर्त्तित ।  
 आक पकस्तमोमोहग्र थाबुत्तुल्लिङ्गमुदो ॥४७६॥  
 स्यादाक पनमाकाङ्क्षा परिसरयानबधने ।  
 आकाङ्क्षा वभिलाषेऽपि स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तता ॥४७॥  
 प्रतीतिपर्यवसिते विरहेऽपि तथष्यते ।  
 आकार इङ्गिताकृत्योराङ्गानात्मविकारयो ॥४८॥  
 आवर्णेऽपि पुमानेष आकार परिकीर्त्तित ।  
 आकालिकी स्त्रियामेषा विद्युदर्थे मताऽथ च ॥४९॥  
 अहो वा रजनेर्वापि भागमारभ्य कचन ।  
 आ तस्मात्परतो भागाद्भवेऽकालभवे त्रिषु ॥४८॥  
 आकृतिस्त्री शरीरे स्यादाकार यक्तिजातिषु ।  
 अष्टाशीत्यक्षरछन्दोभेदे च पुरुषान्तरे ॥४८९॥  
 आक्रन्दो रुदिताङ्गानारावेषु नृपतौ प्रभौ ।  
 मित्रे दारुणयुद्ध च त्रातर्यपि पुमान्मत ॥४८२॥  
 आक्रीड क्रीडने पुसि कुरुत्थामसुतेऽपि च ।  
 अस्त्रिया वयमाक्रीड क्रीडोद्याने प्रकीर्त्तित ॥४८३॥  
 आक्षारितस्त्रिलिङ्गोऽयमनिशस्ते प्रकीर्त्तित ।  
 विवादेऽप्यभियुक्तेऽपि तथैवास्त्रावितेऽपि च ॥४८४॥  
 आक्षिक स्यात्पुमाव्याधौ त्रिलिङ्गस्वक्षदेविनि ।  
 आक्षेपो भसना नि दा तथा क्वाषस्त्रे ॥४८५॥  
 काव्यालङ्कारभेदेऽध्याहारे वर्णगुणान्तरे ।  
 आक्षेपकोऽनिलव्याधौ व्याधौ नि दाकरेऽपि च ॥४८६॥  
 द्वयोस्त्वाखनिकश्चौरसूकराम्बुखगाखुषु ।  
 तटाककारे तु त्रिष्वखनिकी परिकीर्त्तिता ॥४८॥  
 आखुर्मुषिकमात्रेऽपि सूकरेऽपि द्वयोर्मत ।  
 तथा मूषिकजातेश्च भेदेऽपि क्रमसङ्गके ॥४८८॥

आरयात वाच्यवप्रोक्तञ्च तिङन्ते नपुसकम् ।  
 आरयान तु कथायां च वचनेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥४८९॥  
 आरयान क्लीब वृत्तभेदे क्लीब तु स्यात्कथानके ।  
 आगोऽपराधे पापेऽपि रहस्येऽपि नपुसकम् ॥४९०॥  
 पुस्याग्निमारुतोऽगस्त्यमुनौ त्र्यगनामरुद्युजि ।  
 आग्नीध्र ऋत्विग्भद स्यादग्निधिष्ण्यन्तरेपि नप् ॥४९१॥  
 अग्निकार्ये तथाग्नीध्री स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।  
 आग्नेय पुस्त्यगस्त्यर्षी द्वापरारययुगेपि च ॥४९२॥  
 सवत्सरे च क्लीब तु रुधिरैऽप्युत्तरायणे ।  
 दशाहकार्यग्राह्ये च त्रताया च युग स्त्रियाम् ॥४९३॥  
 आग्नयी भधवत्त्वग्नियोगि यषा प्रकीर्त्तिता ।  
 आघाट सीम्नियानेऽपामार्गे वाद्यान्तरे घटे ॥४९४॥  
 आघातस्ताडने घाते वधस्थाने पुमान्मत ।  
 आधारण स्रुवे पुसि न तु ना क्षारण मत ॥४९५॥  
 आघ्रात शिद्धिते क्राते क्लीभावे त्रि तु कर्मणि ।  
 आङ् सीमायामभिच्याप्तौ क्रियायोगेषदथयो ॥४९६॥  
 आचाम ओदनस्य स्याभि स्रावे मासराह्वये ।  
 तथाचातिक्रियाया च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४९७॥  
 आचार पुसि चारित्र्येऽथाचारा स्त्रीहरेर्भवेत् ।  
 नव या शक्तयस्तासामेकस्यामिति सूरय ॥४९८॥  
 आचार्य उपनीत्यादिमन्द याख्याकृतो पुमान् ।  
 आरयाया स्वयमाचार्या चार्यान्याचार्ययोषिति ॥४९९॥  
 आचित शकटोन्मेये पलानामयुते द्वये ।  
 वाच्यवभिश्चिते छन्ने सगृहीतेऽथ नप्समृतम् ॥५०॥  
 तुलाविंशतिरूपाणा भाराणां दशके बुधै ।  
 आच्छादन सपिधाने वस्त्रेष्वृतिमात्रके ॥५०१॥  
 स्यादाच्छरितक हासनखराघातभेदयो ।  
 आजि स्त्रियां क्वचित्पुसि युद्धे समग्रहीतले ॥५०२॥



आजीरस्तु क्षपणके जीरिकायां च कीर्त्तित ।  
 आज्य श्रीवष्टनिर्यासे घृते युद्धे नपुसकम् ॥५३॥  
 पलारयोन्मानभदंषि स्तोत्रेषु च चतुष्पि ।  
 शुबर्हिष्पवमानाद्यायूध्यायध्वरकर्मणाम् ॥५४॥  
 आङ्गा तु स्त्री महापादं शासने लग्नराशित ।  
 राशौ च दशमे वेस्याविशपि महीपते ॥५५॥  
 यस्याङ्गागणिकेत्यारयाऽऽङ्गी तु स्यात् यज्ञयोगिनि ।  
 त्र्याञ्जनमञ्जनसम्बन्धिन्यरत्नौ त्वञ्जने पुमान् ॥५६॥  
 तथा सप्तदशरत्ने यूपस्याद्याचतुथके ।  
 आढम्बरोऽस्त्री सरम्भे गजगर्जिततूर्ययो ॥५७॥  
 युद्धवादिमनिर्घोष आभोगक्रोधयो पुमान् ।  
 आढकोऽस्त्री चतुष्प्रस्थ तुवर्यामाढकी मता ॥५८॥  
 आणि स्त्रीपुसयोयुद्ध रथाद्यक्षाग्रकीलके ।  
 जङ्घामर्मणि नि श्रे या नि श्रणिद्वारि चोचते ॥५९॥  
 आतङ्को रोगसत्तापशङ्कासु मुरजध्वनौ ।  
 आतञ्चन प्रतीवापजवनाप्वायनेपु नप् ॥५१॥  
 आतति स्यादधकारे विस्तारे पथि च स्मृता ।  
 आतपण ग्रीणने स्यान्मङ्गलाऽऽलेपनेपि च ॥५११॥  
 आतिथ्यो नाऽतिथावुक्तो तिथ्यर्थे तु त्रिलिङ्गक ।  
 आत्मज पुसि कामेऽथात्मजमुक्त मनोसृजो ॥५१२॥  
 द्वे त्वपत्ये त्रिषु त्वेष स्वस्माज्जाते प्रकीर्त्तित ।  
 आत्माकचद्रवाताग्निजीवेषु परमात्मनि ॥५१३॥  
 देहे यत्ने घृतौ कीर्त्तौ बुद्धौ मनसि च श्रुते ।  
 धर्मे स्वभावे पुत्रेऽर्थे परस्य प्रतियोगिनि ॥५१४॥  
 आत्मनीन सुते स्याले द्वयोस्त्रिष्व्वात्मनो हिते ।  
 विषके प्राणधारे वंशस्त्वाहदूषके ॥५१५॥

१ आढकोऽस्त्री चतुष्प्रस्थपरिमाणे प्रयुज्यते ।

आढकी तुवरीसञ्जाम्ये स्त्री परिकीर्त्तिता ॥

आमभूर्मन्मथे चैव विरिञ्चेपि पुमान्मत ।  
 आत्मयोनि पुमाकामे शिवे ब्रह्मणि मारुते ॥५१६॥  
 आत्मवीर प्राणवति श्यालवत्र विदूषक ।  
 आत्माश्यात्माशिनी मत्स्ये त्रि तु स्यादात्मभक्षिणि ॥५१ ॥  
 आत्मीयस्तु निजेऽपि स्यामित्रे चाप्यभिधेयवत् ।  
 आत्रेयी ऋतुमया च नदीभदे च कीर्त्तिता ॥५१८॥  
 क्ली तु सामविशेषे स्याद्द्वयोस्वन्नरपयके ।  
 अबहु वेव बहुषु वत्रयाऽप्यवाचिन ॥५१९॥  
 आथर्वणस्समूहेऽथवणामाम्नाय र्गम्यो ।  
 तेषां शातिगृहेऽपि स्यासामभदेऽप्यथवणाम् ॥५२ ॥  
 शना देरीरिति ह्यस्यामृचि दृष्टे नपुसकम् ।  
 वा यलिङ्गे तु सम्बन्धिमित्रेऽपि स्यादथवण ॥५१॥  
 आदर्शा दपणे टीकाप्रतिपुस्तकयोरपि ।  
 आदानमश्वालकारे ग्रहणे चोत्तरायणे ॥५२॥  
 आदि-योऽर्केऽप्युपेद्रेऽथ द्वयार्देवेऽपि चादिते ।  
 अपयआदियस्य त्रि वाटियाऽऽदित्ययोगिनि ॥५२३॥  
 आदिष्टमादेशिते त्रिराज्ञप्तोच्छिष्टयोस्तु नप ।  
 आदीनव पुमा दोषे परिक्लेशदुरतयो ॥५२४॥  
 आहत सादरेऽपि स्यादर्चितेऽप्यभिधेयवत् ।  
 आदेष्टाऽदशके त्रि स्यान्नाऽध्वरव्रतिनि स्मृत ॥५२५॥  
 आद्या स्त्रियां शक्तिदेयां याद्य पूरप्रधानयो ।  
 अदनीये च पुलिङ्गस्त्याद्यो वेधसि कीर्त्तित ॥५२६॥  
 आधान तु विधाने स्यात्रेताग्न्याधान एव च ।  
 आधार आलवालेऽम्बुवधेऽधिकरणपि च ॥५२ ॥  
 आधिर्मानसपीडाया व्यसने बन्धकेपि च ।  
 प्रयाशायामधिष्ठाने पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥५२८॥  
 आधेयमग्न्याधाने त्रिस्त्वाधारस्यनिधेययो ।  
 आभ्मात शादते दग्धे त्रिषु वातरुगतरे ॥५२९॥



आबद्धो दृढबधे स्यात्प्रेमालकारयोक्त्रयो ।  
 आबधस्तु पुमान्योक्त्रे बधने च प्रकीर्तित ॥५४४॥  
 आभील कष्टरजसोस्त्रि तु तद्वति भीषणे ।  
 आभोगो वारुणच्छत्रे परिपूणवयत्नयो ॥५४५॥  
 आभ्यन्तर तु त्रिष्वभ्य तरजादावथो नपि ।  
 रसभावाङ्गहाराद्यैर्नत्तने रूपकाश्रये ॥५४६॥  
 आमयय मत ज्ञान निश्चये स्मरण तथा ।  
 आमो रुकतद्भिदो पुसि स्यादपक्वेयलिङ्गक ॥५४ ॥  
 आमन्त्रणाम त्रण चाह्वानऽनुज्ञापनेऽपि च ।  
 कामचाराभ्यनुज्ञानेऽपीद द्वयमुदीरितम् ॥५४८॥  
 आमन्त्रितस्त्वनुज्ञात त्रिरनुज्ञापतेऽपि च ।  
 सम्बोधनविभक्तौ तु भवेदामन्त्रिता न ना ॥५४९॥  
 आमन्त्रित पुन क्लीब स्यादामन्त्रणकर्मणि ।  
 आमिष त्वस्त्रिया मासे समोगे भोग्यवस्तुनि ॥५५ ॥  
 उत्कोचेऽथ स्त्रियां मास्याऽऽरये गधद्रव्य आमिषी ।  
 आमोदस्तु पुमा हर्षेऽतिनिर्हारिण चोच्यते ॥५५१॥  
 विमर्दोत्थ परिमले ग धे जनमनोहरे ।  
 आमन्नाय उपदेशेऽपि सप्रदायेपि कीर्तित ॥५५२॥  
 पाठाभ्यासे च वेदे च पुलिङ्ग सप्रयुज्यते ।  
 आय पुसि धनोपत्तौ स्वामिभागे तथागतौ ॥५५३॥  
 आगतौ च तथा राशौ लग्नादकादशे मत ।  
 अयसम्बन्धिनी त्वायी त्रिलिङ्गा परिकीर्तिता ॥५५४॥  
 त्रिरायत स्यादाकृष्टे दीधवस्तुन्यथायतौ ।  
 क्लीबमाकणकर्षा च शराकर्षेऽङ्गुलाधिके ॥५५५॥  
 आयतस्तु पुमान्कश्चिच्चाचष्टे ब्राह्मणे द्वयो ।  
 भवेदायतन दवालये गोहे च तोरणे ॥५५६॥  
 शरये स्थानमात्रे च लिङ्ग चास्य नपुंसकम् ।  
 आयतिर्दीर्घताया स्त्री प्रभावागाभिकालयो ॥५५ ॥

आयत्तिस्तु स्थिरा स्नेहे वशित्वे वामवे बले ।  
 आयस त्रयसि क्लीबमय सम्बन्धिनि त्रिषु ॥५५८॥  
 त्र्यायस्त कृपिते क्षिप्ते क्लेशते तन्त्रिते हते ।  
 आयान वश्वभूपायामागतौ च प्रकीर्तितम् ॥५५९॥  
 आयाम इति शब्दोऽय पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ।  
 दैर्घ्ये रज्जुपटादीनाममितश्च विकषण ॥५६॥  
 आयासस्तु प्रयत्नेऽपि क्लेशेऽपि परिकीर्तित ।  
 आयुशदो मनुष्ये द्वे शरुते तु पुमानयम् ॥५६१॥  
 स्यात्पुरुषवत्त्वयो पुराणप्रथिते सुते ।  
 आयुध वारिण क्लीब शस्त्रे त्वानुधमस्त्रियाम् ॥५६॥  
 आयुर्नपुसक सात धने वत्सरनीरयो ।  
 जीविते विश्वतो दाग्नित्यारण्यकसामनि ॥५६३॥  
 तथा जीवितकालेऽपि क्रतुमेतेऽपि पुनपो ।  
 आयुष्मान्योगभेदे ना वाच्यवचिरजीविनि ॥५६४॥  
 आयोगो यापृतौ बोधे गन्धमायाद्युपाहृतौ ।  
 आयोगो द्वे वैश्यायां शूद्राज्जाते निषादत ॥५६५॥  
 शूद्रायामपि जातेऽथ त्रिष्वयमयपत्त्रिण ।  
 सम्बन्धिन्यायोगवश्चायोगव्यायोगव तथा ॥५६६॥  
 आयोधन वधे युद्धे नपुसकमुदाहृतम् ।  
 आरस्त्वङ्गारके गत्यामागतौ च शनैश्चरे ॥५६७॥  
 आरा चर्मप्रभेदियामथार पित्तले नृ नप् ।  
 अरसम्बन्धिनि त्वारमारश्चारी च वायवत् ॥५६८॥  
 आरक्षो गजकुम्भाध प्रदेशे चापि रक्षिणि ।  
 आरङ्गा देशभेदे पु भूम्यारङ्गस्तु तद्भवे ॥५६९॥  
 आरङ्गी च द्वयोरुक्तौ विशेषात्तज्जघोटके ।  
 आरम्भस्तु त्वरायामप्युद्यमे वधदर्पयो ॥५७॥  
 उपक्रमे च निर्माणे पुँल्लिङ्ग परिकीर्तित ।  
 आराग्र स्यादिषोरग्रेऽप्यारायाश्चाग्रभागके ॥५७१॥



आलिङ्गय पटहे मध्यम त्रिस्त्वालिङ्गनीयकं ।  
 आलीढ स्थितिभटे ध्वन्विना स्यात्स्थीयते यदा ॥१॥  
 वाममाकुञ्च्य ऋण दक्षिण प्रततग्रत ।  
 क्लीनमास्यादने चैतत्रिषु त्राम्वादित भवेत् ॥५८७॥  
 आलु श्लेष्मातक श्लष्मण्यपि पुसि प्रयुज्यत ।  
 नपुसक भलके च मूले चाप्यथ नप्त्रिया ॥५८८॥  
 चक्रोष्ट-सङ्गके कन्दे ककया तु स्त्रियामियम् ।  
 आलु स्त्रीटिड्भि योनिव्याधावपि घनस्पता ॥५८९॥  
 आलेप पुनरालिप्तावनुलपनवस्तुनि ।  
 आलोकस्तु नृलिङ्ग स्यादुद्योते दर्शने तथा ॥५९०॥  
 आवन्त्योऽवन्तिराटपुत्रे मर्यजात्यतर पुन ।  
 विप्रपूर्वकविप्रस्त्रीजाते त्रात्याद्व्याभवेत् ॥५९१॥  
 आवर्त्तोऽम्भोभ्रमे रोमप्रभृतेऽलिते चये ।  
 आवर्त्तनायामावृत्ता चिन्तने च पुमान्मत ॥५९२॥  
 अथावर्त्तनमावृत्तौ नपुसकमुदाहृतम् ।  
 आवर्त्तना स्यादभ्यासे सूत्रस्य वलने स्त्रियाम् ॥५९३॥  
 आवसथ्यस्त्वावसथऽप्यग्नौ चाहवनीयत ॥  
 प्राग्देशस्थे प्रयुक्तोऽसौ पुलिङ्गे शब्दवेदिभि ॥५९४॥  
 आवाप आलवाले च प्रक्षेपे न्यसने तथा ॥  
 परिक्षेपे च वपने भाण्डे चापि पुमान्मत ॥५९५॥  
 आवापक पारिहार्ये स्यादावसरि तु त्रिषु ।  
 आविक त्र्यवियुक्ते क्लीत्वविरोमजकम्बले ॥५९६॥  
 आविद्ध कुटिले क्षिप्ते वाच्यवच्च पराहते ।  
 आविल कल्लुषेऽपि स्याद्वायवश्चाप्यनुज्ज्वले ॥५९७॥  
 आवृत्स्त्रियामावृत्तया यागादिकर्मणाम् ।  
 कल्पे च परिपाठ्या च साम्नो गायत्रसङ्गिन ॥५९८॥

द्वितीयपादगीत्या च तृतीयार्चिकपवणो ।  
 आवेशन शिपिशाले भूतावेशप्रवेशयो ॥५९९॥  
 आवेष्टको वष्टके त्रिर्वाटे पुलिङ्ग उच्यते ।  
 समीपेऽप्यथ भुक्तौ च व्याप्तावाश पुमान्त ॥६ ॥  
 आशङ्का तु भये सम्भावनायामपि च स्त्रियाम् ।  
 आशयस्तु पुमान्स्थानेऽभिप्रायाधारयोरपि ॥६ १॥  
 कोष्ठागारे जलस्थाने वासनायां च चेतसि ।  
 विभव पनसे सवेऽथ त्रि कृपणजीर्णयो ॥६ २॥  
 आशरो राक्षसे द्वे ना त्वग्नौ व्यशरयोगिनि ।  
 आशा स्त्री दीर्घतृष्णाया दिन्यवान्तरदिश्यपि ॥६ ३॥  
 आशाबध्ना समाश्वासे तथा मकटजालके ।  
 त्रिराशिन भवस्तत्र करणे नौदनादिना ॥६ ४॥  
 येनाशितो भवेद्भावे वाशितस्यास्त्रिया मत् ।  
 आशिरस्तु पुमान्वह्नौ विष्णो सूर्ये च भोजने ॥६ ५॥  
 तथा क्षीरविकारे स्यादथ बह्वाशिनि त्रिषु ।  
 आशीरिच्छा हिताशसा सपदष्टास्वपि स्त्रियाम् ॥६ ६॥  
 आशु पाटलसङ्गे ना व्रीहिमदे दिवाकरे ।  
 अलकारसुवर्णे तु क्ली शृङ्गीकनकाह्वये ॥६ ७॥  
 असवगामिचच्छीघ्रेऽव्यय सत्त्वे पुनस्त्रिषु ।  
 आशुराश्वीति चाप्यश्वे पुस्त्रियो परिकीर्तितम् ॥६ ८॥  
 आशुशुक्ष्णिरारयात् पुमावह्नौ रवावपि ।  
 आशौचनि पुमानग्नौ च द्रऽपि परिकीर्तित ॥६ ९॥  
 आश्रमोऽस्त्री मुनिवने ब्रह्मचर्यादिके मठे ।  
 आश्रयाश पुमावह्नौ त्रिषु चाश्रयनाशके ॥६१॥  
 आश्रवोऽङ्गीकृतौ क्लेशे [पुसि] त्रि तु स्याद्वचनस्थिते ।  
 आश्राणा स्त्री यवाग्वा स्यापक्वे त्वन्यत्र मद्यवत् ॥६११॥  
 क्षीराच्च हविषश्चाथामृत क्षीरे हविष्यपि ।  
 आश्लेषासर्पभे स्त्री स्यादाश्लेषस्तु पुमानयम् ॥६१२॥



रसारयधातौ शारीरं स्त्रीणां चालिङ्गने मत ।  
 स्त्रियामाश्वयुजी पाणमासी भदेऽश्वयुग्युते ॥६१३॥  
 ना तु मास्याश्विने त्रिस्तु जातश्विन्यारयकालके ।  
 आश्विना आरयायिकाश आशुक्षेपे च त्रिप्रमे ॥६१४॥  
 आश्विनो मास्याश्वयुजे क्ली तु शास्त्रातरे क्रतौ ।  
 सम्बन्धिनि त्वश्विनोश्चाश्विन्याश्च त्रिषु कीर्यते ॥६१५॥  
 आश्विनी स्त्रीष्टकासु स्यादग्निचित्यगतासु च ।  
 अश्विनीनक्षत्र क्ते तथा स्या पूर्णिमान्तरे ॥६१६॥  
 आषाढ शुचिमासेऽपि व्रतिदण्डे नगान्तरे ।  
 प्रलये पूर्णिमाया वाषाढाऽऽषाढक्षमायसा ॥ १७॥  
 आष्ट नपुसके प्रोक्तमाकाशे किरणऽपि च ।  
 आस्मृतौ कोपसतापावाकृतिष्वपि चाव्ययम् ॥६१८॥  
 आस स्यात्क्षेपणे चापे चेशुपक्षिभिदो गुमान् ।  
 कैवर्तीमुस्तकारये तु स्यात्स मुस्तका तर ॥६१९॥  
 आसक्तमधकारे क्ली त्रि वास जनकर्मणि ।  
 आभत्तिस्तु स्त्रियां लामे सानिध्ये सगमेपि च ॥६२॥  
 आसन गात्रविन्यासभेदे पद्मासनादिके ।  
 यात्रानिवृत्तौ पीठं च गजस्व धे नपुसकम् ॥६२१॥  
 आसना चासन चेति क्रियायापस्तितो न ना ।  
 आसनी विपणौ स्त्री स्यादासन पुंसि जीरके ॥६२२॥  
 आसन्दस्तु पुमान्विष्णावासन्दी वेत्रनिमित्ते ।  
 स्त्रियां स्यादासने कैश्चिदुक्तैवाऽऽसनमात्रके ॥६२३॥  
 आसन्नो मद्यभेदेऽप्यपक्वेक्षुरससाधिते ।  
 आसुत्पारये तथा मद्यसंघाने पूगपादपे ॥६२४॥  
 आसारी स्त्री स्थले सार्थे त्वासा श्रण्डवर्षणे ।  
 गङ्गां सुहृद्वले सैन्यग्रसरे प्रसृतावपि ॥६२५॥  
 त्रिगसुतीबल कल्या पाले ना सोमयाजिनि ।  
 आस्कन्दन तिरस्कारे रणे सशोषणेपि च ॥६२६॥

स्यादास्तरणमास्तीर्ये कुशे चास्तीणवस्तुनि ।  
 आस्था त्वालम्बनास्थानयत्नापेक्षास्विय स्त्रियाम् ॥६२॥  
 प्रतिज्ञाया च तापर्ये गोष्ठ्या चापि प्रयुज्यते ।  
 आस्थायना प्रतिज्ञाया सदस्याक्रमणे तु नप् ॥६२८॥  
 आस्पद तु भवेत्कृये स्थाने चापि नपु सकम् ।  
 आस्फोटनी वेधन्या स्त्र्यास्फोट वास्फोटना न ना ॥६२९॥  
 आस्फोटो नाऽर्कपर्णेऽपि पलाशे कोविदारके ।  
 आस्फोता गिरिकर्ण्या च वनमल्लयामपि स्त्रियाम् ॥६३॥  
 आस्या स्यादासनायां स्त्री मुखे त्वास्य विलेज्य च ।  
 त्रि तु तद्भवतत्साधुतद्धितक्षेप्यवस्तुषु ॥६३१॥  
 आस्यप्रिया निष्पावारयधाये त्रि तु मुखप्रिये ।  
 आस्र क्ली रुधिरे वाष्पे कचे ना त्र्यस्रयोगिनि ॥६३२॥  
 आह क्षेपेऽतियोगे च परिकीर्त्तितमययम् ।  
 आहतस्त्वानके क्ली तु वस्त्रयो प्रननूत्नयो ॥६३३॥  
 मृषार्थवाक्ये तु हते गुणिते ताडिते त्रिषु ।  
 आहतिस्त्री हतौ यज्वस्तुगासादनकर्मणि ॥६३४॥  
 आहार ओदनेपि स्यादानीतौ भोजनेऽपि च ।  
 आहार्यमाहर्तव्ये यमिनेये भूषणादिभि ॥६३५॥  
 आहो धिगर्थे शोके च करुणाथविषादयो ।  
 सबोधने प्रशसाया विस्मये पादपूरणे ॥६३६॥  
 अस्त्रियामाह्निको ग्रन्थाऽवच्छेदे मेधवपुन ।  
 अह्निर्वर्तनीयादौ क्लीब स्यान्नैयकेश्शने ॥६३॥  
 आह्वा स्त्री नास्ति कण्ठे च कथायामपि कीर्त्तिता ॥६३७॥

१ आहत प्रत्यय स्त्रे क्ली नववस्त्रेपि ताडये ।  
 गुणनेप्यथ पुष्टिञ्च आनके परिकीर्त्तित ॥

इ

इ खेदे पश्योक्तौ चापाक्रतायनुरुम्पने ॥६३८॥

इ पुमास्तु मत कामे ।

इक्षुकाण्डोऽस्त्रिया मुञ्जे काशे चम्बन्तरपि च ॥६३९॥

इक्षुगन्धा स्त्रियामुक्ता काकिलाभ इति श्रुतं ।

आनूपे कण्टकिस्तम्ने पिदारीकाशगोक्षुरे ॥६४॥

इक्षुर कोकिलाक्षे च काशे गोक्षुरकेऽपि च ।

पुमानिक्षुरस काशे योगार्थे च प्रकीर्तित ॥६४१॥

इक्ष्वाकुर्मदनद्रौ ना वैम्वतमना सुते ।

तित्कालावां पुनरियमिक्ष्वाकु स्त्री प्रकीर्तिता ॥६४॥

इक्ष्वाकुमुते जङ्गमे च ना ज्ञानेङ्गितयोर्मत ।

इक्षुदी तापसतराविक्षुदोऽपि द्वयोर्मत ॥६४३॥

योतिष्मत्या स्त्रियामेवेक्षुदीय परिकीर्तिता ।

इज्या दाने च यज्ञे च पूजायां सङ्गमे स्त्रियाम् ॥६४४॥

जनयां गवि कुड्विन्या श्रेष्ठे तु त्रिगुरौ तु ना ।

इडीट च त्रिषु नाथे स्याद्वसुधायां स्त्रियामिमे ॥६४५॥

बुधपन्यामिडेलान्नाडीभेदे च कीर्तिता ।

जनयां देवताभेदे भा भूगोस्पर्गवाक्ष्वपि ॥६४६॥

इत स्मृते गतेष्येतद्वाच्यमत्परिकीर्तितम् ।

इतर पामरेऽयस्मिन्नायवत्परिकीर्तित ॥६४७॥

इति हेतौ प्रकारे स्यात्परकृत्यनुकर्षयो ।

निदर्शने प्रकरणे समाप्तौ च प्रकाशने ॥६४८॥

भेदेदितिकथाऽपार्थवाच्यश्रद्धेयनष्टयो ।

इत्या स्त्रियां गतौ चैव शिविकायां च कीर्तिता ॥६४९॥

इत्वर्यसत्यां स्त्री त्रिस्तु गवरे करनीचयो ।

इदानीं वाक्यभूषायां सम्प्रत्यर्थेऽपि दृश्यते ॥६५॥

इद्ध स्यादातपे क्लीबं दीपिते त्वभिधेयवत् ।

इध्मवाहो दृढच्युत्ताम्न्यौ त्रि त्विध्मवाहके ॥६५१॥

इनो नृपात्मस्वर्येषु त्रि तु स्वाम्याढ्ययोर्मत ।  
 इन्दीवरा शतावर्या स्त्री क्ली कुवलये भवेत् ॥६५२॥  
 इन्दुर्ना यज्ञशशिनो स्त्रीकपूरेऽप्सु च स्मृतम् ।  
 स्त्रियामिदुकलाश द कविभि परिकीर्तित ॥६५३॥  
 गुह्यचीसामलतयोर्यवानाच द्रलेखयो ।  
 इ दुका तश्च द्रका ते थे दुका ता निशि स्त्रियाम् ॥६५४॥  
 इ दुजा नर्मदानद्यामि दुज स्याद्बुधग्रहे ।  
 राकाभोजस्वप्ननदीभेदेष्वि दुमती मता ॥६५५॥  
 इ दुलेखा स्मृता सोमलताशशिकलासु च ।  
 इ द्र पुरन्दरे स्वर्ये स्वर्येषु द्वादशस्वपि ॥६५६॥  
 स्याद्विशेषत एकस्मिन्योगभेदेऽन्तरात्माने ।  
 विषमदेऽश्मन्तके च पत्न्यौ स्यान्नामपूर्वक ॥६५॥  
 इ द्रकोशो गृहस्याङ्ग स्यात्तमङ्गकनामनि ।  
 इ द्रस्य कोशेऽपि स्पष्ट पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥६५८॥  
 स्यादि द्रमह इ द्रस्योत्सवे ना द्वे पुन शुनि ।  
 इ द्रष्टृक्षस्तु ककुभ कुटजे देवदारुके ॥६५९॥  
 इ द्रष्टृद्विस्तु निमुष्कहये ना स्त्रो द्रसम्पदि ।  
 इ द्रा तु कविभि श्रोक्ता स्त्री फणिञ्जकभेषजे ॥६६॥  
 इ द्राणी रतबधे स्त्री पौलोमी सिधुवारयो ।  
 स्रक्ष्मैलाया तथा स्थूलंलायामेषा क्वचि मता ॥६६१॥  
 क्लीबमि द्रायुध शक्रचापइ द्रायुधा पुन ।  
 अचिकित्स्यविषाया स्यात्सविषाणा जलौकसाम् ॥६६२॥  
 षण्णामेकजलकाया स्त्रियामश्वा तरे पुन ।  
 कृष्णनेत्रसमायुक्ते द्वयोरि द्रायुधो मत ॥६६३॥  
 इन्द्रिय चेतसि धने हृषीके रेतसि स्मृतम् ।  
 अथाभिधेयव चैतदि द्रसम्बन्धिनि स्मृतम् ॥६६४॥  
 इ धन त्वग्न्यथकाष्ठे दीपनेऽपि नपुसकम् ।  
 इभ्य आढ्ये त्रिष्वथेभ्य आहृत्तिवात्तिङ्गने भवेत् ॥६६५॥

तथा करेणुश लम्बोस्त्रियामव प्रयुयते ।  
 इरा दिपि च दत्यान्ने तथा भूवाक्सुराम्बुषु ॥६६६॥  
 इरावा निरयायुक्ते वाच्यवत्स्त्री तिरावती ।  
 नदीमात्रेऽपि बाह्वीरुब्रह्मादितिनीष च ॥६६७॥  
 हरिण त्रिषु शूये स्यादूपर मित्रतागति ।  
 कलोव तिरिणमेतत्स्याद्दुर्गे तद्वद्वनेऽपि च ॥६६८॥  
 बुधपत्यामिलेडावभाडीभेदे च कीर्त्तिता ।  
 जनया देवताभटे भाभूगास्त्रगवाक्ष्वाप ॥६६९॥  
 इवक सामभद क्ली यापकं त्वभिधेयवत् ।  
 इत्वका मृगशीर्षे स्त्रिया काले च तद्युते ॥६७०॥  
 इत्वल पुसि यूपे द्वे त्विल्वलो मत्स्यरक्षसा ।  
 मृगशीर्षशिरस्तारास्त्रिवला कीर्त्तिता स्त्रिय ॥६७१॥  
 इषिराग्नाविषा साम्नश्चषिरारयस्य द्रष्टरि ।  
 नपुसक तु यवस इषिरं परिकीर्त्तितम् ॥६७२॥  
 इषीकास्तु नृभूमि स्फुर्दक्षिणापथवर्त्तिनि ।  
 नीष्टुद्भद तृणस्तस्वे तूलिकायां विय स्त्रियाम् ॥६७३॥  
 इषु स्त्रीपुसयोर्वाणे क्रतुभेदे तु पुस्ययम् ।  
 विष्कुत्योस्तूमयो स्त्रीत्व इषुरेषा प्रकीर्त्तिता ॥६७४॥  
 इष्ट त्रि वाशसितेऽपि पूजितेऽपि प्रियेऽपि च ।  
 यागक्रियाकर्मभूते पर्याप्तऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥६७५॥  
 अथच्छायां च यजने यज्ञदाने नपुसकः ।  
 इष्टगध सुगधौ स्यात्त्रिषु क्लीब तु बालके ॥६७६॥  
 इष्टिर्मताऽभिलाषे स्त्री सग्रहलोकयोगयो ।  
 कलत्रे त्वपरेऽथञ्च पुस्याऽऽचार्याभिलाषयो ॥६७७॥  
 इष्वा स्त्री पुत्रसन्तत्यां कुटुम्बे चेति केचन ।  
 इष्वासस्त्रस्त्रियां चापे क्ली त्विषोरासने भवेत् ॥६७८॥  
 इषो श्वेत्तर्यय शब्दो वाच्यवत्परिकीर्त्तित ॥६७९॥

ई

ई विषादेऽनुकम्पाया लक्ष्म्या पुनरनव्ययम् ॥६९॥  
 ईक्षण नयने क्लीब दृग्व्यापारेऽपि कीर्तितम् ।  
 ईडो ना देवताभेदे स्तुतौ त्वक्कौ स्त्रियां क्षितौ ॥६८॥  
 ईतिर्दिम्बे प्रवासे षट्स्वतिष्ठृष्ट्यादिषु स्त्रियाम् ।  
 ईरिण स्यादिरिणवत्रिषु शूये तथोषरे ॥६८१॥  
 सिकतावयपि क्लीब तु स्याद्दर्गे वनेऽपि च ।  
 ईश शिवे प्रभौ च स्यात् समर्थे चापि वाच्यवत् ॥६८२॥  
 ईशान ज्योतिषि क्लीबमीशानस्तु शिवे पुमान् ।  
 ईशाना स्वयमीशिञ्यामीशानी पुयुजि स्त्रियाम् ॥६८३॥  
 ईश्वरस्त्रि प्रभौ चाढ्ये ना शण्डे शिवकामयो ।  
 ईश्वरा स्वयमीशिञ्या पुयोगे त्वीश्वरी मता ॥६८४॥  
 ईश्वरप्रिय एष द्वे तित्तिरौ त्रीश्वरलमे ।  
 ईषको गतुर्द्विसित्द्रष्टृषूक्ताऽभिधेयवत् ॥६८५॥  
 ईषा स्त्री रथसीरादिदण्डके परिकीर्त्तिता ।  
 उक्ता प्रमाणभेदेऽपि चाष्टाशीतिशताङ्गुले ॥६८६॥  
 ईषिका हस्तिनो नेत्रकूटे स्त्री परिकीर्त्तिता ।  
 ईष्मो वायौ वसते च पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥६८७॥  
 ईस दुःखभावने कोपे चाव्यय परिकीर्त्तितम् ।  
 ईहा स्त्रियामुद्यमे च वाञ्छायामपि कीर्त्तिता ॥६८८॥  
 ईहामृगो वृके द्वे स्यात्पुंसि स्याद्रूपकातरे ॥६८९॥

उ

उ सम्बोधनरोषोत्थोरनुरुम्पानियोगयो ।  
 पदस्य पूरण पादपूरणे चाव्यय स्मृतम् ॥६९०॥  
 उ पुमानुच्यते विष्णौ शि प्योष्ठ्यस्वरे तथा ।  
 उक्ता स्येकाक्षरच्छन्दस्युक्त स्याद्भाषिते त्रिषु ॥६९१॥

उक्तं नपुसकं प्रोक्तं सामस्तोत्रेषु च त्रिषु ।  
 परेष्वग्निष्टोमसाम्ना आविथक्ये सामलक्षण ॥६॥ १॥  
 शस्त्रारययागमत्रेषु सामवेदे च साम्नि च ।  
 उक्षा पुस बलीपदे त्रिषूक्ष्णी महति स्मृता ॥६॥ २॥  
 उक्ख पुसि स्फिप्रि परे कणपाश्वरेऽप्यधीयते ।  
 ओखीयान्तं च शाखायामृषिमदे प्रवक्तारि ॥६॥ ३॥  
 स्त्री तु स्थायामुखा यज्ञविदा मुरयाऽग्निसमृते ।  
 साधने चतुरस्रे च मृपात्रेऽग्निप्रयोजिते ॥६॥ ४॥  
 उग्र शिवे ना द्वे स्त्रोहशूद्राया क्षत्रियात्सुते ।  
 विप्रासुपे च स्त्रोहयां शूद्रायामप्यथ स्त्रियाम् ॥६॥ ५॥  
 उग्र नपुसके प्रोक्तं घटिकालवणं तथा ।  
 कालशये च रौद्रे तु त्रिलिङ्गं परिकीर्तितम् ॥६॥ ६॥  
 उग्रगन्धाज्जमोदायां वचायां छिलिकोपधौ ।  
 ना सिते लशुने चीर्णावृन्तार्यफलप्रीरुधि ॥६॥ ७॥  
 उग्रा वचा खराङ्गारयाजमोदाभेदयोर्मता ।  
 उचितन्तु स्वभावे क्ली निश्चिताभ्यस्तयो पुन ॥६॥ ८॥  
 योग्ये चिरानुयाते च त्रियुक्तेऽनुमतेपि च ।  
 उच्चयो वस्त्रनीव्या स्याद्वस्तादाने च चौर्यत ॥६॥ ९॥  
 अध स्थितस्य पुष्पादेरुच्चयं परिकीर्तितं ।  
 उच्चलं व्युच्चलितरि क्ली चापान्तरचेतसो ॥७॥ १॥  
 उच्चिङ्गटस्तृणगडमत्स्ये द्वे कोपने त्रिषु ।  
 उच्चैश्च श्रवास्तु नेद्राश्वे घोटमात्रे तु स द्वयो ॥ १॥ २॥  
 उच्चकर्णे तु लिङ्गादिप्रयोज्यमभिधेयवत् ।  
 उच्छीतशिष्टिद्विमे द्वे स्यात्स्वप्ने पुसि प्रकीर्तितं ॥ २॥ ३॥  
 उच्छीर्षमुपवर्हे क्ली त्रिषु तूच्छिरसि स्मृतं ।  
 उच्छुनं पुसि वैशाखे त्रि तूद्रतश्नादिके ॥७॥ ४॥  
 उच्छ्रितं त्रिषु सजातप्रबुद्धोत्थापितोन्मते ।  
 उच्छवास आख्यायिकांश्चे प्राणनेऽपि पुमानयम् ॥७॥ ५॥

उज्जट शूयदशे त्रिस्तूर्ध्वीभूतजटादिषु ।  
 उज्जृम्भित त्रिषूत्फुले चेष्टायां तु नपुंसकम् ॥ ५॥  
 उज्ज्वलो दीप्तविशदविकाशिष्वभिधेयवत् ।  
 शृङ्गारे तु रसे प्रोक्तो नित्य पुलिङ्ग उज्ज्वल ॥ ६॥  
 उज्ज्वक स्नेहशूये स्यादुज्जितर्यपि वाच्यवत् ।  
 उटजोऽस्त्री पणगृहे गृहमात्रेऽपि कीर्त्तित ॥ ७॥  
 उडुर्विप्रे द्वयोरुक्तो नक्षत्रे नपस्त्रियोभवेत् ।  
 उडुपोऽस्त्री लवे प्रोक्तश्चद्रे पुंसि प्रकीर्त्तित ॥ ८॥  
 उड्डीशो ग्रन्थभेदे स्यात्पुंसि चण्डीपतावाप ।  
 उत्प्रश्ने च वितर्के चाप्यव्यय परिकीर्त्तितम् ॥ ९॥  
 उताऽत्यर्थे विकल्पे च तर्के प्रश्ने समुचये ।  
 उताहो इति सप्रोक्त परिप्रश्नविचारयो ॥ १०॥  
 उत्कटस्तूड्डटे मत्त तीत्रेऽपि त्रिषु कीर्त्तित ।  
 उत्कट तु भेवत्क्लीब योगिनामासनान्तर ॥ ११॥  
 उद्गटक्षीबयोस्त्वेतदुत्कट त्रिषु कीर्त्तितम् ।  
 क्लीबमुत्कलिक चित्ते भवेदुत्कम्पिते त्रिषु ॥ १२॥  
 कथितो कलिकोत्कण्ठाहेलासलिलवीचिषु ।  
 उक्तीण स्यादुल्लिखिते नाप्युर्यारये जलाशये ॥ १३॥  
 उत्कृष्टस्तु प्रकृष्ट स्यादूर्ध्व नीते च वाच्यवत् ।  
 उत्क्षेपण तूत्थिते स्याद्व्यजने धान्यमर्दने ॥ १४॥  
 उत्तस कणपूरेऽपि शस्त्रेऽपि च न स्त्रियाम् ।  
 उत्तस शुष्कमासे क्ली त्रिष्वेतत्तु प्रदीप्तयो ॥ १५॥  
 उत्तमस्तिङ्गविभक्तीनामतिमत्रितये त्रि तु ।  
 उत्कृष्टे दुग्धिकाया तु स्त्रियामेवोत्तमा मता ॥ १६॥  
 उत्तर प्रतिवाक्ये क्ली ना विराटसुते तथा ।  
 निम्नादुत्तारणेऽथ स्त्री स्तुषायामञ्जुनस्य च ॥ १७॥



उदीच्ये तूत्तमे चोर्ध्वे पुरे चैवोत्तरस्त्रिषु ।  
 स्यादुत्तराङ्ग द्वारस्य तिर्यङ्न्यस्तोऽध्वादरुणि ॥ १८॥  
 यौगिकेऽर्थेऽस्य लङ्गादि परिज्ञेय प्रयोगत ।  
 उत्तान त्रिष्वनिम्ने स्यादूर्ध्वीकृतपुरोऽशके ॥ ७१९॥  
 उत्ताल तु त्रिषूत्तान उन्नताच्चण्डयोरपि ।  
 उत्रासस्तु भये सप्त-शरत्नेररत्तिके ॥ ७२ ॥  
 यूपस्य मूलादारभ्य द्वितीयेऽपि पुमा मत ।  
 उत्थानमुद्गमे वास्तौ त गहापौरुषु च ॥ ७२१॥  
 रणऽङ्गणे च हर्षे च मलरोग च मुस्तके ।  
 उत्थित प्रोद्यते जाते वृद्धिम यपि वायवत् ॥ ७ २॥  
 स्यादुत्पतनमुत्ता तथाध्वगमनेऽपि च ।  
 उपलोऽस्त्री कुवलये क्लीब कुष्ठारयभपजे ॥ ७२३॥  
 उत्पली तुषचपट्या स्त्रियामेषा प्रकीर्तिता ।  
 उत्पात पुस्यजन्ये स्यात्तथोत्पतनकर्मणि ॥ २४॥  
 उत्पिबो द्वे चक्रोरारयपक्षिण्युपातरि त्रिषु ।  
 उप्रेक्षाऽनवधानेपि का यालङ्कारणा तरे ॥ २५॥  
 उत्फुल करणे स्त्रीणा त्रिषूत्ताने विकस्वरे ।  
 उत्सो योम्यम्बुधौ कूपे जलाधारान्तरे पुमान् ॥ ७२६॥  
 उत्सङ्गोऽङ्क वाराणस्य पूर्वाघ्रेऽर्धस्त्रिषु परम् ।  
 पिण्डिकान्त विभक्तस्य सप्तधास्य चतुर्थके ॥ २७॥  
 अध प्रारभ्य भागे चाग्न्याधानेऽपि प्रकीर्तित ।  
 उत्सर्ग पुभि सामाययाये च त्यागदानयो ॥ ७२८॥  
 उत्सर्जन तु दाने च परि-यागेऽपि कीर्तितम् ।  
 उत्सवो मह उत्सेकामर्षेच्छाप्रसरेषु च ॥ ७२९॥  
 उत्सादना नत्रोच्छेदोन्नत्योरुद्धर्त्तनेऽपि च ।  
 उत्साहोऽध्यवसाये ना सूत्रे च परिकीर्तित ॥ ७३ ॥  
 उत्साहनाऽङ्गाथवाद्यघोषे प्रोत्साहने न ना ।  
 उत्साहा तु स्त्रियामारकूटलोहे प्रकीर्तिता ॥ ७३१॥

उसृष्ट त्रिषु दत्ते च त्यक्तेऽथो देवमारिषे ।  
 मारिषारयस्य शाकस्य भेदप्युसृष्ट एष ना ॥ ७३२ ॥  
 उत्सेधो मकगृह्वजोष्णीषतनूषु च ।  
 असोमदेववर्गस्य चतुर्थे सान्नि चोन्नतौ ॥ ३३ ॥  
 उद्विभागे प्रकाशे च प्राबयास्वास्थ्यशक्तिषु ।  
 प्राधान्ये बधने भावे मोक्षे लाभोष्वकर्मणो ॥ ३४ ॥  
 उदकं त्रिषूत्तरे दिग्देशकालत्रिषये मतम् ।  
 उदङ्मुखेऽप्युदीये स्त्री तूदीची यक्षराडदिशि ॥ ३५ ॥  
 प्रथमा पञ्चमी सप्तम्यथक त्वेषु वाऽव्ययम् ।  
 उदकं तु भवेत्तोये हीबरेऽपि नपुंसकम् ॥ ३६ ॥  
 छदोभेदेऽपि तत्रोक्तं तथैव द्विशतस्वरे ।  
 उदक्या ऋतुमत्यां स्त्री त्रि स्यादुदकसाधुनि ॥ ७३ ॥  
 उदकाह्ने प्रियाचारशूद्रे तु स्याद्द्वयोरयम् ।  
 उदञ्चस्तु पुमावाद्यदण्डे परभृते द्वयो ॥ ३८ ॥  
 उदञ्चन क्लीं स्थायादिपिधाने स्यात्तथोद्गमे ।  
 स्त्रीनपुंसकयोस्तूर्ध्वं गमने स्यादुदञ्चना ॥ ७३९ ॥  
 उदन्तं पुंसि साधौ स्याद्भार्तायामप्युदीरितं ।  
 उदयस्तुदयाद्रौ स्याद्भनोत्पत्तौ तथोद्गमे ॥ ४ ॥  
 उन्नतावुपरिस्थऽपि पूवराजान्तरेपि च ।  
 क्लीं तूद्गतावुदयनं वत्सशागस्त्ययोस्तु ना ॥ ४१ ॥  
 क्लीबं तूदयनीयं यत् यज्ञकर्मन्तरे स्मृतम् ।  
 तद्योगादाहरादिष्वप्ययं शब्दः प्रकीर्तितः ॥ ४२ ॥  
 उदरं तु न ना ज्ञेयं जठरे क्लीं तु सद्युगे ।  
 भवेदुदरस्थिं पुंसि समुद्रे च रवावपि ॥ ७४३ ॥  
 उदकं एष्यत्कालीनफले मदनकण्टके ।  
 अन्तिमेऽव्यये चापि पुमानेष प्रकीर्तितः ॥ ४४ ॥  
 उदाचरग्नौ त्रिपुनरुद्रतार्क्षिणि कीर्तितः ।  
 उदात्तो वागलकारभेदे चोच्चस्वरे पुमान् ॥ ७४५ ॥

त्रिस्तू चै स्वरयुक्ते स्यादयात्यागादिमत्यपि ।  
 उदानस्तूदरावर्त्ते वायुभदे भुजङ्गमे ७४६॥  
 उदारो दातृमहतास्त्रिषु दक्षे च विश्रते ।  
 उदार एष कङ्गा ना त्रिष्वग्राम्यमहात्मना ॥७४७॥  
 दानशौण्डे तथतेषु स्त्र्यर्थे वृत्तिर्यदा तदा ।  
 उदारा चाप्युदारी चैतद्रूपद्वय भवेत् ॥ ४८॥  
 उदास्थित पुमाभिक्षुवेषधारिचरे मत ।  
 शूरातरेऽपि द्वा स्थ तु त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥७४९॥  
 उदित कथितेऽपि स्यादुद्गतेऽप्यभिधेयवत् ।  
 उदीय त्रिरुदग्जादा ह्रीवरे तु नपुसकम् ॥७५॥  
 उदुम्बरो जतुफले देहव्या कुष्ठमिद्यपि ।  
 पण्डके तु पुमानेषाऽथ नृभूमन्युदुम्बरा ॥ ११॥  
 नीवृत सालसञ्जस्यावयवे क्षुद्रनीवृति ।  
 उदुम्बर तु हेमाक्षे क्लीब ताग्र च कीर्त्तितम् ॥ ५ ॥  
 उदूखल गुग्गुलौ स्यात्तथा क्लीबमुलूखले ।  
 उदूह विपुले स्थूल ऊर्ध्वे चाप्यभिधेयवत् ॥७५३॥  
 उद्गता विषमे वृत्तविशेष स्त्री त्रि तूदिते ।  
 भावे क्तप्रत्यये त्वेतदुद्गमे स्यान्नपुसकम् ॥७५४॥  
 उद्गातो चैर्गातरि त्रि पुमास्यादृत्विगतरे ।  
 उद्गीथ ऊर्ध्वास्यशुनां विरावे सामजातके ॥७५५॥  
 द्वितीयभक्तौ साम्नश्च पञ्चधा स्यात्कृतस्य स ।  
 उद्ग्राहितमुपयस्ते त्रिर्बद्धे ग्राहितेऽपि च ॥७५६॥  
 उद्ध शस्ते देहपुटे देहवायावगौ तथा ।  
 उद्धनो यत्र निक्षिप्य काष्ठे काष्ठस्य तत्क्षणम् ॥७५७॥  
 तत्रोद्गतघनादौ तु त्रिलिङ्गोऽयं प्रकीर्त्तित ।  
 उद्गातो मुद्गरेऽपि स्यात्कुदुङ्गे समुपक्रमे ॥७५८॥  
 चरणस्थलने चापि तथोद्धननकर्मणि ।  
 गजस्यमू कर्णला च चूलिकासञ्जकात्परे ॥७५९॥

प्रदेशे मानभेदे च प्राणायामस्य कालत ।  
 यस्य लक्षणमित्युक्त योगशास्त्रविशारदै ॥ ६ ॥  
 चोटिकात्रि परामृश्य जानुस्फोटक्रियास्थ ता ।  
 षट्त्रिंशन्मन्द उद्धातो द्विगुणत्रिगुणै पुन ॥ ६१ ॥  
 मध्यमश्चोत्तमश्चैव प्रथमो द्वादशैव वा ।  
 उद्दण्डपालो न क्ली स्यात्सप्तमस्तस्यप्रभेदयो ॥ ७६२ ॥  
 उद्दन्तुरस्त्रिषूत्तुङ्ग करालो कटदन्तयो ।  
 उद्दामो वरुणनास्थ त्रिरवद्वे विशृङ्खले ॥ ६३ ॥  
 उद्दालस्तु भवेद्वक्षे श्लेष्मातक इति श्रुते ।  
 उन्मते मुकुलाकारे मत्स्यग्रहणसाधने ॥ ६४ ॥  
 स्यादुद्धननमुत्खातौ क्लीब स्त्रीशण्डयो पुन ।  
 स्फ्यनामधेये कुदाले भवेदुद्धननीत्यसौ ॥ ६५ ॥  
 स्यादुद्धरणमुद्धारे वा ताऽन्नेप्यशितोज्झिते ।  
 उत्पाटनक्रियाया च नपुसकमिद मतम् ॥ ६६ ॥  
 उद्धर्षस्तु महे पुसि त्रिषु तूकटहृषके ।  
 उद्धानमुद्गते त्रि स्यात् क्ली चुल्ल्यामुद्गमेपि च ॥ ७६ ॥  
 उद्धार उद्धतावुक्त ऋणे चाष्टद्विके पुमान् ।  
 उद्धृत स्यात्त्रिषूत्क्षिप्ते परिशुक्तोज्झितेपि च ॥ ६८ ॥  
 उद्धध स्वनकाज्जाते क्षत्रियायां द्वयोर्मत ।  
 उल्लम्बने ना तर्वादेर्विशेषाद्धधकारणे ॥ ६९ ॥  
 उद्धुद्धस्तु भवेत्फुले प्रबुद्धेऽप्यभिधेयवत् ।  
 उद्धितु सामभेदे वली स्यादद्धिजे तु स त्रिषु ॥ ७ ॥  
 एकाहक्रतुभेदे तु पुमानुद्धितप्रकार्त्तित ।  
 उद्धिद कूप्यलवणे क्लीब ना तु जलोद्गमे ॥ १ ॥  
 कूपादस्त्रिषु तूद्धिजे तरुगुल्मादिवस्तुनि ।  
 उद्धान सग्रहोद्गत्योर्वनमदे प्रयोजने ॥ ७ २ ॥  
 तथा निस्सरणत्येतन्नपुसकमुदीरितम् ।  
 उद्ग उद्गी जले तौ द्वे ऋषिभेदे तु पुस्ययम् ॥ ३ ॥

उद्वर्तन न नाङ्गस्य मलोन्मदनकर्मणि ।  
 उद्वत्तिहेतुव्यापारे क्लीबे तद्वत्तिवाचकम् ॥ ७४ ॥  
 उद्वत्तो निर्मदगजे पुमानुच्छर्दिते त्रिषु ।  
 उद्वत्सना वधेऽन्यत्र न्यासेऽयत्र स्थितस्य च ॥ ७५ ॥  
 आवाहितस्य देवादरुत्सजनविधावपि ।  
 उद्वह ऊर्ध्ववहने विवाहे तनये पुमान् ॥ ७६ ॥  
 उद्वहन् प्रणीते स्याद्र-वासुद्वहनी मता ।  
 उद्वेग क्ली पृगफले पुमानुद्वेजने भवेत् ॥ ७७ ॥  
 त्रिषु तूद्वतवेगादावद्वग परिकीर्तित ।  
 उन्न स्यात्सुरते क्लीब त्रिषु क्लिन्न प्रकीर्तितम् ॥ ७८ ॥  
 उन्निद्रस्तु भवेत्फुल्ले निद्राहीने च वायवत् ।  
 उन्नेतो हितरि युन्नायेना त्विग-तरे ॥ ७९ ॥  
 उन्मत्त पुंसि धत्तरमुत्तुकुन्दारयवृक्षयो ।  
 फले तु क्लीबमनयोस्त्रि तूमादवति स्मृत ॥ ८० ॥  
 उन्मदस्तु पुमाञ्छर्पे कच्छपे तु द्वयोरयम् ।  
 उमाथ पुंसि हिंसायां कूटयत्रे च कीर्तित ॥ ८१ ॥  
 उन्मार्गे च ध्रुवे चार्यं त्रिलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 स्यादुन्मिषितमुन्मेवे त्रिस्तु सोन्मेवफुल्लयो ॥ ८२ ॥  
 उन्मीलन स्यादुन्मेवे विकासे कुसुमस्य च ।  
 उन्मीलित त्रि सोन्मेवे फुल्ले चोन्मीलने तु नप् ॥ ८३ ॥  
 उप स्यादधिकाऽर्थे च हीनार्थासन्नयोरपि ।  
 उपकण्ठन्तु सामीप्यगुण चास्कन्दिताभिधे ॥ ८४ ॥  
 अश्वस्य गतिभेदेऽथ त्रि तद्वति समीपगे ।  
 उपकारस्तूपकृतौ विकीर्णकुसुमादिषु ॥ ८५ ॥  
 त्रिषूपकारक प्रोक्त उपकारस्य कर्त्तरि ।  
 स्त्री तूपकारिका राजाऽऽवासे पिष्टान्तरेपि च ॥ ८६ ॥  
 उपकार्या राजसन्न्युपकारोचितेऽन्यवत् ।  
 स्मृतोपकुञ्चिका द्रक्ष्मैलायां कृष्णे च जीरके ॥ ८७ ॥

ना तूपकुर्वाणो ब्रह्मचारिभेदे त्रि यौगिके ।  
 उपक्रमश्चिकित्सायामुपधारम्भयोरपि ॥७८८॥  
 उपायपूर्वेऽप्यारम्भे शरेपि परिकीर्त्तित ।  
 अङ्गीकृतावुपगम समीपगमनेपि च ॥ ८९॥  
 उपग्रह पुमावद्या ग्रहणऽप्यनुकूलने ।  
 स्यात्परस्मैपदेऽप्येष आत्मनेपद एव च ॥ ९ ॥  
 उपग्राह्यमुपादये त्रि क्लीब प्राभृते मतम् ।  
 उपचर्या चिकित्साया पूजाया च स्त्रिया मता ॥ ९१॥  
 उपचार उपास्तौ च प्राभृतऽपि पुमा मत ।  
 विसर्जनयस्य स्थाने सकारो यश्च तत्र च ॥ ९२॥  
 भवेदुपचित दग्धे ममृद्धऽपि तथा त्रिषु ।  
 उपचित्रा पृश्निप र्या यग्राधीसज्ञगु मक ॥ ९३॥  
 स्त्रीलिङ्ग नागदया च यागार्थे वभिधेयवत् ।  
 स्मृतोपजिह्विका वम्या जिह्वारोगातरेऽपि च ॥७९४॥  
 उपतापा रोगतापत्वरासु परिकीर्त्तित ।  
 उपदशो विदशे च मेढरोगातरेपि च ॥७९५॥  
 उपद्रवश्चतुर्थ्या सामभक्तावप्युद्रुतौ ।  
 मुरयरोगानुगे रोगे उपाते च त्रिषु वयम् ॥७९६॥  
 उपयाते द्रव क्ली तु द्रवस्य स्यात्समीपग ।  
 उपधाऽयादल पूर्ववर्णे च सुपरीक्षणे ॥ ९ ॥  
 उपधानक्रियाया च छ दनायामपि स्त्रियाम् ।  
 उपधानमुपष्टम्भ उपष्टम्भनाधने ॥ ९८॥  
 उच्छीषकारयगण्डौ च प्रणये च विष तथा ।  
 उपधि स्याद्रथस्याङ्ग औषधेयाभिधे पुमान् ॥ ९९॥  
 उपधानक्रियाया च व्याजे चाऽय प्रकीर्त्तित ।  
 उपधूपित आसन्नमरण त्रि च धूपिते ॥८ ॥  
 उपनाहस्तु वैरानुबधे वीणानिबधने ।  
 पद्मलोचनसन्धिस्थरोगभेदे च कीर्त्तित ॥८ १॥

व्रणादेर्भेषजे बीजेऽप्यय पुसि प्रकीर्तित ।  
 पुमानुपनिधिर्यासे धने च त्रि तु यौगिके ॥८२॥  
 पूये तनी तथा साम्नोर्यद्गान यज्ञकर्मणि ।  
 तत्र गोपनिमत्रपि नप् स्त्री चोपनिबधना ॥८३॥  
 रहस्यार्थे तूपनिषद्वर्मवेदान्तया स्त्रियाम् ।  
 रहसीयपरे ग्राहु प्रथमर्त्ता च योषिताम् ॥८४॥  
 उपप्लवो रिप्लवे चोपरागोत्पातराहुषु ।  
 अथोपमानमोपम्ये सादृश्यत्रिषयि यपि ॥८५॥  
 अथोपयमन प्राक्त विवाहे स्त्रीकृतावपि ।  
 उपर पुसि मद्ये स्यादुपरा तु दिशि स्त्रियाम् ॥८६॥  
 यूपस्य त्वक्षते मूल उपर स्यान्नपुसकम् ।  
 उपरक्तो भवेत्पुसि राहुग्रस्ते तु सूर्ययो ॥८७॥  
 त्रि पुनर्यसनार्ता च जपापुष्पादिवस्तुन ।  
 प्रभोपरक्षिते द्रव्ये स्फटिकादौ च कीर्तित ॥८८॥  
 उपरागस्तु राहौ च सकयारययसनेऽपि च ।  
 सूर्यच द्रग्रहेऽपि स्यादुपरक्त च कीर्तित ॥८९॥  
 उपलो नाभ्युदे रत्नाश्मनो स्यादुपल नपि ।  
 उपलधिर्मतौ ग्रासौ त्वज्ञानेऽपि स्त्रिया मता ॥९०॥  
 उपला शकराया स्त्री दृष्टपु या तथा दिशि ।  
 उपलिङ्ग तु उमरे त्रिस्तु लिङ्गोपगादिषु ॥९१॥  
 उपवर्त्तनमित्येतद्राष्ट्रऽश्वलुठनेपि च ।  
 अथोपवसथ पुसि मनो ग्रामोपवासयो ॥९२॥  
 भवेदुपशय स्थाने यत्रावस्थाय लु धका ।  
 गूढात्मानो मृगा घ्नन्ति तत्र यूपे च याज्ञिका ॥९३॥  
 एकादशकपक्षे य शेते दक्षिणतो भुवि ।  
 दशानामपि यूपानां तत्रायुर्वेदिन पुन ॥९४॥  
 औषधामविहारानामुपयोगे सुखावहे ।  
 याधे सात्म्यमितीद च तत्पर्यायमधीयते ॥९५॥

समीपशयने चापि विदन्ति विदितागमा ।  
 उपसंग्रहण पादग्राहणे नाजमवादाने ॥८१६॥  
 उपेत्यसंग्रहे चापि नपुसकमुदाहृतम् ।  
 उपसत्ति सङ्गमात्रे सेवनेऽपि स्त्रियां मता ॥८१ ॥  
 वाच्यवत्तपसपन्न प्रसीतप्राप्तयोस्तथा ।  
 सुसस्कृतौदनाद्ये च पयाप्ते च प्रकीर्तितम् ॥८१८॥  
 उपसर्ग क्रियायुक्तप्रादौ ससर्ग एव च ।  
 उत्पाने रोगभदे च पुलङ्ग परिकीर्तित ॥८१९॥  
 उपसजनमित्येतद्यत्स्या प्रथमयोदितम् ।  
 उपसृष्टौ तथाद्याह निदाने च शिवस्तवे ॥८२ ॥  
 समासशास्त्रे तत्र स्यादग्रधानेपि तत्तथा ।  
 उपसर्गा तु सामान्यजनसेवन इष्यते ॥८२१॥  
 प्रजनप्राप्तकालाया गवि चैव प्रकीर्तिता ।  
 उपस्थोऽस्त्री भवेन्मेदे क्रोडे मदनमदिरे ॥८२ ॥  
 उपस्पर्शस्तु सस्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।  
 स्यादुपस्पर्शन स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ॥८२३॥  
 उपह्वरोऽस्त्री रहसि समीपेऽपि प्रकीर्तित ।  
 उपाकृतोऽध्वरहतपशौ नोपद्रते त्रिषु ॥८२४॥  
 उपधिधर्मचिन्ताया कुटुम्बे चापृतेऽपि च ।  
 कार्यावयव्यवच्छेत्तर्यपि साध्येन या भवेत् ॥८२५॥  
 ससाधनाव्यापकत्वासमव्याप्तकताऽत्र च ।  
 उपाध्यायोऽध्यापकेऽस्य पत्न्यां रूपद्वयम्भवेत् ॥८२६॥  
 उपाध्यायान्युपाध्यायी या त्वध्यापयति स्वयम् ।  
 उपाध्यायाऽप्युपाध्यायी द्विधा सा परिकीर्तिता ॥८२७॥  
 उपाय पवभेदे स्यात्पूवस्मिन्सामपवणाम् ।  
 निधनात्कर्मणा सिद्धलघुमार्गणसाधने ॥८२८॥  
 राज्ञा च सामदानादौ विशेषाचोपसपणे ।  
 उपाशुर्जपभेदे स्यादुपाशु विजनेऽयम् ॥८२९॥



उपासना न ना सेवाशराभ्यासातिकासने ।  
 उपाहितो नलोपाते पुमानारोपिते त्रिषु ॥८३॥  
 उपेद्र पु सि पिष्णा स्यात्त्रिष्विद्रोपगते मत ।  
 उपोद ऊटे निरुट वायवपरिकीर्त्तत ॥८३१॥  
 उपादका स्त्रियां शाकनलीभदे सुताह्वये ।  
 अभिधेयवदेतच्च भवेदुपगतोदके ॥८३२॥  
 उभ्रस्त्रि पेलवे चोद्धस्थिते पु सि तु गारिदे ।  
 उम् रोषेऽङ्गीकृतौ चापि ग्रन्थेऽप्ययमुच्यते ॥८३३॥  
 उमा शिवास्तसीलक्ष्मीहरिद्राकीर्त्तिकातिषु ।  
 उरो वक्षसि मुरये च भवेत्सात नपु सकम् ॥८३४॥  
 उरस्यो ना स्तने द्व वौरसापये त्रिषु वयम् ।  
 उरोमवादावुरसा चैकदिक्के प्रकीर्त्तत ॥८३५॥  
 उर्य्युर्य्यूर्य्यूर्य्यङ्गीकारे च विस्तृते ।  
 उरु त्रिषु स्यामहति स्त्रियामुर्वीति तत्र वा ॥८३६॥  
 उर्वी पृथिव्या नद्या च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।  
 उरुक्रम पुमान्विष्णौ त्रिलिङ्गस्तु महाक्रमे ॥८३७॥  
 उरुगाय पुमाविष्णौ बहुगीते त्रिलिङ्गक ।  
 उवरा तूर्वरीवत्सर्वसस्याढ्यक्षितौ क्षितौ ॥८३८॥  
 उर्वारश्चिद्रटे ना स्त्री ककट्या क्ली तयो फले ।  
 उलपोऽस्त्र्यादिसगस्थभूतानामभिमध्यम् ॥८३९॥  
 गुमिया सलिले काष्ठेऽप्यूर्ध्वमूलाह्वये पुन ।  
 स्तम्भभेद कलापारयमुने शिष्यान्तरे च ना ॥८४॥  
 उल्लको द्वे काकशत्राविद्रभरतयोधिनि ।  
 उल्लखल तु सधौ वी कक्षाया वङ्गणस्य च ॥८४१॥  
 उल्लखला स्त्री त्वश्वस्य दन्तच्छिद्र उल्लखली ।  
 पुमास्तु व्रतिनो दण्ड उदुम्बरतरुद्रवे ॥८४२॥  
 उल्बो गर्भाशये न स्त्री शुल्बे तू व नपुसकम् ।  
 भूमेदे रजते सामभेद यज्ञे तु पुस्ययम् ॥८४३॥

सरयाज्ञाने विरहिते भवेदेष त्रिलिङ्गक ।  
 उ-मुक्त स्यादलाते स्त्री पूवराजात्तर तु ना ॥८४४॥  
 उ लाघस्तु शुचौ कृष्णे दक्षनीरोगयोस्त्रिषु ।  
 त्रिरुलिखितमुत्कीर्णेषु नुषक्ते च तनूकृते ॥८४५॥  
 उ लेखनीय कतकद्रावुलेरये तु वाच्यवत ।  
 उलोल पु सि व लोले भृशलोले तु भधवत ॥८४६॥  
 उशिक पुमागांतमर्षौ पावकेऽपि पुमांस्त ।  
 उशिक स्त्रियामुशीरेऽथ स्यान्मेधाविन्युशिक त्रिषु ॥८४७॥  
 उष प्रस्थचतुर्भागे कल्पे कामिनि गुग्गुलौ ।  
 स्यात् क्षारमृत्तिकाया चन्दनाद्रौ श्रवाबिले ॥८४८॥  
 रघ्रमात्रे स्त्रिया तूषाऽनिरुद्धस्य भवेत्स्त्रियाम् ।  
 सौरभेय्या निशाया च निशातेऽयमप्युषा ॥८४९॥  
 उषवस्तु मतो दाहे रवावपि तथा पुमांश्च ।  
 उषो नपु सक सान्त स्त्री च सध्याग्रभातयो ॥८५०॥  
 उषित न्युषिते दग्धे वाच्यवत्परिकीर्तितम् ।  
 उष्ट्रिका मृत्तिकाभाण्डभेदऽपि करभा स्त्रियाम् ॥८५१॥  
 उष्ट्री स्त्रियां स्यात्कक्यामुष्ट्र स्यात्करभे द्वयो ।  
 उष्ण पु सि हुताशे स्यादग्रीष्मे शिशुमहीरुहे ॥८५२॥  
 क्ली तु वह्निगुणे त्रिस्तु तद्युक्ते घतुरेऽपि च ।  
 उष्णवीर्यो जलकपौ द्वे योगार्थे तु लोकवत् ॥८५३॥  
 उष्णिका स्त्री यवाग्वां स्यादक्षे त्रिर्मत उष्णक ।  
 उष्णीषोऽस्त्री शिरोवेष्ट किरीटे लक्षणान्तरे ॥८५४॥  
 उष्मको ना निदाघे स्यात्पातुरे क्षिप्रकारिणि ।  
 उप्तो ध्रुवे च किरणेषु स्याज्जुन्युपचित्रयो ॥८५५॥

ऊ

ऊ वाक्यारम्भरक्षानुकम्पास्वययमुच्यते ।  
 ऊ स्त्रियां रक्षणे तृप्तौ प्रीतावगतौ गतौ ॥८५६॥

वृद्धाववाप्तौ तृप्तौ च प्रवेश श्रवणच्छयो ।  
 स्वाम्यसामर्थ्याच्चासु क्रियाया भावहिंसयो ॥८५७॥  
 आलिङ्गने च दहनेऽप्यर्थेष्वेकान्तविंशतौ ।  
 उक किलिञ्जके राशौ राशिस्थाने पुमानयम् ॥८५८॥  
 उक उकीतिमिथुन कीर्त्तित पक्षिवाचकम् ।  
 उका तु जतौ प्रोक्ता स्त्री स्वेदजेऽस्थिविवजिते ॥८५९॥  
 ऊध क्ली सान्तमापीने निशाया च प्रकीर्त्तितम् ।  
 पादभेदे च सामारयसाम्न ऊध उदाहृतम् ॥८६॥  
 ऊधस्य तु नपि क्षीरे त्रिषु तूधोभवादिके ।  
 उम् रुषोक्तौ च पृच्छायामव्यय परिकीर्त्तितम् ॥८६१॥  
 उमोऽस्त्रियां पुरयोम्नो प्राणियेष त्रिलिङ्गक ।  
 ऊर यश्चोरुजे वैश्ये द्वयोरुरुभवे त्रिषु ॥८६॥  
 ऊर्गन्नाभरसो साहबलेषु स्याच्चतुर्ष्वपि ।  
 ऊर्जस्तु कार्त्तिकोत्साहबलेषु प्राणनेपि च ॥८६३॥  
 ऊर्जस्वती स्त्री नद्यां स्यात्त्रिषु तूजस्वले भवेत् ।  
 ऊर्णा स्त्रियां कदल्यादेस्तन्तौ मेषादिलोम्नि च ॥ ६४॥  
 प्रशस्तरोगमात्रे च भ्रमध्यस्थेऽथ हिंसिते ।  
 ऊणस्त्रि हिंसने तूण क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ॥८६५॥  
 ऊर्णायु स्याद्द्वयोर्मेषत्वतयोर्ना तु कम्बले ।  
 मेषलोमकृते तद्वद्गर्ध्वे श्रुतिवर्णिते ॥८६६॥  
 ऊदर स्यादावपने मेघलिङ्ग तु दुबले ।  
 ऊर्ध्वस्त्रितुङ्गोपर्यथोत्थितेष्वृष्यन्तरे तु ना ॥८६७॥  
 ऊर्ध्वमूलस्तम्बभेद उलूकारथे पुमान्तत ।  
 ऊर्ध्वाङ्घ्रिप्रवृक्षादौ त्वेष वाच्यवत्सप्रयुज्यते ॥८६८॥  
 ऊर्ध्वरूपक इयेष हरिमथारयमुद्रके ।  
 प्रयोगमनुसृत्यास्य लिङ्गाद्यर्थे च यौगिके ॥८६९॥  
 ऊर्मिद्वयोस्तरङ्गऽपि वेगवीचिप्रभासु च ।  
 वस्त्रसकोचरेखायां वेदनोत्पीडयोरपि ॥८७॥

क्षुपपासाशोकमोहजरामृत्युषु चोयते ।  
 ऊर्मिका त्वङ्गुलीये स्याद्वस्त्रमङ्गतरङ्गयो ॥८१॥  
 ऊवध्य गुदवाते क्ली वृक्षादेश्च गदातरे ।  
 ऊषणो ना कदुरसे विज्ञेयस्त्रिषु तद्वति ॥८२॥  
 क्लीब तु मरिच शुण्ठावृषणारये च कर्मणि ।  
 ऊषणा तु स्त्रियामेषा पिप्पल्या परिकीर्त्तिता ॥८३॥  
 ऊषा रुजि स्त्रियामूष लवण क्लीबमौषरे ।  
 ऊषस्तु क्षारमृद्येष पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥८४॥  
 ऊष्मा त्वौष्ण्यगुणे ग्रीष्मे वाष्पे शषसहेषु ना ।  
 ऊहा न क्ली विचारे स्यासामग्रन्थातरे तु ना ॥८५॥

### ऋ

ऋशब्द स्त्र्यादितौ स्वर्गेऽप्याव्यय वाक्यगहयो ।  
 ऋक स्त्रिया पद्यमात्रेऽपि भारत्यामपि कीर्त्तिता ॥८७६॥  
 ऋक्षो द्वयोरच्छभले ना गुडद्रौ च शोणके ।  
 इन्द्रिये तु मत क्लीब नक्षत्रे पुनपुसकम् ॥८७७॥  
 निलोम्नि तु त्रिऋक्ष स्यात्तथैव कृतवेधने ।  
 ऋक्षगन्धा तु शुक्लाया विदार्या बृद्धदारके ॥८७८॥  
 ऋक्षर कण्टकेऽपि स्याजलस्थाने तथर्त्विजि ।  
 ऋक्षर वारिधाराया नपुसकमुदाहृतम् ॥८७९॥  
 ऋच्छरा वङ्गुलौ ज्ञया वेक्ष्यायामपि च स्त्रियाम् ।  
 ऋजीक क्ली भवेद्वज्र ऋजीकऋषिमे पुमान् ॥८८०॥  
 ऋजीष पिष्टपचनसाधनेऽनौ च वैद्युते ।  
 ऋजुस्त्रिरव्युपन्ने त्रिगुणे वज्रेतरे बुधे ॥८८१॥  
 अशौ ऋजु पुमानेष कैश्चिदेव प्रयुज्यते ।  
 ऋज्जसान श्मशाने च वारिवाहमहेद्रयो ॥८८२॥

१ ऋजीषमेतद्वाचो य सस्कारहीन शब्द—पञ्चराज वाक्य ११२

ऋत नपुसक तोये शिलोञ्छे प्राप्ति यज्ञया ।  
 गतौ सये तद्वति तु त्रिपु प्राप्ते तथा ऋषौ ॥८८३॥  
 ऋतुवसन्तादिषटके पुमान्मासि च कीर्त्तित ।  
 गभग्रहणयोग्ये च काले स्त्रीणा रजस्यपि ॥८८४॥  
 ऋ मावसिते धाये समृद्ध क्ली समर्धने ।  
 ऋद्वि खनाम्नि वृद्धधारये चौषधे स्त्री च सपदि ॥८८५॥  
 ऋभृद्वयो सुरेऽर्थेष विदुषि स्यात्त्रलिङ्गक ।  
 पुमास्तु ब्रह्मपुत्राणां सनकादिकयागिनाम् ॥८८६॥  
 येष्टे नारायणे चैव किरण जलदेऽपि च ।  
 ऋश्य पुस्यृषिभदे स्यात्सृगजात्यन्तरे द्वयो ॥८८७॥  
 ऋश्यजिह्व तु कुष्ठारयव्याधिभदे नपुसकम् ।  
 समासे त्वस्य लिङ्गादि समुन्नय प्रयोगत ॥८८८॥  
 ऋषभो वृषभे कर्णरत्रे षडजादिमध्यगे ।  
 सगीतस्वरभेदे च मोभे च जिनान्तरे ॥८८९॥  
 एकाहक्रतुभदे च सामभेदेषु केषुचित् ।  
 सूकरस्य च नक्रस्य पुच्छे भृङ्गारयभपजे ॥८९०॥  
 ऋषभध्वज एष स्याच्छङ्करे चाहदन्तरे ।  
 श्रेष्ठे च ऋषभा तु स्त्री स्यान्नराकारयोषिति ॥८९१॥  
 शूकशिम्ब्या शिरालायां विधवायां तथा मता ।  
 ऋषिर्वेदे वसिष्ठादौ चक्षुरादीन्द्रियेषु च ॥८९२॥  
 ज्ञानवृद्धे क्षणके दीधितौ च पुमानयम् ।  
 ऋषिसृष्टा ऋद्धिनाम्नि भेषजे त्रि तु यौगिके ॥८९३॥  
 ऋण्यप्रोक्ता शतावर्यामृद्धिसङ्गे च भषजे ।  
 आत्मगुप्तातिबलयोरोषध्योश्च स्त्रियामियम् ॥८९४॥  
 ऋण्वो महति हिंसे च त्रिररातौ तु पुस्ययम् ॥८९४॥

ऋ

ऋ वाक्योपक्रमत्राणे वक्ष्य स्मृत्योस्त्वनव्ययम् ॥८९५॥

लृ

लृकारो देवताम्बायां भुवि कुप्रे च कीर्त्तित ॥८९५॥

लृ

लृकारो देवनायां स्यादामयपि च मातरि ॥८९६॥

देवाम्बाया दनौ चापि भैरवे दनुजे गतौ ॥८९६॥

ए

ए स्मृतावप्यसूयानुकम्पामन्त्रणहूतिषु ॥८९॥

एक त्रि मुरयप्रथमसमानायाऽल्पके बले ।

नि यैकचनस्त्वाद्यसख्यासरयेययोरयम् ॥८९८॥

पुस्येककुण्डल प्रोक्तो बलभद्रे धनाधिपे ।

प्रयोगमनुसूयास्य लिङ्गयोगार्थ इष्यते ॥८९९॥

एकदृढ ना यमे काके तु द्वयोस्त्रिस्तु काणके ।

एकदेशस्त्ववयवे योगिके तु स लोकवत् ॥९॥

स्त्रियामेकपदी मार्गे यौगिकार्थे तु लोकवत् ।

एद त वव्यय सद्योर्ध्वे स्यादेकपदे इति ॥९१॥

एकाक्षो वाच्यवत्काणे वायसे तु द्वयोर्मत ।

एकाक्षीला तु पाठाया शिवमर्त्या तु पुस्ययम् ॥९२॥

एकाग्रमेकताने ना कुले स्वार्थे च वाच्यवत् ।

एकाङ्ग एकावयवे त्रि पुसि तु बुधग्रहे ॥९३॥

एकादश पूरणे येकादशी तु हरेस्तिथौ ।

तथैकादशतन्त्रीके वीणामेदऽपि कार्त्तिता ॥९४॥

एकायन त्रिष्वेकाग्रेऽथ स्यादेतन्नपुसकम् ।

शास्त्रे भागवताना यकश्मीरेष्वेव विश्रुतम् ॥९५॥

एकायनगतस्तु स्यादेकाग्रेऽप्येकमार्गके ।

एकाहमेकदिवसे क्लीब पुस्यध्वरेऽव्ययम् ॥९६॥

ज्योतिष्टोमादिकेष्वेकदिनसाध्येषु कीर्तित ।  
 त्रि कुसितादिवधिरे स्यान्मेषे वेडकाद्वयो ॥९ ॥  
 एडमूकोऽन्यलिङ्ग स्या छठ वाकश्रुतिवजिते ।  
 एणीकृतो वणदोष पुसि तद्वति तु त्रिषु ॥९ ८॥  
 आपादितणभावे च क्ली वेणीकरणे स्मृतम् ।  
 एत स्यात्कर्बुरे पुसि त्रि त्वेनी तद्वति स्मृता ॥९ ९॥  
 आगते तु त्रिलिङ्गैता क्लीब स्यादतमागते ।  
 एतश्च पुसि च द्रे द्रत्विक्षु द्वे तु तुरङ्गमे ॥९१ ॥  
 एतश्चास्त्वश्मनि द्वे ना वग्ना ब्रह्मणि होतरि ।  
 एधतुस्तु स्त्रिया लक्ष्म्या ना त्वग्नौ पुरुषऽपि च ॥९११॥  
 एधितो ना गिरिसरिद्राहे क्लीब वने भवेत् ।  
 एधितु पायके शैले सागरेऽपि पुमान्त ॥९१२॥  
 एन पापेऽपराधे च सान्त क्लीबमुदाहृतम् ।  
 एलकस्थेलितयुक्त पुमान्भारङ्गपादपे ॥९१३॥  
 एवौपम्ये नियोगे चावधारे वाक्यपूरणे ।  
 भवेद ययमाचारनियोगे च विनिग्रहे ॥९१४॥  
 एवप्रकारे निर्लिङ्गमङ्गीकारऽवधारण ।  
 अनुप्रश्ने परकृतावुपमापृ छयोरपि ॥९१५॥  
 एषण पुसि नाराचे नाराच्या त्वेषणी स्त्रियाम् ।  
 व्रणमर्गानुसारिण्या विशेषात्परिकीर्त्तिता ॥९१६॥  
 कुस्तुम्भुर्यामेषणाऽथैषणमप्येषण छते ।  
 ण्यन्तादक त्वेषण तदि छाया परिकीर्त्तितम् ॥९१७॥

ऐ

ऐशब्दो दृश्यते हृतौ स्मृत्यामन्त्रणयोरपि ।  
 ऐद्रिरिद्रसुते कृष्णकाकेऽपि कथितो द्वयो ॥९१८॥  
 ऐद्री पूर्वदिशि स्त्री स्याद्विशालानाम्नि भूरुहि ।  
 त्रि त्विद्रयाग्निनि पुमान्सर्गयज्ञ मृतुष्वयम् ॥९१९॥

ऐम पुमान्हस्तिककोटकवल्ल्या प्रकीर्तित ।  
 तत्फले क्लीबमेनी तु त्रिषु स्यादिभयोगिनि ॥९२॥  
 ऐरावतोऽभ्रमातङ्ग नारङ्गे लकुचद्रुमे ।  
 नागभद्र च पुसि स्याक्लीनारङ्गफलेऽपि च ॥९२१॥  
 लकुचस्य फले तद्वद्वज्रदीर्घेद्रकाश्रुके ।  
 अश्विन्याद्यृक्षनवककलस्रवीथीत्रयात्मन ॥९२२॥  
 देवयानाध्वन खस्थ स्थानेऽथैरावती स्त्रियाम् ।  
 वीथ्यां पुनवस्वाद्यैश्च कलसायामुद्भुमिस्त्राभ ॥९२३॥  
 विद्युत्तद्भद्रयोश्चापि योगार्थे वभिधेयवत् ।  
 ऐश्वर क्ली चतुहस्तप्रमाणे श्रीश्वराश्रिते ॥९२४॥

## ओ

ओ सबोधन आह्वाने सारण चानुकम्पने ।  
 ओक सान्त जलौकाया क्लीब मन्दिर आश्रमे ॥९२५॥  
 ओघ परम्पराया स्याज्जलस्रोतसि सचये ।  
 महाजलसमूहे च वाद्यादिद्रुतवर्त्तने ॥९२६॥  
 ओजो दीप्ताववष्टम्भे प्रकाशबलयोरपि ।  
 जले नपुसक सान्त कायस्य च गुणान्तरे ॥९२७॥  
 अदतमपि सान्त वा राश्यादौ विषमे त्रिषु ।  
 ओद्गस्तु तरुभेद ना प्रसवेऽस्य नपुसकम् ॥ २८॥  
 ओद्गा औद्गाश्च पुभूमि भवेयुर्नीवृदतरे ।  
 ओतुर्द्वया स्यान्मार्जारे क्लीब सामा तरे स्मृतम् ॥९२९॥  
 ओदनोज्झी भवेदने क्ली मेघे काञ्चिके पुमान् ।  
 ओदनीति स्त्रियामेषा बलायां परिकीर्तिता ॥९३॥  
 ओम्मङ्गले च प्रणवेऽप्याकृतावप्युक्रमे ।  
 तथाभ्युपगमे चैतदव्यय चेशवाचकम् ॥९३१॥  
 ओलकस्तु पुमाञ्छाके काणमारिषसङ्गके ।  
 सितोपलाविशेषे च करकाया च कीर्तित ॥९३२॥



ओलिका धान्यभदे स्यादिय नीवारसङ्गके ।  
 ओलस्तु स्ररणे पुसि स्यादाद्रं वायलिङ्गक ॥९३३॥  
 ओषो दाहे भवे पुसि क्षिप्रे तु त्रिषु कीर्त्तित ।  
 ओष्ठी रक्तफलाव यामोष्ठो दत्त छद पुमान् ॥९३४॥

## औ

औ त्वेतत्कथित हता तथा सबोधनेऽययम ।  
 स्त्री तु विश्वम्भराया स्यान्निखने पुसि कीर्त्तित ॥९३५॥  
 औचियमुचितवे स्यासत्यऽपि च नपुसकम् ।  
 औजस काचने क्लीबमोज सम्बन्धिनि त्रिषु ॥९३६॥  
 औदुम्बर कुष्ठरोगभद ताम्रऽपि नप्यथ ।  
 यमे च वानप्रस्थ ना तस्मिन्यस्तुर्यकालभुक् ॥९३॥  
 षण्माससग्रही चाऽपि योगार्थे त्वभिधेयवत् ।  
 औदुम्बरायणऋषभित्कृतोद्वाहविग्रयो ॥९३८॥  
 औपगृष्टकमि येतत्कामशास्त्रक्रियान्तरे ।  
 ऊर्ध्वजे तु त्रिलिङ्गोऽय शब्द सपरिकीर्त्तित ॥९३९॥  
 औगम्रो मेषसबद्धे त्रि पुमान्मेषकम्बले ।  
 औरसो द्वे निजे पुत्रे पुल्लिङ्ग स्रक्ष्मनीरके ॥९४॥  
 उर सम्बन्धिनि त्वौरसी लिङ्गप्रितये मता ।  
 और्वो ना वडवाग्नौ स्यादवसम्बन्धिनि त्रिषु ॥९४१॥  
 और्वशेयोऽगस्त्यमुनौ द्वयोस्तूर्वश्यपत्यके ।  
 औशीर चामरे शय्यासने दण्डेऽप्युशीरजे ॥९४२॥

## क

को ब्रह्मणि समीरात्मयमदक्षेषु भास्करे ।  
 किं सर्वनाम्न क इति रूप प्रश्नादिवाचकम् ॥९४३॥  
 पतत्रिपार्थिवे पुसि कामग्रन्थौ च चक्रिणि ।  
 मयूरेग्नौ नगे देहे शब्दबुद्धिमन स्वपि ॥९४४॥

क तु क्लीब सुखशिर सलिलेषु प्रकीर्तितम् ।  
 ककुद व युन्नते श्रष्ट राजलक्ष्मवृषांसयो ॥९४५॥  
 स्त्री तु दक्षस्य पुया स्याद्भार्या धमस्य याऽभवत् ।  
 ककुदो स्त्री बलीवदस्कधयोर्मध्य उन्नते ॥९४६॥  
 प्रधाने राजाचह च हस्तिमद्रेऽवकान्तरे ।  
 ककुदी तु पुमाषण्डे ककुदेन युते त्रिषु ॥९४७॥  
 ककुशान्वृषभे षण्डे पवते ऋषभौषधे ।  
 ककुबती स्त्रीश्रेण्या च छन्दोमदे च कीर्तिता ॥९४८॥  
 ककुयी वृषभ षण्डे गुरौ त्वष्णा नृपान्तरे ।  
 ककुद्रावृषभे प्रद्युम्नपयां तु ककुद्वती ॥९४९॥  
 ककुबुष्णिगिदशवे स्त्री भूमृत शिखरे दिशि ।  
 तथा प्रवेण्या शमाया भारया चम्पकस्रजि ॥९५॥  
 स्यादथैकान्नपञ्चाशद्रात्रे सत्रे च भूमनि ।  
 शास्त्रे च रागणीभेदे दक्षस्य दुहितर्यपि ॥९५१॥  
 ककुभोऽजुनवृक्षेऽपि रागभेद प्रसेवके ।  
 कक्खटी खटिकाया स्त्री कक्खट कठिने त्रिषु ॥९५२॥  
 कक्ष स्पर्धापदे बाहुमूले दर्गे तृणे वने ।  
 कच्छे वीरुधि कक्षा तु स्यतरीयपराञ्चले ॥९५३॥  
 केचित्त बाहुमूलेऽपि कक्षा स्त्रियमधीयते ।  
 कक्ष्या बृहतिकायां स्यात्काञ्च्या मध्येमव घने ॥९५४॥  
 अविशेषाद्वरत्राया साम्ये गोहप्रकोष्ठके ।  
 पार्श्वार्धङ्गसमुद्भूतरोगभेदेऽङ्गुलावपि ॥९५५॥  
 कक्ष्यापालस्त्वौपरिके शूरपाले भवेत्त्रिषु ।  
 कक्ष्यावेक्ष्यक इत्येष शुद्धान्तोद्यानपालयो ॥९५६॥  
 रङ्गाजीवे कवौ पिङ्गे द्वा स्थे चैव प्रकीर्तित ।  
 कङ्को यमे छत्रविप्रे ना द्वयोर्लोहपृष्ठके ॥९५॥  
 कङ्कट पुसि कवचे चाऽङ्गुशेऽपि प्रकीर्तित ।  
 कङ्कण करभूषायां सूत्रे भूषणमात्रके ॥९५८॥

कङ्कणी तु स्त्रियां क्षुद्रघण्टिकाया प्रकीर्त्तिता ।  
 कङ्कणीका प्रतिसरे घण्टाजाले तु पुस्ययम् ॥९५९॥  
 कङ्कती तु त्रिलिङ्गेऽय केशमाजनके भवेत् ।  
 द्वे त्वेकस्या तासा याश्चतस्र कारुजातय ॥९६॥  
 कङ्कपत्रो वाणभेद योगिके लिङ्गमथत ।  
 ना सदशे कङ्कमुखो यागिके लिङ्गमथत ॥९६१॥  
 नियुताना शत तत्रे कङ्कर त्रि तु कुत्सिते ।  
 कङ्कु प्रियङ्गुके कङ्कुधाये ना कससोदरे ॥९६॥  
 कच केश गुरो पुत्रे बधे शुष्कत्रणऽपि ना ।  
 नृजातिभद शतकीक्षत्रियप्रभवे द्वयो ॥९६३॥  
 कचपोता तिले पत्रे तथा शाकपलालयो ।  
 कचा करिण्या शोभाया स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥९६४॥  
 कचाकुस्तु दुराधर्षे दु शीले च बिलेशये ।  
 कचर कुत्सिते वाच्यलिङ्ग तत्रे नपुसकम् ॥९६५॥  
 कच्चित्रश्ने मङ्गले च हर्षे कामप्रवेदने ।  
 कच्छोऽनूपे तुल्यकद्रौ पार्श्वे गुह्याम्बरे तथा ॥९६६॥  
 नान्दीवृक्षे च नौकाङ्गे कूर्माङ्गौ स्थावरातरे ।  
 स्त्री वाराहीचीरिकयोर्नौवृद्धेदे नृभूमनि ॥९६७॥  
 कच्छपो द्वे भवेत्कूर्मे मल्लबन्धातरे निधौ ।  
 स्त्री कच्छपी सरस्वत्या वीणार्था क्षुद्ररुग्भिदि ॥९६८॥  
 कच्छघ्नी तु पटोले स्त्री तथैव हपुषान्तरे ।  
 कच्छरा स्त्री यवासे च तथा शाव्यात्मगुप्तयो ॥९६९॥  
 पामाभिस्तु युते तद्वत्पुत्रले कच्छुरस्त्रिषु ।  
 कज नपुसक पत्रे पीयूषे च प्रकीर्त्तितम् ॥९७॥  
 कजल त्वञ्जने कसोत्पलारये च वनोत्पले ।  
 कजल स्यात्पुमान्मेघे कजली तु पराङ्गने ॥९७१॥  
 गन्धके मिश्रितरसे तथा स्त्री परिकीर्त्तिता ।  
 कजला कजलीत्येतद्द्वय मीनान्तरे मतम् ॥९७२॥

कञ्चुकोञ्छी वारवाण निर्मोके करभेऽपि च ।  
 वर्धापकगृहीताङ्गस्थितवस्त्रे च चालके ॥९३॥  
 स्त्रियामोषधिभेदे च क्षीरीशद्रौ च कञ्चुकी ।  
 कञ्चुकी तु द्वया सर्पे त्रिस्तु कञ्चुकसमुते ॥९४॥  
 ना विटेऽन्तपुराध्यक्षे जोङ्गके चणकेपि च ।  
 कञ्ज केशे विरिञ्चे ना कञ्ज वमृतपद्मयो ॥९५॥  
 कञ्जन कामदवे ना द्वयोर्मदनपक्षिणि ।  
 कञ्जरो जठरे सूर्ये विरिञ्चे वारणे मुनौ ॥९६॥  
 कञ्जारस्तु गृहे गूढे मणौ ना त्रिस्त्वशोभने ।  
 कटो ग्रामादिपर्यन्त किलिञ्जगजगण्डयो ॥९७॥  
 शवे शवरथे श्रोणिफलके कालकूटक ।  
 बलये समये नाऽथ लवणऽधिभवे नपि ॥९८॥  
 स्त्री कटी श्रोणिपिप्पयोश्चापाग्रेऽथ भृश त्रिषु ।  
 कटकोञ्छी नितम्बेद्रदतिनां दन्तमण्डने ॥९९॥  
 सामुद्रलवणे राजधान्या बलयसैययो ।  
 हस्तमुष्टौ तु पुसि स्यात्स्त्रिया तु कटिका कृते ॥१००॥  
 सूत्रस्यूतशलाकाभिरायुधस्य निवारणे ।  
 परिमण्डलसंस्थानद्रव्ये सपरिकीर्तिता ॥१०१॥  
 कटखादक इत्येष बलिपुष्टे च जम्बुके ।  
 खादके काचकलशे पुष्टिञ्ज परिकीर्तित ॥१०२॥  
 कटभूर्ना शिवे विद्याधरराक्षसभेदयो ।  
 तथाक्षदेवने स्त्री तु भवेत्खेलगताविधम ॥१०३॥  
 कटमङ्गस्तु सस्याना हस्तच्छेदे नृपात्यये ।  
 कटमी बृक्षभेदेऽपि योतिष्मत्यामपि स्त्रियाम् ॥१०४॥  
 कटम्बो वाद्यभेदेऽपि शरेऽपि च पुमानयम् ।  
 कटम्भर स्यात्स्थोनाके कटभ्यामपि चेष्यते ॥१०५॥  
 कटम्भरा प्रसारण्या रोहिण्या गजयोषिति ।  
 कलविङ्कथा च गोलाया वर्षाभूमूवयोरपि ॥१०६॥

कटह कणवति ना कालायसविनिमिन ।  
 जलपात्रे तथवाऽपि पत्रेऽपि प्रकीर्तित ॥९८७॥  
 कटाहो द्वीपभेदेऽपि तैलादे पाकभाजने ।  
 तिर्यच्छृङ्गे च महिषी तर्णके कर्मकपरे ॥९८८॥  
 कटि श्रोणा कटी च स्त्री पिप्पया चोयते कटी ।  
 कटि रशनाया च दन्तमूले च दातनाम ॥९८९॥  
 कटु स्त्री कटुरोहिण्या लताराजिकयोरपि ।  
 कटुस्तु गुग्गुला पुसि लशुने टङ्कने तथा ॥९९॥  
 ऊषणारये रसे चापि गन्धे सारभ्यनामनि ।  
 त्रिस्तूतक धरसयारेकयुक्ते समत्सरे ॥९९१॥  
 तीक्ष्णकार्यप्रियेषु क्ली शुण्ठौ च मरिचेपि च ।  
 कटुका कटुरोहि या योष तु कटुक मतम ॥९९२॥  
 कटुकन्द पुमान् शिग्रौ शृङ्गबेररसानयो ।  
 कटुग्रथिर्भवे छृङ्गबेरपिप्पलिमूलयो ॥९९३॥  
 कटुतिक्तस्तु भूनिम्बे शोणऽपि च पुमान्मत ।  
 कटुतुम्ब्या स्त्रियामेषा कीचिता कटुतिक्तिका ॥९९४॥  
 कटुत्कट तु क्ली व्योषेऽप्यार्द्रके त्रि तु यौगिके ।  
 कटवज्ज पक्षिभेदे द्व ना दुण्डुदुदिलीपयो ॥९९५॥  
 कठो मृनौ तदारयातवेदाभ्येतृकयो स्वरे ।  
 कठारस्तु भवेत् पिङ्गे शिल्पियपि च पुस्त्रियो ॥९९६॥  
 कठिन निष्ठुरे स्तब्धे त्रिषु स्थायां तु नप् स्मृतम ।  
 कठिनी खटिकाया स्त्री कठिना गुडशर्करा ॥९९॥  
 कठिलक कारवेलफले ना तु कठिजरे ।  
 पुनर्वायां रक्तायां कारवेल्ले कठिल्लक ॥९९८॥  
 कडग्रवत्त क्लीबे स्यात्कलत्र श्रोणिभार्ययो ।  
 कडग्रतु नृपादीनां दुर्गस्थानेऽपि कीर्तितम् ॥९९९॥  
 कडम्बो यज्जनीभूतशाकनाले द्रुमान्तरे ।  
 कडम्बे तु मत्त क्लीब प्रसवे तस्य शाखिन ॥१००॥

कडार तु जले क्लीब रूक्षताशूलयोस्तु ना ।  
 तथा कपिलर्णे च तद्युक्ते त्वभिधेयवत् ॥१ १॥  
 विषमीभूतदशने नि सारे द्व तु दासके ।  
 कणोऽतिस्त्रक्ष्मे बाण च तण्डुलावयवे च ना ॥१ २॥  
 अपसक्तुषु पुभूमि तदेकावयवेऽयथा ।  
 कणा जीरककुम्भीरमक्षिकापिप्पलीषु च ॥१ ३॥  
 स्त्रक्ष्मे च जीरके द्वे तु निषादाद्द्रमिडीसुते ।  
 कणप शरभदे च क्रतुभदे पुमामत ॥१ ४॥  
 कणिका तिलमण्डे च गोधूमे तस्य चूर्णके ।  
 कणे चैवाऽग्निमथ च स्त्रियामषा प्रकीर्तिता ॥१ ५॥  
 कणिक पटवासे ना कणिका स्त्री वनस्पते ।  
 बीजेऽथ सा भवेद्भिन्नतण्डुलावयवे द्वयो ॥१ ६॥  
 कणीचि स्त्री लतायां च मनस्यश्चे तु सद्वयो ।  
 कणीची पुष्पितलतागुञ्जयो शकटे स्त्रियाम् ॥१ ७॥  
 कण रेभ्या च वेश्यायां कणेर कणिकारके ।  
 कणेरु कर्णिकारे च करिणीवेश्ययो स्त्रियाम् ॥१ ८॥  
 कण्टकोऽस्त्री वृक्षसूचौ रोमाच्चे क्षुद्रविद्विषि ।  
 नैयोगिकादिदोषोक्तौ वेणौ म स्यादिकीकसे ॥१ ९॥  
 कण्टकद्रुम इत्येष शा मलौ कण्टकिद्रुमे ।  
 कण्टका कण्टकमुखे स्त्रिया कीटातरे मता ॥१ १०॥  
 कण्टकिन् तु त्रिाङ्गो य कीर्चित कण्टकान्विते ।  
 स्या कण्टकिफल पुसि पनसे गोक्षुरेपि च ॥१ ११॥  
 कण्टकी नारिमेदारये मदनारये च पादपे ।  
 कण्टका वनुवाकारये ग्रथस्याशे स्त्रियां मता ॥१ १२॥  
 कण्ठो गलेऽतिके पुसि ध्वनौ मदनपादपे ।  
 कण्ठाला तु द्वयोर्द्रोणाग्रमेदे ना ब्रमेलके ॥१ १३॥  
 कण्डार रक्तपत्रे क्लो नावर्णे सितकाचरे ।  
 त्रिस्तु तद्वति वणश्च काचर कृष्णधूमल ॥१ १४॥

कडुर कुन्दरकणे कारवेले च स्वरण ।  
 कण्डुराऽत्यम्लपण्या चात्मगुप्तायामपि स्त्रियाम् ॥१ १५॥  
 कण्डूघ्न आरग्वघेऽपि तथा स्याद्गौरसपप ।  
 कण्डूल स्वरण पुास त्रि तु कण्डूप्रयोजके ॥१ १६॥  
 कण्व पर्वणि भूषाया पापे मुन्य तरे तु ना ।  
 वधिरे तु त्रिलिङ्गोऽय मधाविनि च कीर्त्तित ॥१ १७॥  
 कतस्तु कतके ऋण्यन्तरे चाथ कत जले ।  
 कत्तण तृणभित्पृश्न्यो कुट्या चैव नपुसकम् ॥१ १८॥  
 कथ कथाप्रकारार्थे हर्षे प्रश्ने च सभ्रमे ।  
 सभावनाया गर्हाया चाऽव्यय परिकीर्त्तितम् ॥१ १९॥  
 कथाऽऽर्याने च कथनेऽयम् तु कथमथकम् ।  
 कथाप्रसङ्गो वार्त्ताया पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥१ २०॥  
 कथाप्रसङ्गस्तु भवेद् वैश्रवातूलयोस्त्रिषु ।  
 कथर शकुनौ द्वे त्रि कथके कुहकेपि च ॥१ २१॥  
 कदन मदने पापे क्लीब स्यान्मारणे रणे ।  
 कदम्ब सषपे नीपे माक्षिके दवताडके ॥१ २२॥  
 क्ली तु वृन्दे देवदालीलताया तु कदम्ब्यपि ।  
 कदम्बक समूहे क्ली ना सर्षपकदम्बयो ॥१ २३॥  
 कदर श्वेतखदिरे क्रकचे ना रुजान्तरे ।  
 कदला कदलश्चेति पृश्न्या स्त्रीपुसयोर्मतम् ॥१ २४॥  
 कदला डिम्बिकायां स्त्री शाल्मली भूरुहेपि च ।  
 कदल कदलीत्येतद्रम्भाया पुल्लियोर्भवेत् ॥१ २५॥  
 कदली करिकेतौ स्त्री चर्मयोनिमृगान्तरे ।  
 कदली तु बिले शेते मृदुरुक्षोच्चकर्बुरै ॥१ २६॥  
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विशत्यङ्गुलायता ।  
 कद्रुर्नागजनन्या च भूमौ च स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥१ २७॥  
 पुमांस्तु पिङ्गले वर्णे स्यात्तद्वति तु मेदवत् ।  
 कडुर तु दधिस्नेहे तक्रे चापि नपुसकम् ॥१ २८॥

कनक काञ्चनारे च धुधूरे नागकेसरे ।  
 किंशुके चम्पके चैव कालीये च बृहस्पतौ ॥१ २९॥  
 कनक प्रसवे प्रोक्तद्रुमाणा हेम्नि च स्मृतम् ।  
 कनका सप्तजिह्वानामग्नेर्यैकात्र कीर्तिता ॥१ ३०॥  
 छन्दोभेदे महायोतिष्मत्या च कनकप्रभा ।  
 कनिष्ठोऽवरजेऽप्य पतमे युवतमे त्रिषु ॥१ ३१॥  
 कनिष्ठ कूप्यलवण कनिष्ठाऽप्यतमाङ्गुलौ ।  
 अवरोहानतिमभार्ययोश्च स्त्रियां मता ॥१ ३२॥  
 कनिष्ठक कनिष्ठे त्रि क्लीब शूकतृण मतम् ।  
 कनिष्ठिका स्त्रियामपतमायामङ्गुलौ स्मृता ॥१ ३३॥  
 कनीनस्तु त्रिलिङ्गोऽप्य तरुणे परिकीर्तित ।  
 कनीनको बालके स्यात्क यार्या तु कनीनका ॥१ ३४॥  
 अक्ष्यस्तु तारकाया स्यापुष्टङ्गऽपि कनीनक ।  
 स्त्रिया कनीनकाऽप्येषा तथैव स्याकनीनिका ॥१ ३५॥  
 कनीनिका कनिष्ठायामप्यङ्गुल्यां स्त्रियां मता ।  
 कनीयानतिपूति स्यादत्यपेऽवरजे त्रिषु ॥१ ३६॥  
 कनीयस क्ली ताम्रेऽथ स्यात्कनीयसि वाच्यवत् ।  
 क तु पुंसि कुक्षलेऽपि कन्दर्ये च प्रकीर्तित ॥१ ३७॥  
 कशब्दार्थवति त्वेष वाच्यलिङ्ग प्रकीर्तित ।  
 कथा ग्रामे च मृद्धिक्तौ बहुचीरकृताम्बरे ॥१ ३८॥  
 कथारी भेषजे स्थानभेदेऽपि परिकीर्तिता ।  
 कन्दोऽस्त्री स्वरणे मूलसस्यमात्रेऽम्बुद तु ना ॥१ ३९॥  
 कन्दरा त्रिगिरे रत्र स्त्र्युच्चजातुमृगान्तरे ।  
 अङ्गुशे कन्दरस्त्वेष पुंलिङ्ग परिकीर्तित ॥१ ४०॥  
 कन्दरालोऽक्षोटगदभाण्डप्लक्षद्रुमेषु ना ।  
 कन्दलस्त्रिकपाले चाप्युपरागे नवाङ्गुरे ॥१ ४१॥  
 कलध्वनौ गुल्मभेदे जिनयोनिमृगे स्त्रियाम ।  
 कन्दली सा श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ॥१ ४२॥





स्त्रीत्वे कपि कपी चात्र बभ्रुवर्णे तु वाच्यवत् ।  
 कपिञ्जलो द्वे चटके तथा पक्ष्यतरेष्वथ ॥१ ५७॥  
 ना पुण्डरीकमित्रेऽथ सरिद्धदे कपिञ्जला ।  
 कपिथस्तु दधित्थपि तथा मुद्रातरोष च ॥१ ५८॥  
 स्रयावर्त्ते द्रुमे रक्तापामार्गे कपिपप्पली ।  
 केचित्तु करिपिप्पल्यामप्याहु कपिपिप्पलीम् ॥१ ५९॥  
 कपिप्रिय कपिथाम्रातकयो प्रसवे तु नप ।  
 तयो कपिप्रिया तितिणीके याग तु लोकवत् ॥१ ६०॥  
 पुमान्कपिरथो रामऽप्यजुनेऽपि प्रकीर्त्तित ।  
 कपिलो मुनिभेदऽग्नौ वासुदेवे कडारके ॥१ ६१॥  
 कडारवणयुक्त तु त्रि स्त्री तु कपिला द्रुमे ।  
 स्याद्गङ्गाया च कपिलधारा तीर्थातरेऽपि च ॥१ ६२॥  
 वर्णे तुरुष्कनिर्यासे बभ्रुवर्णे ककुब्धति ।  
 शिशपासङ्गके बभ्रुवर्णाया सुरभावपि ॥१ ६३॥  
 हरेण्डभषजे विद्य यग्निदिग्वासहस्तिन ।  
 करिण्यां पुण्डरीकस्य ब्रह्मरीत्यारयलोहके ॥१ ६४॥  
 जातिभेदे तथैकस्मिद्वा शाना जलौकसाम् ॥  
 मन शिला रञ्जिताभ्या पार्श्वभ्यामिव लक्षिता ॥१ ६५॥  
 पृष्ठे स्निग्धा दुग्धवर्णे येव यलक्षण त्रिदु ॥  
 द्वयोस्तु कुक्कुरोऽकप्यतरे मूषिकभेदयो ॥१ ६६॥  
 कपिलाक्षस्त्रियोगे स्त्री कीर्त्तिता शिशपातरे ।  
 कपिश श्याववर्णे ना सिंहकेऽर्के तथा शिव ॥१ ६७॥  
 कपिश कपिशित्येतन्माधव्या द्वितय मतम् ।  
 मध्यासवे तु कपिश कपिश तु नदाभिदि ॥१ ६८॥  
 जन या च पिशाचाना स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।  
 कपिशिर्ष कपेर्मूर्ध्नि प्राकारशिखरेऽपि नप् ॥१ ६९॥  
 कपीतनो गर्दभाण्डप्लक्षे चाभ्रातके तथा ।  
 शिरीषाश्वत्थयो पुसि क्लीबे तत्प्रसवे स्मृतम् ॥१ ७०॥

कपी यस्तु कापश्रेष्ठ क्षीरकापादपऽपि च ।  
 कपीद्रो जाम्बवद्विष्णुसुग्रीवहनुमसु च ॥१ ७१॥  
 कपीवानृषभदे नद्यतरे तु कपीनती ।  
 कपीष्ट स्यात्कापथऽपि पुमान्राजादनोप च ॥१ २॥  
 सुवाग्रे काकपक्षेपि कपुच्छल कपु सले ।  
 कपृत्तु पुसि मन्ऽपि रूप्य द्र यक्षु दृश्यत ॥१ ३॥  
 कपोत पक्षिमात्रेऽपि द्वयां पारावत तथा ।  
 कुञ्ज लङ्कृतिभदे तु कग्मुद्रा तरे पुमान् ॥१ ७४॥  
 कपोतसदृश वर्णे स्यात्सौवीराञ्जनोप च ।  
 कपोतक कपोताऽर्थे पारावया कपोतका ॥१ ५॥  
 कपोतकी स्त्री श्यामाया क्ली कपोताञ्जने मतम् ।  
 कपोतपाको योगार्थे नृभूत्वद्रिनृजातिषु ॥१ ६॥  
 कपोतवर्णी सूक्ष्मलाया योगे तु यथायथम् ।  
 कपाताङ्घ्रि स्त्रियां विद्रुमवल्ल्या यागिक्वे तु ना ॥१ ७॥  
 कपोल पुसि गण्डे स्त्री कपोली सक्थिचक्रके ।  
 कफघ्नी हपुषाभेदे योगे तु स्वाद्यथायथम् ॥१ ८॥  
 पिण्डी तगरवृक्षेपि योगार्थे कफवर्धन ।  
 मरिचे स्यात्कफविरोधि पिप्पयाञ्च तथा नपि ॥१ ९॥  
 कुलथस्त्री कफहरि श्लमघ्ने तु त्रिषु स्मृत ।  
 कफी द्वयोगजे स्त्रीवे कफिनी स्यान्नदीभिदि ॥१ ८ ॥  
 कफेल् श्लेष्मातके नाच्छादिवेय तृणे स्त्रियाम् ।  
 कबधोऽस्त्र्यप्सु काये च क्रियायुक्तेऽपमूर्धके ॥१ ८१॥  
 उदरेऽप्यथ ना राहौ तथा रक्षोतरे मत ।  
 सांध्यमेघोदरकृत् राहुरक्षोन्तरेष्वपि ॥१ ८२॥  
 केतूनां या षण्णवतिवराहोक्ताऽत्र च क्वचित् ।  
 ना तु गन्धवमेदेऽप्याथर्वणेऽपि कचिन्मत ॥१ ८३॥  
 कबधी कात्यायने स्यान्मरुतस्तु कबधिन ।  
 कबधुमायां तुङ्ग्यां च पृथ्व्यां स्त्रीवाष्पिकौषधौ ॥१ ८४॥

केशविद्यासमेष्ट्याम्ले चित्रे लवणे च ना ।  
 कवरस्तु त्रिलिङ्ग स्यादुक्तवर्णरसाविता ॥१ ८५॥  
 कम् सुखार्थेऽपि सुष्ठुवर्धे कुसाभा यशिरोम्बुषु ।  
 वागलकरणे चाप प्रयुक्त मान्तमव्ययम् ॥१ ८६॥  
 कमठ कच्छपे शये द्वयास्त्रिषु तु वामने ।  
 अस्त्री भिक्षाभाजनेऽथ ना वेणा कूर्मकपरे ॥१ ८ ॥  
 कमण्डलु स्याकरके न स्त्री ना प्लक्षपादपे ।  
 चतुष्पाज्जातिभेदे तु द्वयोरेषा कमण्डलू ॥१ ८८॥  
 कमनो ना स्मरब्रह्माऽशोके त्रीरम्यकामिनो ।  
 कमनीयश्चम्पकद्रौ त्रिस्तु कामयितव्यके ॥१ ८९॥  
 कमर कामुके चैव तथा मूर्खेऽभिधेयवत ।  
 कमल पद्मताम्राम्बुस्थौणये रक्तपङ्कजे ॥१ ९ ॥  
 कलोम्नि चर्मणि हेमाद्यैश्चाग्रते छुरिकादिन ।  
 नक्षत्रसरयाऽतरयोर्भेषजेऽपि नपुसकम् ॥१ ९१॥  
 अथ द्वयो सारसे च कमल स्यामृगातरे ।  
 नागरङ्गे तु कमला लक्ष्म्या चैव वरस्त्रियाम् ॥१ ९२॥  
 पुमास्तु ब्रह्मणि तथा सगीतपुवकातरे ।  
 न तु ना कमली छन्दोमदऽपि कमले तथा ॥१ ९३॥  
 विरिञ्चौ पुंसि कमलगर्भो यागे यथायथम् ।  
 नाऽम्भोजपत्र कमलच्छदो द्वे कङ्कपक्षिणि ॥१ ९४॥  
 पद्मासने स्याकमलासन ब्रह्मणि पुस्ययम् ।  
 कम्पन तद्द्वयो कम्पे कम्पे स्यादभिधेयवत ॥१ ९५॥  
 कम्बलस्तूत्रासङ्ग गोसास्नायां तथा क्वचित् ।  
 पावताभक्तभिन्नागमेदयो क्लीबमम्बुनि ॥१ ९६॥  
 कम्बली करिण सजनाया स्यात्त्रिस्तु रल्लके ।  
 कम्बिरशे च वशस्य खजाकायापि स्त्रियाम् ॥१ ९ ॥  
 क्लीब स्यापण्डके न स्त्री वायलिङ्गस्त्वविक्रमे ।  
 कम्बुगजे द्वे त्रिषु तु शङ्खे सरयातरेऽपि च ॥१ ९८॥

वलये तण्डुलरुण शम्बूके च प्रकीर्तित ।  
 कम्बू स्त्री कुरुविद स्याद्भूषण च त्सरावाप ॥१९॥  
 कम्बाजास्तु नृभूनि सुर्देश ना त्वस्य राजनि ।  
 शङ्खऽपये चस्य राज्ञो द्रयास्तद्द्रजान्तर ॥१८॥  
 कम्पा कशाया कम्प्रस्तु रम्ये त्रि कमितयपि ।  
 करो वषोपले रज्ज्मा पाणाग्रश च शासतु ॥१९॥  
 मुद्राविक्षपाहंसेभशुण्डाधनलशालिषु ।  
 प्रयाये थ कर क्लीब मधकार्मुक इ यत ॥२०॥  
 करकस्तु कमण्डल्वा कर्कशा चास्त्रिया मत ।  
 करङ्क तु पुमाश्चाग्र दाडिमऽप्यथ त फले ॥२१॥  
 क्लीब द्वयोस्तु करका पक्षिभेदऽम्बुदापले ।  
 करङ्को मरु केशस्य नारिकेलफलास्थनि ॥२२॥  
 पुलङ्गो मासरहिते ताम्बूलादय भाजने ।  
 करच्छदा तु सिन्दूरपुण्या शाखोटके तु ना ॥२३॥  
 करजो ना नख चव करञ्जारयतरापि ।  
 करज क्ली तत्प्रसवे तथा व्याघ्रनखापथा ॥२४॥  
 करजो वृक्षभेदऽपि दत्तभेदऽपि कीर्तित ।  
 करञ्जिका करञ्ज द्वे भृङ्गराजे करञ्जक ॥२५॥  
 करटो गजगण्डे ना बिल्वे ग्राह्ये च नूतने ।  
 बाघभेदऽथ करट कुङ्कुमे कलाबमुच्यते ॥२६॥  
 द्वयोस्तु काके त्रिददुरुटे वृत्तसतजीवने ।  
 करटा तु स्त्रिया दुखदोह्याया स्पर्श्यते गवि ॥२७॥  
 करण कारण काये साधने कमणीन्द्रिये ।  
 क्षेत्रेऽपि साधकतमे नाट्यगीतिप्रभदयो ॥२८॥  
 रतबन्धे तथा योति शास्त्रज्ञानाश्च कुत्रचित् ।  
 ग्रहवार्ष्यागशु तथा पद्मासनादिषु ॥२९॥  
 स्पृष्टाद्युच्चारणभिदि द्वे तु शूद्रविशो सुते ।  
 करण्डो मधुककोशासिसमुद्रशु दलाहके ॥३०॥

स्त्री करण्डी पुटीसज्ञपात्रे द्व विहगान्तरे ।  
 करपत्र क्ली क्रकचे करपात्रेऽपि कीर्त्तितम् ॥१११३॥  
 करपर्णा भवेद्रक्तैरण्डे मिण्डाद्रमेऽपि च ।  
 करपलव उक्तो ना बाहावस्त्री मृदौ करे ॥१११४॥  
 करपालो मत खडगे करस्य त्रिषु पालके ।  
 करपाली स्त्रियामीलीसज्ञ शस्त्रे पुमापुन ॥१११५॥  
 करभो मणिब गदिकनिष्ठा ते करस्य ना ।  
 आतपे धायपवने द्वे बालोष्ट्रे च गदम् ॥१११६॥  
 कपिथे पीलुवृक्षे च भवेकरमवलम् ।  
 करभी स्यादुष्ट्रपायां वृश्चिकायामपि स्त्रियाम् ॥१११७॥  
 करमद कृष्णपाकवृक्षे तग्रसवे तु नप् ।  
 करमर्दी स्त्रिया कृष्णपाकजात्यतरेऽल्पके ॥१११८॥  
 करम्ब सेरुमिश्रान्ने ना त्रि मिश्रे सुमे तु नप् ।  
 करम्भी पात्रमेदे स्याकरम्मो दधिसक्तुषु ॥१११९॥  
 करवीर कृपाण ना दैयमेदाश्वमारयो ।  
 करवीयदितिश्रेष्ठगवी पुत्रवतीषु च ॥११२०॥  
 मन शिलायां तु भवेकरवीरा स्त्रिया तथा ।  
 आढकीसज्ञधा येश्वमारद्रुग्रसवे तु नप् ॥११२१॥  
 करहाट पञ्चशिखाव दे च मदनद्रुमे ।  
 पुष्पजातौ देशमदे नृभूमिन् ग्रसते तु नप् ॥११२२॥  
 करालो दतुरे तुङ्गे विशाले निकृतेऽपि च ।  
 कडारण्यपुक्ते च भीषणे चाभिधेयत् ॥११२३॥  
 ससर्जरसतले तु कालमाले गुण च ना ।  
 कडारारयेऽथ तक्लीब मत कृणकुठेरके ॥११२४॥  
 चर्मकोशे कराली तु दष्ट्राभेदे च मोगिन ।  
 अग्निजिह्वाविशेष च पावयां च स्त्रिया भवेत् ॥११२५॥  
 करालिको द्रुमेदेऽसौ दुर्गायां तु करालिका ।  
 करी गजे मनुष्ये च द्वयो कत्तरि तु त्रिषु ॥११२६॥

करीर कबुरारये ना वृक्षे वशाङ्करे घटे ।  
 करीरी चीरिकाया स्त्री दत्तमूले च दत्तिन ॥११२॥  
 प्ररके तु गजस्यप करीरो वायव्यमत ।  
 करुणा क्लेशव लोकालोकन तु भवे मुने ॥११८॥  
 करुणो रसभदे च छागवृक्षे पुमान्मत ।  
 दय तु करुण क्लीब करुणानियये त्रिषु ॥११२९॥  
 करुशस्तण्डुलकण कुसूले क्षत्रियान्तरे ।  
 नीवृद्धेदे तु पुभूमिन् करुशा इति कीर्त्तिता ॥११३॥  
 करुषको मनोवैवस्वतस्य तनया तरे ।  
 करुषक क्लीबलिङ्ग फलभेदे प्रकीर्त्तितम् ॥११३४॥  
 करेणु कणिकारद्वौ गजेऽपि च पुमान्मत ।  
 करेणुरभ्या स्त्री प्रोक्ता तथैव स्या लता तरे ॥११३॥  
 करोट वस्त्रकोशेऽथ द्वयोर्भृत्ये प्रयुज्यते ।  
 करोट च करोटी च कपाले शिरसो भवेत् ॥११३३॥  
 करोटी स्त्री घनाम्लायाञ्चाकुया परिकीर्त्तिता ।  
 कक कर्के राशिभेदे शुक्लाऽश्वे दपणे घटे ॥११३४॥  
 कर्को नाऽग्नौ सितेऽश्वस्य वर्णे द्वे तु सिते हये ।  
 ककटो द्वे कुलीरे स्याकङ्कसङ्गे च पक्षिणि ॥११३५॥  
 कर्कटी देवदाल्यां स्त्री बालक्या शामलीफले ।  
 राशौ तु मेषतस्तुर्ये ऽपि कर्कटो मत ॥११३६॥  
 आरोह्यायास्तुलायाश्च तथैवावयवातरे ।  
 कर्कटाह्वा कर्कटमृङ्गर्या बिल्वे त पुमानयम् ॥११३७॥  
 कर्कधू पुंस्त्रियो क्रोण्डुकदर्याम्परिकीर्त्तिता ।  
 व्रणे बदर्या विष्टम्भे रथादीनां युगे तथा ॥११३८॥  
 स्त्री तु मध्याज्यससिक्तयवलाज्जतर्पण ।  
 कर्करो भाण्डभेदेऽस्त्रि पाषाणे दर्पणेऽपि ना ॥११३९॥  
 द्द्वे तु मेघलिङ्गोऽथ कर्करी करके स्त्रियाम् ।  
 कूष्माण्डकालिङ्गयोर्ना कर्करुस्तत्फले तु नप् ॥११४॥

ककश काशमर्दासिकास्पिल्येक्षुपटोलके ।  
 ककशी बदरीभेदे नरकोलीति विश्रते ॥११४१॥  
 त्रि तु क्ररे खरस्पर्शे दये साहसिके दृढे ।  
 पटोले कर्कशफलो दग्धावृक्षे स्त्रियामसौ ॥११४२॥  
 कर्काटो नवनीते ना मिश्रे नवविलोलिते ।  
 तक्ने महीरुहे चैव पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥११४३॥  
 कर्कोटो नागमदेऽपि सविषौषधभिद्यपि ।  
 कर्कोटक स्यामालूरकावेयप्रभदयो ॥११४४॥  
 कर्कोटकी पीतघोषा तथा कटुफला स्मृता ।  
 कर्ण क्षेत्रातरे श्रोत्रे क्षुद्रे नि श्रोत्रके पशो ॥११४५॥  
 नौकापृष्ठस्थिताऽरित्रे राधेये कनकावलौ ।  
 कणपूर तु कथित क्ली सौगन्धिक उपले ॥११४६॥  
 शिरीषतिलकाशोककर्णालकरणेषु ना ।  
 कणपूरणमुक्त क्ली मुस्ते च श्रोत्रपूरणे ॥११४७॥  
 अर्थे पूरयते कणपूरणा क्लीस्त्रियोर्मता ।  
 कर्णा धूलिक्षप्तिकारये कर्णालङ्करणतरे ॥११४८॥  
 तथैव कणपाल्यामप्येषा स्त्रीलिङ्ग इष्यते ।  
 कर्णिका मध्यमाङ्गुल्यां कर्णालङ्करणेऽपि च ॥११४९॥  
 करिहस्ताङ्गुलौ वप्रबीजकोश्यामपि स्त्रियाम् ।  
 क्रमुकादि छटाशे स्त्री रोगभेदेऽपि कीर्त्तिता ॥११५०॥  
 कर्णिकार पुमानारग्वधद्रौ च हुमोत्पले ।  
 कर्णी तु पशुबन्धार्था रज्जुभेदे स्त्रियां मता ॥११५१॥  
 कर्त्तन छेदनेऽश्वस्य लुठने सूत्रनिर्मितौ ।  
 नापितस्योपकरणे कर्त्तनी कमिकाभिधे ॥११५२॥  
 स्यात्क्रियायां कर्त्तयते कत्तन कर्त्तनेति च ।  
 कत्तरी स्त्री कृपाण्यां च बाणपुङ्खे च कीर्त्तिता ॥११५३॥  
 कर्त्ता ब्रह्मणि भव्यद्रौ ना स्वतन्त्रेऽपि कारके ।  
 कारके तु त्रिषु प्रोक्त कत्त भव्यफले नपि ॥११५४॥



कदट करहाटे स्या पङ्कपङ्कारयोरपि ।  
 कर्दनी चैत्रपूर्णाया कदन कुसितं रत्न ॥११५॥  
 कदमोऽस्त्री मन पङ्क पङ्कारेऽययमिष्यते ।  
 कर्परो ना घटादीना शकले च शिराऽस्थानि ॥११६॥  
 कपालारये कटाहे च द्रुमाङ्ग चाधुधातरे ।  
 रजाञ्जने कपरीति स्त्रियामपा प्रमुच्यते ॥११७॥  
 कबुदार काञ्चनारे नीलक्षिण्या तथा पुमान् ।  
 कर्बुर क्ली जले हेमनि ना तु चित्र हरित्सिते ॥११८॥  
 पापे रक्षसि शब्दा च त्रि तु तद्वर्णयोगिनि ।  
 तथा तद्वर्णसुरभा पुन स्त्री कनुरा तथा ॥११९॥  
 जलौकाजातिभेदे च सत्रिप यस्य लक्षणम् ।  
 या छिन्नोन्नतकुक्षि स्याद्वभिमतस्यवदायता ॥१२०॥  
 सविषा कनुरा नाम जलौका सा प्रकीर्तिता ।  
 अथ कर्मकरो भृत्ये वेतनाजीरिनि त्रिषु ॥१२१॥  
 ना कीनाशेऽथ मूर्वाया बिम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।  
 कर्मण्या स्त्री भृतौ कर्मसाधुसपादिनोऽस्त्रिषु ॥१२२॥  
 कर्मास्त्यथप्रयोगे च क्रियाया तनये मखे ।  
 शिल्पे पापे च पुण्ये च कर्त्रेऽप्यिततमादिके ॥१२३॥  
 कारके भव्यवृक्षे च फले वस्य नपुंसकम् ।  
 अथ कर्मफल कर्मरङ्गकर्मविपाकयो ॥१२४॥  
 कर्मरा ना कर्मरङ्गे तथा वेणावयस्कृति ।  
 कर्मा हाटकपुत्र्या स्त्री तथा शालापलालयो ॥१२५॥  
 कव कामे पुमानुक्तो निष्पन्निक्षेत्र एव च ।  
 कर्वटोऽस्त्री भवेत्क्षुद्रग्रामे द्रोणमुखाभिधे ॥१२६॥  
 कवरी स्त्री शिवाभूम्यो कर्वर शबले त्रिषु ।  
 द्वे व्याघ्ररक्षसोर्ना तु देशे पापेऽञ्जलावपि ॥१२७॥  
 कर्शनो नाशने त्रि स्यादग्नौ पुंसि प्रकीर्तित ।  
 कर्षोऽस्त्री पलतुर्येऽथ कर्षणे ना बिभीतके ॥१२८॥

कषकोऽङ्गारके ना त्रि क्रष्टर्यपि कृषीबले ।  
 बिभीतके कषफलोऽथामलक्यां स्त्रियामियम् ॥११६९॥  
 कर्षीं त्रि कषके चैव हारिण्यपि च वाच्यवत् ।  
 कृषके द्वे कर्षिणौ तु क्षीरिण्या कर्षणी तथा ११ ॥  
 कर्षू पुमान्कराषाणौ स्त्रिया कुयेष्टिखातयो ।  
 कलस्त्वज्जुष्टसस्पर्शे वीणातत्रीषु सौगमे ॥११ १॥  
 पुष्पस्थ तिलकस्याथ त्र्ययक्तमधुरध्वनौ ।  
 मूकेप्यजीर्णे शुक्रे तु कल क्लीबमुदीरितम् ॥११ २॥  
 कलकण्ठ पिके हसे कपोते द्व त्रियौगिके ।  
 कोलाहले कलकल सालनिर्यासके शिवे ॥११ ३॥  
 कलक्काणस्तु दा यूहे अमरे द्वे त्रि यौगिके ।  
 कलङ्कष स्यात्सिंहजप करता या तथा पुमान् ॥११ ४॥  
 कलञ्जो ना तमाखो च दिग्धबाणाहते पशौ ।  
 कलत्र दुगदेशे भूपादेश्च श्राणिभार्ययो ॥११ ५॥  
 कलधौत सुवर्णे च रजते च नपुसकम् ।  
 कलध्वनि पुमा पारावते पिकमयूरयो ॥११ ६॥  
 कलभ करिपोते च करमेऽपि द्वयोर्मत ।  
 स्त्रिया तु कलभी श्रोक्ता धुस्तूरे चञ्चुमेषजे ॥११ ७॥  
 कलम शालिभिचौराङ्कुरलेखनिकासु ना ।  
 कलम्ब शाकनाले च बाणे चाऽपि पुमा मत् ॥११ ८॥  
 कलम्बी शाकमेदे यस्त्रीस्तम्बे शतपर्वणि ।  
 पिके कलरव पारावते च द्वे त्रियौगिके ॥११ ७९॥  
 कलल चर्मकोशेऽस्त्रि क्लीबमस्त्री चयामले ।  
 उ बे ताम्रघटे किङ्के गर्भावस्थातरेऽपि च ॥११ ८॥  
 कलविङ्को द्वे चटके तद्भदे पीतमुण्डके ।  
 कलश कलशी कुम्भे द्वे ना द्रोणारयमानके ॥११ ८१॥  
 स्थाल्या तु दधिमन्थया कलशी परिकीर्त्तिता ।  
 कलशिर्भेषजस्तम्बे पृश्निपर्णीति विश्रुते ॥११ ८२॥

दधिमथनगगयामपि स्यात्कलशि स्त्रियाम् ।  
 कलशादक इत्येष पुमान्म्लानसञ्जिन ॥१८३॥  
 स्तम्बस्य भदे स्याच्छोणपुष्पे झाटाक्तावथ ।  
 कलशस्य जले क्लीब कलशोदकमिष्यते ॥१८४॥  
 कलहसस्तु कादम्बे राजहसेऽपि च द्वयो ।  
 कलहसस्तु पुलिङ्गश्छन्दाभद्राजहसयो ॥१८५॥  
 कलहो युधि च द्वन्द्वे खकोप च भण्डने ।  
 कलहप्रिय इत्येष नारद स्त्री तु सारिका ॥१९ ६॥  
 कले दो षोडशांशे चाप्यशेषप्रयवमात्रके ।  
 वैशिके कलनाया च देहधात्व तरे तनौ ॥१९७॥  
 त्रिशकाष्टाप्रमाणे च काले षट्त्रिंशस्य च ।  
 कूट्यच्छदि सधिमन शिलयोगीतिरिल्पयो ॥१९८॥  
 कलाङ्कुरस्तु कसेऽपि पक्षिभेदेऽपि कीर्तित ।  
 कलाचिक पुमान्द्व्या प्रकोऽस्त्री कलाचिका ॥१९९॥  
 कलाधर शशाङ्केऽपि शिवेऽपि परिकीर्तित ।  
 कलाञ्जुनादी रोलम्बे कलविङ्क कपिञ्जले ॥१९ ॥  
 कलाप सहतौ बर्हे काञ्च्या भूषणतूणयो ।  
 चन्द्र विदग्धे प्रतनाङ्गिरसे व्याकरणान्तरे ॥१९१॥  
 कलापको ना कलमशाली क्ली विश्वभेषजे ।  
 कलापक चतुर्णां च पद्यानां साद्वमन्वये ॥१९२॥  
 कलापी द्वे मयूरेऽथ ना पकट्यां शिवेऽपि च ।  
 कलापिनी स्त्री पार्वत्यां कलापवति तु त्रिषु ॥१९३॥  
 कलापी कणिशे स्त्री स्यात्तथाकणिशपूलके ।  
 कलापूर्णस्त्रिकलया तु ये च द्वे तु पुस्ययम् ॥१९४॥  
 कलाया गण्डदूर्वायां कलाय कालपुष्पके ।  
 कलालायो द्वयोरुक्तो भ्रमरे त्रि तु यौगिके ॥१९५॥  
 कलिर्नेवौ रणेऽनर्थे कलघातौ बिभीतके ।  
 तत्फलेऽन्त्ययुगाऽलक्ष्म्योर्विवादे स्त्री तु कौरके ॥१९६॥

कलिकारस्तु धूम्याटे करञ्जे पीतमस्तके ।  
 नारदे कलिकारी तु लाङ्गल्या परिकीर्त्तिता ॥११९॥  
 कलिङ्ग पूतिकरजे नृपभदे च पुस्ययम् ।  
 अपत्येषु बहुष्वस्य भूमिनि चैषा च नीवृति ॥११९८॥  
 द्वे तु धूम्याटविहगे स्यात्कलिङ्गा तु नप्स्त्रियो ।  
 फले कुटजवृक्षस्य महिलाया तु योषिति ॥११९९॥  
 कलित आप्तविहितसख्यातज्ञातसयते ।  
 कलिन्दोऽक्षद्रुमे द्वये चाऽद्रिभदे पुमान्मत ॥१२॥  
 कलिन्दी तु स्त्रियामेषा यमुनाया प्रकीर्त्तिता ।  
 कलिप्रयो नारदे ना वानरे तु द्वयोमत ॥१२॥  
 कलिल गहने त्रिर्ना समूहे कायपापयो ।  
 गाम्भीर्ये सगतेऽप्यामाजघष्ठिते शुक्रशोणिते ॥१२॥  
 कलुष स्यादधे क्लीब कलुषो महिषे द्वयो ।  
 सूक्ष्मलायां तु कलुषी स्त्री त्रिषु त्वाविले भवेत् ॥१२॥  
 कृष्णे तु वर्णे कलुष पुंसि तद्वति भेद्यवत् ।  
 कलेवर तु कायेऽपि श्वेऽपि च नपुसकम् ॥१२॥  
 नवानां शम्भुशक्तीनामेकस्यां स्यात्कलेवरा ।  
 कल्कोऽस्त्री घृततैलादिशेषे दम्भे बिभीतके ॥१२॥  
 पापे चौषधपिष्टे च तथा स्यात्किट्टविष्ठयो ।  
 कल्कस्तुरुष्कनिर्यासे नात्र पापाशये मत ॥१॥  
 कपो देवद्रुमे न्याये सवत्तब्रह्मणो दिने ।  
 बिभीतके विक्रमे च सामर्थ्ये वर्णने विधौ ॥१२॥  
 कारणौपम्याऽधिवासच्छेदशास्त्राज्जन्तरेषु च ।  
 चिकित्साक्रमभदे च क्वचिज्जन्मातरेऽपि च ॥१२॥  
 कल्पन तु मत क्लीब कल्पाय च छेदनेऽपि च ।  
 कल्पना सज्जनाया स्त्री कारिण परिकीर्त्तिता ॥१२॥  
 कपना तु क्रियाया सा न ना कल्पयतेर्भवेत् ।  
 कल्मष क्लिब क्लीब पुंसि स्यान्नरकातरे ॥१२॥

कल्माषो यातुधाने च वर्णे स्याकृष्णपाण्डुरे ।  
 कृष्ण च शबल वर्णे तद्वात त्वभिधेयवत् ॥१२१८॥  
 क्लीब त्वारण्यके साम्नि कयानश्चित्र इयृचि ।  
 सर्पसामाह्वये गीते कल्माष परिकीर्तितम् ॥१२१९॥  
 कल्यस्तु नीरुजि त्रि स्यादक्षे कल्याणवाचि च ।  
 सज्जे च क्ली त्वतीतऽहि लग्ने चाहमुखऽपि च ॥१२२०॥  
 स्त्री सुराया क्वचिन्त्वेष्ट त्रिषु वाक ऋतिवजिते ।  
 कल्याण तू सवे क्लीबपक्षयस्वगुरुक्रमयो ॥१२२१॥  
 मङ्गले स्मरणपत्रे च श्रुतो च परिकीर्तितम् ।  
 कल्याणी क्ष्मागिरिजयोर्वा यवन्वक्ष्ये शुभे ॥१२२२॥  
 कल्याणा चापि कल्याणो स्त्रीवेऽयाथद्वये भवेत् ।  
 कल्याणक शुभ कल्याणिका तु स्यामन शिला ॥१२२३॥  
 कल्याणिनी बलाया स्त्री कल्याणी त्रि शुभान्वते ।  
 कल्लोल पुसि हर्षे स्यामहोर्मा च रिपावपि ॥१२२४॥  
 क्वच पटहे चैव नादीष्टक्षे तथा पुमान् ।  
 पुनपुसकयोस्त्वेतत्सनाहे क्वच मतम् ॥१२२५॥  
 क्वट कपटी च द्वे पुलकमी शूद्रसम्भवे ।  
 क्वट क्लीबमुच्छिष्ट भक्तारयेऽन्ने च कीर्तितम् ॥१२२६॥  
 क्वार पाक्षमदे स्याकवार कमले मतम् ।  
 कवि शुक्र च वाल्मीकी कृतकोटिमुनौ च ना ॥१२२७॥  
 स्त्र्यङ्गुलित्रे खलीने च विद्वत्का यकृतोस्त्रिषु ।  
 स्यात्क यवाहनोऽनौ ना विशेषात्पितृपात्रके ॥१२२८॥  
 कशा स्त्री वाजिताड्या द्वे तु लोमशपुच्छके ।  
 नकुलस्य प्रभेदेऽपि डिणि कीवैश्यजे सुते ॥१२२९॥  
 कशिपु शयने वस्त्रेऽन्ने चाऽस्त्री तद्द्वये कुथे ।  
 कशेरु स्त्रीनपो पृष्ठस्यास्थनि क्लीबक पुन ॥१२३०॥  
 स्तम्भप्रभेदे सजले पङ्कुरुदे कशेरुर्वथ ।  
 वशावेश्याकर्णिकारे कशेरु परिकीर्तिता ॥१२३१॥

कश्मल मलिने त्रि स्याक्लीब मोहपुरीषयो ।  
 कश्मीरज कुङ्कुमे स्यात्रि तु कश्मीरसम्भवे ॥१२५॥  
 कश्य त्रिषु कशाऽर्हे स्याक्लीब मद्याऽश्ववध्ययो ।  
 कश्यपो मुनिभदे ना द्वे कूर्मे त्रिस्तु मद्यपे ॥१२६॥  
 कषाकुरग्नौ सूर्ये च पुलङ्ग परिकीर्तित ।  
 कषायस्तु वराभिरयरस क्वाथरसे तथा ॥१२७॥  
 निर्यास सौरभ च स्यादनुगङ्गरागयो ।  
 रागद्रव्ये रक्तवर्णे रक्तपीतद्वया मक ॥१२८॥  
 मिश्रवर्णे तथा क्राधलाभादौ भद्यव पुन ।  
 रक्तवणधुते रक्तपीतवर्णद्वयावित ॥१२९॥  
 सुरभौ तु वरायन रसन च समविते ।  
 कषायी शालखजूरी लकुचे ना त्रिर्योगिके ॥१३०॥  
 कषिनिकषपाषाण धातो स्यात्कषतावपि ।  
 अश्वकणारयवृक्षे च काष्ठऽपि च तथा पुमान् ॥१३१॥  
 कषीका मक्षिकाया स्त्री कषीक क्ली खनित्रके ।  
 कष्टस्तु ना करीषाग्नौ स्त्री कुल्यातुषकोष्ठयो ॥१३२॥  
 कष्ट तु गहने कृच्छ्र त्रिष्वसत्त्वे नपुसकम् ।  
 कसो ना पूर्वभूपालभदे कृष्णस्य मातुले ॥१३३॥  
 पानपात्राऽन्तरे वस्त्री लोहे घोषारय आढके ।  
 हसे स्त्रीपुसयारेष कस सपरिकीर्तित ॥१३४॥  
 कखर तु धने क्लीब त्रि स्याकसनशीलके ।  
 कांस्योऽस्त्री वाद्यमित्पानपात्रघोषारयतजसे ॥१३५॥  
 काको द्वे वायसे ना तु वृक्षमित्पाठसर्पिणो ।  
 शिरोऽवक्षालने लौये मानभिद्वीपमेदयो ॥१३६॥  
 काक क्ली रतब धाऽन्तरेऽपि स्याकाकसहतो ।  
 काकजङ्घा षडस्त्रेतिप्रसिद्धस्यावरान्तरे ॥१३७॥  
 गुडासमारयवल्ल्या स्त्री जङ्घाया करटस्य च ।  
 काकणी मानदण्डस्य माषस्य च पणस्य च ॥१३८॥  
 काकिणी क किनी वा ।

तुर्यंश पादुकाया च कपदाना च त्रिशता ।  
 एकासंश्च कपदे स्यात्कण्णलंऽपि स्त्रियामियम् ॥१ ३९॥  
 काकतुण्डी तु तापिष्ठ कारुतुण्डागुरा पुमान् ।  
 काकनासा पुष्पगुमं वसुभट्टाभिध स्त्रियाम् ॥१ ४०॥  
 काकाङ्गवल्ल्या काकस्य नासिकाया च कीर्त्तिता ।  
 कारुपीलुस्तु कारेन्दा ना गुञ्जाया स्त्रियामियम् ॥१ ४१॥  
 त्रिलिङ्ग एष कथित काकपीलु स्वरातरे ।  
 काकभाण्डी कारुतुण्ड्या तथा हस्तिरुञ्जके ॥१ ४२॥  
 भवेत्काकरुको भीरागुट्टकेऽस्त्री निनेऽपि च ।  
 नग्ने दम्भे तथा निम्बपादपऽपि पुमानयम् ॥१ ४३॥  
 काकली तु कले सूक्ष्मे शब्द स्त्री काकल पुन ।  
 ग्रीवाया उन्नते दश क्ली रुण्ठमणिसङ्गके ॥१ ४४॥  
 काकशीषस्तु ना पुष्पस्तम्बभदे शिवाग्रय ।  
 वसुभट्ट इति रयाते क्ली तु काकस्य सूधनि ॥१ ४५॥  
 काकाण्ड वायसाण्डे क्ली कृष्णशिम्बा तु पुस्ययम् ।  
 काकी स्त्री काकनासाया काकालीकाकजङ्घयो ॥१ ४६॥  
 रक्तिकामलपूराकमाचीतुवरिकासु च ।  
 काकोदरस्तु द्वे सपमात्र सर्पातर तथा ॥१ ४७॥  
 षड्विंशतेरन्यतमे दर्वाकरफणामृताम् ।  
 काकोलो द्वे कुलाले च द्रोणकाके प्रकीर्त्तित ॥१ ४८॥  
 काकोलोऽस्त्री विषभिदि कालोल नरकान्तरे ।  
 काकोली तु पयस्यारयवल्लीजातौ स्त्रिया मता ॥१ ४९॥  
 काक्षी तुवरिकाया च स्त्रिया सौराष्ट्रमृद्यपि ।  
 काच शिक्वेऽक्षिरुग्भेदे मृद्भेदे च शिलान्तरे ॥१ ५०॥  
 स्त्री काचमालिका मद्ये काचस्रजि च कीर्त्तिता ।  
 काचिकस्तु पुमाञ्छय कमुण्डे द्रुतु मूषिके ॥१ ५१॥  
 काचिद्य काञ्चनेऽपि स्याच्छेमण्डे मूषिकेऽपि च ।  
 काचूक कृकवाकौ स्यात्पीतमस्तककोकयो ॥१ ५२॥

काञ्चन काञ्चनार स्याच्चम्पके नागकेसरे ।  
 उदुम्बरे च धुधूरे हारद्रायां तु काञ्चनी ॥१२५३॥  
 क्ली त्वञ्जकेसरे हेमिन् ब्रह्मरीतौ तु न स्त्रियाम् ।  
 काञ्ची स्त्री मेखलादाग्नि दाक्षिणात्यपुरातरे ॥१२५४॥  
 काठ पुमास्यापाषाण कठसम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 काण काके द्वयोस्त्रिर्विकृतेऽक्षिण विकृताक्षके ॥१२५५॥  
 काणकस्त्रिषु हिंसे स्याकाणक वक्षिजे मले ।  
 काणूक कुक्कुटे हसामदि पक्ष्यतरे द्वयो ॥१२५६॥  
 अस्त्री काण्डो जले बाणे दण्डे नाले च कुसिते ।  
 शक्तिसङ्गबलेऽध्याये स्तम्बेऽवसरवर्गयो ॥१२५७॥  
 इक्ष्वादग्रथिमदे च द्रुमस्कन्धे रहस्यपि ।  
 काण्डकारो बाणकारे गुवाके तु नपुसकम् ॥१२५८॥  
 काण्डी रोगजपिप्पल्या त्रिस्तु काण्डवति स्मृत ।  
 काण्डी तु हस्तिपिप्पल्या स्त्रीलिङ्ग पारकीर्तिता ॥१ ५९॥  
 कातर पण्डके पुसि भीरौ त्रिद्वे क्षपातरे ।  
 कायायनो वररुचौ तथा मुन्यतरे पुमान् ॥१२६॥  
 काषायवस्त्रावधवाद्धर्जरयुभयो अश्रियाम् ।  
 कादम्ब कलहसे द्व बाण ना त्रि तु यौगिक ॥१२६१॥  
 कादम्बरो ना दध्यग्रे क्ली तु मद्यातरे मतम् ।  
 स्त्रीवारुणीपरभृताभारतीशारकासु च ॥१२६२॥  
 कादम्बिनी रित्रया मेघमालाया च नवाम्बुदे ।  
 कानक कलकोऽपूते तथा स्याद्धर्जरेचक ॥१२६३॥  
 कानन विपिने गेहे परमेष्ठिमुखेऽपि च ।  
 कानीन पुसि कर्णे च व्यासे त्रिषु तु लोभिनि ॥१२६४॥  
 पितृगेहेऽप्यनूराज कानीन त्वञ्जने स्मृतम् ।  
 काता प्रियङ्गौ रामाया स्त्री कान्तस्तु धवे पुमान् ॥१२६५॥  
 नान्दीशुक्षे चम्पकद्रौ क्ली तु तप्रसवे भवेत् ।  
 तथा दमनके त्रिस्तु का त प्रियमनोज्ञयो ॥१२६६॥



च द्राय स्रयपयायपर पुसि शिशयसा ।  
 का तारोऽस्त्री महारण्य दुग्मगे च कीर्त्तित ॥१६॥  
 वनमात्रे च का तारस्ति नक्षुभद पुमानयम् ।  
 का तारकस्ति नक्षुभेद जनभद तु भृग्नि ना ॥१६॥  
 का तारिका तु कथिता स्त्रिया सा मक्षिमातर ।  
 कान्ति स्त्रिया स्यादिहार्था शोभाया च प्रयु यते ॥१६॥  
 कात्तिदा वाकुची प्रोक्ता कात्तिद पित्तमु यते ।  
 कात्तिदायरुमुक्त त्रियगि कालीयकं तु नप् ॥१७॥  
 पुमा कापटिकः त्रयनेषधार स्पशा तर ।  
 सस्थाचराणा पञ्चानामेकस्मिन्स्त्रिस्तु दाम्भिकं ॥१७॥  
 कापथ कुसितपथऽप्युशीरे क्लीबमि यते ।  
 कापोतो रुचके क्ली तु अपोताघऽञ्जना तरे ॥१७॥  
 काम काम्यस्मरेण गुग्गुलावपि रेतसि ।  
 क्लीब निकामे काम स्यात्तत्स्यादनुमतेऽव्ययम् ॥१७७॥  
 कामकूटस्तु वेश्याया प्रियविभ्रमयो पुमान् ।  
 पुमान् कामगुणो गगे त्रिषयाभोगयोरपि ॥१७८॥  
 कामचार स्रतत्रे त्रि स्नेहाया तु पुमान्मत ।  
 कामचारी ना गरुडे कलत्रि द्वयार्मत ॥१७९॥  
 वायव्यत्कामचार्युक्त स्रच्छन्द कामुकेपि च ।  
 कामदा कामधेनौ स्त्री कामदातरि वायव्यवत ॥१८०॥  
 कामध्वजो ना वादित्रनिर्घोषे च स्मरोत्सवे ।  
 कामस्य तु ध्वजे क्षेय पुनपुक्तयोरयम् ॥१८१॥  
 क्लीब कामपद योनौ कामस्य च पदे तथा ।  
 कामपाल शिवे च व बलदेवे पुमान्मत ॥१८२॥  
 कामप्र कामपूर्त्तौ स्यात्कामप्र कामपूरके ।  
 कामप्रद कामदे श्रीरतबन्धान्तरे तु ना ॥१८३॥  
 काम प्रकामास्रयानुगमनानुमतिष्वपि ।  
 कामरूपास्तु पुभृग्नि स्यु प्राग्योतिषनीदृति ॥१८४॥

योगार्थे वर्थवशतो लिङ्गाद्य तस्य तर्क्यताम् ।  
 कामरूपी द्वयोर्नानावर्णे च कृकलासके ॥१२८१॥  
 बिम्बारये यौगिके त्वथवशतो लिङ्गमुच्येत् ।  
 कामला द्व रूपाभदे कामुके कामलस्त्रिषु ॥१२८२॥  
 कामलस्तु पुमानेष मतो मरुवसतयो ।  
 कामवान्कामिनि मतस्तस्य लिङ्गाद वाच्यवत् ॥१२८३॥  
 कामव्युदितादारुहरिद्राया स्त्रियामियम् ।  
 कामवृद्धिलताभदे योगार्थेऽपि स्त्रिया मता ॥१२८४॥  
 भवेकामशर कामबाण चाभ्रतरावपि ।  
 अथ कामसखश्चैत्रवसताभ्रतरुष्यपि ॥१२८५॥  
 कामाङ्कुशा नखे चैव मेहनेऽपि प्रकीर्तित ।  
 कामाङ्गश्चूतवृक्षे ना कामाङ्ग तु स्मराङ्गके ॥१२८६॥  
 कामाद्या स्त्री मृगमद कामाद्य कोकिले द्वयो ।  
 कामायुधो महाराजचूते मेद्रे तु नस्मृतम् ॥१२८७॥  
 कामिनी कामुके रया स्त्री कामि परिकीर्तिता ।  
 कामिका त तु माध्वीकमद्य क्लीत्रि तु यौगिके ॥१२८८॥  
 कामी द्व सारसे चक्रवाके पारावतेऽपि च ।  
 वाच्यवत्कामुके स्त्री तु कामिनी भीरुवन्दयो ॥१२८९॥  
 पुष्पवृक्षविशेषेऽपि कामिनी कीर्तिता स्त्रियाम् ।  
 कामुक कमनेऽशोकपादपे चातिमुक्तके ॥१२९०॥  
 कामोसव पुमाकामहर्षे चापि स्मरोसवे ।  
 काम्पल्या दशभदे च पुमावृक्षातरेऽपि च ॥१२९१॥  
 काम्बोज श्वेतखदिरे पुमापुनागपादपे ।  
 काम्बोजी माषपर्ण्या स्त्री द्वे तु काम्बोजवाजिनि ॥१२९२॥  
 काम्य ताम्रे त्रिस्तु कामसाधुकामयित ययो ।  
 काय शरव्ये निवहे स्वभावे च तनौ च ना ॥१२९३॥  
 काय प्राजापत्यतीर्थे क्लीब त्रिस्तु कदैवते ।  
 कायस्थो लेखकारये स्यान्नरजात्यन्तरे द्वयोः ॥१२९४॥

स्त्री कायस्था हरीतक्या चित्रगुप्तामनास्तु ना ।  
 कायका प्रत्यह देहे ऋग बृहदग्तरे स्मृता ॥१५॥  
 कायेन तु कृते चतत्क्रायिक स्यात्त्रिलिङ्गकम् ।  
 कार पुसि क्रियाया च नृपभाग प्यथ स्त्रियाम् ॥१६॥  
 कारक कत्तरि तथा हिंसकेप्यभिधेयवत् ।  
 क्रियानिवत्तके तु क्ली कर्मादौ कारक मतम् ॥१७॥  
 कारण करण हेतौ स्त्रीनपोस्तपि कारणा ।  
 क्रियाया स्यात्कारयतेधाते च परिकीर्त्तिता ॥१८॥  
 कारणा तु स्त्रिया नीत्रवेदनाया प्रकीर्त्तिता ।  
 कारधमी कास्यकारे धातुनादरतेऽपि ना ॥१९॥  
 कारवी वाष्पिकासङ्गभपजे कृष्णजीरके ।  
 खराश्नारयाजमोदायां शतपुष्पापधानपि ॥२०॥  
 कारवी कीर्त्तिता क्षुद्रकारणेऽप्यामपि स्त्रियाम् ।  
 कारस्करो द्वयो राजवृक्षे क्ली नगरान्तरे ॥२१॥  
 पुमास्तु गिरिभेदस्थ नृभूमि स्युर्जनातरे ।  
 कारा प्रसेविकाया च तथा बन्धनवेश्मनि ॥२२॥  
 अकली तु बन्धने कारा कारी त्रि करयोगिनि ।  
 कारालिको वृक्षमात्रे पुलिङ्ग खङ्गिखङ्गयो ॥२३॥  
 कारि क्रियायां स्त्री कारि स्यात्त्रिलिङ्गन्यभिधेयवत् ।  
 कारिका नटभार्याया शिपयातनयोरपि ॥२४॥  
 कर्तौ विवरणश्लोकेऽग्नित्रिष्टाया च कीर्त्तिता ।  
 कारिता स्यात्स्वय दृष्टे ऋणवृद्धयन्तरे स्त्रियाम् ॥२५॥  
 कारित्वेऽप्यथ निमापितेऽसौ स्यात्कारितस्त्रिषु ।  
 कारुरिद्रे विश्वकर्मण्यपि पुसि प्रकीर्त्तित ॥२६॥  
 द्वयोरपूर्वपुयोगवैद्याया त्रास्यत सुते ।  
 शिपिकारकयोस्त्वेष कारु स्यादभिधेयवत् ॥२७॥  
 कारुज कलमे फेने बन्धीके नागकेसरे ।  
 गैरिके शिल्पिनां चित्रे स्वयञ्जातदूणेऽपि ना ॥२८॥

कारुज कारुतो जाते त्रिलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 कारोत्तर सुरामण्डे कूपे चापि पुमान्मत ॥१३९॥  
 सुरास्त्रावणपात्रेऽपि वैदले चर्मवेष्टिते ।  
 कार्त्तिकी कृत्तिकायुक्तपौणमास्या स्त्रिया मता ॥१३९॥  
 तत्पौणमासीयुक्ते तु मासे ना कार्त्तिको मत ।  
 कापटस्तु पुमानेष कीर्त्तितो जतुकार्षिणो ॥१३९॥  
 कर्मण मूलकर्मारये क्लीब मन्त्रादियोजने ।  
 कर्मणस्तु त्रिलिङ्गोऽय कथित कर्मकारिणि ॥१३९॥  
 कार्मिकस्तु भवेद्राज्ञा शुल्के वधिकृते त्रिषु ।  
 कर्मणां तु समूहे क्ली कार्मिक परिकीर्त्तितम् ॥१३९॥  
 कार्मुक चापमात्राऽपि चापभेदे नपुसकम् ।  
 ना वेणौ त्रि प्रभवति कर्मणे कामुको मत ॥१३९॥  
 कार्यं प्रयोजने क्लीब कत्तव्ये त्रिषु कीर्त्तितम् ।  
 स्यात्कार्यपुट उ मत्तकृपणाऽनथकारिषु ॥१३९॥  
 कार्षापणोऽस्त्रीपणषोडशके कार्षिकेऽपि च ।  
 कृष्णमिधमग्नोक्षणे क्ली कृष्णसस्वधिनि त्रिषु ॥१३९॥  
 क्ली तु कालायसे काल कालस्तु समये यमे ।  
 मृयौ चापि महादेवे कार्ष्ण्ये त्रिषु तु तद्वति ॥१३९॥  
 कालकस्तु पुमान्कायविकारेपि प्लुसङ्गके ।  
 रक्ते तु कालद्रयेण पटादौ भद्यलिङ्गक ॥१३९॥  
 कोपादिना च काले स्यात्मुखादौ कलतिर्यपि ।  
 तथैव कालपितरि कालको वाच्यवन्मत ॥१३९॥  
 कालकण्ठस्तु दा यूहे कलविङ्गे च खञ्जने ।  
 मयूरे पीतशाले च द्वयो स्यात्त शिवे पुमान् ॥१३९॥  
 कालकाङ्गारकारयस्य शङ्कुनेर्योषति स्त्रियाम् ।  
 कालकुण्डस्तु ना विष्णौ यमे चापि द्वयो पुन ॥१३९॥  
 मनुष्यजातिभेदे च क्षत्रियाया निषादज ।  
 कालकूटो बोलविषयमनीवृज्जना तरे ॥१३९॥

कालञ्जरो योगिचक्रमलके भवे गिरा ।  
 कालञ्जरी तु दुगायान्तया कालञ्जरा भवेत् ॥१३२३॥  
 कालधर्मस्तु कालस्य धर्मऽपि मरणऽपि च ।  
 कालपुच्छस्तु चपरमृग इ यागिके त्रिषु ॥१३४॥  
 कालपृष्ठ कर्णचापे पुसि वङ्कानहङ्गम ।  
 कालमेघ कृष्णमंघे तथा भयजभिद्यपि ॥१३५॥  
 स्त्रिया तु कालमंघी स्यान्मधुरविदलाह्वय ।  
 लताजात्यन्तरे सोमराजिमञ्जिष्ठयोरपि ॥१३२६॥  
 द्राक्षायां च द्वयोस्त्वेषा काले मय प्रकीर्तिता ।  
 कालशेय गोरसे क्ली कलशीसम्भवे त्रिषु ॥१३२७॥  
 कालसार कृष्णसार तथा स्यात्पीतचन्दने ।  
 कालस्कन्धस्तमाले च त्रिदुर्गे जीरकद्रुमे ॥१३२८॥  
 तथा स्याच्छ्यामखदिरे यागिके लिङ्गमथत ।  
 काला मन शिला मञ्जिष्ठा कृष्णत्रिवृतासु च ॥१३२९॥  
 कालानुसार्य शैलेये जावकारये विलेपने ।  
 कालिका त्विति सौराष्ट्रीसङ्गके भयजे भवेत् ॥१३३०॥  
 प्रशाताग्नौ दग्धकाष्ठे मृगमन्दऽस्य लक्षणम् ।  
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गविदुका ॥१३३१॥  
 इत्येवमविवाहाना कन्याना कन्यकान्तरे ।  
 अस्योक्त लक्षण कुब्जा दुदशा कालिका च सा ॥१३३२॥  
 अश्वस्य दतरेखाया सूक्ष्मजीरक एव च ।  
 मनोविकारप्रभवकायवैधर्ष्य एव च ॥१३३३॥  
 मेघजाले च चिक्रोडसङ्गप्राण्यन्तरेऽपि च ।  
 क्रयदेये वस्तुमूये काञ्चीपृथ्विकपत्रयो ॥१३३४॥  
 धूसर्या चणिकामेद योगिनीभिक्षवाब्दयो ।  
 पटोलशाखारोमालीमांसीकाकाशिवासु च ॥१३३५॥  
 कालिकी तु स्त्रिया मासि मासिदेयेऽधमर्णके ।  
 ऋणवृद्धिविशेषेऽथ प्राप्तकाले त्रि कालिकी ॥१३३६॥

कालिङ्गो भूमिकर्कारौ दत्तावलभूजङ्गयो ।  
 कालिन्दी यनुनानद्यां कृष्णभार्यातरेऽपि च ॥१३३७॥  
 काली मृडायामेकस्या शम्भोनवसु शक्तिषु ।  
 प्रसङ्गारयबृहत्यां अकुटौ कृष्णनवाम्बुदे ॥१३३८॥  
 सप्तानामग्निहेतीनामेकस्यामेकमातरि ।  
 सप्तानामपि मातृणां याश्च शासनदेवता ॥१३३९॥  
 अदत्तीर्थकराणां तास्वेकस्या क्षीरकीटके ।  
 पिप्पलीवृश्चिकायोश्च नील्यां कृष्णे तु जीरके ॥१३४०॥  
 कालेय कालखण्डे स्याकलीना च कदम्बके ।  
 कलिना साम्नि दृष्ट च रागद्रव्ये च जायके ॥१३४१॥  
 कालेयो दैत्यभदे ना दान्यां च परिकीर्तित ।  
 कालेयस्तु त्रिलिङ्गो यः कालसम्बन्धिनि स्मृत ॥१३४२॥  
 काशुक कृकवाकौ द्वे पीतमस्तककोकयो ।  
 कावेरी स्यासरिद्धेदे पुण्यनारीहरिद्रयो ॥१३४३॥  
 काव्य शुक्रे क्ली रसवद्वाक्ये स्त्री पूतनाधियो ।  
 काशो नक्षीक्षुगन्धायां काशा स्त्रीपुसयोस्त्विषि ॥१३४४॥  
 काशिर्ना काशतौ घानौ मुष्टौ काशाह्वये तृणे ।  
 भूमिनी वृद्धिशेषेऽथ काशी वाराणसी स्त्रियाम् ॥१३४५॥  
 काश्मीरङ्कुमेऽपि स्यादङ्कुपुष्करमूलयो ।  
 काश्मीरी कृष्णवर्णायां वचाया स्यास्त्रियामियम् ॥१३४६॥  
 काश्यपो मुनिभेदे च चन्द्रे चेक्ष्वाकुवशजे ।  
 द्वितीयनृपतौ पुत्रे मरीचेरपि पुस्ययम् ॥१३४७॥  
 काश्यपस्य तु पुत्रे च मृगभेदेऽपि च द्वयो ।  
 काश्यपी तु स्त्रियां भूमौ मासे तु नपि काश्यपम् ॥१३४८॥  
 काष्ठा स्त्री कालभेदे स्यादष्टादशनिमेषके ।  
 स्थितौ दारुहरिद्रायां दिशि चाप्युपदिश्यपि ॥१३४९॥  
 दक्षिणोत्तरयोरयतरस्मिन्नयने रवेः ।  
 आदित्ये परमावस्थोत्कर्षयोराजिसञ्ज्ञिन ॥१३५०॥

समप्रदेशस्यानेऽणु भूमि क्ली तु दारुणि ।  
 कासिका छेदनद्र ये स्त्री वनस्पतिभिद्यपि ॥१३५१॥  
 त्रिस्तु कासयितर्येप कासक कासितर्यपि ।  
 कास्यर्ग्विकले त्रि स्त्री याधौ शक्त्याशुधे धियाम् ॥ ३५२॥  
 काहली स्त्री वाद्यभद मुपिरे परिकीर्त्तिता ।  
 रथ्यावाढे नपि त्रि स्याद्वाक्ये निष्ठुर आकुल ॥१३५३॥  
 किंशारुर्ना शस्यशुके विशिखे कङ्कपक्षिणि ।  
 किंशुकस्तु पलाशे स्यादिङ्गुदे तत्फले तु नप ॥१३५४॥  
 किक्कीदिविस्तु ना वर्णे द्वे तु चापाह्वये खगे ।  
 किखिरल्पक्रोष्टुजातौ कालगात्रान्तरे स्त्रियाम् ॥१३५५॥  
 किङ्करो ना रथांश्शऽथ द्वे दासे राक्षसे जने ।  
 किङ्किणी घण्टिकाया स्त्री विवङ्कततरावपि ॥१३५६॥  
 किङ्किरोऽश्वे पिके भृङ्गे द्वे स्मरे तु पुमा मत् ।  
 किङ्किरात् स्मरे पुसि द्वे शुक्रं कोकिलेऽपि च ॥१३५७॥  
 ना कुरण्टान्तरेऽशोके क्लीब तु प्रसरे तयो ।  
 किङ्गा पुभूम्न्यूदीच्ये स्यात्कीटुद्भेद त्रि किम्भवे ॥१३५८॥  
 किङ्गल्क केसरे क्ली तु स्यादाकाशे च लाञ्छने ।  
 किङ्गालो वा लोहगूथ स्यात्ताम्रकलशेपि च ॥१३५९॥  
 किणो रुढव्रणस्थाने पुमा स्यात्पासनान्तरे ।  
 किणिही स्यादपामार्गे गिरिकर्ण्यमपि स्त्रियाम् ॥१३६०॥  
 किण्व स्यान्नग्नहूनाम्नि शीधुबीजे नपुसकम् ।  
 तथैव पापे पिण्थाके षण्डेऽन्यवदविक्रमे ॥१३६१॥  
 कितवो मत्तधुर्धूरवश्चकधूतकृत्सु ना ।  
 फले धुर्धूरवृक्षस्य क्लीब कितवमुच्यते ॥१३६२॥  
 किन्नर्यश्वमुखी चण्डालधीणापिङ्गलासु च ।  
 किम्प्रश्नाक्षेपकृत्सासु तर्के कात्स्नर्येऽथ निश्चये ॥१३६३॥  
 किम्बु सभावनायां स्याद्वितर्के चापि दृश्यते ।  
 किम्पाकः स्यान्महाकालफले चाऽप्ये तथा पुमान् ॥१३६४॥

अथ किम्पुरुषो द्वे स्यात्किञ्चरे क्ली तु भारतात् ।  
 उत्तरेऽनन्तरे वर्षे हेमकूटापराह्वये ॥१३६५॥  
 किरणस्वश्वरश्मौ च रश्मौ चापि पुमान्मत ।  
 किराटो म्लेच्छभेदेऽपि द्वयोवणिजि च स्मृत ॥१३६६॥  
 किरात स्वपकाये त्रिभूनिम्बे तु पुमानयम् ।  
 स्त्रिया चामरवाहिन्या कुट्टिनीदुगयोरपि ॥१३६७॥  
 मर्यजात्यन्तरे तस्मिन्म्लेच्छभेदेऽपि च द्वयो ।  
 किरिद्वे स्रकरे ना तु किरतावप्यनेहसि ॥१३६८॥  
 किरीटी नाञ्जुने त्रिस्तु किरीटवति कीर्त्तित ।  
 किर्मी पलाशे शालाया हेमपुत्रा च योषिति ॥१३६९॥  
 कर्पीरो नागरङ्ग च कर्बुरे राक्षसान्तरे ।  
 त्रि तु तद्वणवति निष्ठाया तु नपुसकम् ॥१३७०॥  
 किलाऽय्य स्यादतिष्ठे सभाव्यानुनयार्थयो ।  
 शिवे किलकिलो हृषध्वनौ किलकिला मता ॥१३७१॥  
 किलासी तु पृषत्या स्त्री किलास पुंसि सिध्मनि ।  
 किल्विषी वारनार्यां किविष पापलागसो ॥१३७२॥  
 किशोरस्तरुणाऽवस्थ त्रिषु द्वे त्वश्वशावके ।  
 द्वये तु तैलपण्या च किशोर पुंसि कीर्त्तित ॥१३७३॥  
 किष्किध शैलभदे ना किष्किधा वस्य कन्दरे ।  
 किष्कु प्रमाणभेदे स्यादद्वादशाङ्गुलसम्मिते ॥१३७४॥  
 वितस्त्यारये चतुर्विंशत्यङ्गुले हस्तनाम्नि च ।  
 मानद्रये ना तपे च कुठारादित्सरौ द्वयो ॥१३७५॥  
 किष्कुपर्वा पुमानिक्षौ वेणौ पोटगलेपि च ।  
 कीकटस्तु द्वयोरश्वे भेद्यवत्तु मितम्पचे ॥१३७६॥  
 नीषुद्भेदे त्वनार्याणां निवासे पुंसि भूमनि ।  
 कीकस त्वस्थनि क्लीब कृमिषु त्वणुषु द्वयो ॥१३७७॥  
 कीचको नाऽनिलरणद्वेणौ स्याले च भूपते ।  
 विराटस्याऽथ पूर्वोक्तवेणो क्ली प्रसवे मतम् ॥१३७८॥



कीटक कृमिजाता द्वे निष्ठुरे पुनरन्यत्र ।  
 कीनाशोऽनौ यमे पीतहरिते मित्रवणके ॥१३९॥  
 पीतप्रधाने पुसि स्याद्राक्षसे तु द्वयोस्त्रिषु ।  
 कदर्याऽनार्यभृतकृतघ्नेषु कृषीमले ॥१३८॥  
 पूर्वोक्तवणवद्वयेऽप्याममासाशकऽपि ।  
 कीरा पुभूम्नि कश्मीरेष्वथ द्वे तज्जने शुके ॥१३८९॥  
 कीरक प्रापण वृक्षभदे क्षपणके पुमान् ।  
 कीरेष्ट स्याच्चूतजलमधूकाखोटशासिषु ॥१३८॥  
 कीणश्चुरीनामन्यस्थाने त्रि दत्तक्षिप्तर्हिसिते ।  
 कीत्ति प्रसादयशसो स्त्रिया कीत्तयर्ता तु ना ॥१३८३॥  
 द्व कीलोऽर्चिर्दा रफोणिशङ्कस्तम्भ शिवे तु ना ।  
 कीलालमप्सु पक्कान्निष्यन्दऽन्नेऽमृतेऽसृजि ॥१३८४॥  
 कीशो दिगम्बरे पुसि कपो त्रेष द्वयोर्मत ।  
 कु पापे चेषदर्थे च कुत्साया च निगारण ॥१३८५॥  
 कुकुन्दर कुक्कुरद्रौ नितम्बस्य च कूपके ।  
 कुकूल शङ्कुभि कर्णे श्वश्रे ना तु तुषानले ॥१३८६॥  
 कुक्कुट्यनृतचर्याया द्वयोस्तु चरणायुधे ।  
 भासेऽपि कुक्कुभे शूद्रान्निषादीतनयेऽपि च ॥१३८७॥  
 शूद्रायां मागधापत्ये निषादीवैश्ययो सुते ।  
 सुनिषण्णारयशाके तु तृणोल्कायां च कुक्कुट ॥१३८८॥  
 कुक्कुटाक्षोऽल्पतुम्ब्या ना यौगिकाऽर्थे त्वय त्रिषु ।  
 कुक्कुरो द्वे सारमेये ग्रथिपर्णे नपुसकम् ॥१३८९॥  
 कुक्षि पार्श्वेऽन्तरुदरे तुन्दे चैक्ष्वाकसम्भवे ।  
 कुचन्दनोऽस्त्रिया पीतचन्दने रक्तचन्दने ॥१३९॥  
 कुचरस्तु कुवादे स्याद्भूचरे चाऽभिधेयवत् ।  
 कुचेल कुत्सिते वस्त्रे तद्वति त्वभिधेयवत् ॥१३९१॥  
 अविद्वकर्णापाठाधारण्ये कुचेला लतान्तरे ।  
 कुजो नाऽङ्गारके वृक्षे तथैव नरकासुरे ॥१३९२॥

कुजा कात्यायनीदेव्या भूमिज तु कुजस्त्रिषु ।  
 कुञ्जिका वङ्गरारये स्याकपाटोद्घाटयत्रके ॥१३९३॥  
 तूलीस्राचकयोर्भीरुभीषणे साधनेऽप्यथ ।  
 कीर्त्तित कुञ्जकश्चैव कुञ्चितयभिधेयवत् ॥१३९४॥  
 कुञ्चित तगरे क्लीब कुटिले चभिधेयवत् ।  
 कुञ्जोऽङ्गी गह्वरे दत्ते हनावपि लतागृहे ॥१३९५॥  
 ऋषिभदे तु पुलिङ्ग कुञ्ज एष प्रकीर्त्तित ।  
 कुञ्जरा पाटलाघातक्योर्ना केशे द्वयोर्गजे ॥१३९६॥  
 कुञ्जरारातिरुक्तो ना सिंहे च शरमेऽपि च ।  
 कुञ्जिका कुञ्जव लर्या तथा स्यात्कुणजीरके ॥१३९७॥  
 कुटस्तु पुसि कलशे गृहे तु द्वे कुटी कुट ।  
 कुटचो वृक्षभदे स्यादगस्यद्रोणयोरपि ॥१३९८॥  
 क्लीबलिङ्ग तु वृक्षस्य प्रसवे तस्य कीर्त्तितम् ।  
 कुटनटस्तु ना गुण्डुसञ्चवृक्षे नपि त्वद ॥१३९९॥  
 गोमदसङ्गके मुस्ताभदे प्रोक्त कुटन्नटम् ।  
 कुटपो ना मुनौ मानमेदे कुडवसङ्गके ॥१४०॥  
 निष्कुटे चाथ कुटप कमले क्लीबमुच्यते ।  
 कुटरो मृगमेदे च वधकौ ना द्वयो खगे ॥१४१॥  
 कुटल स्यादाभरण कुटला गात्रकृयषौ ।  
 कुटिर्गृहेऽतिकुटिले नृस्त्रियो परिकीर्त्तिता ॥१४२॥  
 कुटिल कुञ्चिते त्रि स्याक्लीब तु तगरे स्मृतम् ।  
 अथ स्त्रिया च तगरपाद्या स्यात्कुटिला स्त्रियाम् ॥१४३॥  
 स्त्रिया कुटिलिकाऽङ्गरापकषण्या च शिल्पिनाम् ।  
 कर्मरनाम्ना धान्य च कषकाणा प्रमृद्रताम् ॥१४४॥  
 पुलोत्क्षेपणवेणौ स्यात्परिव्राजां च भूतले ।  
 निधानस्य निषिद्धवाहण्डाना धारणाय यत् ॥१४५॥  
 स्यात्कम्बिग्रहणन्तत्र तथा चोरजनस्य च ।  
 यष्टयप्रप्रतिबद्धेऽन्यनिलयारोहणाय य ॥१४६॥

लोहककटकस्तत्रापीय कुटिलिका मता ।  
 कुटी तु कुम्भदास्या स्त्री मुराया त्रिगुच्छके ॥१४७॥  
 पयारये क्षुद्रगहे च द्वयोस्तु क्षत्रियात्मते ।  
 कुक्कुटीसङ्गभार्यायामश्मकुट्टनवृत्तिके ॥१४८॥  
 कुटीरस्तु पुमा क्षुद्रागारे द्वे तु सककम् ।  
 कुटुम्ब नामनि तथा बाधने सन्ततापि ॥१४९॥  
 ज्ञाता च पोष्यवर्गे च पुनपुसकयोर्मतम् ।  
 कुट्टि कुट्टयता पुमि स्त्रिया कुट्टि स्मृतायसि ॥१४९॥  
 शम्भल्या कुट्टनीच्छदकुत्सयो कुट्टना मता ।  
 कुट्टिमाञ्ज्नी निबद्धाया भूमापि कुटीरके ॥१४९॥  
 कुठारु पुमि वृक्षे स्याद्वानरे तु द्वयोमत ।  
 कुठि पुमाभवे वृक्षे पापे च वृषलालये ॥१४९॥  
 कुठे रोगे तमारे त्रिना तु स्तम्भे कठिञ्जरे ।  
 कुडस्तु ना वैश्रवणे क्ली घटे लाङ्गले कुडम् ॥ ४९३॥  
 द्वयो कुडी कु कृति शिशावपि च सकरे ॥  
 पलितिसङ्गयोषायामुद्भूते शूद्रपूरुषात् ॥१४९॥  
 कुडङ्गोञ्ज्नी निकुञ्जे च तथैव स्याच्छदिष्यपि ।  
 कुडुब पक्षिनीडेपि परिमाणान्तरे पुमान् ॥१४९॥  
 कुडुम्बी सकुडुम्बे त्रिर्द्वयोस्तु स्यात्कृषीवले ।  
 कुडमलोञ्ज्नी स्यात्मुकुले कुडमलभरकान्तरे ॥१४९॥  
 विद्यादासनभेदे च लक्षण यस्य कीर्तितम् ।  
 नागदन्तकमूर्ध्वहोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ॥१४९॥  
 स्रचीमुखमिदं पाणितलौ चेतसहृतौ मिथ ।  
 अर्धस्रची तु तौ द्वौ चेत्यादेशान्तरितौ मुखान् १४९॥  
 कुडमल मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ।  
 कुड्य विलेपने भित्तौ क्लीबं कौतूहलेपि च ॥१४९॥  
 कुणपोञ्ज्नी शवे द्वे तु कुमौ त्रिषु तु कुत्सिते ।  
 विटसारिकायां कुणपी क्ली पूये दोहदाम्बुनि ॥१४९॥

कुणाल कृतमाले ना पुत्रे चाशोकभृशुज ।  
 अथ क्लीब पुरभिदि कुणालमिति कीर्तितम् ॥१४२१॥  
 कुणिस्तु नान्दीष्टक्षे च विकले च करे पुमान् ।  
 त्रिलिङ्गस्तु कुणिस्तस्मि यस्यास्ति विकल कर ॥१४२२॥  
 कुण्ठो मूर्खेऽथ कर्मण्ये चाऽतीक्ष्णोऽपि त्रिषु स्मृत ।  
 कुण्ड नपुसक स्यात्पुत्रा काञ्चिके बह्विगत्तके ॥१४२३॥  
 जलाशये च देवादे कुम्भे मानान्तरेऽपि च ।  
 कुण्डी कमण्डलौ स्त्री स्यात्कुण्डा तु जनिते मता ॥१४२४॥  
 जारेण पतिवन्त्या द्वे अविवाह्यासुतेऽपि च ।  
 कुण्डकीटस्तु चार्वाकवचनाऽभिज्ञपूरुषे ॥१४२५॥  
 पतितब्राह्मणीपुत्रदासीकामुकयोरपि ।  
 कुण्डली चित्रलमृगे मयूरे भुजगे द्वयो ॥१४२६॥  
 पुमांस्तु वरुणे प्रोक्तस्त्रि तु कुण्डलवत्यसौ ।  
 कुण्डली स्त्री गुल्फ्यां च काञ्चनद्रौ भवेदथ ॥१४२७॥  
 पाशके वलये क्लीब कणवेष्टे त्रिकुण्डलम् ।  
 कुण्डी त्वक्षे द्वयोस्त्रिस्तु कुण्डवत्ययमिष्यते ॥१४२८॥  
 कुतलुस्तु कुबेरे ना त्रि तु स्यात्कुत्सिताङ्गके ।  
 कुतप सूर्यबह्वयोर्ना वृषभेऽप्यतिथावपि ॥१४२९॥  
 भागिनेयेऽथ विप्र द्वे पुन्नपुसकयो पुन ।  
 दर्मेऽप्यहोऽष्टमे भागे तिलेच्छागजकम्बले ॥१४३०॥  
 वाद्यवादकसामग्र्या नाद्यस्यास्तरणऽपि च ।  
 सायमास्तरणे वाद्यविद्यासे देहलावपि ॥१४३१॥  
 कुतली शाकभेदे स्त्री कुतलोऽस्त्री भ्रुवस्तले ।  
 कुतूल कौतुके स्यात्प्रशस्तेऽपि च दृश्यते ॥१४३२॥  
 कुत्राण तु भवे कुण्डे शिष्ये चैव नपुसकम् ।  
 कुत्सा स्त्रियां स्यान्निन्दाया पुस्यरत्यभिधानके ॥१४३३॥  
 प्रमाणेऽपि च वज्रेऽपि तथा ऋष्यन्तरेऽप्यथ ।  
 तदपत्येषु बहुषु गोत्रारयेषु द्वयोरयम् ॥१४३४॥

स्यात्कुसित पयुपिते निन्दिते राजभिधयन् ।  
 नपुसक वृण कुष्ठभेपजे पि च कुमितम् ॥१८५॥  
 कुथ पुमान्कुश वृणकम्बले तु कुथा त्रिष ।  
 कुदालोज्झी मतो गोदारणारय खानमाधने ॥१८३६॥  
 पुमास्तु कोविदारद्रा क्लीब तत्प्रमये मतम् ।  
 कुत्र पुमान्समुद्रे च परते च प्रकीर्तित ॥१८३७॥  
 मन शिलाया कुनटी नैपाया द्वे तु दुनः ।  
 कुनालिका पक्षिशाले दुनाया च स्त्रिया मता ॥१८३८॥  
 कुतो गवेधुकाया स्यात्तथा प्रासायुधे पुमान् ।  
 कुन्ती तु स्त्री पृथाया स्यात्शाकुस्यामपि गुग्गुला ॥१८३९॥  
 कुतलश्चपके काले यत्र केशे पुमान्मत ।  
 कुन्तला तु नृभूमि स्यदक्षिणापथरत्तिनि ॥१८४०॥  
 नीवृद्धेदे तथा मध्यदेशस्थे कुन्तलस्तु ना ।  
 तद्राजे तदपत्येषु कुन्तला स्थुर्नृभूमनि ॥१८४१॥  
 बहुष्वथ स्यपत्ये तु कुतली स्त्री प्रकीर्तिता ।  
 कुत्तिना नृपभेदे तनीवृद्धेदे नृभूमनि ॥१८४२॥  
 राजस्त्वस्य स्यपत्ये स्त्री कुन्ती कुत्तिरिति द्वयम् ।  
 कुनूसज्ञे स्नेहपात्र एलाया च प्रकीर्तिता ॥१८४३॥  
 कुन्द पुमा मुकुन्दे स्यान्निधिभेदे अमाभिधे ।  
 शस्त्रमार्जकयत्रे च शुक्लपुष्पारयपादपे ॥१८४४॥  
 माध्यायनाम्नि पुष्पे तु फले चास्य नपुसकम् ।  
 कुन्दरस्तु भवेद्विष्णौ ना तृणे कण्डुराभिधे ॥१८४५॥  
 कुयु पालङ्कधारयशाके पुस्यथो मूषिके द्वयो ।  
 कुदुमस्तु पुमा मुञ्जे मार्जारे तु द्वयोर्मत ॥१८४६॥  
 कुफाकुर्ध्वे कपौ नाम्नि रयोस्त्रि परतापिनि ।  
 कुषेर पुसि यक्षेशे नान्दीवृक्षे च कीर्तित ॥१८४७॥  
 कुब्जो निखर्वे गङ्गुले त्रिर्ना वृक्षान्तरे गङ्गौ ।  
 कुत्र गृहे कर्मणि क्ली कुत्र कुत्री गजे द्वयो ॥१८४८॥

फगुसङ्कटयो कुत्रस्त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 कुमारो युवराजेऽश्वचारके वरुणद्रुमे ॥१४४९॥  
 कुत्सितायां मृतौ चाथ द्वयोर्बाले शुकेऽपि च ।  
 जम्बूद्वीपेऽथ तक्लीब कुमार जात्यकाञ्चने ॥१४५॥  
 कुमारी शैलतनया नवमाल्योर्नदीभिदि ।  
 सहापराजिताकुस्तुम्बुरीकयासु च स्त्रियाम् ॥१४५१॥  
 हिमामे मृगभेदे च नीवृत्तन्तृपभदयो ।  
 मारस्तु कुत्सिता यस्य कुमारस्तत्र वा यवत् ॥१४५२॥  
 कुमुख कुत्सिताऽस्ये त्रि स्रकरे तु द्वयोर्मत ।  
 कुमुद् क्ली कैरवे स्त्री तु कुमोदे कृपणे त्रिषु ॥१४५३॥  
 कुमुदोऽस्त्री रक्तपद्मे कैरवे च प्रकीर्त्तित ।  
 ना दिग्गजातरे नागातरेऽपि कपिभिद्यथ ॥१४५४॥  
 कुमुदा कटफले स्त्री स्याद्गम्भार्या कुम्भिकौषधा ।  
 कुमुद्रा कुमुदप्राये देशे स्यादभिघेयवत् ॥१४५५॥  
 कुशपत्न्या तु कुमुदस्तम्बेऽपि स्त्री कुमुद्वती ।  
 कुमुल पु पहेम्ना क्ली काते त्रिषु शिशौ द्वयो ॥१४५६॥  
 कुम्बा तु गहनाया स्त्री वृतौ स्याद्विदल तु नप ।  
 कुम्भ पुसि घटे हस्तिमूधपिण्डे महत्तरे ॥१४५॥  
 वेश्यापतौ सोमदत्ते राशौ च शनिदैवते ।  
 रक्षोभित्काभिलयाव्योर्द्रोणारयपरिमाणके ॥१४५८॥  
 तस्य द्वये विंशता च खारीण पञ्चविंशतौ ।  
 स्त्री तु स्थायन्तरे कुम्भी वारिपण्या च कटफले ॥१४५९॥  
 दक्षिण थनगर्गर्या पृथ्विकाया च पाटलौ ।  
 कुम्भा तु स्त्री त्रिवृद्धल्लौ कुम्भ तु नपि गुग्गुलौ ॥१४६॥  
 कटफलादेश्च मूलेऽपि प्रसवे च नपुंसकम् ।  
 कुलत्थिकौषधौ कुम्भकारी द्वे तु कुलालके ॥१४६१॥  
 कुम्भयोनिरगस्त्ये स्याद्वसिष्ठोणयो पुमान् ।  
 कुम्भिक शालमीने च चौरश्लोकार्थचौरयो ॥१४६२॥

कुम्भी तु कुम्भव येष वाच्यवत्परिकीर्तित ।  
 कुम्भीनी वसुधाया स्त्री द्वयोस्तु गजनक्रया ॥१४६३॥  
 कुम्भीक पुंसि पु नागवृक्षे तप्रसवे पुन ।  
 प्रसवे कुमुदस्यापि कुम्भीक स्यान्नपुसकम् ॥१४६४॥  
 कुम्भीनस सपमात्र द्वयोदर्वीकरा तरे ।  
 कुम्भीनसी स्त्रियामेषा लग्नासुरमातरि ॥१४६५॥  
 कुम्भीरस्तु द्वयोर्मस्ये चोरे तु त्रिषु कीर्तित ।  
 कुम्भीलास्त्रषु चोरे च श्लोकछायादिहारिणि ॥१४६६॥  
 पुमास्त्वय स्याकुम्भीलो मत्स्ये स्यालाभिधानके ।  
 कुरङ्गो वानरेऽपि स्यावद्रे महाहरिणऽपि च ॥१४६७॥  
 कुरङ्गको द्वे हरिण मुद्रपण्यां कुरङ्गिका ।  
 कुरङ्गी तु स्त्रिया भोजतनयायाम्प्रकीर्तिता ॥१४६८॥  
 कुर टक पीतपुष्पाभ्लानश्छिण्टोकयोर्मत ।  
 कुरण्डो मृष्टिद्वयारय रोगभदे पुमान्त ॥१४६९॥  
 स्तम्भे च किङ्किरातारये मत्स्ये त्वेष द्वयोर्मत ।  
 कुररी स्त्री भवेन्मेघ्यामुत्क्राश कुररो द्वयो ॥१४७०॥  
 गाजिह्वाया तु कुरसा स्त्रिया स्याद्विरसे त्रिषु ।  
 कुरीरस्तु पुमामालाविशेषे कम्बलेऽप्यथ ॥१४७१॥  
 कुरीर मैथुने पन्न जालेऽपि स्यान्नपुसकम् ।  
 कुरुस्तु प्रोच्यते पुंसि ऋत्विग्राजर्षिभदयो ॥१४७२॥  
 नीवृद्धदे तु पुभूमि वर्षे चाप्युत्तराभिधे ।  
 कुरु टो दाहपुत्र्यान्ना क्षि टीभ्लानप्रभेदयो ॥१४७३॥  
 भनेकुरुवक शोणभ्लाने कुरवकेऽपि च ।  
 भिण्ड्योश्च पीतारुणयो क्ली त्वेषा प्रसवे भवेत् ॥१४७४॥  
 कुरुमस्तु द्वयो कारौ भाजने तु पुमानयम् ।  
 कुरुली धविनां लक्षवेधे स्यात्कुरुलोलके ॥१४७५॥  
 कुरुविन्दो रत्नभदे मुस्तके हिङ्गुलेऽपि च ।  
 अर यक्षुद्रायाणा सप्तानामेकधा यके ॥१४७६॥

कुरुस्तु कुरुराजस्य स्यपत्ये स्त्री प्रकीर्त्तिता ।  
 कुर्वाणस्त्रिषु भृत्येऽपि कारकेऽपि प्रकीर्त्तित ॥१४ ॥  
 कुली स्याद्बदरीकण्टकार्यो र्येष्ठस्वसर्थपि ।  
 भार्याया स्त्रीकुल त्वेतद्वषीणाञ्जलतपण ॥१४७८॥  
 निकेतने सजातीयगण जनपदेऽन्वय ।  
 शैवसङ्घातरे द्वे तु मार्जारे स्याकुला कुली ॥१४ ९॥  
 कुलको ना कुरवके व मीके काकातदुके ।  
 सपभेदे कुलाग्रयऽथ पञ्चादिश्लोकसहस्रौ ॥१४८ ॥  
 पटोलव या कुलक सयुक्ते तु त्रिषु स्मृतम् ।  
 कुलक्षया शूकशिम्ब्या कुलनाश कुलक्षय ॥१४८९॥  
 कुलात्थका कुलाधारये भेषजे नृस्त्रियो पुन ।  
 कुलथधान्ये द्वे तु स्यादेष दर्वीकरातरे ॥१४८२॥  
 कुलाय पक्षिनीड च गृहे चापि पुमान्मत ।  
 एकाद्वक्रतुभेदेऽथ त्रि कुलस्यायके भवेत् ॥१४८३॥  
 कुलाल कुम्भकारेऽपि कुङ्कुमेपि द्वयोर्मत ।  
 चक्षुष्यारयौषधौ तु स्त्री कुलाली परिकीर्त्तिता ॥१४८४॥  
 कुलिको नागभेदे स्याद्द्रुमेदे कुलसत्तमे ।  
 कुलिशन्त्वस्त्रियां वज्र मत्स्यभेदे तु स द्वयो ॥१४८५॥  
 कुलमाष काञ्चिके क्लीब कुरुविदमणौ पुमान् ।  
 ब्रीह्यन्तरे क्षपभक्त विदले च यवातरे ॥१४८६॥  
 यवपिष्ट यावकारये पक्वमुद्रादिपिण्डके ।  
 वर्णे च शबले कुमाषस्त्वेष त्रिषु तद्वति ॥१४८ ॥  
 कुल्य स्यात्कीकसेऽप्यष्टद्रोणीशूर्पामिषेषु च ।  
 रसे तु ना कटोश्चापि कषायस्य च मिश्रणात् ॥१४८८॥  
 गाढे तद्वति तु त्रि स्यात्कुलीने च नृभूम्नि तु ।  
 नीष्टुद्भेदेषु मध्योदग्दाक्षिणात्येषु कीर्त्तित ॥१४८९॥  
 कुल्या स्त्रिया स्यात्सरिति कृत्रिमाज्ज्यसरित्यपि ।  
 जीवितकाकण्टकारीकुलस्यम्बुग्रणालिषु ॥१४९ ॥



कुव स्यादुत्पले क्लीब कुव स्त्रीपुंसयो पशौ ।  
 अथात्पले कुवलय यौगिके र्थे तु लोकवत् ॥१४९१॥  
 कुवली स्त्री बदर्या स्यात्तत्फलोपलयोस्तु नप ।  
 कुवेलष्ठ पले क्लीब त्रिस्तु कुसितवेलके ॥१४९२॥  
 कुश हीवेरजलया क्ली दर्भे तु कुशोजस्त्रयाम ।  
 कुशस्तु रामपुरेऽपि योक्त्रे द्वीपातरे च ना ॥१४९३॥  
 कुशा निष्ठुतिर्राष्ट्रे स्त्री वगारजा च वाजिन ।  
 अयोनिकारे तु कुशी फालारये च हलाग्रके ॥१४९४॥  
 पापिष्ठमत्तयास्त्वेष कुशो वाच्यवदिष्यते ।  
 कुशल त्रि क्षमे क्षमे निपुणे मङ्गलाचिते ॥१४९५॥  
 दीक्षितेऽप्यथ तत् क्लीब पणपर्याप्तिमङ्गले ।  
 कुशस्थल का यकुजमत्रवेदी कुशस्थली ॥१४९६॥  
 कुशिको ना मुनौ सर्पे द्वयोस्तु क्रोष्टुघूकयो ।  
 कुशीलवो द्व वैदेहालङ्घनप्लवनादिना ॥१४९७॥  
 वत्तमाने सुतेऽम्बष्ठया नटानामपि विश्रुते ।  
 चारण च कुशीसज्ञाज्योविकारलवे तु ना ॥१४९८॥  
 वाल्मीकौ च द्विवचने तूक्तौ रामस्य पुत्रयो ।  
 कुशेशयतु कमले विष्णौ तु स्यात्कुशेशय ॥१४९९॥  
 कुषा कु कपिवह्वयर्के ना परोत्तापिनि त्रिषु ।  
 कुषित क्ली भवेत्पापे निष्कृष्ट वभिधेयवत् ॥१५०॥  
 कुष्ठोस्त्री परिभान्यारयगधद्रव्यौषधान्तरे ।  
 याधिमेदेऽप्यभूमिष्ठे कुष्ठ स्यादभिधेयवत् ॥१५१॥  
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली ऋणवृद्धया च जीवने ।  
 मेघव बलसे वृद्धिजीविन्यपि च कीर्त्तित ॥१५२॥  
 पुयागाच्च स्त्रिया वृत्तौ कुसीदायी प्रकीर्त्तिता ।  
 कुसुमोऽस्त्री फले नेत्ररोगे स्त्रीपुष्पपुष्पयो ॥१५३॥  
 कुसुम्भ कुङ्कुमे हेम्नि क्ली महारजनेऽपि च ।  
 स्त्रियां कुसुम्भी तत्स्तम्भे वरधान्ये कमण्डलौ ॥१५४॥

कुसुतिस्तु कुमार्गे स्यात्कुगतौ शाठ्य एव च ।  
 कुहन पुंसि वमीके त्रिरीर्ष्याला च मायिनि ॥१५ ५॥  
 कुहना स्त्री दम्भचयादम्भशीलत्वयोर्मता ।  
 मायाया त्विद्रजाले च कुहन द्वे तु मूषिके ॥१५ ६॥  
 कूच्युदश्विद्विकारे स्त्री नार्या कूचस्त्वमे द्वयो ।  
 कूचिका सूचिकाया च तूलिकाया च कुडमले ॥१५ ७॥  
 कपाटाङ्गुरके क्षीरविकृताग्रपि याषिति ।  
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाद्येष्वद्रिशृङ्ग शरातरे ॥१५ ८॥  
 अय शलाकारये तुच्छे सीराङ्गे फालसङ्गके ।  
 अयोधने नृते दम्भ योम्न निश्चलयत्रयो ॥१५ ९॥  
 कूपो भूषितकयायां ना तु गर्तोदपानयो ।  
 गुणवृक्षेऽपकूपे तु स्त्रिया कूपी त्रयुयते ॥१५ १०॥  
 कूप्य क्ली पाशुलवणे कूपसाधौ तु भेद्यवत् ।  
 कूबरस्वस्त्रियां गत्रीसमारये स्याद्रथातरे ॥१५ ११॥  
 त्रिषु चारौ द्वयो कुजे नृलिङ्ग स्याद्यगधरे ।  
 कूच पशौ भग्नशृङ्गे त्रिरस्त्रीश्मश्रपीठयो ॥१५ १२॥  
 भ्रमध्ये कथने दर्भे तन्तुवायपरिच्छदे ।  
 तथा यतिपवित्रे च पादाङ्गुष्ठातरेऽपि च ॥१५ १३॥  
 स्त्री तु चित्रकराणां स्यात्कूर्ची लेखनसाधने ।  
 कूचिका मस्तुपिण्डे च सूचितूलिकयोरपि ॥१५ १४॥  
 कपाटस्याङ्गुरे चापि स्त्रियामेषा प्रकीर्तिता ।  
 कूर्परस्तु कफोणौ च जानुयपि पुमान्मत ॥१५ १५॥  
 कूर्म कूर्मी कच्छपे स्त्रीपुंसयो परिकीर्यते ।  
 गजाङ्घ्रिदेशे तु नखात्परे कूर्म पुमान्मत ॥१५ १६॥  
 कूलतीरे चमूकव्यां तटाके स्तूप एव च ।  
 कूलक न स्त्रिया स्तूपे पुंसि स्यात्कृमिपवते ॥१५ १७॥  
 कूलङ्गुषा स्त्रिया नद्या त्रि तु कूलस्य काषके ।  
 कूष्माण्डस्तु पुमाविघ्नराजस्य त्रियभृत्यके ॥१५ १८॥

गणभेदे शालिजातिभेदे अष्वातरेऽप्यथ ।  
 फलवल्ल्यतरे तु द्वे कूष्माण्डी क्ली तु तफले ॥१५१॥  
 अवतेहेड इत्यादिष्वृग्विशेषेषु नप्स्त्रयो ।  
 कूष्मा तु पुसि शये च वाताभावे च कीर्तित ॥१५२ ॥  
 कृकस्तु मृगभेदे स्याद्द्वयोरडग्रौ त्रय पुमान् ।  
 कृकरस्तु पुमाश्चये वाते च परिकीर्तित ॥१५२१॥  
 कृकवाकुर्द्वे सरटकेकिकृककुटखञ्जने ।  
 कृ-कृ कष्टऽप्यधर्मे क्ली तद्वति त्रिष्वथाऽस्त्रियाम् ॥१५२२॥  
 तपोमात्रे तथा प्राजापयसात्तपनादिषु ।  
 कृणकोऽय कृणयितर्यभिधेयवदिष्यते । १५२३॥  
 वीणावशशलाकाया कृणिका स्यास्त्रियामियम् ।  
 कृत हते निर्मिते त्रिभक्ताज्वस्थितकिङ्करे ॥१५ ४॥  
 क्लीच चादियुगेऽन्नादि पक्वहयेऽक्षदविनाम् ।  
 अक्षवातप्रभेदे च स्तोमच्छद प्रभदयो ॥१५ ५॥  
 अलमर्थे क्रियायाश्च कृतमेतप्रयुयते ।  
 कृतज्ञ कुक्कुरे द्वे स्यादपकारविदि त्रिषु ॥१५२६॥  
 कृतमाल पुमागधद्रव्ये तक्कोलनाग्नि च ।  
 आरवधेऽथ द्वे कृष्णमृगभिद्धूकभेदयो ॥१५२ ॥  
 कृतबेधन इत्येष कोशातक्यन्तरे पुमान् ।  
 भवेपृथुफले स्रपफले जात्यतरेऽस्य च ॥१५२८॥  
 कृतातो यमसिद्धातदैवाकुशलकर्मसु ।  
 कृति स्त्रियां स्याकरणे हिंसनेऽपि कृतेऽपि च ॥१५ ९॥  
 चतुरक्षरकच्छन्दोभेदेऽशीयक्षरेऽप्यथ ।  
 धात्वो कृणति कृन्तयो पुल्लिङ्ग कृतिरीरित ॥१५३ ॥  
 कृती स्यात्पण्डिते योग्ये कुशले चाभिधेयवत् ।  
 कृत्त तु वेष्टिते छिनेऽप्यभिधेयवदिष्यते ॥१५३१॥  
 कृत्यन्तु भेद्यवत्कृद् लुधे भीतेज्वमानिते ।  
 विद्विष्टेपि च सरधे कर्त्तव्यव्रश्चितययो ॥१५३ ॥

कचनीये कृतिकृतकृयसाधौ च कीर्तितम् ।  
 प्रयोजने तु क्ली कृय स्याकृत्या त्रिभिचारजे ॥१५३३॥  
 दवते च क्रियाया च स्त्रियामेषा प्रकीर्तिता ।  
 कृत्रिम कृतिनिवृत्ते त्रि क्ली कास्यारयलोहके ॥१५३४॥  
 कृत्रिमो वृक्षधूपारयनिर्यासे पुसि कीर्तित ।  
 तुरुष्कारये च निर्यासे लवण च विडाह्वये ॥१५३५॥  
 कृस्न स्याक्लीबमृदके निखिले तु त्रिलिङ्गकम् ।  
 कृदरस्त्रिषु हिंसे स्या पुमास्तु खदिरे सिते ॥१५३६॥  
 कृतत्रो नाऽतरिक्षे च लाङ्गलाऽग्रे च लाङ्गले ।  
 द्व तु स्वर्णाभिघाताथसाधने मशकेऽपि च ॥१५३७॥  
 कृतरो वृक्षभेदे ना मक्षिके कार्य एव च ।  
 आलाचने तु त्रिष्वेष कृततर परिकीर्तित ॥१५३८॥  
 कृपस्तु पुसि द्रोणस्य स्यालके परिकीर्तित ।  
 कृपणस्तु कृमौ द्वे स्यान्मदकुसितयोस्त्रिषु ॥१५३९॥  
 कृपा दयाया पया तु कृपी द्रोणस्य कीर्तिता ।  
 कृपाणी क्षुरिकाया स्त्री कर्त्तन्या सैनिकस्य च ॥१५४०॥  
 अथ खड्गे कृपाणोऽसौ पुंलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 कृपीटमुदरेऽपि स्यात्तोयेऽपि च नपुसकम् ॥१५४१॥  
 कृपीटपाल उद्दिष्ट केनिपातसमुद्रयो ।  
 कामर्णा कृमिवत्कीटे लाक्षाया कृमिले खरे ॥१५४२॥  
 कृवि पुमास्तुवायद्रव्ये रूपे द्वयोस्वसौ ।  
 कृविन्दे कर्त्तिकारव्य तु स्त्रिया नापतभाण्डके ॥१५४३॥  
 कृशस्तनौ वा यव स्यात्पुमान्केतुग्रहेष्वियम् ।  
 कृषको लाङ्गलाख्ये ना कूटारये त्रि कृषिवले ॥१५४४॥  
 कृषि स्त्री कृषिभूमौ च कषणे च प्रकीर्तिता ।  
 घातौ तु कृषतावुक्त कषणे च पुमाकृषि ॥१५४५॥  
 कृषिकस्तृणजातौ ना कृषिक लाङ्गले मतम् ।  
 कष्ट त्रि सामगानस्य रीत्या यतमयान्विते ॥१५४६॥

प्राप्त च कृष्टिक्रियया कषण तु नपुसकम् ।  
 कृष्टि पुमाबुधे स्त्री तु कषण च जनेऽपि ॥१५४॥  
 कृष्णनपुसक सीसे मरिच दारतेऽयसि ।  
 करमदफले चाथ पुमाविष्णो च पावके ॥१५५॥  
 ध्वान्तपक्षे ग्रीहिभेदे यासं शुक्रे तथाऽर्जुने ।  
 मेघे कलियुगे चापि करमदबुधेऽपि च ॥१५६॥  
 नीलवर्णेऽप्यथो नयपुक्ते चकितचेतसि ।  
 वायलिङ्गो द्वयोस्तु स्याद्भद्र वये मृगप्यरा ॥१५७॥  
 काककोकिलयोराखुजातिभदऽप्यय स्त्रियाम् ।  
 कृष्णा स्याद्राजकाधायपि पलीद्रापदीषु च ॥१५८॥  
 जलकाजातिभदषु द्वादशस्त्रपि पन् स्मृता ।  
 सविषास्तेषु चैकस्मि द्राक्षातिविषयोरपि ॥१५९॥  
 हिरण्याद्याश्च या प्रोक्ता सप्तजिह्वा शिवागमे ।  
 अग्नेस्तास्त्रपि चैकस्या या दक्षिणदिशि स्थिता ॥१६०॥  
 कृष्णवर्णस्तु सवर्त्ते वातुलेऽपि चलेऽपि ना ।  
 कृष्णवर्मा दुराचारे त्रिर्ना च द्वे च पावके ॥१६१॥  
 कृष्णवृता तु पाटल्या माषपणाह्वयापधौ ।  
 कार्ष्मर्ये च स्त्रियां ना तु कृष्णवृन्त कुलत्थके ॥१६२॥  
 कृष्णसपस्तु कृष्णेऽहौ द्वयोदर्वीकरा तरे ।  
 कृष्णसारा शिशपाया ना स्नुह्या द्वे मृगातरे ॥१६३॥  
 कृसरस्तिवङ्गुदितरौ मिश्रवर्णान्तरे पुमान् ।  
 त्रिस्तद्वति कशेरवारये तु क्लीब वारिगुल्मके ॥१६४॥  
 सिततण्डुलमाषस्तु यवाग्वां कृसरा त्रिषु ।  
 केत पुमास्यादिच्छाया तथा चिह्ननिवासयो ॥१६५॥  
 केतन तु ध्वजे गेहे चापे चोपनिमन्त्रणे ।  
 अकार्यकृत्यदेहेषु सकेतस्थान एव च ॥१६६॥  
 केतुर्ध्वजे च चिह्ने च ना ग्रहोपातरश्मिषु ।  
 केतुमान्केतुपुक्ते त्रिशुन्दोभेदे स्त्रियां मता ॥१६७॥

केतुमत्युदिता छन्दोन्तरे त्रिस्तु सकेतुके ।  
 केतुमाला नृभूदेशभदे तीर्थातरे स्त्रियाम् ॥१५६१॥  
 पुमानाग्नीध्रतनये क्लीब वर्षातरे भवेत् ।  
 केदरो वृक्षभदेऽथ त्रिषु स्यादेषके करे ॥१५६२॥  
 केदारो ना शिवेऽथाऽस्त्री शालिक्षेत्रालवालयो ।  
 पुण्यस्थानविशेषे च क्षेत्रे भूम्यतरेऽपि च ॥१५६३॥  
 केनार कुम्भिनरके शिर कापालसधिषु ।  
 केरलास्तु नृभूमिन् स्युदक्षिणापथवर्त्तिनि ॥१५६४॥  
 नीवृद्धेदऽथ तद्दशसम्भूतेषु नृषु द्वयो ।  
 तद्राजे तु पुमाज्ञेय केरल स्त्री तु केरली ॥१५६५॥  
 तद्राजयस्त्र्यपत्ये स्यात्तथा स्याद्भेषजातरे ।  
 त्रिषु केलिकिल क्रीडाशीले ना तु विदूषके ॥१५६६॥  
 कूष्माण्डारये शिवगणे हेरम्बस्य प्रियङ्करे ।  
 केवलस्तु त्रिरिकाकिङ्कत्स्नयोरवधारिते ॥१५६७॥  
 ज्ञाने तु पूर्णे क्लीब स्यान्निणये चाऽवधारणे ।  
 केवलस्तु पुमानेष कुहने परिकीर्त्तित ॥१५६८॥  
 केश स्यात्पुसि वरुणे हीबेरे कुन्तलेऽपि च ।  
 केशपाशी तु चूडार्थे स्त्री ना केशकलापके ॥१५६९॥  
 केशरस्तु हरौ पुसि द्वे छागे त्रिषु तूत्कटे ।  
 केशव केशिनि त्रि स्याद्वि णुपुष्पागयो पुमान् ॥१५७०॥  
 त्रि केशवप्रियो योग पुसि वेङ्कटपर्वते ।  
 स्त्री केशमानुजा दुर्गादेयां योगे यथायथम् ॥१५७१॥  
 क्ली केशवायुध विष्णवायुधे च रथचक्रके ।  
 केशी केशपति त्रि स्यात्पुलिङ्गो दानवातरे ॥१५७२॥  
 कशिनी तु भवेच्चोरपुष्पीस्तम्बे स्त्रियामियम् ।  
 केशी स्त्रियां स्याच्चूडार्यां केश पुसि शिरोरुहे ॥१५७३॥  
 किरणे च भगे चैव हीबेरे च नपुसकम् ।  
 केसरस्त्वस्त्रियां पुष्पकिङ्कल्केऽप्यश्वसिंहयो ॥१५७४॥

सटे च मातुलङ्गारयफलस्या तद्रवास्पदे ।  
 सूक्ष्मकेशे रामठऽथ वकुले नागकेसरे ॥१५५॥  
 पुन्नागे वेङ्कटारये ना पवते केसरा पुन ।  
 कार्पास्यां स्यात्स्त्रियां क्ली तु प्रसवेऽत्रोक्तभूरुहाम् ॥१५७६॥  
 केसरी तु पुमांसिहे मातुलङ्गे तुरङ्गमे ।  
 पुन्नागे चाप्यथो भेद्यलिङ्ग केसरवत्यसौ ॥१५७७॥  
 कैटभोऽसुरभदे स्याददुर्गादेया तु कैटभी ।  
 कैटर्षस्तु पुमान्निम्बे कटफलारये च पादपे ॥१५७८॥  
 मदनाख्ये द्रुमेऽथैषान्तरूणाम्प्रसवे नपि ।  
 कैतव कपट द्यते नपुसकमुदीरितम् ॥१५७९॥  
 कैरव कितवे शत्रौ तथा पुलिङ्ग इष्यते ।  
 कैरव कुमुदे क्लीब चद्रिकाया तु कैरवी ॥१५८०॥  
 किरातसम्बन्धिनि तु कैरात त्रिषु कीर्तितम् ।  
 कैराती तु स्त्रियामूर्ध्नाऽधोगतौ क्षिप्रपत्रिण ॥१५८१॥  
 कैवय केवलत्वे च मोक्षे चाऽपि नपुसकम् ।  
 कौशकी नाट्यवृत्त्यन्तरे स्त्री क्ली केशवृन्दके ॥१५८२॥  
 कोकश्चक्रे वृके ज्येष्ठ्यां खजूरीद्रुमभेकयो ।  
 कोक कोकीटके भेके चकवाकेऽपि च द्वयो ॥१५८३॥  
 पुमांस्तु कोक आदाने ज्येष्ठ्यां खेजूरिकातरौ ।  
 क्लीब कोकनद रक्ताब्जे रक्तकुमुदेऽपि च ॥१५८४॥  
 कोकिल पक्षिभदे द्व ना तु तूले प्रकीर्तित ।  
 कोटक कुट्टितर्येष त्रिलिङ्ग परिकीर्तित ॥१५८५॥  
 कोटि स्त्री चापमात्रेऽश्रौ प्रकर्षे शकलेऽपि च ।  
 चापाग्र च तथा सरयामेदे लक्षशतात्मनि ॥१५८६॥  
 स्त्री कोटिका भवेत्कृष्णे मण्डूके श्वेतवक्त्रके ।  
 कोटिर पुसि नकुले शक्रगोपकशक्रयो ॥१५८७॥  
 कोटिवर्यम्पुरे देवीकोटनाम्नि नपुसकम् ।  
 स्त्री कोटिवर्षा स्पृक्कायां योगार्थे तु यथायथम् ॥१५८८॥

कोट्टङ्ग स्याद्द्वयो क्षुद्रे मृगे जतुघराऽभधे ।  
 इद्रकोशारयाऽयवे पुस्यय वेश्मनो मत ॥१५८९॥  
 कोट्टारो नरके कूपे पुष्करिण्याश्च पाटके ।  
 कोणो वाद्यप्रभेदे स्यादेकदेशे गृहादिन ॥१५९॥  
 शनैश्चरे चौलगुडे शद कोणा तु नप्तित्रयो ।  
 नाट्यवादनभेदे द्वे कोण कोणीति सैरभे ॥१५९१॥  
 कोणिका तु स्त्रिया नीडे कोणितर्येष भेदवत् ।  
 कोथो ना नेत्ररोगस्य भेदेऽथ शठिते त्रिषु ॥१५९२॥  
 कोदण्ड वेणुचापे च चापे चतुररत्निके ।  
 धनुर्मात्रेऽपि च क्लीब पुसि स्यान्नोवृद्धतरे ॥१५९३॥  
 कोमल क्ली जले स्वर्गे ना मृदु-येष वाच्यवत् ।  
 कोरो वृक्षाङ्कुरे बालकसुमे च पुमान्त ॥१५९४॥  
 कोरकोऽस्त्री कुडमले स्याकक्कोलकमृणालयो ।  
 अथाभिधेयव प्रोक्त शदकारणि कोरक ॥१५९५॥  
 कोल व्योषेऽधकर्षे च तक्कोले बदरीफले ।  
 शुण्ठ्यां चव्य तु कोला पिप्पल्यां शस्त्रे पुरातरे ॥१५९६॥  
 कोल प्लवेशनोशित्रेऽङ्गपालौ भेलकौषधे ।  
 द्वे त्वाखा सूकरे चाथ खञ्ज कोलस्त्रिषु स्मृत ॥१५९७॥  
 कोलकम्मरिचे क्लीब कक्कोले चाथ कोलिका ।  
 द्रुतद्रुमारोहशीले जन्तौ मूषिकसन्निभे ॥१५९८॥  
 निविषाहिप्रभेदे च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।  
 कोशोऽस्त्री कुडमले पात्रे दिव्ये खङ्गपिधानके ॥१५९९॥  
 जातिकोशेऽर्थसङ्घाते पेश्या शब्दादिसग्रहे ।  
 पुस्तके वेष्टकद्रये शस्त्रे प्रजननेऽपि च ॥१६०॥  
 वृषणे कृमिनीडे च कौशेयप्रकृतावपि ।  
 कृताकृते हेमरूप्ये पद्यव्रज्यावलावपि ॥१६१॥  
 अरध्रे चापिरध्रे च स्त्री तु कोश्यल्पकोशके ।  
 वारिवाहे तु न पुमानेष कोश प्रकीर्त्तित ॥१६२॥



कोशकस्तु पुमानेष कीर्त्तित पयता-तर ।  
 क्ली तु कोशफल जातिफले तकोलकेऽपि ॥१६ ३॥  
 स्त्री तु कोशफला राजकोशातक्या प्रकीर्त्तिता ।  
 कोशातक्या तथा तित्तकाशातक्यामपीष्यते ॥१६ ४॥  
 कोशिका तु स्त्रिया दीपाधारे स्यामलिकाभधे ।  
 कोष्ठो न स्त्री कसलेऽत कुक्षवतगृहेऽपि च ॥१६ ५॥  
 कोसला मध्यदशस्थे नीष्टुद्धेदे नृभूमनि ।  
 मुनौ ना कोसल श्यामपाण्डरे ॥१६ ६॥  
 कोहली तु स्त्रिया ज्ञेया कूष्माण्डारयलनातरे ।  
 भृश मुखरकन्यायां कूष्माण्डप्रसवे तु नप् ॥१६ ७॥  
 आवेशमाजि तु गृहशुनके कोहलो द्वयो ।  
 मर्त्यजात्य तरज्ज्मृथा वैश्याज्जाते तथा मत ॥१६ ८॥  
 कोहलो वाद्यभदे ना नाट्यशास्त्रप्रवत्तरि ।  
 काकिलोऽक्ली विधिभिदि त्रिस्तु कोकिलयोगिनि ॥१६ ९॥  
 कौकूटिको दाम्भिके त्रि स्याचादूरेरितेक्षणे ।  
 कौकृयमनुतापे स्यादयुक्तकरणेऽपि च ॥१६ १०॥  
 कौक्कट क्लीबमायासे त्रि तु कुक्कुटयोगिनि ।  
 कौणपो नरके ना द्वे राक्षसे त्रि तु यौगिके ॥१६ ११॥  
 कौतुकम्मङ्गले क्लीब हवनमार्त्सवेषु च ।  
 विवाहसूत्रे विषयभोगे कामे कुतूहले ॥१६ १२॥  
 कौन्तो हरेणौ स्त्री कुतसम्बन्धिनि तु भेद्यवत् ।  
 कौपीन क्ली गुह्यकीराकार्यकक्षापुटेऽपि ॥१६ १३॥  
 कौमुद कार्मुके ना स्यात्पूर्णिमायाश्च कौमुदी ।  
 स्त्रीलिङ्गे चद्रिकाया चाथ त्रि कमुदयोगिनि ॥१६ १४॥  
 कौम्भ कुम्भाश्रिते त्रि स्यात्कौम्भन्त्वाये दशादिके ।  
 कौलटेय कौलटेरो नृस्त्रियोर्बन्धकीसुते ॥१६ १५॥  
 सुतस्तु सत्या भिक्षुक्या अटन्त्या स्यात्कुलानि य ।  
 तस्मिन्कौलटिनेयारये कुलटायास्सुतेऽपि च ॥१६ १६॥

कौलीन लोकवादे च युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ।  
 अपवादे कुलीनत्वे गुह्यजमकर्मसु ॥१६१॥  
 कौलेयक शुनि द्वे स्यात्कुलीने तु त्रिषु स्मृत ।  
 कौश कुशस्थलपुरे वायवत्त कुशाश्रिते ॥१६१८॥  
 कौशिको गुग्गुलौ चेद्रे ना द्व तु कुशिकामजे ।  
 यालग्राहिण्युल्के च नकुले च प्रकीर्तित ॥१६१९॥  
 कौशिक क्ली मज्जधातौ कौशिकी तु स्त्रियामियम् ।  
 पावत्यां लिच्छविस्थे च कीर्तिता सरिदतरे ॥१६२॥  
 कौसला स्यादयोध्याया त्रिस्तु कोसलयोगिनि ।  
 कौसुम्भतु कुसुम्भाञ्जने कुसुम्भेऽप्यरण्यजे ॥१६२१॥  
 क्रकच करपत्रेऽस्त्री ग्रथिलारयतरौ पुमान् ।  
 क्रकरस्तु करीरद्रौ दीनक्रकचयोश्च ना ॥१६२२॥  
 द्वयोस्तु पक्षिमदऽसौ क्रकर परिकीर्तित ।  
 क्रतुमुयतरे यज्ञधीसकपक्रियासु ना ॥१६२३॥  
 क्रन्दन क्ली क्रन्दितवद्रोदनाह्वानयोर्मतम् ।  
 क्रमोऽङ्घ्रौ परिपाठ्यां च वेदपाठातरे विधौ ॥१६२४॥  
 क्रान्ती स्थानकभदे च द्वे वारवाह्यमूषिके ।  
 क्रमणश्चरणे क्रात क्रमणो द्व तुरङ्गके ॥१६२५॥  
 क्रमुक पट्टिकालोघ्रे ब्रह्मदारुद्रमेऽपि च ।  
 पूगद्रुमे भद्रमुस्ते क्रमुक तु नपुसकम् ॥१६२६॥  
 असवेऽप्युक्तवृक्षाणान्तथा कार्पासिकाफले ।  
 क्रमेलको द्वयोरुष्ट्रे नि त्वादुग्रीसुतऽपि च ॥१६२७॥  
 क्रव्याद प्रेतदाहाग्नौ त्रिमासादे द्वि राक्षसे ।  
 क्रिमिर्ना भूचरे क्षुद्रजतुभेदे च लाक्षिके ॥१६२८॥  
 द्वे तूणनाभे करणीवैदेहकसुतेऽपि च ।  
 क्रिमिघ्नो ना विडङ्गे त्रि क्रिमिहतर्यमानुषे ॥१६२९॥  
 क्रिमिज स्यादलक्तेप्यगुरौ क्ली त्रिस्तु यौगिके ।  
 क्रमिरो ना भवेद्वर्णे सितलोहितमिश्रिते ॥१६३॥

त्रि तद्वति स्त्री क्रामरा मृगभदे बिलेशये ।  
 क्रिया स्त्री निष्कृतो शक्षाचिरुत्सापायकर्मसु ॥१६३१॥  
 करणारम्भपूजासु चेष्टाया सम्प्रधारण ।  
 प्रतिष्ठाया च राशा तु मेपात्त्ये ना क्रियो मत ॥१६३२॥  
 क्रियाकार सागदि च क्रियाया कर्णे पुमान् ।  
 क्रीडा नर्मणि लीलायामज्ञानेऽपि मता स्त्रियाम् ॥१६३३॥  
 क्रुश्वा द्व क्रोष्टुबकयो शिगाया क्रुश्गरी स्त्रियाम् ।  
 क्रुष्ट सामस्वराणा स्यात्सप्तानामादिमे पुमान् ॥१६३४॥  
 रुदिते ह्री त्रि तु क्रुष्टिक्रियाया कर्मता गते ।  
 क्रोऽभिधेयवत्क्रुद्धे दारद्र कठिनोष्णयो ॥१६३५॥  
 घोरेऽपि च नृशसे च गुणमात्रे तु पुंस्ययम् ।  
 क्ररा स्त्री बदरीकण्टकार्या क्रूर तु कीरुसे ॥१६३६॥  
 क्ररद्वक पिशुने वायलिङ्ग पुास शनैश्चरे ।  
 क्रणि स्त्री विक्रये काले क्रियतश्चिच तवते ॥१६३७॥  
 क्षेत्रादे फलभोगाय दत्त्वा क्रिश्चित्परिग्रहे ।  
 क्रोड कर्षे तथोसङ्गे क्रोड क्रोडी च सूकरे ॥१६३८॥  
 क्रोड क्रोडा चोरसि स्यात्क्रोडो ना शनिरक्षसो ।  
 क्रोधनो द्वे शुनि त्रिस्तु कोपे शीले नपि क्रुधि ॥१६३९॥  
 क्रोश सामान्तरे क्रोशो योजनार्धे च क्रोशने ।  
 क्रोष्टा क्रोष्ट्री शगाले द्वे क्रोष्ट्री तु स्यात्स्त्रियाभियम् ॥१६४०॥  
 लाङ्ग थारयाषधे क्षीरप्रिदार्यारये च भेषजे ।  
 क्रौञ्चो द्वीपे तृतीयेऽस्य जम्बूद्वीपस्य ना गिरौ ॥१६४१॥  
 तन्नाम्न्यथ ह्री स्यात्सामान्तरेऽथ क्रड खगे द्वयो ।  
 सम्बन्धिमात्रे तु क्रुश्च क्रौञ्च स्याद्वाच्यलिङ्गक ॥१६४२॥  
 क्रौञ्चादनं तु पिप्पल्यां चिश्चाटकमृणालयो ।  
 ह्रीतक ह्री करञ्जस्यैकबीजे मधुरौषधे ॥१६४३॥  
 ह्रीतकी तु स्त्रियामेषा नीलिसङ्घौषधे स्मृता ।  
 ह्रीवोऽस्त्रियां मतः षण्डे त्रिनिर्वीर्ये च निबले ॥१६४४॥

क्लेदो मुखप्रसेक च स्यात्पुस्योषधिचद्रयो ।  
 क्लेदु क्षेत्रे शरीरे च भङ्ग चद्र पुमामत ॥१६४५॥  
 क्लेशो दु खेऽपि कोपेऽपि यवसायेऽपि दृश्यते ।  
 क्लेशरुस्तु यमे नाऽथ क्लेशरि क्लेशितर्यपि ॥१६४६॥  
 तथा क्लेशयितर्येन मेघलिङ्ग प्रचक्षते ।  
 क्वथ स्यादतिदु खेऽपि निष्पाकेऽपि द्रवस्य च ॥१६४ ॥  
 क्ष सवर्त्ते राक्षसे च नरसिंहे च विद्युति ।  
 क्षेत्रे नाशे क्षेत्रपाले पुमानेष प्रकीर्त्तित ॥१६४८॥  
 क्षणस्त्ववसरे मध्ये पारतन्त्र्ये तथोत्सवे ।  
 मुहूर्त्ते षष्ठभागे च नाड्या कालेऽतिसूक्ष्मके ॥१६४९॥  
 निर्व्यापारस्थितौ पुंसि व्यापारे चाऽप्य पर्वणि ।  
 क्षणदो गणके रात्रौ क्षणदा क्षणदञ्जले ॥१६५ ॥  
 क्षणिक क्षणमात्रस्थायिनि त्रि क्षणव यपि ।  
 क्षणिका तु स्त्रियामेषा सौदामयामुदीरिता ॥१६५१॥  
 क्षत त्रणे क्ली क्षणने लग्नाषष्ठे च राशके ।  
 त्रिलिङ्ग पुनरेतत्स्याखण्डिते च हते तथा ॥१६५२॥  
 क्षत्ता ना सारथौ द्वा स्थ दूते मुसलरुद्रयो ।  
 वेधस्थथ क्षत्रियाया पारधैलुकसङ्गक ॥१६५३॥  
 शूद्राज्जातो योऽत्र केचिदये वायोगवाह्वये ।  
 वैश्याया जनिते शूद्रादन्ये पारशवाह्वये ॥१६५४॥  
 ब्राह्मणादूहशूद्राया जाते प्रेष्यासुते द्वयो ।  
 वाच्यवत्तु निवृत्तेऽप्यविनीतेऽपि मृते तथा ॥१६५५॥  
 क्षत्र तु स्याद्धने तोय क्षात्रये च नपुसकम् ।  
 द्वे क्षत्रिय स्याद्राजये क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ॥१६५६॥  
 जातौ स्त्रीवेऽथ पुयोगे क्षत्रियीति स्त्रियां भवेत् ।  
 क्षपा स्त्रियां भवेद्रात्रौ धान्यस्तम्बे तु ना क्षप ॥१६५ ॥  
 गोऽजाऽविमहिषाणाञ्चात्याद्रच्छगणके जले ।  
 क्षमा क्षातिपृथिव्यो स्त्री त्रिषु योग्यसमर्थयो ॥१६५८॥

नान्ये हिते च क्लीबे तु क्षम युक्ताथकम्मतम् ।  
 क्षयस्त्वपचये कक्षो क पात्त राजयक्ष्मणि ॥१६५९॥  
 मन्दिरे च निवासे च हिंसाया गमनेऽपि च ।  
 क्षरो धाराधरे पुसि सलिले तु नपुसकम् ॥१६६ ॥  
 ऋता प्राणटसमारये स्त्री क्षरी क्षरितरि त्रिषु ।  
 क्षय क्षुते राजिकाया कासे चापि पुमान्मत ॥१६६१॥  
 क्षययुस्तु क्षुते कासे पुलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 क्षामस्तृणाग्नौ ना क्षीणे त्रिषु क्षामा स्त्रियाम्भुवि ॥१६६२॥  
 क्षार स्यात्सर्जिकाक्षारे गुडे काचाख्यमृद्यपि ।  
 क्षरणे भस्मनि तथा धूर्त्ते न लवणे पुमान् ॥१६६३॥  
 सजाते मिश्रणात्त्रिस्तु तद्वत्येष प्रकीर्तित ।  
 रसे च तित्कलवणयोगोऽथ त्रि तु तद्वति ॥१६६४॥  
 क्षारक पक्षिमस्यादिपिटके पुष्पजालके ।  
 क्षारतृक्षारयित्रोस्तु भेद्यवक्षारको मत ॥१६६५॥  
 क्षारित स्नाविते क्षारे चाऽभिशस्तेऽपि च त्रिषु ।  
 क्षालनोऽरत्तिके षष्ठे यस्य यूपस्य सप्त च ॥१६६६॥  
 दश चारत्नयोर्मान तस्य स्त्रीक्लीबयो पुन ।  
 क्षालन क्षालना चेति कृतौ क्षालयतेर्भवेत् ॥१६६ ॥  
 क्षितिजने निवासे स्त्री कालमे च क्षये भूरि ।  
 क्षित्वा ना केशवे वायौ क्षित्वरी स्त्री सरिन्निशो ॥१६६८॥  
 क्षिपण्युस्तु पुमान्देहे सुरभौ वाच्यलिङ्गक ।  
 क्षिपण्युस्तडिति स्त्री ना वसन्तार्थायुधेऽनिले ॥१६६९॥  
 क्षिप्र तु पादाङ्गुष्ठस्य तर्जयाश्चान्तरे न पुम् ।  
 असत्त्वेऽपि च शीघ्रार्थे त्रि तु स्यात्सत्त्वगामि चेत् ॥१६७ ॥  
 क्षियाक्षये तथाचाराऽतिक्रम च स्त्रिया मता ।  
 क्षीर क्ली सलिले दुग्धेऽयेर्धर्चादिष्वधीयते ॥१६ ८॥  
 क्षीरशुक्ला विदार्या स्त्री ना तु शृङ्गाटकाह्वये ।  
 क दार्थजलजस्तम्बे यौगिके लिङ्गमथत ॥१६ ॥

क्षीराधिज तु सामुद्रलवणे मौक्तिकेऽपि च ।  
 पुमास्तुषारकिरण कमलाया तु योषिति ॥१६ ३॥  
 क्षीराशस्तु द्वयोर्हंसे क्षीरस्य त्वाशके त्रिषु ।  
 क्षीरिको राजिलाहौ द्वे क्षीरका तु स्त्रियामियम् ॥१६ ७४॥  
 दुग्धिकासन्नकस्तम्बे फलेऽप्यक्षारयपादपे ।  
 क्षुणस्त्रिषु स्यादु मत्ते क्षोभक्रोधरुजासु ना ॥१६ ५॥  
 क्षुद्रो दारद्रे कृपणे त्रि क्ररेऽपनिकृष्टयो ।  
 क्षुद्र इत्येष पुलिङ्ग उत्सवे परिकीर्तित ॥१६ ६॥  
 क्षुद्रकम्पाणितारयाया गुडस्य विकृतौ मतम् ।  
 तथैव कूप्यलवणे द्वयोस्तु क्षत्रियातरे ॥१६ ॥  
 क्षुद्रा यङ्गानटीकण्टकारिकासरघासु च ।  
 चाङ्गेरीवैश्ययोर्हिंसामक्षिकामात्रयारपि ॥१६ ८॥  
 क्षुप्र कण्टकिगु मे च त्राहने च नपुंसकम् ।  
 क्षुमास्तसीनीलिकयो स्त्रियामेषा प्रकीर्तिता ॥१६ ९॥  
 क्षुरो नापितशस्त्रे ना कोकिलाक्षे च गोक्षुरे ।  
 क्षुरक कोकिलाक्षे च गोक्षुरे तिलकद्रुमे ॥१६ ८॥  
 क्षुरग्रो नाऽध्वच द्वायशस्त्रेऽथाश्वातरे द्वयो ।  
 क्षुल्लकाज्जले च नीचे च दरिद्राभिधेयवत् ॥१६ ८१॥  
 क्षेत्रतीर्थे क्षितौ व्याम्नि शरीरे योनिवन्दयो ।  
 केदारदारगारेषु नक्षत्रे पुरि राशिषु ॥१६ ८॥  
 क्षेत्रज्ञ आत्मयथ स दक्षक्षेत्रविदोस्त्रिषु ।  
 क्षेत्रिको ना तुरुष्कारयनिर्यासे क्षेत्रिणि त्रिषु ॥१६ ८३॥  
 क्षेत्रिया क्षुद्रधाये स्याद् गवीगुरिति विश्रुते ।  
 त्रिस्त्रय दुष्प्रतीकारव्याधादौ धायवग्रजे ॥१६ ८४॥  
 निराकार्यतृणे पारिदारिके यत्पुनर्विषम् ।  
 देहान्तरे सक्रमय्य चिकित्स्य तत्र चोच्यत ॥१६ ८५॥  
 क्षेय त्रि क्षत्रसाधौ स्याल्लवणे क्यूप्यरोद्भवे ।  
 क्षेपो विलम्बावहेलानिन्दाप्रेरणलेपने ॥१६ ८६॥

क्षेपणी जालभिर्नोकादण्डयो ग्रेण तु नप ।  
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षपणम्पुनपुसरुम् ॥१६८७॥  
 क्षेपणीया मिण्डिपाले ना क्षेप्तव्ये त्वय त्रिषु ।  
 क्षेमश्चण्डौषधौ क्षेमा चण्ड्या क्षेम त्रि निर्भये ॥१६८॥  
 अस्त्री क्षेम शुभे मुक्तौ तथा प्राप्तस्य रक्षणे ।  
 क्षोणी तु मेखलाया स्त्री माञ्ज्या भुवि च कीर्त्तिता ॥१६९॥  
 घावापृथ योस्तु क्षोणी इति द्वित्वे प्रयुज्यते ।  
 क्षोदो जले चूणने च रजस्यपि पुमामत ॥१६९॥  
 क्षोभ्यन्नपुसके वङ्गे क्षोभणीये तु भेद्यत् ।  
 क्षौद्रम्मधुनि पानीये क्षुद्रयागिनि तु त्रिषु ॥१६९॥  
 क्षाममस्त्री दुकूलेऽङ्गे क्षाम तु स्यान्नपुसकम् ।  
 अतसीजे च शणजे तथा वक्त्रजःशुके ॥१६९॥  
 क्ष्माशब्दो भुवि नद्या च स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 क्ष्वेड कर्णामये राजकोशातक्या ध्वनौ विष ॥१६९३॥  
 क्ष्वेड रक्तार्कपणस्य फले घोषसुमेऽप्यथ ।  
 दुरासदे च कुटिले क्ष्वेड स्यादभिधेयवत् ॥१६९४॥  
 क्ष्मेडा वशशलाकाया योधसिंहध्नावपि ॥१६९४॥

## ख

खमिन्द्रिये पुरे क्षेत्रे शून्ये बिन्दौ विहायसि ।  
 सवेदने देवलोके नक्षत्रे छिद्रगेहयो ॥१६९५॥  
 अम्रके ब्रह्मणि क्ली स्यात्खा तु कूपे भवेत् स्त्रियाम् ।  
 खकणीनी तु दुर्गाया चिह्नपक्षिस्त्रियामपि ॥१६९६॥  
 खग पुंसि रवौ वायौ ग्रहे देवे शरे रणे ।  
 चातके पक्षिमात्रे च द्वे त्रिव्योमादिगामिनि ॥१६९॥  
 खगवक्त्रस्तु लकुचे खगाऽस्ये तु यथायथम् ।  
 खगासनस्तु विष्णौ च तथा स्यादुदयाचले ॥१६९८॥

खगेद्रो गरुडे गृत्रे तथा राजातरे मत ।  
 खचरो ना रवौ मेघे वायौ स्याद्द्रूपका तरे ॥१६९९॥  
 द्वे तु विद्याधरे रक्ष पक्षिणोर्वेसरेऽपि च ।  
 खचित्तु तु मणौ लोहविद्धे स्यादभिधेयवत् ॥१ ॥  
 तथा स्यादुद्धृतस्नेहे घृतहीने च दग्नि नप ।  
 खजस्तु मथने क्षोभे दर्वामथानयो पुन ॥१ १॥  
 खजस्तु पुसि मथाने त्रिषु व्योमादि खाज्यजे ।  
 खजक स्याद्घृते चापि मथानेऽपि पुमानयम् ॥१ २॥  
 खजक खजिका चेति द्वयोस्स्याद्रसपाचके ।  
 खजा द्वे मरणे तु स्त्री करे च प्रसृताङ्गुलौ ॥१ ३॥  
 खजाको ना मथदण्डे द्वे खगे स्त्री विहायसि ।  
 शरारे च खजाका तु स्त्री दव्यामसतीस्त्रियाम् ॥१ ४॥  
 खज्जा छद प्रमेदे स्त्री खज्ज खज्जी च विप्रत ।  
 अपत्येऽन्तावसायिया खोडे त्रि लशुने तु ना ॥१ ५॥  
 खज्जनम्पङ्गुगमने खज्जरीटे पुनद्वयो ।  
 खज्जनी खज्जरीटे द्व स्त्री सषण्पाङ्गतौ तु नप ॥१ ६॥  
 खज्जरीटी गतिभिदि स्त्री द्वे खज्जनपक्षिणि ।  
 खटोऽधकूपकफयो ग्रहारातरटङ्कयो ॥१ ॥  
 हले छदिस्तृणे चापि स्यात्सुगधितृणातरे ।  
 खटको घटके स्त्री तु कठिवां खटिका मता ॥१७ ८॥  
 तृणभित्कर्णशष्कुल्यो खटिकाऽ(ध)मुद्रिते करे ।  
 करे मुद्राविशेषे च द्वयो स्यात्कर्णनिमित्ते ॥१७ ९॥  
 खटखादक एष द्वे काकजम्बुकजतुषु ।  
 काचपात्रे पुमानेष घसरे तु मतस्त्रिषु ॥१ १ ॥  
 खटी तु खटिकाधातौ स्त्रियामेव प्रकीर्त्तिता ।  
 खट्टिक् सैनिके द्वे ना महिषी क्षीरफेनके ॥१७११॥  
 खटवा पर्यङ्क आचार्यासने दोलौषधीभिदो ।  
 आयुर्वेदप्रसिद्धे च व्रणबधनयन्त्रके ॥१ १२॥



खट्वाङ्गोऽस्त्री वृक्षभेदे पृष्ठास्थनि चिते धने ।  
 दिलीपनृपतौ पुंसि खट्वाङ्गी तु लतातरे ॥११३॥  
 खडस्तु खण्डने तक्रशकेऽथाऽस्त्री तृणातरे ।  
 खडकचगले क्लीब कठिया खडिका मता ॥११४॥  
 स्त्रिया तु कठिनीधातौ एहीति परिकीर्त्तिता ।  
 खड्गस्त्री मृतखटवायां तथा स्याद्भूषणातरे ॥११५॥  
 खङ्गो गण कभृङ्गासिबुद्धभदशरेषु ना ।  
 द्वे गण्डकमृगे यादोभेदे च मकराभिधे ॥११६॥  
 खङ्गकोश पिधानेऽसे खङ्गाधारोऽपि कथ्यते ।  
 खङ्गधेनु स्त्रियामुक्ता छुरिका गण्डकस्त्रियो ॥११७॥  
 खङ्गारीटस्तु फलकाऽसिधारान्तधारिणो ।  
 खङ्गारीट खङ्गफले तथा स्यादखङ्गनर्त्तके ॥११८॥  
 खङ्गिको माह्वीक्षीरफेनासिधरसैनिके ।  
 खङ्गी द्वे गण्डके मञ्जुघोषाऽसिधरे त्रिषु ॥११९॥  
 खण्डोऽस्त्री शकले नेक्षुविकारमणिदोषयो ।  
 स्वादुपानातरे भेदे क्लीब तु लवणेऽधिजे ॥१२०॥  
 खण्ड तु खण्डिते भेदलिङ्गमेतत्प्रकीर्त्तितम् ।  
 अर्धे गुडप्रिकारे च कश्चित्स्वादुद्रवेऽभ्यधात् १२१॥  
 खण्डको लास्यभेदे ना नखहीननरे द्वयो ।  
 खण्डधारा नृत्यभेदे कर्त्तर्यञ्च प्रकीर्त्तिता ॥१२२॥  
 खण्डना कयकायां स्त्री स्फुटवैधव्यलक्ष्मणि ।  
 शास्त्रोक्तेरविग्राह्यामपुम् खण्डयते कृतौ ॥१२३॥  
 विसर्गे वञ्चने राजद्रोहादावपि सा मता ।  
 ना खण्डपरशु खण्डे परशौ च महेश्वरे ॥१२४॥  
 खण्डपरशु परशुरामे शङ्करे चूणलेपिनि ।  
 खण्डामलकराह्वोश्च भग्नदतगजे च ना ॥१२५॥  
 अस्त्री तु खण्डलं खण्डे चीरवस्त्रे च कीर्त्तितम् ।  
 खण्डाभ्रमभ्रलेशे स्यात्तथा दतक्षतातरे ॥१२६॥

खण्डिकस्तु द्वेण्वारये कलायारये च धान्यके ।  
 भुजकक्षे गुडकृतिखण्डाध्येतर्यपीष्यते ॥१ २ ॥  
 खण्डिका काष्ठखण्डे स्त्री कण्डिकायामपीष्यते ।  
 खण्डिता तु स्त्रिया प्रावृद्गात्रौ शकलिते पुन ॥१ २८॥  
 वायलिङ्गो विरहिते तस्य वाक्ये च खण्डित ।  
 खण्डी खण्डवति त्रि स्याद्वनमुद्रे तु पुस्ययम् ॥१७२९॥  
 तथा खण्डनकारे श्रीहर्षे भूमौ तु खण्डिनी ।  
 खनमालो भवेपुसि धूमे चापि बलाहके ॥१ ३ ॥  
 खदतिर्भक्षण स्थैर्ये हिमायां च प्रकीर्त्तित ।  
 खदिरस्तृषिभदे च गायत्रीतरुशक्रयो ॥१७३१॥  
 द्वे तु वृश्चिकभेदेऽयदश्चिकिस्थपिषे मत ।  
 स्त्रिया खदिरका लाक्षा गिरिभेदे पुमानयम् ॥१ ३२॥  
 खदिरी स्त्री नमस्कारीसङ्ग वल्यन्तरेऽपके ।  
 खदिरी शाकभदे स्त्री ना च द्वे दन्तधावने ॥१ ३३॥  
 शमीफला समारये च जलशकलतातरे ।  
 खद्योतोऽर्केऽग्निकीटे तु खद्योताऽक्ष्ण्यदक्षिणे ॥१ ३४॥  
 खनको मूषिके द्वे स्यामर्त्यजात्यतरे तथा ।  
 राज्ञीमागधसम्भूते त्रि तु स्यादवदारके ॥१७३५॥  
 भूमिसचितवित्तज्ञे सध्विचौरे तथैव च ।  
 खनि खनति धातौ ना स्त्री गर्त्ते चाऽऽकरे निधौ ॥१ ३६॥  
 क्लीब खनित्र कुहाले खनित्री तु तपस्विनाम् ।  
 स्त्रियां विशाखिकासङ्ग दण्डभेदे प्रकीर्त्तिता ॥१ ३७॥  
 खपरस्तस्करे धूर्त्ते भिक्षाभाण्डकपालयो ।  
 खपुरो ना पूगवृक्षे पूगपट्टे घटे तरो ॥१७३८॥  
 निर्यासे भद्रमुस्तेऽथ बालारये गन्धवस्तुनि ।  
 पुनपुमकयोरेत क्ली तु पूगफले स्मृतम् ॥१७३९॥  
 खर शरारयस्तम्बे ना ककुभाद्वयपादये ।  
 रक्षोभेदे दशास्यस्य प्रवीरे दण्डनायके ॥१ ४ ॥

हविर्धानारयदेशस्य पुरस्तादक्षिणस्य या ।  
 वितर्दिर्यज्ञभूमिष्ठा तस्यामुष्णगुणऽपि च ॥१७४१॥  
 कठिनत्वे च काकश्ये रसभेदे च मिश्रणात् ।  
 जाते रसाना तित्काम्लकषायलज्जणात्मनाम् ॥१७४२॥  
 त्रिस्त्वेषामुष्णतादीना गुणानाद्रव्य आश्रये ।  
 एकैकस्य रसान्तानाञ्चतुर्णामपि म वते ॥१७४३॥  
 बाहस्पत्ये पञ्चविंशे वर्षे स्याद्रासमे द्वयो ।  
 वेसरे कुररे दंत्ये बके काके खर खरी ॥ ७४४॥  
 शुष्कपूगफले तु क्ली देवताडे स्त्रिया खरा ।  
 खरकुट्यपि शालाया वपनस्यापि यौगिके ॥१७४५॥  
 भवेत् खरगृह रासभागारपटवेऽभिनो ।  
 खरच्छदो यौगिके त्रिर्नोर्ध्वमूलाह्वये तृणे ॥१७४६॥  
 खरच्छदो भूमिसहे कुन्दरेऽपि कटे पुमान् ।  
 स्त्रिया तु क्षुद्रघोल्यायलताया स्यात् खरच्छदा ॥१७४७॥  
 द्वित्वे रक्षोभिदोरैक्ये धत्तरे खरदूषण ।  
 खरपत्रो मरुवके वेणुभेदे कुशान्तरे ॥१ ४८॥  
 खरपत्रा तुलस्याञ्च शाखोटे शाकपादपे ।  
 क्लीब खरमुख शृङ्गवाद्ये त्रिषु तु यौगिके ॥१ ४९॥  
 खराङ्गस्तु द्वयोर्भेके ककशाङ्गे तु भेद्यवत् ।  
 ग्रामणीभण्डिनाराचेऽप्युपधाने खरालिक ॥१ ५०॥  
 खरुह्ये स्मरे दर्पे नीतिभेदे रदे हरे ।  
 द्वयोर्मनुष्ये दत्ते तु ज्येते मूर्खे खरे त्रिषु ॥१७५१॥  
 कामुकेऽपि खरुस्तु स्त्री कयायां या पतिवरा ।  
 खर्जतिर्यथने चैव पूजने मार्जनेऽपि च ॥१ ५२॥  
 खजनी यज्वना कृष्णविषाणायां स्त्रियां मता ।  
 खर्जनन्तु नपि ज्ञेय क्रियायां खर्जतेरिदम् ॥१७५३॥  
 खजु कण्डवाञ्च खर्जूरीद्रुमे कीटान्तरे स्त्रियाम् ।  
 खर्जुर रजते क्लीब खर्जूरद्रौ तु खर्जुर ॥१७५४॥

खजूर्विद्युति कण्डवां च स्त्रियामेषा प्रकीचिता ।  
 खजूर्नोऽकद्रुमे चक्रमदधत्तरयोरपि ॥१ ५५॥  
 खजूरो ना परुषद्रौ खजूर्यस्याल्पभेदके ।  
 क्ली तु तत्प्रसवे चापि रजते हरितालके ॥१ ५६॥  
 खजूरभारिकेलास्थिगभसारेऽपि कीर्तितम् ।  
 द्रयोस्तु वृश्चिके प्रोक्तो भेद्यवत्तु खले मत ॥१ ५ ॥  
 खपरस्तु कपालाशे कपाले धूर्तचौरयो ।  
 भिक्षापात्रे तथा छत्रे धातुभेदे तु खपरी ॥१ ५८॥  
 खबर स्यात्कपालेऽपि भिक्षापात्रे करे पुमान् ।  
 खर्म तु पौरुष क्लीब तथा स्यात्कोषजाशुके ॥१ ५९॥  
 खर्वं सरया तरे नप् ना निधौ त्रि लघुनीचयो ।  
 खर्विका पूणकपे दुपूर्णमायाम्परे त्रिषु ॥१ ६ ॥  
 खलम्भूस्थानयोस्तक्रविशेषे क्वथिते च नप् ।  
 निष्पीडितरसे कल्के पिण्याकादावथ त्रिषु ॥१७६१॥  
 नीचे क्ररे दुजने च पुश्चल्या तु स्त्रिया खला ।  
 फलग्रहणदेश तु क्षेत्रस्यास्त्री रणे तु ना ॥१ ६२॥  
 धत्तरेऽपि तमालेऽपि तयोस्तु प्रसवे नपि ।  
 कुलत्थ ना खलकुल खलस्य तु कुले नपि ॥१ ६३॥  
 खलतिस्त्रिषु ख वाटे खलिटे चैद्रलिसिके ।  
 सूर्ये खलतिकश्चाद्रिभेदे त्रिषु तु चद्रिले ॥१७६४॥  
 खलिघनद्रवे द्रयभेदे च जलपाचिते ।  
 स्त्रियां खलीवत् पिण्याके तथोक्त पिष्टतण्डुले ॥१७६५॥  
 खलिनी खलवृन्दे स्यात्तालपण्यामपि स्त्रियाम् ।  
 खलीनोऽस्त्री तुरङ्गाणा मुखसयमने तथा ॥१ ६६॥  
 छिद्राकाशादिलीने तु खलीन वाच्यवन्मतम् ।  
 खलु वाक्यविभूषाया जिज्ञासायाश्च सान्त्वने ॥१७६ ॥  
 वीप्सामाननिषेधेषु पूरणे पदवाक्ययो ।  
 खल्या तु खलवृन्दे स्त्री खलाय तु हिते त्रिषु ॥१७६८॥

खलश्चर्मादिभस्त्रा स्यात्तर्थावधिपेषणी ।  
 वस्त्रातरे चर्मचर्मपात्रगर्त्तेऽथ चातके ॥१ ६९॥  
 द्वयो खलोऽथ खली स्त्री रूमभेदे परिकीर्त्तिता ।  
 खल्लिका स्त्री ऋजीष स्यात्खल्वाटे खल्लकस्त्रिषु ॥१ ७ ॥  
 खल्ली वस्त्रप्रभेदे स्याद्दर्त्ते चर्मणि चातके ।  
 खली तु हस्तपादावमर्दनारयरुजि स्त्रियाम् ॥१ ८॥  
 खल्वो भषजपेषण्या धान्यभेदे तथा पुमान् ।  
 खशयस्तु द्वयोर्भेदे त्रिस्तु खे शयितर्यसौ ॥१ ७२॥  
 खष खषी व्रात्यसुतशूद्रौढक्षत्रियाभवे ।  
 डोम्ब्या चाण्डालतश्चापि जाते द्वे सकरातरे ॥१ ३॥  
 खष्य कोपे बलात्कारे ना दुर्मेधसि तु त्रिषु ।  
 खसस्तु खर्ज्वाम्पुम्भूम्नि तु नृजायतरे खसा ॥१ ७४॥  
 तेषा जनपदेऽथ स्त्री गघद्रयान्तरे खसा ।  
 अथ खस्फटिक सूर्यकान्तचद्राश्मनोर्मत ॥१ ८॥  
 खाटिस्त्वसवग्रहेऽपि स्यात्किणे शवरथ स्त्रियाम् ।  
 खाण्डव पिप्पलीशुण्ठा मुद्गयूषे रसे तथा ॥१७ ६॥  
 मधुराम्लकयोगोऽथ कुरुक्षेत्रवनान्तरे ।  
 मधुराम्लकयोगोत्थरसभाजि तु वाच्यवत् ॥१ ७॥  
 खाण्डिक स्याद्गुण्डवणि यपिच्छात्रे तथा पुमान् ।  
 खाण्डिकस्तु समूहे स्यात्खाण्डिकाना नपुसकम् ॥१७७८॥  
 खात क्ली खनने पुष्करिण्यात्रित्ववदारिते ।  
 क्वचित्खाता तडागेऽपि स्त्रियामेषा प्रयुज्यते ॥१ ७९॥  
 खातक खातिकचिति परिखाया न ना भवेत् ।  
 खात्रञ्चोरकृते रघ्रे सरकुडालततुषु ॥१ ८०॥  
 महाभयेऽप्यरण्येऽपि नर्पुसकमुदाहृतम् ।  
 खादस्तु भक्षणे भोयेऽथोत्तरस्थस्त्रिभक्षके ॥१ ८१॥  
 खादको भक्षकेऽपि स्यादधमर्णे तथा त्रिषु ।  
 खादनस्तु पुमान्दते क्लीब भक्षणभोययो ॥१७८२॥

खाद्यस्तु खदिरे पुसि भक्षणीय तु वायवत ।  
 खान कचिद्भक्षण स्यात्तरुष्कनृपतौ तु ना ॥१ ८३॥  
 खानकस्तु पुमाश्चौरे परिखाया तु खानिका ।  
 खारिकस्तु त्रिषु क्रीते खार्या क्ली तु फलातरे ॥१ ८४॥  
 खारिका तु खिया खारीपरिमाण प्रकीर्त्तिता ।  
 खिङ्गारस्तु द्वयो क्रोष्टौ ना खटवाङ्गे किखीरके ॥१ ८५॥  
 खिङ्गिरो ना वारिवाहे खटवाङ्ग च द्वयो पुन ।  
 शिगामदे खिङ्गिरा तु बलभृत्ये च खिङ्गिर ॥१ ८६॥  
 खिदिरस्तापसे दीने त्रिर्भये नेद्रचद्रयो ।  
 खिद्र शशाङ्क खिद्र तु भवेद्विन्मोपतापसो ॥१ ८७॥  
 खिद्रस्तु दीने याधौ च खिद्र स्याद्भदयत्रके ।  
 खिलोऽस्त्र्यग्रहते स्थाने परिशिष्ट खिलम्मतम् ॥१ ८८॥  
 पुरणीयावकाशेऽपि दरुहगणितेऽप च ।  
 दुराग्रहे वेधसि च वायवत्त सदोषके ॥१ ८९॥  
 खिय पुञ्जे खिलक्षेत्राश्मनोस्त्रिस्तु खिलोद्भवे ।  
 खुण्डको ना हस्मनालिकेरे हस्वापयोस्त्रिषु ॥१ ९०॥  
 खुर शफे शुक्तिसङ्गभेषजऽपि पुमान्त ।  
 खटवाङ्गाऽप्यवे बह्मादिपाठाविष्यते खुरी ॥१ ९१॥  
 खुरको वङ्गभेदेऽपि नृत्यभेदे तिलेऽपि च ।  
 खुरप्रस्तु क्षुरप्रऽपि बाणभेदे प्रकीर्त्तित ॥१ ९२॥  
 खुलखि क्षुल्लवक्षुद्रे ना तु स्याच्छुक्तिभेषजे ।  
 खेचरो द्वे दुश्चिकि सत्रिषे स्यावृष्टिकातरे ॥१ ९३॥  
 विद्याधरे च त्रिषु तु वियचरसपक्षयो ।  
 राक्षसे खेचर प्रोक्तो ग्रहपारदयोस्तु ना ॥१ ९४॥  
 तथैव नवसरयायां खेचरा मूच्छनातरे ।  
 खेचरी सिद्धिभेदेऽङ्गुलिमुद्रादुगयोरपि ॥१ ९५॥  
 तथैव कणवलये स्यात्त थार्थे तु खेचरम् ।  
 खेटोऽस्त्र्यपपुरे चर्मण्यद्रिनद्यन्तरस्थिते ॥१ ९६॥

पुण्ड्र ग्रामभदे ना ग्रामधानाह्वये कफ ।  
 मृगयेऽप्यथ खेट स्यात्कुत्सिते वायलिङ्गक ॥१७९७॥  
 बलरामगदायाङ्कली ना ग्रहे शस्त्रिणि तृण ।  
 खेटकोऽस्त्री मत खट खटक वसुन दके ॥१७९८॥  
 खेटकम्फलके ग्रामधानेऽथोत्त्रासके त्रिषु ।  
 खेटी तु नागर चैव कामियपि पुमान्त ॥१ ९९॥  
 खेद पीडास्मरालस्ये खेदा वेध युदीरिता ।  
 खेदिस्तुङ्गङ्गरश्मौ च किरणऽपि पुमान्त ॥१८ ॥  
 खेयन्तु परिखाया क्ली खनितये त्रिषु स्मृतम् ।  
 खेलो वेणौ पुमा खेला लीलाया स्त्री प्रकीर्तिता ॥१८ १॥  
 खेलन खेलना क्रीडा शर्या स्त्री खेलनी मता ।  
 खलिरकेंपुगीते ना स्त्री खेले द्व मृगे खगे ॥१८ ॥  
 खोटास्त्रपङ्गौ खोटी तु सलक्या स्त्री च दृष्यते ।  
 खोडस्त्रिपुटके ना कुलाये खज त्वयत्रिषु ॥१८ ३॥  
 खोलस्त्रिपङ्गौ खोलतु शिरस्त्र छत्रयोर्मतम् ।  
 खोलको ना पाकभदे पूगकोशशिरस्त्रयो ॥१८ ४॥  
 वमीक चाथ काञ्च्या स्त्री गीतसत्या च खोलिका ।  
 खोलकस्तु धूपकेतो च ग्रहेऽपि च पुमान्त ॥१८ ५॥  
 रयाति रयारूपयोर्धात्वोर्नाऽथ कीर्त्तिधियो स्त्रियाम् ।  
 सम्मतौ नास्मि च क्रौञ्चद्वीपस्थसरिद तरे ॥१८ ६॥

## ग

ग पुंसि गरुडे नखी गाधारगुरुवर्णयो ।  
 श्रुत्तरस्थो गतमात्रे न ना गतिप्रभेदके ॥१८ ७॥  
 गगन क्लीवमाकाशे सपर्याय तथाग्नके ।  
 गङ्गापुत्रस्तु भीष्मे ना स्यात्काशीषड्पूजके ॥१८ ८॥  
 द्वयो सकरभेदेऽपि शवनिर्हारिणि स्मृत ।  
 गच्छो वृक्षे कुटुम्बेऽपि श्रेढीसरयान्तरेऽपि च ॥१८ ९॥

गजो द्व वारणेऽथाऽष्टस्वपि हस्तपुगायतौ ।  
 वास्तुस्थानातरे पुंसि पाश्वयो प्रवणे गज ॥१८१॥  
 सूर्यानुगासुरभिदोगर्ते गजपुटाभिधे ।  
 तालमदऽप्यथ गजा गजी वीथ्याम्प्रकीर्त्तिता ॥१८११॥  
 रोहिण्यादित्रिकामा या पुनर्वखादिकाऽपि वा ।  
 गजच्छाया स्त्रिया सूर्यग्रहे योगातरे तथा ॥१८१२॥  
 कृष्णत्रयोदशीहस्तस्थिते सूर्ये मघायुते ।  
 इति लक्षणके चेभच्छाये तु क्लीस्त्रियोभवेत् ॥१८१३॥  
 गजता तु गजत्वेऽपि समूहे चाऽपि हस्तिनाम् ।  
 गजदतो हस्तिरदे गणेश नागद तके ॥१८१४॥  
 करमुद्राविशेषेऽपि पुलङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 गजप्रिया तरौ रम्भाभदेऽपि गजवल्लभा ॥१८१५॥  
 गजस्कन्धो हस्तिसैये चक्रमर्दे तथा पुमान् ।  
 गजारिस्तु पुमान्सिहे शिवे वृक्षातरेऽपि च ॥१८१६॥  
 गजाशनोऽश्वत्थवृक्षे स्त्रिया तु स्याद्रजाशना ।  
 सल्लव्याम्प्रबकन्देऽपि केचिदेताम्प्रचक्षते ॥१८१७॥  
 गजाह्वा गजपिप्पल्यां गजाह्व हस्तिनापुरे ।  
 गजाह्वय हास्तिनपुर्यथ नृम्बस्य वासिषु ॥१८१८॥  
 गज्जो ग्वनौ सुरागेहे कोशे चाप्याकरेऽपि च ।  
 गज्ज स्यापुसि रीढायाम्भाण्डागारे तु न स्त्रियाम् ॥१८१९॥  
 ना पल्ल्यापणयो क्वापि गज्जाकिन्याम्पुन स्त्रियाम् ।  
 गडो मीनेऽतराये च वृत्तो खाते नृलिङ्गक ॥१८२०॥  
 गडु स्या पृष्ठगग्रथौ वैश्योरस्थकिणे तथा ।  
 घाटामस्तकयोर्मध्ये मांसपिण्डेऽप्ययम्पुमान् ॥१८२१॥  
 कुब्जे तु गडुपृष्ठान्यनाम्नि स्याद्वाच्यवद्गडु ।  
 गडेरस्तु प्रस्रवणशीले स्यादभिधेयवत् ॥१८२२॥  
 अथ पुसि प्रस्रवणभूमावेष प्रकीर्त्तित ।  
 गणो बहुत्वे गणने धूनौ च प्रमथ त्रज ॥१८२३॥



गु मत्स्त्रिगुण संये चण्डायामृषिभिद्यपि ।  
 गणक पुसि दवज्ञ गणनाकृत्तरि त्रिषु ॥१८ ४॥  
 स्याद्गणाधिपात पुसि शङ्करे च गजानने ।  
 गणिका यूथिकावैश्यातकारीभीषु कीर्त्तिता ॥१८ ५॥  
 गणरु कर्णिकारद्रौ करिणीप्रययो स्त्रियाम् ।  
 गण्ड कपोले गर्वे च वीथ्यङ्गे पिटकेऽपि च ॥१८२६॥  
 चिह्ने वीरे बुदबुदे च ह्यकण्ठविभूषणे ।  
 योति शास्त्रेषु ये योगा सप्तविंशतरीरिता ॥१८२७॥  
 विष्कम्भग्रीतिरियाद्यास्तेषाम यत्तमेऽप्यसौ ।  
 चतुष्टये कपर्दाना द्वे तु खङ्गाह्वये मृगे ॥१८ ॥  
 गण्डकस्तु द्वयो खङ्गमृग ना शिशुभूषणे ।  
 अवच्छेदेऽतराये च सरयात्रिद्याग्रमदयो ॥१८ ५॥  
 अस्त्रिया तूपधानेऽथ गण्डकी सरिद तरे ।  
 गण्डशैलो ललाट स्याच्च्युतस्त्रलोपले गिरे ॥१ ३ ॥  
 गण्डीरस्तु पुमाक दजातिभदे समष्टिला ।  
 इति सञ्ज्ञा तर यस्य बहुभेषजसाधिते ॥१८३१॥  
 उपयोग्यद्रवद्रये क्ली तु स्यात्तण्डुलीयके ।  
 चये च स्त्री तु गण्डीरी निपन्नायां स्नुहि स्मृता ॥१८३२॥  
 गण्डूषा द्वे वक्त्रपूर्त्ता तथोक्ता करिपुष्करे ।  
 आस्यरोध्रद्रवे तद्वत्प्रसृतोमितवस्तुनि ॥१८३३॥  
 गण्डोलस्तु पुमापिण्डे गजस्य मुखपार्श्वयो ।  
 ऊर्ध्वग्रदशयोश्चापि क्रिभिभेदे तु स द्वयो ॥१८३४॥  
 गत तु क्ली गतौ ना तु प्रकारेऽथ च ङौक्ते ।  
 ग्रामादौ ङौकितवति तथाऽस्तीतिऽपि वाच्यवत् ॥१८३५॥  
 गीतिप्रकृतिशब्देषु ये तालया स्थिता अच ।  
 तेषामपीति शब्दोऽथ विकारो यत्र गीयते ॥१८३६॥  
 गीतिकाले स शब्दोऽयच्छन्दोगैरुच्यते गत ।  
 गतिर्नाडीव्रणे मार्गेऽपि शब्द सामगीतिगे ॥१८३७॥

उपायदशयोर्ज्ञाने प्रस्थाने शरणेऽपि च ।  
 गतये पुण्यपापाम्या प्रागूर्धादिक्रिया गति ॥१८३८॥  
 गद कृष्णाऽनुजे रोगे गदा स्यादायुधातरे ।  
 गदयित्तु स्मरे मेघे ना त्रिजपककामिनो ॥१८३९॥  
 गद्गदस्वर इत्येष कीर्तितो महिष द्वयो ।  
 गद्यत्वपादे ग्रथेऽथ गदितये त्रिलिङ्गकम् ॥१८४ ॥  
 गतु स्यादतिथा चापि पथिके चाभिधेयवत ।  
 गता तु गतरि त्रि स्याद्गन्त्री स्त्री शकटातरे ॥१८४१॥  
 गद्य पुमाश्च दनादौ लेशे सम्बधगवथा ।  
 गधके घ्राणविषये भूगुणे प्रतिवेशिनि ॥१८४२॥  
 गधन गधनाऽयस्यात्साहनेऽपि प्रयुज्यते ।  
 न ना प्रकाशने चाप हिंसाय सूचनेऽपि च ॥१८४३॥  
 अथ गधफली पृथ्व्याञ्चम्पकस्य च कोरके ।  
 प्रियङ्गौ गिरिकर्ण्यञ्च विशषासिततद्भिदि ॥१८४४॥  
 द्वे गधमादनो भुङ्ग गधके तु कपौ च ना ।  
 स्त्री सुराया शैलभेदे न स्त्रिया गधमादन ॥१८४५॥  
 गधवस्तु द्वयोर्गोलपुसनाम्नि मृगातरे ।  
 अतराण्वसत्त्वेऽश्वे गायने दियगायने ॥१८४६॥  
 पुमास्तु पुस्कोकिलके वासुदेवातरेऽपि च ।  
 कोष्ठपक्तौ दक्षिणस्याम्प्रोक्त षष्ठपदस्थिते ॥१८४ ॥  
 गधवास्त्रिगधयुते स्त्रिया गधवती मता ।  
 भुवि योजनगधाया सुराया च पुरान्तरे ॥१८४८॥  
 स्त्री तु गधवहा घ्राणे ना तु वायौ मृगे द्वयो ।  
 गधवाहस्तु ना वायौ योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ॥१८४९॥  
 गधाली तु स्त्रिया भद्राशब्दोरेषा प्रकीर्तिता ।  
 गभस्तिरशौ द्वे स्त्री तु स्वाहाया ना रवौ भुजे ॥१८५ ॥  
 गभीर त्रिषु निम्नेऽथ गभीरा वाच्यसौ स्त्रियाम् ।  
 गभीरतु जले क्लीब गभीरे इति रोदसी ॥१८५१॥

गमो नाऽक्षविवर्त्ते स्यादपर्यालोचनेऽध्वनि ।  
 गमथस्तु पथि ज्ञयो जलधाने तथा पुमान् ॥१५॥  
 गम्भीरो नाऽण्ने काम जम्बीरे च तमस्यपि ।  
 क्लीब तु जम्बीरफले गम्भीर सलिलेऽप च ॥१५३॥  
 द्यावापृथि योगम्भीरे गम्भीरा वायसा स्त्रियाम् ।  
 निम्ने दुरवगाहे च गम्भीरमभिधेयवत् ॥१८५४॥  
 गय स्थापशुराजर्ष्योर्भेदे दत्यातरेऽपि च ।  
 गया तीथातरे द्व वपत्ये ना सुगृहे धने ॥१८५५॥  
 गरो निगरणे चर्षिभदे क्ल्युपविपावप ।  
 गरतु क्ली जले देवताडवाया गरीगरा ॥१८५६॥  
 गरी करणभेदऽपि स्त्रियामेपा प्रकीचिता ।  
 गरलतु पूले च त्वप माने नपुसकम् ॥१८५७॥  
 मदनद्रौ तु गरल पुसि तत्प्रसवे तु नप ।  
 गरुड क्ष्वेडमात्रे ना वैनतये हरिमणौ ॥१८५८॥  
 द्व तु पक्ष्य तरे स्त्री तु जटाया गरुडा मता ।  
 गरुत् तेजसि सघात पक्षिपक्षे जने पुमान् ॥१८५९॥  
 गरुत्मास्तु पुमान्वैनतेये तु पक्षिणि द्वयो ।  
 गर्गरी दधिमथया क्षेत्रपल्ल्यामपि स्त्रियाम् ॥१८६॥  
 द्वे तु मीनातरे चोग्रीवैदेहजनरातरे ।  
 गर्जो द्वयोगजेगर्जा त्वक्ली गजनवाचिनी ॥१८६१॥  
 गजनो ना गृञ्जनारयपलाण्डुभिदि कीचित् ।  
 गर्जन गर्जना चेति न ना गजित उच्यते ॥१८६॥  
 गजित स्तनिते क्लीब गजितो मत्तकुञ्जरे ।  
 गत्तस्तु स्यात्सभास्थानौ मन्दिरेऽप्यवटेऽपि च ॥१८६३॥  
 त्रिगर्त्तभेदेऽपि पुमांस्तथैव स्यात्कुकुन्दरे ।  
 गर्दोऽस्त्री द्रवधारायाधमनीषु च वाचि ना ॥१८६४॥  
 गर्दभ पशुभेदे द्वे रासभारयेऽथ गदभम् ।  
 कुमुद श्वेतमुकुदे रूप्ये च स्यान्नपुसकम् ॥१८६५॥

गदभस्तु पुमागधभदेज्यम्परिकीर्तित ।  
 गदभी स्त्री क्षुद्रराग कीटभदे च कीर्तिता ॥१८६६॥  
 गर्भोऽपवरकागारोऽन्नेऽन्नौ पनसक टके ।  
 शिशावपये शुक्र च समूहे साग्बीजयो ॥१८६७॥  
 कुक्षौ कुक्षिस्थजतौ च सधौ चापि पुमान्त ।  
 गमुत्तु गरुडे सूर्ये तेजस्यपि पुमानथ ॥१८६८॥  
 द्वयो स्यामक्षिकामदे पक्षिमात्रेऽप्यथ स्त्रियाम् ।  
 तृणधायविषऽथ का चने स्थानृशण्डयो ॥१८६९॥  
 गमुदी गमुदारये स्त्री तृणधान्यातरे मता ।  
 श्वपाक्या तु निषादेन जनिते गमुदो द्वयो ॥१८७०॥  
 गर्भ पुस्यभिमाने चाऽऽलेप च प्रकीर्तित ।  
 गवर पुस्यहङ्कारे महिष तु द्वयोर्मत ॥१८७१॥  
 गवरी तु त्रयामेषा स ध्याया परिकीर्तिता ।  
 गल सजरसे तद्वक्त्रे चापि पुमान्त ॥१८७२॥  
 ककर्या स्त्री गलती त्रि भुज्जानच्यवमानयो ।  
 गलस्तनी तु छाग्या स्याद्योग लिङ्गादि चाथत ॥१८७३॥  
 गवल माहिष शृङ्गस्थारण्यमहिष द्वयो ।  
 गवाक्षो जालके पुसि सुग्रीवसचिवेऽप्यथ ॥१८७४॥  
 गवाक्षी गिरिकर्णीद्रवारुणीमलिकासु च ।  
 गवादनी स्त्री गिरिकर्ण्यभिधानलतातरे ॥१८७५॥  
 यौगिके त्वर्थवशतो लिङ्गादिकमिहो नयेत् ।  
 गवीशुका तु स्त्री क्षुद्रधायभेदे पुरे तु नप ॥१८७६॥  
 गव्य रागद्रव्यभदे मौर्व्या गया तु गोगणे ।  
 गयूयारयाऽध्वमानेऽथ त्रि दुग्धादौ च गोहिते ॥१८७७॥  
 गहन क्ली जलेऽरण्ये दुःखगह्वरयोर्मतम् ।  
 दुष्प्रवेशे तु गहना वाच्यवत्सम्प्रयुज्यते ॥१८७८॥  
 गह्वर तु गुहादम्भरहोवारिषु नप् स्मृतम् ।  
 त्रिदुष्प्रवेशे भीष्मे च निष्कुञ्जे तु पुमानयम् ॥१८७९॥

गाधातुगमने गाने युत्तरस्थ सगततरि ।  
 गाङ्गस्तु गङ्गासम्भूते त्रि भीष्मे तु गुहे च ना ॥१८८॥  
 गाङ्गेयस्तु पुमास्कन्द भीष्मे चाथाभिधेयत् ।  
 अपयमात्रे गङ्गाया क्ली तु हेमकशरुणो ॥१८८९॥  
 गाढमुष्टि कृपाण ना कृपणेवभिधेयवत् ।  
 गाण्डीवो गाण्डिउश्चाऽस्त्री कार्मुकेऽजुनकामुके ॥१८८२॥  
 गातुर्दे कोकिले भृङ्गे गधर्वे त्रिषु रोषण ।  
 पुमास्तु गातुरने स्याद्वसुधायामपि स्त्रियाम् ॥१८३॥  
 गात्र गजाग्रजङ्घादिभागोऽङ्गे च कलेवर ।  
 द्वयोस्तु गात्रसङ्कोची जाह्नकारयेषु जतुषु ॥१८४॥  
 गाथा तु वा यामार्यायाम्पिङ्गलानुक्तनामसु ।  
 वृत्तेष्वनुष्टुबाद्यषु यानि वृत्तानि पञ्चसु ॥१८५॥  
 पादैश्चतुर्भि षडभिर्वा तेष्प्यधिकृतेष्वसौ ।  
 गान गीतौ च शब्देऽथ गानी भाद्रस्य पूणिमा ॥१८८६॥  
 गाधर्वस्तु द्वयोरेष गधर्वे खे तु नप्यद ।  
 गीतभेदेऽथ वाचि स्त्री गाधर्वी परिकीर्त्तिता ॥१८८७॥  
 गाधारन्नपि सिद्धूरे राजदेशभिदोस्तु ना ।  
 गाधिको लेखके त्रिच सुगधियवहारिणि ॥१८८८॥  
 गायत्री त्रिपदा देयां स्त्री तथा खदिरद्रुमे ।  
 स्त्रीनपोस्तु चतुर्विंशत्यक्षरप्रभृतिष्वसौ ॥१८८९॥  
 छन्दस्स्वार्षादिष्वथ ना गायत्री ब्रह्मचारिणि ।  
 उपकुर्वाणनामन्येव प्रगाथेषु च तेष्पि ॥१८९॥  
 गायत्रीसङ्गक छदो येषामादेरुचो भवेत् ।  
 गारित्रस्तु पुमानुक्त आचार्ये गहने तु नप् ॥१८९१॥  
 गारुड स्यान्मरकतनाम्नि रत्ने च हेम्नि च ।  
 विषशास्त्रप्रभेदे चाऽथ त्रिर्गुडयोगिनि ॥१८९२॥  
 गार्भिण गार्भिणीना सम्बन्धिनि त्रिव्रजे तु नप् ।  
 सीमतोन्नयनारये च स्त्रीणा सस्कारकर्मणि ॥१८९३॥

गाहपत्य पश्चिमाग्नौ नप्तु स्याद्गावकर्मणो ।  
 गालो मदनवृक्षे स्याद्गालनेऽपि पुमानयम् ॥१८९४॥  
 गाल मदनवृक्षस्य फलेऽपि वडिशेऽपि च ।  
 गालवो मुनिभदे च पुंसि लोत्रतरावपि ॥१८९५॥  
 गिरू शब्द स्त्री सरस्वत्याम्भाषायामपि कीर्त्तित ।  
 गिरिगरीयकक्रीडागुडके कदुके नगे ॥१८९६॥  
 गोरुग्भदेऽम्बुद लक्षे गृणातौ गिरतावपि ।  
 नेत्ररोगे तथा गीर्णो त्रि तु पूये गिर्गित ॥१८९७॥  
 गिरिजस्त्वभ्रके लोहे शिलाजतुनि चापि नप ।  
 गिरिजा तु नदीगौरीमातुलुङ्गीष्विय स्त्रियाम् ॥१८९८॥  
 गिरिणो जलदे ग्रामे तथा चार्ये पुमान्मत ।  
 गिरिप्रिया स्त्रिया क्षुद्रफलवातिङ्गनातरे ॥१८९९॥  
 सधानीसङ्गकेऽर्थात्तु लिङ्गाद्य यागिके मतम् ।  
 गिरिसार पुमाल्लोहे वज्रे मलयपवते ॥१९ ॥  
 गिरीशोऽद्रिपतौ वाचस्पतिशङ्करयो पुमान् ।  
 गिरेरीशे त्रिलिङ्गोऽय गिरीश परिकीर्त्तित ॥१९ १॥  
 गीतन्नपुसक गाने त्रि तु गानस्य कर्मणि ।  
 गीता कृष्णादिगीतासु योगपट्टेऽपि च स्त्रियाम् ॥१९ २॥  
 गीतिश्छन्दोविशेषे च गाने चापि स्त्रियाम्मता ।  
 स्यावगुच्छस्तबके धायस्तम्बे वीरुसु सप्तसु ॥१९ ३॥  
 एकस्या हारभेदे च द्वात्रिंशद्यष्टिके पुमान् ।  
 गुच्छा स्त्री माषधायै च गवीथौ च प्रकीर्त्तिता ॥१९ ४॥  
 गुञ्जोऽक्ली गुञ्जने गुञ्जा कृष्णलावाद्यभेदयो ।  
 गुड इक्षुविकारे च वकुले पिण्डगोलयो ॥१९ ५॥  
 पुमास्तु हस्तिनादेऽथ स्नुहीगुलिकयोगुडा ।  
 गुडूची स्यमृतानाम्भ्यां वल्यां कुस्तुम्बुरुष्यपि ॥१९ ६॥  
 गुणो मौर्व्यामग्रधाने बट्यामपि पुमान्मत ।  
 उपकारे सूपकारे तत्तुरज्ज्वद्रियेषु च ॥१९ ७॥

सत्त्वादौ भाग आधुत्तौ सध्यादौ द्रयमाश्रिते ।  
 महाभूतेषु शौर्यादौ दोषस्य प्रतियोगिनि ॥१९८॥  
 स्त्रियां गुणनिका नृत्यशून्याङ्के पाठनिश्चितो ।  
 प्रधानतवे सारयाना गुणसामा यमिष्यते ॥१९९॥  
 गुण्डको मलिने धूला कलोक्तिस्नेहपात्रयो ।  
 गुद्रा फलिया स्त्री भद्रमुस्तके क्षुद्रधा यके ॥१९९॥  
 गवेधुसङ्गे ना त्वेष स्तम्भभेदे शराह्वये ।  
 गुप्तं तु रक्षितेऽपि स्यान्निगूढेऽप्यभिधेयवत् ॥१९९१॥  
 गुप्ति स्त्र्यवकरस्थाने कारागारे च रक्षण ।  
 गुम्फो ना गुम्फने बाहोरलङ्कार च कीर्त्तित ॥१९९॥  
 गुरुबृहस्पतौ बुद्धमुनौ पित्रादिके तथा ।  
 पुरोहिते च गोधूमेऽप्युपनीत्यादिकारिणि ॥१९९३॥  
 स्त्री तु मातृप्रभृतिषु गुर्वी दक्षिणं तु तन्त्रपि ।  
 लग्नान्नवमराशौ च ग्राह्य सावसरा इदम् ॥१९९४॥  
 नीलिकासङ्गलोहे च त्रिषु तु स्याच्चतुष्पपि ।  
 दुजरे बृहति रयाते लघुन प्रतियोगिनि ॥१९९५॥  
 एष्वर्थेषु यदास्त्र्यथस्तदा गुर्वीति वा गुरु ।  
 गुल स्यादैक्ष्वे पुंसि स्नुह्या तु स्त्री गुला स्मृता ॥१९९६॥  
 गुली तु गुटिकायाञ्च रोगभिद्यपि कीर्त्तिता ।  
 गुल्मोऽस्त्रियां हृद्ग्रन्थ्याययाधा सम्येऽपि वीरुधि ॥१९९७॥  
 रक्षिस्थाने सैयभदे घट्टेऽपि बलसञ्जने ।  
 शुल्केऽथ गुल्म्यामलक्येलावतीवस्त्रवेश्मसु ॥१९९८॥  
 गुह स्क दे निषादे च शृङ्गिवेरपुरेश्वरे ।  
 गुहा तु पृथिनपर्ण्याञ्च गर्त्ते गिर्यादिगह्वरे ॥१९९९॥  
 गुहाशयो द्व श्रक्ष्वाखुसिहकूर्मे त्रियौगिके ।  
 गुह्य त्रिगोप्यरहसो क्ल्युपस्थे कमठे द्वयो ॥१९९०॥  
 गूर्मले पुंसि गूरेषा गुदे स्त्री परिकीर्त्तिता ।  
 गूढ रहसि गुह्य च न द्वयो सष्टते त्रिषु ॥१९९१॥

गृह्यनो मधुशिग्र्वारये शिग्रुमेदेऽथ न स्त्रियाम् ।  
 भदे पलाण्डुजातीनान्देशानामपि कुत्राचत् ॥१९२॥  
 विषदिग्धपशोस्स्वेतमांसे क्ली गृह्यनम्मतम् ।  
 गृसो द्व कुक्कुरे विप्र त्रिस्तु मेधाविनि स्मृत ॥१९२३॥  
 गृधुर्द्वयो पशौ पुंस त्वमिलाषे प्रकीर्तित ।  
 गृध्र खगान्तरे पुंसि वाच्यलिङ्गस्तु लोभिनि ॥१९२४॥  
 गृष्टि सकृ प्रसूतायां गवि काष्मर्यपादपे ।  
 विष्वक्सेनप्रियासज्ञस्थावरे बदरे स्त्रियाम् ॥१९२५॥  
 गृह गृहाश्च पुभूम्नि कलत्रेऽपि च सन्ननि ।  
 पुमा गृहपतिर्गाहप याग्नावपि मन्त्रिणि ॥१९२६॥  
 कृषीबले छद्मवेषस्पशे स्या सत्रयाजिनाम् ।  
 प्रधाने यजमाने च गृहस्य वधिषे त्रिषु ॥१९२७॥  
 गृहपूस्तु बलिभुग्वायसे चटकेऽपि ना ।  
 पुमा गृहमणिर्दपि न तु क्ली गेहभूषणे ॥१९२८॥  
 गृहस्थो ना द्वितीयाश्रमस्थे त्रिषु गृहस्थिते ।  
 मेषादौ त क्लीबमेव लग्नात्तर्प्ये विशेषत ॥१९२९॥  
 भवेद्गृहे च शैलेयऽप्यौपासनहुताशने ।  
 गृहिणी गृहकार्यारये कीटभेदे द्वयोस्तथा ॥१९३॥  
 गृहस्थेऽथ गृहपतौ गृही स्यादभिधेयवत् ।  
 गृहोदक काञ्जिकेऽपि गृहसम्बन्धिनारिणि ॥१९३१॥  
 गृह्य स्मात्तत्र थभेदे गुदे त्रिस्तु स्वतन्त्रके ।  
 पक्ष्ये च गृहसक्तेषु मृगपक्षिषु वाऽथवा ॥१९३२॥  
 औपासनाग्नौ गृह्या तु शाखानगरबाह्ययो ।  
 गेय गाने क्लीबमथ गातव्ये गातरि त्रिषु ॥१९३३॥  
 गेष्ण पुमा साममात्रे चोभयोरङ्गयोस्तनो ।  
 रङ्गोपजीविनि पुनर्गेष्ण स्यादभिधेयवत् ॥१९३४॥  
 गेष्ण पुमान्नायनेऽपि नटेऽपि परिकीर्तित ।  
 गैरिकन्तु भवेत्क्लीबम्पीतधातौ च हेम्नि च ॥१९३५॥



शिलाजतुनि गैरयन्ना तु पूगेऽद्रिसम्भवे ।  
 गौर्नाऽऽदिये बलीवर्दे क्रतुभेदर्विभेदयो ॥१९३६॥  
 स्त्री त स्यादिशि भारयाम्भूमौ च सुरभावपि ।  
 नृस्त्रियो स्वर्गवज्राम्बुरश्मिदृग्बाणलोमसु ॥१९३ ॥  
 मौर्या रवे सुषुम्णारयरश्मौ च ग्रग्रहऽत ।  
 द्वयोस्त्वश्वे त्रिषु स्तोत्रे दग्धस्याऽभिषवेपि च ॥१९३८॥  
 अथ श्लेष्मारयपिकृतौ चर्मणो गोनरस्त्रियो ।  
 गोकण्टको गोकुरके स्थपृटे च गवां खुरे ॥१९३९॥  
 गोकर्णोऽज्ञतरे सर्पे मृगभेदे तथा द्वयो ।  
 गोकण इति विख्याते पुल्लिङ्गस्त गणात्तरे ॥१९४ ॥  
 शिवतीर्थविशेषे चाऽनामिकाङ्गुष्ठविस्तृते ।  
 माने चाप्यथ गोकर्णी मूषिकौषधिदूर्गयो ॥१९४१॥  
 गोकीलकस्त वलिरे वाच्यवपरिकीर्तित ।  
 उपेक्षमाणे पङ्कस्था गां च गोकीलकस्त्रिषु ॥१९४२॥  
 गोग्रथिर्ना करीषे स्याद्गोष्ठे गोजिह्विकौषधौ ।  
 गोजिह्वा रसनायां गो स्थागरे दार्विकाऽभिधे ॥१९४३॥  
 मन शिलायामपि च गमीथुक्षुद्रधायके ।  
 गोडुम्ब शीणवृते ना गवादिन्या तु योषिति ॥१९४४॥  
 गोण्ड पामरभेदे त्रि भारवाहककर्मणि ।  
 गोण्डो नाभौ पुमानेष त्रि तु तद्वति कीर्तित ॥१९४५॥  
 गोतमञ्चापभेदे क्ली जडे तु अथ गोतमी ।  
 रोचनीदुर्गयोर्ना तु शाक्यसिंहर्विभेदयो ॥१९४६॥  
 गोत्रा भूगययोगोत्र पुन शैले वलाहके ।  
 गोत्र कुले बले नाम्नि काननच्छत्रवर्त्मसु ॥१९४ ॥  
 सम्भावनीयबोधे च लोके याने च कुत्सिते ।  
 अथ गोत्रो गवा त्रातर्यभिधयवदुच्यते ॥१९४८॥  
 गोदा गोदावरीनद्यां गोदो गोदातरि त्रिषु ।  
 ना क्रीडायां इदौ गौदाग्रामौ चापि तदन्तिके ॥१९४९॥

गोदारण लाङ्गलेऽपि कुदालेऽपि नपुसकम् ।  
 गोधुक पुसि सुमेरौ त्रि गोपाले गोश्च दोग्धरि ॥१९५॥  
 गोधा जन्तौ धविनाञ्च हस्ते ज्याघातवारणे ।  
 गोधूमो नागरङ्गे स्यादोषधित्रीहिमेदयो ॥१९५१॥  
 गोनद अक्षिणि मत सारसारये द्वयोरयम् ।  
 गोनर्द क्ली वा[न] मुस्ते कैवर्तीमुस्तकेऽपि च ॥१९५२॥  
 गोनासस्तु तिलिसारसपजातौ द्वयोमत ।  
 गोर्नासिकाया गोनासा स्त्रियामषा प्रकीर्त्तिता ॥१९५३॥  
 गोपो गोष्ठाधिपे गुप्तौ बहुग्रामाधिकारिणि ।  
 भूपेऽथ त्रिषु गोपाले मनुष्ये तु द्वयोमत ॥१९५४॥  
 गोपी तू स्त्री सारिवारयभेषजे समुदाहृता ।  
 गोपतिर्ना रवौ षण्डे शिवे भूतपतावपि ॥१९५५॥  
 गोपालस्तु पुमात्राज्ञि गो पातर्थभिधेयवत् ।  
 गोपीथो गोनिपाने च तीर्थे कालातरेऽपि च ॥१९५६॥  
 गोपुच्छो द्वारभेदे च यष्टिके पुसि कीर्त्तित ।  
 पुनपुसकयोस्त्वेतद्गोलाङ्गले च कीर्त्तितम् ॥१९५७॥  
 गोपुरद्वारि पृथ्वारि कैवर्तीमुस्तकेऽपि च ।  
 गोमत् गोस्वामिनि त्रि स्यान्नदीभेदे तु गोमती ॥१९५८॥  
 गोमत तु परिज्ञेय गयूतिरिति विश्रुते ।  
 क्रोशद्वयामके मागपरिमाण नपुसकम् ॥१९५९॥  
 गोमुख कुटिलागारे त्रि तु वाच्यवदिष्यते ।  
 ना तु मातलिपुत्रेशगणयोर्नक्रके द्वयो ॥१९६०॥  
 गोमेदकम्पीतमणौ काकोले पत्रकेऽपि च ।  
 गोरक्षो नागरङ्गे ना गवा तु त्रातरि त्रिषु ॥१९६१॥  
 गोरक्षजम्बू गोधूमधान्ये नागबलाह्वये ।  
 गोरक्षा तण्डुलायारये भेषजे त स्त्रियाम्मता ॥१९६२॥  
 गोरक्षु स्यापुमापक्षिभेदे नग्नकवन्दिनो ।  
 गोरस कालशेयेपि तथा दग्धि पुमानयम् ॥१९६३॥

गोरुत तु भवक्लीब गयुता न गवा रुत ।  
 गोलका जारसम्भूते वैधवेयेऽपि कम्बले ॥१९६४॥  
 पिण्डे गुडे च गाले च मणिके स्त्री तु गोलिका ।  
 वेष्टनद्रव्यके प्राणिभेदेऽपि परिकीर्त्तिता ॥१९६५॥  
 गाला गोदावरीसरयो कुनटीदुगयो स्त्रियाम् ।  
 पत्राञ्जनेऽलिङ्गरे च बालक्रीडनके तथा ॥१९६६॥  
 क्लीब तु काञ्चिके गोल पिण्डगाल पुमान्मत ।  
 गोलाङ्गलस्तु गोपुच्छे वानरे च पुमान्मत ॥१९६७॥  
 गोलोमी सितदूर्वायां स्याद्वा भृतकेशयो ।  
 गोव दनी फलि या स्त्री योगे गोव दना मता ॥१९६८॥  
 गोविन्दो गोरधिपतौ त्रिर्ना कृष्ण बृहस्पता ।  
 गोशीर्षं चन्दन ताम्रसारे मूध्नि गवामपि ॥१९६९॥  
 गोष्ठमस्त्री गवा स्थाने गोष्ठस्सामातरे पुमान् ।  
 गोष्ठी तु स्त्री सभायाञ्च सलापे न प्रकीर्त्तिता ॥१९७०॥  
 गोष्पद गोखुरे श्वघ्रे गवाञ्च गतिगोचरे ।  
 गोसो बालेऽपि पुष्टिङ्गस्तथगोषसि कीर्त्तिता ॥१९७१॥  
 सरयायामथ गोयुद्ध गोसरयम्पुच्छपुसकम् ।  
 गोसग स्यात्प्रमातेऽपि पुल्लिङ्ग सर्जने गवाम् ॥१९७२॥  
 गोस्तनो ना चतुर्यष्टिहारभदे स्तने गवाम् ।  
 गोस्तनी तु स्त्रियाद्राक्षाभेद एषा प्रयुज्यते ॥१९७३॥  
 गोस्वामी राजपुत्रे स्यान्नाट्योक्तौ त्रि तु गोमति ।  
 गौतमो ना शाक्यमुनाष्टृषिभेदे च कीर्त्तिता ॥१९७४॥  
 स्त्रिया तु दुर्गारोचयोगादावर्याञ्च गौतमी ।  
 मेदोजे गौतम क्ली च कुक्कुरे तु द्वयोरयम् ॥१९७५॥  
 गौरो धवेऽसने शुक्लसर्पे ब्रह्मचद्रयो ।  
 श्वेतपीतारुणगुणेष्वेतद्यक्तेषु तु त्रिषु ॥१९७६॥  
 शुद्धे च प्रसवे तु स्त्री धवासनमहीरहो ।  
 उर्शीरि चाञ्जकिञ्जके द्वयोस्तु स्यान्मृगातरे ॥१९७७॥

गौरी शिवासरस्तया प्रियाया वरुणस्य च ।  
 असञ्जातरज कया गौरी च सरित्तरे ॥१९८॥  
 रोचनीरजनीपिङ्गाप्रियङ्गुवसुधासु च ।  
 बुद्धस्य शक्तौ रागिण्यातीक्ष्णाजकहरिद्रयो ॥१९९॥  
 ग्रथित गुम्फिते क्राते हिंसिते ग्रामिधेयवत् ।  
 ग्रथ शास्त्रे धने चैव ग्रथनाया तथा पुमान् ॥१९८॥  
 द्वात्रिंशद्वणवृ दे च वचस्यप्ययमिष्यते ।  
 ग्रथि स्यादिक्षुवेष्वादिवाण्डसंघो रुग तरे ॥१९८१॥  
 ग्रथिवर्णे रज्जुवस्त्रादिग्रथनपदे पुमान् ।  
 ग्रथिक पिप्पलीमूले गुग्गुलुग्रथिवणयो ॥१९८२॥  
 वाच्यवत्तु ग्रथिनि ना सहदेवारयपाण्डवे ।  
 ग्रथिलस्तु पुमाञ्जय करीरद्रौ विकङ्कते ॥१९८३॥  
 अथ ग्रथिलमेत स्याद्ग्रथिमयमिधेयवत् ।  
 ग्रस्त त्रिवेष्टिते भुक्ते लुप्तवणपदादिते ॥१९८४॥  
 ग्रह आदान निबन्धोपरागाऽनुग्रहेषु च ।  
 रणोद्यमे च कथितो राहौ चापि बुधादिषु ॥१९८५॥  
 उलूखलनिभ सोमपात्रमेदे तथा पुमान् ।  
 द्वयोस्त्वेष पिशाचादौ ग्रहशब्द प्रकीर्तित ॥१९८६॥  
 ग्रहणम्प्रयये क्लीबलिङ्ग स्याच्च द्रस्ययो ।  
 उपरागे चोपलब्धौ न धादानादरेषु च ॥१९८७॥  
 ग्रहणी तूदरव्याधिविशेषे मृयुमेहयो ।  
 ग्रहराजस्तु विज्ञयो भास्करे च द्रमस्यपि ॥१९८८॥  
 ग्राम सवसथ वृन्दे तथा गीतिस्वरातरे ।  
 ग्रामणीर्नापिते पुंसि तथैवाधिकृते मत ॥१९८९॥  
 नायकोचमयोस्त्वेष ग्रामणीर्वा यवमत ।  
 ग्रामणीकुलमियेत क्षुद्राणां भारताम्बुधे ॥१९९०॥  
 प्राग्दक्षिणस्थद्वीपानामेकसि परिकीर्तितम् ।  
 ग्राममद्गुरिका ग्रामयुद्धे शृङ्गिणेषु स्त्रियाम् ॥१९९१॥

ग्रामीणा नीलकाया स्त्री ग्रामोद्भूतेऽभिधेयवत् ।  
 अथ काके च शुनके द्वयोर्ग्रामीण इ यते ॥१९९२॥  
 ग्राम्य स्त्रीकरण क्लीब त्रिरश्लीलेऽपि कीर्त्तितम् ।  
 ग्रामीणेऽथ स्त्रिया ग्राम्या चाषसङ्ग लतातरे ॥१९९३॥  
 ग्रावा शैलशिलाभेषु नात्त पुंसि प्रकीर्त्तित ।  
 ग्राहा द्वे अवहारे स्यान्निब धे नु पुमान्त ॥१९९४॥  
 ग्राहकस्तु त्रिषु ज्ञयो ग्रहीतर्यथ पक्षिणि ।  
 पुंसि स्याद्येन गृह्यते पक्षिणोऽये च लुधकै ॥१९९५॥  
 ग्राहि पुमाकपित्थे स्याद्वायवत्तु ग्रहीतरि ॥१९९५॥

## घ

घस्त मात्रे निश्चयऽपि परमाथविशेषयो ॥१९९६॥  
 घा यय निश्चये तावयसृषार्थप्रिशषयो ।  
 घ उत्तरस्थस्त्रिह तर्त्यघ घा ताडने तथा ॥१९९७॥  
 किङ्किण्या घस्तु घण्टायां तथा स्याद्धर्घरारवे ।  
 घट समाधिभदे ना शिरकटकुटेषु च ॥१९९८॥  
 स्तम्भभागे तथा प्रासादाकारात्तरसीमयो ।  
 कुम्भराशौ तथा ग्रोक्तो माने द्रोणाह्वये पुमान् ॥१९९९॥  
 घटकस्त्रि घटयितर्यपि चावयवे स्मृत ।  
 वशवेदिनि चोद्वाहसाधकेऽथ वनस्पतौ ॥२००॥  
 पुमाद्वयोस्तु वार्यादिकुम्भे स्याद्वटिकाऽथ सा ।  
 स्त्रियां मुहूर्त्ते घण्टारयवाद्ये गुफे च कीर्त्तिता ॥२०१॥  
 घटजन्मा पुमा द्रोणे वसिष्ठागस्त्ययोरपि ।  
 घटना घटनश्चापि निर्मित्यायोजनादिके ॥२०२॥  
 स्त्रियां तु घटनेत्येषा गजादियूह इष्यते ।  
 घटा घटनसघातगोष्ठीभघटनासु च ॥२०३॥  
 अपि स्यात्स्वादुजम्बीरे तथैव पणवातरे ।  
 घटिक क्ली नितम्बे स्याद्वघटेन तरति त्रिषु ॥२०४॥

घटी तु दोहपात्रे च काले नाडीद्वयात्मके ।  
 घण्टावादनभाण्डे च स्यात्तथैवोसगातरे ॥२ ५॥  
 घटी पुमाञ्जिष्वे कुम्भराशौ घटवति त्रिषु ।  
 अरघट्ट घटीयन्त्र यत्रे समयसूचके ॥२ ६॥  
 घटोकचो दै-यभेदे सुते भीमहिडिम्बयो ।  
 तथा समुद्रगुप्तस्य नृपते स्यात्पितामहे ॥२ ॥  
 घट्टजीवी द्वयोर्वैश्यानिर्णेजकसुतेऽथ च ।  
 घट्टेन जीवति पुनघट्टजीवी त्रिषु स्मृत ॥२ ८॥  
 घट्टन तु हिमे क्लीब द्व तुरङ्गोपजीविनि ।  
 अनासवरणे चापि चलने चापि घट्टना ॥२ ९॥  
 घट्टिता पणगाघातभेदे त्रिषु तु यौगिके ।  
 घण्ट शिवे लेखभेदे वाद्यभेदे पुनस्त्रियाम् ॥२ १ ॥  
 कांस्यतालातरे चैव बलाया पाटलावपि ।  
 घण्टक पाटलौ पुसि घण्टासोऽपि प्रयुज्यते ॥२ ११॥  
 घण्टाताडस्तु योगार्थे तथा स्यात्सकरा तरे ।  
 घण्टारवस्तु घण्टाया शब्दे रागान्तरेऽपि च ॥२ १२॥  
 घण्टारवा तु शृणपण्योषधौ यौगिकेऽथवत् ।  
 घण्टाली कर्कटीभेदे घण्टापङ्कतावपि स्त्रियाम् ॥२ १३॥  
 घण्टास्वनतु क्ली लौहे यौगिके लिङ्गमर्थवत् ।  
 घण्टिका क्षु घण्टायामवटौ च स्त्रियाम्मता ॥२ १४॥  
 अपामार्गे विघण्टी तु क्षुद्रघण्टार्थिका मता ।  
 घण्डुरूम्पणि कण्ठस्थघण्टाया करिणोऽपि ना ॥२ १५॥  
 घनो ना मुस्तके मेघे सघाते लोहमुदरे ।  
 मुदरेऽपि च काठिये कफे गन्धेऽग्निके तथा ॥२ १६॥  
 भिक्षाया परिमाणे च हस्तकण्डद्वयामके ।  
 विस्तारे कठिने तु त्रिविपुले मूर्त्तसाद्रयो ॥२ १ ॥  
 कायस्थग ध्युक्ते च कांस्यतालादिके तु नप ।  
 मुखे मध्यमनृत्यादौ लोहे मरकताह्वये ॥२ १८॥

भवेद्धनरस साद्रनिर्यासे मोरटाम्बुन ।  
 कपूरे पीलुपण्याश्च सम्यक्सिद्धरसेऽपि च ॥२ १९॥  
 शक्रे धातुकमत्तमे वषुकाऽग्रे घनाघन ।  
 घर्घरो ना चलद्वारिध्वाने घूरे नदान्तरे ॥ २ ॥  
 स्यादस्त्री पुनरद्वादेरधोद्वारकपाटके ।  
 अथ स्त्री घघरी क्षुद्रघण्ट्या वीणातरेऽपि च ॥२ २०॥  
 खरातरे तथा वाद्यलगुडे घघरा पुन ।  
 सरय्वशान्तरे द्वे तु रघ्रीवैश्यात्मसम्भवे ॥२ २२॥  
 अथ घघरिका वाद्यभदे वादित्रकोणके ।  
 घर्म स्वेदजले ग्रीष्मे उष्णे दिवसे आतपे ॥ २३॥  
 यज्ञे हविर्विशेष च महावीरमतेऽश्विनो ।  
 घस्तस्तु दिवसे पुसि हिंसे स्यादभिधेयवत् ॥२ २४॥  
 घात काले ग्रहरण पुल्लङ्ग परिकीर्तित ।  
 घासिर्नाजनौ रण गर्त्ताजनौ बह्वाशिनि त्रिपु ॥२ ५॥  
 घुटिकोऽश्वगजादीना पादादीनाश्च बधके ।  
 शङ्कावपि च गुल्फे च पुल्लङ्ग परिकीर्तित ॥२ २६॥  
 घृणा स्त्रिया जुगुप्साया दयाया च प्रकीर्तिता ।  
 घृणिरस्त्री निदाघेऽह्नि बालादीधितिबीचिषु ॥ २ ॥  
 घृतमायाम्बुनोर्न स्त्री प्रदीप्ते अभिधेयवत् ।  
 घृतवद्घृतयुक्ते त्रि घृतवत्यौ तु रोदसी ॥ २८॥  
 घृताची त्वप्सरोमेदे निशायाश्च प्रकीर्तिता ।  
 घृष्टि स्त्री वषणस्पर्द्धाविष्णुकातासु ना किरौ ॥२ २९॥  
 घोण पुमाधूने स्यादित्वरे त्वभिधेयवत् ।  
 घोणा तूक्ता ह्यग्रोथे नासिकायामपि स्त्रियाम् ॥ ३ ॥  
 कुम्भीरमक्षिकारये च कीटेऽम्बूपरिसर्पिणि ।  
 घोण्टा तु बदरीपूगवृक्षयोः प्रकीर्तिता स्त्रियाम् ॥२ ३१॥  
 घोर पुमाञ्छिवे त्रिस्तु कष्टे च स्याद्भयामके ।  
 घोरो द्वयोः सुगाले स्याद्घोर क्ली कुक्षुमे मतम् ॥२ ३२॥

घोल पुसि कपालेऽथ क्ली दण्डाहतके भवेत् ।  
 द्वयोस्तु घघरीवैश्यसम्भूते स्यान्नरातरे ॥२ ३३॥  
 घोष आभीरपल्ला ना शदे वाचि स्वरेऽपि च ।  
 ब्रह्मबालुकसज्ञ च विषभेदे लतातरे ॥२ ३४॥  
 कोशातक्याह्वये शदवणधर्मेऽम्बुदेषु च ।  
 कसारयलोहे त्वस्त्री स्त्री घोषा मधुरिकौषधौ ॥ ३५॥  
 घोषयिनुस्तु त्वप्र च कोकिलेऽपि पुमान्मत ।  
 घोषवास्त्रिर्घोषयुक्त वीणाया घोषवत्यसौ ॥ ३६॥  
 घ्राणघ्राणे च नासाया त्रिघ्राते घ्रातिवाचिनि ॥२ ३६३॥

ड

ड पुमाविषये रयात स्पृहाया विषयस्य च ॥२ ३७॥

च

चक्षुण्डीशे पुमानुक्तः कच्छपे च द्रचौरयो ।  
 चको ना सर्पसत्रस्य सर्पभदेऽपि यष्टरि ॥२ ३८॥  
 तर्पणे चिक्कणे तु स्यात्क्लीब पूगतरो फले ।  
 चकोरस्तु द्वयो पक्षिभेदे गिर्यन्तरे तु ना ॥२ ३९॥  
 चक्रमस्त्री रथाङ्गे च ससारे सैयराष्ट्रयो ।  
 जलावर्त्ते चये घृत मण्डले घनलोहयो ॥२ ४ ॥  
 कायालङ्कारभदे च विषमे माक्षिकेऽपि च ।  
 दद्रुसज्ञव्याधिभेदे गृहदम्भप्रभेदयो ॥२ ४१॥  
 धर्मचक्रादिके कुम्भकारोपकरणान्तरे ।  
 अस्त्रातरे द्व तु चक्रश्चक्रवाकस्वगे मत ॥२ ४२॥  
 हरौ चक्रधरो नाऽहौ द्वे त्रिषु ग्रामजालिनि ।  
 चक्रपादो द्वयोहस्ति यथ पुसि रथे मत ॥२ ४३॥  
 चक्रवर्त्ती पुमान्सार्वाभौमे स्त्री चक्रवर्त्तिनी ।  
 स्थावरे जन्तुतत्सङ्गे योगे वथवदिष्यते ॥२ ४४॥



चक्रवाट क्रियारोहे पर्यन्ते च शिखातरौ ।  
 चक्रवाटम्पण्डले क्ली लोकालोकागरौ पुमान् ॥२ ४५॥  
 चक्राङ्गीरुकटशृङ्गया चक्राङ्ग शाङ्गधविनि ।  
 चक्राङ्गी कदुरोहि या चक्राङ्गो हसपक्षिणि ॥२ ४६॥  
 चक्राटो विषवैद्ये द्वे ना दीनारे त्रि धूतके ।  
 चक्री जालिककोकाञ्जकुलालगृहिषु द्वयो ॥२ ४७॥  
 विष्णौ तु ना त्रिषु त्रेष चक्रवचक्रयायिनो ।  
 चक्षु य सुभगे त्रि स्यात्तथा स्याचक्षुषो हिते ॥२ ४८॥  
 ना पुन पीतमुद्ग च पुण्डरीकतरावपि ।  
 कतकद्रौ सक्तुषु च चक्षुष्या तु भवेत्स्त्रियाम् ॥२ ४९॥  
 कुलालीभषज चाप द्रोणपुष्पाख्यझाटके ।  
 चङ्कुरस्तु द्वयोर्द्वये ना रथ च भगाङ्कुरे ॥२ ५०॥  
 चङ्क्रम सङ्क्रमे नाऽथ चङ्क्रमश्चङ्क्रमोऽप च ।  
 भवेचङ्क्रमणे तच्चाप्य पेऽध्वनि गतागतम् ॥२ ५१॥  
 चङ्गस्तु शोभने दक्षे त्रिलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 चञ्चत्क स्यान्मणौ नातिभास्वरे त्वभिधेयवत् ॥२ ५२॥  
 भवेद्द्वयोस्तु चञ्चत्क खद्योते ददुरेऽपि च ।  
 चञ्चला स्त्री तडि लक्ष्म्योश्चञ्चल पवने पुमान् ॥२ ५३॥  
 वायवत्कर्मवति च लेखने तु द्वयोर्मत ।  
 चञ्चा तु नलनिर्माणे तृणनिर्मितपूरुषे ॥२ ५४॥  
 चतुर कीर्त्तिता दक्षे बुद्धिमत्यभिधेयवत् ।  
 चतुरा हस्तिशालाया तथाल्पभ्रुकुटावपि ॥ ५५॥  
 मृगमेदे तु चतुरा स्त्री तस्या लक्षण विदु ।  
 चतुरा स्याद्वनास्नग्धरोमा श्यामा सविदुका ॥२ ५६॥  
 चतुरङ्गुल इत्येष पुमानारग्वधद्रुमे ।  
 मानातरे शरारये च योगे त्वर्थवदिष्यते ॥२ ५७॥  
 चतुथन्तु चतुर्णां त्रि पूरणेऽथ चतुथ्यसौ ।  
 तुरीयायां विभक्तौ स्त्री विनायकतिथावपि ॥२ ५८॥

चतुदशी स्त्री वीणायां यस्यास्तत्र्यश्चतुदश ।  
 तथा शिवतिथौ त्रिस्तु पूरण स्याच्चतुदश ॥२ ५९॥  
 चतुर्वर्ग पुमानर्थधर्मकामविमुक्तिषु ।  
 चतुष्क स्याच्चतु सङ्घ भवने यष्टिकान्तरे ॥२ ६ ॥  
 अक्षे तु ना चतुष्की तु स्त्रिया यवनिकान्तरे ।  
 मशकहारि यारये पुष्करिण्यन्तरेपि च ॥२ ६१॥  
 चतुष्पथ क्ली शृङ्गाटे ब्राह्मण ना चतुष्पथ ।  
 चतुष्पदी स्त्री पद्ये ना पशौ क्ली करणातरे ॥२ ६ ॥  
 चतुष्पाद्रावणे पुसि चतुरङ्गौ तु वायवत् ।  
 चतुष्पष्टि कलासरयादेवीभिसु श्रुचि स्त्रियाम् ॥२ ६३॥  
 चतुस्सम यौगिकेऽपि क्लीब तु परिभाषितम् ।  
 चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमै कदमे कृते ॥२ ६४॥  
 चत्वर वङ्गणे स्थण्डिले क्ली ना चतुष्पथ ।  
 स्त्री तु स्याद्वतामेदे रथ्यायामपि चत्वरी ॥२ ६५॥  
 चत्वालो हमकुण्डे च पुसि दर्भेऽपि दृश्यते ।  
 च दना चदनी च स्त्री नदीभदे प्रयुज्यते ॥२ ६६॥  
 चन्दनोऽस्त्री मलयजे भद्रकाल्याम्पुसकम् ।  
 चन्दिर क्ली जले ना तु चद्रे हस्तिनि तु द्वयो ॥२ ६ ॥  
 चन्दिल पुसि वास्तूकशाके स्यान्नापिते भगे ।  
 चद्रो वारिणि कर्पूरे शशाङ्क बर्हिमेचके ॥२ ६८॥  
 कम्पिलवृक्षेऽपि पुमा सुन्दरे तु त्रिषु स्मृत ।  
 क्ली त्वारण्यकसाम्नि स्यात्त्रि त्वाह्लादक इष्यते ॥२ ६९॥  
 कुमुदे रजतेऽपि स्यात्कनके तु नृशण्डयो ।  
 अर्ध्याया तु स्त्रिया च द्रा नतु स्त्री सूर्यरश्मिषु ॥२ ७ ॥  
 शतत्रय सहस्रे ये हिमोत्सर्गाय कीर्चिता ।  
 चद्रको बर्हिपश्चाज्जुतैलप्रसरे पि ना ॥२ १॥  
 चद्रका तस्तु पुसि स्यान्मणिभेदे च कैतवे ।  
 चद्रकी ना मयूरे स्यादथ याघ्र द्वयोर्भवेत् ॥२ ७२॥

चद्रभागस्तु ना शैला तरे काश्मीरसस्थिते ।  
 स्त्रिया तु देवताभेदे चद्रभागा ग्रहीर्चिता ॥ ७३॥  
 चद्रभागा चद्रभागी नदीभद द्वय मतम् ।  
 च द्रहास खङ्गमात्र विशेषाद्रावणस्य च ॥ ८॥  
 चद्रहासोऽध्वच द्राऽग्रे खङ्गमात्रेऽपि कीर्तित ।  
 चद्रिका चद्रभागाख्यनद्याञ्च द्रातपेऽपि च ॥ ७५॥  
 चद्रिप्रिय इत्येष चकोरारये खगे द्वयो ।  
 चद्रोदय स्यादु लोच शशाङ्कस्योदयेऽपि च ॥२ ६॥  
 चपलश्चञ्चले शीघ्रे द्वावनीतोज्ज्वलस्थिते ।  
 अतले चैव चारे च वायव्यत्पारदे तु ना ॥ ७॥  
 तुरुष्कारये च निर्यासे द्व तु वानरमत्स्ययो ।  
 चपला करिपिप्पयां पिप्पल्यामपि विद्युति ॥२ ८॥  
 पुश्चयाच सुरायाश्च तथा लक्ष्म्यामपी यते ।  
 चप्पटस्तु चपेट च पपरं च पुमान्मत ॥ ७९॥  
 च पट स्फारविपुले वायव्यत्परिकीर्तितम् ।  
 चमक यजुरध्यायभेदे हीबेरकेऽपि च ॥ ८॥  
 चमर चामरे स्त्री तु मञ्जया द्वे मृगातरे ।  
 चमसो यज्ञपात्र चाऽस्त्रीकर्णावयवातरे ॥२ ८१॥  
 मेघे तु चमस पुंसि चमसी तु स्त्रियाभियम् ।  
 मुद्रादीनां कृते पिष्टे यज्ञने पारकीर्तिता ॥२ ८२॥  
 चमू सेनाविशेषे च सेनामात्रेऽपि च स्त्रियाम् ।  
 चम्पस्तु तरुभेदे ना चम्पा स्त्री नगरीभिदि ॥२ ८३॥  
 चय समूहे प्राकारमूलबधे समाहृतौ ।  
 चरोऽक्षयतभेदे च भौमे वारे च पुस्त्यधम् ॥ ८४॥  
 वाच्यवत्तु स्यसे चापि चलेऽथ युवतौ चरी ।  
 चरित क्लीबमाचारे गते वृत्ते च भक्षणे ॥२ ८५॥  
 गते तु मक्षिते चैव चरितो वाच्यवन्मत ।  
 चरु स्थाल्या हव्यपाके तथा मेघे पुमान्मत ॥२ ८६॥

चचरी चभटिरितिप्रसिद्धे हास्यवाक्यके ।  
 उक्ता कापटिकानाञ्च गीतभेदे स्त्रियामियम् ॥२ ८७॥  
 चचरीको महाकाले केशविद्यासशाकयो ।  
 चर्चा मार्जारकर्ण्या स्त्री माष्टौ चर्चिक्यचिन्तयो ॥२ ८८॥  
 पुश्चया तिलके गौर्याश्चर्चो वेदविदि त्रिषु ।  
 चर्मकार पादुकृतिमत स्त्रीपुसयोरयम् ॥२ ८९॥  
 स्त्री तु चर्मकारीति मता चर्मकषौषधौ ।  
 चर्मण्वती स्त्री कदली द्रुमेऽपि सरिद तरे ॥२ ९०॥  
 चर्म क्लीब वचि तथा फलकारयेऽस्त्रवारणे ।  
 चर्मी भूजद्रुमे पुसि तथा भृङ्गरिटावपि ॥२ ९१॥  
 अथो फलकपाणौ च चमवत्यपि वाचवत् ।  
 चवणश्चर्वणाऽऽस्वादे चवणा नीलमक्षिका ॥२ ९२॥  
 चवणिर्नाऽनले स्त्री तु यवसायेतरे धियाम् ।  
 चलश्चलाचले त्रि स्त्री पुश्चलीविद्युतो श्रियाम् ॥२ ९३॥  
 अथ कम्पे तुरुष्कारयनिर्यासे चानिले पुमान् ।  
 चलनम्भ्रमणे कम्पे भूषणे वस्त्रघघर ॥२ ९४॥  
 पादे तु चलन पुसि पुश्चल्या चलना स्त्रियाम् ।  
 चलनी वस्त्रघघर्या वारिभेदेऽपि च क्वचित् ॥२ ९५॥  
 च या स्त्रिया वचायां स्याच्चविके च यमि यते ।  
 चषकोऽस्त्री सुरापात्रे पाने मद्या तरेऽपि च ॥२ ९६॥  
 चाक्रिको घाण्टिके चापि तलिकेऽपि द्वयोमत ।  
 चाटो ना चटने चार्थोपजीविभिदि च स्मृत ॥२ ९७॥  
 चौरे वर्णे कृष्णहरिसिते च त्रि तु तद्वति ।  
 चाटु पशुपिचण्डे ना प्रियवाक्ये तु ना च नप् ॥२ ९८॥  
 नृपादिस्तुतिवाक्ये तु चाटु स्यात्स्त्री नपुसकम् ।  
 चाटुकारस्तु ना द्वारभेदे हेमगुडै कृते ॥२ ९९॥  
 यष्टिमात्रेऽपि च त्रिस्तु विज्ञेयोऽय प्रियवदे ।  
 चातुर शकटे चक्रगण्डौ दाक्ष्ये तु चातुरी ॥२१ ॥

चाटुकारिनियन्त्रोस्तु दृष्टेरपि च गोचरे ।  
 तथा चतुरसम्बन्धियाशुकारिणि च त्रिषु ॥ १ १॥  
 अथ चातुरकश्चक्रगण्डौ पुस्यभिधेयवत् ।  
 गोचरे लोचनस्यापि चाटुकारे नियतरि ॥२१ ॥  
 चाद्रभागस्तु ना शैलविशेषमिदि शीतगो ।  
 चाद्रभागा चाद्रभागी नदीभदे द्वय मतम् ॥ १ ३॥  
 चद्रभागस्य सम्बन्धयेत स्यादभिधेयवत् ।  
 चाद्री स्त्री पूर्णिमाया स्याच्चद्रसम्बन्धिनि त्रिषु ॥ १ ४॥  
 चामरतु भवेक्लीब हीबरे च प्रकीर्णके ।  
 अथो चमरसम्बन्धियथवच्चामरम्मतम् ॥२१ ५॥  
 पुमाश्चामरपुष्प स्यापूगकाशाम्रकेतके ।  
 चामीकरन्तु कनके चामरेऽपि नपुसकम् ॥२१ ६॥  
 चाम्पेयो हेम्नि किञ्चके तथा चम्पकपादपे ।  
 नागकेशरवृक्षे च ना क्ली तु प्रसवेऽनयो ॥२१ ॥  
 चार प्रियालवृक्षे ना बधे चैव स्पशे गतौ ।  
 चारतु स्यात्प्रियालस्य प्रसवे चाङ्गणेऽपि नप् ॥२१ ८॥  
 चारक पालकेऽश्वादे स्यासचालकबधयो ।  
 चारण चारणाद्यर्थे न ना चारयतद्वयम् ॥२१ ९॥  
 देवजात्यतरे तु द्वे चारणोऽपि कुशीलवे ।  
 चारि पशुमुखयाधौ लक्षणीयेऽपि च स्त्रियाम् ॥२११ ॥  
 चारी तु स्त्री नाट्यनाद्यागतावन्नस्य सेवने ।  
 चारुवृहस्पतौ पुसि शोभने त्वभिधेयवत् ॥२१११॥  
 चित्राखुपर्णीमोडुम्बा सुभद्राज्वतिकासु तु ।  
 मायायां सवनक्षत्रनदीभेदेषु च स्त्रियाम् ॥२११२॥  
 चारुनाल रक्तपत्रे योगे त्वर्थवदिष्यत ।  
 चालनी चालन च स्त्री पुसोस्तिउनि स्मृतम् ॥२११३॥  
 अथ चालयतेरर्थे चालन चालना नना ।  
 चिह्नर पादपे केशे पुसि स्यापादपान्तरे ॥२११४॥

द्वयोस्तु गृहवध्रा स्याद्विहगे च सरीसृपे ।  
 चञ्चले तु त्रिषु ज्ञेय युवतीनां च लोचन ॥२११५॥  
 ईषन्मिलिते च क्ली चिकुर परिकीर्तितम् ।  
 चिक्कण कथितो वाये मसृण तु त्रिषु स्मृतम् ॥२११६॥  
 चित्तिस्त्रयामुच्यते ज्ञाने ज्ञातरि वेष भयवत् ।  
 चित छन्न त्रिषु चिता स्त्रिया सा चितिचित्यया ॥२११॥  
 चियाया स्त्री चिता क्ली तु चये त्रिश्रितिकर्मणि ।  
 चितिस्तु स्त्री समूहे स्याच्चिताया चयनेऽपि च ॥२११८॥  
 ज्ञाने च चेततौ त्वेष घातौ पुंलिङ्ग इष्यते ।  
 चित्तन्नपुसक बुद्धौ हृदयेऽपि प्रकीर्तितम् ॥२११९॥  
 चिय मृतकचैत्ये स्याच्चित्या मृतचितौ स्त्रियाम् ।  
 चित्र नपुसक पुण्ड्रे स्या तलेरयेष्यथ त्रिषु ॥२१२॥  
 आश्चर्ये कबुराभिरयवणयुक्ते यथो पुमान् ।  
 देवतानुक्रमे प्रोक्त आखुराजे चिरतने ॥२१२१॥  
 कबुरारयगुणेऽथ स्त्री चित्रा हेमतरा त्रिषु ।  
 पशुकामेष्टिभेदे यग्रोच्या कृ णात्रवृथपि ॥२१२२॥  
 गोदुम्बाख्यलताजातौ सुभद्राधुनिभेदयो ।  
 वेदशालिमुखे चापि नक्षत्रे च द्रदैवते ॥२१२३॥  
 तद्युक्ते कालमात्रे च तकालोपन्नयोषिति ।  
 द्वयोस्तु चित्र पाठीननाम्न मत्स्यातरे मत्त ॥२१२४॥  
 चित्रकस्तु पुमावह्लिसङ्गायाम्मषजौषधी ।  
 तमूले च तथैरण्डे द्वे तु राजिलभोगिनाम् ॥२१२५॥  
 त्रयोदशाना भेदानामेकसि व्याघ्र एव च ।  
 अथ क्लीव चित्रक नत्तिलके सम्प्रपुज्यते ॥२१२६॥  
 चित्रगुप्तस्तु पुंसि स्याद्यमे तस्य च लेखके ।  
 चित्रपक्ष पक्षिभेदे द्वे कपिञ्जलसङ्गके ॥२१२७॥  
 चित्रपर्णी पृश्निपर्णीलतायां त्रि तु यौगिके ।  
 चित्रभानु पुमान्स्वर्ये पावकेऽपि प्रकीर्तित ॥२१८॥

अथ चित्ररथ सूर्ये चद्रे गधवभिद्यपि ।  
 चित्रलः कालिङ्गवया छाग्या स्त्री चित्रला मता ॥२१२९॥  
 चित्राङ्गो द्वे याघ्रभदे पिण्णरकसमाह्वये ।  
 अथ चित्रशरीरे च चित्राङ्गो वाच्यवन्मत ॥२१३॥  
 चिपिट पृथुके पुसि त्रि तु पिच्छतविस्तृत ।  
 चिरजीवी द्वयो काके पुमारतु ब्रह्माण स्मृत ॥२१३१॥  
 चिरण्टी त्ववम तव्या सा द्वितीयवयास्त्रयाम् ।  
 सुवासिनीति प्राथते स्त्रीविशेषऽपि कोरिद ॥ १३ ॥  
 चिरमेही गदभ द्वे यौगिके त्वथवन्मत ।  
 ग्रीवामदेऽतसीविद्युखद्योते चिलमीलिका ॥ १३३॥  
 मत्स्यभेदे चिलिचिमो द्वयोहमवते तु ना ।  
 वृक्षभेद च तस्यैव प्रसवे क्लीबमिष्यते ॥ १३४॥  
 चिल्ल किलनेऽक्षिण ना त्रिस्तु किलन्नाक्षे द्वे खगातरे ।  
 आतापिसङ्ग चिली तु भ्रुवि शाके च मारिप ॥ १३५॥  
 चिह्नन्नपुसक प्रोक्तम्पताकायां च लक्ष्मणि ।  
 चीबो ना पीतमुद्रे च ततावप्यशुरूतरे ॥२१३६॥  
 काककङ्गौ च मदनद्रुमे चोदी यनीवृत्ति ।  
 भूमिनि तदेशराजेषु तु द्वयोर्मृगयोराप ॥ १३७॥  
 व्यवस्थया तु मृगयोर्लक्षण चवमुच्यते ।  
 ताम्रवर्णो मृगो य स हरिण स्यात्स एव च ॥ १३८॥  
 सितक्रोड स चान स्यादित्येक प्रोक्तलक्षण ।  
 अथ कपोतवर्णा यस्त्रिशदङ्गुलमानक ॥२१३९॥  
 इत्युक्त क्लो तु मदनफले चीनमयस्यपि ।  
 चीर क्ली छिन्नवस्त्रे च रेखालिखनभेदयो ॥२१४॥  
 गोस्तने वल्कले चाऽथ चीरी शिलारयकीटके ।  
 चीर्णपर्णस्तु निम्बेऽपि खजूरद्रौ तथा पुमान् ॥ १४१॥  
 चुक्रोऽम्लवेतसे बीजपूरे चाऽऽम्लरसे पुमान् ।  
 विमन्त्रणे गुञ्जिकायां सुन्दरे तु द्वयोर्मत ॥२१४२॥

चुक्रतु यच्छुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्जिके ।  
 त्रिरात्र धायराशिस्थ भवेमस्वादि तत्स्मृतम् ॥२१४३॥  
 स्त्री चुक्राथ चाङ्गेर्या चुक्री अम्लरसाविते ।  
 चुम्बकञ्चुम्बनपरे धूर्त्ताज्यस्कातयोरपि ॥२१४४॥  
 बहुग्र थैकदेशज्ञ घटस्यार्धवलम्बने ।  
 चुम्रस्तु स्यात्पुमाश्वाशे नाशवयमिधेयवत् ॥२१४५॥  
 चुलुकी शिशुमारे स्याकुण्डीभदे कुलान्तरे ।  
 चुलुको भाण्डभेदे ना द्वीपारये व्याघ्रके द्वयो ॥२१४६॥  
 नृस्त्रियोस्तु द्रवाधारप्रसृते परिकीर्त्तित ।  
 चुलुम्यो गमने प्रोक्तश्चुलुम्पा छागयोषिति ॥२१४ ॥  
 चुल किलभाक्षजतौ च किल ने चाक्षणि वा यवत् ।  
 चुली चितायामुद्धानेऽपि स्त्रियाम्परिकीर्त्तिता ॥२१४८॥  
 चूचुदयो किरात्याञ्च शम्बरादपि पु कसात् ।  
 वैदेहाद्यापि सम्भूत सकरस्तत्र कीर्त्तित ॥२१४९॥  
 चूडा शिखावलम्यो स्त्री मूर्ध्नि बाहुविभूषणे ।  
 चूडामणि स्त्री गुञ्जाया पुस्त्रियोस्तु शिरोमणौ ॥२१५ ॥  
 चूडारभा तूष्ण्याया स्त्री चूडावति पुनस्त्रिषु ।  
 चूतक कूपके पुसि तथाग्रे परिकीर्त्तित ॥२१५१॥  
 चूणमस्त्री ग्रासयोगे धूलौ क्षागत्रेऽप्यथ ।  
 कपदके तु चूर्णी स्त्री चूर्णी दग्धेऽभिधेयवत् ॥२१५२॥  
 चूर्णिश्चूणयतौ ना स्त्री ग्रथभेदकपदयो ।  
 चूलिस्तु पिष्टकेऽपि स्याच्चापस्याप्यटतौ स्त्रियाम् ॥२१५३॥  
 चूलिकस्तु तिले ना स्याचूलिकी कुक्कुट द्वयो ।  
 चूलिका तु स्त्रिया जातिश्छदोभेदे गजस्य च ॥२१५४॥  
 कर्णमूले तथा नाटकाङ्गऽपि परिकीर्त्तिता ।  
 चूषा गजवरत्राया स्त्री चूष चूषणे न ना ॥२१५५॥  
 चेत् कुसितेऽथ साकये स्तुतौ पक्षात्रेऽन्ययम् ।  
 चेतना सविदि स्त्री स्याचतन प्राणिनि त्रिषु ॥२१५६॥



चलोऽधमे भगवस्याच्चल वस्त्र नपुसकम् ।  
 चष्टितु गता क्लीब चष्टाया च तथष्यते ॥ १५७ ॥  
 चैत्य चिताञ्जे बुद्धाण्डे याज्ञिकायाधिवासने ।  
 देवालये च क्लीब स्यादस्त्री तूहशपादये ॥ २११८ ॥  
 चैत्र पुसि वसतस्य प्रथमे मास्यथ स्त्रियाम् ।  
 चैत्र मृते देवकुले ना भूभृमासमदयो ॥ २१५९ ॥  
 तत्स्थाया पौणमास्या स्याचैत्री भक्ता तु चित्रया ।  
 नक्षत्रेण युते कालभेदे चित्राह्वये पुन ॥ २१६ ॥  
 काले जाते स यदि स्यादस्त्र्यथश्च ततश्च स ।  
 पारिशेष्याद्यथायाग्य विज्ञेयो नपि पुसि वा ॥ १६१ ॥  
 क्लीब चैत्ररथ यक्षराजोग्राने प्रकीर्तितम् ।  
 अहीनक्रतुभेदे तु द्विरात्रे ममथ च ना ॥ १६२ ॥  
 चैद्याश्चेदिषु पुभूमि द्वे तु चेदीशपुत्रयो ।  
 चोक्षो गीतातरे नाऽथ त्रिदक्षशुचिचारुषु ॥ २१६३ ॥  
 चोचतरुवचि तथा भृङ्गारये गधवस्तुनि ।  
 चोड प्रावरणे पुसि देशभेदे नृभूमिनि ॥ २१६४ ॥  
 चोदना वेदवाक्ये स्त्री ककव्या चोदनी मता ।  
 प्रेषणे तु विरोधोक्तावपि स्याचोदना नना ॥ २१६ ॥  
 चोद्य स्यादद्भुत प्रश्ने चोदनीये तु बायवत् ।  
 आश्चर्यविषये चैव प्रश्नस्य विषयेऽपि च ॥ २१६६ ॥  
 चोलस्तु पुसि कूर्पासे करमदद्भुमेऽप्यथ ।  
 तत्फले क्ली दाक्षिणायनीषुद्भेदे तु भूमि ना ॥ १६७ ॥  
 तद्राजे तु पुमानस्य सन्ताने तु द्वयोरयम् ।  
 गृहच्छदिषु वस्त्री स्याच्चोलो जानपदेश्यम ॥ २१६८ ॥  
 चोलकी तु त्रिषु ज्ञेयश्चोलकेन समविते ।  
 पुर्मास्तु नागरङ्ग च करीरे किष्कुपर्वणि ॥ २१६९ ॥  
 चौरिको ना पुराऽप्यक्षे द्यतकाते तु स द्वयो ।  
 चौरिका तु स्त्रियामेव स्तेये सम्परिकीर्तिता ॥ २१७ ॥

चोलन्तु चूडाकरणे त्रि तु स्याचोलयोगिनि ।  
 च्यवनो मुनिभद स्याच्यवन प्रपुतौ मतम् ॥२१ १॥  
 च्युतादान कदुकादानदण्डेऽपि च्युतग्रहे ।  
 च्युति स्त्री च्यवने योनौ वायौ च च्योततौ तु ना ॥२१ २॥  
 यूप पुमान् रवौ वाते युद्धेऽपि च पुमामत ॥२१ २ ॥

## छ

छो निर्मलेऽन्यवच्छा तु स्त्रिया छादन इष्यते ॥२१ ३॥  
 छगण पशुविघ्नाया नपुसकमुदीरितम् ।  
 छगनुस्तु पुमानुक्तो जतौ वैश्वानरेऽपि च ॥२१ ४॥  
 छगल नीलवस्त्र क्ली छगली वृद्धदारके ।  
 द्वयोस्त्वज स्याच्छगलो मुनिभेदे तु ना मत ॥ १ ५॥  
 छत्रो द्वेऽसावतिच्छत्रे कुस्तुम्बुरु शिली त्रया ।  
 आतपत्र त्वय छत्र पुनपुसकयोर्मत ॥२१ ६॥  
 छत्रभङ्गस्तु वैधये स्वातच्यनृपनाशयो ।  
 छत्राक स्यादाहच्छत्र रास्ना छत्राक्युदीरिता ॥२१ ७॥  
 छवरो ना निकुञ्जेऽथ क्लीब निष्कुल्यमादिरे ।  
 शय्योत्तरच्छदे चाऽथ कुसके भसक त्रिषु ॥२१ ८॥  
 छद स्यापक्षिपक्षेऽपि वृक्षपत्रेऽपवारणे ।  
 ग्रथिपर्णे तमालेऽपि पुमानेष प्रकीर्तित ॥२१ ९॥  
 छदन तरुपत्रेऽपि पिधाने पक्षिपक्षके ।  
 छदिस्तु पटले गहे सात क्लीब प्रकीर्तितम् ॥२१ १० ॥  
 छन्न (न) प्राक्त कैतवे च सन्नयपि नपुसकम् ।  
 छन्दो वशेऽप्यभिप्राये वाछायामपि पुस्ययम् ॥२१ ११॥  
 छन्द श्रुतीच्छापद्येषु सामगानां विशेषत ।  
 अनूहसामग्रये च स्वैराचारे नपुसकम् ॥२१ १२॥  
 छन्न तु रहसि क्लीब छादिते वाच्यलिङ्गकम् ।  
 छदनो मदनद्रौ ना निम्बवृक्षेऽप्यलम्बुषे ॥ १८३॥

शुनामपि ज्वरेऽथ स्याच्छदनी त्रपुसे स्त्रियाम् ।  
 छदन तु छदना च ननोद्घातौ पदद्वयम् ॥२१८४॥  
 छल स्यात्स्खलिते चेत् छन्न यपि नपुसकम् ।  
 छल्ली वीरुधि स ताने वल्कले कुसुमा तरे ॥२१८५॥  
 छविश्रमणि शाभाया दीप्ता यत्रद्विजन्मनाम् ।  
 वेधामास्तरण तद्वा यत्रप्रतिकृतौ स्त्रियाम् ॥ १८६॥  
 छागा ना करुणाभरणपादये छगले द्वयो ।  
 चागणो ना करीषाग्नौ त्रि तु छगणयोगिनि ॥२१८७॥  
 छात्र शिष्ये पुमाश्छात्र मधुभदे नपुसकम् ।  
 छादस श्रोत्रिये पुसि छ द सम्बन्धिनि त्रिषु ॥ १८८॥  
 छाया प्रोक्ताऽऽतपाभावे प्रतिबिम्बाकयोपितो ।  
 पालनात्कोचयोर्दीप्तिस्त्रेभागेहपङ्क्तिषु ॥२१८९॥  
 छायाकरश्छत्रधारे योगार्थे त्वथवामत ।  
 छिगुरस्तु द्वयो गृहवभ्रौ च कीर्त्तित ॥ १९०॥  
 छिदुक्ता छेदने स्त्रीत्वे छत्तरि वभिधेयवत् ।  
 छित्तर स्याच्छरे पुसि शठ तु त्रिषु कीर्त्तित ॥ १९१॥  
 छिदिरस्त्र्यायुधे ना तु रज्ज्वग्न्योर्मूषिके द्वयो ।  
 छिदुरश्छेदके धूर्त्ते भङ्गुरे वैरिणि त्रिषु ॥ १९२॥  
 छिद्र त्रिच्छिद्रिणि क्ली तु रत्रे दोषे तथाऽऽगसि ।  
 छिन्ना गुल्फ्या वृक्ष्ये तु त्रि क्ली दधनि नि शरे ॥२१९३॥  
 छुप क्षुपे स्पशने च पुँल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 छुरित सोत्प्रासहासे त्रि तु छिन्ने प्रयुज्यते ॥२१९४॥  
 छेको गृहाश्रितमृगपक्षिणोस्त्रि तु नागरे ।  
 छेदन त्रश्चने क्लीब कनकस्य फलेऽपि च ॥२१९५॥  
 साधने तु त्रिषु छिन्ने रथ-छेदयते कृतौ ।  
 छेदन छेदना चेति क्लीबेऽपि स्यात्स्त्रियां तथा ॥२१९६॥

१ छिदिरस्तु पुमानग्नौ छत्रे क्ली मूषिके द्वयो ।  
 अस्त्री त्र्यायुधसामान्ये वज्रश्च द प्रयोगवान् ॥  
 छेदनं छेदना चेति क्लीबं स्त्रियो सम्प्रयुज्यते ।

## ज

जो ना मृत्युञ्जये तात जमयपि जनादने ।  
जवे भोगे विषे दीप्तौ पिशाच देवरे स्त्रियाम् ॥२१९॥  
अपि मध्यगुरौ जा तु जातो त्रिस्तूत्रस्थित ।  
जाते जतरि भुक्त च रहस्त्रिनि तथा मत ॥ १९८॥  
जकुटो मलये पुसि शुनके तु द्वयोर्मत ।  
जगच्च जगती चेति लोके स्त्रीक्लीबयोर्मतम् ॥ १९९॥  
छदसु स्त्री जगयष्टाचत्वारिंशस्वरादिषु ।  
सुरभौ च पृथिव्या च जने वेतद्दूयोभवेत् ॥२००॥  
वायौ तु ना त्रिषु त्वेष त्रसे च स्याच्चराचरे ।  
जगलम्मेदके पिष्टमद्येथ कितमे त्रिषु ॥२०१॥  
जघन स्त्रीकटे पूर्वभागऽपि कटिमात्रके ।  
कस्यापि वस्तुन पश्चाद्भागोऽपि च नपुसकम् ॥२०२॥  
पनसे ना स्त्रिया काकोदुम्बर्याञ्जघनेफला ।  
जघन्य गर्भगहनजघनस्थाऽतिमे त्रिषु ॥२०३॥  
नपुसक तु विज्ञेय जघन्य रक्तचदन ।  
जघन्यजो द्वयो शूद्रे त्रि तु नीचेऽनुजेऽपि च ॥२०४॥  
जङ्गल त्वस्त्रिया मासेऽथ स्थाने निजने त्रिषु ।  
जङ्घनन्तु स्त्रिया श्रोणिपुरोभाग कटावपि ॥२०५॥  
जटा स्त्रीकेशसदर्भभद मासारयभषजे ।  
तरो शिफाया च जटी त्वेषा प्लक्षे स्त्रिया तथा ॥ २०६॥  
द्रोणारयपरिमाणस्य चत्वारिंशत्यथ त्रिषु ।  
जटी जटावति भवेत्सहतेऽपि तथा मत ॥२०७॥  
जटायु पुसि सम्पाते कनीयसि च गुग्गुलौ ।  
जटिला तु वचा मासी पिप्पलीषु स्त्रिया मता ॥२०८॥  
हीबेरे जटिल क्लीब जटावति तु वाच्यवत् ।  
जठर कठिने जीर्णे त्रिषु कुक्षौ तु न स्त्रियाम् ॥२०९॥

जडस्तु स्तब्धनिबुद्धा शीतेऽनालोच्यकारिणि ।  
 जडा स्त्रिया शूकशिम्ब्या पङ्कगधिजले जडम् ॥ १ ॥  
 जडस्वेष गुण शीते पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 जतुका जिनपत्राया तथैव स्थावरातरे ॥ २११ ॥  
 चक्रवर्त्तिधारयकेऽथ जतुक हिङ्गुलाक्षयो ।  
 गवथौ स्याजतुफला पुसि तूदुम्बरद्रुमे ॥ १२ ॥  
 जञ्चससधाववसाने क्ली ना धर्ममेधयो ।  
 जन स्याज्जनताया च जनने मनुजेऽपि च ॥ १ ॥  
 राजयवधावप्राज्ञे प्रतिवेशविवाहयो ।  
 महर्लाकापरे लोकेऽथ स्याद्दमनके जनम् ॥ १४ ॥  
 जनको जमदे त्रिर्ना ताते सीतपितर्यपि ।  
 जनक्षयस्तु सग्रामे जनस्यापि क्षये पुमान् ॥ १५ ॥  
 जननी करुणामात्रोर्जनन वशजमनो ।  
 भवेज्जनपदो जानपदोऽपि जनदेशयो ॥ १६ ॥  
 जनयित्री जनयिता पित्रोर्द्वे जमदे त्रिषु ।  
 जनिर्ना जायतौ स्त्री तु पत्न्या जमवरस्त्रियो ॥ २१७ ॥  
 जनित्र सामभदेऽथ जानत्री मातरि ।  
 जनित्व तु कुले द्यावापृथिव्योरोदसोरपि ॥ १८ ॥  
 जनिमा पुसि पित्रो स्यादुत्पत्तौ तनयेऽपि च ।  
 प्राणिद्यतेऽप्यथ जनी स्नुषातिबलयोरपि ॥ १९ ॥  
 उपत्तौ जतुकृद्वल्ल्या सीमतिन्या च कीर्त्तिता ।  
 जतुनरे पुमाप्राणिमात्रेऽपि परिकीर्त्तित ॥ २० ॥  
 अथ जन्तुरथ क्षुद्रमृगे कोद्रङ्गनामके ।  
 योगे तु तस्य लिङ्गादि तकणीय यथायथम् ॥ २२२१ ॥  
 नमोत्पत्तौ च तोये च नान्त क्लीबमुदीरितम् ।  
 जन्योऽपवादे न स्त्री स्यात्क्ली युद्धजनितययो ॥ २२ ॥  
 हृष्टे चाथोत्पादनीये जनितर्यपि वायवत् ।  
 तथा वरस्य स्निग्धेषु नवोद्वाजातिभृत्ययो ॥ २२ ३ ॥

विगीतेऽपि द्वयोस्त्वेव मातृवाहकक्रीटके ।

ज या मातृवयस्याया जयस्तु जनके पुमान् ॥२२२४॥

जयुर्द्वयोरपत्ये च जतौ चाऽथ पुमानयम् ।

जयुरग्नौ च पितरि प्रादुर्भावे प्रजापतौ ॥२२२५॥

रक्तपुष्पे जपा शब्द उपाशूच्चारणे जप ।

जपापुष्पं कुङ्कुमे स्याज्जपाया कुसुमऽपि च ॥२२२६॥

जग्र स्त्रीपुंसयोर्भेके विग्र च परिकीर्तित ।

जम्बाल शैवले पङ्क न स्त्रियामयमिष्यते ॥२२२७॥

जम्बीरो जम्भलद्रौ च स्तम्बे मरुकाऽभिधे ।

जम्बुर्दुर्मद्रीपभिदो स्त्रिया मरुसरियपि ॥२२२८॥

जम्बुको वरुणे ना त्रिर्नीच द्व तु सुगालके ।

जम्बूजम्बूटवृक्षे स्त्री तफले जम्बु नप्त्रियो ॥२२२९॥

चतुष्पाज्जातभेदे तु जम्बु स्त्रीपुंसियोर्मता ।

जम्बूक फेरवे नीचे पश्चिमाशापतावपि ॥ २३ ॥

जम्बूलस्तु पुमाञ्जम्बूविटपे क्रकचच्छदे ।

जम्भस्तु दष्टापाश्वस्थदते ना भ्रातृपादयो ॥२२३१॥

देत्यभेदे च जम्बीरतरौ क्लीब तु तत्फले ।

विदारणे तु वक्त्रस्य जम्भा स्त्री पारकीर्तिता ॥२२३२॥

जम्भला यक्षभेदे च बुद्धदेवातरेऽपि ना ।

तथा जम्बीरवृक्षेऽपि क्ली तु तत्प्रसवे मतम् ॥ २३३॥

जयस्तु पीतमृद्ग ना नान्दीवृक्षे पुरदरे ।

जयते भारत जित्यां होमभेदे युधिष्ठिरे ॥२२३४॥

जयन विजयऽश्वादिसनाहेऽप्यश्वचर्मणि ।

जयतो जेतरी त्रिर्ना भीमे शक्रसुते शिवे ॥२२३५॥

जयती तिथिभिर्द्वारीतर्कारी द्रुमुतासु च ।

जया तु गौरीतत्सरयो स्त्रिया देयन्तरेष्वपि ॥२२३६॥

अर्धछासनदेवीनामेकस्यां च प्रकीर्तिता ।

जयस्य हेतुभूतायां विद्यायामपि कुत्रचित् ॥२२३७॥

तृतीयाया तथाष्टम्या त्रयादश्यातिथिष्वपि ।  
 शमीद्रुमे हरीतक्यामग्निमथारययादपे ॥ २३८॥  
 वचाया नीरके चापि तर्कार्या च जया मता ।  
 जरठ कर्कशे पाण्डौ कठिनेऽप्यभिधेयवत् ॥ २३९॥  
 जर ता महिषे द्व स्यात्स्थविरे वभिधेयवत् ।  
 जराय्वारण्यके सामभेदे गर्भाशये तु ना ॥ २४०॥  
 जरुथोऽग्नौ शरीरे च मासे सवत्सरऽपि ना ।  
 जजरस्त्वस्त्रिया शक्रध्वजे वाग्वतरे तु ना ॥ २४१॥  
 दण्डिकासंज्ञके चैव शैवले द्वे तु कोकिले ।  
 अथ जीर्णे च भिक्षे च जजर वाच्यवमतम् ॥ ४२॥  
 जजरीक बहुच्छिद्रे जराग्रस्तेऽपि वायवत् ।  
 जर्णे नेन्दौ द्रुमे कर्बे खगे तु द्वे त्रि जीणके ॥ २४३॥  
 जण्डश्च द्वे च वृक्षे च पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ।  
 जर्त्त प्रजननारयेऽङ्गे चाभीरे योनिरोष्णि च ॥ २४४॥  
 जर्त्तिलो मुनिभेदे चाप्यरण्यजत्तिले पुमान् ।  
 जल गोकलने नीरे हीबेरेऽथान्यवज्जडे ॥ ४५॥  
 अथो जलकरङ्गोऽजे नारिकेलफलऽपि च ।  
 शङ्खे जललतायाश्च वारिवाहे च कीर्तित ॥ २४६॥  
 जलकूपी कूपगर्त्ते पुष्करिण्यान्तथा स्त्रियाम् ।  
 जलगुल्मो जलावर्त्ते कच्छपे जलचत्वरे ॥ २४७॥  
 जलज कमले ना तु शङ्खे द्व मत्स्यकूर्मयो ।  
 जलतापिक इल्लीसे काके चीम्रपयोश्च ना ॥ ४८॥  
 जलदो मुस्तके मेघे जलदा विद्युति स्त्रियाम् ।  
 जलप्रियो वराहे स्याद्योगार्थे त्वर्थबन्मत ॥ ४९॥  
 जलबिल्व ककटे स्यात्पश्चाङ्गे जलचत्वरे ।  
 जरुण्डो जलावर्त्तपयोरेणौ भुजङ्गमे ॥ २५०॥  
 जलसूचि कङ्कभोटिमत्स्ये शृङ्गाटकेपि च ।  
 शिशुमारे च पुल्लिङ्गो जलौकायां तु योषिति ॥ २५१॥

जलाञ्जल स्वतो वारिनिगमे शैवलेऽपि च ।  
जलाटनो लोहपृष्ठे जलौकाया जलाटनी ॥२५२॥  
जलामा महिषे द्व स्याद्वाच्यवत्तु जडात्मनि ।  
जलाशयमुशीरे क्ली जलाघारे तु पुस्ययम् ॥ ५३॥  
जडाऽभिप्रायक त्वेतदभिधेयवदिष्यते ।  
जलेश पुसि वरुण जम्भले च महोदधौ ॥२२५४॥  
जवा स्यादोद्गुप्पेऽथ जवा वेगे त्रि तद्वति ।  
जवनो वेगयुक्ते त्रिर्गतौ तु जवनम्मतम् ॥२२५५॥  
गतिहेतौ च वेगेऽपि वायौ तु जवन पुमान् ।  
जवी वेगवति त्रि स्याद्द्व तु वातप्रमीमृग ॥ ५६॥  
जसुरिस्त्वरणौ पत्रे ब्रह्मापि पुमान्मत ।  
जहक पुसि कालेऽथ स्यात्क्षुद्रत्यागिनोऽस्त्रिषु ॥ २५७॥  
जह्वस्तु पुसि राजर्षिभेदे विष्णावपि स्मृत ।  
जागृविर्नृपतावग्नावपि पुल्लिङ्ग उच्यते ॥ ५८॥  
जाघनी तु स्त्रिया जङ्गाया त्रिर्जघनयोगिनि ।  
जाङ्गल क्लीबमगुरौ त्रि तु जङ्गलयोगिनि ॥२५९॥  
द्वयो कपिञ्जले स्त्री तु शूकाशम्ब्या हि जाङ्गली ।  
जाङ्गली विषविद्याया जाङ्गल जालिनीफले ॥ ६॥  
जात कदम्बके न स्त्री त्रिषूत्पन्ने जनौ तु नप् ।  
जातरूप सुवर्णे च रू ये चापि नपुसकम् ॥ २६१॥  
जाति समूहे मालया सामा ये गोत्रजमनो ।  
अश्मन्तिकामलक्योश्च तथा जातीफले स्त्रियाम् ॥ ६२॥  
ब्राह्मणादिषु वर्णेषु वेदार्थे सबजतुषु ।  
स्वभाव्ये प्रमये छन्दोभेदेऽप्यार्यादिके वपि ॥ २६३॥  
कदाचिदर्थे जातु स्यादयत्र गहणेपि च ।  
जात्यो मुरचे कुलीने च सुन्दरेऽप्यभिधेयवत् ॥ ६४॥  
जातु स्यादस्त्रियामुरुजङ्गमसधौ तथैव च ।  
द्वात्रिंशदङ्गुले मावभेदे जातु प्रकीर्तित ॥ २६५॥



जापक त्रिजपकृति क्ली तु कालयके स्मृतम् ।  
 जाबाला द्वे अजाजीवे जबालापत्यके त्रिषु ॥ ६६॥  
 जामाता दुहितु पत्यौ तथा श्वेततिले धवे ।  
 तथैव सूर्यावर्त्तेऽपि पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ६ ॥  
 जामि कुलस्त्रिया स्त्री स्यात्तणे स्वसरि चाङ्गुलो ।  
 नीषुद्भेदे जले वेतज्जामि क्लीबमुदाहृतम् ॥ ६८॥  
 आलस्ये चतसोभ्यासात्समानगुणवस्तुन ।  
 जाम्बवानृक्षराजेऽस्य सुताया जाम्बवत्यपि ॥ ६९॥  
 जायानुजीवी पुंसि स्यान्नटे च बकपक्षिणि ।  
 जायु ऽपचे भेषजेऽपि पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ॥  
 जार पुमानुपपत्ता भास्करे च प्रयुज्यते ।  
 अविवाहासु कथासु या स्यात्कथा प्रसूतिजा ॥ १॥  
 कथा तस्या स्त्रिया जारी पावत्यामपि चण्यते ।  
 ओषधीभिदि जार तु क्ली रक्तकुमुदे मतम् ॥ ॥  
 जारद्रव तु स्त्रीयोगियानमागस्य दक्षिणा ।  
 या वीथिस्तत्र मागस्य पुनस्तस्यातरिक्षगे ॥ २॥  
 स्थाने जारद्रव क्लीब त्रिजरद्रवयागिनि ।  
 जाल गवाक्षे दत्ते क्ली पुष्पक्षारकटुन्दयो ॥ २७४॥  
 आनाये कपट चापि भारतादक्षिण क्वचित् ।  
 वर्षात्स्यादन्तरे द्वीपे विप्राचैदेहजे पुन ॥ ५॥  
 द्वयार्थ पटोल्या स्त्री जाली नीपद्रुमे तु ना ।  
 जालक क्षारके दम्भे कलाया नाययोरपि ॥ ६॥  
 गवाक्षभदेऽथ तिल नामौ च कफले न ना ।  
 जालिका त्वधवाया च वदना वृतिवाससि ॥ २७७॥  
 गिरिसारजलौकायोमयकङ्कटके स्त्रियाम् ।  
 द्वे तु कीट मकटारये जालक परिकीर्त्तित ॥ २२ ८॥  
 जालपादो द्वयोर्हसे राजहसेऽम्बुकुक्कुटे ।  
 कुक्कुटेऽपि त्रिषु त्वेष जालाकारपदे मत ॥ २२७९॥

जालिको वाच्यवद्ग्रामे जालिजालोपजीविनो ।  
 धूर्त्ते च द्वे तु लूतारयक्षुद्रज-वतरे मत ॥५८॥  
 जाली जालवति त्रि स्याद्वयोर्दाश प्रकीर्त्तित ।  
 जालिनी चित्रशालाया पिप्पल्या च स्त्रिया मता ॥२८१॥  
 जाल्मो नीचे त्रि निबुद्धौ स्त घेज्जालोच्यकारिणि ।  
 जाहको घोहमार्जारखटवाकारुणिकासु च ॥ २८२॥  
 जाह्व तु भवेजन्तुवाचक तनपुसकम् ।  
 गङ्गाया जाह्वी जह्नुयोगिनि त्रिषु जाह्वम् ॥ ८३॥  
 जिर्वाच्यवत्स्याज्जयिनि पिशाच तु पुमान्मत ।  
 जिगत्नुस्तु पुमाप्राण शीघ्रग वाच्यव मत ॥ २८४॥  
 जिगीषा जतुमिच्छाया यवसायप्रकषयो ।  
 जिघासुह तुमिच्छो त्रिर्ना तु शत्रौ प्रयुज्यते ॥२२८५॥  
 जिङ्गी स्त्रियामिय प्रोक्ता मञ्जिष्ठासङ्गमषजे ।  
 तथा दीघफलायां च काशातक्या प्रयुज्यते ॥२२८६॥  
 जितस्त्रिषु स्त्रीकृते च युद्धभग्नाभिभूतयो ।  
 जये तु जितमि येतन्नपुसकमुदीरितम् ॥ २८ ॥  
 जिति स्त्रियां स्याद्विजये सामभदे तथा मता ।  
 जित्यो हलौ पुमाञ्जित्या विजये स्त्रीत्व इष्यते ॥२२८८॥  
 जित्वति जयशीले त्रि काश्या स्त्री जिवरी मता ।  
 जिनाज्जति च बुद्धे च विष्णौ स्याज्जित्वरे त्रिषु ॥ ८९॥  
 जिप्री द्वे शकुनौ जिप्र पुंसि स्यात्क्रोधकालयो ।  
 जिष्णुरग्यजुनेद्वेषु विष्णौ नात्र तु जित्वरे ॥ २९ ॥  
 जिह्व वगरवृक्षे च तथा पापे नपुसकम् ।  
 जिह्व सर्पे द्वयोरेष त्रिलिङ्ग कुटिलेज्जले ॥२२९१॥  
 जिह्वगस्तु द्वयो सर्पे म दगामिनि वाच्यवत् ।  
 जिह्वा तु वाचि ज्वालाया रसने च स्त्रिया मता ॥२२९२॥  
 जिह्वापस्तु द्वयोरुक्तो मार्जारं च तथा शुनि ।  
 जिह्वालो द्व सारमेये तथैव पृषदशके ॥ २९३॥

जीमूतोऽद्रा भृतिकरे देवताडे पयोधरे ।  
 जीरोऽने पावक खङ्गजाया त्वेष नृशण्डयो ॥ ९४ ॥  
 जीरो द्रुवाभवेदश्वे जीर क्षिप्रेऽभिधेयवत् ।  
 जीविर्द्रये पुमाष्टङ्क गुमे च शकटोऽप्यथ ॥ ९५ ॥  
 द्वयो पशो च मटो च चटके च प्रयुज्यते ॥  
 जील तु करपया स्यात्कोश चर्मपुट तौ ॥ ९६ ॥  
 जीवो ना गीष्पता जता क्षेत्रज्ञ वृक्षभिद्यपि ।  
 जीवा माव्या वचाभूम्योर्जीवन्त्या शज्जितेऽपि च ॥ ९ ॥  
 जीव द्विषष्टिस्वरके छ दोमेदे नपुसकम् ।  
 जीवक स्यात्क्षपणके तथवासनपादये ॥ ९८ ॥  
 कूर्मशीर्षे च पुल्लिङ्गस्तथा स्यादहितुण्डिके ।  
 त्रि तु श्रष्ट प्राणितरि वृद्धयाजीविनि सेवके ॥ ९९ ॥  
 कृपणे च स्त्रियां त्वेषा जीव त्यारयलतान्तरे ।  
 आजीवे जीवने चापि जीविका पारकीचिता ॥ ३ ॥  
 अथ च प्राणवत्तेष जीवत् स्यादभिधेयवत् ।  
 जीवथो द्व मयूरे च कूर्मे च परिकीचिता ॥ २३ ॥  
 जीवदस्तु पुमाञ्छत्रो वैद्ये चापि प्रयुज्यते ।  
 मेघवत्तेष जीवस्य छत्तर्यपि च दातरि ॥ २३ ॥  
 जीवन जीविकायश्च प्राणनेऽन्न च वारिणि ।  
 विष्णुशक्त्य तरे तु स्त्री जीवत्यामपि जीवनी ॥ ३ ३ ॥  
 स्याज्जीवना स्त्री मेदायामनाजीवतये कृतौ ।  
 जीवनीया तु जीवतीशाकसङ्गलतातरे ॥ ३ ४ ॥  
 काकाङ्गीसङ्गके च स्त्री जीयितव्याऽम्बुनोस्तु नप् ।  
 जीवत ऋषिभदे ना स तु स्याजीवतादिति ॥ ३ ५ ॥  
 आशिषो विषये चैव जीवितर्यपि वाच्यवत् ।  
 जीवन्ती तु स्त्रियां जीवासङ्गशाकलतान्तरे ॥ २३ ६ ॥  
 योतिष्मतीगुह्योश्च सा शमीवन्दयोरपि ।  
 पुननवौषधौ जीवबोधनी कथिता स्त्रियाम् ॥ ३ ७ ॥

जीवबोधन इत्यस्य योगे लिङ्गादि तर्क्यताम् ।  
 जीबला स्त्री वचाया स्या मुनिमेद तु जीबल ॥२३ ८॥  
 जीवातुरस्त्री जीने च द्रव्येऽने सलिले तथा ।  
 औषधेऽपि विशषण कीर्तितो जीवनौषधे ॥२३ ९॥  
 जीवित प्राणने क्लीब प्राणषु च तथा मतम् ।  
 त्रि तु प्राणिनवयेव जीवेर्ष्यन्तस्य कर्मणि ॥२३१ ॥  
 जीवितेश प्राणनाथ दयिते द्रविणागमे ।  
 जुगुप्सा तु घृणाया च निदाया च स्त्रिया मता ॥२३११॥  
 जुङ्गितस्तु द्रयाहीनवर्णे पूर्वे प्रकीर्तित ।  
 वर्जिते जुङ्गित त्रि स्याद्वजने तु नपुसकम् ॥२३१ ॥  
 जूजवे स्त्री गता राता ह्रस्वादी राक्षसे द्वयो ।  
 जुष्ट तु क्लीबमुच्छिष्ट सोवते त्वभिधेयवत ॥ ३१३॥  
 जुहुराणस्तु ना ब्रह्मावध्यावनडुह्यपि ।  
 अथ द्वयोहये त्रिस्तु कुटिले परिकीर्तित ॥ ३१४॥  
 जुह्व स्त्रिया पुरोडाशे स्तुग्विशेषे च कीर्तिता ।  
 जूस्त्वरगमने प्रोक्ता सामान्यगमने स्त्रियाम् ॥२३५॥  
 जूराकाशसरस्वत्या पिशाच्या जवने स्त्रियाम् ।  
 जूटो ना निकुरम्बे स्यात्केशवि यासभिद्यपि ॥२३१६॥  
 जूण पुमान् यावनाले तथा वज्रे प्रकीर्तित ।  
 जूढे तु भेद्यव-जूर्णे जूर्णा स्त्री बल्बजेष्वियम् ॥२३१ ॥  
 जूर्णि स्त्रिया वरे क्रोधे शरीरे च प्रकीर्तिता ।  
 जूर्णिर्नाग्नौ रवौ वायो ब्रह्माण त्रिस्तु सत्वरे ॥ ३१८॥  
 जृम्भित करण स्त्रीणा जृम्भणे च विचेष्टिते ।  
 उत्फुल्ले तु विष्टूढे च जृम्भित वायवन्मतम् ॥२३१९॥  
 जैत्र क्ली जयने धूते जयशीले तु भेद्यवत् ।  
 जैत्र्या स्फोताख्यव ल्या स्त्री विष्णुकान्तान्यनामनि ॥ ३२ ॥  
 जैवातृको ना परिधे परिखाचद्रयोरपि ।  
 शुके तु द्वे धने त्वेतक्लीबे जैवातृक मतम् ॥२३२१॥

त्रिस्तु स्याद्विषगायु मत्कृषीबलकृशप्रयम ।  
 जो ताल पुसि वर्णे स्थानीललोहितामश्रके ॥ ३ ॥  
 त्रि तद्वयथ जो ताला यात्रनालारयधानके ।  
 जोष प्रीतौ च सवायामपि पुास प्रकीर्तित ॥ ३ ३॥  
 जोष सुख प्रशसाया मौने स्याल्लङ्घनेऽययम् ।  
 जो ज्ञातार त्रिष्वथ नात्मनि चाद्रमसावनौ ॥ २ ४॥  
 ज्ञातिस्ताते सगोत्रे चैक्षाकराजातरे पुमान् ।  
 ज्ञानी स्यात्पुसि दग्धे ज्ञानयुक्तऽयलिङ्गक ॥ २ ५॥  
 -याशब्दस्तु स्त्रिया भूमौ मौया मातरि चोच्यते ।  
 -यानिस्तु हानौ बुद्धौ च जीणत्व च सरिद्रुजो ॥ ३ ६॥  
 यायावृद्धतरे चातिप्रशस्ते पूवज त्रिषु ।  
 -येष्टस्तु पूर्वज वृद्धतमे शस्ततमे त्रिषु ॥ ३ ॥  
 त्रपुद्गीबेरयोस्तु क्ली नीलकारये च लोहके ।  
 द्वयोस्तु हसेऽपि येष्टो ज्येष्ठा स्त्री शम्भुशक्तिषु ॥ ३ ॥  
 नवस्वेकत्र चालक्ष्मीगृहगोधिकयोरपि ।  
 इन्द्रदैवतनक्षत्रेऽपि येष्ठा स्त्रीत्व इष्यते ॥ ३ ५॥  
 यैष्ठ पुमाञ्छुक्रमासे येष्टसम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 यैष्ठी येष्टायुताया च पौणमास्या स्त्रिया मता ॥ ३ ३ ॥  
 योतिरात्मनि सूर्ये च हविर्होमाचिदीप्तिषु ।  
 ग्रहनक्षत्रतारासु नक्षत्रेऽपि विशिषत ॥ ३ २१॥  
 विलोचने धने पुत्रे सामभेदेषु चापि नप ।  
 योतिष्टोमारययाग च तथाग्नौ योतिरस्त्रियाम ॥ ३ ३ ॥  
 -योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चापि पुमा मत ।  
 ज्योतिष्मज्ज्योतिषा युक्त त्रिषु ज्योतिष्मती पुन ॥ २ ३ २ ३॥  
 पिण्डधारयस्थावरे क्षुद्रधाये यस्याह्वयान्तरम् ।  
 गवीथुरिति तत्र स्याज्ज्योतिषो मासि कुत्रचित् ॥ ३ ३ ४॥  
 योति सम्बन्धिनि त्वेतन्त्रिलिङ्ग परिकीर्तितम् ।  
 ज्योत्स्ना च द्रातयेऽपि स्याज्ज्योत्स्नायुक्तनिशि स्त्रियाम ॥ २ ३ ३ ५॥

यौत्स्नी तु स्त्री पटोऽया स्याज्ज्योतिष्मद्रजनावपि ।  
 योत्स्नावति त्वय ज्यौत्स्नस्त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ३३६ ॥  
 वरो व्याधौ हरक्रोधाद्भूताया च महारुजि ।  
 वरम्नस्तु गुह्यच्या स्याच्छाकभदे च वास्तुके ॥ २३३ ॥  
 वलनोज्जनावथ क्लीबे वलन दीपने स्मृतम् ।  
 वलन वलना चेति न ना ज्वलन इष्यते ॥ ३३८ ॥  
 वलित वाज्यवद्गुह्यज्ज्वलेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥ ३३८ ॥

## झ

झा झ टीशे सुरगुरौ दयराजेऽध्वनावपि ॥ २३३९ ॥  
 झटा झटितरि द्वे तु शूद्रामैत्रेयज नरे ।  
 झरा स्त्री झरणे नद्या झरी ना निझरे झर ॥ ३४ ॥  
 झझर स्यात्कलियुगे वाद्यभदे नदातरे ।  
 विशीर्णे तु त्रिलिङ्ग तझझर परिकीर्त्तितम् ॥ ३४१ ॥  
 झला स्यादातपस्योर्मौ दुहितर्यपि च स्त्रियाम् ।  
 झलरी वाद्यभेदे च छत्रान्तालम्बिवाससि ॥ २३४ ॥  
 झलिकोद्वत्तनपटे स्त्रिया द्योत च कीर्त्तिता ।  
 झषो ना विपिने तापेऽथ द्वे मकरमत्स्यया ॥ ३४३ ॥  
 झषा नागबलासङ्गभेषजे स्यात्स्त्रियामियम् ।  
 झाण्टा निकुञ्जे कातारे ऋणादीना च माजने ॥ ३४४ ॥  
 पुमास्थ्यावरभेदेऽपि सघातेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।  
 झिलिका स्त्रीमता झिण्ड्यामातपस्य रुचावपि ॥ २३४५ ॥  
 झिल्ली चीर्यरयकीटे स्यादातपस्य रुचौ स्त्रियाम् ।  
 तथा दग्धौदनेऽपि स्याद्वर्यामुद्वत्तनाशुके ॥ २३४६ ॥

## ञ

ज पुमास्याद्वलीवर्दे शुके वामगतावपि ॥ २३४६ ॥

ट

ट पुमा वामने पादे नि स्यनेऽपि पुमा मत् ॥ ३४ ॥  
 टङ्कौऽस्त्री परशा शलभृङ्गे पापाणदारण ।  
 मुद्रितोन्मानभेद च टङ्कणे यथ नृस्त्रिया ॥ ३४ ॥  
 मृगभेदेऽप्यवस्थान ना तु कश्मीरविश्रुत ॥  
 महीरुहान्तरे नीलकपित्थ क्ली फले तथा ॥ ३४९ ॥  
 टङ्कारा विस्मये पुति प्रसिद्धा शिञ्जिनीधना ।  
 टडूरी लम्बभदे स्या लम्बापटहसज्ञके ॥ ३५ ॥  
 मध्यावादेऽपि च स्त्रीत्वे भेरीनादे तु टडूर ।  
 टागरष्टङ्कणक्षारे ककरारये च वीक्षिते ॥ ३५१ ॥  
 अथ केकरनत्रे त्रिष्टागर स्या छरीरिणि ।  
 टारो लङ्के तुरङ्ग च पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ॥ ३५ ॥  
 डण्डुकाऽपे त्रिलिङ्ग स्या ना तरा शाणकाभिधे ॥ ३५ ॥

ठ

ठा मण्डले च द्रविम्ने श्र य चालोक्काचरे ॥ ३५३ ॥

ड

ड पुमा पाडवाग्ना स्याङ्गा डाक्रिया स्त्रिया मता ।  
 डिङ्गरस्तु भवेत्क्षेप्ये गङ्गरेऽप्यभिधेयवत् ॥ ३५४ ॥  
 डिम्बो भयष्वनावण्डे फुप्फुसे प्लीहि विप्लवे ।  
 डिम्बिका जलबिम्बे स्यान्मोणके काष्ठकस्त्रियाम ॥ ३५५ ॥  
 डिम्भ शिशौ बालिशे च त्रिलिङ्गः परिकीर्तित ॥ ३५५ ॥

ढ

ढो ढक्कायां पुमालुक्त शुनि पुच्छे तथा शुन ॥ ३५६ ॥

## ण

ण पुमान्ब दुदेवे स्याद्भूषणे गुणवर्जिते ।  
पानीयविलयेऽपीति केचिदूचुर्विपश्चित ॥२३५७॥

## त

तश्चौरामृतपुच्छेषु क्रोडे म्लेच्छे च कुत्रचित्  
पुमास्तु तरणे पुण्ये कथित शदवेदिभि ॥२३५८॥  
तक्षकास्त्रस्तक्षितरि ना तु तक्षण्युरगातरे ।  
तक्षा ना वद्धकौ द्वे तु विप्रीकरणज नरे ॥२३५९॥  
आयोगवे च वृश्चिश्चतक्षण तस्य ना पुन ।  
तक्षा दीप रे सूर्य आतपे क्ली तु पुत्रयो ॥ ३६ ॥  
तगर तु नतारये स्याद्बद्धद्रव्यं नपुसकम् ।  
नन्दावर्त्तस्य पुष्पेऽथ तद्गु मे तगर पुमान् ॥ ३६१॥  
तङ्क सम्भावनायाश्च भीतावपि पुमान्मत ।  
तटस्तटी तटश्चति त्रिषु तीरेऽद्रिसानुनि ॥२३६॥  
तथा जलाशयप्राप्ते क्षेत्रे तु क्ली तटम्मत्तम ।  
तटिस्तटतिधातौ ना सूनाया तु स्त्रियाम्मतम ॥२३६३॥  
तडागोऽस्त्री जलाधारविशेष यन्त्रकूटके ।  
तण्डक खञ्जने फने समासप्रायवाचि च ॥२३६४॥  
देवदारुतरुस्क धमायाबहुलकेष्वपि ।  
तण्डुलस्तु नृलिङ्ग स्याद्ब्रीह्यादिफलबीजके ॥२३६५॥  
विडङ्ग च स्त्रिया त्वेषा पिप्पया तण्डुला मता ।  
तण्डुलीय शाकभेदे विडङ्गतस्ताप्ययो ॥ ३६६॥  
तण्डुवीण कीटमात्रे बर्बरे तण्डुलोदके ।  
तण्डूद्रोणिप्लवे चैव तथा दूर्या स्त्रिया मता ॥२३६॥  
तत याम् विस्तृते च वाच्यवत्परिकीर्तितम् ।  
क्लीब बीणादिवाद्येऽथ ततो वायौ पितर्यपि ॥२३६८॥



तत्र स्वरूपं परमात्मनि भूतं रहस्यम् ।  
 विलम्बितारयन्नृत्ये च नपुसकमुदीरितम् ॥ ३ ९॥  
 तथाभ्युपगमे पृष्टप्रतिपादयसमुचय ।  
 सदृशे निर्वयेऽप्येतन्नयय परिकीर्तितम् ॥ ३ ॥  
 तनुवपुषि लग्ने चासृग्धरायामपि स्त्रियाम् ।  
 तन्वी स्त्रिया स्यात्पिप्पया नादीवृक्षे तनुपुमान् ॥ ३ ॥  
 तनुस्तु त्वरलेऽपे च भद्यलिङ्गं प्रकीर्तितम् ।  
 तनुस्तु सात क्लीबं च स्याद्विस्तारशरीरया ॥ ३ ॥  
 तनूनपात्तु पुलिङ्गं आये चाग्ना न कीर्तितम् ।  
 तनूरूहं तु लोम्न स्यात्पतत्रं च नपुसकम् ॥ ३ १॥  
 तनुस्तु द्वित्रे ना यज्ञसंस्थाया चाऽथ स द्वयोः ।  
 एकत्र भेदे भदानाम्मण्डलाह्वयभोगिनाम् ॥ ३ ४॥  
 ग्राहारययादोभेदे च सामभन्ते पुननाप ।  
 सर्वाग्निचित्याया पुच्छे पक्ष्याकारस्य वस्तुन ॥ ३७५॥  
 छुरिकाया च खड्गादि मुष्टौ चाप्यस्त्रिया मतम् ।  
 तनुवाय कुविदेऽपि तथा लूताक्रिमौ द्वयोः ॥ ३ ६॥  
 तन्त्रस्तराष्ट्रव्यापारे तन्तुवायपरिच्छेदे ।  
 शास्त्रौषधान्त्रमुनयेषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणाम् ॥ ३ ७॥  
 एकस्यैवोभयाथत्वे कुटुम्बयापृतावपि ।  
 सेनाया सामसूत्रे च सिद्धान्तेऽन्यकुटुम्बके ॥ ३७ ॥  
 क्रतुकामाभिवादानामृक्सामाना समागमे ।  
 अथ तन्त्री स्त्रियामेव वीणाया गुण इत्यते ॥ ३७९॥  
 तन्त्रकं नववस्त्रे स्याद्गुह्या तन्त्रिका मता ।  
 तपोऽर्केऽपि च वीतसनाम्नि ना पक्षिवधने ॥ ३ ॥  
 तपनोरुष्करतरौ रवौ धर्मे पशावपि ।  
 चद्रे नरकभेदे ना तपनतापकर्मणि ॥ २३८१॥  
 तपनीयं त्रि तप्तये क्लीबं स्वर्णे शालिभिद्यपि ।  
 तपस्तु नपि कृष्णादौ धर्मसन्तापयोरपि ॥ ३८२॥

लग्नाभ्रवमराशौ च शिशिरर्त्ता तथा त्वचि ।  
 लोकभेदेऽप्यथ तपा न स्त्रिया माघमास्ययम् ॥२३८३॥  
 तपसस्तु पुमांश्च द्रे वायवन्महति स्मृत ।  
 तपस्या व्रतचर्याया तपस्य फाल्गुने पुमान् ॥२३८४॥  
 तपस्वी शशिरर्त्तौ च च द्रे च त्रिस्तु तापसे ।  
 शौचेऽथ मास्या कदुरोहिण्या च स्त्री तपस्विनी ॥२३८५॥  
 तपोधनस्तापसे स्याद्गुण्डिर्यान्तु तपोधना ।  
 तप्ता स्याद्भास्करो पुंसि भद्रलिङ्गस्तु तापके ॥२३८६॥  
 तम क्ली नरके शोके पापे ध्वा ते वलत्यपि ।  
 अज्ञाने प्रकृते सत्त्वरजोभिन्न गुण निशि ॥२३८७॥  
 तमास्तु राहावुदित पुनपुसकयोरयम् ।  
 तमसा स्त्री नदीभेदे नारूपाऽध्यवसाययो ॥२३८८॥  
 तमालस्तिलके खडगे तापिच्छे वरुणद्रुमे ।  
 तमालपत्र तापिञ्जे तिलके पत्रकेपि च ॥२३८९॥  
 तमिस्रम धतपसे तमोमात्रक्रधोरना ।  
 तमिस्रा ध्वातराशौ च रात्रिमात्रेऽपि च स्त्रियाम् ॥ ३९ ॥  
 तमोनुत्पुसि च द्राकपावकेषु प्रकीर्त्तित ।  
 तमोनुदस्तमोनुद्वत्पुसि च द्राकवह्निषु ॥२३९१॥  
 तमोऽपह पुमास्त्र्ये च द्र चाग्नौ जिनेऽपि च ।  
 तरोजनौ तरणे पुसि पेटके तु तरी स्त्रियाम् ॥२३९२॥  
 तरङ्गिणी हरिद्राया नद्या सोमिणि तु त्रिषु ।  
 तरणि सूर्यवाघ्योर्ना स्त्री सरिभौरयेष्वियम् ॥२३९३॥  
 पुष्पस्तम्भे कुमार्यारये व्रजस्तम्भे च सोप्ययम् ।  
 गवाम्मुत्थापने काष्ठे पतितानां त्रि तु द्रुते ॥२३९४॥  
 तरण्डो वडिसीस्रबद्धकाष्ठादिके प्लवे ।  
 नौकायामथ न स्त्री स्यात्तित्तिडीडिम्बचिश्चयो ॥२३९५॥

तरत् स्त्रिया प्लवेपि स्यात्कारण्ड च विहङ्गम् ।  
 तरत्र क्ली प्लवे त्रिस्तु घासहारिणि तन्मतम् ॥ ३९६ ॥  
 तरन्तस्तु द्वयोर्भेके गायवत्स्यात्तरी तरि ।  
 तरल त्रिश्चञ्चले न भास्वरे तरलस्तु ना ॥ ३९ ॥  
 हारमध्यगरत्ने च हारे च तरल तु नप ।  
 चर्मकोशेऽथ तरला यवागूसुरयो स्त्रियाम् ॥ २३९ ॥  
 तरवारिः सायके ना स्त्री यष्टधारयायुधान्तरे ।  
 तरो बले च वेग च सान्त क्लीबमुदीरितम् ॥ ३९५ ॥  
 तरस्त्री द्वे याघ्रकप्योस्त्रिशूरबलिरेगिषु ।  
 तरिश्च द समारयात पुंसि वैज्ञानरानले ॥ ४ ॥  
 स्त्री चर्मवृत्तपेडाया नावि चैव तरिर्मता ।  
 तरीष शोभनाकारे भलेऽधि यवसाययो ॥ २४ ॥  
 तरुजस्तु पुमानग्नौ भेद्यलिङ्गस्तु वृक्षजे ।  
 तरुण यूनि भये त्रिनरण्डे कुब्जपुष्पके ॥ २७ ॥  
 तर्क काङ्क्षावितर्कोहहेतुशास्त्रेषु कथ्यते ।  
 तर्कार पादपे तर्के नवनीतेन सयुते ॥ २४ ३ ॥  
 स्यात्सद्योमथिते वैजयन्त्यां तर्कार्युदीरिता ।  
 तर्कु पुमान्स्त्रवृष्टशलाकायाम्प्रकीर्त्तित ॥ ४ ४ ॥  
 अनलाधारपात्रेऽपि तथा शेफस्थपीड्यते ।  
 तर्तरीक वह्निर् न पारणे तु त्रिषु स्मृतम् ॥ ४ ५ ॥  
 तपणन्तु गुडायाम्बलाजसक्तुषु च धने ।  
 तृप्तौ तर्पयतेस्त्वर्थे तर्पण तर्पणा न ना ॥ २४ ६ ॥  
 जलोद्भवे तु शृङ्गारस्तम्भे तर्पण एष ना ।  
 तर्ष पुमापिपासाया लिप्साया च प्रकीर्त्तित ॥ २७ ॥  
 तलश्च पेट तालाख्यद्रुमे शीतगुणे च ना ।  
 त्रि तु तद्वति शण्डे तु तालसङ्गतरो फले ॥ २४ ८ ॥  
 पाताले समदेशे च चतुर्भागे पलस्य च ।  
 पाणिना दक्षिणेनैव वीणातन्त्र्याश्च ताडने ॥ २४ ९ ॥

अध स्वरूपयोस्त्वस्त्री तलमेत प्रकीर्तितम् ।  
 धने स्तरौ कार्यबीजे हस्तघ्ने तु तला तलम् ॥ ४१ ॥  
 तलित विरले स्तोके तुच्छ चाप्यभिधेयवत् ।  
 अट्टालिकायान्तु स्त्रीत्वे तलिन्येषा प्रकीर्तिता ॥ २४११ ॥  
 तलिम कुट्टिमे तपे च द्रहासे वितानके ।  
 तलुन पवने यूनि युवत्या तलुनी स्मृता ॥ २४१२ ॥  
 तप शय्याऽवृद्धारेषु सग्राम नौशिरस्यपि ।  
 तल्ली तरुण्यातल्लस्तु जलाधारान्तरे पुमान् ॥ २४१३ ॥  
 तविषस्त्वणवे स्वर्गे बले ना तविषी भुवि ।  
 वायायां देवकयायामिद्रपुयामपि स्त्रियाम् ॥ २४१४ ॥  
 ताडो ना ताडने ताडी स्त्री तालीपादपे मता ।  
 ताडिस्त्री तरुभेदेऽपि तथैवाभरणातरे ॥ २४१५ ॥  
 ताण्डस्तु ताडने घोषे मुष्टिमेयतृणादिषु ।  
 यवद्रुमे तथैवाऽयम्पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥ २४१६ ॥  
 ताण्डवस्त्वस्त्रिया नृत्त तृणभदे च कीर्तित ।  
 तातस्तु जनके चाऽनुकम्प्येऽपि च पुमामत ॥ २४१ ॥  
 तातगु क्षुद्रताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ।  
 तातलो रुजि पाके च लोहकूटे पुमानथ ॥ ४१८ ॥  
 स्या मनोजवसे तप्ते तातल सोऽभिधेयवत् ।  
 तान तु गीतिधर्मे स्याद्विस्तारे तान इष्यते ॥ ४१९ ॥  
 तान्तस्तु मासे ना श्रातिमति तु त्रिषु कीर्तित ।  
 तापिस्तापयतौ दैत्यभेदे ना स्त्री नदीभिदि ॥ ४२ ॥  
 तापिच्छस्तु तमालद्रौ काकतुण्ड्याञ्च पुस्ययम् ।  
 तापी नद्य तरे ताप पुमा स तापकृद्भयो ॥ २४२१ ॥  
 क्लीब तामरस पद्मे ताम्रकाञ्चनयोरपि ।  
 तामस तमसायुक्त त्रि खले सतमोगुणे ॥ २४२ ॥  
 प्रावृष्णिशि तु दुर्गायां निद्राया निशि तामसी ।  
 ताम्बूल वृक्षपत्रेऽपि नागवलीदलस्य च ॥ २४२३ ॥

शुक्तिचूणस्य पूगस्य वीथ्या पूगफलेऽपि च ।  
 ताम्बूली तु स्त्रियामेषा नागवयाम्प्रकीर्तिता ॥ ४ ४ ॥  
 ताम्रा स्त्री कृष्णलावल्या ताम्र क्ली शुल्बरूपयो ।  
 ना शुल्बवणसदृशो वर्णो तद्वति तु त्रिष ॥ ४ ५ ॥  
 ताम्रचूडो रक्तचूडे त्रिद्वयो कुक्कुटे मत ।  
 ताम्रवृन्त कुलत्थ ना रक्तवृत्ते तु वाय्ववत् ॥ २४ ६ ॥  
 तारस्तु शुद्धयुक्ताया युक्ताशुद्धौ च तारणे ।  
 रदे वानरभेदेऽपि तारा तु स्यान्नरस्त्रियो ॥ ४ ७ ॥  
 नक्षत्रे नेत्रमध्ये च रजते तु नृशण्डयो ।  
 स्त्री बुद्धदेवताभेदे बालिगीष्पतिभार्ययो ॥ २४ ८ ॥  
 त्रि तूच्चशब्दे विशदे क्लीब तु प्रणवेऽम्बुजे ।  
 तारका त्वपुमानक्षितारानक्षत्रयोरथ ॥ २४ ९ ॥  
 कणधारे दत्यभेदे पुसि स्यात्प्रणवे तु नप् ।  
 तरीतृतारयिरोस्तु त्रिर्देवीभिदि तारिका ॥ ४ ३ ॥  
 तारण सौरसक्रात्यवधिके मासि पुस्ययम् ।  
 तारणी त्वस्त्रिया गोष्ठ्या त्रि तु सम्बन्धिनि स्मृत ॥ २४ ३ १ ॥  
 तारणेस्तारणस्याथ चार्थे तारयतेरना ।  
 ताक्ष्यो ना गरुडे विष्णौ विष्णोर्वामनविग्रहे ॥ ४ ३ २ ॥  
 शैलजे च रथे चापि गरुडस्य तथाऽग्रजे ।  
 ताक्ष्यं रसाञ्जने सौवर्चले च क्ली द्वयोर्हथे ॥ २४ ३ ३ ॥  
 तार्ण भारतवर्षस्य द्वीपभेदे नपुसकम् ॥  
 तृणसम्बन्धिनि त्वेतत्तार्ण स्यादभिधेयवत् ॥ २४ ३ ४ ॥  
 ताल कालक्रियामाने चपेटे त्रपुसेत्सरौ ।  
 तृणराजे करास्फालेऽङ्गुष्ठमध्यमयोर्मितौ ॥ २४ ३ ५ ॥  
 इक्षुभेदे च नाऽथ स्त्री ताली दृढदलाह्वये ।  
 तृणद्रुमे तामलकी सौराष्ट्रीमृसलीषु च ॥ २४ ३ ६ ॥  
 प्रतिताल्यामथ क्लीब हरिताले फलेषु च ।  
 अत्रोक्तस्थावराणां स्यात्कांस्यस्याख्यान्तु तत्र ये ॥ २४ ३ ॥

तालक द्वारयत्रे च कर्णभूषणभिद्यपि ।  
 पुमास्तूष्णगुणे त्रिस्तु तद्वत्ययमुदीरित ॥२४३८॥  
 तालपत्री स्त्रिया वाद्यभेदे स्यात्तालसङ्गके ।  
 तथा मूषिकपण्यां न तु ना ताडङ्कभूषणे ॥२४३९॥  
 तालित तूलितपट गुणवादित्रभाण्डयो ।  
 तालीशपत्र भूम्यामलकीतालीशयो स्मृतम् ॥२४४०॥  
 तावत्तत्परिमाणे त्रिरयय त्ववधारण ।  
 सभ्रमे च परिच्छेदे तथा कास्त्र्याधिकारयो ॥२४४१॥  
 ताविष खगवारिध्योस्ताविषी भूसरिद्भिदो ।  
 वात्याया देवकयाया क्ली तु तेजास ताविषम् ॥२४४२॥  
 तिक्तस्तु पर्षटे पुसि पटोले गुग्गुलावपि ।  
 विरसारयरसे षण्णा रसाना कटुकेऽपि च ॥२४४३॥  
 ग धे च सुरभावे तदगुणत्रययुते त्रिषु ।  
 तिक्तपर्वा गुडूचीहिलमोचीयष्टिषु स्त्रियाम् ॥२४४४॥  
 तिक्तशाकम्तु वरुण खदिरे पत्रसुन्दरे ॥  
 तिक्ता तु कटुरोहिण्या स्त्रीलिङ्गया परिकीर्त्तिता ॥२४४५॥  
 तिग्मो वज्रोष्मणो त्रिस्तु तीक्ष्णतेजसि सोष्मसु ।  
 तिचिरो द्वे खरक्वाणखगे ऋष्यतरे तु ना ॥२४४६॥  
 तित्तिडीकाऽम्लिकाचिश्चाधारय वृक्षे त्रिषु स्मृता ।  
 तिन्तिडीक तु वृक्षाम्लाख्ये फलेऽथ्याम्बुवेतसे ॥२४४७॥  
 तिन्निणो दैत्यभेदे स्याच्चिञ्चायां तिन्निणी मता ।  
 तिमिरत्वधकारेऽपि न स्त्री नेत्ररुजातरे ॥२४४८॥  
 तिमिरा तु स्त्रियामेषा वाद्यभेदे प्रकीर्त्तिता ।  
 तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थेऽप्यव्ययम्परिकीर्त्तितम् ॥२४४९॥  
 तिरस्करणमियेतच्छादनेऽनादरेपि नप् ।  
 भवेद्यवनिकाया तु सा तिरस्करिणी स्त्रियाम् ॥२४५०॥  
 तिरस्कारः परिभवेऽप्यतर्धानेऽपि कीर्त्तितम् ।  
 तिरीटस्तु पुमात्रक्तलोध्रे स्यात्कर्कटे तु नप् ॥ ४५१॥

तिरीटी तु स्त्रियामषा बदयाम्परिकीर्त्तिता ।  
 तिर्यक तु साचिभदे त्रि पद्मादौ तु पुमान्मत ॥२४५॥  
 तिर्यग्गामी त्रि योगार्थे पुसि शुक्रग्रहे स्मृत ।  
 तिलक पुण्ड्रके न स्त्री पुमारोगातरे तथा ॥ ४५३॥  
 क्षुरकद्रौ क्षुद्रतिले तिलकालकमङ्गके ।  
 पिण्डभदे कुरवके क्ली तु सौवचले तथा ॥ ४५४॥  
 त्रिश्लोक्या क्लोम्नि जठरस्थिते द्वे तु हयातरे ।  
 तालित्सो गोमस चैव तरक्षौ च द्वयोर्मत ॥२४५॥  
 ति-य-तु त्रिषु तैलीने तिलसाधुहितादिषु ।  
 तप्त्यो बह्वो कलियुगे शिवे मरुति पुष्यभ ॥ ४५६॥  
 तद्युक्त कालसामाये तज्जाते तु भवेत्त्रिषु ।  
 आमलक्याम्पुन स्त्रीत्वे तिष्येति परिकीर्त्तिता ॥२४५॥  
 तीक्ष्णो न स्त्री विषे तीक्ष्ण गरे कालायसे रण ।  
 मुष्के सामुद्रलग्न तीक्ष्णस्तु स्याज्जवाग्रजे ॥ ४५८॥  
 तीक्ष्णार्जकाह्वयस्तम्बे हिंसा कुशतृणतरे ।  
 सूर्ये च स्त्री तु तीक्ष्णेति वचायाम्परिकीर्त्तिता ॥ ४५९॥  
 अथात्मत्यागिनि शिलोष्णषु तीक्ष्णोऽभिधेयवत् ।  
 तीर त्रपुणि कूले च तीर्यल्पेऽतिजवे शरे ॥ ४६॥  
 तीरितम्पारिते तीर नीते तीरीकृतेऽपि च ॥  
 सत्ये वा सत्कृते सभ्यैवा यवक्षयवहारग ॥ ४६१॥  
 तीर्थमस्त्री पुण्यजले पुण्यक्षेत्रेऽध्वरे भगे ।  
 जलावगाहमार्गे च मध्राद्यष्टादशस्वपि ॥२४६॥  
 शास्त्रे निदाने योग्ये च स्त्रीपुण्ये दर्शनेष्वपि ।  
 उपाध्यायेऽप्युपाये च नद्यां गुरुकुलेऽपि च ॥२४६३॥  
 तीवर क्ली बले द्वे तु धीवरीन्नाक्षणात्मजे ।  
 तीव्रा तु कदुरोहिण्या राजिकामण्डदूर्वयो ॥२४६४॥  
 क्लीत्वसत्त्वे निताते तु तीव्रोऽत्युष्णे कटौ त्रिषु ।  
 तु पादपूरणे पक्षान्तरे भेदेऽवधारणे ॥२४६५॥

समुच्चये नयोग च प्रशसाया विनिग्रहे ।  
 तुग्रो यवे वरिष्ठ तु त्रिरन्नाकाशयोस्तु नप ॥२४६६॥  
 तुङ्गो नग च पुन्नागे ना प्राशौ तु त्रिषु स्मृत ।  
 निशाञ्जगधयोस्तुङ्गी तुङ्गा स्याद्वशरोचना ॥ ४६ ॥  
 तुङ्गीशस्तु पुमाश्चन्द्र शिप च परिकीर्त्तित ।  
 तुच्छन्तु त्रिषु शून्य स्यादसुख तु नपुसकम् ॥२४६८॥  
 तुङ्गस्तु दाने वज्र च बलादानादके च ना ।  
 तुङ्गा तु रक्षण स्त्री स्याद्विसाया तु नरस्त्रियो ॥ ४६९॥  
 तुटिद्वयोरपकालभदे वाद्यातरे लवे ।  
 सूक्ष्मैलाया सशये च ना वेष तुटतौ मत ॥२४ ॥  
 तुण्डिकेरी कण्ठरुग्मिद्विम्बीकार्पासिकासु च ।  
 तुण्डी नास्ये तथा शूननाभौ चैव स्त्रिया मता ॥२४ १॥  
 तुत्थ रसाञ्जने तुत्था नीली सूक्ष्मलयो स्त्रियाम् ।  
 तुनस्तु व्यथिते त्रि स्यान्नान्दीवृक्षे तु पुस्ययम् ॥२४ २॥  
 तुमुल सकुलरणे तुमुलो व्याकुले स्वरे ।  
 अथ त्रिलिङ्गस्तुमुलो विभीतकमहीरुहे ॥२४ ३॥  
 तुम्बा तु रथचक्रस्य नाभौ स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।  
 तुम्ब्यला वाम्मता स्त्रीत्वे तत्फले तुम्बमिष्यते ॥२४७४॥  
 तुम्बुरी कथिता स्त्रीत्वे धयाके कुक्कुरस्त्रियाम् ।  
 तुम्बुरुस्ति दुकीवृक्षे तत्फले तु नपुसकम् ॥२४ ५॥  
 गधर्वाधियभेदे तु तुम्बुरु पुसि भाषित ।  
 तुरगी त्वश्वगधाया चित्ते ना द्वे तुरङ्गमे ॥ ४७६॥  
 तुरसत्र षोडशाहोपवासेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।  
 तुरनाम्नो देवमुने सत्रेऽपि स्यान्नपुसकम् ॥२४ ॥  
 तुरि स्त्री तन्तुवायोपकरणान्तर इष्यते ॥  
 तुतोर्तिधातौ त्वेष स्याद्वारिधौ च तुरि पुमान् ॥२४७८॥  
 तुरुष्क सिल्हनिर्वासे राजभेदेऽस्य तु स्त्रियाम् ॥  
 तुरुष्काऽपत्यके देशे तुरुष्का स्युर्बभूवनि ॥२४ ९॥



तुला तून्मानदण्डेऽपि सादृश्येऽपि त्रयया मता ।  
 स्तम्भपीठ पलशते तथा राशा च सप्तमे ॥ ४ ॥  
 तुलाकोटिस्तुलाना द्वे कोटौ स्यात्तूपुरे तु ना ।  
 तुलाधारस्तुलाराशौ पुसि वाणिजक त्रिषु ॥ ४८१॥  
 स्यात्तुलापुरुष पुसि त्र्यहमवकभोजनात् ।  
 पिण्याकाचामतक्राम्नुसक्तना च त्रतान्तरे ॥ ४८२ ॥  
 तुवरो ना कपायाग्यरसे त्रिषु तु तद्वति ।  
 तुवरी तु स्त्रिया धान्य आढकीसङ्गं तथा ॥ ४८३॥  
 सुराष्ट्रकाह्वये चापि भेषजे परिकीर्तिता ।  
 तुपो धा-यत्वचि खर्णादिखण्डेऽपि च तत्समे ॥ ४८४॥  
 त्वभीतकतरौ च स्यात्तत्फले तु तुष नपि ।  
 तुषार शीकरे शैत्ये प्रालेये च हिमा-तरे ॥ ४८५॥  
 शैत्यधर्मवति त्वेष तुपारो वा-यवन्मत ।  
 तुष्टस्तु नान्दीष्टक्षे ना तुष्टौ क्ली तद्वति त्रिषु ॥ ४८६॥  
 तुस्त प्रदीपने चैव जटायामपि कीर्तित ।  
 तूक पवतजातौ स्यादुपस्थेऽपि तथा पुमान् ॥ ४८७॥  
 तूणी नील्यां स्त्रियामुक्ता निषङ्ग तूण एष ना ।  
 तूबरो ग्रीढशृङ्गे स्याद्गव्यश्मश्रौ च पूरुषे ॥ ४८८॥  
 पुरुष-यञ्जनत्यक्ते स्यात्कपायरसेऽपि च ।  
 तूय नपुसक तोये वाच्यवत्तु द्रुते मतम् ॥ ४८९॥  
 तूरा गतिस्त्वरार्हिसयोस्तूरो वाद्यनिस्त्रने ।  
 तूर्ण त्रिषु स्यात्वरिते हिंसिते क्ली तु हिंसने ॥ ४९० ॥  
 तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वाद्ये तूर्यं नपुसकम् ।  
 तूलोऽस्त्री स्यात्पिचौ क्ली तु ब्रह्मदारुविहायसो ॥ ४९१॥  
 तूलपुष्पो बकद्रौ स्याद्यौगिके तु यथायथम् ।  
 तूलि शय्यान्तरे चित्रकूर्चिकायामपि स्त्रियाम् ॥ ४९२॥  
 तूलिका कूर्चिकाया च शय्योपकरणेऽपि च ।  
 तूष वासोदशायां क्ली तूषा तुष्टौ द्रयोर्मता ॥ ४९३॥

तृण स्यान्मल्लिकामेदे सुरूपारयेऽथ न स्त्रियाम् ।  
 दूवायवेशुप्रभृतिक्षुद्रस्थावरजातिषु ॥२४९४॥  
 तृणगोधा चित्रकोले कृकलासेऽपि च स्त्रियाम् ।  
 तृणता तु स्त्रियामुक्ता तृणत्वे च शरासने ॥२४९५॥  
 तृणराजस्तु हि ताले तालेऽपि च प्रकीर्तित ॥  
 तृणशून्य मलिकाया तथा स्यात्केतकीफले ॥२४९६॥  
 तृतीया स्त्री तृतीयस्यां विभक्तौ च तथा तिथौ ।  
 गौर्याश्चाथ त्रयाणां तु तृतीय पूरण त्रिषु ॥२४९७॥  
 तृप्तसमुद्रे च द्रे च तृणभूमौ तथा पुमान् ।  
 तृप्त तु तृप्तौ षट्षष्टिस्वरे छन्दोऽन्तरे च नप ॥२४९८॥  
 ग्रीते तु सुहिते चैव तृप्त स्यादभिधेयवत् ।  
 तृप्त पुमापुरोडाश क्ली तृप्त पापदुखयो ॥२४९९॥  
 तृप्ति सुखे च तोय च सौहित्ये च स्त्रिया मता ।  
 तृफल शुष्कपर्णे च क्लीब शुष्कतृणऽपि च ॥२५०॥  
 तृफला तु स्त्रियामेषा लतायाम्परिकीर्तिता ।  
 तृट स्त्री कान्ता कामपुत्र्या स्यालिल्प्सादन्यधोरपि ॥२५१॥  
 तृषा तृष्णावदिच्छाया पिपासायामपि स्त्रियाम् ।  
 ते शब्द क्रीडने स्त्री स्यात्क्रीडके तु त्रिषु स्मृता ॥२५२॥  
 तेजनो ना शरस्तम्बे वेणौ स्यात्स्त्री तु तजनी ।  
 तृणपूले च मूर्वाया योतिष्मत्या तथाऽऽजि ॥ ५३॥  
 आकणकषणाच्चापि यदर्धाध्यधिकाङ्गुलम् ।  
 आकषणमथाकृष्टधनुष्कैर्यदिषोर्भवेत् ॥२५४॥  
 सन्धान तेजना तत्र निशाने च तथास्त्रियाम् ।  
 तेजोबलाम्बुधर्माग्निरेतार्चि र्यातिरात्मसु ॥२५५॥  
 प्रभावे नवनीतेऽग्ने सत्त्वे ज्वलति पौरुष ।  
 तेमन यज्जने क्लेदेऽपि क्लीब परिकीर्तितम् ॥२५६॥  
 तेर कतकवृक्ष स्यात्तर तफलवक्त्रयो ।  
 तेवन स्यात्केलिवने क्रीडायाश्च नपुंसकम् ॥ ५७॥

ततिलो गणके पुसि ततिल करणातर ।  
 "योति शास्त्रप्रसि" स्यात्तथ न तिलपिञ्जके ॥ ५८ ॥  
 ततिलास्तु कलिङ्गारये नीष्टुद्भदे नृभूमनि ।  
 तलो न स्त्री तिलस्नहे त्रि तु स्यात्तिलयोगिनि ॥ २५ ॥  
 तलपर्णी मिहकऽपि श्रीवेष्टे शतचन्दने ।  
 तोक पुत्रे च पुत्र्या न नपुसकमपत्यवत् ॥ ५९ ॥  
 तोक्म कर्णमलं पुसि हरितं न हरिद्यने ।  
 तोग्मो हरिद्यवे पुसि हरिद्वर्णेऽथ तद्वति ॥ ५१० ॥  
 त्रिषु क्लीब तु तोग्म स्यात्कणमूलाभयोरिदम् ।  
 तोडोऽपनयने पुसि तोड सशिखमुण्डने ॥ ५११ ॥  
 तोत्र नपुसकं प्राक्तं प्राजने वेणुकेऽपि च ।  
 तोदकस्तोत्तरि त्रि स्यात्पुमास्तु सितसपप ॥ ५१२ ॥  
 तोदन व्यथने क्लीब तोत्रेऽपि परिकीर्तितम् ।  
 तोयदो मुस्तके मघ तोयद धनुराज्ययो ॥ ५१३ ॥  
 अथ तोयधरो मुस्ता सुनिषण्णौपधीघने ।  
 तोयप्रसादन पुसि कतके तत्फले तु नप् ॥ ५१४ ॥  
 तोरण वस्त्रिया गेहबहिद्वारे नपि त्वद ।  
 तरुप्रभेदेऽस्य फले चरायामपि तोरणम् ॥ ५१५ ॥  
 तोषणी स्त्री हरिद्राया तुष्टा क्ली तोषण मतम् ।  
 तोषण तोषणेत्येते अर्थ तोषयतेर्मते ॥ ५१७ ॥  
 त्याग समुज्झने पुसि दानेऽपि परिकीर्तित ।  
 त्यागी दातरि शूरे च वायवत्परिकीर्तित ॥ ५१८ ॥  
 त्रपा तु कुलटाया च लज्जायां च स्त्रिया मता ।  
 त्रपुर्वङ्गे च सीसे च नपुसकमुदीरितम् ॥ ५१९ ॥  
 त्रयी त्रिवेद्यां स्त्र्यपुमास्त्रिष्टु दे त्रितये त्रिषु ।  
 त्रयोदशी पूरण त्रिरथ कामतिधौ तथा ॥ २५२ ॥  
 स्त्री त्रयोदशतन्त्रीके बीणाभेदे त्रयोदशी ।  
 त्रास त्रिजङ्गमे स्त्री तु त्रसी दिग्भ्रमदे भये ॥ २५३ ॥

असरो वर्णकौशेयसूत्रके स्यापुमानथ ।  
 शलाकामण्डने सूत्रवेष्टने असरोऽस्त्रियाम् ॥२५२२॥  
 असरेणु प्रभाख्याया सूत्रपत्या स्त्रिया मता ।  
 असरेणुस्त्रि रजसि जालान्त सूर्यरश्मिगे ॥२५२३॥  
 राक शरणदे शीये त्रिधर्मे तु पुमान्मत ।  
 त्राण तु त्रायमाणाया रक्षणे त्रि तु रक्षिते ॥२५२४॥  
 त्राता त्रि पातरि पुमास्त्रय स्यात्सितसषपे ।  
 त्रापुष रजते क्लीब विकारे त्रपुणस्त्रिषु ॥२५२५॥  
 त्रायमाणस्त्रिरक्षितुरक्षयोर्वाषिके स्त्रियाम् ।  
 त्रास पुमा मणेर्दोषे भयेऽपि परिकीर्त्तित ॥२५ ६॥  
 त्रिक त्रिनिवहे त्रि स्यात्पृष्ठपशधरे तु नप् ।  
 मुन्य तरेषुशालङ्कायनारयेषु नृभूमनि ॥२५२ ॥  
 त्रिका तु नेमा कूपस्य स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।  
 त्रिककुत्पुसि विष्णौ च त्रिकूटारये च पर्वते ॥२५२८॥  
 त्रिकण्टका निपत्राया स्तुह्यामपि च गोक्षुरे ।  
 त्रिकूटो ना सुवेलाद्रो क्ली सि धुलवणे स्मृतम् ॥ ५ ९॥  
 त्रिकेतुस्तु शुके ना त्रि केतुत्रयसमविते ।  
 भवेत्त्रिग धमेलात्वकपत्राणा क्ली समुचये ॥२५३ ॥  
 त्रिगर्त्तास्तु नृभूमि स्युर्देशे ना गणिता तरे ।  
 स्यात्त्रिगर्त्ता घुर्घुरिकाकासुकाङ्गतयोस्त्रियाम् ॥२५३१॥  
 त्रिदिवो योमिनि च स्वर्गे पुनपुसकयोर्मत ।  
 त्रिदिवा तु नदीभेद एलायां च स्त्रिया मता ॥२५३२॥  
 त्रिधामा वासुदेवे च पुलिलङ्ग पावकेऽप्यथ ।  
 त्रिलिङ्गोऽय यौगिकार्थे त्रिधामा परिकीर्त्तित ॥ ५३३॥  
 त्रिपक्षी श्राद्धभेदे स्याद ते पक्षत्रयस्य य ।  
 पक्षत्रये च स्त्री त्रिस्तु बहुव्रीहौ प्रकीर्त्तिता ॥ ५३४॥  
 त्रिपदी गजपद्म ध रजावपि पदत्रये ।  
 पदत्रयवति त्वेष त्रिपदो वाच्यवन्मत ॥२५३५॥

त्रिपुटा त्रिपुटी च स्त्री त्रिवृद्वल्ल्या प्रकीर्त्तिता ।  
 सूक्ष्मलाया मल्लिकाया ना तु तीरसतीनया ॥ ५३६ ॥  
 त्रिपुरी त्रिपुर च क्ली स्त्रियो स्यात्पुरत्रये ।  
 त्रिपुरी मदमत्तारयधूधरे परिकीर्त्तिता ॥ ५३ ॥  
 आदता त्रिपुरा स्त्रीत्वे पुरमेव प्रकीर्त्तिता ।  
 त्रिमार्गा निर्बन्त्रीहौ गङ्गाया स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥ ५३ ॥  
 त्रिरेखस्तु पुमाञ्छङ्गे चिक्रोडाखौ पुनद्वयो ।  
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थे त्रिफलाया कटुत्रिके ॥ ५३५ ॥  
 वृद्धिस्थानक्षये सवरजस्तमसि चेष्यते ।  
 त्रिवणक गोक्षुरके त्रिफलाया कटुत्रये ॥ ५४ ॥  
 त्रिगधेऽपि तथैवेतन्नपुसक्रमुदीरितम् ।  
 त्रिवलीकमपाने क्ली बालत्रययुते त्रिषु ॥ ५४१ ॥  
 त्रिविक्रमोऽप्यतारात्तरं हरेस्त्रि तु यौगिके ॥  
 त्रिवृत्स्त्री त्रिवृतासन्नलताभेदेऽथ पुंसि स । ५४ ॥  
 नवसख्यात्मके स्तोमे त्रि तु स्तोत्रे च तद्वति ।  
 तद्युक्तेऽप्यहरादौ स्याद्रज्ज्वादौ त्रिगुणऽपि च ॥ ५४३ ॥  
 त्रिवृता श्वेतवल्ल्यां स्त्री त्रिगुणे त्वभिधेयवत् ।  
 त्रिशङ्कुर्द्वे षिडालेऽपि शलभेऽपि प्रकीर्त्तित ॥ ५४४ ॥  
 राजान्तरे तु ताक्ष्ये च त्रिशङ्कु पुंसि कीर्त्तित ।  
 त्रिशिख तु त्रिशूलेऽपि स्याच्छिरोभूषणान्तरे ॥ ५४५ ॥  
 त्रिशिखस्तु पुमानेष कीर्त्तितो राक्षसान्तरे ।  
 त्रिशिरास्तु कुबेरे च पुमान्स्याद्राक्षसान्तरे ॥ २५४६ ॥  
 त्रिष्टुभा सर्षपे गौरे त्रिष्टुभ सितसर्षपे ।  
 त्रिमुगध तु जानीयादेलात्वकपत्रसयुते ॥ २५४ ॥  
 त्रिस्रोतास्तु नदीभेदे गङ्गाया च स्त्रिया मता ।  
 शुटि स्त्री लेशसूक्ष्मैलाधमात्राकालसशये ॥ २५४८ ॥  
 त्रेताऽग्नित्रितये चैव द्वितीये च युगे स्त्रियाम् ।  
 त्रैष्टुभ तु नपि योम्नि त्रिष्टुप्छन्दसि च त्रिषु ॥ २५४९ ॥

त्रिष्टुप्सम्बन्धिनि स्याच्च प्रगाथ त्रिष्टुबादिके ।  
 त्रोटि स्त्री कटफले चञ्च्वा खगे मीनान्तरेऽपि च ॥ ५५ ॥  
 यङ्कट शिष्यभेदेऽपि धौताञ्ज याञ्च न द्वयो ॥  
 यङ्गट शिष्यभेदेऽपि विधौ जया च कीर्त्तित ॥ २५५१ ॥  
 त्र्यश्रा स्त्रिया त्रष्टृत्सञ्जवल्त्या यश्रौ पुनस्त्रिषु ।  
 त्वश-दोऽर्थे पुमांस्त्रिस्तु युष्मदेकार्थयोर्मत ॥ २५५२ ॥  
 त्वक स्त्री चर्मणि वकेऽपि चान्ता स्याच्च गुडवचि ।  
 त्वकपत्र क्ली वराङ्गे स्त्री वकपत्री वाष्पिकोषधौ ॥ २५५३ ॥  
 वकसार पुंसि वेणौ च स्यात्तालादितृणद्रुषु ।  
 क्ली तु तत्प्रसवे स्त्री तु वकसारा वल्लिषु स्मृता ॥ ५५४ ॥  
 वचा द्व वल्कले क्ली सूक्तटारये गाधवस्तुनि ।  
 वरितन्तु त्वराया क्ली स्याच्छीघ्र त्वभिधेयवत् ॥ ५५५ ॥  
 त्वष्टा प्रजापतौ बह्वौ देवतक्षणि तक्षणि ।  
 विष्णवग्रजे माध्यमिकदेवे दिनकरे च ना ॥ ५५६ ॥  
 त्वष्टा तु वक्षितर्येष भेद्यवत्परिकीर्त्तित ।  
 त्वाष्ट्री तु सूर्यपत्नी भेदे वष्टु पुनस्त्रिषु ॥ २५५७ ॥  
 सम्बन्धिमात्रे यस्यापि त्वष्टा स्याद्देवतात्र च ।  
 अपत्ये तु द्वयोस्त्वष्टुस्त्वाष्ट्रस्तु क्षपके पुमान् ॥ ५५८ ॥  
 अरनीना च यूपस्य स्यादरत्नौ चतुर्दशे ।  
 त्रिण्ड बालादीमिशोभासु वाचि चैत्र स्त्रिया मता ॥ ५५९ ॥

थ

थ रक्षण मङ्गले च साध्यसे च नपुसकम् ।  
 शिलोच्चये तु थ पुंसि क्वचिच्च भयरक्षके ॥ ५६ ॥

द

दशो द्वयोर्मक्षिकाया वयायामल्पके पुन ।  
 तज्जातिभेदे दशी स्त्री वर्मदशनयोस्तु ना ॥ २५६१ ॥

दशित जातदशे च त्रिषु स्यात्कनचाग्निते ।  
 दृष्टी ग्राहवाराहाखुयाघ्राहिषु मतां द्वयो ॥ १६ ॥  
 द पुमानचले द ते स्त्रिया शोधनदानयो ।  
 छदोपतापरक्षासु पुमान्दो दातरि स्मृत ॥ १ ३ ॥  
 दक्ष प्रजापतिभिदि ह्युनभदे बले च ना ।  
 प्राचतमे हरवृष कुक्कुटे तु द्वयोर्मत ॥ १६४ ॥  
 अथ त्रिश्चारुणिपटौ दक्षा तर्वाद्बुभेदयो ।  
 दक्षकन्या तु पार्जत्यान्तथव दिशि कीर्त्तिता ॥ ५६५ ॥  
 दक्षाग्योऽग्ना च ताक्ष्ये ना द्वयोगृत्र प्रकीर्त्तित ।  
 दक्षिणो दक्षिणोद्भूते परच्छन्दानुवर्त्तिनि ॥ १६६ ॥  
 विदग्धे कुशले चैव वामस्य प्रतियोगिनि ।  
 उदारे सरले च त्रिर्याम्याशायान्तु दक्षिणा ॥ ५ ७ ॥  
 स्त्रिया दानेऽपि यज्ञादिविधिदत्ते प्रकीर्त्तिता ।  
 स्त्रियामृत्विग्भृतो चापि प्रतिष्ठाया तथा स्त्रियाम् ॥ १६८ ॥  
 दक्षिणस्य सारथौ ना योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ।  
 दक्षिणाशारतोऽगस्त्यमुनौ पुंसि त्रियौगिके ॥ ५६९ ॥  
 दग्ध प्लुष्टे यलिङ्ग स्यात्स्थिताकदिशि तु स्त्रियाम् ।  
 दण्डस्तु निग्रहे राजशासने लगुडे नृपे ॥ ५७ ॥  
 सैन्यमथानर्हिसाज्ञाष्टक्षशाखासु चास्त्रियाम् ।  
 कालमान यूहभेदेऽभिमाने कोण एव च ॥ १७१ ॥  
 यमे तु ना प्रकाण्डेऽश्वे चण्डाशो पारिपार्श्विके ।  
 दण्डकोऽस्त्री समासाढ्यवाक्ये छद सु चोत्कृते ॥ १७ ॥  
 अधिकेष्वथ पुभूमि महाराष्ट्रेषु दण्डका ।  
 दण्डको दण्डयितरि वायवत्परिकीर्त्तित ॥ २५७३ ॥  
 दण्डयामस्तु कीनाशे दिवसे कुम्भसम्भवे ।  
 दण्डारो वहने मत्तवारणे शरयन्त्रके ॥ २५७४ ॥  
 कुम्भकारस्य चक्र च पुँल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 दण्डाहत कालशेये दण्डेन त्वाहते त्रिषु ॥ २५ ५ ॥

दण्डिकस्त्र्यशश्ल्ये ना नाराचे दण्डिनि त्रिषु ।  
 दण्डिका दण्डरूपे च वादित्रेऽपकलस्वने ॥ ५ ६ ॥  
 दण्डी ना द्वा स्थयमयोर्द्वे शुके त्रि सदण्डके ।  
 दत्तोऽर्चितेऽर्पिते च त्रिदत्त तु नपि हेमनि ॥ २५७ ॥  
 स्थाद्दुनाशिनी हस्तिवातिङ्गन इति श्रुते ।  
 वातिङ्गनातरे यागार्थे तु लिङ्ग यथायथम् ॥ ५ ८ ॥  
 दधि क्षीरविकारे क्ली विप्रप्रियमिति श्रुते ।  
 दधिस्तु पुसि श्रीवाससजंयो परिकीर्त्तित ॥ २५ ९ ॥  
 दधिपाय्यस्तु पुसि स्यात्पृषत्यपि च सर्पिषि ।  
 पुमान्दधिमृष कप्यतरेऽपि च कपिमात्रके ॥ २५८ ॥  
 स्त्रिया दधिमृषीकालरायामेषा प्रकीर्त्तिता ।  
 दतो रदेऽद्रिकटक ना कुञ्चकरिदष्टयो ॥ २५८१ ॥  
 स्त्रियां तु दती कथिता नागदन्त्यारयमषजे ।  
 स्याद्दतधावन पुसि करञ्ज खदिरद्रुमे ॥ २५८२ ॥  
 अरिमेदस्थ न दतकाष्ठे दतस्य शोधने ।  
 पुसि दतशठो भव्ये जम्बीरे च कपिथके ॥ २५८३ ॥  
 अम्ले चव रसेऽथाऽम्लरसोपेते त्रिषु स्मृत ।  
 स्त्रिया दतशठा चिञ्चाचाङ्गेर्यो परिकीर्त्तिता ॥ २५८४ ॥  
 दन्तिको गृहभित्तिस्थे नागदन्तेऽथ दन्तिका ।  
 स्त्रिया निकुम्भसन्ने स्यादोषधे दन्तिनि त्रिषु ॥ २५८५ ॥  
 दन्तुरस्तूभतरदं त्रिषु स्यादु नतानने ।  
 ददशको द्वयो सपरशसोर्दशके त्रिषु ॥ २५८६ ॥  
 दद्रु त्र्यपशिशुहृस्वकुशले नाऽधिचद्रया ।  
 दमो दण्डे गृहे पङ्के पुमाश्चेद्रियनिग्रहे ॥ २५८ ॥  
 दमथस्तु पुमान्दण्डे दमे च परिकीर्त्तित ।  
 दमन कुसुमस्तम्बातरे घीरे तु स त्रिषु ॥ २५८८ ॥  
 दमयद्दमयित्रर्थे वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।  
 दमयती ब्रह्मचारिदण्डे भैम्यामपि स्त्रियाम् ॥ २५८९ ॥



दमुनास्तु रवौ बह्वौ पुंसि सान्त प्रकीर्तित ।  
 दर शङ्खे भये श्वभ्रे छिद्रमात्रेऽपि न स्त्रियाम् ॥ ५९ ॥  
 दरी तु कदरे स्त्री स्यान्मनागर्थे दराऽयम् ।  
 दरण क्ली द्विधाभावे शुके तु दरणो द्वयो ॥ ५९१ ॥  
 दरत्प्रपातमीविष्टादत्सरिद्विरिषु स्त्रियाम् ।  
 तथा तट हिमवतो राजभेदे तु पुंस्ययम् ॥ ५९२ ॥  
 तस्यैव पुमपत्येषु भूमिन् देशस्य भूयते ।  
 दरथो विवरे भीत्या दिक्षु चापि प्रसारण ॥ ५९३ ॥  
 ददरस्तु पुमान्छैलप्रभदे कलशीमुख ।  
 इति प्रसिद्धवाद्ये च त्रि वीषद्भ्रग्नवस्तुनि ॥ ५९४ ॥  
 ददरीकोऽनिले चन्द्र वाद्यभेदे च दाडिमे ।  
 ददुरस्तु द्वयोर्भेके पुमास्तु गजपार्श्वयो ॥ ५९५ ॥  
 वारिदे चाऽद्विभेदे च वाद्यभाण्डा तरेऽप्यथ ।  
 ददुरा चण्डिकायां स्त्री ग्रामजाले तु ददुरम् ॥ ५९६ ॥  
 दर्पस्तु पुंसि कस्तूर्यामहङ्कारेऽपि चेष्ट्यते ।  
 दपको ना स्मरे दृष्टदर्पयित्रोस्तु वाच्यवत् ॥ ५९७ ॥  
 पुमान्दपण आदर्शे दृष्टौ दपणमद्वयो ।  
 दर्पणन्दर्पणा चेति कुतौ दपयतेर्द्वयम् ॥ ५९८ ॥  
 दर्वा द्वये राक्षसेऽथ देशभेदे नृभूमनि ।  
 दर्वरस्तु पुमान्वज्र सेनायां दर्वरी स्त्रियाम् ॥ ५९९ ॥  
 दर्वि खजाकायां सर्पफणे स्त्री प्रतिकीलके ।  
 दर्वीविदिष्यते ना तु दर्विश्चक्रसमुद्रयो ॥ ६०० ॥  
 दर्वीकरो द्वयो सपे सपजात्यन्तरेऽपि च ।  
 दर्शो दृष्टावमायां च परपक्षात्तर्कणि ॥ ६०१ ॥  
 दर्शको दर्शयितरि अवीणे द्रष्टरि त्रिषु ।  
 प्रतीहाराऽपरारये तु द्वा स्थे स्यादर्शक पुमान् ॥ ६०२ ॥  
 दर्शन स्वप्नवीक्षासु नेत्रे शास्त्रे मते धियि ।  
 ज्ञाने च दर्पणे धर्मे क्रियायां पश्यतेरपि ॥ ६०३ ॥

दशनी तूपरध्याया स्त्री पुरादेगदस्य च ।  
 यन्मभदे दशनार्थे दर्शना त्वपि दशनम् ॥२६ ४॥  
 स्यातां दशयतेरर्थे स्त्रीनपुसकयोरिमे ।  
 दलमस्त्री भवेद्भागेऽथापद्रये तरुच्छदे ॥२६ ५॥  
 शस्त्रीच्छदे तथोसेधे दल क्लीबसुदाहृतम् ।  
 दलवो ना ग्रहरण विदले च दलान्तरे ॥ ६ ६॥  
 दलाढक स्वयञ्जाततिले पृश्याञ्च गैरिके ।  
 फेनखातकयोर्नागकेसरे च महत्तरे ॥२६ ॥  
 दलामल मरुवके दमनेऽपि नपुसकम् ।  
 दलभो गात्रर्षिभेदे ना दलभ व के नपुसकम् ॥२६ ८॥  
 दवो वने स्मृतोऽग्न्या च वनवह्युपतापयो ।  
 दशन शिखरे दत्ते क्ली तु दृष्टौ च वर्मणि ॥२६ ९॥  
 दशन कवच दश नपुसकसुदीरितम् ।  
 दशनोच्छष्ट उच्छसे चुम्बने दशनच्छद ॥२६१ ॥  
 क्लीब दशपुरन्देशभेदेऽपि स्यात्स्रवेऽपि च ।  
 दशमी स्त्री यमतिथौ त्रिदशाना च पूरण ॥२६११॥  
 दशमीस्थस्त्रिष्टुद्वेऽपि नष्टबीजे व्रताशने ।  
 दशा कमविपाके स्त्री दशमाशे तथाऽऽयुष ॥ ६१२॥  
 दीपवर्त्तौ परावस्थावस्थामात्रकयोरपि ।  
 दशास्तु वसनस्याते द्वयोर्भूमनि कीर्त्तिता ॥२६१३॥  
 दशेर कुक्कुरे सर्पे द्वयोरथ नृभूमनि ।  
 मरुसज्ञे जनपदे दशरा परिकीर्त्तिता ॥२६१४॥  
 दस्मोऽग्निवज्रयो पुसि दस्युयज्ञकृतोस्त्रिषु ।  
 दस्यु पुसि रिपौ त्रिस्तु चौरे द्वे तु गजातरे ॥२६१५॥  
 मर्यजातिचतुष्पष्टेरेकस्मि गह्यष्टुत्तिके ।  
 दहनश्चित्रकाऽन्युष्णगुणभ लातकेषु ना ॥२६१६॥  
 क्ली दाहे त्रि तु सोष्णे च तथा स्याद्दुष्टचेष्टिते ।  
 दहरस्तु द्वयोरपमूषिके बालके त्रिषु ॥२६१७॥

१ वर्त्म नपुसक वल्के दसो गोत्राभिधायम् ।

दमुनास्तु रवो बह्वौ पुसि सात्त प्रकीर्तित ।  
 दर शङ्ख भये श्वभ्रे छिद्रमात्रेऽपि न स्त्रियाम् ॥ ५९ ॥  
 दरी तु क दरे स्त्री स्यान्मनागर्थे दराऽयम् ।  
 दरण क्ली द्वाधाभावे शुके तु दरणो द्वयो ॥ ५९१ ॥  
 दरत्रपातमीविष्ठादसरिद्विरिपु स्त्रियाम् ।  
 तथा तट हिमवतो राजभेदे तु पुस्ययम् ॥ ५९ ॥  
 तस्यैव पुमपत्येषु भूमि देशस्य भूपते ।  
 दरथो विवरे भीत्या दिक्षु चापि प्रसारण ॥ ५९३ ॥  
 ददरस्तु पुमान्छलप्रभदे कलशीमुख ।  
 इति प्रसिद्धवाद्ये च त्रि त्वीषद्भग्नवस्तुनि ॥ ५९४ ॥  
 ददरीकोऽनिले च द्रे वाद्यभेदे च दाडिमे ।  
 ददुरस्तु द्वयोर्भेके पुमास्तु गजपार्श्वयो ॥ ५९५ ॥  
 वारिदे चाऽद्विभेदे च वाद्यभाण्डा तरेऽप्यथ ।  
 ददुरा चण्डिकायां स्त्री ग्रामजाले तु ददुरम् ॥ ५९६ ॥  
 दर्पस्तु पुसि कस्तूर्यामहङ्कारेऽपि चेष्ट्यते ।  
 दपको ना स्मरे दृप्तदर्पयित्रोस्तु वाच्यवत् ॥ ५९७ ॥  
 पुमान्दपण आदर्शे दृप्तौ दर्पणमद्वयो ।  
 दर्पणन्दर्पणा चेति कृतौ दपयतेर्द्वयम् ॥ ५९८ ॥  
 दर्वो द्वये राक्षसेऽथ देशभेदे नृभूमनि ।  
 दर्वरस्तु पुमान्वज्र सेनायां दर्वरी स्त्रियाम् ॥ ५९९ ॥  
 दर्वि खजाकायां सर्पफणे स्त्री प्रतिकीलके ।  
 दर्वीवदिष्यते ना तु दर्विश्चक्रसमुद्रयो ॥ ६०० ॥  
 दर्वीकरो द्वयो सर्पे सर्पजात्यन्तरेऽपि च ।  
 दर्शो दृष्टावमायां च परपक्षान्तकर्मणि ॥ ६०१ ॥  
 दर्शको दर्शयितरि प्रवीणे द्रष्टरि त्रिषु ।  
 प्रतीहाराऽपराख्ये तु द्वा स्थे स्यादर्शक पुमान् ॥ ६०२ ॥  
 दर्शन स्वप्नवीक्षासु नेत्रे शास्त्रे मते धियि ।  
 ज्ञाने च दर्पणे धर्मे क्रियायां पश्यतेरपि ॥ ६०३ ॥

दशनी तूपरध्यायां स्त्री पुरादेगदस्य च ।  
 यन्त्रभेदे दशनार्थे दशना त्वपि दशनम् ॥२६ ४॥  
 स्याता दर्शयतेर्गर्थे स्त्रीनपुसकयोरिमे ।  
 दलमस्त्री भवेद्भागेऽथापद्रये तरुच्छदे ॥२६ ५॥  
 शस्त्रीच्छेदे तथोत्सेधे दल क्लीबमुदाहृतम् ।  
 दलबो ना ग्रहरणे विदले च दलातरे ॥ ६ ६॥  
 दलाढक स्वयञ्जाततिले पृश्न्याञ्च गैरिक ।  
 फेनखातकयोर्नागकेसरे च महत्तरे ॥२६ ॥  
 दलामल मरुवके दमनेऽपि नपुसकम् ।  
 द-भो गोत्रर्षिभेदे ना द-भ व के नपुसकम् ॥२६ ८॥  
 दवो वने स्मृतोज्जनौ च वनवह्युपतापयो ।  
 दशन शिखरे द-ते क्ली तु दृष्टौ च वर्मणि ॥२६ ९॥  
 दशन कवचे दशे नपुसकमुदीरितम् ।  
 दशनोच्छिष्ट उ-च्चासे चुम्बने दशनच्छद ॥ ६१ ॥  
 क्लीब दशपुरदेशभेदेऽपि स्यात्स्रवेऽपि च ।  
 दशमी स्त्री यमतिथौ त्रिर्दशाना च पूरणे ॥२६११॥  
 दशमीस्थस्त्रिवृद्धेऽपि नष्टधीजे व्रताशने ।  
 दशा कमविपाके स्त्री दशमाशे तथाऽऽयुष ॥ ६१ ॥  
 दीपवर्तौ परावस्थावस्थामात्रकयोरपि ।  
 दशास्तु वसनस्यान्ते द्वयोर्भूमनि कीर्तिता ॥२६१३॥  
 दशेरे कुक्कुरे सर्पे द्वयोरथ नृभूमनि ।  
 मरुसङ्गे जनपदे दशेरा परिकीर्तिता ॥२६१४॥  
 दस्मोऽग्निवज्रयो पुसि दस्युयज्ञकृतोस्त्रिषु ।  
 दस्यु पुसि रिपौ त्रिस्तु चौरै द्वे तु गजातरे ॥ ६१५॥  
 म-र्यजातिचतुष्पष्टेरेकस्मिन्गाह्यवृत्तिके ।  
 दहनश्चित्रकाजन्युष्णागुणभ-लातकेषु ना ॥२६१६॥  
 क्ली दाहे त्रि तु सोष्णे च तथा स्याद्दुष्टचेष्टिते ।  
 दहरस्तु द्वयोरल्पमूषिके बालके त्रिषु ॥२६१७॥

१ दक्ष नपुसकं बल्के द-भो गोत्रर्षिभेदे ।

अल्पेऽथ आतरि पुमा हृदये तु नपुसकम् ।  
 दाकस्तु दातरि त्रि स्याद्यजमाने द्वयोर्मत ॥ ६१८॥  
 दाक्षस्त्रिदक्षसम्बन्धियथ दाक्षी स्त्रिया गवि ।  
 कपिलाया जनयाश्च कीर्त्तिता पाणिनेमुने ॥ ६१९॥  
 दाक्षायणी स्त्री पावत्यामश्विनाद्युडुपु क्षितौ ।  
 अदितौ द्व तु दक्षस्यापत्ये क्लीब तु हेमनि ॥ ६ ॥  
 दाक्षिणायो नारिकेल त्रिषु दक्षिणदिग्भवे ।  
 दाडिम प्रसव क्लीब त्रिष्वेलाभुचुलिन्दयो ॥ ६ १॥  
 दाडिम्येलाकरकयोस्त्रिषु तत्प्रसवे तु नप् ।  
 दात्यूहो द्वे कालकण्ठखगचातकपक्षिणो ॥ ६ ॥  
 दात्व आयुक्तके त्रि स्याद्दाने यज्ञे च पुस्ययम् ।  
 दान हस्तिमदे त्यागे खण्डने लवने क्षये ॥ ६ ३॥  
 शोधने रक्षण चापि क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ।  
 दानव क्ली दमनके दनुजे दानवो द्वयो ॥ ६२४॥  
 दानुर्दातरि विक्राते त्रिषु द्वे यष्टरि स्मृत ।  
 समीरणाकयोर्दानु पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥२६२५॥  
 दा तस्त्रिदमिते दातियुक्ते दन्तविकारके ।  
 स्यर्थे तु पूर्वयोर्दन्तिवाययोरतिमे पुन ॥ ६ ६॥  
 स्यर्थे दात्यथ दान्त क्ली दातौ दमनकेऽपि च ।  
 दायस्तु दातरि त्रि स्यात्पुंसि सोल्लुण्ठभाषिते ॥ ६ ७॥  
 रक्षणादौ विभक्त्यपिप्रादिद्रविणऽपि च ।  
 यौतकादिधने दाने लवने शोधनेऽपि च ॥ ६ ॥  
 दायादौ दायभाजि त्रि सपिण्डसुतयोर्द्वयो ।  
 दारको द्वे सुते बाले तरुणे त्रि तु भेत्तरि ॥ ६ ९॥  
 दारदो ना देशभेदे पारदे हिङ्गुलेऽप्यथ ।  
 दारदो पिषभेदेऽप्य पुनपुसकयोर्मत ॥२६३॥  
 दार्वस्त्री पित्तले काष्ठे क्ली पुनर्देवदारुणि ।  
 दारुको दैत्यभेदे च पुमान्स्यात्कृष्णसारधौ ॥२६३१॥

अस्त्री तु दारुक इति कुदावर्थे प्रयुज्यते ।  
 दारुणे रसभदे ना क्ली याधौ भीषणे त्रिषु ॥२६३२॥  
 द्राक्षाया स्त्री दारुफला योगार्थे वभिधेयवत् ।  
 दार्वी दारुहरिद्राया स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ॥ ६३३॥  
 दावो दवाग्नाश्वनौ च दावतु क्ली वने मतम् ।  
 दाशो दाशा द्वयोदाने दाशी कवर्त्तभृत्ययो ॥२६३४॥  
 द्वयोरथ दशायोगि युक्तो दाशोऽभधेयवत् ।  
 दासो ज्ञानात्मनि त्रि द्वे भृत्ये शूद्रे च धीवरे ॥ ६३५॥  
 दासी तु स्त्री नीलाङ्गण्टीषडस्त्रावीरुधोरियम् ।  
 दासेरो दासिकापुत्र द्वयो पुसि क्रमेलके ॥२६३६॥  
 दासेरकस्तु करभ दासीपुत्रे च धीवरे ।  
 दिक्रीषत्प्रौढयोषि यथ योग यथायथम् ॥ ६३ ॥  
 दिगम्बर क्ली ध्वाते त्रि नग्ने ना क्षपण शिवे ।  
 दिग्ध पुसि विषाक्तेषौ त्रिषु लिप्तप्रवृद्धयो ॥२६३८॥  
 नपुसकतु दिग्ध स्यास्नेहेऽप्युपचये तथा ।  
 दितिदेत्यजन याश्च खण्डनेऽपि स्त्रियाम्मता ॥ ६३९॥  
 दिधिषू परिविन्नाद्यञ्ज्येष्ठा चेद्भगिनी स्त्रियाम् ।  
 कनिष्ठपयाम्पुनर्म्वा ना वस्या दिधिषुर्धवे ॥ ६४ ॥  
 दिधिषूपतिरासक्ते पत्याम्भ्रातृमृतस्य च ।  
 पुनर्म्वाश्च तथा पत्यौ पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ६४१॥  
 द्यौर्ना सूर्ये स्त्रिया तु सूर्यवितोर्द्यौर्दिव तु नप् ।  
 दिवाकीर्त्तिर्द्वयोरुक्तश्चण्डाले नापितेऽपि च ॥२६४२॥  
 दिवाचरस्तु ना शुके त्रिलिङ्गो दिनचारिणि ।  
 दिवाभीत उल्लुके द्वे पुमास्तु कुम्भदाकरे ॥२६४३॥  
 त्रिषु चोरे यवहितेऽपि दिवाभीत इष्यते ।  
 दिवोकाश्च दिवौकाश्च न क्ली देवे च चातके ॥२६४४॥  
 दिव्य लवङ्गे लशुने व्योम्नि तन्त्रीस्वरेऽपि च ।  
 प्रत्ययेऽथ स्त्रिया धाया वल्गुधुभवयोस्त्रिषु ॥२६४५॥

दि-उलको द्वयोर्भेदे वेकरञ्जारयभोगिन ।  
 त्रयोदशा भदाना राजिलस्य च कुत्राचत् ॥२६४६॥  
 दिष्ट काले कृतातस्थ दने सप्तदने च नष ।  
 दानभूषणयो स्नाने तथा स्यामृत्तिकाम्भसा ॥२६४ ॥  
 दिष्टतु भाषिते दत्ते त्रिलिङ्ग परिकीर्तितम् ।  
 दिष्टिनाष्टाङ्गुले माने स्त्री दानोक्तसुखपु च ॥ ६४८॥  
 दिष्ट्याऽययम्भङ्गले च हर्षे च परिकीर्तितम् ।  
 दीक्षा स्त्रिया त्रतादेश भाण्ड्ये चापनयऽपि च ॥ ६४९॥  
 तनयमे यजने चैव पूजायाश्च प्रकीर्तिता ।  
 दीदिविस्त्वोदने न क्ली ना स्वर्गेऽनो बृहस्पतौ ॥ ६५ ॥  
 दीधितिस्तु स्त्रिया रश्मावङ्गुलावपि कीर्तिता ।  
 दीन पुत्रागकेतव्यो पुमान्दीना तु मृपिका ॥ ६५१॥  
 दरिद्रकृपणक्षीणष्वयन्दीनस्त्रिपु स्मृत ।  
 दीपको जीरके दीपे यत्रायात्रा च पाक्षणि ॥ ६५ ॥  
 पक्षिणो येन गृह्यतेऽथ क्ली वाचामलङ्कृतौ ।  
 अथ दीपयितर्येष दीपितर्यपि वाच्यवत् ॥ ६५३॥  
 दीपनी त्रिषु दीप्ते स्यात्साधने क्ली तु दीपनम् ।  
 दीप्तौ दीपयतेस्त्वर्थे दीपन-दीपना न ना ॥२६५४॥  
 दीपन स्यात्पुंसि महाकदम्बारये द्रुमातरे ।  
 दीप्ता विद्युति दीप्त त्रिर्दग्ध गलितभासिते ॥ ६५५॥  
 दीप्यो जीरे यत्रायात्रा दीपनीय तु स त्रिषु ।  
 दीप्यकस्त्वजमोदाया यत्रानीधर्हिचूडयो ॥२६५६॥  
 दीर्घं त्रिष्वायते मात्राद्वयो चार्यस्वरेऽपि च ।  
 नपुसक तु सीम्नो स्यात्ससुवेवर्गगीतयो ॥२६५ ॥  
 दीधनाद शुनि द्वे स्याद्योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ।  
 दीर्घनिद्रा मृतौ स्त्री स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ॥२६५८॥  
 दीधपत्री स्त्रियामेषा कदल्याम्परिकीर्तिता ।  
 दीर्घपत्र पलाण्डौ स्याद्दशाना भेद एकके ॥२६५९॥

दीघपादो द्वयो कङ्क यागार्थे तु त्रिषु स्मृत ।  
 दीघरोमा तु भद्वके द्वे यागे तु त्रिषु स्मृत ॥ ६६ ॥  
 दीर्घाध्वगो द्वयोरुष्ट्र लेख्यहारे तु वाच्यवत् ।  
 दीर्घायु शास्मलीकक्षे पुमाञ्जीवरूपादपे ॥ २६६१ ॥  
 माकण्डेये च काके तु द्वे त्रि स्याच्चिरजीविनि ।  
 दीर्घो मिने च भीते त्रिर्दीर्घा तु स्याद्विशि स्त्रियाम् ॥ २६६२ ॥  
 दुकूल स्रक्ष्मवसने क्षौमे धवलवाससि ।  
 दुख यथाया क्लीब स्यात्त्रिलिङ्ग वस्य साधने ॥ २६६३ ॥  
 दुग्ध नपुसक क्षीरे कृतदोहे तु स त्रिषु ।  
 क्षीरादौ च गवादौ च दुग्धी तु क्षीरकौषधौ ॥ २६६४ ॥  
 दुग्धतालीय तु दुग्धफेने दुग्धाम्रकेऽपि च ।  
 दुग्धाशी तु शुके द्वे स्यात्क्षीराशिनि तु भेद्यवत् ॥ ६६५ ॥  
 दुच्छक्रो गधकुट्या स्याद्विहाराद्यवकाशके ।  
 दुदुभिदै यभेदे च भेर्याश्च वरुणे पुमान् ॥ ६६६ ॥  
 स्त्री तु द्यूतशलाकायाद् द्व तु कीटातरे भवेत् ।  
 दुरव्ययन्निषधे च कष्टे च परिकीर्तितम् ॥ २६६ ॥  
 दुराश कृकलासे द्वे दुष्टाश अभिधेयवत् ।  
 दुरासद पुमानभौ दण्ड्रापे तु मतस्त्रिषु ॥ २६६८ ॥  
 दरितदुगता पापे दुगते तु त्रिषु स्मृतम् ।  
 दुरोदरो स्त्रीपण क्ली द्यूते द्यूतकरे पुमान् ॥ २६६९ ॥  
 दुर्ग वनेऽपि नरके दुर्गोऽस्त्री दुर्गम् पुरे ।  
 राष्ट्र तु पुंसि दुग् स्त्री दुर्गोमाया त्रि दुर्गम् ॥ ६७ ॥  
 दुगति स्त्री दरिद्रत्वे नरके तु द्वयोमता ।  
 दुर्गधो ना कुगधे दुग् ध सौवर्चले नपि ॥ २६७१ ॥  
 दुर्गमो भूधरे पुंसि दुग्धवेशे वय त्रिषु ।  
 दुर्जात यसने क्लीबमसुजाते तु भेद्यवत् ॥ ६८ ॥  
 दुर्दर्श वविवाद्याया कन्यायां कुजतावशात् ।  
 वाच्यववेष दुग्धेक्षे दुर्दर्श परिकीर्तित ॥ २६८३ ॥



[दुधरस्त्वृषभा]रये ना भषज निरयान्तरे ।  
 [पारदे राक्षसभिदि दु खधार्ये त्रि] दुधरम् ॥ ६ ४॥  
 दुर्लभो ना यवासे [त्रिदुष्प्रापातिप्रशस्तयो] ।  
 दुवर्णं रजते चैलावालुकागये न भषज ॥ ६ ५॥  
 दुष्टवर्णे तु न्नपावज्जीहां पुनस्त्रिषु ।  
 दुर्वारस्तु यमे पुमि दूरोधे त्वभिधेयत् ॥ ६ ६॥  
 दुग्धो वाच्यलिङ्गं स्यान्नीच दुर्गत एव च ।  
 दुलि स्त्रिया कमत्या स्यादथ सु यतर पुमान् ॥ ६ ॥  
 दुष्कृतं कुकृते त्रि स्यात्पाप तु क्लीबमिष्यत् ।  
 दुरस्थस्त्रिदुगते मूर्खे तथा द खन तिष्ठति ॥ ६ ७८॥  
 दुस्पर्शो ना यवासे स्याददु खस्पर्शो भवेत्त्रिषु ।  
 दुस्पर्शी कण्टकार्याञ्चात्मगुप्तायामपि स्त्रियाम् ॥ ६ ७९॥  
 दूतं शुक्रे पुमाद् दूतं मतं सन्देशहारके ।  
 सञ्चारिकाया तु स्त्रीत्वमात्रे दूती प्रकीर्त्तिता ॥ ६ ॥  
 दूत्य दूतस्य भागे च भावे कर्मण्यपि स्मृतम् ।  
 दूरदर्शी द्वयोर्गृत्रे त्रिदूरेऽक्षिमनीषिणो ॥ ६ ८१॥  
 दूषिका स्त्री क्रोधवशकन्याया यागिके त्रिषु ।  
 दूषिक दूषिका चाऽक्षिमले क्लीबे स्त्रियामपि ॥ ६ ८२॥  
 दूषिका तु स्त्रिया वीणातरलतालतासु च ।  
 दूष्य पूये स्थले वस्त्रे दूषणीये तु तत्त्रिषु ॥ ६ ८३॥  
 दुग्धं स्त्री स्यात्तरो सर्पे बिले च द्रोहकै कृते ।  
 [दृढ]त्वयस्पृशीरे च श्लेष्मणि वस्त्रिया दृढ ॥ ६ ८४॥  
 तथा दृढा त्वामलक्या तालमूल्या दृढा स्त्रियाम् ।  
 [वायवत्त्रि दृढ] स्थूले बलयत्यधिके भृशे ॥ ६ ८५॥  
 स्त्रियां दृढदला ताली पादपे बल्वजेषु च ।  
 दृतिर्भस्त्रा चर्मखण्डजिह्वामेघर्षिभिर्वृक्षेषु ॥ ६ ८६॥  
 दृतिर्ना [चर्मपुटके मेघेऽथ गलकम्बले] ।  
 दुग्धं स्त्रियां भुजङ्गे च चक्रे च परिकीर्त्तिता ॥ २६८ ॥

एक स्त्री ज्ञानाक्षिधीदृष्टिष्वथ त्रिज्ञातृवीक्षिणो ।  
 दशा नो ना रवौ क्ली योतिषि द्रष्टरि तु त्रिषु ॥२६८८॥  
 दशीक नयने क्ली त्रिदशीक स्याद्वपुष्मति ।  
 दश्या स्त्री सेवन त्रिस्तु द्रष्टये क्ली तु भूषणे ॥२६८९॥  
 दृषन्नि पेषणशिलापट्टप्रस्तरयो पुमान् ।  
 दृषद्वती नदीभेदे पाव याश्च स्त्रियाम्मता ॥ ६९ ॥  
 दृष्ट त्रि वीक्षिते ज्ञाने क्लीबन्त्वद्विकवस्तुनि ।  
 उक्त तथैव भूपानाम्भये स्वपरचक्रज ॥२६९१॥  
 दृष्टान्त पुंसि शास्त्र च तथोदाहरणे मत ।  
 दृष्टिश दोऽक्षिण बुद्धौ च ज्ञाने दर्शे तथा स्त्रियाम् ॥ ६९ ॥  
 देव खड्गे नृपे मेघ नृपे नाट्याक्तिगोऽपि ना ।  
 चक्षुरादीन्द्रियेष्वस्त्री देवी स्त्री मघमूवयो ॥ ६९३॥  
 महिष्या नृपतेर्नाट्ये राजवश्यनृपस्त्रियाम् ।  
 गुडचीस्पृक्कुर्योर्देवस्तु द्वयोर्देवते मत ॥ ६९४॥  
 देवताड सैहिकेये जीमूते च हुताशने ।  
 देवदण्डस्तु नृनपोदण्डाकारायुधातरे ॥२६९५॥  
 अरतिमात्रे योगे तु लिङ्गाद्यूह यथायथम् ।  
 देवदुःखभिरिन्द्रियम्पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥ ६९६॥  
 स्त्री तु कृष्णाजके कृष्णवचाया देवदुःखि ।  
 देवधान्य यावनाले देवाना धान्यकेऽपि च ॥२६९७॥  
 देवधूपस्तु देवाना धूपे स्याद्गुग्गुलावपि ।  
 देवन विजिगीषाया गतिका योद्धुतौ स्तुतौ ॥२६९८॥  
 क्रीडाया व्यवहारेऽथ देवना परिदेवने ।  
 अना देवयतेश्वार्थेऽथ नाऽक्षे देवनो मत ॥ ६९९॥  
 देवभिन्नो मण्डलारयसर्पाणा विंशतिश्च षट् ।  
 ये भेदा एके तेषा द्वे योगार्थे वय त्रिषु ॥२॥

१ दृषस्त्रिया स्यापेषण्यामश्ममात्र तु नैव नप् ।

२ देवन विजिगीषाया व्यवहारे षडौ स्तुतौ ।

क्रीडायां गतिकास्त्यो क्ली देवना तु स्त्रियाम्मता ।

पुमान्देवमणिघाटगलदेशसमुद्भवे ।  
 रोमावर्त्ते महादवे कास्तुभ च प्रकीर्त्तत ॥२७ १॥  
 दवयुस्त्वृत्वाज तथा होमऽपि च पुमानथ ॥  
 वाच्यवद्वयु प्रोक्तो धामिके लोक्रयात्रिके ॥ ॥  
 नटे देवरथो रामभूमिके देवयानक ।  
 देवलस्त्वृषिभेदे ना देवाजीवे तथा पुमान् ॥ ३॥  
 स्त्रिया देववधूदेऽपत्यान्दिशि च कीर्त्तिता ।  
 देववृक्ष सप्तपर्णे मन्दारादिषु गुग्गुला ॥ ४॥  
 स्त्री देवसि धुगङ्गाया योगार्थे तु यथायथम् ।  
 देवसेना दवचम्वा स्कदपत्नीद्रकययो ॥२ ५॥  
 नागाञ्जनेभसु दर्या नागयष्टो तथा स्त्रियाम् ।  
 देवार्ह रसविद्धे क्ली हेम्नि देवोचिते त्रिषु ॥ ७ ६॥  
 देवाग्नौ देवरे पुसि स्त्री पितृ यस्त्रिया मता ।  
 देशरूपोऽस्त्रिया न्याये योगार्थे तु यथायथम् ॥ ७॥  
 देशी गुरौ पुमा मार्गोपदेष्टरि तु वाच्यवत् ।  
 स्त्री तु प्रदशिनीनामन्यामङ्गुल्यान्देशिनी मता ॥ ७ ॥  
 देष्णो बाहौ पुमा द्वे तु यजमाने मतोऽथ च ।  
 सुरूपे दानशीले च भद्यवद्देष्ण इष्यते ॥२ ९॥  
 देष्णुस्तु दुर्गमेऽपि स्यादातर्यप्यभिधेयवत् ।  
 ना देहमर्दनो व्याधौ क्ली तु देहस्य मदने ॥ १ ॥  
 देहयात्रा तु मरणे भोजनऽपि स्त्रियाम्मता ।  
 दैतिकी स्याद्दिनभृतौ क्लीब तु दिनयोगिनि ॥२७११॥  
 दैत्यो विभीतके दैत्यसुशीरे दितिजे द्वयो ।  
 अथ दत्या मुरा चण्डौषधमद्या तरेष्वपि ॥ ७१२॥  
 दैत्यदेवस्तु वरुणो पवनेऽपि पुमा मत् ।  
 दैत्यारिर्देवमात्रेऽपि पुमाश्च गरुडध्वजे ॥२ १३॥

१ दैयो विभीतके पुसि क्लीबं दैत्यसुशीरके ।

मुराख्यचण्डौषधयोर्देवा स्त्री दितिजे द्वयो ॥

दैनन्त्रिर्दिनसम्बद्ध दन्ये तु स्यान्नपुसकम् ।  
 दैन्य तु दीनताया च शोके च क्लीबमिष्यते ॥२१४॥  
 दैवो विवाहभेद स्यादैवी तेन विवाहिता ।  
 दैवतु दैवते भाग्ये नपुसकमुदीरतम् ॥२७१५॥  
 दैवज्ञस्त्रिदैवविदि दवज्ञा गृहगोलिका ।  
 दैशिक-नृत्यभेदे क्ली देशयोगिनि तु त्रिषु ॥ ७१६॥  
 आहुदैशिकव केचिदैशिकञ्चोपदेशकम् ।  
 दैष्ट क्ली याज्ञिकाना स्यात्प्रोक्ष यासादने तथा ॥२१॥  
 सम्बन्धिनि स्याद्दिष्टस्य दिष्टेरपि च वाच्यवत् ।  
 दोग्धा दोहनकारे । प्रलोभात्कवधितर्यपि ॥२१८॥  
 दोग्री तु स्तनपायि-या घात्र्या धेनावपि स्त्रियाम् ।  
 दोधक वृत्तभेदे क्ली त्रि स्वाम्यथापहारके ॥ १९॥  
 दोरकन्नपि रज्जो स्याद्दीणारु-त्र्या तु दोरिका ।  
 दोल फा-गुनशुक्लस्य चतुदशुत्सवे मत ॥२७२॥  
 दोलकस्य युक्षेसरि स्यादथ दोलकमम्बुजे ।  
 दोला प्रेङ्ख यानभेदेऽपि स्त्री स्यानीलिकौषधौ ॥ ७२१॥  
 दोलितो महिषे द्वे स्यात्कम्पिते दोलितस्त्रिषु ।  
 दोषो वातादिके दुष्टे गुणस्य प्रतियोगिनि ॥ २॥  
 दोषज्ञ पण्डिते वैद्ये त्रिषु दोषस्य बोधके ॥  
 स्यादोषा तु भुजायां स्त्री तथा रात्रौ च त मुखे ॥२७२३॥  
 रात्र्यर्थे तु निशीत्यर्थे दोषत्याद-तम-ययम् ।  
 दोषाकरस्तु चद्रे स्यादोषाणामाकरेऽपि च ॥ ४॥  
 दोषिको दोषसम्बद्धे त्रि-र्याधौ पुंसि कस्यचित् ।  
 वय स-धौ च गर्भे च क्लीबन्दाहदलक्षणम् ॥ २५॥  
 दोहलोऽस्त्री गर्भिणीच्छाभेदे श्रद्धाभिधे मत ।  
 देये वृक्षादिपुष्प्यर्थं करीषादात्रपि स्मृत ॥२२६॥  
 दौदुभी वरयात्रायान्दम्भे चैव स्त्रियाम्मता ।  
 क्लीत्वे कलेरयकेष्टाना लेरयानां यवहारिणाम् ॥२७॥

दौर्वाण्यं म्लिष्टपर्णे च दूर्वायाश्च रसे मतम् ।  
 दा यत स्याद्वयोरुग्र मत्स्यघातनजीविनि ॥ ८॥  
 कक्ष्याजीविनि चाऽम्बष्ठ पुलिङ्गस्तु नृपान्तरे ।  
 दौहद तु दुह्वेऽपि तथा दोहलनामनि ॥ ९॥  
 इच्छाविशेष गभिण्यानपुसकमुदीरितम् ।  
 द्युरस्त्री गगने ग्राहि पावकं तु पुमा मत ॥ ३ ॥  
 द्युति पुमान्द्योततौ स्त्री प्रभाभिगमकातिषु ।  
 द्युम्न धने यशस्यने बलेऽपि क्लीबमिष्यते ॥ ७३८॥  
 द्युवाऽभिगतरी त्रि स्यान्ना तु स्वगाकराजसु ।  
 द्योशदस्तु स्त्रियामुक्त स्वर्गे चैव विहायसि ॥ ३ ॥  
 द्योतस्तु द्योतनायाश्च दीप्तौ द्योता त्वय स्त्रियाम् ।  
 ज्ञेया पिङ्गलङ्गेश्यादिकयाया सुरभावपि ॥ ७३३॥  
 द्योतना तूषसि स्त्री स्यादद्योतन क्ली धनेऽक्षिण च ।  
 द्योतकार्थे स्त्रीनपोस्तु द्योतना स्यात्प्रकाशने ॥ ७३४॥  
 द्यौत्र क्लीब प्रमाणेऽह्नि प्रतोदयोतिषोरपि ।  
 द्रमिलस्तु द्वयोर्मर्त्ये त्रिराज्यप्रभवे मत ॥ ३५॥  
 वैश्यपूर्वक्षत्रियाया व्रात्याज्जातेऽपि कीर्त्तित ।  
 द्रवो नर्मणि निर्यासे द्रवणे ना पलायने ॥ ३६॥  
 नद्या तु स्त्री द्रवा त्रिस्तु भिन्नेऽपि तरले घने ।  
 द्रवत्पलायके चैव द्रावकेपि त्रिषु स्मृत ॥ २ ३७॥  
 द्रवती तु स्त्रियामेषा न्यग्रोधीस्तम्ब इष्यते ।  
 द्रविण न द्वयोर्वित्ते काश्चने च पराक्रमे ॥ ७३८॥  
 द्रव्य स्यात्पित्तले वित्ते पृथिव्यादौ विलेयने ।  
 याग्ये च भेषजे क्लीबमृक्सामेष्विष्टिगामिषु ॥ ३९॥  
 द्रुविकारे पुनर्द्रव्यमभिधेयवदिष्यते ।  
 द्राङ्गस्तु सत्त्वरे प्राशावपि वाच्यवदिष्यते ॥ ७४४ ॥  
 द्रावकस्त्रि द्रावयितृद्रोत्रोर्ना घोषकाश्मनो ॥  
 द्रावको ग्रावभेदे स्याद्विदग्धे मोषकेऽपि च ॥ २७४१॥

क्ली तु त प्रसवे द्रावयत्यथे तु न ना भवेत् ।  
 द्रावणस्तु विडारये स्यालवण कतकद्रुमे ॥ ४ ॥  
 द्रुधणो मुग्दरेऽपि स्यादद्रुहिणे च परश्वधे ।  
 द्रुणा द्रयोवृश्चिके स्यात्क्लीब तु धनुषि द्रुणम् ४३॥  
 स्त्रिया द्रुणा स्या कच्छ या मौ-र्या तु स्यादद्रुणी स्त्रियाम् ।  
 द्रुत विलीने शीघ्रे च विद्राणे चापि वाच्यवत् ॥२७४४॥  
 द्रुमो ना वृक्षमात्रेऽपि ना दीवृक्षे तथा स्मृत ।  
 पारिजातद्रुमे राजभदे किम्पुरुषेश्वरे ॥२४५॥  
 द्रुमामयस्तु लाक्षाया स्याद्द्रुमस्यामयेऽप च ।  
 द्रुमादन स्याच्छिशिर ऋता ना त्रि तु यौगिके ॥ ४६॥  
 द्रुहिणो ब्रह्मविष्णोर्ना त्रिबुद्रे क्ली तु पद्मनि ।  
 द्रोणो द्रयादग्धकाक पुमास्तु स्या कृपीपतौ ॥२४॥  
 शाकस्तम्बा तरे चव द्रोणा तु चतुराहके ।  
 दारुपात्रविशेष स्यादद्रोणी तु द्रवभाजने ॥ ४८॥  
 तथा काष्ठांश्चुवाहिया द्रोणपुण्या गिरिप्लवे ।  
 शैलस्य शिलयो सधावपि द्रोणी प्रकीर्त्तिता ॥ ४९॥  
 द्रोहो द्वेषे पुमाद्वे तु भवेद्विग्रखपीसुते ।  
 द्रोहकस्त्रिषु वैडालवृत्तौ गाथाऽतरे तु ना ॥२५॥  
 द्रोहाट कथितो गाथाप्रभेदे मृगलुधके ।  
 द्वद्रोऽस्त्री युधि युग्ये तु रहस्ये मिथुनेऽपि नप् ॥ ५१॥  
 पुल्लिङ्गस्तु भवेद्द्वद्व समासे चाथचोदिते ।  
 द्वद्वन्तु भेद्यलिङ्ग स्याद्यग्मावयवस्तुषु ॥२७५॥  
 द्वादशोऽस्त्री विष्णुतिथौ सरयाया पूरणे त्रिषु ।  
 द्वापर सशयेऽप स्यात्तृतीयेऽपि युगे पुमान् ॥२५३॥  
 द्वाद्वारे चाप्युपाये च स्त्रिया द्वारतु नप्तयो ॥  
 द्विकमात्ममनोयुग्मे क्लीब द्वे काककोकयो ॥ ५४॥  
 त्रिषु तु द्वितयेऽपि स्याद्द्वाभ्यां क्रीतादिकेष्वपि ।  
 द्विजो द्वे ब्राह्मणक्षत्रवैश्येष्वण्डोद्भवेषु च ॥२५५॥

दत्तेषु पुंसि भाग्या तु हरेणा च द्विजा स्त्रियाम् ।  
 द्विजमा पुंसि दत्तेऽथ द्व ब्रह्मक्षत्रप्रितखगे ॥ ७५६ ॥  
 द्विजपोतो द्वयो शूद्रे तथा स्यापक्षिण शिशो ।  
 द्विजराजस्तन तेऽपि च द्रे ऽ गच्छे पुमान् ॥ ७५ ॥  
 द्विजाति पक्षिणि ब्रह्मक्षत्रविटसु तथा पुमान् ।  
 द्विजिह्वस्तु द्वयो सर्पे खचके तु त्रिषु स्मृत ॥ ५ ॥  
 द्वितीया स्त्री द्वितीयस्या विभक्ता ब्रह्मणस्त्रियौ ॥  
 भार्यायाश्च द्वितीयस्तु द्वयो स्यात्पूरण त्रिषु ॥ ५९ ॥  
 द्विपावद्वे विहगे मर्त्ये द्वयद्विपके तु त्रिषु स्मृत ।  
 द्विषस्तु पुंसि शत्रौ स्यात्त्रिलिङ्गो द्वेष्टरि स्मृत ॥ ६ ॥  
 द्वीपी जलाशयभिदि स्त्री द्वीपोऽस्य तरीपके ।  
 द्वीपवासि धुनदयोद्वीपनत्यापगाशुवो ॥ ७६१ ॥  
 द्वीपिस्तु श्वापदे कालेऽपि च न क्लीबमिष्यत ।  
 द्वप रथ द्वीपिचर्मच्छ नेऽङ्गे द्वीपिनस्तथा ॥ २६ ॥  
 विकारेऽप्यासमुद्रा तद्वीपसम्बन्धिवस्तुनि ।  
 अथान मानुषात्तस्थादभिधेयवदिष्यते ॥ ३॥

### ध

धो धर्मब्रह्मधनदधेवतेष्वथ न धने ।  
 धो धा च ब्रह्मणि ख्यातौ ना धा त्रिधारके भवेत् ॥ ६४ ॥  
 धटस्तुलाराशिदि यतुलयोश्चीवरे धटी ।  
 धत्तो द्रुमेऽर्के क्ली गेहव्योमसूत्रे दिवि स्त्रियाम् ॥ ६५ ॥  
 धत्तरो मातुले क्ली तु तत्फले हेम्नि चष्यते ।  
 धत्र गेहव्योमसूत्रे दिवि स्त्री नाऽर्कवृक्षयो ॥ ७६६ ॥

१ धो ना धर्मे कुबेरे च धं तु क्लीब धने मतम् ।

२ धटो विष्णुतुलायां स्याद्धटी धीरे च धासस ।

धन वित्ते गोव्रज द्वितीयर्धे स्नेहपात्रयो ।  
 धनञ्जयोऽर्जुने द्वाग्निचित्रकेऽस्यहिमदया ॥२६॥  
 धनदो ना कुबेरे च वृक्षे त्रिस्तु धनप्रदे ।  
 द्वयोस्तु गुह्यके गेहभेदे तु धनदम्मतम् ॥ ६८॥  
 धनधारणमित्येत्स्वापतेयस्य धारणे ।  
 व्यवहारप्रवृत्तानां लयभेदेऽपि कीर्तितम् ॥२७६९॥  
 पुमां धनपतिर्यक्षराज आढ्य तु स त्रिषु ।  
 धनवानम्बुधौ स्त्री तु धानष्ठा धनवत्यपि ॥२८॥  
 उद्भेदे धनहर पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ।  
 नेपालगध्रये तु मता धनहरी स्त्रियाम् ॥२९॥  
 धनाध्यक्ष कुबेरेऽपि स्याद्वनाधिकृतेऽपि ना ।  
 धनिक साधुधनिनोस्त्रि स्त्री स्यासाधुयोषति ॥ २९॥  
 धनिकाऽपि च धायके क्वचित्तु नृपयोषिति ।  
 धनी कुबेरे पुल्लिङ्गस्त्रिस्तु वाधुषिकाढ्ययो ॥ ७३॥  
 धनिष्ठस्तीव धनिकस्त्रिधनिष्ठश्चमिदि स्त्रियाम् ।  
 धनुधनु प्रियालस्य फले पापे च न द्वयो ॥२८०॥  
 पुमांस्तु स्यात्प्रियालद्रौ राशिभेदे शरासने ।  
 मालातके चतुर्हस्तमानेऽपि स्याद्वनूरपि ॥२८१॥  
 द्वीपे तु पुलिने नद्यादितटे स्त्री धनुधनू ।  
 धनुका तु स्त्रियां वध्वा भगलिङ्गे तु साधुनि ॥२८२॥  
 धनुग्रहस्तु पुल्लिङ्ग प्रमाणेऽष्टाङ्गुले मत ।  
 चापस्य ग्रहण चाथ त्रिग्रहीतरि धन्वन ॥ २८३॥  
 धनुर्दण्डश्चतुर्हस्तप्रमाणे यागिकेऽपि च ।  
 धनुलता धनुर्वल्या सोमवल्यामपीष्यते ॥२८४॥

१ धन गवा व्रजे वित्ते लग्नाद्वाशौ द्वितीयके ।

२ धनञ्जयोर्जुने द्वाग्निनागकायानिष्ठान्तरे ।

३ धनदस्तु कुबेरे न भगवत्त धनप्रदे ।

उक्तं रास्तं चान्तश्च ।



धनुर्नृशण्डश्चापे क्ली चतुहस्तप्रमाणके ।  
 धनुष्करश्चापकारे पुष्पभदे धनुष्करी ॥ ९॥  
 धनुष्कोटिश्रापकोटा स्याद्रामे वरतीथके ।  
 धनुस्त्रिया धनु र्याया धनुष्यप्युत्तमस्त्रियाम ॥ ८ ॥  
 मूर्वामहे द्रवारुण्याधनु श्रणी प्रकीर्त्तिता ।  
 धनेशस्तु कुबेरे ना स्यावाढ्ये भेद्यलिङ्गक ॥ १॥  
 धन्यो धननिमित्ते च पुण्यवयपि वायवत् ।  
 अनीशवादिनि क्रौञ्चद्वीपवेदये पुनद्वयो ॥ ८ ॥  
 धया लता बृहतिकाधायाम्मलकीषु च ।  
 धन्या स्यान्मरुदेशे ना योमिनि चापत्स्थलेषु नप् ॥ ८३॥  
 धवतरि काशिराज भास्करेऽप मत पुमान् ।  
 धन्वी तु ना धनूराशौ धानु के तु भवेत्त्रिषु ॥२८॥  
 धमनस्तु नडस्तम्ये पुसि नासापुटऽपि च ।  
 धमनी स्त्री सिराहड्विलासिन्योश्च वाचि च ॥ १॥  
 वायवद्धमन करे स्याद्भस्त्राध्मापकेऽपि च ।  
 धर कूर्मेशकार्पासीवसुभृदिरितूलके ॥ ८६॥  
 धरणन्त्वष्टके हेम्न पलाना सप्ततौ तथा ।  
 ताम्रस्य दशकेऽयेषा रूप्यकर्प च धारणे ॥५८७॥  
 धारणी तु स्त्रियामेषा वसुधायाम्प्रकीर्त्तिता ।  
 धरा भूमिगुह्योश्च स्त्रीगर्भाशयमेदसा ॥ ७८८॥  
 धराधरस्तु शैलेऽपि शिवेऽपि च पुमान्मत ।  
 धर्णसिस्तु पुमाञ्छैले सलिले तु नपुसकम् ॥२७८९॥  
 धर्त्ता ऋदन्त पुच्छिङ्गो धर्मो स्याद्धारके त्रिषु ।  
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे लग्नराशित ॥२७९॥  
 राशा च नवमे प्राहुर्मौहर्त्ता ना तु सोमपे ।  
 यायाचारयमार्हिसाख्यज्ञचापेषु राशि च ॥ ७९१॥  
 प्रधानशेषे सत्ये च श्रुतौ दण्डविनिर्णये ।  
 सताश्च सङ्गते यज्ञे तथैवोपनिषद्यपि ॥२७९॥

धर्मणस्तु प्रमाद्वृक्षभदसर्पग्रभदयो ।  
 धर्मपाल पुमान्वङ्ग त्रिस्तु घमस्य पालके ॥२ ९३॥  
 धर्मराजस्तु बुद्धेऽपि यमेऽपि च युधिष्ठिरे ।  
 धर्षण क्ली मत धार्ष्ट्येऽभिभवे सुरतेऽप्यथ ॥ ९४॥  
 धर्षणी कुलटाया स्त्री धर्षणम्भसने न ना ।  
 धवो ना धवने धूर्त्ते प्रभौ पत्यौ च योषिताम् ॥२ ९५॥  
 धुरधरद्रुमऽथ क्ली तत्पले द्व तु मानवे ।  
 धवलो वृषभे श्वते वर्णेऽथ धवला गवि ॥२ ९६॥  
 वाच्यवत्तु श्वतवणयुते श्रेष्ठे च सुन्दरे ।  
 धाक पुमानोदनेऽपि कीर्तितश्चानद्बुद्धपि ॥ ९ ॥  
 धाणकस्तु पुमाश्छिद्रविधाने हविषा ग्रहे ।  
 धाणका स्त्री पणतृतीयाश सम्परिकीर्तिता ॥२ ९८॥  
 धातुर्धनेऽस्थिन् लोहे च शरीरे गैरिके रसे ।  
 स्वर्णे रेतसि पाषाणे स्याद्भूवादिसुवन्तयो ॥२७९९॥  
 वातादिश दस्यर्शादिगैरिकादित्वगादिषु ।  
 आकारे च स्वभावे च पाद पञ्चाक्षरे तथा ॥२८ ॥  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु श्लेष्मादौ च पुमानयम् ।  
 धाता ब्रह्मणि ना त्रिस्तु पिबपालककभक्तषु ॥२८ १॥

।

धात्री द्वयो स्यात्किं तवे धात्री तु स्त्र्युपमातरि ॥२८ २॥  
 जनयामामलक्याञ्च वसुधायाश्च कीर्तिता ।  
 धान तु धारणे पाने दाने च क्लीबमिष्यते ॥ ८ ३॥  
 धाना भृष्टयवेऽपि स्त्री फलबीज च भूरुहाम् ।  
 धाना स्त्री भूरुहाम्बीज कुस्तुम्बुरुणि चाप्यथ ॥२८ ४॥  
 भूमि भृष्टयवेष्वेव स्थूले तच्चूणकेऽपि च ।  
 धाम त्वदत्त तिलकतेजसो क्लीबमिष्यते ॥२८ ५॥

१ धो धा च ब्रह्मणि ख्यातो धा तु स्याद्धारके पि च ।

२ धात्री जनयामलकी वसुमत्युपमातृषु ।



धिष्ण्योल्काया क्ली तु गेहासनस्थानक्षशक्तिषु ।  
 धीर्ज्ञान ज्ञानभेदे च बुद्धौ कर्माण च स्त्रियाम् ॥२८२॥  
 धीता बुद्धौ सुताया च कयाया च स्त्रिया मता ।  
 धीतिस्तु यङ्कुलौ पानेऽप्याधारे च यवस्थितौ ॥ ८२१॥  
 धीमा बृहस्पतौ पुंसि पण्डिते वभिधेयवत् ।  
 धीरोऽधौ म थरे तु त्रि धातमद्विदुषोरपि ॥ ८२ ॥  
 धीर तु कुङ्कुमे धीरा गुह्य याम्परिकीर्त्तिता ।  
 धीवा व्याधौ पुमाध्रीवा धीगरी सुरमत्स्ययो ॥ ८२३॥  
 धीवधीवाधीवरीति त्रिषु कर्मकरे भवेत् ।  
 धीवरो नाऽम्बुधौ व्याधे काललोहे तु धीवरम् ॥ ८ ४॥  
 द्व तु दाशेऽपि मर्त्ये च कैवर्त्तीष्वृषलोद्भवे ।  
 धुतन्तु कम्पिते त्यक्ते भर्त्सिते धूतवत्त्रिषु ॥२८२५॥  
 धुनी नद्यां स्त्रियामुक्ता धुनस्तु स्यान्नरे पुमान् ।  
 धुधुमार शक्रगोपे गृहधूमे पदाऽलिके ॥२८२६॥  
 धूरङ्कुलौ यानमुखे साम्नाद्रष्टु केषुचित् ।  
 भारे विकृतगीतौ स्त्री गायत्राङ्गयसामनि ॥ ८२ ॥  
 धुरधरो धवद्रौ ना वाच्यलिङ्गस्तु धूर्वहे ।  
 धूरुदता स्त्रियामेव धूनने परिकीर्त्तिता ॥२८२८॥  
 धूका स्त्री कामिलाया स्याद्भुको याधौ पुमान्मत ।  
 धूत तु कम्पिते त्यक्ते भर्त्सितेऽप्यभिधेयवत् ॥२८२९॥  
 धूमकेतन इत्युक्त केतुग्रह हुताशयोः ।  
 धूमकेतु पुमानग्नौ स्यादुत्पातातरेऽपि च ॥२८३॥  
 धूमलो ना कृष्णरक्ते वर्णे त्रिषु तु तद्वति ।  
 देवताचनतूर्ये तु धूमलम्पुनपुसकम् ॥८२३१॥  
 धूर्त्त शिवे कुरवके ना धुधूरकदम्बयो ।  
 क्लीब तु खण्डलवणे प्रसवे चोक्तभूरुहाम् ॥२८३२॥  
 अयोमयेऽपि पत्राङ्गे मेघलिङ्गन्तु वज्रके ।  
 धूलिकदम्बो वरुणफले नीपान्तरे पुमान् ॥२८३३॥

ऋसरो द्व खरे स्त्री तु ऋसरी किंनरीभिदि ।  
 स्तोत्रपाण्डुरर्णो तु ऋसरो ना त्रि तद्वति ॥ ८३४ ॥  
 धृतराष्ट्र सुराक्षि स्यान्नागक्षत्रियभदयो ।  
 धृतराष्ट्री स्त्रियामषा हसप-याम्प्रकीर्त्तिता ॥ ८३५ ॥  
 धृतिर्धारणस-तोषधर्मशार्थसुखे स्त्रियाम् ।  
 द्रामसत्पुत्तरच्छन्दोविशेषेऽपि तथा मता ॥ ८३६ ॥  
 धृत्वा विष्णौ गिराव-धौ यता ना धृत्सरी भुवि ।  
 धृष्टि पुमा-भवेद्रश्मौ स्त्रिया सा धर्षण मता ॥ ८३७ ॥  
 धृष्णु प्रग-भे चारे त्रिर्ना तु म तापशैल्यो ।  
 धेनु स्त्रिया स्याद्वस्ति-यान्नवद्वतगरीगिरो ॥ ८३८ ॥  
 नपुसकन्तु धेन्वे तत्सामभेदे कश्चिन्मतम् ।  
 धेनुका क्षुरिकोमागोकरेणुष्मसुरे तु ना ॥ ८३९ ॥  
 धैनुक-धेनुसङ्घेऽपि रतब-धातरे तु नप् ।  
 धोतस्तु मारुते पुसि शठं तु त्रिषु कीर्त्तित ॥ ८४० ॥  
 धोरण बाह्वनेऽश्वानां धोरिते रथगतौ च नप् ।  
 त्रिषु त्वेतद्रतियुतेऽथ हसे धोरणो द्वयो ॥ ८४१ ॥  
 ध्यामन्दमनके ग-धतृणेऽथ ध्यामले त्रिषु ।  
 ग्राजि पिठकजातौ स्त्री वात्यायामपि कीर्त्तिता ॥ ८४२ ॥  
 गुन्न शङ्खौ हरे विष्णौ वटे चोत्तानपादजे ।  
 वसुयोगभिदो पुसि त्रिर्नित्ये निश्चले स्फुट ॥ ८४३ ॥  
 गुवा तु स्त्री सालपर्ण्या गीतिसुग्भेदयोर्भुवि ।  
 ध्वजमस्त्री पताकायाञ्चिह्ने पूर्वदिशो गृहे ॥ ८४४ ॥  
 खटवाङ्गशिश्नयोर्ना तु तालग्रौ शौण्डिके द्वये ।  
 ध्वजी द्वे शौण्डिके चम्बां ध्वजिनी त्रिर्ध्वजाचिते ॥ ८४५ ॥  
 ध्वनिताला तु वीणाया त्रेणुकाहलयोरपि ।  
 ध्वस्त ग्रासीकृते लुप्ते नयहीनेऽपि वाच्यवत् ॥ ८४६ ॥  
 ध्वाङ्गो ध्वाङ्गी बके काके ध्वाङ्गा द्वे घोरबाशिते ।  
 ना भिक्षौ तक्षके ध्वाङ्गो ध्वाङ्गी कक्कोलिकौषधी ॥ ८४७ ॥  
 ध्वाङ्गिर्ध्वाङ्गतिधातौ ना स्त्री तु स्याद्घोरबाशिते ॥ ८४८ ॥

## न

न पुमासुगते बधे द्विरण्डे प्रस्तुतेऽपि च ॥२८४८॥  
 नकुलस्तु द्वयोबधौ सहदेवाग्रजे तु ना ।  
 ऋषिभेदे बभ्रुवर्णे त्रि तु तद्वणसयुते ॥२८४९॥  
 नकुली तु स्त्रिया मास्या कुक्कुट्याश्च प्रकीर्त्तिता ।  
 नक्ष्वारो देवरे ना त्रिषु तु स्यान्निराश्रये ॥२८५०॥  
 नक्तश्चरो रात्रिचरे त्रि द्व तूलकरक्षसो ।  
 नक्रो द्वयो स्याकुम्भीरग्राहसञ्ज्ञकयादसो ॥२८५१॥  
 नक्षत्रनेमि स्त्री रेवत्याम्पुमाविष्णुच द्वयो ।  
 नक्षत्रमाला स्त्री प्रोक्ता हास्तमस्तकभूषणे ॥२८५२॥  
 स्थासकारये तथा सप्तविंशत्या मौक्तिकै कृते ।  
 एकयष्टौ हारभेदे नक्षत्राणा तथाऽज्वलौ ॥२८५३॥  
 नखोऽस्त्री नखरे क्ली स्त्री नखी शुक्त्यारयभेषजे ।  
 नखरायुध इत्युक्तो विडाले त्रि तु यौगिके ॥२८५४॥  
 नगस्तु पवते पुसि तरावप्यगवमत ।  
 नगभूषणमित्येतद्वरितालेऽपि यौगिके ॥२८५५॥  
 नगौका पुसि शरभे पक्षिपञ्चास्ययोरपि ।  
 नग्नो वदिक्षपणयोस्त्रित्वनग्ने दिगम्बरे ॥२८५६॥  
 नग्निका तु कुमार्यान्नग्नक क्षपणवदिनो ।  
 नजभावे निषेधे च स्वरूपार्थेऽप्यतिक्रमे ॥२८५७॥  
 ईषदर्थे च सादृश्ये तद्विहीनतद्वययो ।  
 नटण्डुण्डुमेऽशोके शैलूषे तु नटो नटी ॥२८५८॥  
 नटी नल्यपराख्यायां स्त्री विद्रुमलतौषधौ ।  
 नतन्नमस्कृते वक्त्रे ब धुरे चामिधेयवत् ॥ ८५९॥  
 नपुसक तु नमने नगरेऽप्यगुरौ मतम् ।  
 नदी धुयान्नदस्तु स्यात्स्तोतयपि सरस्वति ॥२८६॥

नदनुस्तु मृधे मेधे पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ।  
 नदीका त समुद्र ना हिजले सिन्दुवारके ॥२८६१॥  
 नदीकाता तु जम्बवा स्त्री काकजङ्घौषधावपि ।  
 नदीभव क्ली लवणे सैधवे त्रिसरिद्रवे ॥२८६२॥  
 नदीष्ण कुशलेऽपि स्यात्तरो तु कुशले त्रिषु ।  
 नद्धो बद्धे तथोद्बृत्तेऽप्यभिधेयवादष्यते ॥ ८६३॥  
 ननु स्यादव्यय प्रश्नदुष्टोक्तयोश्च विनिग्रहे ।  
 अलुप्रश्ने परकृतावधिकारे च सभ्रमे ॥ ८६४॥  
 आमन्त्रणेऽप्यनुनये प्रश्नाऽनुज्ञाऽवधारणे ।  
 नदक पुसि कृष्णस्य खङ्गेऽसौ पारकीर्तित ॥ ८६५॥  
 न दको वायवत्प्रोक्तो हषके कुलपालके ।  
 नन्दना न दना पुत्रे दुहितर्यपि च द्वयो ॥२८६६॥  
 इन्द्रोद्याने न दन स्यान्नन्दथो च नपुसकम् ।  
 न ना नदयतेरर्थे त्रिषु न दयितर्ययम् ॥२८६७॥  
 नदतस्तु पुमान्सरयौ नन्दती स्यात्सखीजने ।  
 नन्दतामिति यत्राशीनदन्तस्त्रिषु तत्र स ॥ ८६८॥  
 नन्दयत पुमाराज्ञि नदयती सुखेऽपि च ।  
 सुवर्णेऽपि च पार्वत्या त्रि तु नन्दयितर्यपि ॥ ८६९॥  
 नन्दा तु प्रतिपत्पृथ्वीकादशीषु स्नुहीतरौ ।  
 अलिङ्गरे च पार्वत्याबन्द पूर्ववृषे च ॥२८७०॥  
 निधिमेदे यशोदेशे द्वे तु नन्दनकर्मणि ।  
 नन्दि स्त्री स्यात्सुखे मेरीवाद्ये धूताङ्गभिद्यपि ॥२८७१॥  
 पुमास्तु नन्दतौ धातौ प्रतीहारे शिवस्य च ।  
 नन्दी नन्दीश्वरे माषे नाख्यनाद्याश्च पाठके ॥२८७२॥  
 वनद्रुमे गदभाण्डे तथा पुल्लिङ्ग इष्यते ।  
 नन्दिनी पावती गङ्गाधेनुमेदननाद्यु ॥२८७३॥

शस्तवास्तुस्थलेऽयोध्याहरीतक्युपकुचिषु ।  
 नन्दिवधन ईशाने च द्रवश्यनृपातरे ॥२८४॥  
 पुत्र च पञ्चदश्याञ्च योगार्थे तु यथायथम् ।  
 न द्यावर्त्तस्तु वेष्मादे स्याद्वियासातरे पुमान् ॥२८५॥  
 तगरारये पुष्पगुमेऽप्यथ तत्प्रसवे तु नप ।  
 नपातद्वयोस्तकारात् पौत्रानतरवशजे ॥२८६॥  
 नप्ता द्वे पौत्रदौहित्रत पुत्रादिषु कीर्त्तित ।  
 नभश्चरो घने वाते द्वे तु विद्याधरे खगे ॥२८७॥  
 नभा धृद्वे त्रि खस्वर्गाम्बुषु तु क्ली नभोऽस्त्रियाम् ।  
 अन्नश्रावणवर्षासु घ्राणे सूर्ये पतदग्रहे ॥२८८॥  
 विसत तावथ द्यावापृथिव्योर्नभसी इति ।  
 नभसस्तु पुमाव्योम्नि ऋतावपि सरित्पतौ ॥२८९॥  
 नभाका चक्रवाके स्त्री नभाको वायसे द्वयो ।  
 नमत पुसि धूमे च तथा दिनकरे मत ॥२९०॥  
 क्लीबतूर्णास्तरणके ह्रस्वे तु नमतस्त्रिषु ।  
 नमत पुसि वेत्रे च प्रणामे च प्रकीर्त्तित ॥ २९१॥  
 त्रिर्नभस्योऽचनीये स्त्री नमस्याऽर्चन इष्यते ।  
 नमस्कारी खदिर्या स्त्री नमस्करो नतौ पुमान् ॥२९२॥  
 नमिनमतिधातौ च जैनतीर्थे करातरे ।  
 विद्याधरेऽश्वरेऽप्येष कस्मिंश्चि पुसि कीर्त्तित ॥ २९३॥  
 नमुचिस्तु पुमादैः प्रभेदे पुष्पशरेऽपि च ।  
 नयो नीतौ तथा धूतभेदेऽपि च पुमान्मत ॥ २९४॥  
 नर पुस्यर्जुने विष्णोरवताराज्जन्तरे नये ।  
 मनुष्यजातौ तु द्वे स्यात्स्त्र्यर्थे नारीति तत्र च ॥२९५॥  
 नरन्तु रामकपूरे सलिले च नपुसकम् ।  
 नरक पुसि निरये तथा स्यादसुरातरे ॥२९६॥  
 नराङ्गं मेहने क्लीब नराङ्गो ना वरण्डके ।  
 नरेद्रो विषवैद्ये च मन्त्रवादिनि भूमिपे ॥२९७॥



नरेन्द्रपत्नी भूमा च राजपत्यामपि स्त्रियाम् ।  
 नत्तकश्चरण पुसि नट पोटगलेऽपि च ॥२८८॥  
 नत्तकी लासिकायाश्च करेणा च स्त्रियां मता ।  
 नर्त्तनप्रिय इत्युक्तो मयूरे त्रि तु यागिके ॥ ८८९॥  
 नर्मठ पुसि विज्ञे च चूचुके च प्रकीर्त्तित ।  
 नर्मद केलिसचिवे रेवाया नर्मदा मता ॥ ८९ ॥  
 नर्मरा नीरज स्त्री भातुदरीसुरलासु च ।  
 नर्मर द्रुमकपूरे नाराचे मानवेऽजुन ॥२८९१॥  
 नल पोटगले राज्ञि पितृदेवे कपीश्वरे ।  
 नल तु कमले क्लीब नलीनद्याम्प्रकीर्त्तिता ॥२८९२॥  
 नलद स्यादुशीरेऽपि मास्यां पुष्परसेऽपि नप ।  
 नलिन नलिकाया क्ली यञ्च तु नलिनी त्रिषु ॥२८९३॥  
 सरसीस्वर्धुनीपद्मस्तम्बेषु नलिनी स्त्रियाम् ।  
 नव स्तुतौ ना त्रिर्न ये कार्पास्यातु नवा स्त्रियाम् ॥ ८९४॥  
 नवनीतन्तु योगार्थे घृतस्य प्रकृतावपि ।  
 नवनम्पूरणार्थे त्रिनवमी स्यादुमातिथौ ॥ ८९५॥  
 सप्तलायाभवायाश्च मालायाभवमालिका ।  
 नश्वर नाशशीलादौ त्रि द याचित्वाचि च ॥२८९६॥  
 नष्ट पलायितमृततिरोभूतेषु वाच्यवत् ।  
 स्पृष्टमैथुनकयायां नष्टा स्त्रीलिङ्ग इष्यते ॥२८९ ॥  
 नस्रो नासापुटेऽपि स्यादृषावपि पुमानयम् ।  
 नहुषो द्वे मनुष्ये ना नागभदे नृपातरे ॥२८९८॥  
 नाक सूर्ये पुमानस्त्री स्वयंभोर्द्वे तु पुत्रयो ।  
 दु खामाववति त्वेष वायवकाक इष्यते ॥२८ ९॥  
 नाकुल यतरे शैले वमीके ना वनस्पतौ ।  
 नाकुली कुक्कुटीकन्दे स्त्री रास्नाचव्ययोरपि ॥२९ ॥

१ सुरलाया वरीभान्दु रीज स्त्रीषु नर्मरा ।

स्त्रीर्वा स्याद्द्रुमकपूरे नाराचे मानवे ज्ञुने ॥

यवतिक्तासपग धानामोषघ्योरपि स्मृता ।  
 ऊध्वज्ञोरुपविष्टस्य भुजाभ्याञ्जङ्घयोर्द्वयम् ॥२९ १॥  
 बद्धावस्थानरूपे चासने क्ली नाकुलम्मतम् ।  
 अथो नकुलसम्बन्धियप्येतत्त्रिषु नाकुलम् ॥२९ २॥  
 नागा मघ नागदत्याम्पुत्रागे नागकेसरे ।  
 देहाऽनिला तरे मुस्ते नागवत्याम्पुमामत ॥२९ ३॥  
 नागोऽस्त्री सीसके वङ्गे क्ली तु स्त्रीकारणा तरे ।  
 द्वयोर्गजे च सर्पे च तथा ग्राह्यारययादसि ॥ ९ ४॥  
 स्थूले तु वायवन्नाग कशचारिणि च स्मृत ।  
 स्त्रिया तत्र च नागी स्यात् श्रष्टे पुंस्युत्तरस्थित ॥ ९ ५॥  
 नागदन्त पुमाभित्तिशङ्कौ नियूहनामनि ।  
 नागस्य च रदे नागदती त्वौषधगुल्मके ॥ ९ ६॥  
 कुम्भानिकुम्भाद्यभिधे श्रीहस्तियामपीष्यते ।  
 नपुसके नागदतमासना तर इष्यते ॥२९ ॥  
 यदूध्वज्ञो प्रसृतयोर्भुजयोर्जानुसस्थयो ।  
 नागपाश पुमास्त्रीणा करणे वरुणायुधे ॥२९ ८॥  
 नागपुष्पस्तु पुत्रागे चम्पक नागकेसरे ।  
 नागभूषणमित्येतद्वरितालेऽपि यौगिके ॥२९ ९॥  
 नागर मुस्तके शुण्ठ्याञ्जुक्रे राजकशेरुणि ।  
 नागरस्तु त्रिलिङ्ग स्याद्विदग्धे नगरोद्भवे ॥२९१ ॥  
 स्यान्नागवारिकस्ताक्ष्ये गणस्थे राजकुञ्जरे ।  
 हस्तिपे च मयूरे तु स द्वयो पारकीर्त्तित ॥२९११॥  
 नागोदयुदरत्राण भटाना त्रि तु यौगिके ।  
 नाटक रूपकमिदि नाटिका तूपरूपके ॥२९१२॥  
 नाटको नाटयितरि नर्तितर्यपि वायवत् ।  
 नाट्य घोषारयलोहे क्ली नृत्त तौर्यत्रिके तथा ॥२९१३॥  
 अथ नाट्यनाटयितव्येऽभिधेयवदिष्यते ।  
 नाडी नाडीत्रये ताले धमन्यर्धमुहूर्त्तयो ॥२९१४॥

सच्छिद्रदीर्घद्रव्येऽपि चर्याया कुहनस्य च ।  
 नक्षत्रे नासिकाया स्त्री नाली नाडिश्च नाटिवत् ॥२९१५॥  
 नाडीतरङ्ग काकोले हिण्डके रतहिण्डके ।  
 नाथस्त्वद्ग पुमानेष स्यात्प्रभा त्वभिधेयवत् ॥ ९१६॥  
 द्वयोस्तु नाथो नाथेति याञ्चैश्वर्यादिके भवेत् ।  
 नाथात् उक्त आहारे पुमाश्चैव प्रजापतौ ॥ ९१७॥  
 नादो ध्वनौ स्तोतरि ना नदसम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 नादेयो नागरङ्गे स्यान्नादेयी जलवेतसे ॥ ९१८॥  
 कर्कर्याम्भूमिजम्बवाश्च महोदर्यारयमुस्तके ।  
 कङ्कुष्ठप्यथ नादेय क्ली सि ध्रुलवण मतम् ॥ ९१ ॥  
 नदीसम्बन्धिनि त्वेष स्यन्नादेयोऽभिधेयवत् ।  
 नानाऽयय विनार्थेऽपि तथाऽनेकोभयाथयो ॥ ९ ॥  
 नाना स्त्रिया स्याद्भारत्या जनया दुहितर्यपि ।  
 नान्दि कयाणवृद्धौ स्त्री नाध्वारम्भाचनान्तरे ॥२९१॥  
 नापितस्तु द्वयोर्विप्रवैश्याजे यभिचारत ।  
 मर्त्यजात्य तरेऽम्बष्ठक्षत्रियासम्भवेऽपि च ॥२९२॥  
 नाभिद्वयो स्याज्जत्वङ्गे यस्य सज्ञा प्रतारिका ।  
 रथचक्रस्य मध्यस्थपिण्डिकायाञ्च ना पुन ॥ ९ ३॥  
 आद्यश्चत्रिभेदेऽत्यमनौ मुरयमहीपतौ ।  
 नाभि क्ली भारते वर्षे स्त्रिया कस्तूरिकामदे ॥२९२४॥  
 नामाञ्ज्नी प्रातिपदिके सज्ञाया क्ली तु वारिणि ।  
 अव्यय त्वभ्युपगमरोषसरणविस्मये ॥२९२५॥  
 सम्भा यकुत्साप्राकाश्यविकल्पे नाम कीर्तितम् ।  
 नायस्त्रि नेतरि प्राप्तौ ना नायी तु दिशि स्त्रियाम् ॥२९२६॥  
 नायको नायिका द्वे नेतरि स्त्रीपुंसयोर्भवेत् ।  
 नायकस्त्रि प्रभौ श्रेष्ठे हारमध्यमणौ तु ना ॥२९२७॥  
 नार क्ली भारताद्वर्षादक्षिणे प्रतिजानते ।  
 कस्मिन्निचद तरद्वीपे त्रि तु स्यान्नरयोगिनि ॥२९२८॥

नारी तु योषितितिव्योनास्तणकतीरयो ।  
 आपो नारा इति प्रोक्तास्वप्सु लिङ्ग न निश्चितम् ॥ ९२९॥  
 नारको नरके ना त्रिलिङ्गो नरकयोगिनि ।  
 नारकीटोऽश्वकीट स्यात्स्वदत्ताशाविहन्तरि ॥ ९३ ॥  
 नारङ्गो नारङ्गद्रौ विटे ना पिप्पलीरसे ।  
 यमजे तु द्वयो क्ली तु नागरङ्गफले मतम् ॥ ९३१॥  
 नारायेषणिकाया स्त्री नाऽयोबाणाम्बुहस्तिनो ।  
 नारायण पुमान्विष्णौ नरस्य सहचारिणि ॥ २९३२॥  
 तस्यावतारभदे च स्त्री तु नारायणी श्रियाम् ।  
 पावत्याञ्च शतावर्या गण्डक्यारयसरित्यपि ॥ २९३३॥  
 सुपाश्वर्यशिवस्थानस्थशिवाया विशेषत ।  
 नाराशस पुमा यज्ञे चाग्नौ मन्त्रा तरेऽपि च ॥ २९३४॥  
 नाली त्रयी धायकाण्डे नाला चाजादिदण्डके ।  
 नालन्तु रध्रे शेफे च नपुसकमुदीरितम् ॥ २९३५॥  
 नालिका स्त्री चतुहस्तप्रमाणे युगसङ्गके ।  
 नवहस्तप्रमाणे च स्याद्रध्रे नालकालयो ॥ २९३६॥  
 वेणुपात्रा तरे चुल्लीरध्रे शाकलता तरे ।  
 कलम्बीशतपर्वादिशब्दै रयाते जलोद्भवे ॥ २९३ ॥  
 नालीकमम्बुजे क्लीब नालीकस्तु शरे पुमान् ।  
 नालीकिनी स्त्री पश्चिमाञ्चालीकवति तु त्रिषु ॥ २९३८॥  
 नाविकस्तारयितरि त्रि तरीतरि नौकया ।  
 अम्बुष्ठाद्ब्राह्मणीजाते मर्त्यजात्य तरे द्वयो ॥ ३९॥  
 नाश पलायनध्वसमरणानुपलधिषु ।  
 नासा स्त्री नासिकायाञ्च गृहद्वारोर्ध्वदारुणि ॥ २९४ ॥  
 नासिक्यावश्विनौ नासिक्या तु नासाभवे त्रिषु ।  
 नाहस्तु बधने पुसि कूटेऽपि परिकीर्तित ॥ २९४१॥  
 नि निवेशे भृशार्थे च नित्याऽर्थे सशयेऽव्ययम् ।  
 क्षेपकौशलसामीप्याश्रयदानेषु बधने ॥ २९४ ॥

राश्यधोभाजविन्यासे मोक्षेऽन्तर्भाव एव च ।  
 निकरो निवहे सारे न्यायदेयघने निधो ॥२९४२॥  
 निकषः शाणफलके निकषा यातुमातरि ।  
 निकायस्तु शरव्ये स्यात्समूहेऽपि सधर्मणाम् ॥२९४३॥  
 गृहे बहूनामेकत्र करणे परमात्मनि ।  
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि च ॥२९४४॥  
 निकुम्भः कुम्भकर्णस्य तनये दन्तिकोपधौ ।  
 निकुरुम्बं समूहे चाङ्कुरेऽपि च नपुसकम् ॥२९४५॥  
 निकृतो विग्रलब्धेऽपि हते विप्रकृते त्रिषु ।  
 निकृन्तिर्भर्त्सने क्षेपे शठे शाठ्येऽपि च स्त्रियाम् ॥२९४६॥  
 निक्षेपस्तु निधाने स्वात्तथैवोपनिधावपि ।  
 निगमो नगरे वेदे निश्चये च वणिक्पथे ॥२९४७॥  
 मार्गे वणिज्यपि कटे ग्रन्थभेदेऽर्थशासके ।  
 भोजने क्ली निगरणं गले निगरणः पुमान् ॥२९४८॥  
 निग्रहो भर्त्सने पुंसि मर्यादायाञ्च बन्धने ।  
 निघातस्त्वनुदात्ताख्यस्वरे निहननेऽपि ना ॥२९४९॥  
 निघातिका लौहकारैर्यत्र निक्षिप्य हन्यते ।  
 कूटेन लोहं तत्र स्त्री त्रिषु तु स्यान्निहन्तरि ॥२९५०॥  
 निचुम्पुणस्तु चन्द्रेऽपि समुद्रेऽवभृथे पुमान् ।  
 निचुलस्तु निचोले स्यादिजलाख्यद्रुमेऽपि च ॥२९५१॥  
 निचोलः प्रच्छदपटे कञ्चुके च प्रकीर्तितः ।  
 निज त्रि नित्ये चात्मीये क्ली स्रभावेऽथवाऽऽत्मनि ॥२९५२॥  
 कृत्तिकायान्तृतीयस्यान्दूर्वाया स्त्री नितलिवाक् ।  
 नितम्बो रोधसि स्कन्धे स्त्रियाः पश्चात्कटावपि ॥२९५३॥  
 कटके पर्वतस्यापि तथैव कटिमात्रके ।  
 नित्य तु सन्ततेऽपि स्यात् शाश्वते चाभिधेयवत् ॥२९५४॥  
 नित्यशङ्की मृगे द्वे स्यान्निस्तु स्यान्निस्त्यशङ्किते ।  
 निदाघो ग्रीष्मकाले स्यादुष्णस्वेदाम्बुनोरपि ॥२९५५॥

निदानमवदानेऽपि खण्डनेऽप्यादिकारणे ।  
 पतञ्जलेः सूत्रभेदे कारणे वत्सदाम्नि च ॥२९५७॥  
 निदिग्धिका स्त्रियामुक्ता कण्टकार्या तथैव च ।  
 गिरिप्रियेति विख्याते क्षुद्रवातिङ्गिनान्तरे ॥२९५८॥  
 निदेशः शासनेऽपि स्यात्कथनोपातन्योरपि ।  
 निदेशनस्तु पुंसि स्याद्दशहस्तप्रमाणके ॥२९५९॥  
 क्ली त्वाज्ञायाञ्च दाने च न तु नाप्यन्तर्कर्मणि ।  
 निन्द्रालुः सुनिषण्णाख्यजलशाके पुमान्मतः ॥२९६०॥  
 निद्राशीले तु निद्रालुरभिधेयप्रदिष्यते ।  
 निधनोऽस्त्री सामभक्तौ पञ्चम्या कुलनाशयोः ॥२९६१॥  
 निधा स्त्रिया निधाने स्यात्तथा पाशकदम्बके ।  
 भवेन्निधुवनं कम्पे सुरते च नपुंसकम् ॥२९६२॥  
 निन्दा स्यादपवादेऽपि कुत्सायाञ्च तथा स्त्रियाम् ।  
 निपातः पुंस्वधपाते चादिप्रभृतिकेष्वपि ॥२९६३॥  
 निभं व्याजेऽथ सदृशे स्यादुत्तरपदं त्रिषु ।  
 निमित्तं लक्ष्यहेत्वोश्च शुभादेः सूचकेऽपि नप् ॥२९६४॥  
 निमीलनं निमेषे च मुकुलीभाव इष्यते ।  
 निमेषनिमिषौ काष्ठाष्टादशांशे निमीलने ॥२९६५॥  
 निम्नगा तु स्त्रियान्नद्यान्त्रि तु स्यान्निम्नगन्तरि ।  
 नियतिर्नियमे च स्त्री दैत्रे च परिकीर्तिता ॥२९६६॥  
 नियन्ता सारथौ पुंसि भेद्यवत्तु नियामके ।  
 नियमस्तु प्रतिज्ञायामाज्ञाया च नियन्त्रणे ॥२९६७॥  
 व्रते च निश्चये चैव पुंल्लिङ्गः परिकीर्तितः ।  
 नियामकः कर्णधारे पोतवाहे पुमान्मतः ॥२९६८॥  
 भेद्यलिङ्गस्तु नियमकर्त्तर्येष प्रकीर्तितः ।  
 नियुतं लक्षदशकेऽप्युशीरे लक्ष एव च ॥२९६९॥  
 निर्निषेधे निर्णये च बहिर्भावेपि चाव्ययम् ।  
 निरञ्जना पूर्णिमायां विष्णोर्नवसु शक्तिषु ॥२९७०॥

एकस्या कृष्णसारे तु द्वयोस्त्रिनिर्गताञ्जने ।  
 निष्ठीवने प्रतिक्षेपे वधे निरसनम्मत्तम् ॥२९७१॥  
 निरस्तः क्षिप्तबाणेऽपि वचने च द्रुतोदिते ।  
 निराकृते च निव्यूते तथा प्रतिहते त्रिषु ॥२९७२॥  
 निराकृतिनिषेधास्वाध्यायानाकृतिषु त्रिषु ।  
 निरामयस्तु पुंसि स्यादिडिक्के त्रिषु नीरुजि ॥२९७३॥  
 पदभञ्जनशास्त्रे क्लीं निरुक्तं स्यात्त्रिषु त्वदः ।  
 कृतनिर्वचने शब्दे यातुमन्त्रेऽभिधीयते ॥२९७४॥  
 इन्द्रादिदेवता तस्यामुक्ताया स्यात्स्वसंज्ञया ।  
 तद्देवताके च तथा स्यात्प्रातःसवनादिके ॥२९७५॥  
 निरुधा तु दिशि स्त्री स्यात्त्रिस्तु पुण्यक्रमे स्मृता ।  
 'निरूपणं नपुंस्यालोकविचारनिदर्शने ॥२९७६॥  
 निरूहो वस्तिभेदे ना व्यूहशून्ये च निश्चिते ।  
 निर्ऋतिस्तु स्यलक्ष्म्या त्रिरगतौ निर्गमे पुमान् ॥२९७७॥  
 निरोधः पुंसि रोधे स्यात्तथा संक्षयनाशयोः ।  
 निर्गुण्डी नीलशेफाल्या सिन्दुवारेऽपि च स्त्रियाम् ॥२९७८॥  
 निर्ग्रन्थो नग्नकेऽपि स्यान्निःस्ववालिशयोरपि ।  
 निर्ग्रन्थः स्यात्क्षपणके दरिद्रे ग्रन्थवर्जिते ॥२९७९॥  
 निर्ग्रन्थकः स्यात्क्षपणे निष्फलेऽप्यपरिच्छदे ।  
 निर्जरा तु गुरुच्या स्त्री द्वे देवे त्रि जरोज्झिते ॥२९८०॥  
 निर्दटः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।  
 निर्दटो निर्दये व्यर्थे स्यात्त्रिष्वन्यापवादिनि ॥२९८१॥  
 निर्दरं निर्झरे सारेऽन्यवचु कठिनेऽत्रपे ।  
 निर्देशो देशहीने त्रिः पुमास्तु कथनाज्ञयोः ॥२९८२॥  
 निर्नरस्तु सहस्राशोस्तुरङ्गे तुषपावके ।  
 निर्भर्त्सनं खलीकारेऽलक्तकेऽपि नपुंसकम् ॥२९८३॥

१ निरूपण स्यादलोके विचारे च निदर्शने ।

निरूपणा विचारे निदर्शनालोकयोर्न ना ॥

निर्मलं विमले त्रि स्यान्निर्माल्याभ्रकयोस्तु नप् ।  
 निर्माणं निमित्तौ सारे तथा क्लीबं समञ्जसे ॥२९८४॥  
 निर्माल्यं तूपयुक्ते क्ली माल्ये त्रिमाल्यवर्जिते ।  
 निर्मुक्तस्त्रिस्त्यक्तसङ्गमुक्तकञ्चुकसर्पयोः ॥२९८५॥  
 निर्मोको मोचने व्योम्नि सनाहे सर्पकञ्चुके ।  
 निर्याणं करिणोपाङ्गे मृत्यौ मोक्षेऽध्वनिर्गमे ॥२९८६॥  
 निर्यातनञ्च निर्यातना प्रतीकारमात्रके ।  
 न्यासप्रत्यर्पणे याने वैरशुद्धौ तथा भवेत् ॥२९८७॥  
 निर्यामः कर्णधारे ना यामहीने तु भेद्यवत् ।  
 'निर्यूहो नागदन्तद्वाःक्वाथनिर्यासशेखरे ॥२९८८॥  
 निर्लज्जा तु स्त्रिया यान्यन्ययुक्ता देवरे व्रजेत् ।  
 लज्जाहीने तु निर्लज्जस्त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२९८९॥  
 निर्लेपन्त्वम्बुजे क्लीबं लेपहीने तु वाच्यवत् ।  
 निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे नाशे च गजमञ्जने ॥२९९०॥  
 सङ्गमे त्रिस्तु शान्तादौ मुनिवह्निगजादिके ।  
 निर्वादः परिवादे ना वादहीने तु भेद्यवत् ॥२९९१॥  
 निर्वापणा स्यात्तापशमनाया वधे न ना ।  
 निर्वासना न नाघाते नगरादिबहिष्कृतौ ॥२९९२॥  
 निर्वृतिः सुस्थितावस्तगमने च सुखे स्त्रियाम् ।  
 निर्वेदस्तु पुमान्स्वेदे वेदहीने तु वाच्यवत् ॥२९९३॥  
 निर्वेशस्तु पुमान्भोगे वेतने मूर्च्छनेऽपि च ।  
 क्ली तु निर्व्यथनं रन्ध्रे निर्व्यथे तु त्रिषु स्मृतम् ॥२९९४॥  
 निर्हृतौ मुष्टिमान्द्ये च बन्धुनिर्हरणम्मत्तम् ।  
 निलयस्तु गृहे पुंसि तथा निलयने स्मृतः ॥२९९५॥  
 निलिम्पस्तु द्वयोर्देवे निलिम्पा तु स्त्रियां गवि ।  
 निवर्त्तनं निवृत्तौ च रज्जूनां त्रितयेऽपि च ॥२९९६॥

१ निर्यूह पुंसि शिखरे द्वारे निर्यास एव च ।

क्वाथेऽपि नागदन्ताख्यशङ्खध्वनि तथा मत ॥ (के०)



अष्टहस्तमिताना स्यान्नतु ना ण्यन्ततः कृतौ ।  
 वसनक्रिययोर्वस्त्रे गृहे निवसनम्मतम् ॥२९९७॥  
 निवहस्तु समूहे च वायुस्कन्धान्तरे पुमान् ।  
 'निवातो दृढसंनाहे वातशून्येऽपि चाश्रये ॥२९९८॥  
 न ना निशमना प्रोक्ता दर्शने श्रयणेऽपि च ।  
 निशा दारुहरिद्रायां स्त्री त्रियामाहरिद्रयोः ॥२९९९॥  
 निशाचरः पुंस्युल्लुके सृगाले सर्परक्षसोः ।  
 निशाचरी पांसुलायां शिवाख्ये जम्बुकान्तरे ॥३०००॥  
 निशाचरो रात्रिचरमात्रे स्यादभिधेयवत् ।  
 निशान्तं क्ली गृहे शान्ते त्रि रात्र्यन्ते तदस्त्रियाम् ॥३००१॥  
 निशीथस्त्वधेरात्रेऽपि प्रदोषे रात्रिमात्रके ।  
 निश्चारकस्तु पुंल्लिङ्गः पुरीषोत्सजिमारुते ॥३००२॥  
 निर्गन्तरि तु निश्चारकोऽयं स्यादभिधेयवत् ।  
 निःश्रोणिरधिरोहिण्यां स्त्री खर्जूरीद्रुमेपि च ॥३००३॥  
 निःश्रेयसं तु कल्याणमोक्षयोः शकटे तु ना ।  
 निषङ्गः पुंसि सङ्गेपि तूणीरेऽपि प्रकीर्तितः ॥३००४॥  
 निषङ्गधिस्तु पुंल्लिङ्गो रुद्रेऽपि च धनुर्धरे ।  
 निषद्वरः पुमान्पङ्के बह्माविन्द्रे च मन्मथे ॥३००५॥  
 निषद्वरी तु स्त्री प्रोक्ता प्रभाया रजनावपि ।  
 निषधो दक्षिणे मेरोः पुमान्स्यात्कुलपर्वते ॥३००६॥  
 देशभेदे च तद्राजे कठिने तु त्रिषु स्मृतः ।  
 'निषादो द्वे पारशवे विप्रोढावृषलीसुते ॥३००७॥  
 चण्डालेऽपि पुमास्तु स्यादयं गीतिस्वरान्तरे ।  
 निषेधः प्रतिषेधेऽपि पुंल्लिङ्गः परिकीर्तितः ॥३००८॥  
 प्रसोमदेववर्गस्य पञ्चमे साम्नि च स्मृतः ।  
 निष्कोऽस्त्री, हेम्नि दीनारे साष्टर्कशते पले ॥३००९॥

१ निवातस्याश्रये शस्त्राभेद्वर्गमप्यमरुते । (के०)

२ निषादो द्वे क्रमोढाया शूद्राया विप्रत सुते ॥

वक्षोभूषान्तरे कर्षे फले हेम्नो रहस्यपि ।  
 निष्कस्तु निर्गताद्येषु त्रिलिङ्गः परिकीर्तितः ॥३०१०॥  
 निष्कलास्तीतार्त्तवायामवीर्ये त्वकले त्रिषु ।  
 निष्कासितो निर्गमितेऽप्याहितेऽधिकृते त्रिषु ॥३०११॥  
 निष्कुटो ना गृहारामे स्यात्केदारकवाटयोः ।  
 अथैलाया निष्कुटीति स्त्रीलिङ्गे परिकीर्तिता ॥३०१२॥  
 निष्कोशो ना हस्तिकुक्षिमध्ये कोशोज्झिते त्रिषु ।  
 निष्क्रयो बुद्धिसम्पत्तौ निर्गमे दुष्कुलेऽपि च ॥३०१३॥  
 द्वे निष्त्रयोऽञ्जरीशबरजे निष्ठ्या स्वात्या स्त्रिया मता ।  
 निष्ठोत्कर्षेऽप्यवस्थाया नाशेऽन्ते च व्रते तथा ॥३०१४॥  
 क्लेशे निर्वहणे चैव क्तवत्त्वोरपि स्त्रियाम् ।  
 निष्पत्तावपि याश्चाया परमाया गतावपि ॥३०१५॥  
 निष्ठुर तु कठोरे त्रिः परुषाक्षरवाच्यपि ।  
 स्त्रिया तु निष्ठुरा मुद्राविशेषे हस्तनिर्मिते ॥३०१६॥  
 निष्पावः शूर्पपवने राजमाषे कडङ्गके ।  
 पवने शिम्बिकाया ना निर्विकल्पेऽन्यलिङ्गकः ॥३०१७॥  
 निस् निषेधे च साकल्येऽतीतार्थे निश्चयेऽव्ययम् ।  
 निसर्गः सर्जने न्यासे स्वभावे निर्गमेऽपि च ॥३०१८॥  
 निसृष्टञ्जनिते न्यस्ते वाच्यवत्परिकीर्तितम् ।  
 निसृष्टा तु स्त्रिया व्यङ्ग्यकथायामियमिष्यते ॥३०१९॥  
 निस्तारे स्यान्निस्सरणमुपाये तरणेऽपि च ।  
 निस्तलं वर्त्तुलेऽप्येवं स्याच्चलेऽपि च वाच्यवत् ॥३०२०॥  
 निस्तारः पुंसि तूणीरे हिमानिलनिवारणे ।  
 प्रावारभेदे तरणेऽप्युपायेऽपि प्रकीर्तितः ॥३०२१॥  
 त्रिषु निस्तुषितं त्यक्ते चाग्निहीने लघूकृते ।  
 निस्त्रिंशस्तु त्रिषु क्रूरे खड्गे पुँल्लिङ्ग इष्यते ॥३०२२॥  
 निसङ्गा त्वतिमुक्ते स्त्री त्रिषु स्यात्सङ्गवजिते ।  
 क्लीबं निस्सरणन्द्वारे मरणे भयनिर्गतौ ॥३०२३॥

उपाये निर्गमे याने मुखे पुरगृहादिनः ।  
 निस्त्रावो भक्तमण्डेऽपि स्यान्निस्त्रावणकर्मणि ॥३००७॥  
 निहतस्त्रि हते नीचस्वरयुक्ते तथाऽक्षरे ।  
 निह्ववस्त्वपलापे स्याद्विश्रामे निकृतावपि ॥३००८॥  
 यादवस्तु सुविश्वासे नमस्कारेऽपि साञ्जलौ ।  
 नीको द्वे ज्ञातिखगयोर्नीका कुल्याधिका स्त्रियाम् ॥३००९॥  
 नीकाशो निश्चये पुंसि तुल्ये स्यादभिधेयवत् ।  
 नीचः पुमान् शनौ नीचैः स्वरे नीचस्तु तद्वति ॥३०१०॥  
 वामने च निकृष्टे च वाच्यवत्परिकीर्तितः ।  
 नीडमस्त्री कुलाये च निलये च प्रकीर्तितम् ॥३०११॥  
 नीतं क्ली नवनीताऽन्धनेषु त्रि तु यौगिके ।  
 नीतिः स्त्रिया नयेऽप्येवम्प्रापणेऽपि स्त्रियाम्मता ॥३०१२॥  
 नीथो विप्रे द्वयोर्धर्मशीले त्रिर्ना नृपान्तरे ।  
 नीपकेऽथ च नीथा स्त्री नीतौ क्ली गीतभिद्यपि ॥३०१३॥  
 नीपः कदम्बबन्धूकनीलाऽशोकद्रुमेषु ना ।  
 नीरज कमले कुष्ठे नीरजः कृष्ण इष्यते ॥३०१४॥  
 नीलस्तु निधिभेदे ना गिरिभित्कपिभेदयोः ।  
 काष्ण्यशौक्ल्याख्यगुणयोस्त्रि तु तद्वति तत्र च ॥३०१५॥  
 स्त्र्यर्थे नीलैव वस्त्रे स्यात्संज्ञायान्तु द्वयम्भवेत् ।  
 नीला नीली च नील्येव प्राणिन्येषा प्रकीर्तिता ॥३०१६॥  
 नीलको नीलितर्येष वाच्यवत्परिकीर्तितः ।  
 नीलकण्ठो मयूरे द्वे मूलके तु शिवे च ना ॥३०१७॥  
 नीलकेशी स्त्रियां नील्या त्रिस्तु कृष्णशिरोरुहे ।  
 नीलगुः स्यात्कूमौ पुंसि भम्भराल्यान्तु सा स्त्रियाम् ॥३०१८॥  
 नीलग्रीवः शिवे पुंसि त्रिस्तु नीलशिरोधरे ।  
 नीलवासाः शनौ चापि बलदेवे पुमान्मतः ॥३०१९॥

१ नीक क्ली पुसयोर्ज्ञातौ खगे च परिकीर्तितः ।

२ नीको द्वे ज्ञातिखगयोर्नीक पुंसि नृमान्तरे ।

सेवनाथैकतुल्याया नीका क्लीत्वे प्रकीर्तिता ॥

३ नीरज कमले कुष्ठे पुंसि कृष्णे प्रकीर्तितम् ।

नीलशीर्षः पुमान्गोलाङ्गुले त्रिः कृष्णमस्तके ।  
 नीलाञ्जसाऽप्सरोभेदे नदीभेदे च विद्युति ॥३०३७॥  
 नीलाम्बरो राक्षसे च बलदेवे शनैश्चरे ।  
 नीलिका नीलिनीक्षुद्रारोगशेफालिकास्विद्यम् ॥३०३८॥  
 नीलिका लोहभेदे स्त्री स्यात्सिंहमलनामनि ।  
 'नीली स्योषधिभेदे स्यात्काल्याख्ये च रुजान्तरे ॥३०३९॥  
 नीवरो वणिजे पुंसि वास्तव्ये च प्रकीर्तितः ।  
 नीवलस्तु द्वयोर्मर्त्यजातिभेदे प्रकीर्तितः ॥३०४०॥  
 वैदेहीशूद्रजे किञ्च पुण्ड्रवत्तुरगान्तरे ।  
 नीवी तु कवचे शस्त्रे वणिङ्मूलधने स्त्रियाम् ॥३०४१॥  
 स्त्रीकटीवसनग्रन्थावपि नीपिवदिष्यते ।  
 नीत्रं नेमौ वलीकेन्द्रोरेवतीभेऽपि कानने ॥३०४२॥  
 नीहारस्तु तुषारेऽपि शक्रदुत्सर्ग एव च ।  
 नूतनं त्रिष्वभिनवे स्त्रीभूमनि तु नूतनाः ॥३०४३॥  
 सूर्यवृष्टिचतुःशत्या वृष्टिदायाः शते क्वचित् ।  
 नूधा अनूधास्सान्तौ द्वौ स्रतमागधयोरनप् ॥३०४४॥  
 नूनन्तु निश्चिते तर्के स्मरणे वाक्यपूरणे ।  
 ना द्वे हरे हये मर्त्येऽथ नारी योषिति स्त्रियाम् ॥३०४५॥  
 नृपयज्ञस्तु संग्रामे राजसूयादिकेष्वपि ।  
 नृपलक्ष्म नृपच्छत्रे नृपाङ्गे च नपुंसकम् ॥३०४६॥  
 नृपात्मजः स्यात्कूष्माण्डे कटुतुम्ब्या नृपात्मजा ।  
 नृपार्हन्त्वगुरौ क्लीबं स्याद्राजार्हे पुनस्त्रिषु ॥३०४७॥  
 नृभुः प्लवे प्रतिकृतौ तथा दीर्घक्रिमौ स्त्रियाम् ।  
 नेत् विकल्पे निषेधे चाऽव्ययमेतत्प्रकीर्तितम् ॥३०४८॥  
 नेता भव्यतरौ पुंसि तत्फले क्लीबमिष्यते ।  
 नीतिक्रियाकर्त्तरि तु सारथौ च ग्रभौ त्रिषु ॥३०४९॥  
 नेत्रोऽस्त्री वस्त्रदृढनाडीदुमूलेषु मथोगुणे ।  
 नेत्वं द्यावापृथिव्याश्च पुमांस्तु शशलाञ्छने ॥३०५०॥

नेपः पुरोहिते वृक्षे नयेनाभृतके त्रिषु ।  
 नेपथ्य स्यादलङ्कारे रङ्गभूमौ<sup>१</sup> नपुंसकम् ॥३०५१॥  
 नेपालस्त्विक्षुभिद्रक्षोभिदोर्देशे नृमूर्धनि ।  
 नेपालकुनटीरास्नानवमालीष्वियं स्त्रियाम् ॥३०५२॥  
 नेपालन्तिलचूर्णे च पङ्के मांसे च पक्षले ।  
 नेमः पुरोहिते वज्रेऽर्धेऽङ्गे ना खे नपुंसकम् ॥३०५३॥  
 सदृशे तु समीपे च भवेन्नेमोऽभिधेयवत् ।  
 नेमिस्तिनिश्वृक्षे च भित्तिमूले तथा स्त्रियाम् ॥३०५४॥  
 चक्रग्रान्ते च कूपे च तथा तन्मुखबन्धने ।  
 पीताहाख्ये परिच्छेदे वज्रे च परिकीर्त्तिता ॥३०५५॥  
 नैगमस्तूपनिषदि पुमानुक्तो दृतावपि ।  
 वणिङ्नागरयोस्तु त्रिस्तथा निगमयोगिनि ॥३०५६॥  
 नैचिकी गोशिरोदेशे श्रेष्ठायाञ्च गवि स्त्रियाम् ।  
 नैर्ऋतो राक्षसे द्वे स्यात्त्रि स्यान्निर्ऋतियोगिनि ॥३०५७॥  
 नैषधं हरिवर्णे स्यान्निषधाद्रेर्यदुत्तरम् ।  
 वाच्यवन्नैषधः प्रोक्तस्तथा निषधयोगिनि ॥३०५८॥  
 नौ स्त्रिया वाचि काले च तयामपि मता स्त्रियाम् ।  
 न्यंशुको रणरेणौ प्रावरणे वेणुचन्द्रयोः ॥३०५९॥  
 प्रवासशीले तु मतो न्यंशुकः सोऽभिधेयवत् ।  
 न्यक्षं कृत्स्ने निकृष्टे च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३०६०॥  
 न्यग्रोधो ना शमीवृक्षे व्यापमाने वटद्रुमे ।  
 फले त्वस्य लुकोभावान्नैग्रोधामिति स्मृतम् ॥३०६१॥  
 न्यग्रोधी तु स्त्रिया स्तम्बे द्रवन्तीसंज्ञके मता ।  
 न्यङ् निरस्तेऽपि नीचेऽपि वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३०६२॥  
 न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासि शिष्ये मुन्यन्तरे पुमान् ।  
 मृगभेदे पुनर्न्यङ्कुर्द्वयोरयमुदीरितः ॥३०६३॥  
 न्यस्तकस्त्वस्त्रियामर्थनिक्षेपे निहिते त्रिषु ।  
 न्युक्षस्त्रि नीचे क्ली कात्स्न्ये तृणेऽथ महिषे द्वयोः ॥३०६४॥

न्युङ्गः सम्यङ्मनोज्ञे च साम्नः षट्प्रवणेषु च ।  
 न्युङ्गो व्याधौ कर्मरङ्गदुमे दर्भमये स्रुचि ॥३०६५॥  
 कर्मरङ्गफले क्लीबं कुब्जाऽधोमुखयोस्त्रिषु ।  
 न्युङ्गः साम्नः षडोङ्कारेष्वथ त्रिः सुन्दरे प्रिये ॥३०६६॥  
 न्यूनभूने विगर्ह्ये च वाच्यवत्परिकीर्तितम् ॥३०६६३॥

## प

पो ना वाताण्डपूतेषु पाने पातरि कीर्तितः ॥३०६७॥  
 स्त्रिया तु रक्षणे पाने द्यूते पूरितके च सः ।  
 पक्तिस्त्रिया गौरवे च पाने च परिकीर्तिता ॥३०६८॥  
 पक्त्रन्तु गार्हपत्येऽपि पिठरे स्यान्नपुसकम् ।  
 पक्वं त्रि कथितो नाशोन्मुखे परिणते खले ॥३०६९॥  
 क्लीबन्तु पचने प्रोक्तं श्रुतक्षीरजदग्नि च ।  
 पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥३०७०॥  
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्द्धमासे बुल्लीबिलेऽन्तिके ।  
 हस्तिपार्श्वे परिज्ञाने केशशब्दात्परश्चये ॥३०७१॥  
 चन्द्रे पक्षचरो ना त्रिर्युथभ्रष्टैकचारिणोः ।  
 पक्षतिः पक्षमूलेऽपि स्त्रिया च प्रतिपत्तिथौ ॥३०७२॥  
 पक्षी द्वयोः खगे स्त्री तु पूणिमाशाकिनीभिदोः ।  
 आगामिवर्त्तमानाहर्गुक्तरात्रौ च पक्षिणी ॥३०७३॥  
 पक्ष्मपुष्पच्छदे पक्षिपक्षे नयनलोमसु ।  
 किञ्जल्के तत्तु तूलादेः सूक्ष्माऽशे च नपुंसकम् ॥३०७४॥  
 पङ्कोऽस्त्री कदर्मे पापे तथैव परिकीर्तितः ।  
 पुमान्पङ्करसः शीघ्रौ पङ्कस्यापि रसे स्मृतः ॥३०७५॥  
 पङ्कारः शैवले सेतौ सोपाने जलकुब्जके ।  
 पङ्क्तिश्छन्दोविशेषेषु चत्वारिंशत्स्वरादिषु ॥३०७६॥  
 आषलौ दशसंख्यायां त्वेकत्वे तन्मितेषु तु ।  
 स्याद्वस्तुषु द्वित्वत्रित्वादौ सर्वत्र स्त्रियामियम् ॥३०७७॥

पचत्रं रन्धनस्थाल्या पचत्रोऽपूपकारके ।

पचम्पचा तु स्त्री दाव्या चम्पके ना पचम्पचः ॥३०७८॥

पचिर्ना पचतौ धातावग्नौ च क्षुधि तु स्त्रियाम् ।

पचेलिमस्तु ना वह्नौ माषे च द्वे तु घोटके ॥३०७९॥

पच्छः शिलाया ना त्रिस्तु पादपीठेन गन्तरि ।

पाणिसंज्ञे' तु पच्छी स्त्री भवेद्धारुटकान्तरे ॥३०८०॥

पञ्चगुप्तो द्वयोः कूर्मे ना तु चार्वाकदर्शने ।

पञ्चत्पम्पञ्चभावे च मरणे पञ्चता तथा ॥३०८१॥

स्त्री पञ्चदश्यमावास्यापौर्णमास्योऽस्त्रि पूरणे ।

पञ्चमो रागभेदेऽपि षडजादीना स्वरे कश्चित् ॥३०८२॥

स्त्री तु पाण्डवपत्न्या स्यात् पञ्चमी श्रीतिथाऽपि ।

स्यात्पञ्चमविभक्तौ च पञ्चानान्तु त्रि पूरणे ॥३०८३॥

त्रिषु पञ्चसुगन्धः स्यादन्याऽर्थे क्लीसमाहृतौ ।

पूगकर्पूरतक्कोलजातीफललवङ्गके ॥३०८४॥

पञ्चाङ्गी तु खलीने च स्त्री पञ्चाङ्गसमाहृतौ ।

अङ्गैस्तु पञ्चभिर्युक्ते स्यात्पञ्चाङ्गोऽभिधेयवत् ॥३०८५॥

पञ्चाङ्गुलस्त्वेरण्डे ना पञ्चाङ्गुलिमिते त्रिषु ।

पञ्चाननः शिवे पुंसि सिंहे त्वेष द्वयोर्मतः ॥३०८६॥

पञ्चालस्त्वृषिभेदे ना देशभेदे नृभूमनि ।

तद्राजे सर्ववचनः पाञ्चालास्यस्त्र्यपत्यके ॥३०८७॥

पञ्चाली तु स्त्रियां गीतौ पुत्रिकायाञ्च कीचिता ।

पञ्चालिका तु स्त्रीवस्त्रपुत्रिकागीतिभेदयोः ॥३०८८॥

पञ्चिका द्यूतभेदे स्याद्व्याख्या ग्रन्थान्तरेऽपि च ।

त्रि तु विस्तारके पञ्चकश्च पञ्चाङ्गसंहतौ ॥३०८९॥

पटस्तु वस्त्रे केचित्तु सुवस्त्रे पुंनपुंसकम् ।

पटी तु स्त्री विशिष्टे स्यात्पटे प्रावरणात्मके ॥३०९०॥

पटः प्रियालवृक्षे ना फले त्वस्य नपुंसकम् ।

पटच्चरं जीर्णवस्त्रे पुम्भूमिनि तु पटच्चराः ॥३०९१॥

मध्यदेशगते नीवृद्धिशेषे परिकीर्त्तिताः ।  
 पटलोऽस्त्र्यक्षिरुग्मेदेऽध्याये गेहच्छदिष्वपि ॥३०९२॥  
 क्ली स्त्रियोस्तु समूहेऽथ पटली पिटकान्तरे ॥  
 पटहस्तु समारम्भे निर्घोषे युद्धवाद्यजे ॥३०९३॥  
 आनकेऽपि समाख्यातः पुन्नपुंसकलिङ्गकः ।  
 पटिः स्त्री पटभेदे स्याद्वागुलौ कुम्भिकाद्रुमे ॥३०९४॥  
 पटीरः पुंसि कन्दर्पे कन्दरे चन्दनेऽपि च ।  
 पटीरो मूलकेदारवेणुसारेषु वारिदे ॥३०९५॥  
 तितउन्यपि रङ्गे च वातिके पुंसि कीर्त्तितः ।  
 पटुस्त्रिशूरनिर्व्याधिदक्षाऽमन्दाऽच्छबुद्धिषु ॥३०९६॥  
 विस्पष्टे निस्त्वरे तीक्ष्णे लवणाख्यरसान्विते ।  
 एण्वर्थेषु स्त्रिया पट्वी पटुरित्युभयम्भवेत् ॥३०९७॥  
 पटुः पुंसि पटोल्या च लवणाख्यरसान्तरे ।  
 ऊषसैन्धवनाम्नोस्तु क्ली स्याल्लवणयोः पटु ॥३०९८॥  
 पटुलन्तु बले क्लीबं त्रि तु स्याद्वाग्मिकलयोः ।  
 पटोलस्तु पुमान्वल्लिजातौ तिक्तकनामनि ॥३०९९॥  
 पटोली तु स्त्रियां कोशातक्यां क्ली वसनान्तरे ।  
 पटुः प्रशस्तकौशेयक्षौमादौ व्रणबन्धने ॥३१००॥  
 शाणस्य नेत्रे स्वर्णादिकृतदीर्घाच्छपत्रके ।  
 गुवाकनालिकेरादिपत्रमूलस्थवेष्टने ॥३१०१॥  
 पट्टनं शकटैर्गम्ये घोटकैर्नौभिरेव च ।  
 पुटमेदनसंज्ञे च क्षुद्रग्रामे पुरेऽपि च ॥३१०२॥  
 पट्टबन्धः क्षत्रियायाञ्जारेण क्षत्रियेण यः ।  
 जनितः स्याद्द्वयोस्तत्र नाम्ना क्षत्रियकुण्डके ॥३१०३॥  
 अभिधेयवदेष स्यात्पट्टबन्धनकर्त्तरि ।  
 पटिस्तु विदुषि त्रि स्यान्ना तु वेदस्य पाठके ॥३१०४॥  
 स्त्रियाम्फलकिकाया स्यादल्याया युद्धकारिणाम् ।  
 पणो विक्रय्यशाकादिबद्धमुष्टौ ग्लहे धने ॥३१०५॥



द्यूते शीतौ वराटाना कार्षिकव्यवहारयोः ।  
 मूल्ये भृतौ व्यग्रस्थाया विक्रये च प्रकीर्तितः ॥३१०६॥  
 पणवो डिण्डिमे चापि गजस्कन्धे प्रकीर्तितः ।  
 पणिर्ना पणतौ धातौ वणिजि त्रिपु कीर्तितः ॥३१०७॥  
 पणिकस्तु वणिगोहे याज्ञिकानान्तु विश्रुते ।  
 पुरोडाशस्य प्रथने पणिकं स्यान्नपुसकम् ॥३१०८॥  
 पण्डा स्त्री तत्त्वबुद्धौ द्वे गतौ ना तु नपुंसके ।  
 पण्डा वेदोज्ज्वला बुद्धिस्तद्योगात्पण्डितो मतः ॥३१०९॥  
 पण्डितः सूकराकारे मृगे स्त्रीपुंसयोर्मतः ।  
 नासिंहकाख्यनिर्यासे विदुषि त्वभिधेयवत् ॥३११०॥  
 पतङ्गो द्वे बिडालेऽश्वे शलभे पक्षिमात्रके ।  
 ना त्वर्के शालिभेदेऽथ पुत्रिकाया पतङ्ग्यपि ॥३१११॥  
 पतन्द्रयोः पक्षिणि स्यात्त्रिः स्यात्पतनकर्त्तरि ।  
 क्लीबम्पतत्रमाकाशे पक्षे पक्ष्यादिकस्य च ॥३११२॥  
 पतनन्तरूपत्रेऽपि पाते हानौ च कर्मणः ।  
 पताका वैजयन्त्याश्च सौभाग्ये नाटकाङ्गके ॥३११३॥  
 पताकिनी चम्पा त्रिस्तु पताकी वैजयन्तिके ।  
 पतिर्धवे गतौ मूले धातौ च पततौ पुमान् ॥३११४॥  
 स्त्रियान्तु पत्नी भार्याया पतिः स्वामिनि वाच्यवत् ।  
 (ग्रामस्य तु प्रभौ ग्रामपत्नी ग्रामपतिः स्त्रियाम् ॥३११५॥  
 वृद्धो यस्याः पतिर्वृद्धपत्नी वृद्धपतिश्च सा ।  
 एवं प्रयोगा अन्येपि तर्कणीया यथायथम्) ॥३११६॥  
 पतिघ्नो वाच्यवत्पत्युर्घातके परिकीर्तितः ।  
 वैधव्यलक्षणोपेते पतिघ्नी कन्यकान्तरे ॥३११७॥  
 पतितस्त्रिषु कर्मभ्यो हीने प्रस्कन्न एव च ।  
 पतेरस्तु पुमाञ्ज्ञेयः पवने द्वे तु पक्षिणि ॥३११८॥  
 पत्तनत्तौ मात्रगम्ये पुटमेदननामनि ।  
 क्षुद्रग्रामे पुरे चापि क्रयविक्रयश्च्यपि ॥३११९॥

पत्तिस्तु पतनेऽपि स्त्री पदनेऽपि प्रकीर्तिता ।  
 एकैकेभरथत्रयश्चपञ्चपद्मबलेऽपि च ॥३१२०॥  
 लेपेन कृतलेखाया बाह्वादौ पदिके तु ना ।  
 पत्रोऽस्त्री छुरिकायातपर्णेष्विषुखगच्छदे ॥३१२१॥  
 पत्रको यावश्शूकाख्ये यवक्षारान्तरे पुमान् ।  
 व्यवहारगतानान्तु लेख्ये स्यात्पत्तिसंज्ञके ॥३१२२॥  
 अनुलेपनविन्यासभेदेऽपि नपि पत्रकम् ।  
 पत्रलो जातपत्रे त्रिस्तालीवृक्षे तु पत्रला ॥३१२३॥  
 पत्रलन्त्वघने क्लीबन्दधिभेदे प्रकीर्तितम् ।  
 पत्राङ्गं न द्वयोर्भूर्जे पद्मके रक्तचन्दने ॥३१२४॥  
 पत्री शराद्रथोः काण्डद्रौ रथिके ना द्वयोः खगे ।  
 श्येनेऽथ पत्रिणी पत्न्याः कनिष्ठस्वसरि स्त्रियाम् ॥३१२५॥  
 पत्रन्तु यत्र यस्याऽपि तत्र स्याद्भेदलिङ्गकम् ।  
 पत्रोर्णधौतकौशेये ना तु डुण्डुक-पादपे ॥३१२६॥  
 पत्सलस्तु ग्रहारेऽपि ग्रहासे च प्रकीर्तितः ।  
 पथिकृद्वर्त्महोमाग्नौ त्रिस्तु मार्गस्य कर्त्तरि ॥३१२७॥  
 पथ्यम्पथोऽनपेते त्रिर्हिते नित्येषु च क्रतोः ।  
 स्याद्विष्टुत्यादिकाङ्गेषु ऋक्सामे दाशरात्रिके ॥३१२८॥  
 पथ्या तु स्त्री हरीतक्या तथार्याच्छन्दसोऽन्तरे ।  
 गणेषु त्रिषु यस्यादावर्धयोर्दृश्यते यतिः ॥३१२९॥  
 बृहतीच्छन्दसो भेदे यस्य स्याद्द्वादशाक्षरम् ।  
 उपोत्तमम्पदम्पादास्त्रयोऽन्येऽष्टाक्षराः स्मृताः ॥३१३०॥  
 क्लीबन्तु पथ्य गायत्र्यादिकच्छन्दःसु सप्तसु ।  
 पदमङ्गौ शरे त्राणे व्यवसायाऽपदेशयोः ॥३१३१॥  
 चिह्नेऽडिग्रचिह्नेऽडिग्रन्यासे पद्यभागोऽशुबस्तुनोः ।  
 स्थाने वाक्ये सुप्तिडन्ते माने पञ्चदशाङ्गलौ ॥३१३२॥  
 इन्द्रपुच्छेऽतिवर्गस्याऽप्यादितस्त्रिषु सामसु ।  
 पदको ना मध्यमणौ पदाऽध्येतर्थापि स्मृतः ॥३१३३॥

उपाधिभूषणादौ तु पदत्रे च नपुंसकम् ।  
 पदाजिर्युधि मार्गे ना पदगे तु त्रिषु स्मृत' ॥३१३४॥  
 पदातिः पदिके पुंसि भवेत्स्थानवति त्रिषु ।  
 पदारस्तु पुमान्वास्तुदेवभेदेऽङ्घ्रिधूलिषु ॥३१३५॥  
 पदारन्तु पदालिन्दे नपुंसकमुदीरितम् ।  
 पद्धतिस्तु स्त्रिया पङ्क्तौ मार्गे च परिकीर्त्तिता ॥३१३६॥  
 'पद्मोऽस्त्री पङ्कजे क्लीबं संख्याभेदे तथेन्द्रिये ।  
 गजबिन्दुष्षष्टकायान्नागराजान्तरे तु ना ॥३१३७॥  
 निधिभेदे व्यूहभेदे वर्णपीतसितासिते ।  
 त्रि तु तद्वति पद्मा तु लक्ष्मीभाग्यो स्त्रियामियम् ॥३१३८॥  
 स्यात्पद्मनालिकाया पद्मचारिण्याख्यभेषजे ।  
 पद्मकं स्यात्पद्मकाष्ठे कुसुम्भे बिन्दुजालके ॥३१३९॥  
 स्यात्पद्मलाञ्छनो लोकेऽवरे ब्रह्मणि भास्करे ।  
 धनदेऽथ श्रियान्तारावाग्देव्योः पद्मलाञ्छना ॥३१४०॥  
 पद्मासनन्त्वासनस्य भेदे क्ली पुंसि घातरि ।  
 पद्मी द्वयोर्हस्तिनि स्यात्त्रि तु पद्मवति स्मृतः ॥३१४१॥  
 पद्मिनी सरसीलक्ष्म्योर्नलिन्या गोषिदन्तरे ।  
 पद्मं क्लीबं मतं श्लोके त्रिषु स्यात्पदसाधुनि ॥३१४२॥  
 द्वयोस्तु पद्मो वृषले पद्मा तु स्यात्स्त्रियां पथि ।  
 पद्मो ग्रामनिवेशे ना त्रिषु शून्ये प्रकीर्त्तितः ॥३१४३॥  
 पद्मा वत्से द्वयोः पुंसि तूक्तो गत्यवसानयोः ।  
 पनसः कण्टकिफले कण्टकेऽपि पुमान्मतः ॥३१४४॥  
 पनसं खफले क्लीबं पनसी तु रूजान्तरे ।  
 पन्नः स्कन्ने त्रिषु क्ली तु जिह्वाया पन्नमिष्यते ॥३१४५॥  
 पन्नगस्त्वोषधेभेदे पुमान्सर्पे तु सद्दयोः ।  
 पपीर्ना किरणे सूर्ये द्वे तु हस्तिनि कीर्त्तितः ॥३१४६॥

१ पद्मोऽस्त्री पद्मके व्यूहनिधिसंख्यान्तरेऽङ्गुजे ।

ना नागे स्त्री फज्जिका श्री चारटी पद्मनी (गे) बु च । मे०

पयस्सामान्तरे दुग्धे रजन्यामन्नतोययोः ।  
 पयस्या क्षीरकाकोल्यामिक्षयोर्दुधिकौषधे ॥३१४७॥  
 स्वर्णक्षीर्याम्ययःसाधुभवादौ तु त्रिषु स्मृता ।  
 पयस्वती निशानद्योः पयस्विनि पुनस्त्रिषु ॥३१४८॥  
 पयस्विनी नदीधेनुनिष्पु स्त्री क्षीरिणि त्रिषु ।  
 पयोगर्भः पुमान्मेघे जलगर्भे यथायथम् ॥३१४९॥  
 पयोधरः कोषकारे नारिकेले स्तने स्त्रियाः ।  
 कशेरुमेघयोः पुंसि वाच्यवत्तु पयोभृति ॥३१५०॥  
 परम्प्रकृष्टे द्विषति पूर्वावाक्प्रतियोगिनोः ।  
 अन्यस्मिन्केवले दूरे त्रिषु ना परमात्मनि ॥३१५१॥  
 क्लीबम्परार्धसंज्ञायाः संख्याया द्विगुणात्मनि ।  
 संख्यायामथवा त्रिष्वेतत्संख्येयेषु वस्तुषु ॥३१५२॥  
 परः श्रेष्ठादिदूरान्योत्तरे क्लीबन्तु केवले ।  
 द्वयोस्तूद्रे परकुलो योगार्थे तु यथायथम् ॥३१५३॥  
 परजातो द्वयोर्दासे स्यात्त्रिषु त्वन्यजन्मनि ।  
 परञ्जस्तैलयन्त्रे स्याच्छ्रुरिकाफलफेनयोः ॥३१५४॥  
 परपुष्टा तु वेद्यायाम्परपुष्टो द्वयोः पिके ।  
 परभृद्वायसे त्रिस्तु परभर्त्तरि कीर्त्तितः ॥३१५५॥  
 परमस्मादनुज्ञायामव्ययम्परमेश्वरे ।  
 पुँल्लिङ्ग उक्तः परमरसस्तक्रे रसोत्तमे ॥३१५६॥  
 परमेष्ठी विधौ विष्णौ शिवेऽथ परमेष्ठिनी ।  
 पार्वत्याम्परमेष्ठी तु निर्वृते चोत्तमे त्रिषु ॥३१५७॥  
 परम्परा स्त्री सन्ताने परिपाट्याश्च हिंसने ।  
 द्वयोस्तु गृहिणः पुत्रपौत्रादेः पञ्चमेऽपि च ॥३१५८॥  
 षष्ठे च मृगभेदे च गोकर्ण इति विश्रुते ।  
 परशुः पुंसि वज्रे च टङ्कणे च परश्वधे ॥३१५९॥  
 पुमान्परशुभिद्विघ्नराजे त्रिस्तु कुठारिणि ।  
 पराऽव्ययं विमोक्षाभिमुख्यप्राधान्यधर्षणे ॥३१६०॥

प्रातिलोम्ये भृशार्थे च विक्रमे च गतौ वधे ।  
 पराको द्वादशाहोपवासात्मव्रतखङ्गयोः ॥३१६१॥  
 दूरेऽहीनक्रतूनाञ्च त्रिरात्राणां क्वचिन्मतः ।  
 पराक्रमो विक्रमे स्यात्सामर्थ्योद्योगयोरपि ॥३१६२॥  
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।  
 उपरागेऽद्रिभेदे च विख्यातौ चन्दनेऽपि च ॥३१६३॥  
 पराभवस्तिरस्कारे विनाशे च पुमान्मतः ।  
 परायणञ्चतुर्मासोपवासेऽपि नपुंसकम् ॥३१६४॥  
 आसङ्गेऽपि च साकल्ये तथैव परिकीर्तितम् ।  
 पराशरस्तु शक्रेऽपि व्यासस्य जनकेऽपि च ॥३१६५॥  
 परासनन्निरसने वधे चापि नपुंसकम् ।  
 परि स्यात्सर्वतोभावे वर्जने व्याधिशेषयोः ॥३१६६॥  
 इत्थम्भूताख्यानभागवीप्साऽऽलिङ्गनलक्षणे ।  
 दोषाख्याने निरसने पूजाव्याप्त्योश्च भूषणे ॥३१६७॥  
 परिकम्पो भये कम्पे पुल्लिङ्गः परिकीर्तितः ।  
 पुमान्परिकरः सङ्घे पर्यङ्कपरिवारयोः ॥३१६८॥  
 प्रगाढगात्रिकाबन्धे सभारम्भविवेकयोः ।  
 परिखाऽम्बुनिधौ खेये तथा भूभृत्यपि स्त्रियाम् ॥३१६९॥  
 त्रि स्यात्परिगतं व्याप्ते विज्ञाने परिवेष्टिते ।  
 परिग्रहस्तु शपथे मूले परिजने तथा ॥३१७०॥  
 आदानपत्न्योरर्केन्द्रोः स्याद्ग्रहग्रस्तयोरपि ।  
 परिघस्त्वर्गले दण्डे परिघाताऽस्त्रयोरपि ॥३१७१॥  
 कालयोगविशेषे च मूहगर्भे च मुद्गरे ।  
 परिघोषो निनादे स्यादवाच्ये जलदध्वनौ ॥३१७२॥  
 परिचारक उक्तो द्वे दासे शुश्रूषकेऽप्यथ ।  
 सगभूषणादिष्वर्थेषु नियुक्तायान्नुपस्त्रियाम् ॥३१७३॥  
 स्त्रीलिङ्गमात्रे कथिता कविभिः परिचारिका ।  
 परिच्छदो जातिभेदे शबरी विप्रजे द्वयोः ॥३१७४॥

पुँल्लिङ्गस्तूपकरणे परिच्छद उदीरितः ।  
 'परिज्वाञ्जनौ च वायौ च चन्द्रे चाऽपि पुमान्मतः ॥३१७५॥  
 परिणाहो विशालत्वे परितो बन्धनेऽपि च ।  
 परितापस्तु पुंसि स्याद्दुःखे च नरकान्तरे ॥३१७६॥  
 परिधानमधोवस्त्रे तदाच्छादनकर्मणि ।  
 परिधायो जनस्थाने परिच्छेदनितम्बयोः ॥३१७७॥  
 परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।  
 प्राकारे परिधाने च षट्सु शुक्रियसामसु ॥३१७८॥  
 परिप्लवा दण्डहीनसुचि स्त्री त्रिषु चञ्चले ।  
 परिवर्हो राजयोग्यद्रव्ये चापि परिच्छदे ॥३१७९॥  
 परिभाषणमालापेऽप्युपालम्भे नपुंसकम् ।  
 अतिमर्दे परिमलो गन्धे चातिमनोहरे ॥३१८०॥  
 रतोपमर्दविकसत्कायरागादिसौरभे ।  
 परिवत्सर उक्तः संवत्सरेऽपि च तद्भिदि ॥३१८१॥  
 परित्यागे वधे च स्त्रीनपोः स्यात्परिवर्जना ।  
 परिवर्त्तो विनिमये कूर्मराजे प्रवर्त्तने ॥३१८२॥  
 परिवादस्तु निर्वादे वीणावादनसाधने ।  
 परिवादी तु परिवादवति थ्यपवादिनि ॥३१८३॥  
 वीणायान्तु स्त्रियामेषा कीर्त्तिता परिवादिनी ।  
 परिवापः परीवापो लाजेषु च परिच्छदे ॥३१८४॥  
 पर्युप्तौ स्थाप्यबीजालवालागेहेषु कीर्त्तितः ।  
 'परिवारः परिजने प्रावारे खड्गकोशके ॥३१८५॥  
 परिवित्तिस्तु परिवेदने स्त्रीत्वेऽथ नाऽग्रजे ।  
 यस्याकृतविवाहस्थ कनीयानन्दारसंग्रही ॥३१८६॥  
 परिवेशो वेष्टने स्यात्परिधावपि पुंस्ययम् ।  
 परिवेषस्तु पुँल्लिङ्गः परिधौ परिवेषणे ॥३१८७॥

१ परिज्वा तु पुमानिन्दौ याज्ञिके परिचारिके ।

२ परिवारो जङ्गमे स्यात्खड्गकोशे परिच्छदे ।

परिवेषणमुक्त क्ली भोजनायाश्च वेष्टने ।  
 परिशुष्कन्तु भूयोऽद्भिः सिक्त्वा घृतविपाचिते ॥३१८८॥  
 मासे मृदुनि मरिचाद्युपेतेऽथ त्रि शुष्कके ।  
 भवेत्परिसरो मृत्यौ निधावपि च पुंस्ययम् ॥३१८९॥  
 परिस्पन्दः परिजने स्पन्देऽपि च पुमान्मतः ।  
 परिस्रुता स्त्री वारुण्या स्यन्ने त्रिषु परिस्रुतः ॥३१९०॥  
 परीरन्तु हले ज्ञेय तथा हलमुखेऽपि च ।  
 परीरणो द्वे कमठे ना दण्डे पट्टशाटके ॥३१९१॥  
 परीवारो जङ्गमे स्यात्खड्गकोशे परिच्छदे ।  
 परीवारो जलोच्छ्वासे महीभृद्योग्यवस्तुनि ॥३१९२॥  
 परीष्टिस्तु परीप्सायामभितो यजनेऽपि च ।  
 मार्गणे परिचर्यायाम्प्राकारेऽपि स्त्रियाम्मता ॥३१९३॥  
 परुलस्तु द्वयोरश्वे पार्वत्याम्परुला स्त्रियाम् ।  
 परुरिक्ष्वादिकग्रन्थौ धर्मेऽपि च नपुंसकम् ॥३१९४॥  
 परुषं निष्ठुरोक्ते त्र्यस्निग्धे मिश्रे च कर्बुरे ।  
 परुषः पुंसि खर्जुरे क्ली तु तत्प्रसवे मतम् ॥३१९५॥  
 परेतस्तु मृते त्रि स्याद्भूतजात्यन्तरे द्वयोः ।  
 परेधितस्तु द्वे दासे त्रि तु स्यात्परवर्द्धिते ॥३१९६॥  
 पर्कटी तु स्त्रियाम्प्लक्षे पूगादेश्च नवे फले ।  
 क्ली पर्कटम्पूगफले द्वे तु कङ्काख्यपक्षिणि ॥३१९७॥  
 पर्जन्यस्तु पुमानिन्द्रे चास्त्रयन्त्रान्तरे मतः ।  
 गर्जदभ्रभ्रनिनदे वास्तुदेवान्तरेऽपि च ॥३१९८॥  
 पर्णः पलाशवृक्षे ना क्ली तत्सत्ये तरुच्छदे ।  
 पर्णसि स्याज्जले क्लीबं शाकादौ तु नृभूमनि ॥३१९९॥  
 उल्लुखले तु पुल्लिलङ्गः पर्णसिः परिकीर्तितः ।  
 'पर्पः' शङ्खेऽम्बुधौ वस्त्रे पुल्लिलङ्गः-परिकीर्तितः ॥३२००॥  
 पर्पटो मेषजस्तम्बान्तरेऽपूपान्तरे पुमान् ।  
 पर्पटी त्वाहकीसंज्ञमृत्स्नादारुहरिद्रयोः ॥३२०१॥

परंपरीकस्तु ना वहौ भक्षे च द्वे तु कुक्कुरे ।  
 कुररे परंपरीकस्तु पुंस्यपामाकरे त्रि तु ॥३२०२॥  
 परंपरीणश्च पर्णस्य सिरायान्द्युतकम्बले ।  
 पर्णचूर्णरसेऽपि स्यात्परंपरीणान्तु पर्वणि ॥३२०३॥  
 पर्यङ्कः पुंसि खट्वायाम्पर्यस्त्यामासनेषु च ।  
 पद्मार्धपद्मपादोपवेशगूढपदात्मसु ॥३२०४॥  
 पुंसि पर्यनुयोगोऽनुयोगोपालम्भयोर्मतः ।  
 स्यात्पर्यवसितं लब्धे विरतिप्राप्तवत्यपि ॥३२०५॥  
 पर्यस्तस्तु हते चापि पातिते चाभिधेयवत् ।  
 पर्याप्तं वारणे तृप्तौ यथेष्टे त्रि तु शक्तके ॥३२०६॥  
 पर्याप्तिस्तु स्त्रियामुक्ता प्रकामप्राप्तिरक्षणे ।  
 पर्यायोऽवसरे पुंसि प्रकारक्रमयोरपि ॥३२०७॥  
 सामस्तोत्रगतस्तोमतृतीयांशेऽपि च स्मृतः ।  
 पर्वमिक्ष्वादिकाण्डस्थग्रन्थौ क्लीबं शिवे पुमान् ॥३२०८॥  
 पर्वतः पादपे पुंसि शाकमत्स्यप्रभेदयोः ।  
 देवमुन्यन्तरे शेले मेघे च परिकीर्तितः ॥३२०९॥  
 पर्वोऽस्त्री विषुवादौ च पञ्चदश्यान्तथोत्सरे ।  
 प्रतिपत्यञ्चदश्योश्च सन्धौ ग्रन्थिद्वयान्तरे ॥३२१०॥  
 इक्षुवेण्वादिकग्रन्थौ प्रस्तावे लक्षणान्तरे ।  
 पविः काके द्वयोरेष हिंसे स्यादभिधेयवत् ॥३२११॥  
 पलोऽस्त्रिया भवेन्मासे मानेऽप्यक्षचतुष्टये ।  
 पलगण्डो द्वयोर्मर्त्ये किरातकरणीभवे ॥३२१२॥  
 तथा स्याल्लेपके चैव भित्त्यादेः सुधया द्वयोः ।  
 पलङ्कषा गोक्षुरके रास्नागुग्गुलुकिंशुके ॥३२१३॥  
 मुण्डीरीलाक्षयोश्च स्त्री राक्षसे ना पलङ्कषः ।  
 पललन्तिलचूर्णे क्ली मासकर्मभेदयोः ॥३२१४॥  
 ब्रीहिस्तम्बे तु लुनान्तफले स्यात्पललोऽस्यथ ।  
 महापलाले क्षोदे च पलालस्य पलल्यसौ ॥३२१५॥



पलाण्डुर्दशजातीना सुकन्दस्य क्वचिन्मतः ।  
 सुकन्दकन्दमात्रे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्तितः ॥३२१६॥  
 पलाशः किशुके शख्यौषधे वर्णे हरित्यपि ।  
 त्रि तु तद्वर्णसंयुक्ते क्लीबं पत्रे तरोर्मतम् ॥३२१७॥  
 किशुकप्रसवे चाथ पलाशो राक्षसे द्वयोः ।  
 पलाशिका तु सत्या स्त्री लाक्षाया च प्रकीर्तिता ॥३२१८॥  
 पलाशी राक्षसे द्वे ना वृक्षे मांसादिनि त्रिषु ।  
 पलिधः काचकलशघटप्राकारगोपुरे ॥३२१९॥  
 पलितोऽस्त्री राजशौक्ये तद्रत्नलवतोस्त्रिषु ।  
 क्ली तु शैलेयमरिचतापाङ्गे कर्दमे तु ना ॥३२२०॥  
 पल्यङ्को मञ्चपर्यङ्कवृषीपर्यस्तिकासु च ।  
 क्लीबं पल्ययनं पर्याणेऽश्वादेर्द्वे तु पञ्चमे ॥३२२१॥  
 परम्पराख्ये पुत्रस्यापत्ये पल्ययनो मतः ।  
 पल्लवोऽस्त्री किसलयेऽलक्तरागप्रकोष्ठयोः ॥३२२२॥  
 बलविस्तारविटपे पत्रमात्रेऽथ ना विटे ।  
 त्रिषु पल्लवितं लाक्षारक्ते सत्पल्लवे तते ॥३२२३॥  
 पल्लिः कुटीराल्पग्रामाऽऽश्रमन्याधालयेष्वपि ।  
 क्ली मुसल्याश्च पल्लीवत्पल्लिः स्थूलकुसूलके ॥३२२४॥  
 पवनो वायुनिष्पावांशुषुष्वर्थे तु नप्तथा ।  
 पाकस्थाने कुलालस्य त्रिस्तु स्यात्पवसाधने ॥३२२५॥  
 पवमानो मरुत्यग्नौ गार्हपत्ये विशेषतः ।  
 यज्ञस्तोत्रविशेषेषु त्रिषु चैव पुमान्मतः ॥३२२६॥  
 पवनाख्यक्रियायास्तु मतः कर्त्तरि मेघवत् ।  
 पविर्वज्रे शस्त्रमुखे वायावपि पुमान्मतः ॥३२२७॥  
 पवित्रः पवने सोमे यवरश्म्यग्निभानुषु ।  
 विष्णौ शक्रे क्ली तु वृष्टौ कुशे मन्त्रेऽप्सु गोमये ॥३२२८॥  
 दक्षि ताम्रे ब्रह्मसूत्रे हेमन्वर्थे कलशेऽम्बुजे ।  
 क्षीरे दर्भाङ्गलीये त्वस्त्री मेघे त्वमिधेयवत् ॥३२२९॥

पवीरन्तु हले चापि रङ्गस्थाने नपुंसकम् ।  
 पशुस्तमुक्तात्मनि नाच्छगले च गवादिके ॥३२३०॥  
 ग्राम्ये मृगादौ वन्ये च दृश्यर्थे त्वव्ययम्पशु ।  
 पश्चात्प्रतीच्याञ्चरमेऽप्यधिकारेऽपि दृश्यते ॥३२३१॥  
 पश्याऽव्ययम्प्रशंसाया विस्रयेऽपि निगद्यते ।  
 पश्यत्तु स्यात्प्रशंसायां विस्रयेऽपि तथा भवेत् ॥३२३२॥  
 पाशुर्धूलौ च शस्यार्थचिरसंचितगोमये ।  
 पाशुचामर उक्तो ना दूर्वाञ्चितटीष्ठुवि ॥३२३३॥  
 वद्धापके प्रशंसायां पुरोटौ धूलिमुच्छके ।  
 पासुजम्पासुजाते त्रि लवणे तूषजे नपि ॥३२३४॥  
 पासुला कुलटोदक्याभूषु स्त्री त्रिषु पासुके ।  
 पासुलः पुंश्वले शम्भोः खट्वाङ्गेऽपि पुमान्तः ॥३२३५॥  
 पाकः परिणतौ पक्तौ सूर्ये दैत्यान्तरे गिरा ।  
 पाकः शिशौ जरानिष्ठापचनक्लेदनेषु च ॥३२३६॥  
 स्थाल्यादौ चाथ पाकं क्ली करमर्दफले मतम् ।  
 पाकलं कुष्ठमैषज्ये पाकलः कुञ्जरज्वरे ॥३२३७॥  
 पाक्यं विडाख्यलवणे स्याद्भूमिलवणे तथा ।  
 यवक्षारेऽपि च क्लीबम्पक्तव्ये त्वभिधेयवत् ॥३२३८॥  
 पाचनन्दशमूलादौ प्रायश्चित्ते नले तु ना ।  
 वाच्यवत्पाचयितरि हरीतक्यान्तु पाचनी ॥३२३९॥  
 पाचलम्पाचने नाऽग्नौ राधनद्रव्यवातयोः ।  
 पाञ्चजन्यो विष्णुशङ्खे शङ्खमात्रे हुताशने ॥३२४०॥  
 पाजो बले तथाऽन्ने च सकारान्तं नपुंसकम् ।  
 पाटकं याज्ञिकाना स्यात्सोमोन्माने नपुंसकम् ॥३२४१॥  
 ग्रामार्धे त्वस्त्रियां त्रिस्तु पटेः पाटयतेस्तृतः ।  
 पाटकः स्यान्महाकिष्कौ कटकान्तरवाद्ययोः ॥३२४२॥

अक्षादिचालने मूलद्रव्यापचयरोधसोः ।  
 पाटलस्तु पुमानाशुसंज्ञब्रीह्यन्तरे तथा ॥३२४३॥  
 श्वेतलोहितसंमिश्रवर्णभेदेऽथ तद्वति ।  
 त्रि स्त्री तु तद्वर्णाख्यायां पाटला पाटलिद्रुमे ॥३२४४॥  
 पुष्पे तु तस्य नप्स्त्री स्यात्पाटलं पाटलेति च ।  
 पाटलिः पाटलासंज्ञपुष्पवृक्षे द्वयोर्भवेत् ॥३२४५॥  
 विवाहार्थे पुनः शङ्खपात्रे स्यात्पाटली स्त्रियाम् ।  
 पाटीरो मूलके वङ्गे तितऔ वात्तिकेऽम्बुदे ॥३२४६॥  
 केदारे वेणुसारे च पुँल्लिङ्गः स्यात्पाटीरवत् ।  
 पाठा स्त्री विडकर्ण्या<sup>१</sup> स्यात्ख्याते तु पठने च ना ॥३२४७॥  
 पाठीनः पाठके गुग्गुलौ मत्स्यभिदि तु द्वयोः ।  
 पाणिः पलचतुर्भागे हस्तेऽपि च पुमान्मतः ॥३२४८॥  
 रक्तोत्पले पाणिकं ना पणेऽशीतिकपर्दके ।  
 पाणिग्रहो विवाहे स्यात्पाणेश्च ग्रहणे पुमान् ॥३२४९॥  
 पाण्डुः कुन्तीपतौ पाण्ड्यदेशराजाऽन्तरेऽपि ना ।  
 शालिजात्यन्तरे रोगभेदे खर्जूरपादपे ॥३२५०॥  
 वर्णान्तरे तद्वति तु त्रि खर्जूरफले तु नप् ।  
 स्यात्पाण्डुकम्बलः श्वेतप्रावारग्रावभेदयोः ॥३२५१॥  
 पाण्डुरं क्ली मरुवके शुक्ले ना त्रि तु तद्वति ।  
 पातो ना पतने राहौ पातं त्राणे च शोषणे ॥३२५२॥  
 पातन्तु शुष्के त्राते च वाच्यवत्परिकीर्तितम् ।  
 पापे तु पातकोऽस्त्री त्रिः पतेः पातयतेर्बुलि ॥३२५३॥  
 पातालन्नागलोके स्याद्विवरे वडवानले ।  
 पाताली वागुरायाञ्च स्थाल्याञ्चैव स्त्रियाम्मता ॥३२५४॥  
 पातिली वागुराया स्यान्नारीपात्रप्रभेदयोः ।  
 पातुकः पतयालौ त्रिर्ना प्रपातेऽबिभे द्वयोः ॥३२५५॥  
 पात्रम्पात्री च पात्रश्च पिबेस्त्रातरि शोष्टरि ।  
 तथैव भाजनेऽपि स्यादथ योग्ये स्रुगादिके ॥३२५६॥

आढके मण्डिते वित्ते नद्याः कूलद्वयान्तरे ।  
 प्रधानाङ्गे च सुगुणे पर्णे पात्रन्नपुंसकम् ॥३२५७॥  
 पात्रटस्तु कृशे त्रि स्यात्कर्षटे तु पुमानययम् ।  
 पात्रटीरः कास्यलोहरौप्यपात्रेऽपि पावके ॥३२५८॥  
 सिंहाणेऽपि पुमास्तद्वद्युक्तव्यापारमन्त्रिणि ।  
 पाथः स्थाने जलेऽन्ने च व्योमन्यर्केऽग्नौ नपुंसकम् ॥३२५९॥  
 पाथिरस्त्री रवौ चन्द्रस्वर्गज्योतिर्नदीषु नप् ।  
 पादोऽशौ चरणे वृक्षेम्रलेऽद्रेः प्रान्तपर्वते ॥३२६०॥  
 तुर्यभागे पद्यभागे परिमाणान्तरेऽपि च ।  
 पादचत्वर इत्युक्तश्छागसैकतपिप्पले ॥३२६१॥  
 करके परदोषैकप्रवक्तृपुरुषेऽपि च ।  
 पादपस्तु पुमान्वृक्षे पादपीठेऽप्यथ स्त्रियाम् ॥३२६२॥  
 पादपा पादुकाया स्यात्पादरक्षे तु भेद्यवत् ।  
 पादपाशी खड्गुकाया शृङ्खलायामपि स्त्रियाम् ॥३२६३॥  
 पादबन्धनमित्युक्तं क्लीबं चरणबन्धने ।  
 तथा जीवधनाभिख्ये गोमहिष्यादिवस्तुनि ॥३२६४॥  
 उपानहि स्त्रिया पादरक्षणी क्ल्यङिघ्नरक्षणे ।  
 पादातन्तु पदातीना सङ्घे क्लीबम्प्रकीर्तितम् ॥३२६५॥  
 पदातिसम्बन्धिनि तु पदातौ च त्रिषु स्मृतम् ।  
 पादावर्त्तः पुमान्पादस्यावर्त्तेऽप्यरघट्टके ॥३२६६॥  
 पादिका मन्दिरस्याल्पस्थूणायामप्युपानहि ।  
 रसतुर्येण हेमादेर्वेधे चापि स्त्रियाम्मता ॥३२६७॥  
 क्रीताद्यर्थे पादिकस्त्रि स्यात्पत्तरि तु पादकः ।  
 पादुः पादूरपि स्त्री स्यात्पादुकायामुपानहि ॥३२६८॥  
 पानन्तु पीतौ त्राणे च पानपात्रे च शोषणे ।  
 दर्शने क्वाप्यथो पानः पुमान्निःश्वासमारुते ॥३२६९॥  
 पानीयन्तु जले क्लीबं पातव्ये तु मतं त्रिषु ।  
 पानीयसम्भवं तु क्ली कूप्याख्यलवणान्तरे ॥३२७०॥

त्रि तु यत्किञ्चिदन्यत्स्याद्वारिजन्तत्र कीर्तितम् ।  
 पापस्तु कुत्सिते क्रूरे त्रिषु क्लीबन्तु दुष्कृते ॥३२७१॥  
 बिभीतकफले चाथ बिभीतकतरौ पुमान् ।  
 पापद्विर्मृगयाया स्त्री पापक्रद्वौ यथायथम् ॥३२७२॥  
 पाप्मा रोगे च पापे च नान्तं पुंसि प्रकीर्तितः ।  
 पामरो वाच्यवत्खण्डे नीचे चाज्ञे च कीर्तितः ॥३२७३॥  
 पायसोऽस्त्री दुग्धसिद्ध ओदने पुंसि तु स्मृतः ।  
 श्रीवेष्टाह्वयनिर्यासे पयोयोगिनि तु त्रिषु ॥३२७४॥  
 पायुर्भगे गुदे चापि पुँल्लिङ्गः परिकीर्तितः ।  
 पारोऽस्त्र्यन्यतटे ग्रान्ते साख्यतुष्ट्यन्तरे च ना ॥३२७५॥  
 पारी पूरे दोहपात्रे पादरज्जौ च दन्तिनः ।  
 पुष्पधूलौ च खण्डेऽथ पारा स्त्री सरिदन्तरे ॥३२७६॥  
 मध्यदेशस्थिते पारस्तु त्रिस्तारकपालके ।  
 क्वचित्खण्डे परागे च पारस्तु त्रिषु तारके ॥३२७७॥  
 पारः पुमान्स्यात्तरणपारतर्षिणृपान्तरे ।  
 पारकस्तारयितरि तर्पके पूरके त्रिषु ॥३२७८॥  
 पारके पारकास्तु स्थुर्नृजातिभिदि भूमिन् पुम् ।  
 पारणस्तारके त्रिर्ना मेघे क्ली तु समापने ॥३२७९॥  
 व्रतान्तभोजने क्ली स्त्री पारणम्पारणापि च ।  
 कात्स्न्ये समस्तपाठेऽपि पारणं केचिदूचिरे ॥३२८०॥  
 पारतः पारदे पुंसि पारतस्तसि चाव्ययम् ।  
 पारदः पारते पुंसि त्रिस्तु पारस्य दातरि ॥३२८१॥  
 उदीच्यनीवृद्धेदे तु पारदाः स्युर्नृभूमनि ।  
 पारपारः पुमान् विष्णौ साख्यतुष्ट्यन्तरे तु नप् ॥३२८२॥  
 पारगे त्रिः पारमितो भावे पारमितास्य च ।  
 पारलौकिकमन्यस्य लोकस्य त्रिषु योगिनि ॥३२८३॥  
 मौक्तिकाकरभेदे तु पुंसि तन्मौक्तिकेऽपि च ।  
 द्वे तु पारशवो विप्रस्योदशुद्रासुते तथा ॥३२८४॥

परस्त्रीतनये चापि मौक्तिके तु पुमान्मतः ।  
 अथास्त्रिया स्यात् शस्त्रेऽपि लोहे कालायसाह्वये ॥३२८५॥  
 मध्यदेशनृजातीना भेदे तु स्युर्नृभूमनि ।  
 पारापारन्तीरयुगे पारापारस्तु वारिधौ ॥३२८६॥  
 अथ पारायणन्ध्याने तत्परेऽधीष्ट आश्रये ।  
 साकल्यासङ्गयोश्च स्यादङ्गशस्य च बन्धने ॥३२८७॥  
 जलेन चतुरो मासान्वर्त्तनात्मनि च व्रते ।  
 कात्स्न्ये समस्तपाठ्ये च पाठे पारायणस्तु ना ॥३२८८॥  
 कथकेऽपि च शिष्टेऽपि कथितः कस्यचिन्मते ।  
 पारायणी सरस्वत्या कर्मध्यानप्रभासु च ॥३२८९॥  
 पारावतो त्रीहिभेदे तरुभेदेन्द्रनीलयोः ।  
 अतस्या वर्णभेदे चेष्टपाण्डौ त्रि तु तद्वति ॥३२९०॥  
 नीचेऽप्यथ द्रुमस्यात्रोक्तस्य पारानते फले ।  
 'वर्मण्यप्यथ पारावतो द्वे गृहकपोतके ॥३२९१॥  
 पारावती गोपगीते नदीभिल्लवलीफले ।  
 पारावतपदी स्त्री स्याज्जीवन्तीसंज्ञभेषजे ॥३२९२॥  
 यथासमासं योगार्थे लिङ्गाद्यस्य प्रकीर्तितम् ।  
 'पारावारोऽम्बुधौ पारावारन्तु स्यात्समाहृतौ ॥३२९३॥  
 पारावारे परार्वाचोः कूलयोरसमाहृतौ ।  
 पारिः सृणिगुणे घण्टा स्त्रियामेषा प्रकीर्तिता ॥३२९४॥  
 पारिजातः सुरद्रूणा पञ्चाना कचिदिष्यते ।  
 वृक्षभेदे च मन्दारपारिभद्रादिनामनि ॥३२९५॥  
 पारिन्दस्तु पुमान्वृक्षे गाथके त्वभिधेयवत् ।  
 पारिप्लवस्त्वाकुलेऽपि चञ्चले चाभिधेयवत् ॥३२९६॥

१ चर्मण्यथ वा ।

२ पारावार पुमान्विष्णौ साख्यतुल्यन्तरे तु नप् ।

पारावार तीरयुगे पारावारस्तु वारिधौ ॥

कथान्तरेऽश्वमेधादिकीर्त्तनीये पुमान्मतः ।  
 पारिभद्रस्तु मन्दारे निम्बद्रौ देवदारुणि ॥३०९७॥  
 पारिव्याधस्तु पुंसि स्याद्वेतसे च द्रुमोत्पले ।  
 पारुष्य परुषत्वे च दुर्वाक्ये चेन्द्रकानने ॥३०९८॥  
 बृहस्पतौ तु पारुष्यः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।  
 पार्थिवः पुंसि भूपेऽथ पृथिव्या विदिते त्रिषु ॥३०९९॥  
 पृथिव्याश्च विकारे स्यादिदमर्थादिके तथा ।  
 तत्र स्व्यर्थे भवेद्वृत्तौ पार्थिवा पार्थिवीति च ॥३१००॥  
 पार्थिवी तु स्त्रियामेव जानक्याम्परिकीर्त्तिता ।  
 पार्षरो भक्तसिक्थं स्यात्कीनाशे राजयक्ष्मणि ॥३१०१॥  
 जराटेऽपि कदम्बस्य केसरे च गदान्तरे ।  
 पार्यः पारहितेऽन्त्ये त्रिः पार्यन्त्वन्ते नपुंसकम् ॥३१०२॥  
 पार्वतस्तु पुमान्निम्बे त्रि पर्वतभवादिके ।  
 पार्वती तु भवान्यामप्याढकीसंज्ञमृद्यपि ॥३१०३॥  
 गोपाल-<sup>१</sup>पत्रिकायाञ्च गजभक्ष्याख्यभूरुहे ।  
 पार्श्वन्तु कक्षाऽधोभागे पशुवृन्दात्मके तनोः ॥३१०४॥  
 चक्रोपान्तेऽन्तिके ना तु जैनतीर्थकरान्तरे ।  
 पाद्व्यौ पुनः स्त्रियौ द्यावापृथिव्योः परिकीर्त्तितौ ॥३१०५॥  
 पार्णिरुन्मत्तनार्या स्त्री पादग्रन्थ्यधरे तु सा ।  
 सैन्यस्य पृष्ठभागे च स्त्रिया पुंसि च कीर्त्तिता ॥३१०६॥  
 पाली स्त्री जडकन्यायाम्पालस्तु त्रिषु पालके ।  
 पालस्त्राणे पुमानस्त्री द्रोणाख्ये काष्ठपात्रके ॥३१०७॥  
 पालकस्तु पुमान्हास्तेशिरोमध्यस्य पार्श्वयोः ।  
 गजज्वरे च द्वे त्वश्वे क्ली तु कुष्ठारख्यमेषजे ॥३१०८॥  
 पालङ्कः शल्लकीशाकभेदयोः प्राजिपक्षिणि ।  
 पालिः कर्णलताऽग्रेऽश्रौ पङ्क्तावङ्कग्रभेदयोः ॥३१०९॥

छात्रादिदेये स्त्री पाली यूकासश्मश्रुयोषितोः ।  
 पालिकस्तु पुमान्वृक्षे नृपतावपि कीर्तितः ॥३३१०॥  
 भेद्यवद्राथके मुख्ये पूज्ये रक्षक एव च ।  
 पालुकः सूपकारेऽभिधेयवत्प्रोच्यतेऽथ च ॥३३११॥  
 लघुवाचिनि सूप्ते ना स्यादध्वर्यो च पालुकः ।  
 पालूरस्तु द्वयोर्दूते क्लीबन्त्वन्ध्रपुरान्तरे ॥३३१२॥  
 पावकोऽग्नौ सदाचारे वह्निमन्थे च चित्रके ।  
 भल्लातके विडङ्गे च पुंल्लिङ्गः परिकीर्तितः ॥३३१३॥  
 पावनन्तु जलेऽपि स्यात्प्रायश्चित्ते नपुंसकम् ।  
 अथ स्यात्पावयितरि पवितर्यपि वाच्यवत् ॥३३१४॥  
 पावनस्तु पुमान्व्याप्ते पावकेऽपि प्रकीर्तितः ।  
 पाशो ना पाशनाया सुब्बातोः पाशयतेर्धञि ॥३३१५॥  
 रज्ज्वादिप्रान्तविन्यस्तग्रन्थिभेदे तथैव च ।  
 मृगपक्ष्यादिबन्धार्थयन्त्रभेदे च तत्कृते ॥३३१६॥  
 स्त्री तु केशाच्छिखाया स्यात्केशपाशिन्यथ त्रिषु ।  
 याप्ये प्रत्ययसंज्ञः स स्वाधिको निहतस्वरः ॥३३१७॥  
 पाशी तु वरुणे पुंसि व्याधे पाशी च पाशिनी ।  
 पुमान्पाशुपतो वृक्षे शिवमल्लीबकाभिधे ॥३३१८॥  
 त्रि स्यात्पशुपतेः सम्बन्धिनि क्ली तु व्रतान्तरे ।  
 पिङ्गो मण्डलिमर्पाणा प्रभेदे महिषे द्वयोः ॥३३१९॥  
 ना पिशङ्गाह्वये वर्णे ऋषिभेदे च सर्षपे ।  
 पिशङ्गवर्णयुक्ते तु त्रि स्त्रिया पिङ्गलाह्वये ॥३३२०॥  
 पिङ्गा पक्ष्यन्तरे ब्रह्मरीतिसज्ञे च लोहके ।  
 तथा गोरोचनाहिङ्गुनालिकाचण्डिकासु च ॥३३२१॥  
 पिङ्गी तु शम्याम्पिङ्गन्तु तालके क्लीबमिष्यते ।  
 पिङ्गलो नागमुनिभिद्विष्णुब्रह्मशिवाग्निषु ॥३३२२॥  
 रवेरन्यतमे पारिपार्श्विकानां पिशङ्गके ।  
 वर्णे तद्वति तु त्रि स्त्री करिण्या पिङ्गला मता ॥३३२३॥



पुण्डरीकाभिधानस्याग्नेयदिवकरिणस्तथा ।  
 षण्णामन्यतमायाश्च निविषाणा जलौकसाम् ॥३३०७॥  
 शरीरनाडिभेदे च पक्षिजात्यन्तरेऽपि च ।  
 महाभारतविख्यातवेश्याया लोहभिद्यपि ॥३३०५॥  
 ब्रह्मरीतिसमाख्याया ह्रीवेरे तु नपुंसकम् ।  
 द्वयोर्विडाले नकूले वानरेऽपि च पिङ्गलः ॥३३०६॥  
 पिचुर्ना कुष्ठमित्कर्षमानतूलसुरान्तरे ।  
 पिचुलो ज्ञावुकेऽपि स्यादिज्जले जलवायसे ॥३३०७॥  
 पिचटो नेत्ररोगे ना क्लीबं सीसकरङ्गयोः ।  
 पिच्छा पूगच्छटाकोशमोचाशाल्मलिवेष्टके ॥३३२८॥  
 सर्वपिच्छिलमण्डे च पङ्क्तावश्वपदामये ।  
 यवाग्वाश्च स्त्रिया पिच्छस्तु द्वयोर्बह्वचूडयोः ॥३३२९॥  
 पक्षिणस्तु छदे क्लीबं पिच्छ पुच्छे तु पुंस्ययम् ।  
 पिच्छः स्याद्गुणभेदे च यद्वा पिच्छिल उच्यते ॥३३३०॥  
 'पिच्छली त्रिस्तृणस्तम्बे राशौ पिच्छल एष ना ।  
 पिञ्जरः पीतगङ्गाख्ये मिश्रवर्णान्तरे पुमान् ॥३३३१॥  
 त्रि तु तद्वत्यथ क्लीबं हरितालेऽपि पिञ्जरम् ।  
 पिञ्जा तूले हरिद्रायाम्पिञ्जन्तु क्ली बले स्मृतम् ॥३३३२॥  
 पिञ्जस्तु स्याद्वधे पुंसि व्याकुले त्वभिधेयवत् ।  
 पिटो रोमपुटे तद्वत्कण्डोलेऽपि पुमान्ततः ॥३३३३॥  
 पिटं पिटाटिकाख्ये क्ली छदिषोऽवयवे मतम् ।  
 पिटकस्त्रिषु विस्फोटे मञ्जूषायाम्पुमान्ततः ॥३३३४॥  
 पिठरम्मुस्तके मन्थदण्डेऽपि स्यान्नपुंसकम् ।  
 पिठरी तु स्त्रिया क्लीबेऽपि स्यात्स्थाल्युखयोरियम् ॥३३३५॥

१ स्यात्पक्षिपक्षेऽपि मयूरस्य शिखण्डके ।

स्त्रियाम्पुंसि तु लाङ्गूले न द्वयोर्बह्वचूडयोः ।

'पिण्डो बाले बले सान्द्रे देहागारैकदेशयोः ।  
 देहमात्रे निकाये च गोलसिल्हकयोरपि ॥३३३६॥  
 ओद्गुष्पे च पुंसि स्यात्क्लीबमाजीवनायसोः ।  
 पिण्डी तु पिण्डीतगरेऽलाबुखर्जूरभेदयोः ॥३३३७॥  
 पिण्डपुष्पमशोके च जवायाश्च कुशेशये ।  
 स्त्रियाम्पिण्डफलाऽलाबुबल्ल्या योगे यथायथम् ॥३३३८॥  
 'पिण्डारः क्षपणे गोपे महिषीरक्षके द्रुमे ।  
 पिण्डारको ना पिण्डीके चित्राङ्गद्वीपिनि द्वयोः ॥३३३९॥  
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे निःस्नेहपिण्डके ।  
 पिण्डिकस्तु पुमान्गोहावयवेऽलिन्दसंज्ञके ॥३३४०॥  
 पिण्डिका तु स्त्रियान्नाभौ रथचक्रस्य कीर्त्तिता ।  
 जङ्घापिण्डे तथा हस्तिचरणावयवान्तरे ॥३३४१॥  
 पिण्डितो ना तुरुष्केऽथ त्रिषु स्याद्गणिते घने ।  
 पिण्डिलस्तु पुमान्मेघे हिमे क्ली गणके त्रिषु ॥३३४२॥  
 पिण्डीतकः स्यात्तगरे मदनाख्यमहीरुहे ।  
 पिण्याकोऽस्त्री तुरुष्काख्यनिर्यासे द्विङ्गुकिण्वयोः ॥३३४३॥  
 श्रीपिष्टाख्ये च निर्यासे यवानीतिलकल्कयोः ।  
 पितामहो विरिञ्चे ना पितुश्च पितरि स्मृतः ॥३३४४॥  
 पितामही पुनः स्त्रीत्वे पितुर्मातरि कीर्त्तिता ।  
 पितुस्त्वन्ने विरिञ्चे च सूर्ये चापि पुमान्मतः ॥३३४५॥  
 पितृप्रपा तु योगार्थे गयायामाग्नसेचने ।  
 पित्तलं त्वारसंज्ञे क्ली लोहभेदे स्त्रियाम्पुनः ॥३३४६॥  
 पित्तला तोयपिप्पल्या त्रिस्तु पित्तकरे भवेत् ।  
 पित्र्या तु पूर्णिमाया स्त्री पित्र्यन्तु पितृदैवते ॥३३४७॥

१ पिण्डो निवापे सङ्घात आजीवे च गुडेरके ।

बाले च पुद्गले ( पुद्गले ) पिण्डस्त्वस्त्रिया काय इष्यते ।

पिण्डी तु स्त्री देवपीठे भक्तपिण्डेऽपि कीर्त्तिता ।

२ पिण्डार वा ।

पितृसाधौ पितुश्चैवागतादा वाच्यव मतम् ।  
 पिसखगे द्वयोस्त्रिस्तु पत्तु पतितुमेष्टरि ॥३३४८॥  
 पदारो महिषीपाले गोपे द्वे क्षपण तु ना ।  
 पिनाक कामुके शम्भो शूलेऽपि परिकीर्त्तित ॥३३४९॥  
 पांशुवर्षे च दण्ड च पुनपुसकयारयम् ।  
 द्वयो पिपतिषपक्षिण्यथ त्रि पतनोत्सुके ॥३३५०॥  
 पिप्परस्तु पुमा वृक्षभदे स्यात्स्त्री तु पिप्परी ।  
 पिप्पल तु जले क्लीब वृक्षाणा च फले तथा ॥३३५१॥  
 वस्त्र छेदप्रभेदे च सूचीसूत्रेऽपि चूचुके ।  
 पिप्पली तु कणायाश्च कणमूले च हास्तन ॥३३५२॥  
 मृज्यमानेऽतिवर्गस्य सामभदे च सप्तमे ।  
 निरङ्गुले पक्षिभदे ना वश्वत्थ हि पिप्पल ॥३३५३॥  
 क्लीब पिप्पलक स्यूतिस्त्र वृते स्तनस्य च ।  
 पियालो वृक्षयो सन्नकद्रुजादनारययो ॥३३५४॥  
 क्ली तु तप्रसवे द्राक्षाया पियाला स्त्रिया मता ।  
 पिबलस्त्रिषु स्यात्क्विलन्नेऽक्षिण तथा किल नाक्षिमत्यपि ॥३३५५॥  
 पिशाचस्त्रिषु सोन्मादे देवयोऽयतरे द्वयो ।  
 पिशित क्ली भवेमासे मांस्यां तु पिशिता स्त्रियाम् ॥३३५६॥  
 पिशील क्लीबमृदादतमेतदसद्वयान्तर ।  
 अथ त्रया पिशीलीति वीणाभदे प्रकीर्त्तिता ॥३३५७॥  
 पिशुन कुङ्कुमे रूपे तगरे च नपुसकम् ।  
 नारदेऽपि च काले ना वृक्षकक्ररयोस्त्रिषु ॥३३५८॥  
 स्पृक्कायां तु स्त्रियामेषा पिशुना परिकीर्त्तिता ।  
 पिष्टको घृतपूपादौ नत्ररोगान्तरेऽपि च ॥३३५९॥  
 पीको जलाशये योनौ पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 पीठ स्यादासने स्थाने तीर्थासनभिदोरपि ॥३३६०॥

१ निरङ्गुके वा ।

२ पिष्ट पुमान्क्विलन्नेऽक्षिण काले पुनरयवत् ।

अवधापूरण ना तु सूर्ये मत्स्यातरेऽपि च ।  
 कसामात्येऽपि कस्मिंश्चिदसुरेऽपि तथोदित ॥३३६१॥  
 पीठकस्वस्त्रियां पीठ शिविकायामपि क्वचित् ।  
 पीठिका तु स्त्रियां क्षुद्रपीठसु दरपीठयो ॥३३६ ॥  
 पीठमर्दोऽतिदृष्टा त्रिर्नायकस्य प्रिये तु ना ।  
 पीडन मदने तु खदानेऽप्यावरणेऽप्यना ॥३३६३॥  
 पीडा व्यथा शिरोमालाकृपासु सरलद्रुमे ।  
 उपरागोपेक्षणादौ केषाचित्पिटकेऽपि सा ॥३३६४॥  
 पीडित कृतपीडे त्रि क्ली पीडारतबन्धयो ।  
 पीतो ना ग धके हारिद्राभवर्णे च कीर्त्तित ॥३३६५॥  
 शामलिद्वीपवैश्येऽपि गोमूत्रोद्भववर्णके ।  
 त्रि तु तद्रणवति च पिबते पीयतेस्तथा ॥३३६६॥  
 कर्मण्यथ हरिद्राया पीता पीतौ तु नप् स्मृतम् ।  
 पीतकाबेरमित्येतत्कुङ्कुमे पित्तलेऽपि च ॥३३६७॥  
 पीतचन्दनमुद्दिष्ट कालीयकहरिद्रया ।  
 दीपके दपणे चापि केषाञ्चित्पीतचम्पक ॥३३६८॥  
 स्त्री पीततण्डुला कङ्कुधाये स्याद्यौगिके त्रिषु ।  
 पीतदारुस्तु नप्पीतचन्दने देवदारुणि ॥३३६९॥  
 अग्रौ सुवर्णे [क्लीब स्यात्] ताम्रसारे च चन्दने ।  
 पीतदुग्धा मता स्वर्णक्षीर्यामपि तथा गवि ॥३३७ ॥  
 पीतनो नाभ्रातके क्ली हरिताले च कुङ्कुमे ।  
 पीतदारुणि च प्रोक्तमाभ्रातकफलेऽपि च ॥३३ १॥  
 पीतपुष्पस्तु ना कासमदकुष्माण्डयोर्मत ।  
 शाखोटे कर्मरङ्गेऽपि पुमापीतफलो मत ॥३३ २॥  
 द्वे पीतमारुत सर्पभेदे योगे यथायथम् ।  
 पीतरक्तो रक्तपीते पीताऽसु यपि चेष्ट्यते ॥३३ ३॥  
 पीतराग मधूच्छिष्टे मृणाले न स्त्रियामिदम् ।  
 पीतल पीतवर्णे ना पीते त्रि पित्तले तु नप् ॥३३७४॥

पीतवृक्षा देवदारुद्रुमे स्योनाकपादपे ।  
 स्यापीतशोणितोऽप्यत्र यौगिकवाद्यथायथम् ॥३३ ५॥  
 पीतसारो मलयज गोमेदकमणानपि ।  
 पीता षकारे कदलीभेदशिंशपयोरपि ॥३३ ६॥  
 हारद्रायां महायोतिष्मत्यामतिविषौषधे ।  
 पीताङ्गो मेकभेदेऽपि तथा स्योनाकपादप ॥३३ ॥  
 पीताधि स्यादगस्त्येऽपि पुष्टिञ्जश्चीनसागरे ।  
 पीताम्बरस्तु शैलूष तथा कैटभसूदने ॥३३ ८॥  
 पीतिस्तु स्याद्द्वयोरश्वे पानकर्मणि तु स्त्रियाम् ।  
 पीती तु स्याद्द्वयोरश्वेऽथ पीतवति वाच्यवत् ॥३३ ९॥  
 पीतुद्वयो पक्षिणि स्यालाचने तु प्रभाकरे ।  
 यूथाच्यक्षगजे पुसि बाला यचषकेऽपि च ॥३३ १०॥  
 बालाना घृतपानार्थभाजने च पुमान्त ।  
 पीतदारुस्तु खदिर देवदारुद्रुमेऽपि च ॥३३ ११॥  
 पीथो ना नवनीतेऽनो बालपेयघृतेऽपि च ।  
 पानेऽथ पीथ क्ली क्षीरे जलेऽपि परिकीर्तितम् ॥३३ १२॥  
 पीनसो ना प्रतिश्याये द्वे तु मण्डलसंज्ञिनाम् ।  
 षड्विंशते सपजातिभेदानां क्वचिदिष्यते ॥३३ १३॥  
 पीनस्क धो वराहे द्वे स्यूलामे तु त्रिषु स्मृत ।  
 पीयकोऽसुरजातौ द्वे तथैव त्रिषु निन्दके ॥३३ १४॥  
 पीयुद्वयोरुलूके स्थाना काले किरण रवौ ।  
 पीयु काकोलूकयोर्द्वे त्रिषु हिंस्रे प्रकीर्तित ॥३३ १५॥  
 पीयुर्ना किरण काले सुवर्णे पावके रवौ ।  
 पीयूषत्वमृते दुग्धे नवसूतगवीभवे ॥३३ १६॥  
 पीला स्यादप्सरोमदे स्त्रीविशेष तथा मता ।  
 पीलुस्तु कटफले काण्डे पुष्प गुडफलद्रुमे ॥३३ १७॥

१ पीलु पुमान् प्रसूने स्या परमाणौ सततज्ज ।

अस्थिख डे च तालस्य काण्डपादपमेवयो ।

तालकाण्डे कृमा बाण पुद्गले शरकोरक ।  
 फालास्थिखण्डे च पुमाद्वे तु पीलुमतङ्गजे ॥३३८८॥  
 कटफलस्य तु पीलोश्च फले पीलु नपुसकम् ।  
 पीलुको वृक्षभेदे ना द्वयोस्तु स्यापिपीलुके ॥३३८९॥  
 पीलुपर्णी तु मूर्वाया बिम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।  
 पीव स्थूले वाच्यवत्स्यात् पीवा तु स्यात्स्त्रिया जले ॥३३९०॥  
 पीवा वायौ पुमास्थूले वाच्यवत्पीवरी पुन ।  
 युवत्या च शतावर्या तथा च गवि कीर्त्तिता ॥३३९१॥  
 बर्हिषपितृकयाया पत्न्या वेदशिरोमुने ।  
 पीवरस्तु द्वयो कूर्मे स्थूले तु त्रिषु कीर्त्तित ॥३३९२॥  
 पीवरा त्वश्वगधाया शतावर्या प्रकीर्त्तिता ।  
 पीवरतु मत क्रौश्चद्वीपवर्षातरे नपि ॥३३९३॥  
 पीवरी तु स्त्रियामेषा शतावर्या प्रकीर्त्तिता ।  
 पुश्चल स्वैरिपुरुष स्वैरिण्या पुश्चली मता ॥३३९४॥  
 पुश्चल्व्यभिचारिण्या स्त्री ना तु व्यभिचारिणि ।  
 अथ पुसवन गमस्त्रिया सस्कारकर्मणि ॥३३९५॥  
 क्षीरे पुसश्च सवने नपुसकमुदीरितम् ।  
 पुस्त्वतु पुरुषत्वेऽपि शुक्रेऽपि क्वचिदिष्यते ॥३३९६॥  
 पुक्कसी कलिकाया च नीलिकायामपि स्त्रियाम् ।  
 शपचे तु द्वयारेष पुक्कसस्त्वधमे त्रिषु ॥३३९७॥  
 पुङ्क श्येने द्वयोर्ना मङ्गलाचारशराङ्गयो ।  
 पुङ्गल सुन्दराकारे त्रिषु पुस्याऽऽत्मदहयो ॥३३९८॥  
 पुङ्गवस्तु बलीवर्दे प्रभेदेऽप्यौषधस्य च ।  
 उत्तरस्य पुन श्रष्ट पुङ्गव परिकीर्त्तित ॥३३९९॥

१ पीलुपर्णी बिम्बिकाया मूर्वायामोषधि भवि ।

२ उल्लेखे द्वितीयसंस्कारे दुग्धे पुसवन मतम् ।

३ पुङ्क श्येने द्वयोर्ना तु कर्त्तर्याङ्गे शराङ्गके ।

पुङ्गवस्तुवभ श्रष्ट प्रभेदेऽप्यौषधस्य च ।

पुच्छ पश्चात्प्रदेशे मुरयाङ्गे लाङ्गलयोनृनप् ।  
 पुच्छी स्यादकपर्णे ना कुक्कुट तु द्वयोर्मत ॥३४ ॥  
 पुञ्जिष्ठ कैर्जर्के द्व वाच्यवपुञ्जिते मत ।  
 पुट स्त्रीपुसयो शूद्रकवरीसम्भवे मत ॥३५ ॥  
 पूर्वा करण्णा कौपीन पुटस्तु स्याममुद्रक ।  
 छन्दोऽन्तरे पुट तु स्यात्क्लोव जातीफले पुरे ॥३६ ॥  
 पुटक स्यात्पत्रपुट पाणिमुद्रा तरे पुट ।  
 पुटिका भस्त्रिकाशुक्त्योरेलायाञ्च स्त्रियाम्मता ॥३४ ३॥  
 जातीफले तु पुटक कमले कुमुदेऽपि च ।  
 पुटग्रीवा तु गगर्वा ताम्रघट्यामपि स्त्रियाम् ॥३७ ॥  
 पुटभेदो नदीवक्त्रे पत्तनातोद्ययोरपि ।  
 पुटित स्याद्वस्तिपुटे त्रि तु स्यूत च पाटित ॥३७ ५॥  
 पुण्डरीक सिते छत्रे कुष्ठ याध्य तरेऽपि च ।  
 पद्ममात्रे सिताम्भोज बालुकारयविषा तरे ॥३४ ६॥  
 स्यादाम्रस्य फले गन्धद्रव्ये मदनकाह्वये ।  
 पुण्डरीकस्त्वग्निदिशो गजे हस्तिज्वरा तरे ॥३४ ॥  
 कोशकारा तरे चेक्षुशालिजातिभिदोरपि ।  
 महाश्वेतापतौ चापि विष्णुभक्त द्विजा तरे ॥३४ ॥  
 द्वयोस्तु सर्पभेदा ये राजिलारयास्त्रयोदश ।  
 तेषामेकत्र भेदे च याघ्रे च परिकीर्तित ॥३४ ९॥  
 आनूपमासवगस्य मध्ये य प्लवसङ्गक ।  
 हसादिगण उद्दिष्टस्तत्र चैकत्र पक्षिणि ॥३४१ ॥  
 अस्त्रियां तिलके यज्ञभेदेऽपि परिकीर्तित ।  
 पुण्डरीका त्वप्सरोभिः क्रौचद्वीपसरिद्भिदो ॥३४११॥  
 पुण्डरीकमुख पद्मवदने वाच्यवमत ।  
 पुण्डरीकमुखी तु स्त्री जलौकाभिदि कीर्तिता ॥३४१ ॥

१ पुटी त्रयी करण्णा क्ली नगरे ना समुद्रके ।

पुटी द्वे कवरी शूद्रसम्भवेय पुटी त्रिषु ।

पुण्डरीकाक्ष इत्येष विष्णौ जलखगातरे ।  
 पुण्डरीकाक्षमित्येतत्क्लीब स्याद्भेषजातरे ॥३४१३॥  
 पुण्डरीयक इत्येष विश्वेदेवातरेऽथ च ।  
 प्रपौण्डर्ये भेषजभिद्यपि स्यात्पुण्डरीयकम् ॥३४१४॥  
 पुण्ड्र तु तिलके न स्त्री पुण्ड्रस्तिवक्षतरे ।क्रमौ ।  
 पुण्ड्र हिमाचलहेमकूटयोर्मध्ये पुरम् ॥३४१५॥  
 पुष्पगुमेऽतिमृत्तारये दैत्यमित्पुण्डरीकयो ।  
 नीवृद्धदे तु पुण्ड्रा स्युवरेद्रथाख्ये नृभूमनि ॥३४१६॥  
 अथ पुण्ड्रा स्त्रियामव धवलायां गवीष्यते ।  
 पुण्ड्रक पुण्ड्रतुल्यार्थे ना कोशकृमिजीविनि ॥३४१७॥  
 पुण्य पु पेऽप्सु ख हेम्नि व्रते धर्मे सुकर्मणि ।  
 गङ्गान्ध्योस्तु पुण्या स्त्री स्यात्तुलस्यश्चगन्धयो ॥३४१८॥  
 जस्त्री तु स्यात्सरोमेदे त्रिर्मनोज्ञे च पावके ।  
 पुण्यक प्रतभदेऽत्र भार्यायै चाप्युपायने ॥३४१९॥  
 पुण्यकृत्त्रिषु योगार्थे विश्वेदेवान्तरे पुमान् ।  
 पुण्यगन्ध सुगन्धे त्रिश्चम्पके तु पुमान्त ॥३४२०॥  
 पुमा पुण्यजनो यक्षे राक्षसे सज्जनेऽपि च ।  
 पुसि पुण्यफलो लक्ष्म्या उद्याने यौगिके त्रिषु ॥३४२१॥  
 पुसि पुण्यबलो बोधिसत्त्वशक्त्यतरे तथा ।  
 पु यवत्यारयपुर्याश्च नृपतौ परिकीर्तित ॥३४२२॥  
 पुण्यभूमि पुत्रमातर्यार्यावर्त्तेऽपि च स्त्रियाम् ।  
 पुण्यवास्त्रि सुकृतिनि पूर्वदे पुण्यवत्यपि ॥३४२३॥  
 पुण्यश्लोक पुण्यकीर्त्तौ वाच्यवच्च प्रियवदे ।  
 पुत्तल पुद्गले दहे नरजीवशिवात्मसु ॥३४२४॥  
 द्वे तु स्फटिकवर्णाऽश्वे मनोज्ञे तु त्रिषु स्मृत ।  
 पुत्रास्तु भूमिच्छादोग्ये मधुकृत्सु प्रकीर्त्तिता ॥३४२५॥  
 पुत्रस्तु तनये पुसि पञ्चमे भवनेऽपि च ।  
 पुत्रकारयेऽपि सविषक्षुद्रजन्तौ नृपान्तरे ॥३४२६॥



पुत्री दुहितरि स्त्री वे सालभयामपीष्यते ।  
 हस्वार्थेऽप्यासपुत्र्यादा पावत्या वीरुदतरे ॥३४ ॥  
 पुत्रकस्तु पुमान्दीक्ष्यभदे स्या पवता तरे ।  
 पेषण्यां पाटलिपुरनिमातृद्रुमभदयो ॥३४ ८॥  
 पुत्रदा स्तम्भभदेऽपि क दभदे च कीत्तिता ।  
 वध्याकर्कोटकीवल्लौ योगार्थे तु त्रि पुत्रद ॥३४ ९॥  
 पुत्रदात्री मालवज वीरुद्वेदेऽपि यौगिके ।  
 पुत्रप्रिय पक्षिभदे द्वयोस्त्रिषु तु यौगिक ॥३४ ३ ॥  
 स्याद्वसिष्ठे पुत्रहतो हतपुत्रे त्रिषु स्मृत ।  
 स्यात्पुत्रिका पुत्तलिकादुहित्रोर्यावतूलके ॥३४ २१॥  
 खड्गासिपुत्रिकादौ च हस्वत्वे सा प्रयुज्यत ।  
 कृत्रिमादौ द्वयो स्त्रीत्वे पुत्रका पुत्रिकेति च ॥३४ ३ ॥  
 अभ्रातृपितृका कया पूणदाया च पुत्रिका ।  
 पुत्रिका तु मता स्त्रीत्वे मृदार्वादिकपुत्तले ॥३४ ३२॥  
 पतङ्गिकाया देशे च प्लुषां श्वेतपिपीलके ।  
 पुद्गल परमाण्वात्मदेहे ना त्रिस्तु सुदरे ॥३४ ३४॥  
 पुन पक्षातरे भेदाधिकाराग्रथमेषु च ।  
 विरुद्धाया दिशीत्यर्थे क्वचि ह्रुतिषु दृश्यते ॥३४ ३५॥  
 पुनर्भव पुनज म नखरक्तपुननवे ।  
 पुनर्भू पुनरुद्धाया स्त्री पुननूतने त्रिषु ॥३४ ३६॥  
 पुनर्वसुर्वररुचौ विष्णौ लोकातरे शिव ।  
 नृपान्तरे धनस्योपक्रमे ना दितिमे पुन ॥३४ ३ ॥  
 पुनवस्र द्विवचने तद्युक्ते चाप्यनेहसि ।  
 पुनवसुस्तु जातेऽत्र वाच्यवत्परिकीर्तित ॥३४ ३८॥  
 पुनस्सरः प्रतिगमेऽप्यपामार्गे पुमान्मत ।  
 पुन्नागस्तु नरश्रेष्ठजातीफलसितोत्पले ॥३४ ३९॥  
 केसरे पाण्डनागे च पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ।  
 पुन्नाग पूयपुरुषे पु गजे पुम्भुजङ्गमे ॥३४ ४ ॥

देवव लभवृक्षे ना कलीव तत्प्रसवे मतम् ।  
 पुष्फुसोऽम्बुजबीजाना कोशे चापि कफाशये ॥३४४१॥  
 पुमास्तु पुरुषे विष्णावात्मयपि च पौरुषे ।  
 [वशावृत्तौ तथा] दासे पुल्लिङ्गे सारयपूरुष ॥३४४२॥  
 पू स्त्रिया नगरे देहे बुद्धौ पूर्त्तावपीष्यते ।  
 पुर तु न स्त्रिया ध्यामस्तम्ब स्याद्देहदेहयो ॥३४४३॥  
 असुराणां त्रिषु पुरेष्वपि वचि च मुस्तके ।  
 सर्वतोभद्रकाद्य च स्याच्छवागमम डले ॥३४४४॥  
 पुरस्तु गुग्गुलौ पुसि नगरे तु पुरी त्रिषु ।  
 द्वयोस्तु शूद्रमहिषीपुत्रे पुरिरपि स्त्रियाम् ॥३४४५॥  
 पुरे पुरा पुन स्त्रीवे गन्धद्रया तर मता ।  
 पुरी स्त्रिया जग नाथक्षेत्रे पुसि पुन क्वचित् ॥३४४६॥  
 दशानामपि भिक्षूणा शङ्करानुगमायिनाम् ।  
 पुरञ्जनस्तु वरुणे पुमानामनि चेष्यते ॥३४४७॥  
 पुरञ्जनी पुनबुद्धौ स्त्रीलिङ्गे परिकीर्तिता ।  
 रञ्जयो राजमदेष्वावतसुतेऽपि च ॥३४४८॥  
 पुरत प्रथमे चाग्रऽप्यययम्परिकीर्तितम् ।  
 पुरदरोग्नाविद्रे च शिवे दस्यौ पुमानथ ॥३४४९॥  
 पुरन्दरा तु गङ्गाया तथा नद्य तरे स्त्रियाम् ।  
 पुरदरम्पुन कलीवमुदित चयमेषजे ॥३४५०॥  
 पुरधि स्यादुदारे त्रि स्त्री सौभाग्यवती स्त्रियाम् ।  
 औदायादारदे योश्च पुरधि श्रुतिषु श्रुता ॥३४५१॥  
 पुरत्र पुनरिद्रे च वरुण च पुमा मत ।  
 पुरश्छदश्चुचकेऽपि [पुरश्चरणमनुष्ठितौ] ॥३४५२॥  
 पुरोऽग्रे प्रथमे भूयोऽधिकारे च पुन पुन ।  
 पुरस्कारोऽग्रेकरण तथैव स्यादुपायने ॥३४५३॥  
 परस्कृत पूजिते स्यादभियुक्ते च शत्रुभि ।  
 अग्रतश्च कृते चैवाप्यभिषिक्तेऽभिधेयवत् ॥३४५४॥

पुरस्तात्प्रथमे प्राच्यामग्रतोऽथपरार्थयो ।  
 पुरा पुराणे नकटे प्रवधातीतभाविषु ॥३४५५॥  
 पुराण तु ग्रथभेद क्लीब स्यात्पञ्चलक्षणे ।  
 पुराण कार्षिके पुसि त्रिषु तु स्थाचिरतने ॥३४५६॥  
 पुराणा च पुराणी च तत्र रूप स्त्रियाद्वयम् ।  
 पुराणगस्त्रि कथके ब्रह्मण्येष पुमान्त ॥३४५७॥  
 पुरीतदत्रे हृदयावरणेऽपि नपुसकम् ।  
 पुरीषी व्यापके भूमेर्वाच्यवत्परिकीर्तित ॥३४५८॥  
 अथानिर्णीतलिङ्गोऽय सरखा सरिदतरे ।  
 पुरीष्य भूमिसम्बद्धे परीषस्य च योगिनि ॥३४५९॥  
 पुराराति शिवे पुसि विष्णावाप तथा क्वचित् ।  
 पुरिस्तु नगरेऽपि स्त्री नद्यामपि तथा मता ॥३४६०॥  
 पुरीष मृत्तिकाचूर्णे विष्ठाया सलिलेऽपि च ।  
 सामभिद्विम्बतेजस्तु पुरीषी चयनान्तरे ॥३४६१॥  
 पुरुर्नृपान्तरे गङ्गाद्वारादौ स्वग एव च ।  
 परागे ना द्वयोर्मर्त्ये त्रि तु प्रा ये महत्यपि ॥३४६२॥  
 पुरुट पुसि दम्पत्यो परैरसहने भवेत् ।  
 स्त्रीपुसयोश्च सलापे जलजन्तौ पुनर्द्वयो ॥३४६३॥  
 पुरुदसा पुमान्सान्तइद्रे त्रिर्बहुकर्मणि ।  
 पुरुभोजा गिरौ मेघे पुसि त्रिबहुश्रुज्यपि ॥३४६४॥  
 पुरुवारो बहुकचेऽश्वादौ त्रिश्च बहुप्रदे ।  
 पुरुष पुरुषीमर्त्यजातौ द्व ना सशेफके ॥३४६५॥  
 तिबादित्रिकभेदेऽपि प्रथमोत्तममध्यमे ।  
 अधिकारिणि मित्रे च सारयवादिनि वशजे ॥३४६६॥

१ पुरुभोजस्तु मेघे च गिरावपि पुमा मत् ।

पुरुभोजा बहुश्रुजि त्रिषु मेघे पुमान्मत ।

२ पुरुषस्तु द्वयोर्मर्त्ये ना तु ज तौ सशेफके ।

पुष्पागवृक्षे मृदिने क्षेत्रजे सारयवेदिनाम् ।

पञ्चारत्निप्रमाणे च सर्विशतिशताङ्गुले ।  
 कनीनिकायाङ्गीवे च विष्णौ च परमात्मनि ॥३४६७॥  
 शिवदुर्गाग्रहविष्णुस्वरूपे सारथ्यपूरुषे ।  
 वृक्षादिसौरभ सप्तत वेष्बडघ्रावृचा तथा ॥३४६८॥  
 महानाम्नीसमारयाना मेषादिविषमेष्वपि ।  
 चाक्षुषस्य मनो पुत्रेऽष्टादशाना स्वेरपि ॥३४६९॥  
 स्या पारिषार्थिकानामेकत्र पञ्चसु पुस्यपि ।  
 राजयोगोद्भवेष्वेवम्पु नाग [पुरुष पुमान्] ॥३४ ॥  
 अश्वावस्थानभेदे तु नस्त्री क्ली मेरुपर्वते ।  
 सेतुषानाम्नि पुरुषगति सामनि कीर्त्तिता ॥३४७१॥  
 अहमस्मीत्यगुत्पन्ने पुरुषस्य गतावपि ।  
 द्वयोस्तु पुरुष याघ्रो गृध्र ना पुरुषोत्तमे ॥३४ २॥  
 पुरुषाद्यस्तु विष्णौ स्यादादिनाथमेष्वपि च ।  
 पुरुषांतरमन्यस्मिपुसि भेदे नृणामपि ॥३४ ३॥  
 विष्णावहृत्यथाप्यहद्विशेष पुरुषोत्तम ।  
 अधिमासे जगन्नाथक्षेत्रेऽपि परिकीर्त्तित ॥३४ ४॥  
 पुरुषुतस्त्रिबहुभि स्तुते पुसि शिवे मत ।  
 पुरुषूतस्तु बहुभिर्हृते त्रि पुसि वासवे ॥३४ ५॥  
 पुरुषूता पुन स्त्रीत्वे दुर्गारूपान्तरे मता ।  
 पुरोगामी पुरोगे त्रि कुक्कुरे तु द्वयोमत ॥३४ ६॥  
 पुरोटि पत्रझङ्कारे नदीवेगेऽपि कस्यचित् ।  
 पुरोडाश सोमरसे हविस्तद्दानमन्त्रयो ॥३४ ॥  
 हुतशेषे च पुल्लिङ्ग श दोय परिकीर्त्तित ।  
 पुरोद्भवस्त्रि पौरे द्वे वृक्षभेद पुरोद्भवा ॥३४७८॥

पुरोगामी क्षुनि द्वे स्यात्त्रिषु तु स्या पुर सरे ।

२ पुरसंस्कारे वा ।

३ पुरोडाशो हविर्भेदे अमस्या पिष्टकस्य च ।

पुरोभागस्तु दोषकृत्स्वेऽप्रावस्थितावपि ।  
 पुरोहितोऽग्रनिहिते त्रि पुमास्तु पुरोधसि ॥३४५॥  
 पुल स्या पुसि पुलके तथैव प्रमथा तरे ।  
 पुला ताल्ध्वभाग स्त्री गतिभद च वाजिनाम् ॥३४८॥  
 पुली तृणादिपूले स्त्री स्यादायाम पुलनपि ।  
 पुलक पुसि खड्गस्थाखण्डराजिषु हीरके ॥३४८१॥  
 शाकमेदे द्रुमदे च तृणादेरपि पूलके ।  
 कृमिप्रमेदे गवर्कमणिदोषप्रभदयो ॥३४८॥  
 रोमा च हरिताले च रत्नभदेऽपि कीर्त्तित ।  
 गजान्नपिण्डे गधर्वेऽप्यसौ पुलक इष्यते ॥३४८३॥  
 पुलकी ना कदम्बद्रावथ रामाञ्चते त्रिषु ।  
 पुलस्ति स्निग्धकेशे त्रिरुषिमेदे पुमा मत्त ॥३४८४॥  
 पुलस्त्य ऋषिभदेऽपि शिरे स्यात्तारका तर ।  
 पुलहस्तद्विषिमेदेऽपि शिवे स्यात्तारका तरे ॥३४८५॥  
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात्सक्षेपे भक्तसिक्थके ।  
 धान्यमेदे त्वरायाञ्च न स्त्रिया परिकीर्त्तित ॥३४८६॥  
 पुलिनो स्त्री सैकते ना गरुडेन जितेऽसुरे ।  
 पुलिन्दो निष्पृथ्व्याया किरात्या शबरात्सुते ॥३४८७॥  
 निष्पृथादनयपूर्वाया किरात्या च सुते द्वया ।  
 पुलिन्दाख्येऽपि पाताङ्ग नागकया तरे पुन ॥३४८८॥  
 पुलिदास्थ पुलिन्दी तु शबर्या रागभिद्यपि ।  
 पुलोमा तु वचाया स्यापुत्र्या वैश्वानरस्य च ॥३४८९॥  
 पु कस स्याद्द्वयोर्मर्त्यजातिभेद यदङ्गव ।  
 करण्यामपि चणालात्क्षत्रियायाञ्च शूद्रत ॥३४९॥

१ पुल स्या पुसि पुलके विपुले धन्यलिङ्गक ।

२ पुलि दाख्येपि पोताङ्ग पुलिदा तु स्त्रिया मत्ता ।

नागकन्यास्तरे स्त्री तु पुलि दी शबरक्षत्रियाम् ।

पुल्लो विकासते त्रि स्या पु पे पु लभपुसकम् ।  
 पुत्वा द्वयो कीटकमौ कीटे दर्वाकरारगे ॥३४९१॥  
 पुषस्तु पोषके त्रि स्यात् ।  
 पु कर नीलकमले कमलेऽपि सुचो मुखे ॥३४९२॥  
 मुरजत्वचि शुण्डाग्रे जले व्योमनि सायके ।  
 पञ्जरे युधि लास्येऽंशे मदेप्यव्ये नपुसकम् ॥३४९३॥  
 कुष्ठौषधे सोमभौमशनिमत्याममातिथौ ।  
 असिकोशेऽसिधारायामजमेरुहृदातरे ॥३४९४॥  
 अस्त्री तु पुष्करद्वीपे ब्रह्माण्डे पञ्चभारते ।  
 पुमास्तु योगमेदे न द्वयेऽपि मुरजे हृदे ॥३४९५॥  
 रोगनागभिदो कृ ण शिवेऽपि वरुणात्मजे ॥  
 बुद्धमेदे पुष्करारयद्वीपस्याद्रौ द्विजेषु च ॥३४९६॥  
 कुशद्वीपस्य मेघेषु पुष्करावर्त्तकेषु च ।  
 नलभ्रातरि ऋक्षेषु कृत्तिकाद्येषु तत्र च ॥३४९७॥  
 पुनर्वसुत्तराषाढाकृत्तिकोत्तरफल्गुनि ।  
 पूर्वभाद्रपदा चैव विशाख यद्यवस्थिता ॥३४९८॥  
 द्वयोस्तु सारसे स्त्री तु पु करी शिवमातरि ।  
 पु करी स्यादिभ खड्गेऽथ पञ्चवति वाच्यवत् ॥३४९९॥  
 स्त्रिया पुष्करिणी चेभ्यां सरोजिन्या जलाशये ।  
 अथ पुष्करपण तु क्लीब स्यादिष्टकातरे ॥३५०॥  
 पुष्करस्रक्तु योगार्थेऽदिनोस्तु पुष्करस्रजौ ।  
 पुष्कराक्षस्तु त्रिषणौ ना सारसे तु द्वयोर्मत ॥३५०१॥  
 दाक्षायण्या च पूर्मेदे स्त्रीत्वे स्यात्पुष्करावती ।  
 पुष्कराह सारसे द्व क्ली तु स्यात्कुष्ठमेघजे ॥३५०२॥

१ पुष्कर करिहस्तामे जल बाधमुखे युधि ।  
 खे जे दि-यसिधाराया तीर्थभजमन्यो ।  
 का डे कुष्ठौषधे द्वीपमेघे पि पटहे तथा ।

पु कल भद्यव-कुद्ध सार रम्यप्रभृतया ।  
 पुमा-पुष्करवाद्यऽपि तस्यान्तरपु ॥ १ ॥  
 शिवे उरुणपुत्रेऽपि उद्वभिद्यसुरान्तर ।  
 नृभूमिन् तु कुशनीपक्षत्रियप्तिह पुष्कला ॥ २ ॥  
 पुष्कल तीर्थभेदेऽपि चमम दुश्चिकाष्क ।  
 हिरण्यमानभेदेऽपि भक्षागणचतुष्टय ॥ ३ ॥  
 केचित्त पुष्कल क्लीबमाहुर्मरुमहीभृति ।  
 अथ पुष्कलको ग धमृगे क्षपणक्रीलया ॥ ४ ॥  
 पुष्ट पुष्टौ धने स्मूलपालितादा तु वायवत् ।  
 पुष्टग्रीवस्तु पुल्लङ्गो गगरी ताग्रकुम्भया ॥ ५ ॥  
 पुष्टिस्तु पोषणे वृद्धा स्त्रियामेया प्रकीर्तिता ।  
 पुष्टिर्धने धर्मपत्न्यामपि ॥ स्त्री प्रतान्तर ॥ ६ ॥  
 अश्वगधौषधे शक्तिमातृके दुकलासु च ।  
 दाक्षायण्यां सरस्वत्यां प्रकृतश्च कलातरे ॥ ७ ॥  
 पुष्टिदा पितृभेदे स्यु पुष्टिदा वृद्धिभयजे ।  
 अश्वगधौषधे चापि स्त्रीलिङ्ग परिकीर्तिता ॥ ८ ॥  
 पुष्टिवर्द्धन इत्युक्तश्चापाख्यविहगं द्वयो ।  
 त्रि तु वद्धनके पुष्टरय-चेदशमूह्यताम् ॥ ९ ॥  
 पुष्प पुमान् विकासे स्यात्स्त्री तु पुष्पी बलौषध ।  
 पुष्पोऽस्त्री कुसुमे योपिदार्त्तव नेत्ररुग्भिदि ॥ १० ॥  
 नखद-तादिकस्थेऽङ्ग गन्धमित्सामभेदयो ।  
 प्रणयोक्तौ कुबेरस्य विमने पुष्पकाभिधे ॥ ११ ॥  
 विमाने तु पुमान्नागररत्नगिर्यन्तरेषु च ।  
 बोध्यतरे पुष्पसूत्रे पुष्पा चम्पापुरी स्त्रियाम् ॥ १२ ॥

१ पु कल भद्यव-कुद्ध प्रभृते शोभनेष्वय (नदीभिदि) ।

सिद्धाचतुष्टये च स्यादपिभवे च पु स्वयम् ।

मुष्कवाद्यकाष्ठके तु क्ली तथा धान्यहिरण्ययो ।

२ पुष्पी स्त्री स्यात्प्रसूने च योवितामातृकेऽप्यय ।

पुष्पकस्त्रि पुष्पितरि ना विमाने धनेशितु ।  
 द्वयोस्तु द्वादशाना निर्विषाणा भोगिना क्वचित् ॥३५१५॥  
 पुष्पक रीतिपुष्पे च नेत्ररोग रसाञ्जने ।  
 लौहकास्ये मृदङ्गारशकट्या रत्नकङ्कण ॥३५१६॥  
 पुष्पिका स्यादतमले जिह्वाशिश्नोर्मलेषु च ।  
 पुष्पकालो वसतेऽप्यार्त्तवस्य समयेऽपि च ॥३५१७॥  
 पुष्पकेतु पुष्पाकामे तथा पुष्पाञ्जनेऽपि च ।  
 पुष्पज क्ली परागेऽथ पुंसि पुष्परसे मत ॥३५१८॥  
 पुष्पजा तु स्त्रियां विध्यसमुद्भूते सरिद्धिदि ।  
 पुष्पदतस्तु ना वायुदिग्गजे विष्णुघोटके ॥३५१९॥  
 शिवे नागातरे शूद्रजेऽथाद्रौ नवमार्हति ।  
 विद्याधरातरे पुष्पदतौ तु शशिसूर्ययो ॥३५२०॥  
 पुष्पदती राक्षसीभिद्यथ क्ली गोपुरातरे ।  
 पुष्पदामप्रसूनाना माये छन्दोन्तरेऽपि च ॥३५२१॥  
 क्लीब पुष्पफल द्व द्वे कपित्थे तु पुमान्मत ।  
 कपित्थेऽपि च कूष्माण्डे पुष्पापुष्पफलो मत ॥३५२२॥  
 पुष्पभद्रो वास्तुभेदे द्वाषष्टिस्तम्भभूषिते ।  
 पुष्पभद्रा नदीभेद क्लीब तु नगरातरे ॥३५२३॥  
 अथ पुष्परज क्लीब परागे कुङ्कुमेपि च ।  
 पुष्पवत्रि सकुसुमे स्त्री तु पुष्पवती मता ॥३५२४॥  
 रजस्वलाया नृ द्वे तु रवीद्रो पुष्पवतवत् ।  
 वृषस्य त्या गवादौ च [मता पुष्पवती स्त्रियाम्] ॥३५२५॥  
 पुष्पसारा तुलस्या स्त्री पुष्पसारो मरदके ।  
 पुष्पहासतुमया स्त्री पुष्पहास पुष्पाहरौ ॥३५२६॥  
 पुष्पहीना तु वृद्धायामुदुम्बरतरावपि ।  
 पुष्पाढ्यस्तु स्वय शीणपुष्पमूलफलाशने ॥३५२७॥  
 त्रिभेदे त्रिषु पुन पुष्पैराढ्ये प्रकीर्तित ।  
 पुष्पाभिकीर्णकस्तु द्वे स्याद्वीकरसञ्ज्ञिनाम् ॥३५२८॥



पुष्पितं त्रिविकसिते सपुष्पे मृत्युगन्धिनि ।  
 पुष्पिता ऋतुमत्या स्यापुमाबुद्धातरे मत ॥३५९॥  
 भुजङ्गमाना भदे च वैकरजाभिधावताम् ।  
 पु यस्तु ना कलियुग पौषे बुद्धातरे तथा ॥३५३॥  
 नक्षत्रे तिष्यसिद्ध्यादिनामभिर्विश्रुते मत ।  
 तद्युक्त कालसामाये त्रिस्तु तत्र भवेऽथ च ॥३५३॥  
 पुष्टावप्युत्तमफले क्ली कूष्माण्डफलपि च ।  
 वैरूपाष्टकवर्गस्य साम्नि चैवातिमे स्मृतम् ॥३५३॥  
 पुष्या तु वृक्षमेदेपि तिष्यऋक्षेपि च क्वचित् ।  
 पुस्तोऽस्त्रिया मतो लेख्ये क्ली तु लेख्यादिकर्मणि ॥३५३॥  
 पुस्ताऽपि कस्यचि लेख्येऽथ पुस्त छादिते त्रिषु ।  
 पुस्तकोऽस्त्री मतो लेख्ये ग्रथ तु त्रिषु पुस्तिका ॥३५३॥  
 पूरुत्तरस्थ पानस्य शुद्ध कर्तरि च त्रिषु ।  
 पूग्यक्ली क्रमुके क्ली तत्फले ना त्वद्विष्टन्दयो ॥३५३॥  
 फलसारे च पूगी तु स्त्री मलप्वा सरिद्धिदि ।  
 पूजित पूजनीये त्रिर्देवे पुसि प्रकीर्त्तित ॥३५३॥  
 पू य पुमान्स्याद्बुधुरे पूजनीये त्रिषु स्मृत ।  
 पूत त्रिषु पवित्रे च शटिते बहुलीकृते ॥३५३॥  
 पूत शङ्खे श्वेतकुशे [पूतौ द्वित्वे नितम्बयो] ।  
 पूतद्दु खदिरे देवदारुण्यपि पुमान्मत ॥३५३॥  
 पूतना तु हरीतक्या दानवीरोगभेदयो ।  
 रवेरशुचतु शत्या वृष्टिदात्र्या शते क्वचित् ॥२५३॥  
 पूतनस्तु द्वयो प्रतमेऽपि परिकीर्त्तित ।  
 पूतरस्त्वधमे त्रि स्याद्यादोभेदे द्वयोर्मत ॥३५४॥

१ पुष्य तु कूष्माण्ड फले नपुंसकमुवीरितम् ।

२ पुमा-पु पफल कू माण्डे योगे तु यथाग्रथम् ।

३ पूतौ तु पु द्विवचने नितम्बा परिकीर्त्तितौ ।

पूतिदु खे च दुग् धे तृणजायतरे पुमान् ।  
 पवनारयक्रियाया स्त्री दुर्ग धवति तु त्रिषु ॥३५४१॥  
 पूतिकस्तृणभेदे य सोमभेदे प्रयुज्यते ।  
 स्या पूतिकरजे कर्णरुजाया पूतिकणक ॥३५४ ॥  
 पूतिकाष्ठ तु सरले देवदारुणि चापि नप् ।  
 पूतिगन्धो गन्धकेऽपि नेत्रुदीवृक्षमात्रके ॥३५४३॥  
 पूतिपुष्पी मातुलङ्ग्यां योगार्थे तु त्रिषु स्मृता ।  
 स्त्री तु पूतिकली सोमराया विस्रफले त्रिषु ॥३५४४॥  
 पूतीक पूतिकार्थेपि दुर्गन्धे तु त्रिषु स्मृत ।  
 पूतीकोपोदिकायाञ्च स्त्री पिपीलकभिद्यपि ॥३५४५॥  
 नपुमक तु पूतीक पुरीषे परिकीर्तितम् ।  
 पूत्कार पू कृतौ पुसि पूत्कारी तु स्त्रिया मता ॥३५४६॥  
 सरस्व यां च केषाञ्चिद्भोगवयामपीष्यते ।  
 पूत्यण्डस्तु द्वयोरण्डकारकारयेऽल्पपक्षिणि ॥३५४ ॥  
 गन्धकीटेऽपि पूत्यण्डा द्वयो कस्तूरिकामृगे ।  
 पूर पुनर्नवाया च नद्यादेजलवृहणे ॥३५४८॥  
 खाद्यान्तरे व्रणस्यापि सशुद्धो पुसि कीर्तित ।  
 प्राणायामे पूरकारये बीजपूरद्वयेऽपि च ॥३५४९॥  
 पूरी स्त्री वशवाद्येऽपि खाद्यभेदे प्रकीर्तिता ।  
 प्रपूरणे तु पूरो ना पूराऽपि स्त्रीत्व इष्यते ॥३५५ ॥  
 स्यात्पूरयित्पूरित्रो पूरको भेद्यलिङ्गक ।  
 पूरकस्तु कलाये ना पूरेऽपि गुणकेऽपि च ॥३५५१॥  
 प्राणायामातरे पिण्डभेदे स्याद्बीजपूरके ।  
 अपूपभेदे तु स्त्रीत्वे पूरिकेति प्रकीर्तिता ॥३५५२॥

१ खट्वाशा तु द्वयोरेषु पूतीकोपि प्रयुज्यते ।

२ पूत्यण्ड की भवेपि द्वयो कस्तूरिकामृगे ।

पुरुत्तरस्थ पानस्थ शुद्धे कस्तुरि च त्रिषु ।

३ पूरकस्तु कलायेथाऽपूपभेदे तु पूरिका ।

पूरण पूरुत्तिकर्मण्यना पूरयतेयुच ।  
 पूरणा पूरणी तु स्त्री शालो च तथा पके ॥३५३॥  
 पुननवाजातिभद त्रि तु स्यात्पूरुत्तिसाधने ।  
 [समुद्रसेता तु] पुमा पूरण परिकीर्त्तित ॥३५४॥  
 पूर्ण क्लीब जले पूता पूणा स्त्री पूर्णिमातथा ।  
 पञ्चमी दशमी प चदशीष्वपि तिथिष्वथ ॥३५५॥  
 पूरिते त्रि समग्रे च शरस्याक्वणकर्षणे ।  
 पूर्ण शक्ते समग्रे ना पूरिते त्वभिधेयवत् ॥३५६॥  
 पूणक स्वणपुच्छे स्यानासाच्छया तु पूर्णिका ।  
 पूर्णिमाया चाथ पूर्णसुखादो त्रिषु पूणक ॥३५७॥  
 पूणकूटो द्वयो कूटपूरिचापविहङ्गयो ।  
 पूणकोशस्वपूषे ना पूणकोशौषधिभिदि ॥३५८॥  
 पूणपात्रोऽस्त्रिया मित्रैर्वस्त्रमाल्यादि यद्भलात् ।  
 आ छद्योसवकालेषु गृह्यते तत्र कीर्त्तित ॥३५९॥  
 यस्य प्रमाण मुष्टीना षटपञ्चाशच्छतद्वयम् ।  
 तत्रापि तण्डुलाद्ये थ त्रिस्तु स्यात्पूर्णभाजने ॥३६०॥  
 पूर्णानक तू सवेषु बलादाकृष्य गृह्यते ।  
 वस्त्रमाल्यादियमित्रस्तत्र स्त्री त्वानके मृते ॥३६१॥  
 पूरुत्तं त्रि रक्षिते चूर्णे क्ली तु खातादिकर्मणि ।  
 पूर्वा प्राच्या स्त्रिया पूर्वस्त्र्यपरप्रातयोगिनि ॥३६२॥  
 [दग्देशकालविषये पुराणऽग्र तथाऽऽदिमे ।  
 पूर्वा पितामहाद्यषु पूर्वजेषु नृभूमनि ॥३६३॥  
 पूर्वेषु [स्तु प्रभात] स्यात्तथैव धर्मवासरे ।  
 पूषा वृद्धौ द्वयो पूषो ब्रह्मदारुद्रुमे पुमान् ॥३६४॥  
 पृक्षोन्नेपि च सग्रामे पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 वृतना तु स्त्रिया युद्धे सेनायामपि कीर्त्तिता ॥३६५॥

सतामेदेपि वाहिन्या पृथना त्रिगुणात्मनि ।  
 पृथो हस्ततले पुसि पृथा कुत्या स्त्रिया मता ॥३५६६॥  
 त्रयोदशाङ्गुलमिते मानेऽपि परिकीर्त्तिता ।  
 पृथग्जनस्तु मूर्खेऽपि नीचेऽपि च पुमा मता ॥३५६७॥  
 पृथिवी तु स्त्रिया भूमावाकाशेऽपि प्रकीर्त्तिता ।  
 पृथिवीपतिरुक्तो ना ऋषभाभिधमषजे ॥३५६८॥  
 धर्मराज च भूपाले तथैव नरकासुरे ।  
 पृथुर्वैये त्रिशङ्कोश्च जनकेऽप्यनरण्यजे ॥३५६९॥  
 राजा तरे कृष्णपक्ष्येऽनौ विस्तीर्णे तु स त्रिषु ।  
 तत्र स्त्रिया पृथु पृथ्वी द्वय त कृष्णजीरके ॥३५७०॥  
 पृथ्वी तु स्त्री पृथिया स्यात्पृथुर्वाप्यौषधेऽस्त्रियाम् ।  
 स्त्रीपुसयो पृथुरयम् वानरे परिकीर्त्तित ॥३५७१॥  
 पृथुक पुसि चिपिटे शिशौ स्यादभिधेयवत् ।  
 पृथुचित्र इण्डमित धान्यसग्राहके पुमान् ॥३५७२॥  
 गृहस्थे स्थूलचित्रे तु वाच्यवपरिकीर्त्तित ।  
 पृथुच्छ्द शाकवृक्षे स्थूलपर्णे पुनस्त्रिषु ॥३५७३॥  
 पृथुरोमा द्वयोर्मत्स्ये स्थूलरोम्णि त्रिषु स्मृत ।  
 पृथुहस्तस्त्रिषु स्थूलकरे पुसि तु हस्तिन ॥३५७४॥  
 ये करस्याङ्गुलैरूर्ध्वं सप्ताशास्तेषु सप्तमे ।  
 पृथ्वी भूमौ महत्या च त्वक्पयां कृष्णजीरके ॥३५७५॥  
 पृथ्वीका पुनरेलाया तथा स्या कृष्णजीरके ।  
 पृदाकुर्गोत्रकृष्ट य तरे पुसि प्रकीर्त्तित ॥३५७६॥  
 पृदाकुर्धृश्चिके याघ्रे सपचित्रकयोरनप ।  
 पृदिनर्ना किरण स्वर्गे सूर्ये देवातरेषु च ॥३५७७॥  
 क्लीब तु ने च साम्नोश्च बृहन्निरिति गीतयो ।  
 त्रिषु त्वल्पवपुजन्तौ बिन्दुचित्रपशावपि ॥३५७८॥

विराज पृश्नय इति वज्रवर्णनिब धन ।  
 बि-दुम-वनिमत्तो वा प्रयोग इति सशय ॥३५९॥  
 पृष-पु ह च बिन्दौ च पशुगात्रादिवि दुषु ।  
 तथा दध्युपसिक्ताये कुवि दस्य च तत्रके ॥३५८॥  
 अथ द्वे मृगाभिद्येष त्रिस्तु स्याद्धेतवि दुके ।  
 पृषत पृश्निसज्ञे स्यात्पुच्छिङ्गो देहवैकृते ॥३५८॥  
 श्वेतवि दयुते तु त्रिर्मृगभदे द्वयोमत ।  
 शम्बरस्तु सवि दुश्चेत्पृषतो साविति स्मृते ॥३५८२॥  
 पृषातको दध्नि साये घृतदुग्धे पृषातकम् ।  
 पृष्ठमन्त्याशमात्रजपि पश्चादशे तनोरपि ॥३५८३॥  
 चतुषु सामस्तोत्रेषु क्रतो सामातरे कुशे ।  
 पृष्ठशृङ्गी पुमान्दशभीरौ पण्डे वृकादरे ॥३५८४॥  
 स्यात्पृष्ठहायनो धान्यातरे द्वे तु मतङ्गजे ।  
 पेचको ना हस्तिषु छमूलोपाते द्वयो पुन ॥३५८५॥  
 उल्के पेचिका तु स्त्री पिङ्गलासज्ञपक्षिणि ।  
 पेटक पेटिकाघृन्दे द्वयोर्ना पिटके स्मृत ॥३५८६॥  
 पेटा दास्या स्त्री त्रि पेटी पेडाया पेटके त्रिषु ।  
 पेट्वस्तप्ते भ्रुवोऽश ना पशौ गालितमुष्कके ॥३५८७॥  
 मेघे तु पेट्व पेट्वीति मिथुने परिकीर्त्यत ।  
 पयस्तु त्रिषु पातये रक्षित ये च कीर्त्तित ॥३५८८॥  
 पेया तु विरलाया स्त्री यवाग्वा परिकीर्त्तिता ।  
 पेय पातयपयसो पेया श्राणाच्छमण्डयो ॥३५८९॥  
 पेरुर्नाऽब्धौ रवौ शैले कलविङ्ग त्वय द्वयो ।  
 पेलवतु त्रिषु मृदौ मरिचे तु नपुसकम् ॥३५९॥  
 पेशलस्तु मतश्चारौ दक्षे चाप्यभिधेयवत् ।  
 पेशो रूपे सुवर्णेऽपि सकारान्त नपुसकम् ॥३५९१॥

पृषत्पनर्द्वयोरेष मृगभन् प्रकीर्त्तित ।

१ मृगस्तु तात्रो हरिणो हरिणो पक्ष ना वर ।

पेशी सुपक्वकलिके मांस्या खड्गपिधानके ।  
 मासपि व्या तथेवाण्डभेदप्येषा स्त्रियाम्मता ॥३५९२॥  
 पोगण्डस्तु द्वयोयुनि विकलाङ्गे तु भेद्यवत् ।  
 भवेपोटगल काशे स्तम्बेऽपि नडसङ्गके ॥३५९३॥  
 पोटा दास्या रायकत्र्या स्त्रीपुसाङ्गनपुसके ।  
 पुमापोडगल काशे नडे मत्स्यातरेऽपि च ॥३५९४॥  
 वैकरञ्जारयसर्पाणां त्रयाणां च क्वचिन्मत ।  
 पोतोऽपत्ये दशाऽदेभे शिशौ द्वे तरुणे पशौ ॥३५९५॥  
 यानपात्रे तु पोतो ना गृहस्थाने च वासास ।  
 पोत्र वज्रे मुखाग्रे च सूकरस्य हलस्य च ॥३५९६॥  
 पोला तु पारखायाश्च द्वारयत्रणतालके ।  
 पोषयि तु पुमामेधे कोकिले तु द्वयोमत ॥३५९७॥  
 पौस्न पुसवने क्लीब पुस सम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 पौंस्य बले च युद्धे च नपुसकमुदीरितम् ॥३५९८॥  
 पौर पुमाञ्ज्वेतशालौ बलदेवे च कीर्तित ।  
 पुरसम्बन्धिनि त्रि स्याक्लीब तु ध्यामकौषधे ॥३५९९॥  
 पौरुष नपि भावे च पुस कमणि चोद्यत ।  
 शौर्ये रेतसि च त्रिस्तु पुसम्बन्धिन्युदीर्यते ॥३६०॥  
 ऊर्ध्वविस्तृतदो पाणि नृमानेपि तथा भवेत् ।  
 पौरुषेय कृते पुसा विकारे पुरुषस्य च ॥३६१॥  
 त्रिषु ना सङ्ख्यधयो पुरुषस्य पदातरे ।  
 पौरोहितमथवस्वप्यथ पौरोधसे त्रिषु ॥३६२॥  
 पौणमासी पूर्णिमाया पौणमासो मखा तरे ।  
 पौलस्त्यस्तु कुबेरेऽपि रावणेऽपि पुमामत ॥३६३॥  
 द्वयो पुलस्त्यवशे स्याक्लीब युद्धे प्रकीर्तितम् ।  
 पौषस्तु तैषमासे स्यात्पौषे सामातरे मतम् ॥३६४॥

१ पौरुषेयं तु पुरुषकृतेपि पुरुषस्य च ।

विकारे पि वधे ज्येष्ठद्वयायव परिकीर्तितम् ।

पौषी तु पुष्यनक्षत्रयुक्ताया पूर्णिमातिथा ।  
 प्र प्रकर्षे गताद्यर्थेऽप्ययं परिकीर्तितम् ॥३६ ५॥  
 प्रकर स्यापुमासङ्गे विशीणकुसुमादिषु ।  
 नपुसक जोङ्गके स्त्री नाढ्याङ्गे च प्ररावना ॥३६ ६॥  
 प्रघट्टके प्रकरण प्रकीर्णा रूपकातरे ।  
 प्रकाण्ड पादपस्योक्तो मूलस्कधातरेऽपि च ॥३६ ॥  
 विटपेऽपि प्रशस्तेऽपि पुनपुसकलिङ्गक ।  
 प्रकार पुसि सादृश्ये भदेऽपि पारकीर्तित ॥३६ ८॥  
 प्रकाशोऽर्चिषि दीप्तौ ना तुये स्फुटऽपि त्रिषु ।  
 प्रकीर्णक त्रि सक्तीर्णे चामरे क्ली द्वयोहये ॥३६ ९॥  
 प्रकीर्ण पूतकरजे विनिकीर्णे तु वायवत् ।  
 प्रकृति पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥३६१ ॥  
 कारण शिश्नयो योश्च जत्वमायादिमातृषु ।  
 प्रत्ययापूर्वभाग च छन्दस्यष्टसरेऽपि च ॥३६११॥  
 अत्युत्कारय च चतुरशीयदे सलिलाभिधे ।  
 स्यात्प्रकोष्ठस्तु हस्तस्य कफोणिमणिबन्धयो ॥३६१ ॥  
 मध्येऽलिके च भूपालसन्नकक्ष्यातरेऽपि च ।  
 अथ प्रक्रम आरम्भज्वसरेऽप क्रमेऽपि च ॥३६१३॥  
 प्रमाणभदेऽप्युक्तोऽसौ द्विपदस्त्रिपदोऽपि वा ।  
 प्रक्रिया चाधिकारेऽपि प्रकारे शब्दसाधने ॥३६१४॥  
 प्रक्षर क्ली तुरङ्गादे सनाहे प्रक्षराह्वये ।  
 त्रिषु त्वतिक्षरितरि प्रक्षर परिकीर्तित ॥३६१५॥  
 प्रखरोऽस्त्री तुरङ्गादे सनाहे प्रक्षराह्वये ।  
 द्वे कुक्कुरे चाश्वतरे खलातिखरयोस्त्रिषु ॥३६१६॥

१ प्रकरस्तत्पु पादौ ना प्रकीर्णसमूहयो ।  
 क्लीब वगुरुसंज्ञे तद्ग ज्ञेये प्रकीर्तितम् ।  
 (अथ प्रकरण प्रोक्त प्रकीर्णौ रूपकातरे ।)

२ ख्याते वा ।

३ प्रकाशस्तु स्फुटे ख्याते प्रहासासपयोरपि ।

प्रगाढस्तु भृश चापि कृच्छ्रे चाप्यभिधेयवत् ।  
 प्रग्रहस्तु तुलासूत्रे न धामारग्वधद्रुमे ॥३६१७॥  
 अश्वादिरश्मौ रश्मौ च तथा नियमनेऽर्चने ।  
 प्रग्राहस्तु तुलासूत्रे तथैवाश्वादिरश्मिषु ॥३६१८॥  
 प्रग्रीवमस्त्री कलश ग्रीवाप्रासादयोरपि ।  
 प्रघणस्ताम्रकुम्भे स्यादलिन्द लोहसुदरे ॥३६१९॥  
 प्रघाणस्तु तरुस्क धेप्यलिन्देऽपि पुमान्त ।  
 प्रचण्डो दुवहे श्वेतकरवीरे प्रतापिनि ॥३६२०॥  
 प्रचलाको मयूरस्य शिखण्डे पुसि कीर्त्तित ।  
 बिम्बाख्यकुकलासे तु नानावर्णकरे द्वयो ॥३६२१॥  
 प्रचलाका मयूरे च सर्पे चापि द्वयोर्मत ।  
 प्रचार पुसि खड्गे च स्यात् प्रायश्चरणेषु च ॥३६२२॥  
 प्रचेता वरुणेऽग्नौ ना त्रिषु तूत्कृष्टचतसि ।  
 प्रचोदनी कण्टकार्या स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ॥३६२३॥  
 प्रचोदना प्रेरणायां तथैव स्यात्प्रचोदनम् ।  
 प्रच्छन्न छादिते त्रि स्यादतद्वारि गृहस्य नप् ॥३६२४॥  
 क्लीब प्रजनन प्रोक्त प्रजातावप्युपस्थयो ।  
 प्रजा जने च सताने स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥३६२५॥  
 प्रजाकरस्तु खड्ग ना योगार्थे तु यथायथम् ।  
 प्रजागमस्तु पुसि स्यात् प्रजाया आगमे तथा ॥३६२६॥  
 एकाहाहीनसत्राख्ययज्ञक्रतुषु च स्मृत ।  
 प्रजापतिश्च दक्षादौ महीपाले विधातरि ॥३६२७॥  
 प्रजावती भ्रातृपत्या प्रजावत्तु त्रि सप्रजे ।  
 प्रज्ञस्तु पण्डिते त्रि स्यात्प्रज्ञाबुद्धौ स्त्रियां मता ॥३६२८॥  
 प्रज्ञान तु मर्तो चिह्ने नपुसकमुदीरितम् ।  
 त्रिषु प्रज्वलितं दग्धे दीप्ते दीपित एव च ॥३६२९॥



प्रणय स्यात्परिचये विसम्भ प्रसरेजप च ।  
 याश्चासौहृदनिर्माणेष्वपि पुंसि प्रकीर्त्तित ॥३६३॥  
 प्रणवस्तु पुमास्तु यामाकारेऽपि प्रकीर्त्तित ।  
 प्रणादस्तु पुमास्तारशब्दे च श्रवणामये ॥३६३॥  
 प्रणाप्यो समते चापि निष्कामे चाभिधेयवत् ।  
 प्रणिधान प्रयत्ने स्यात्समाधौ च प्रवेशने ॥३६३॥  
 प्रणिधि प्रणिधाने च प्राथनेऽपि चरेऽपि च ।  
 त्रिषु प्रणिहित प्राप्ते यस्तेऽपि च समाहिते ॥३६३॥  
 प्रणीत सस्कृताग्नौ ना यज्ञपात्रातरे स्त्रियाम् ।  
 त्रिषु क्षिप्तोपसपन्नविहितेषु प्रवेशिते ॥३६३॥  
 प्रतत वितते चापि क्षुण चाप्यभिधेयवत् ।  
 प्रततिबालविस्तारवीरुत्सु स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥३६४॥  
 प्रतल पातालभदे तताङ्गुलिकरे पुमान् ।  
 प्रतापा ना प्रभावेऽपि भृशतापं प्रकीर्त्तित ॥३६३॥  
 प्रतापसो ना श्वेतार्के मृदुशृङ्गमृगे द्वयो ।  
 प्रतारिका स्त्रिया नामौ वञ्चके ना प्रतारक ॥३६३॥  
 प्रति प्रतिनिधावित्थम्भूतारयानाभिमुखयो ।  
 मात्राज्यभागवीप्सासु लक्षणप्रतिदानयो ॥३६३॥  
 प्रतिकाश प्रतीकाशस्तुल्यार्थावुत्तरे पदे ।  
 मूलस्याध प्रदेशेऽपि गजाना पूर्वपादयो ॥३६३॥  
 स्त्रियां प्रतिकृति प्रोक्ता प्रतिमाप्रतिकारयो ।  
 तथा प्रतिनिधावेष्टा प्रतिकृति परिकीर्त्तिता ॥३६४॥  
 प्रतिकृष्ट मत गुह्यो द्विरावृत्त्या च कर्षिते ।  
 प्रतिग्रह क्रियाकारे सैयपृष्ठ पतद्ग्रहे ॥३६४॥  
 द्विजेभ्यो विधिवद्देये तद्ग्रहे स्त्रीकृतावपि ।  
 प्रतिग्राहयतेस्त्वर्थे प्रतिग्राहश्च तद्ग्रहे ॥३६४॥

१ प्रीत उपसपन्नौदनादौ च प्रवेशिते ।

निर्मितक्षिप्तयोर्नीति विधिना नौ च चाप्यवत् ।

प्रतिग्राह स्वीकरणे सैयपृष्ठे पतद्ग्रहे ।  
 द्विजेभ्यो विधिवद्देये तद्ग्रहे च ग्रहा तरे ॥३६४३॥  
 प्रतिघस्तु प्रतिहतौ स्यात्क्रोधवधयोरपि ।  
 प्रतिदान परीवत्तन्यासद्रव्यस्य चापण ॥३६४४॥  
 पुंसि प्रतिदिवाऽह्नि स्यादपराह्णेऽपि च स्मृत ।  
 प्रतिपत्ति प्रवृत्तौ च प्रतिभाज्ञानयो स्त्रियाम् ॥३६४५॥  
 प्रागभ्ये गौरवे प्राप्तौ विश्वासेऽपि प्रकीर्त्तिता ।  
 प्रतिपद् स्त्री मता बोधे पक्षस्याद्यतिथावपि ॥३६४६॥  
 स्याद्बहिष्पवमानस्य प्रथमाया तथा ऋचि ।  
 प्रतिपन्नोऽयलिङ्ग स्याद्विज्ञानेऽङ्गीकृतेऽपि च ॥३६४७॥  
 बोधके त्रिषु खटवाङ्गथाधारे स्यात्प्रतिपादकम् ।  
 स्त्रीनपुसकयोर्दाने ज्ञापने प्रतिपादना ॥३६४८॥  
 प्रतिभा प्रतिभासे स्त्री प्रतिभो ना विदूषके ।  
 अथाऽभिधेयवत्प्रोक्त प्रतिभ प्रतिभातरि ॥३६४९॥  
 क्लीब प्रतिभय भीतौ त्रिषु तु स्याद्भयानके ।  
 प्रतिमा तु प्रतिकृतौ गजाना दन्तबधने ॥३६५०॥  
 प्रतिमान प्रतिकृतौ गजद तद्वया तरे ।  
 प्रातयज्ञस्तु सस्कार उपग्रहणालिप्सयो ॥३६५१॥  
 प्रतिशिष्ट निरस्ते चाप्याहूय प्रेषिते त्रिषु ।  
 प्रतिश्रयस्तु विज्ञेय स्थाने गोष्ठ्या तथा पुमान् ॥३६५२॥  
 प्रत्याहारे तथा सत्रशाले मण्डप आश्रये ।  
 प्रतिष्कशस्त्रि सहाये ग्रहे च प्रतिगततरि ॥३६५३॥  
 प्रतिष्कशस्त्वय द्यूते पुष्टिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 प्रतिष्ठा स्थितिमाहात्म्यस्थानगौरवभूमिषु ॥३६५४॥

१ प्रतिपत्ति प्रवृत्तौ च प्रागभ्ये गौरवाप च ।

सप्राप्तौ च प्रबोधे च पदप्राप्तौ च योषिति ।

प्रतिपादनं तु दान प्रतिपत्तौ च बोधन ।

यागसिद्धा तथा छदविशप षोडशाक्षरे ।  
 अस्त्री प्रतिसर सैयजघने स्तध्वत्रके ॥ २५ ॥  
 पुमास्तु व्रणशुद्धौ पाप्यारक्षे येन म डडे ।  
 अथासतीच्छब्दयामेकदेश च जेष्मन ॥ २६ ॥  
 स्त्रिया प्रतिसरा त्रिर्नियो ये प्रतिसरो मत ।  
 प्रतिसृष्ट प्रेषिते स्यात्प्रत्यारयाते च वाच्यवत् ॥ २६ ॥  
 प्रतिस्पर्श सहाये स्याद्वात्ताहरपुरोगयो ।  
 भवेत्प्रातहत द्विष्ट प्रतिस्खलितरुद्धयो ॥ २६ ॥  
 प्रतिहर्त्ता त्रिषु ज्ञय प्रतिनेतरि तस्करे ।  
 प्रतिहारो द्वारपाले द्वारे प्रतिहृतावपि ॥ २६ ॥  
 साम्नस्तृतीयभक्तौ च ना स्त्री तु प्रतिहार्यथ ।  
 तत्र या पृथिवीपाल सम्भावयात् सरदा ॥ २६ ॥  
 प्रतीकोऽवयवे दीपे नानुक्कलाऽनुरूपयो ।  
 प्रतिकूले प्रतीक तत्र [देवमूर्त्यादिषूयते] ॥ २६ ॥  
 प्रतीकारो नृपाणा स्याद्वैरनिर्यातने पुमान् ।  
 अपि प्रतीक्रयामात्रे प्रोक्त स प्रतिकारवत् ॥ २६ ॥  
 प्रतीकाश समासात्ते तुल्यार्थ प्रतीकाशवत् ।  
 मूलस्याध प्रदेशेऽपि गजाना पूर्वपादयो ॥ २६ ॥  
 प्रतीक्ष्य प्रतिपाल्ये च पूये चाप्यभिधेयवत् ।  
 प्रतीत प्रतियाते च हृष्टे रयाते च सादरे ॥ २६ ॥  
 ज्ञाते बुधे प्रत्ययिते वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।  
 प्रतीहार प्रतीहारी द्वे द्वा स्थे चापि कच्छपे ॥ २६ ॥  
 प्रतीहारस्तु पुंल्लिङ्गो द्वारे स्यात्प्रतिहारवत् ।  
 प्रतोद पुंसि तोत्रे च तथैवोक्त प्रतोदने ॥ २६ ॥  
 सामप्रमेदयोश्चापि परीतेत्यचिगीतयो ।  
 प्रतोली गोपुरेऽपि स्त्री रथ्यायाश्च प्रकीर्त्तिता ॥ २६ ॥  
 प्रत्न छन्दसि पञ्चाशद्वर्णे त्रि तु पुरातने ।  
 प्रत्यक्छेणी नागदन्त्यां गिरिकर्ण्यामपि स्मृता ॥ २६ ॥

तथा मूषिकपण्यां च सा प्रत्यक्छ्रेणिवमता ।  
 प्रयगदृष्टिस्तु मीमासाया योगे तु यथायथम् ॥३६६९॥  
 प्रयक प्रतीयभिमुखे प्रतीयभिमुख त्रिषु ।  
 देशे पुसि प्रतीची तु पश्चिमाया दिशि स्त्रियाम् ॥३६ ॥  
 प्रथमापञ्चमीसप्तम्यर्थेष्वपि चा ययम् ।  
 प्रययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥३६७१॥  
 रत्रे च प्रथित वे चा याचारप्रतियातयो ।  
 सनादिश दानयवे तथैव स्यात्सुवादिषु ॥३६ २॥  
 प्रत्यर्थी पुसि शत्रा स्याद्देवव प्रतियोगिनि ।  
 शत्रा ना प्रयवस्थान परिस्पर्धिजने त्रिषु ॥३६ ३॥  
 प्रत्याकार पुमा प्र याकृतावायुधकोशके ।  
 प्रयालीढ तु चरणयासभदेऽशिते त्रिषु ॥३६ ४॥  
 प्रयासारो गृहपाष्णो प्रत्यासरणकमणि ।  
 चमूकव्यामपि तथा पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥३६ ५॥  
 प्रयाहारोऽक्षरसमाभ्यायेऽपि स्यादणादिषु ।  
 स्यात्प्रत्यानयनेऽर्थेभ्यश्चन्द्रियाणां समाहृतौ ॥३६ ६॥  
 वाद्यवादकसामग्रीविन्यासे नाट्यगोचरे ।  
 धौतांशुकद्वये प्रत्युद्गमतीय नपुसकम् ॥३६ ७॥  
 स्यात्प्रयद्गमतीयस्तूपस्थातयेऽभिधेयवत् ।  
 प्रयूषोऽस्त्री प्रभाते स्यात्त्रि प्रयूषितरि स्मृत ॥३६ ८॥  
 प्रथन पुसि मुद्रे स्याद्विसृतौ प्रथन नपि ।  
 प्रकाशनायां प्रथना न नापि च विसारण ॥३६ ९॥  
 प्रथम त्रि प्रधाने चादिमेऽथ प्रथमा स्त्रियाम् ।  
 आद्याया सुचिभक्तौ स्यात्तथैव प्रतिपत्तिथौ ॥३६ १०॥  
 प्रथमस्तु पुमानाद्यत्रितये तिष्ठिवभक्तिषु ।  
 प्रदाकुस्तु द्वयोर्व्याघ्रे मेकाजगरयोरपि ॥३६ ११॥

प्रदीप्त भासिते चापि दग्ध चा यमिधयत् ।  
 प्रदेश उपदेशकेशप्रादेशद्विषु ॥३६८॥  
 प्रदेशन प्रदिष्टा च दाने च प्राप्तजपि च ।  
 प्रदोषस्तु पुमादोष रात्रयोमेऽपि चादिम ॥३६८३॥  
 प्रकृष्टदोषादौ वेष प्रदोषा वायव मत ।  
 प्रद्यम्नो म मथ पुसि प्रकृष्टद्युम्नरे त्रिषु ॥३६८४॥  
 प्रद्योतनस्तु वा सूर्ये क्लीब दीप्ता प्रकीर्तितम् ।  
 प्रधान तु समे क्लीब त्रि प्रकृष्टधने मतम् ॥३६८५॥  
 प्रधान तु प्रकृत्यारये सारयतवे परा मनि ।  
 महामात्रे च बुद्धौ च मुरये तु क्ली च नायवत् ॥३६८६॥  
 प्रधूपिता स्त्रिया सूर्यगत यदिशि कीर्तिता ।  
 अथाभिधेयवचैष क्लेशिते स्यात्प्रगृपित ॥३६८७॥  
 प्रपञ्च पुसि विस्तारे सचये च त्रिपर्यये ।  
 प्रपद तु पदाग्रजपि तनगदाख्ययजुष्ण च ॥३६८८॥  
 प्रपातस्तु प्रपतने भृगौ सौप्तिकरोधसो ।  
 प्रपितामह इत्येष विधौ पितृपितामहे ॥३६८९॥  
 प्रबुद्धो विरतस्वाप पण्डितेऽग्राहते त्रिषु ।  
 प्रबोधना तु पुमाञ्ज्ञापनेऽप्यनुबोधने ॥३६९०॥  
 आलेपविषये चापि प्रबुद्धौ तु प्रबोधनम् ।  
 प्रभञ्जनो ना मरुति योगार्थे तु यथायथम् ॥३६९१॥  
 प्रभव स्यादपामूले विक्रमे जन्मकारण ।  
 आद्योपलब्धिस्थानेऽपि पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥३६९२॥  
 प्रभा भास्यर्चिषि स्त्री स्या सूर्यपत्न्यतरेऽपि च ।  
 प्रभाकरस्तु सूर्येऽपि पावकेऽपि प्रकीर्तित ॥३६९३॥  
 प्रभावस्तु प्रतापे च माहात्म्ये च पुमा मत ।  
 प्रभासस्तीर्थभेदे च पुलिङ्ग स्यात्प्रभासने ॥३६९४॥

प्रदेशो वेषमात्रे स्यात्तर्ज यजुगुहसमिने ।

नित्त वपि तथा तत्रयुक्तिभेदे प्रकीर्तित ॥

स्याप्रभिन्नो मत्तगज वा यव च विदारिते ।  
 प्रभूतमुद्रते प्रायेऽपि प्रोक्तमभिधेयवत् ॥३६९५॥  
 स्त्री तु प्रभृतिरादौ त्रि प्रकृष्टभृतिकादिके ।  
 प्रमथा स्त्री हरीतक्या प्रमथो ना शिवानुग ॥३६९६॥  
 क्लीबे प्रमथन हिंसाम थनक्रिययोर्मतम् ।  
 प्रमदा स्त्रीविशेष च कीर्त्तिता चोत्तमस्त्रियाम् ॥३६९७॥  
 हर्षे तु प्रमद पुंसि त्रिप्रकृष्टमदादिके ।  
 प्रमाण हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ॥३६९८॥  
 सम्यग्वक्तारि नि ये स्यादेकताबोधयोरपि ।  
 छन्दोवृत्तविशेषेऽपि नपुसकमुदीरतम् ॥३६९९॥  
 प्रमाणना तु न पुमाञ्ज्ञापनेऽपि वधेऽपि च ।  
 प्रमथने च हिंसाया प्रमथो लस्तकग्रहे ॥३७०॥  
 प्रमीढो मूत्रिते चापि स्याद्वनेप्यभिधेयवत् ।  
 प्रमीतस्तु मृते तद्व प्राक्षितेऽप्यभिधेयवत् ॥३७१॥  
 प्रमुख तु प्रधानेऽपि तथाद्यग्रऽपि कीर्त्तितम् ।  
 प्रयत सस्कृते प्रोक्त पूत चाप्यभिधेयवत् ॥३७२॥  
 प्रयागस्तीथराजे स्याद्यज्ञे शतमखाश्वयो ।  
 प्रयाण करिद्वक्पूवप्रदेशे गमने मृतौ ॥३७३॥  
 प्रयाम उक्तो नीवाके प्रायत्येऽपि पुमानयम् ।  
 प्रयोक्ता तूत्तमर्णेऽपि भेद्यवत्स्यात्प्रयोजके ॥३७४॥  
 प्रयोग स्यात्कर्मविधौ सुरतणप्रतानयो ।  
 शदस्यो चारणे चो चारितश दे प्रवत्तने ॥३७५॥  
 प्रयोजन तु कार्येऽपि हेतौ चाप नपुसकम् ।  
 वाणौ प्ररीत्वा नार्या तु विधिज्ञाया प्ररीचरी ॥३७६॥  
 प्ररूढ सप्तरोहे त्रि पुल्लिङ्गस्तु महायवे ।  
 प्ररोहस्तु पुमानिष्टोऽङ्कुरे चैव प्ररोहणे ॥३७७॥  
 प्रलम्बो दैत्यभेदे स्यात्त्रपुषऽपि पयाधरे ।  
 लताङ्कुरे च शाखायां हारभेदे प्रलम्बने ॥३७८॥

प्रलयस्तु पुमान्मृत्यौ क्षये चास्पदनस्थिता ।  
 मूर्च्छायामपि कपा ते श्लेष च परिकीर्त्तित ॥३ ५॥  
 प्रलोभी किङ्किराते स्यालोभशीले तु स त्रिषु ।  
 प्रवङ्गम कपो भेके प्लवङ्गमवदिष्यते ॥३ १ ॥  
 अथ प्रवचन वेदे चारयानं च प्रकीर्त्तितम् ।  
 प्रशस्तवचने च स्याच्छास्त्रऽपि च नपुसकम् ॥३ ११॥  
 त्रिषु प्रवचनीय स्यात्प्रवक्तव्यं प्रवक्तरि ।  
 प्रवण क्रमनिम्ने त्रि ग्रहे ना तु चतुष्पथ ॥३ १२॥  
 प्रवर कृष्णमुद्ग्रेऽधिलवण च पुमान्त ।  
 प्रवर स ततौ गात्रे क्लीब श्रेष्ठे तु वा यवत् ॥३ ७१३॥  
 प्रवहो वायुभदे स्याद्वायुमात्रे बहिर्गता ।  
 क्लीब प्रवहण कर्णोरथ वन्न उत्तमे ॥३ १४॥  
 प्रवारण निषधे स्यात्काम्यदाने च न द्वया ।  
 प्रवालस्वस्त्रिया वृक्षे पलमस्याङ्कुरे मत ॥३ ७१५॥  
 वीणाद डे विद्रुमे च तथैव नवपलवे ।  
 प्रवासना वधेऽपि स्यान्न ना तद्वद्विवासने ॥३ १६॥  
 प्रवाहस्तु प्रकृष्टाऽग्ने तथा स्रोतसि वारिण ।  
 परम्परायामपि च प्रवृत्तौ च पुमान्त ॥३ १७॥  
 स्त्रीनपुसकयोर्भेदे युद्धे क्ली प्रविदारणम् ।  
 वधे विकीर्णकरणे नप्त्रियो प्रविसारणा ॥३ १८॥  
 प्रवृत्ति स्त्री प्रवारो चारयो र्यापारवार्त्तयो ।  
 कुलत्थसङ्गधाये चावन्त्यादौ हस्तिना मदे ॥३ ७१९॥  
 प्रवृद्ध एधिते चापि प्रसृते चाभिधेयवत् ।  
 प्रवेणी स्त्री कुथाया च वेण्या च स्यात्प्रवेणित् ॥३ २ ॥  
 प्रवेष्टस्तु भुजे पुंसि गजदन्तस्य मूलत ।  
 करीर्यात्र्यात्प्रदशेऽपि परस्मिपरिकीर्त्तित ॥३ २१॥  
 अथ प्रत्रजिता मांसीमुण्डीरीतापसीषु च ।  
 प्रष्टस्त्रिष्वग्रगे श्रेष्ठे पुंसि चाण्डालिकौषधौ ॥३ २२॥

प्रसत्त्वा पवने मातृप्रतिपत्त्यो प्रसन्नी ।  
 प्रसन्ना तु सुराया स्त्री स्वच्छसन्तुष्टयोस्त्रिषु ॥३ २३॥  
 प्रसभ तु बलात्कारे दत्तस्य स्यान्नपुसकम् ।  
 प्रसभ पुसि वेगे स्यात्त्रिप्रकृष्टसमादिके ॥३ ४॥  
 प्रसर प्रणये वेगे पुलङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 न ना प्रसरणी रयात आसारे युद्धकारिणाम् ॥३ २५॥  
 अथ प्रसरण क्लीबलिङ्ग विसरणे मतम् ।  
 प्रसर्पको दशनाय यज्ञस्थानमुपागते ॥३ ७२६॥  
 प्रसर्त्तारि पुनर्वा यलिङ्गकोऽय प्रसर्पक ।  
 प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयो ॥३ ७२ ॥  
 पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ।  
 प्रेरणे प्रसृतौ चापि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥३ २८॥  
 प्रसव्य प्रतिकूले चानुकूले च प्रकीर्त्तितम् ।  
 आयत्ते दक्षिणे चापि सव्ये चाप्यभिधेयवत् ॥३ २९॥  
 नपुसक प्रसहन भङ्गे चाभिभवे मतम् ।  
 लतावृहत्यां तु स्त्रीत्वे मता प्रसहनीति सा ॥३ ३ ॥  
 प्रसादस्तु प्रसत्तौ च स्वच्छत्वेऽप्यनुरोधने ।  
 कायस्यौजोमुखाना च गुणानामेकके मत ॥३ ३१॥  
 प्रसादनस्तु प्रासाद ओदने स्यात्प्रसादनम् ।  
 प्रसन्नीकरण त्वेषा न ना प्रोक्ता प्रसादना ॥३ ३२॥  
 प्रसाधना तु न पुमानभ्यङ्गप्रतिकर्मणो ।  
 शुश्रूषायां च नृ स्त्री तु कङ्कते स्यात्प्रसाधनी ॥३ ७३३॥  
 प्रसिद्धो भूषिते रयाते सिद्धे चाप्यभिधेयवत् ।  
 प्रस्रस्वाजनयोश्च कन्दली वीरुधो स्त्रियाम् ॥३ ३४॥  
 प्रस्रत प्रेरिते जाते स्यात्कृतप्रसवे त्रिषु ।  
 ना सारथौ क्ली प्रस्रने प्रस्रता स्त्रिमस्त्रियाम् ॥३ ३५॥  
 प्रस्रतो वाच्यवजाते क्लीबे तु फलपुष्पयो ।  
 प्रस्रति स्त्री प्रजनने प्रजायां जननेऽपि च ॥३ ३६॥



प्रसूता तु स्त्रिया जङ्घासङ्घाङ्गे पुनपा पुन ।  
 द्विष्ठाष्टकेऽधकुडबमान स्याद्वणपपट ॥२ २७॥  
 निक्कुञ्जपाणा च त्रिस्तु रेगित विस्तृतेऽपि च ।  
 प्रसूति स्त्री उचाजालब धता पर्यत तुषु ॥३७३८॥  
 प्रसेक सेचन चाप इ पुतात्रपि पुमा मत् ।  
 प्रसेव पुसि वीणाङ्ग स्यूते न परिकीर्त्तित ॥३७३९॥  
 प्रसेवकस्तु ककुभ त्रिषु सेवापरायण ।  
 प्रस्तारस्तु प्रस्तरण वृत्तानि यसनेऽपि च ॥ ७४ ॥  
 प्रस्तावोऽवसरे चैवाऽधिकार सामनेदिनाम् ।  
 साम्न प्रथमभक्ता च पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥३ ४१॥  
 प्रस्तुता सुरभौ स्त्री स्यात्प्रस्तुतम्प्रकृते त्रिषु ।  
 प्रस्तोता प्रस्तावभक्त साम्नो गातरि ऋत्विजि ॥ ७४२॥  
 पुलिङ्गो वा यव वेप मत् प्रस्तावकत्तरि ।  
 प्रस्योऽस्त्री स्यात् कुडबचतुष्कैतमितेषु च ॥ ४३॥  
 प्रस्फोटन तु शूर्पे स्यात्ताडने च विकाशने ।  
 भवेप्रस्रवण क्लीब प्रस्रुतावुस एव न ॥३७४४॥  
 माल्यवानितिप्रिच्यते पवते तु पुमा मत् ।  
 प्रस्राव प्रस्रुतो मूत्रे भक्तमण्डे तथा पुमान् ॥३७४५॥  
 ग्रहतस्तु मत् शुष्ण व्युत्पन्नेऽप्यभिधेयवत् ।  
 क्लीब ग्रहरण शस्त्रे युद्ध चाघातकर्मणि ॥२ ४६॥  
 क्लीब ग्रहसन हासे रूपकान्यतमेऽपि च ।  
 ग्रहित ग्रहिते चास्य स्याल्लिङ्गमभिधेयवत् ॥२ ४ ॥  
 मुद्रादिभिन्ननिष्ठते तु स्त्रुप ग्रहितोऽस्त्रियाम् ।  
 ग्रहृष्टस्तु सरोमाश्च ग्रहृषवति विहिते ॥३७४८॥  
 तथा प्रतिहत चापि वायवत्परिकीर्त्तित ।  
 प्राकाश कुण्डले पुसि स्यात्प्राकाशयुजि त्रिषु ॥३७४९॥  
 प्राग्भारो गिरिशृङ्गाग्रे तथैवातिशये पुमान् ।  
 प्राक प्राग्भने प्राङ्मुखे च पूर्वैर्ज्वाचि च भेद्यवत् ॥३ ५ ॥

दिग्देशकालविषय प्राची तु स्त्री हेरर्दिशि ।  
 प्रथमा पञ्चमी सप्तम्यर्थेष्वय एव वा ॥३ ५१॥  
 सर्वेषु पूर्वोक्तार्थेष्वित्येव आकच्छद् ईरित ।  
 प्राचिका सल्लकीवृक्षे शाके पालङ्क्यभिरयके ॥३ ५२॥  
 अरण्यमक्षिकाया च श्येनसङ्गे च पक्षिणि ।  
 प्राचीनवर्हिर्वह्नौ ना शक्रे चैव नृपान्तरे ॥३ ५३॥  
 प्राचतसो ना वा मीकौ प्रचेतोयोगिनि त्रिषु ।  
 प्राच्य प्राचि शरावत्या देश प्राग्दक्षिण त्रिषु ॥३ ५४॥  
 प्राजापत्य सामभित्सु गर्भाधानारयसंस्कृतौ ।  
 द्वादशा कृते कृच्छ्र भावे चैव प्रजापत ॥३ ५५॥  
 त्रिवाहभेद तु तथा कृतोद्वाहद्विजे च ना ।  
 प्रजापतेस्त्वपत्ये द्वे तसम्बन्धिनि तु त्रिषु ॥३ ५६॥  
 प्राज्ञस्तु धीमज्ज्ञात्रोस्त्रि प्राज्ञा प्राज्ञी स्त्रियां क्रमात् ।  
 प्राणो बलेऽनिले पुसि तथा कायानिला तरे ॥३ ५७॥  
 द्वद्धाना प्रथमे साम्नीन्द्रियेषु शशभेषजे ।  
 प्राणाश्चाऽसुषु पुभूम्नि त्र पूर्णे क्ली तु पूरणे ॥३ ५८॥  
 प्राणक सवजातीय जीवकद्रुमचोलयो ।  
 प्राणथो मदनारये च वृक्षे चैव प्रजापता ॥३ ५९॥  
 प्राणदा तु हरीतक्या तस्त्रियामृद्धयौषधेऽपि च ।  
 प्राणद पुसि वैद्ये स्यात्त्रिषु तु प्राणदातरि ॥३ ६०॥  
 प्राणनाथस्तु विज्ञेयो यमराजे प्रियेऽपि च ।  
 प्राणिद्यतोऽस्त्रिया युद्धे पश्वाद्यैर्युद्ध एव च ॥३ ६१॥  
 प्राति पूर्त्ता मता स्त्रीत्वे प्रादेशेऽपि प्रकीर्त्तिता ।  
 प्राध्व स्याद्दूरमार्गे च बधने च नपुंसकम् ॥३ ६२॥  
 प्रवेशे यय्य प्राघ्यमानुकूल्य च नर्मणि ।  
 प्रातर तु वने दूरशयवर्त्मनि कोटरे ॥३ ७६३॥

१ प्रा १ ह्यमारुते बाले कायजीवे निरे बले ।

पुल्लङ्ग पूरिते तु त्रिलिङ्ग पुभूम्नि चासुषु ॥

२ प्राणकस्तु प्राणिनि त्रिणां त स्या जीवकद्रुमे ।

प्राप्त समञ्जसऽप स्याल्लब्ध चाप्यभिधेयवत् ।  
 प्राप्तरूपो वायवस्यासुदरे च त्वचक्षणे ॥३७६४॥  
 प्राप्त स्त्रियामधिगमेऽप्युदये च प्रकीर्तिता ।  
 प्रायो मृत्यौ प्रगमने बाहुयेऽनशनेऽप ना ॥३ ६५॥  
 बाल्यादिवयसि प्रोक्तस्तु यार्थे तु त्रिषु स्मृत ।  
 प्रायश्चित्त चिकित्साया रोगस्याप्यधनिष्क्रये ॥३ ६६॥  
 प्रार्थित याचिते शत्रुसरुद्धऽभिन्ते त्रिषु ।  
 प्रादितन्त्वभिमुक्तऽपि याचिते च हते त्रिषु ॥३ ६७॥  
 प्रालम्बमृजुलाम्बन्या कण्ठात्स्याकुसुमस्राज ।  
 प्रालम्बी तु स्त्रिया स्मणललत्यां परिकीर्तिता ॥३ ६८॥  
 पुनर्नवाशूकशिम्ब्यो स्त्रिया स्यात्प्रावृषायणी ।  
 प्रावृषेण्य कदम्बद्रौ त्रि तु प्रावृद्धवादिषु ॥३७६९॥  
 प्राप्त कुन्ताख्यशस्त्रे ना तथाऽनुप्राप्त एव च ।  
 प्रासादस्तु प्रकृष्टासादे देवाढ्यनृपालये ॥३७७॥  
 प्रिय करुणवृक्षे ना वृद्धिनामौषध धवे ।  
 वल्लभे सुन्दरे त्रि स्त्री प्रियाऽभीप्सितयोषिति ॥३७७१॥  
 प्रियको ना फलाध्यक्षफलिन्यसननीपके ।  
 तेषां तु प्रसवे क्लीब मृगमेदे तु स द्वयो ॥३ २॥  
 धनैर्मृदूचमसृणौ रोमभिश्चापि सयुते ।  
 नीलपाण्डुररेखावत्यपि वा श्वेतचन्द्रके ॥३ ७३॥  
 प्रियङ्गु स्त्री कणायाम् च राजिकाया च कीर्तिता ।  
 फलि-या कङ्कुसस्येऽथ क्ली प्रियङ्गवपि कङ्कुमे ॥३७७४॥  
 प्रियवदा स्त्री मालत्यां त्रि तु स्यात्प्रियवक्तरि ।  
 प्रियवद कथाया ना श्रुते विद्याधरात्तरे ॥३७ ५॥  
 स्त्रिया मङ्गलवाद्यस्य निर्घोषि प्रियवादिका ।  
 प्रियवक्तरि तु प्रोक्तो भेद्यवत्प्रियवादक ॥३७७६॥  
 प्रियापत्यो द्वयो कङ्कुखगे प्रियसुते त्रिषु ।  
 प्रीत त्रिषु स्याद्वर्षितेऽथ नर्मणि नपुंसकम्

प्रीतिर्यागांतरं प्रमिष्यत्तरपत्नीमुदा क्लिबाम् ।  
 धकारऽपि त्रयोदश्यां कलायां क्षुधिता मता ॥३७०॥  
 मुक्षि पुमान्यावके वाप्युदपानं च कीर्तितम् ।  
 प्रेक्षां बुद्धौ तथा नृपदर्शनंऽपि क्षियाम्मता ॥३७१॥  
 प्रेक्षो दासे द्वयोः प्रेक्षाऽऽसत्तथा प्रेक्षोलनं तथा ।  
 स्त्रियां पर्यटने प्रोक्ता घोटकस्य गतावपि ॥३७२॥  
 प्रेतो भूतान्तरे द्वे स्यान्मृत प्रेतोऽभिधेयवत् ।  
 प्रेतालयो नाशाकोटद्रुमे योगे यथायथम् ॥३७३॥  
 प्रेमा नावासवे वाते प्रमा स्त्री स्नेहनर्मणो ।  
 प्रेरिता तु समुद्रे नास्त्री तु प्ररित्वरी पुरी ॥३७४॥  
 प्रेष्यो दासे द्वयोरेष प्रेषणीयेऽभिधेयवत् ।  
 प्रैष प्रेषण उन्मादे क्लेशे मर्दन इष्यते ॥३७५॥  
 प्रोक्षणं तु वधे यज्ञपशोश्चाऽभ्युक्षणोऽम्भसा ।  
 प्रोक्ष्यो यज्वना कास्वप्यप्सु तासां च भाजने ॥३७६॥  
 प्रोक्षितं निहिते सिक्तं वायवत्परिकीर्तितम् ।  
 प्रोतं नपुंसकं वस्त्रे खचिते वाच्यलिङ्गकम् ॥३७७॥  
 प्रोथोऽस्त्री हयघोणाया नाकृत्यामध्वगे त्रिषु ।  
 प्रोष्ठं पुंस्यधमे स्त्री तु शफया प्रोष्ठ्युदीरिता ॥३७८॥  
 वाच्यवन्निपुणे तर्के प्रोहो हस्त्यडिघ्रपर्वणो ।  
 प्लक्षोऽश्वश्च द्वीपभद्रं पकटीगदभा द्वयोः ॥३७९॥  
 प्लवस्तु प्लवने मेघे जलपूरे तथोडप ।  
 द्वयोस्तु मकटे भेके चण्डाले शकटगिरि ॥३८०॥  
 त्रिभवेतवाहला तपुः हंससारसकादिषु ।  
 गणेषु सुश्रुतोक्तेषु ऋत्विगुस्तके प्लवम् ॥३८१॥  
 प्लवगो द्वं कपा मरुं ना तु सूर्यस्य सारथा ।  
 प्लवङ्गमं प्लवङ्गश्च प्लवकं प्लवगस्तथा ॥३८२॥  
 प्लवङ्गश्च द्वयोरुक्ता भेकवानरयोरिम ।  
 प्लवनं तु प्लुतीभावान्मज्जनमणयुः नय ॥३८३॥

प्लावी तु पक्षिणि तथा मृग स्त्रीपुंसयामत ।  
 लाक्षरग्नौ कुष्ठल ७ पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ॥ ९ ॥  
 प्लुत तु प्लवने चाश्वगतिभद नपुंसकम् ।  
 अथ त्रि तद्वत्यश्वे च सिक्ते वर्णे त्रमात्रे ॥३ ३॥

## फ

फो यज्ञसाधन स्फान झञ्झावाते च पुंस्ययम् ।  
 फ रूक्षोक्ता च फूत्कारे तथा नि फल भाषण ॥३ ३॥  
 फक्किका तु स्त्रियामेकग्र थ गौरे च सषपे ।  
 अथ फाक्कतरि प्रोक्त फक्ककश्चाभिधेयवत् ॥३ ९॥  
 फटा तु स्त्री फणेऽप स्यात्तथा दत्तेऽप भागिनाम् ।  
 फफरीकश्च पट स्यात्फफरीक तु मादवे ॥३ ६॥  
 फल फाले धने बीजे निष्पत्तौ भोगलाभयो ।  
 सस्ये हेतुकृते चर्मसञ्ज्ञशस्त्रनिवारण ॥३ ९ ॥  
 शस्त्राणा च मुख ना तु करमर्देऽथ सा फला ।  
 कार्पास्या लवलीराजकोशातक्यो स्त्रियामथ ॥३७९८॥  
 कोशातक्या फलि या स्त्री ताम्रादिफलके फली ।  
 मत्स्यभेदे त्वपि स्त्रीत्वे फलीत्यव प्रकीर्तिता ॥३ ५॥  
 फलक काष्ठकीटे खेटकारये शस्त्रवारण ।  
 फलकी चित्रफ यारये मत्स्यभेदे च चन्दने ॥३८ ॥  
 फलकस्तु क्षुमासङ्गे धा ये पुंसि प्रकीर्तित ।  
 फलकी चर्मपाणौ त्रि स्त्र यां फलकीयपि ॥३ ८॥  
 द्वयोस्तु फलकीत्येष मत्स्यभेदे प्रकीर्तित ।  
 फलपाका ता तु तालीद्रुमे स्त्री प्रियवादिषु ॥३८ २॥  
 मृदमाषतिलाद्यषु फलपाकविनाशिषु ।  
 फलाशन शुक्र द्वे स्यात्फलभक्षिणि तु त्रिषु ॥३८ ३॥  
 फलि यग्निशिखाया च कोशातक्यामपि स्त्रियाम् ।  
 प्रियङ्गावपि च त्रिस्तु फली फलसमन्विते ॥३८ ४॥

फलेरुहस्तालवृक्षे पाटल्या तु फलेरुहा ।  
 फलोदय पुमाल्लामे स्वर्गेऽपि परिकीर्त्तित ॥३८ ५॥  
 त्रिषु फगुरसारे स्त्री काकोदुम्बरिकातरौ ।  
 काकोदुम्बरिकाया ना फ गुस्त्रि त्व पमाघया ॥३८ ६॥  
 फगुनी भगदेव ये नक्षत्रे यमदवते ।  
 ताभ्या युक्ते कालमात्रे जाते वत्र त्रि फल्गुनी ॥३८ ॥  
 फगुनस्तु पुमानेव ज्ञयो मध्यमपाण्डवे ।  
 फाणिगुडे करम्बे च स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ॥३८ ८॥  
 फाणत गौडावकृतिभेदेऽथ क्वाथिते त्रिषु ।  
 फालो लाङ्गलकूटेऽपि श्वेताऽर्के दाडिमे पुमान् ॥३८ ९॥  
 निष्पत्तौ स्याद्विशरणे तक्कोले तु नपुसकम् ।  
 फलस्य तु विकारादौ फाल स्यादभिधेयवत् ॥३८ १॥  
 फाल पुस महादेवे कालिन्दीभदेने पि च ।  
 क्लीब सीरोपकरणे त्रिषु कार्यासवाससि ॥३८ ११॥  
 फागुनी पूणिमाया स्त्री कीर्त्तिता फगुनीयुजि ।  
 फागुनस्तद्युते मास तथा मध्यमपाण्डवे ॥३८ १२॥  
 नदीजाजुनवृक्षे च फागुन तु तृणातरे ।  
 आश्वर्ये स्याद्विकसितेऽफुल्ल विशरणे नपि ॥  
 फेनिलोऽरिष्टवृक्षे ना त्रि सफेनेऽथ फेनिलम् ॥३८ १३॥  
 मदनस्य बदर्याश्चारिष्टस्य च फले स्मृतम् ।  
 फरवस्तु द्वयोरुक्तो जम्बुकेऽप्यस्यपे तथा ॥३८ १४॥

ब

ब पुमान्वरुण सि धौ भगे तोष गतऽपि च ।  
 ग धन त तुसताने पुस्येव वपने स्मृत ॥३८ १५॥  
 बकस्तु ना दाम्यमुनावेकचक्रेऽवरेऽसुरे ।  
 बकपुष्पद्रुमे तद्वकुबेरेऽपि प्रकीर्त्तित ॥३८ १६॥

द्वे तु पक्षिणि कङ्कारय पुलकसीक्षत्रजेऽपि च ।  
 बको रुक्मबलाकाभिद्वातावर्जितशाखयो ॥३८१॥  
 बडिश त्वध्यमानस्य भदेऽपि स्यान्नपुसकम् ।  
 मस्यवेधनयत्रे च विरजौ परिकीर्तितम् ॥३८१८॥  
 बण्ठर स्थगिकारजौ लाङ्गले कुक्कुरस्य च ।  
 करीरकोष तालस्य पलप च पयोधरे ॥३८१९॥  
 बदरी कुवलीवृक्षेऽजग धास्तम्बके स्त्रियाम् ।  
 ईश्वरस्थानभेदेऽथ कार्पास्या बदरा तथा ॥३८२॥  
 विष्णुक्सेनप्रिया सङ्गमेषज बदर तु नप ।  
 उक्त पूवस्थावराणाम्प्रसरे परिकीर्तितम् ॥३८२१॥  
 अथ बद्धशिखा स्त्री स्यादु चटाया शिशौ त्रिषु ।  
 बधि इयेने च काके च नृस्त्रियो परिकीर्तित ॥३८॥  
 बन्दनी नतिजीवातुकुटीयाचनकर्मसु ।  
 बन्दा बद्धाश्च भिक्षुक्या लताभेदेऽपि च स्त्रियाम् ॥३८२३॥  
 बध सीसारयलोहेऽपि पुमानाधौ च बधने ।  
 स्याद्बधकी स्त्री कुलटाऽन्नाप्तसत्कृतिवेद्ययो ॥३८२४॥  
 करिण्यामप्यथाऽऽधौ तु बधक त्रिषु बद्धार ।  
 बधन क्ली सयमने त्रि तु बधस्य साधने ॥३८२५॥  
 पशुबधनरजौ तु बधनी स्त्री प्रकीर्तिता ।  
 बधु स्वरे ना स्वजने तुर्ये राशौ च लग्नत ॥३८२६॥  
 अथ बधुरधिक्षेप्ये वायवत्परिकीर्तित ।  
 बधुजीवस्तु बधूके क्ली तत्पुण्ये प्रकीर्तितम् ॥३८॥  
 योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम् ।  
 बधुरस्तु द्वयोर्हसे बधूके न स्त्रियामयम् ॥३८२८॥  
 त्रिलिङ्ग सुन्दरे नम्रे तथा स्यादुन्नतानते ।  
 बधुर मुकुटे पुसि स्त्रीचिह्ने तैलककयो ॥३८२९॥  
 बधूके वधिरे हसे त्रिषु स्याद्रम्पनग्रयो ।  
 बधूको बधुजीवाख्यपुष्पगुल्मेऽसनद्रुमे ॥३३॥

नपुसक तु बधूकमनया प्रसवे मतम् ।  
 बधूरा पययोषाया स्त्रिया पुभूम्नि शशुषु ॥३८३१॥  
 बध्रुर्ना केशवे पूवराजभेदर्विभेदयो ।  
 आनी कडारवृषभे धने वर्णे च अपङ्गले ॥३८३२॥  
 रि तु तद्वति खवाटे द्वे त्वोते नकुलेऽपि च ।  
 स्त्रिया तु बधुरित्येषा कपिलाया गवि स्मृता ॥३८३३॥  
 बरटा द्वयोवरद्या स्त्री हस्या च तत्पतौ पुमान् ।  
 बरण्डोऽय तरे वेदीसमूहमुखरागयो ॥३८३४॥  
 बरण कस्तु मातङ्गवेधा यौवनकण्ठके ।  
 बराटक पबबीजकोषे रज्जौ कपदके ॥३८३५॥  
 बपटी ग्रीहिभदे च तथा पयास्त्रया मता ।  
 बर्बरो बर्बरी म्लेच्छजातिभेदे द्वयोभवेत् ॥३८३६॥  
 बबरा त्वजगधाया भार्या चापि स्त्रिया मता ।  
 बर्ह मयूरपिच्छेऽपि वृक्षपत्रे नपुसकम् ॥३८३७॥  
 बर्हिण भारतद्वीपा तरे केकिनि तु द्रया ।  
 बर्हि कुशेक्षुख यज्ञ क्ली महत्यनले तु ना ॥३८३८॥  
 बलोऽस्यस्थनि रूपे च शक्तिरेतश्चमूष्वपि ।  
 स्थौयेऽथ ना यावकार्ययवे चापि हलायुधे ॥३८३९॥  
 दैत्या तरेऽथ बलिनि त्रि स्त्री वाद्यालके बला ।  
 पिप्पल्याश्च द्विलिङ्गस्तु बल काके प्रकीर्त्तित ॥३८४०॥  
 बलज गोपुरक्षेत्रे शस्यसङ्गरयोरपि ।  
 बणिज्यायां पुमान् बाणि यके च करणा तरे ॥३८४१॥  
 बलदेवो बले वाते त्रायमाणौषधौ स्त्रियाम् ।  
 बलभद्रा त्रायमाणाकुमार्यो पुंसि सीरिणि ॥३८४२॥  
 बलाहको गिरौ मेघे दैत्यनागावशेषयो ।  
 बलि पूजोपहारे ना भागधेये नृपस्य च ॥३८४३॥  
 प्राणनाथकधातौ च दैत्यभेदेऽपि कीर्त्तित ।  
 देवताचनतूर्ये तु नृस्त्रियोर्बलिरिष्यते ॥३८४४॥



बलिदैत्यप्रभदे ना रुचामरदण्डया ।  
 उपहारे पुमा स्त्री तु जरयाश्लथचर्मणि ॥३८४५॥  
 गृहदारुप्रभद च जठरावयवेऽपि च ।  
 बली माये नालिकेरे शोणाम्लाने च मज्जि च ॥३८४६॥  
 षष्ठ शरीरधातूना कारवे लान्तरऽपि च ।  
 बृहत्कर्कोटकारये ना बलयुक्त तु स त्रिषु ॥३८४७॥  
 बलिपुष्टीद्वयो काके योगार्थे तु यथायथम् ।  
 बलिभुक्त द्वयो काके बलिभोक्तरि तु त्रिषु ॥३८४८॥  
 बलीका विसकण्ठ्या च बधकीकुलटाथयो ।  
 बल्लरस्तु पले पुसि स्तन चाथ ह्यव द्वयो ॥३८४९॥  
 बय प्रधानधातौ स्याक्लीब बलकरे त्रिषु ।  
 बहल पुष्कले साद्रे भेद्यत्परिकीर्तितम् ॥३८५०॥  
 बहिष्ठन्तु माहृष्टे त्रि हीबरे तु नपुसकम् ।  
 बहुजतातहोमानो भद्यलिङ्ग तु वाच्ययो ॥३८५१॥  
 त्रित्वादिसरयासरयेये महाऽर्थेऽप्यत्र च स्त्रियाम् ।  
 यदाष्टात्तस्तदा बह्वी बहुरित्यपि वा द्वयम् ॥३८५२॥  
 बहुप्रजो द्वे वराहे योगार्थे तु यथायथम् ।  
 भवेद्बहुफलो नीपे क्ष्मामलक्या तु योषिति ॥३८५३॥  
 बहुरूप शिवे विष्णो धूनके सरटे स्मरे ।  
 बहुलस्तु पुमानग्ना कृष्णपक्षे च नीपके ॥३८५४॥  
 त्रिस्तु कृष्णे प्रभूते च कृत्तिकाकालजातके ।  
 अथ स्त्री बहुला श्वेताभूम्येलासुरभीषु च ॥३८५५॥  
 स्त्री भूमिन् कृत्तिकास्वेता रोदस्योर्बहुले इति ।  
 बहुलीकृतमेतत्त्रि पूतधायेऽपि विस्तृते ॥३८५६॥  
 शतावर्या बहुसुता योगार्थे तु यथायथम् ।  
 बाह्वक्षिषु भृशार्थे स्याद्बाह त्वनुमतावपि ॥३८५७॥  
 अवश्यमर्थे च तथा प्रतिज्ञायां नपुसकम् ।  
 बाणोऽसुरे बलिसुते तथश्वाकुमहीभृत ॥३८५८॥

प्रपात्रे वृक्षभेदे च ककुमारये पुमा मत ।  
 द्वयो वणिग्नीलक्षिण्टयामस्त्रियां शरतद्भिदो ॥३८५९॥  
 भवेद्बाणिजक पुसि बडगाते वणि यपि ।  
 बाणी सरस्वती दया वाचि स्यूतावपि त्स्त्रियाम् ॥३८६॥  
 बाव शुद्रफले पूगे बले चापि पुमा मत ।  
 द्वयोस्तु बाधा दु खे च निषेधे च प्रकीर्त्तिता ॥३८६१॥  
 बाधवो ज्ञातिसुहृदोर्द्वे त्रि स्याद्बधुयोगिनि ।  
 बाभ्रवी गिरिजायां स्त्री बप्रवश्ये द्वयोभवेत् ॥३८६२॥  
 बभ्रुसम्बन्धिनि त्रि स्यान्न स्त्री न्वकणयोर्मले ।  
 गणिस्थराजे पुलिङ्गो बाभ्रव परिकीर्त्तित ॥३८६३॥  
 बारकी शत्रुचित्राश्रयणा जीवपयोधिषु ।  
 बारुण्डी द्वारपि ब्या स्त्री फणिना राजके पुमान् ॥३८६४॥  
 न स्त्रिया सेकपात्रे च मलेऽक्ष्ण श्रवणस्य च ।  
 बादरस्तु पुमान्मेलन दायो दिवसे तु नप ॥३८६५॥  
 बाहत बृहतीञ्छदस्यपि स्यादबृहतीफले ।  
 बृहया बृहतश्चापि सम्बन्धिन्यभिधेयवत् ॥३८६६॥  
 बाल शिशौ च मूर्खे च वाच्यवपरिकीर्त्तित ।  
 बालस्तु नालिकेरे ना पञ्चवर्षगजे द्वयो ॥३८६७॥  
 बाला तु मलिकाभदे हरिद्रायामपि स्त्रियाम् ।  
 बालकस्तु पुमा कृष्णशालौ त्रिस्वतिबालिशे ॥३८६८॥  
 बालकस्तु शिशावज्ञ बालधौ हयहस्तिनो ।  
 अङ्गुलीयकहीबेरवलये पुसि बालिका ॥३८६९॥  
 बालाया बालुकापत्रकाहलाकर्णभूषणे ।  
 बालवत्सो बालपुत्रयुते त्रिष्वथ च द्वयो ॥३८७०॥  
 पारावतारयाद यस्मि कपोतारयविहङ्गमे ।  
 बालिशस्तु भवेमूर्खे तथा बालेऽभिधेयवत् ॥३८७१॥  
 बालुका सिकतासु स्याद्बालुक बेलबालुके ।  
 बालेयो गर्दभे दैत्येऽपि द्वयो परिकीर्त्तित ॥३८७२॥

मृदा बलिहिते चापि खलेऽप त्रिषु कीर्त्तित ।  
 बाष्पस्तु धूमाभासे ना मुखतोयादिजेऽश्रणि ॥३३॥  
 शाकमदे च बाष्पी तु हिङ्गुपयारयभषज ।  
 बाहा प्रवाहण नृस्त्री स्त्रिया बाहौ प्रकीर्त्तिता ॥३८४॥  
 बाहु पुरुषभेदे ना द्वयोः वेष भुज मत ।  
 षट्त्रिंशदङ्गुलेऽप्येष स्यात्प्रमाणा तरे तथा ॥३८५॥  
 गृहादिद्वारपात्रस्थयात्र करयातदारुषु ।  
 बाहक ककटे चार्के दात्यूहे जलखातके ॥ ८६॥  
 बाहजस्तु द्वयोः कीरे क्षत्रिये च प्रकीर्त्तित ।  
 स्यजाततिले पुंसि बाहुजाते तु वायवत् ॥३८७॥  
 बाहुदा स्त्री नदीमदे बाहोदातार तु त्रिषु ।  
 अनयोर्बहुदस्यापि त्रि सम्प्रदान बाहुदी ॥३८८॥  
 बाहुल कार्तिके पुंसि बाहूनां तु बाहुलम् ।  
 स्याद्बाहुल तु बहुलसम्प्रधायभिधेयवत् ॥३८९॥  
 बाहुलेय पुमांस्कदे द्वयोस्तु बहुलासुते ।  
 बाह्य स्वकपिते नृत्ते क्लीब त्रिस्तु बहिर्भवे ॥३९०॥  
 बाह्व तु क्लीबलिङ्ग हिङ्गुङ्कुमयोर्मतम् ।  
 बाह्विक क्ली कुसुम्भेऽपि हिङ्गुङ्कुमयोरपि ॥३९१॥  
 पुभूमिन् देशभेदेऽपि द्वयास्तदेशजतुषु ।  
 विशेषाद्बालिकाऽश्रेषु बालहीक तत्समार्थकम् ॥३९२॥  
 बिदल पाटिते काष्ठे वेण्वादीना दलेऽपि च ।  
 द्विधाकृते मृदादागस्त्रियां परिकीर्त्तित ॥३९३॥  
 नुवोर्मध्ये बिदुद तक्षत्तभेदे पुमा मत ।  
 वेदितर्यन्यलिङ्ग स्यात् स्पर्कार्यप्रकृतौ पुमान् ॥३९४॥  
 वि दविप्रुषि पश्चादिशरीरस्थपृष्ठसु ना ।  
 लवे चावयवे नश्यत्प्रजयोषिति तु द्वयो ॥३९५॥  
 वि दुलस्तु भवेदम्बुवेतसे वेतसेऽपि च ।  
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमासुखलक्ष्मसु ॥३९६॥

प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ समानत्वोपधानयो ।  
 आदर्शे स्त्री तु बिम्बोष्ठीलताया क्ली तु तत्फले ॥३८८॥  
 बिम्बस्तु कृकलासे स्यान्नानावणक्षमे द्वयो ।  
 बिम्बिसारकमियुक्त चापभेदे नपुसकम् ॥३८८८॥  
 बाणभेदे तु विज्ञेयो ना द्रापश्चाशदङ्गुले ।  
 विल छिद्रे गुहायाश्च पुमानुच्चै श्रवोद्वये ॥३८८९॥  
 विलेशयो द्वे नङ्गुले मूषिके भुजगोऽपि च ।  
 विलेशया तु गोधायामिय स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥३८९॥  
 बिल्व पादपभेदे ना श्रीफलारये प्रकीर्त्तित ।  
 क्लीब तु तत्फले बिम्बमानेऽपि फलनामनि ॥३८९१॥  
 बिसखण्ड रक्तपत्रे योगार्थे तु यथायथम् ।  
 बीजमनेऽप्यपत्ये च रेतस्यङ्कुरकारणे ॥३८९२॥  
 फलास्थानि च हेतौ च नपुसकमुदीरितम् ।  
 बीजपुष्प मरुबके तथा मदनकेऽपि च ॥३८९३॥  
 बीजी बीजवति त्रि स्यात्पुमांस्तु पितरि स्मृत ।  
 बीज्यो धाये यावशूकारयवक्षारभिद्यपि ॥३८९४॥  
 बीभत्सस्तु पुमापापे काव्यस्थ च रसा तरे ।  
 बुकस्तु शिवमया ना मूषाया तु बुका स्त्रियाम् ॥३८९५॥  
 बुक्कणो वावदूके त्रि शुनि द्वे ना नृपान्तरे ।  
 बुद्धो ना सुगतेऽथ त्रि पण्डिते ज्ञातरि स्मृत ॥३८९६॥  
 ज्ञायमाने च फुल्ले च बोधने तु नपुसकम् ।  
 बुद्धिमा राजभृङ्गारय स्याद्बुद्ध्यादा तरे द्वयो ॥३८९७॥  
 वाच्यवद्बुद्धिमानेष बुद्धियुक्ते प्रकीर्त्तित ।  
 बुद्बुदोऽप्या विकारे ना नेत्ररोगे त्रि तद्वति ॥३८९८॥  
 बुध सुरे द्वयोर्ना तु बुधश्चाद्रमसायनौ ।  
 विद्वद्बुद्धोऽस्त्रिषु बुधो बुद्धौ तु स्यात्स्त्रिया बुधा ॥३८९९॥  
 गुण्डीसङ्गतृणस्तम्बे बुद्धिसङ्गे च भेषजे ।  
 बुधानस्तु गुरौ पुंसि विज्ञे स्यादभिधेयवत् ॥३९॥

बुध्न प्रजापतौ रुद्रे पृष्ठात्ते स्वगतुण्डयो ।  
 बृक्षादेरप्यवाग्भागे पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥३९ १॥  
 बुलिर्योनौ च वायौ च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।  
 बुस कङ्कगरे न स्त्री क्लीब तु सालले बुसम् ॥३९ २॥  
 गोकरीषधने त्वेषा बुसा स्त्री परिकीर्त्तिता ।  
 बुस्त ग्रहसने पुसि धनु कोटौ नपुसकम् ॥३९ ३॥  
 बृञ्चूको द्व मातृवाहनाम्नि ज तौ जले तु नप् ।  
 बृदारको द्वयोर्देवे त्रि तु मुरयेऽपि सुन्दरे ॥३९ ४॥  
 बृहच्छद शोथशत्रुस्तम्बे ना त्रि तु योगिके ।  
 बृहवारण्यके साम्नि वामिद्वीत्यकसप्तद्वये ॥३९ ५॥  
 क्ली निर्महति तत्रापि स्त्र्यर्थे स्याद्बृहतीत्यथ ।  
 प्रसहासज्ञवार्त्ताक्या छ दोभेदेषु केषुचित् ॥३९ ६॥  
 षट्त्रिंशदक्षराद्यु तथा विश्वावसोरपि ।  
 वीणायां क्षुद्रवार्त्ताक्या बृहतीवाप्यपि स्त्रियाम् ॥३९ ७॥  
 बृहत्क सामभेदे य आगतेत्यचि गीयते ।  
 मणिभेदेऽपि तत्राय बृहत्क पुसि कीर्त्तित ॥३९ ८॥  
 प्रविकासिग्रभोज्जपोऽपि यो महानिव लक्ष्यते ।  
 बृहत्कला गुडाकेशे महापोटगले पुमान् ॥३९ ९॥  
 बेकट स्याद्वैकटिके मत्स्यभेदे च यूनि च ।  
 बेटकस्त्रिवैकटिके तथा सञ्जातयौवने ॥३९१ ॥  
 बैजिक शिशुतले च हेतौ सद्योज्झुरे तु ना ।  
 अथ बीजप्रयोज्यादौ बैजिक भेद्यलिङ्गकम् ॥३९१२॥  
 बोधनी बोधपिप्पल्योर्बोधन गन्धदीपने ।  
 बोधनीया स्त्रियां बृद्धिसङ्गके भेषजातरे ॥३९१ ॥  
 अथ बोधयितव्ये च बोद्धयेऽपि च वाच्यवत् ।  
 बोधिस्त्वर्थे स्त्रिया सम्यग्ज्ञाने च द्वे तु कुक्कुटे ॥३९१३॥

पुमास्तु बोधिबुद्धे स्यादश्वत्थेऽपि प्रकीर्तित ।  
 बोल साये मधुनि च तत्काले ना वपोऽभ्ये ॥३९१४॥  
 लेखन्युद्धृतमस्या च तथा गन्धरसौषधे ।  
 ब्रह्मा ना ऋषिभित्सर्गक्षर्ये द्वे वश्वविप्रयो ॥३९१५॥  
 ब्रह्मघोषो वेदघोषे तथैव गरलातरे ।  
 ब्रह्मचारी पुमान्स्कन्देऽप्युपनीतेऽपि कीर्तित ॥३९१६॥  
 ब्रह्मचारिण्युमाया स्त्री त्रि त्वमथुनकारिणि ।  
 ब्रह्मण्य स्याद्ब्रह्मसाधु ब्रह्मदारुशनैश्वरे ॥३९१७॥  
 ब्रह्मदण्डी तु भाङ्ग्या स्याद्ब्रह्मदण्डो धनुर्भिदि ।  
 ब्रह्मा रुद्रहृषीकेशविरश्वाकं दुवह्निषु ॥३९१८॥  
 यज्ञे विप्रे च भृगवादिष्वृत्विग्भेदे तु पुस्ययम ।  
 क्लीब तु वेदे म त्रेऽङ्गे स्वेऽध्वात्माऽऽमतपस्तु च ॥३९१९॥  
 मोक्षे जपे धने चैतेष्वर्थेषु ब्रह्म कीर्तितम् ।  
 ब्रह्मपुत्रो विष ब्रह्मबालुकारये पुमा मत ॥३९२०॥  
 रुद्रे केतुग्रहे चापि योगार्थे तु यथायथम् ।  
 ब्रह्मपुत्र क्षेत्रभेदे नदभेदे च पुस्ययम् ॥३९२१॥  
 ब्रह्मबधुस्त्र्यधिकक्षिप्य निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ।  
 ब्रह्मी तु फञ्जिकाया स्याच्छाकमत्स्यप्रमदया ॥३९२२॥  
 ब्राह्मोज्जितमे रात्रियामेऽथ ब्राह्मी सप्तमातृषु ।  
 एकस्या दिशि चोर्ध्वाया ब्रह्मरीयाख्यलोहके ॥३९२३॥  
 मस्याक्षयारयतृणस्तम्बवाचिषु त्रि तु यौगिके ।  
 ब्राह्मणस्तु द्वयोविप्र आत्मज्ञ तु त्रिषु स्मृत ॥३९२४॥  
 स्याद् यारयायकवेदाशतदशा तरयोस्तु नप् ।  
 ब्राह्मणी तु ब्रह्मरीतिलोहे भाङ्ग्यामपि स्त्रियाम् ॥३९२५॥  
 हरेणुस्पृक्कयाश्चापि स्यात्पिङ्गविपुले तथा ।  
 पिपीलिका तरे रक्तपुच्छे चाञ्जनिकान्तरे ॥३९२६॥  
 ब्राह्मण्य विप्रसङ्ग ब्राह्मणाना भावकर्मणो ॥३९२६॥

भ

भ नक्षत्रे च मेषादौ सरयाया सप्तविंशतौ ॥३९२॥  
 भस्तु भ्रातौ तथा शुक्रग्रहेऽप्यादिगुरौ गणे ।  
 सङ्ज्ञान्तरे पाणिनेश्च भा तु भास स्त्रिया मता ॥३९२८॥  
 भक्षणाऽभ्यवहारे स्त्री भक्षण च नपुसकम् ।  
 गवीशुकारयथाये तु भक्षणीति स्त्रिया मता ॥३९९॥  
 भक्तस्त्रि सेविते सेवकेऽथ क्लयोदनसेवयो ।  
 भक्तिर्भागे सेयमाने लक्षणासवयो स्त्रियाम् ॥३९३॥  
 भगोऽस्त्री स्याद्यशोवीर्ययोनियत्तार्कभूतिषु ।  
 काती छाज्ञानवैराग्यधमश्चर्यतपस्तु च ॥३९३१॥  
 धैर्यसौभाग्यमाहात्म्यधनशुक्रमतिश्रुते ।  
 पुमांस्तु सूर्ये चादित्यभदानामपि कुत्रचित् ॥३९३॥  
 भगवांस्तु महादेवे शिवे च सुगते पुमान् ।  
 स्त्री पावत्या भगवती पू ये तु भगवास्त्रिषु ॥३९३३॥  
 भङ्ग पुमास्तरङ्गे च भञ्जने च प्रकीर्तित् ।  
 धान्ये तु मातुलाचार्ये स्त्रियां भङ्गा प्रकीर्तिता ॥३९३४॥  
 भङ्गिभङ्गऽप्याकृतौ च विच्छित्तौ च स्त्रियाम्मता ।  
 भङ्गुरो नक्षरे चापि नम्र स्यादभिधेयवत् ॥३९३५॥  
 भङ्गथो भाङ्गीनिभक्त्यभङ्गसाध्वादिषु त्रिषु ।  
 भञ्जन क्लीबमामर्देऽथार्थे भञ्जयतेर्न ना ॥३९३६॥  
 भञ्जना तु स्त्रियामेव विवृत्य वचने भवेत् ।  
 भटस्तु योधे ना मर्त्ये नटीविप्रोद्भवे द्वयो ॥३९३॥  
 भटाल तु कपाले क्ली भटाल सेवके त्रिषु ।  
 भटिल सेवके त्रि स्याद्द्वयोस्तु शुनके मत ॥३९३८॥  
 भट्टारको ना नाट्योक्तौ राक्षि पूये च पूरुषे ।  
 स्त्री तु भट्टारिका ज्ञेया नाट्योक्तावेव मातरि ॥३९३९॥

भट्टिनी द्विजभार्यायां नाट्योक्त्या राजयोषिति ।  
 भण्ड धनवता कोशस्थितेऽर्थे स्यान्नपुसकम् ॥३९४॥  
 परिहासे द्वयोभण्डा हास्यकारिणि तु त्रिषु ।  
 भण्डी मण्डूकपर्णारयतृणस्तम्बे स्त्रियाम्मता ॥३९४१॥  
 भण्डन परिहासे क्ली दुग्धे च कवचे रणे ।  
 भण्डिलस्तु शिरीषे ना द्वयो पुत्रे तथा शुनि ॥३९४२॥  
 भण्डीरी मण्डूकपर्ण्यां भण्डीरो योद्धरि त्रिषु ।  
 भदन्त पुसि सयासियपि स्यात्पूजनीयके ॥३९४३॥  
 शाक्यक्षपणकानां च त्रिस्तु ताराभदतके ।  
 भद्र पुमास्यादृषभे गजभेदे द्वयोर्मत ॥३९४४॥  
 नपुसक तु भद्र स्यात्सामभदे शुभे सुखे ।  
 भद्रस्तु कीर्त्तित साधौ बृहस्पत्यभिधेयवत् ॥३९४५॥  
 स्त्रियां तु भद्रा दूर्वायां शारिबारास्नयोरपि ।  
 द्वितीयासप्तमीद्वादश्यास्यासु च तिथिष्वपि ॥३९४६॥  
 भद्रकाली तु गन्धोल्या कात्याययामपि स्त्रियाम् ।  
 भय प्रतिभये घोर प्रसूने कुब्जकस्य च ॥३९४७॥  
 भयानको द्वे वराहे याघ्रे स्यान्मूषिकात्तरे ।  
 रसभदे तु राहौ च पुर्मास्त्रिषु तु भीषणे ॥३९४८॥  
 भरस्त्वतिशये भारे सग्रामे गरिमण्यपि ।  
 घोषके भरण तु क्ली धारण पोषणेऽपि च ॥३९४९॥  
 भरणी घोषके ऋक्षे भरण वेतने मृतौ ।  
 भरतस्त्वृत्विजि नटे रामस्य च कनीयसि ॥३९५॥  
 आद्यक्षत्रियभेदे च वर्षेऽस्मिन्मृत्तशास्त्रके ।  
 भरद्वाजो गुरो पुत्रे याघ्राटारयविहङ्गमे ॥३९५१॥

१ भण्डनं कवचे शुद्धे खलीकारेऽपि न द्वयो ।

२ भयानक स्मृतो व्याघ्रे रसे राहौ भयंकरे ।

३ भरणी यमनक्षत्रे भरण्या मृत्युः यपि स्त्रियाम् ।

भरण पोषणे चापि धारणेऽपि नपुसकम् ।



भरु सुवर्णे च शिव भर्त्तरि त्वभिधेयवत् ।  
 भरुजा द्वे शृगालेऽपि स्नेहसमृष्टतण्डुले ॥३९॥  
 भक्ष्यभदेऽपि तत्राऽये भरुजी भरुजा स्त्रियाम् ।  
 भरुट कुम्भकारे द्व कपर्दे तु पुमा मत ॥३९५३॥  
 भगशब्दस्त्वद त स्यात्सामभेदे महेश्वर ।  
 भगस्तेजसि च क्लीब सा त रेतस्यपीड्यत ॥३९५४॥  
 भर्त्ता धवे ना त्रिषु तु स्वामिपोषकधत्त पु ।  
 भत्त दारक उक्तो ना नाट्योक्तो युवराजके ॥३९५५॥  
 राजपुत्र्या तु नाटयोक्तौ स्त्रीलिङ्गा भत्त दारिका ।  
 भम स्याद्वेतने चापि काश्चनेऽपि नपुसकम् ॥३९५६॥  
 भर्मक रोगभदे स्याद्विडङ्गकलधौतयो ।  
 भल स्या पुंसि भल्लके शस्त्रभेद पुनद्वया ॥ ९५ ॥  
 भल्लीति भल्लातक्या च स्त्रियामेव प्रकीर्त्तता ।  
 भल्लको वानर चापि तथा ऋक्षसृगे द्वयो ॥ ९५८॥  
 भलाटस्तु द्वयोःक्षे ना दवे वास्तुवासिनि ।  
 उदकपाश्वस्थकोष्ठाना प्रत्यगारभ्य तुर्यके ॥३९५९॥  
 भल्लकण्डुण्डुवृक्षे ना द्वयोस्त्वृक्षसृग मत ।  
 भव शिवप्राप्तिसत्रजगज्जमशुभक्रुधि ॥३९६॥  
 भवस्तु भावितर्येष भधवत्परिकीर्त्तित ।  
 भवत्पूये सर्वनाम त्रिष्वत्र भवती स्त्रियाम् ॥३९६१॥  
 त्रि त्वेव जायमाने च विद्यमाने च तत्र च ।  
 स्त्रीत्वे भवन्तीत्येत स्या ना तु गोत्रस्य कर्त्तरि ॥३९६॥  
 ऋषिभेदे भवती तु स्त्रीलिङ्गा लटश्रुतौ स्मृता ।  
 भवन क्लीबस्युपत्तौ गृहे भवनमस्त्रियाम् ॥३९६३॥  
 स्त्रीपुंसयोस्तु भवन कुक्कुटे परिकीर्त्तित ।  
 भवत पुंसि काले त्रिभगन्ती भवितर्यपि ॥३९६४॥

भविलस्त्रिषु भव्य क्ली गृहे मुच्यन्तरे तु ना ।  
 भविष्यत्सालले क्लीब भाविनि वभिधेयवत् ॥३९६५॥  
 भयो ना कर्मरङ्गद्रौ क्लीब तस्य फले धने ।  
 कल्याणारयगुणे च स्याद्भेद्यलिङ्ग तु तद्वति ॥३९६६॥  
 योग्ये भवितरि प्राप्ये भवितव्ये तु तनपि ।  
 भषण कुक्कुरे द्व स्यात्क्ली तु बुक्कणकर्मणि ॥३९६ ॥  
 भसदा ता स्त्रिया विष्ठा गुह्यकोष्ठेषु नप् मुखे ।  
 भस्त्रा तु वक्षिष्मानार्थाज्यस्कारादिद्वितौ स्त्रियाम् ॥३९६८॥  
 भदे सप्तदशस्तोमविच्युतरिषुधावपि ।  
 भस्मक याधिभेदेऽपि विडङ्गऽपि नपुसकम् ॥३९६९॥  
 भस्मतूल ग्रामकूटे पाशुवर्षे हिमेऽपि च ।  
 भाकूट शलभदेऽपि तथैव निमिषातर ॥३९ ॥  
 भाक्तस्तु भक्तसाधौ स्यात्त्रिषु लाक्षणिकेऽपि च ।  
 भागौ भाग्ये तुरीयांशे रूपकाऽर्धेऽश्मत्रके ॥३९ १॥  
 भागस्तु सामभेदे क्ली भगसम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 भागधेयस्तु भाग्ये क्ली दायादे तु पुमानयम् ॥३९ २॥  
 स्त्रीपुंसयोर्भागधेयी राजदेयकरे मता ।  
 अथ भागवत प्रोक्तो भगवद्योगिनि त्रिषु ॥३९ ३॥  
 द्वयो क्षत्रियपूर्वाया वैश्याया व्रात्यत सुते ।  
 भाग्य शुभाशुभ जमातरकर्मणि कर्मणि ॥३९ ४॥  
 शुभाशुमेऽथ भक्तये त्रिषु तत्र च साधुनि ।  
 प्रदीयते या वृद्धथायलाभशुल्को पदात्मना ॥३९ ५॥  
 भाजन तु मत योग्ये पात्रे चापि नपुसकम् ।  
 भाण्ड क्लीबममत्रेऽश्वभूषणे भूषणेऽपि च ॥३९ ६॥  
 वणिङ्मूलधने पण्ये तथैवोपस्करे स्मृतम् ।  
 भाण्डी तु स्त्री शिरीषद्रौ भण्डसम्बन्धिनि त्रिषु ॥३९ ॥  
 भातु शरीरावयवे दैवे चापि पुमान्मत ।  
 भानुर्ना भास्करे वस्त्रे नृस्त्रियोस्तु गभस्तिषु ॥३९ ८॥

भाम क्रोधे च भगिनीपता भामा तु योषित ।  
 स्त्रीत्वे च सत्यभामायामी र्यावति तु स त्रिषु ॥३९ ९॥  
 भार सहस्रद्वितये पलाना च गरिम्णि च ।  
 वोढव्ये भरणे चापि पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥३९८ ॥  
 भारत त्वस्त्रियामसिन्वर्षे स्यात्स्त्री तु भारती ।  
 यक्षिणीतुलसीवाणीनाट्यवृत्त तरेषु च ॥३९ १॥  
 क्लीब तु भारतमिति महाभारत इष्यते ।  
 भारद्वाज पक्षिभदे व्याघ्राटारये द्वयोर्मत ॥३९८ ॥  
 भारद्वाजी स्त्रियां वन्यकार्पास्या ना क्वचिमुनौ ।  
 भरद्वाजस्य वश्ये द्वे त्रि तु सम्बन्धिनि स्मृत ॥३९८३॥  
 भारवाहो रेचितारयाञ्चगतौ पुंसि कीर्तित ।  
 अथ तद्वति भारस्य वोढर्यपि च वान्यवत् ॥३९८४॥  
 भारुण्ड सामभेदेषु क्ली भारुण्ड पुनद्वयो ।  
 एकोदरपृथग्र्यावे पक्षिण्यम्बुधिचारिणि ॥३९८५॥  
 भागवी पार्वतीलक्ष्मीदूर्वासु स्यात्स्त्रियामथ ।  
 शुक्रे परशुरामे च गजे धन्विनि भागव ॥३९८६॥  
 भार्त्र पोषे त्रि तु भृतेर्ग्राहके भक्त योगिनि ।  
 भार्या स्त्री सहधमिण्या भार्यस्त्वादिनृपातरे ॥३९८ ॥  
 भारसाध्वादिके त्वेष भार्य स्यादभिधेयवत् ।  
 भार्याटक पुमाभार्यानिर्जिते हरिणातरे ॥३९८८॥  
 भार्यारु शैलभेदे स्यान्मृगभेदे च तत्र च ।  
 क्रीडया परभार्यायाम्पुत्रो येनोपपादित ॥३९८९॥  
 भाल तु तेजसि क्लीब ललाटे च प्रकीर्तितम् ।  
 भालाङ्कस्तु शिवे शाकभेदेऽपि करपत्रके ॥३९९ ॥

१ भार स्याद्वीर्ये विष्णौ पलानां द्विसहस्रके ।

२ भारद्वाजस्तु ना द्रोणे द्वे भरद्वाजवशाज्जे ।

भारद्वाजी तु वन्यायां कार्पास्यां परिकीर्तिता ।

महालक्षणसम्पन्नपुरुषे राहिते च ना ।  
 कच्छपे च द्वयोस्त्रिस्तु रोहिते गुणिनि स्मृत ॥३९९१॥  
 भावस्तु भास्करे येष्टभ्रातर्यपि पुमान्मत ।  
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजतुषु ॥३९९॥  
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्त्रिभावयो ।  
 आत्मन्यपि च योनौ च प्राप्तिस्कारज मसु ॥३९९३॥  
 शृङ्गारादे रसस्यापि कारण चातरात्मान ।  
 नाट्योक्तिविषये प्राज्ञ पुंसि त्रिषु तु मानिनि ॥३९९४॥  
 भवसम्बन्धिनि बुधे भाव स्याद्भवितयाप ।  
 भावज्ञा स्त्री प्रियङ्गुद्रा भगवद्भाववेदिनि ॥३९९५॥  
 भावनोत्पादने चापि तथा गन्धाधवासने ।  
 प्रवर्त्तनायामपि च नप्स्त्रियो परिकीर्त्तिता ॥३९९६॥  
 भावाटस्तु त्रिषु ज्ञेयो भावके कामुकेऽपि च ।  
 ना तु साधुनिवेशे स्याद्भावाटस्तु द्वयोर्नटे ॥३९९॥  
 भावित्र तु भवेद्भद्रे त्रैलोक्ये च नपुसकम् ।  
 भावुक कुशले क्लीबमुपालम्भे तु भाषणी ॥३९९८॥  
 भाषा गिर्यभियोगोक्तौ लौकिकोक्तौ च भाषणे ।  
 भाष्य तु क्ली विवरणग्रन्थजात्यतरे यथा ॥३९९९॥  
 महामाष्यादि तत्र स्याद्भाषणीये तु भेद्यवत् ।  
 भा प्रभावे मयूखे च स्त्रियामुक्ता रुचावपि ॥४॥  
 भासो द्वयो शकुन्तारयस्वगे दीप्तावपि स्मृत ।  
 सामातरे तु भास तच्चपुसकमुदीरितम् ॥४॥ १॥  
 भासन्त सुन्दराकारे त्रिषु ना भासपक्षिणि ।  
 भासयन्तो रवौ ना त्रि भाषयन्ती प्रभाकृति ॥४॥ २॥  
 भास्कर पावके सूर्ये क्वचित्पाषणशिपिनि ।  
 भास्वाग्रधीद्वोर्ना स्त्री नद्युपसोस्त्रिस्तु भास्वरे ॥४॥ ३॥

भिक्षा तु भिक्षितद्रये देयान्न ग्रासमात्रके ।  
 याचने सेवने चापि भृतावपि मता स्त्रियाम् ॥४ ४॥  
 भिक्षुरियेष पुलिङ्ग परित्राजि प्रकीर्त्तित ।  
 चतुथकालाशिनि तु भिक्षाशीले च भयवत् ॥४ ५॥  
 भित्ति प्रदेशे कुड्य चाप्यवलम्बे भवेत्स्त्रियाम् ।  
 भित्तिका तु नदीभेदे शरावत्याह्वये स्मृता ४ ६॥  
 तथा भाषादिचूर्णे च वज्र च परिकीर्त्तिता ।  
 भिदक परशो वस्त्रे पुसि स्याद्वज्रकामयो ॥४ ७॥  
 भिदुर कुलिश त्रिस्तु भेत्तर्यपि भिदेलिमे ।  
 भिद्र स्याददृढे त्रि क्ली त्वेतद्दरणवज्रयो ॥४ ८॥  
 भिन्न विदारितेऽन्यस्निग्धश्चे चाप्यभिधेयवत् ।  
 भिन्नकुम्भस्त्रि योगार्थे तथा स्यादास्यमोचिते ॥४ ९॥  
 भिलो द्वयो स्याच्छवरान्निष्ठपूर्याऽधिकानुते ।  
 अथ भिल्ल पुमानेष पक्वणे परिकीर्त्तित ॥४ १०॥  
 भीत भये क्ली भीतस्तु त्रिषु प्रोक्ता भयाविते ।  
 भीमोज्ज्वलेतसे घोरे शम्भौ मध्यमपाण्डवे ॥४ ११॥  
 दमयत्याश्वपितरि क्रूरे लिङ्ग तु भयवत् ।  
 भीरु पुसीङ्गदतरौ स्त्रिया तूर्वारयोषितो ॥४ १२॥  
 योषिङ्गेऽपि भीरुस्तु कातरे त्रिषु कीर्त्तित ।  
 भीरुचेतास्त्रियोगार्थे मृगे तेष द्वयोर्मत ॥४ १३॥  
 भीषणा भापनायां न ना भीमे तु त्रि भीषणम् ।  
 भीषणा तु कवाटे च स्त्रियां स्यात्सल्लकीरसे ॥४ १४॥

- १ भासयन्तस्तु पुच्छिङ्गो भास्करे परिकीर्त्तित ।  
 अथ भासयितव्युक्ता भासयन्त्याभिधेयवत् ।  
 भास्कर पुसि सूर्येऽपि पावकेऽपि प्रकीर्त्तित ।  
 भास्वानि वा रवौ पुसि भयलिङ्ग तु भास्करे ।  
 भास्वती तु स्त्रियां नद्या तथैवोच्यते कीर्त्तिता ।

भीष्म शातनवे पुसि भेद्यवत्तु भयानके ।  
 भुजो भूजद्रुमे [र्केजनौ] बाहौ भूमानगोचरे ॥४ १५॥  
 [गरुडे वस्तुभेदे] च भुजा [स्यान्] नृक्षियो [रियम्] ।  
 भुजङ्गस्तु विटे पिङ्गे तथैवायतमे भवेत् ॥४ १६॥  
 चण्डवृष्टिप्रपातादिदण्डका ते द्वयोस्त्वहौ ।  
 भुजिर्भुनक्तिधातौ च पावके भुजतावपि ॥४ १७॥  
 भुजिष्यस्तु द्वयोर्दास आचार्ये त्वोदने तथा ।  
 हस्तसूत्रेऽपि ना त्रिस्तु भोक्तार्येष धने तु नप् ॥४ १८॥  
 भुरण्यस्तु त्रिषु क्षिप्रे विण्ण्वर्काग्निषु पुस्ययम् ।  
 भुरिग्बाहौ च कन्दे च वसाया भुवि च स्त्रियाम् ॥४ १९॥  
 उक्ताद्युत्कृतिपर्यन्त छन्द स्वेकाक्षराधिके ।  
 छ दोभेदेऽप्यथ पुमाभुरिग्राजनि कीर्त्तित ॥४ ॥  
 भुलिङ्गस्त्वृषिभेदे ना नीष्टृङ्गेदे तु भूमि च ।  
 स्यात्साल्वावयवे द्वे तु पक्षिजात्यतरे मत ॥४ २१॥  
 भुवनोऽस्त्री भवे लोके क्लीबं तु गगने जले ।  
 भुवन्यु स्यात्पुमानर्के ज्वलने शशलाञ्छने ॥४ २२॥  
 भुवो नपुसक सान्त लोकभदे रवावपि ।  
 भूर्भूम्यां स्थानमात्रे स्त्री सौराष्ट्रया योमदेहयो ॥४ २३॥  
 भूक छिद्रे च काले च नपुसकमुदीरितम् ।  
 भूकेऽन्यवल्गुजे स्त्री स्याद्भूकेश शैवले वटे ॥४ २४॥  
 भूजम्भुरितिगोधूमे विकङ्कतफले स्त्रियाम् ।  
 भूत प्राप्तिमहाभूतसत्त्वे भवनकर्मणि ॥४ २५॥  
 त्रि तु प्राणिनि च न्याय्येऽतीतलघुसमेषु च ।  
 देवयो यतरे त्वस्त्री भूता तमातरि स्त्रियाम् ॥४ २६॥

१ भुजस्तु गरुडे केँ नौ बाहौ तु स्याद्द्वयोर्भुजा ।

२ भुरिक स्त्री भूवसाकदभुजेच्छ दोतरेपि च ।

३ भुवनो स्त्री भवेल्लोके क्लीबं तु भुवने जले ।

अथ भूत कुमारेऽयं पुल्लिङ्गं परिकीर्तित ।  
 भूत क्षमादौ पिशाचादौ जतौ क्लीबं त्रिषुचित ॥४ २७॥  
 ग्राप्ते वित्ते समे सत्ये देवयोऽयं तरे तु ना ।  
 भूतवृक्षस्तु शाखोटद्रुमं स्योनाकपादपे ॥४ २८॥  
 भूतात्मा पुंसि [पवने] दैवे [जीवात्मब्रह्मणो] ।  
 भूतिभस्मनि सम्पत्तिहस्तिशृङ्गारयो स्त्रियाम् ॥४ २९॥  
 भूतिकं तु यवाया कृत्तणभूनिम्बभूस्तृण ।  
 छत्रायवा योभूतीकं भूनिम्बे कटफलेऽपि च ॥४ ३०॥  
 भूतेष्टा स्त्री चतुदश्या तिथौ स्यात्त्रिस्तु यौगिके ।  
 भूभृ-पुमानृपे चापि पवते च प्रकीर्तित ॥४ ३१॥  
 भूमि पृथिव्या विषये स्थानमात्रे भवेत्स्त्रियाम् ।  
 भूमिका रचनाया स्याद्द्वेषांतरपरिग्रहे ॥४ ३२॥  
 भूमिजोऽङ्गारके पुंसि तथैव नरकासुरे ।  
 स्त्रिया तु भूमिजा सीतादेया त्रिषु तु भूद्भवे ॥४ ३३॥  
 भूमिस्पृकं स्याद्द्वयोर्वैश्यमर्त्ययोस्त्रि तु यौगिके ।  
 भूयोऽयं पुनरर्थे त्रिस्त्रितरे च महत्तरे ॥४ ३४॥  
 भूरिर्ना वासुदेवे च हरे च परमेष्ठिनि ।  
 नपुंसकं सुवर्णे च प्राये स्याद्वाचलिङ्गकं ॥४ ३५॥  
 स्त्रिया भूरिफलाऽन्यस्मिन् पुष्पवल्ले प्रकीर्तिता ।  
 स्थावरे सप्तलानाम्नि यौगिके तु त्रिषु स्मृता ॥४ ३६॥  
 भूर्णिभ्रमणशीले त्रि स्त्रिया भूमौ धृतावपि ।  
 भूषणाऽलङ्कृतौ च स्यात्स्त्री क्ली त्वाभरणे भवेत् ॥४ ३७॥  
 भृगुर्गिरितटे ऋष्यंतरे शुक्रे शिवे पुमान् ।  
 भृङ्गो द्वयोः स्याद्भूम्याटे भ्रमरे च पुमान् पुन ॥४ ३८॥

१ भूतात्मा पवनेदेहे जीवात्मनि विरहने ।

२ भूरिकी सुवर्णे स्यात्प्रासुरे तु त्रिषु स्मृत ।

३ भृगु प्रधाने मुनिमित्तत्सुतेषु नृभूमनि ।

भृङ्गराजे लवङ्गे च भृङ्गारे वर्णभिद्यपि ।  
 पिङ्गारये त्रिस्तु तद्युक्ते क्ली तु वक्ष्यत्रभषजे ॥४ ३९॥  
 भृङ्गराजो माकवे स्याद्योदक्षिणपदावले ।  
 वास्तुन सप्तमपदे प्राक्त आरभ्य तिष्ठति ॥४ ४०॥  
 वास्तुदेवेऽपि ना तस्मि द्व तु भू (धृ) म्याटभृङ्गयो ।  
 भृङ्गार कनकाल्वां भृङ्गारी क्षि-यारयकीटके ॥४ ४१॥  
 भृङ्गारी क्षिलिकाया स्यात्कनकालौ पुन पुमान् ।  
 भृज्जकण्ठस्तु वक्ष्याया विप्रेण जनितेऽपि च ॥४ ४२॥  
 तथा ब्रात्येन विप्राया जनितेऽपि सुते द्वयो ।  
 भृति स्त्री धारण पोष भृतकादेश्च वेतने ॥४ ४३॥  
 अथ तत्र भृति स्त्री स्यामूल्येऽपि भरणेऽपि च ।  
 भृत्या दासे द्वयोर्भृत्या तु स्त्रिया वेतने मता ॥४ ४४॥  
 भृमल कृमिभेदे द्व क्ली चक्रे नाऽनिले मत ।  
 भृमिर्द्वयोहस्तिनि स्यात्पुसि वायौ जलेऽपि च ॥४ ४५॥  
 भृष्टि स्याद्भर्जने शूयवाटिकायामपि स्त्रियाम् ।  
 भेको निषादविप्राजे मण्डूकेऽपि द्वयोमत ॥४ ४६॥  
 भेदो विश्वे यावृत्तावुपजापे विदारणे ।  
 भेनस्तु चद्र सूर्ये च पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ॥४ ४७॥  
 भरस्तु कातरे त्रि स्याद्भेरी स्त्री दुःसुमौ मता ।  
 भेरुण्डा देवताभेदयक्षिण्यतरयो स्त्रियाम् ॥४ ४८॥  
 भयानके तु भेरुण्डो वाच्यवत्परिकीर्तित ।  
 भेल स्यादुडुपे पुसि चाकत्साग्रथकृ मुनौ ॥४ ४९॥  
 पूज्यप्राज्यप्रहीणेषु तु त्रि स्यात्कातरेऽपि च ।  
 भषज स्यात्सुखे तोये भेषजी वौषधे नना ॥४ ५०॥  
 भैरवी मातृभेदे स्त्री ना शिवे त्रिस्तु भीषणे ।  
 भोगो धने सुखे राये सपस्थ फणकाययो ॥४ ५१॥

१ भृङ्गमते भृङ्गराजे पुसि भृङ्गी गुड वक्षि ।

२ पुमान्स्तु भेवे भक्त स्याद् भीरके च तथा मत ।



कौटिल्ये भोजने त्राण वेश्यादीना भृतावपि ।  
 भोगवद्भोगयुक्त त्रिभुजग भोगवाद्भयो ॥४ ५ ॥  
 स्त्री तु भोगवती नागपुरी पातालगङ्गयो ।  
 भोगी तु सर्पे द्वे स्त्री तु भोगिनी नृपयोषिति ॥४ ५३॥  
 कृताभिषेकाया अन्यस्या भोगी त्वेष च वायवत् ।  
 वैयाघ्रत्यकरे चापि भूपाले भोगवत्यपि ॥४ ५४॥  
 भोजो राज यमात्रेऽपि नीष्टृद्भदेऽस्य राजनि ।  
 मर्त्यजात्यतरे चापि द्वयो क्षत्रियगोलक ॥४ ५५॥  
 पुभूमनि तु विध्याद्रिपाश्वस्थ नीष्टृदतरे ।  
 भोजन धनमुक्त्यो क्लो न ना भोजयतेषुचि ॥४ ५६॥  
 भोजनीय त्रि भोक्तये सामुद्रलवण तु नप ।  
 भोलो द्वयोर्द्वीपिनामशादूलातर इष्यते ॥४ ५७॥  
 उदीयनीष्टृद्भदे तु भोला पुभूमान स्मृता ।  
 भोलो मीनातरे पुसि त्रिषु कामादिविह्वले ॥४ ५८॥  
 भोस्तु सम्बोधने चैव विषादेऽप्यव्यय मतम् ।  
 भौतो देवलके पुसि भौती रात्रौ स्त्रिया मता ॥४ ५९॥  
 भौत भूतसमूहे क्ली भूतसम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 भौतिक भूतसम्बद्धे त्रिषु ना भौतिक शिवे ॥४ ६०॥  
 भौमोऽभिधेयवज्रूपिभवऽथ नरकासुरे ।  
 कुजग्रहे रक्तपुनर्नवायामम्बरेऽपि ना ॥४ ६१॥  
 भौरिक कनकाध्यक्षे त्रि पुभूमिनि तु भौरिका ।  
 प्राग्देशावस्थिते नीष्टृद्भदे समतटाह्वये ॥४ ६२॥  
 अशस्तु यसने पाते नाशे चैव पुमामत ।  
 अमस्तु मिथ्याज्ञाने च अमणे विचिकित्सने ॥४ ६३॥  
 शस्त्रमार्जनयन्त्रे च गृहाच्च निगमाध्वनि ।  
 अमको भ्रामक क्रोष्टौ द्वे सूर्यावत्तके पुमान् ॥४ ६४॥

अयस्कात्तविशेष च लोहभ्रमणकारिणि ।  
 भ्रमण तु नपि आ तौ स्त्रीनपुसकयो पुन ॥४ ६५॥  
 भ्रमणा भ्रमयत्यर्थे स्त्रिया तु परिकीर्त्तिता ।  
 कारुण्डिकायां भ्रमणी क्रियाद्यायामधीशितु ॥४ ६६॥  
 भ्रमरोऽलौ द्वयोर्ना तु गिरिके कामुके बटौ ।  
 हस्तमुद्रातरे पुत्रदात्रीजतुकयो पुन ॥४ ६७॥  
 भ्रमरी भ्रमरछायां तु स्त्रिया भ्रमरा मता ।  
 अथ भ्रमरको भृङ्ग गिरिके चाऽलका तरे ॥४ ६८॥  
 भ्रमरेष्टस्तु पुस्याग्रे नीपे जम्बूटपादपे ।  
 भ्रमि स्त्री भ्रमण धात्वोभ्रमतौ भ्राम्यतौ च ना ॥४ ६९॥  
 भ्राजो दीप्ते त्रिष्वथ ना दीप्तावादियभिद्यपि ।  
 भ्राजास्तु श्लोकभेदे स्युर्भ्राज सामा तरे नपि ॥४ ॥  
 भ्रातृ यस्तु पुमाञ्छत्रा भ्रात्रपये द्वयोर्मत ।  
 भ्रा तो ना राजधुस्तूरे मत्तेभे त्रिस्तु सम्भ्रमे ॥४ १॥  
 भ्रातिर्मिथ्यामतौ चापि भ्रमणे च स्त्रिया मता ।  
 भ्रातिमा भ्रातियुक्ते स्यादलङ्कारा तरेऽपि च ॥४ ॥  
 भ्रामर मधुभेदे स्यात्क्लीब भ्रमरनिर्मिते ।  
 दुर्गाया भ्रामरी स्त्री स्याद्भ्रामर प्रस्तरा तरे ॥४ ३॥  
 भ्रामाको जम्बुके धूर्ते सूर्यावर्त्ताऽश्मभदयो ।  
 भ्रुकुटीमुख इत्युक्तो यौगिके सपभिद्यपि ॥४ ४॥  
 भ्रूणोऽभके च भूपे च ब्राह्मण्या श्रोत्रियद्विज ।  
 गर्भिण्यां स्त्रैर्गर्भे च विप्रे चार्ये मतावपि ॥४ ५॥

## म

मो मध्यमस्वरे काले शिवे द्रव्रह्मविष्णुषु ।  
 यमे विषे मत्रभेदे पुमांश्छन्दोगणा तरे ॥४ ६॥

मा प्रभा मातृमानेषुज्ञानव धनमृत्युषु ।  
 लक्ष्म्या कट्या स्त्रियो म तु धनेऽम्बुनि नपुसकम् ॥४ ॥  
 मकरो द्वे क्षणे ना तु निधिराशिभिदो स्मृत ।  
 मकरन्द पुष्परसे तथा स्यामलिकातरे ॥४ ७८॥  
 रससि दूरभदे च कामे च मकरध्वज ।  
 नपुसक मकरमुख तथा स्यान्मकराकृतौ ॥४ ९॥  
 मकराङ्ग समुद्रऽपि कामदेवे पुमा मत ।  
 जलनिगमनद्वारे जानूर्ध्वावयवे तथा ॥४ ८॥  
 मकुर स्या मुकुरवदपण वकुलद्रुमे ।  
 कुलालदण्डे मुकुले वकुलस्य फलेऽपि नप ॥४ ८१॥  
 मकुलो वकुले पुसि कुडमले त्वस्त्रिया मत ।  
 मकुष्ठो व्रीहभेदे ना मथरे पुनरयवत् ॥४ ८॥  
 मक्कणस्तु पुमा कालेऽप्यजातरदने गजे ।  
 नि श्मश्रुपुरुषे द्वे तूद्दशे खगजेऽपि च ॥४ ८३॥  
 क्लीब तु मक्कण योधजङ्घात्राणाथयन्त्रके ।  
 मखो यशस्कामसत्रयाजिक्रवमरातरे ॥४ ८४॥  
 मखद्वेषी शिवे चापि राक्षसेऽपि पुमा मत ।  
 मगधो राजभेदेऽस्य मगधा भूमिनि नीवृत्ति ॥४ ८५॥  
 मुष्टौ च फलकादीनां वाद्यभेदे च मङ्गलके ।  
 पिप्पया मगधा स्त्रीत्वे [ सुश्रुते परिकीर्त्तिता ] ॥४ ८६॥  
 मघा स्त्रियोऽग्निनक्षत्रे भूमिनि काले च तद्युते ।  
 मघा तु गिरिजाया स्त्री मघी घायातरे भवेत् ॥४ ८७॥  
 मघा त्वोषधिभदे द्व मघो द्वीपान्तरे पुमान् ।  
 क्ली तु दानघनादौ च मघ स्यात्कुसुमातरे ॥४ ८८॥  
 मघवा ना नकारा तस्त्रन्तोपी द्वे त्रि दातरि ।  
 मङ्गलु शीघ्रे भृशार्थे चाव्ययमेतत्प्रकीर्त्तितम् ॥४ ८९॥

१ सुखे ऋनि वा ।

२ मङ्गलं वा ।

मङ्गोऽस्त्री मङ्गले ना तु मङ्गल आर्योपजीविन ।  
 मङ्गस्तु मङ्गलस्य स्यापठितर्यभिधेयवत् ॥४ ९ ॥  
 मङ्गोऽस्त्री नौशिरस्यक्ली मङ्गने गमनात्मके ।  
 मङ्गला सितदूर्वायामृमायामस्त्रिया शुभे ॥४ ९१॥  
 त्रि तु स्यामाल्लकापुष्पगधे लघार्थरक्षणे ।  
 मङ्गलोऽङ्गारके ग्रामवास्तुभेदे च पुंस्यम् ॥४ ९२॥  
 मङ्गल्य निमित्तादौ मङ्गलस्याभिधेयत् ।  
 मलिकासमगधे च दक्षिण तु स्यानपुसकम् ॥४ ९३॥  
 तथा सर्वौषधिस्नाने ना तु बिल्वमसूरयो ।  
 अश्वत्थ त्रायमाणाया वचाया तु स्त्रियां मता ॥४ ९४॥  
 कालागुरुविशेषे च मलिकारये च सौरभे ।  
 रोचनाशम्यध पुष्पीमसीशुक्लवचास्वपि ॥४ ९५॥  
 रीठाकरञ्जे जीरे च नारिकेलकपिथयो ।  
 मङ्गल्या गिरिजाया च चीडायामृद्विभेषजे ॥४ ९६॥  
 दूर्वाहरिद्राजीवतीमाषपर्णीप्रियङ्गुषु ।  
 मञ्जरी तिलकद्रुमुक्तयोव लरौ द्वयो ॥४ ९ ॥  
 मञ्जुषोषाऽप्सरोभेद यौगिके तु भवेत्त्रिषु ।  
 मञ्जुनाशी तु शच्या स्त्री मञ्जनाशस्त्रियौगिके ॥४ ९८॥  
 मञ्जुलो जलरङ्गारयखगे द्वे त्रि तु सुन्दरे ।  
 मञ्जुल तु मत क्लीब निकुञ्जे च जलाञ्जले ॥४ ९९॥  
 जलाञ्चल स्वतोवारिनिर्गमे शैबलेऽपि च ।  
 मञ्जूषा स्यात्पुटे तद्वपेटायामपि च स्त्रियाम् ॥४१ ॥  
 मटची करकायां स्याच्छलभे कस्यचि मते ।  
 मठरस्त्वभिभदे ना मद्यव वलसे स्मृत ॥४१ १॥  
 मठर दहन्यतितराद्रवीभूते नपुसकम् ।  
 त्रि तु कण्ठगते प्राणे कृमिजात्यतरे द्वयो ॥४१ २॥  
 मङ्गक वाद्यभेद च गुप्टी स्याफलकस्य च ।  
 मणि स्त्रीपुसयो रत्ने मणिबन्धेऽप्यलिङ्गरे ॥४१ ३॥

अजादिकण्ठप्रभवे स्तनाकारे ऽ वस्तुनि ।  
 काष्ठलोहादिनिष्पाद्यगुलिकायामपीष्यते ॥४१ ४॥  
 गोलमात्रे गुह्यमध्यगुले शेफाग्रकेऽपि च ।  
 घण्टाया मणतौ त्वेष धातो गुप्त मणि स्मृत ॥४१ ५॥  
 कुण्डले तीर्थभद्र च स्त्रिया स्यामणिकणिका ।  
 मणिच्छिद्रा तु भदायामृषभारयौषधावपि ॥४१ ६॥  
 मणिब धो मणेर्ब ध स धौ पाणिग्रकोष्ठया ।  
 मणिमाला स्त्रिया हारे तथा द तक्षता तरे ॥४१ ७॥  
 मणिसोपानश दोष्य सोपाने मणिनिर्मिते ।  
 चादुकार इति ख्यातेऽप्येकवल्या समे कृते ॥४१ ८॥  
 सौवर्णगुडकैर्विद्यादलङ्कारा तरेऽपि तम् ।  
 मणीच मौक्तिके पुष्पे चाग्रहस्तेऽपि कीर्तितम् ॥४१ ९॥  
 मण्ड सवरसाग्र स्यादस्त्री म डा तु नृस्त्रियो ।  
 मण्डने किरणे तु स्यान्मण्डो मण्डी तु सा स्त्रियाम् ॥४११ ॥  
 या (ग्वा)गुल्यां पञ्चमाषे तूमाने मण्ड नपुसकम् ।  
 मण्डन भूषणे क्लीब न ना भूषिकृतौ भवेत् ॥४१११॥  
 मण्डनालङ्कारिण्यौ तु वाच्यव मण्डनो मत ।  
 मण्डपस्त्रिषु मण्डस्य पिबेऽथाऽस्त्रीजनाश्रये ॥४११ ॥  
 मण्डय तस्तु मुकुरेऽप्योदनेऽपि पुमा मत ।  
 अथ प्रसाधके वित्तपालेऽप्यर्थमये त्रिषु ॥४११३॥  
 तत्रापि मण्डयतीति स्त्रीत्व रूप प्रकीर्तितम् ।  
 मण्डली त्र्युपसर्ग्ये च बिम्बे कुष्ठरुजातरे ॥४११४॥  
 समूहमात्रे ग्रामौघे देशे द्वादशराजके ।  
 युग्मे च कुक्कुरे त्वेष कीर्तितो मण्डलो द्वयो ॥४११५॥  
 क्लीब मण्डलक बिम्बे कुष्ठभेद रुजान्तरे ।  
 मण्डलाग्रस्तु खड्गऽप्यन्वर्थे खड्गान्तरेऽपि ना ॥४११६॥  
 मण्डली तु द्वयो सर्पजातिभेदेषु केषुचित् ।  
 षड्विंशतौ मण्डलवदर्थे ना तस्त्रिषु स्मृत ॥४११७॥

मण्डूक पिकभेदे च भेके स्त्रीपुंसयोर्मत ।  
 अथोपरिष्ठादारभ्य तुर्यभागे स्त्रियामियम् ॥४११८॥  
 गजापराडघर्मण्डूकी कृतस्य दशधा मता ॥  
 मण्डूकपर्णामपि च लाङ्गलावयवातरे ॥४११९॥  
 पुरदुर्गबहिर्भूमिकृतयन्त्रातरे तु ना ।  
 मण्डूककण्डुदुकेऽपि स्यात्तथा नागातरेऽपि च ॥४१२०॥  
 रत्नधातरे त्वेतमण्डूक स्यान्नपुंसकम् ।  
 मण्डूकपर्णी भण्डीरीवया स्त्री परिकीर्तिता ॥४१२१॥  
 मण्डूकपणस्तु पुमाण्डुण्डुवृक्षे प्रकीर्त्तित ।  
 मण्डोदक चित्तराग क्लीबमातपणेऽपि च ॥४१२२॥  
 मत तु वाञ्छते ज्ञायमाने च त्रिषु कीर्त्तितम् ।  
 अथ क्लीब मत ज्ञाने स्यादाकूतेच्छयोरपि ॥४१२३॥  
 मतिबुद्धावपि स्त्री स्यादिच्छाया च तथा मता ।  
 म कुणो निर्विषाणेभे निश्मश्रुपुरुषेऽपि च ॥४१२४॥  
 उद्देशे नारिकेले च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 मत्तः क्षीवे च हृष्टात्र क्लीब तु मदकर्मणि ॥४१२५॥  
 मत्तवारणमुक्त क्ली नियुद्देश्याश्रयेऽपि च ।  
 अथ मत्तगजे पुंसि मत्तवारण इष्यते ॥४१२६॥  
 क्लीब प्रासादवीथीना कुल्यवृक्षवृतावपि ।  
 मत्स्य क्षेत्रस्य कृष्टस्य क्ली समीकृतिसाधने ॥४१२७॥  
 अथ मत्स्यो मत सार्धो मतस्याप्यभिधेयवत् ।  
 मत्सरोऽयश्चमद्वेष लोमे कोपे तथा क्रतो ॥४१२८॥  
 सोमाख्ये साधने चैव नान्द्रयेऽपि पुमा मत ।  
 कृपणे त्वयसम्पत्तरसोदरि तथा त्रिषु ॥४१२९॥  
 मत्सरा तु स्त्रियामेषा मक्षिकार्या प्रकीर्त्तिता ।  
 मत्सरी त्रिकदर्याढ्ये परसम्पदसोदरि ॥४१३०॥

१ मण्डूक स्यात्पुरतले अस्य भेके पिकान्तरे ।

भाग्या स्त्रीत्वञ्च स्त्रीरण्या मण्डूकी कीर्त्तिता तथा ॥

मत्स्यो मीने द्वयोर्मत्स्या नीवृद्धेद नृभूमनि ।  
 तद्राजे तु पुमा-मत्स्यो मीनराशौ तथा मत ॥४१३१॥  
 मत्स्यराड मकरे द्व स्याद्विराडारये नृपे पुमान् ।  
 मत्स्याक्षी तु स्त्रिया ब्राह्मीसङ्गानूपतृणा-तरे ॥४१३२॥  
 मत्स्याक्षस्तु पुमाञ्चाकस्तम्बे पत्तरसङ्गक ।  
 मथित तु क्लीबलिङ्ग निजले गोरसे कृते ॥४१३३॥  
 त्रिस्तु मथतिमथ्नातिकमभूतेषु वस्तुषु ।  
 क्लीब निर्मलघोले स्यात्त्रिष्वालोडितघृष्टयो ॥४१३४॥  
 मदो रेतसि गर्वे च हर्षे ग-धे पुमास्तथा ।  
 गजदानजले मेढप्रवर्त्तिनि विशपत ॥४१३५॥  
 कस्तूर्याञ्चाथ मत्तावस्थाया स्त्री रे मदी मता ।  
 मत्तनागे मदकलस्त्रिर्मदायक्तवाचि च ॥४१३६॥  
 मदनो ना स्मरे पिण्डीतकद्रौ वनकोद्रे ।  
 धुर्धूरे कुरवे चैव मधूच्छिष्टवस-तयो ॥४१३७॥  
 कस्तूरिकामृगाण्डे तु मद्ये च मदनी स्त्रियाम् ।  
 प्रसवे तृक्तवृक्षाणां मदन स्यान्नपुसकम् ॥४१३८॥  
 माद्यत्यर्थेऽप मदना त्वना मदयते कृतौ ।  
 सारिकाया तु मदनशलाका परिकीर्त्तिता ॥४१३९॥  
 अपि चैषा मता स्त्रीत्वे कामोद्दीपकमषजे ।  
 मदमत्तस्तु धुर्धूरे न स्त्री ना तु पुरे मत ॥४१४॥  
 अथ मत्त मदेन स्यामदमत्तोऽभिधेयवत् ।  
 मद्यन्ती मलिकाया मद्यन्तस्त्रि मादके ॥४१४१॥  
 मदयितुस्तु समदे पुमा-मद्ये तु नप्स्यत ।  
 मदारो हस्तिनि द्वे स्यात्त्रिषु बलसधूत्तेयो ॥४१४२॥  
 मदोत्कटो द्वयो पारावतनामनि पक्षिणि ।  
 मदोत्कटा चैत्ररथनाम्नि याऽस्ति शिवालये ॥४१४३॥  
 तस्यां शिवायां त्रिस्त्वेष मदेनोद्धत इष्यते ।  
 मद्गुर्ध्वे जलकाके च निष्ठया च वरुटीभवे ॥४१४४॥

शालेयारये शीतशिवे स्त्रिया मधुरिका मता ।  
 मधुवाक्कोकिले द्व स्यात्प्रियवाचि तु भेद्यवत् ॥४११॥  
 मधुप्रत श्वेतगुञ्जायां फलाध्यक्षके तु ना ।  
 मधुसूदन उक्तो द्व भृङ्गे ना वनमालिनि ॥४१६ ॥  
 मधूल पुंसि गिरिजे मधूके मधुरे तथा ।  
 त्रि तु तद्वत्यथ मधौ मधूलसारघादिके ॥४१६१॥  
 मधूलकस्तु गिरिजे मधूकारयतरौ पुमान् ।  
 मधूकपुष्पविहितसुरायां स्त्री मधूलिका ॥४१६२॥  
 मूर्वायामपि च प्रोक्ता स्याद्यष्टिमनुकेऽपि च ।  
 मध्य दशगुणे सरयातरे क्लीब समुद्रत ॥४१६३॥  
 वस्तुद्वयस्यांतराले छ दोभेदेऽपि कीर्तितम् ।  
 त्रि तु याय्येवलग्नारयकायाङ्गे तु नृशण्डयो ॥४१६४॥  
 हिमोत्सर्गाय सूर्यस्य रश्मीना यच्छतत्रयम् ।  
 तत्रैकत्र शते हादिन्यारयेषु रविरश्मिषु ॥४२६५॥  
 स्त्रियां मध्या भूमनि स्युर्मध्या स्त्री नायिकान्तरे ।  
 मध्यमोऽस्त्र्यवलगने ना मध्यदेशेश्वरे नृपे ॥४१६६॥  
 षडजादीनां खराणा च सप्तानां क्वचिदिष्यते ।  
 त्रि तु मध्यभवे स्त्री तु मध्यमा मध्यमाङ्गुलौ ॥४१६७॥  
 स्त्रिया च दृष्टरजसि कर्णिकाया च कीर्तिता ।  
 मनश्चित्ते मनीषायामपि च क्लीबमिष्यते ॥४१६८॥  
 मनागल्ये च मन्दे चाप्ययय परिकीर्तितम् ।  
 मनाका तु करिण्या च कामिण्यां स्त्रीत्व इष्यते ॥४१६९॥  
 मनुस्तु पुंसि मन्त्रे स्यात्पूर्वे च क्षत्रियान्तरे ।  
 स्त्रियां तु तस्य भार्यायां मनायी च मनाव्यपि ॥४१७॥  
 मनोजवाऽग्निजिह्वानां सप्तानां क्वचिदिष्यते ।  
 मनोजवो द्वयोरेषोऽपत्ये स्यात्पितृधर्मिणि ॥४११॥

१ पुमांस्वरं मध्यदेशेऽप्यवलगने तु न क्रियाम् ।

स्त्रियां दृष्टरजो नार्या कर्णिकाङ्गकिमव्ययो ॥



मनोरथोऽभिलाषेऽपि वाञ्छितार्थेऽपि कीर्त्तित ।  
 मनोहरा तु पिप्पल्यां स्याममोहारिणि त्रिषु ॥४१७२॥  
 मन्तु शोकेऽपराधे ना वैमनस्ये प्रजापतौ ।  
 प्रियवदे तु विज्ञे च म तु स्यादभिधेयवत् ॥४१७३॥  
 मन्ता प्रजापतौ नाथ विद्वज्ज्ञात्रेष्टषु त्रिषु ।  
 मन्त्र ऋग्यजुरादौ च तथा स्याद्गूढभाषणे ॥४१७४॥  
 पुमान्मन्त्रस्समुद्दिष्टो देवादीनां च साधने ।  
 मन्त्रज्ञस्तु पुमांश्चारे त्रि तु स्यामन्त्रवादिनि ॥४१ ५॥  
 मन्त्री धीसचिवे राज्ञ पुंसि मन्त्रवति त्रिषु ।  
 मन्थो मन्थनदण्डे च मन्थने च पुमान्मतः ॥४१ ६॥  
 दिवाकरेऽपि च तथा द्रवसिक्तेषु सक्तषु ।  
 मन्थरो मन्दगे वक्त्रे पृथौ मन्दे त्रि सूचके ॥४१ ७॥  
 ना तु बाधे बले क्रोपे मन्थदण्डेऽथ मन्थरम् ।  
 कुसुम्यां मन्थरा तु स्त्री कैकेय्याश्चेटिकातरे ॥४१ ८॥  
 मन्थी तु भास्करे राहौ च द्रेऽपि च पुमांस्तथा ।  
 गृह्णारयसोमपात्राणामेकस्मिन् यज्ञकारिणाम् ॥४१ ९॥  
 मन्द शनौ ना त्रिषु तु स्वपाज्ञापदुरोगिषु ॥  
 निर्भाग्ये च कनिष्ठे च मन्दजाते तु दक्षिणप ॥४१८ ॥  
 अथ मन्दो द्वयोरेष गजमन्दे प्रकीर्त्तित ।  
 मन्दन तु स्तुतौ मोदे गतौ स्वप्ने मदेऽपि च ॥४१८१॥  
 मन्दरस्तु पुमान्मन्थशैले मन्दारपादपे ।  
 वाच्यवद्वहले मन्दे मन्दर परिकीर्त्तित ॥४१८२॥  
 त्रिषु मन्दविसर्पी स्याच्छनकैः सृप्तिशीलके ।  
 शिरःक्रिमौ च यूकारव्ये स्त्रिया मन्दविसर्पिणी ॥४१८३॥  
 मन्दसानो द्वयोर्हसे ना जीवार्के दुवह्निषु ।  
 मन्दाकिनी स्यादाकाशगङ्गायामापगान्तरे ॥४१८४॥

१ मन्दो तीक्ष्णे च मूर्खे च स्वरे चाभा यरोगिणो ।

अल्पे च त्रिषु पुंसि स्यादक्षिजात्यन्तरे शनौ ॥

मन्दाक्षो मन्ददृष्टौ च तथा मन्दद्विषे त्रिषु ।  
नपुसकतु म दाक्ष लज्जाया परिकीर्तितम् ॥४१८५॥  
मन्दारस्तु पुमान्दववृक्षभदेऽकनाम्नि च ।  
गुल्मे स्यात्पारिभद्रारयवृक्षतद्भेदयोरपि ॥४१८६॥  
अथारविन्दे मन्दारमुक्ताद्भुप्रसवेपि च ।  
मन्दिर तु पुरे गहे क्लीबमधौ तु मन्दिर ॥४१८७॥  
मन्दुरा वाजिशालाया शयनीयाथवस्तुनि ।  
मन्द्र स्वराणां सप्ताना षष्ठ ना सामवर्तिनाम् ॥४१८८॥  
मन्द्रो गम्भीरशब्दे त्रिर्म द्रा वाचि स्त्रिया मता ।  
मन्मथ कामचिन्तायां कपित्थऽपि स्मरे प्रमान् ॥४१८९॥  
मन्मथ तु कपित्थस्य प्रसवे क्लीबमिष्यते ।  
मन्यु कृपारुटशुग्दन्ययज्ञ ना धीमति त्रिषु ॥४१९०॥  
मय प्रक्षेपणे दैववद्धकौ पुसि हिंसने ।  
मया स्त्रीवे चिकित्सायां द्वयोरश्वोष्ट्रयोर्मयी ॥४१९१॥  
मयटस्तृणहर्म्येऽपि प्रासादेऽपि पुमान्त ।  
मयु पुमा स्यात्प्रक्षेपेऽथ द्वयो किनरे मृग ॥४१९२॥  
मयूख किरणे न स्त्री रथाऽक्षे तु पुमानयम् ।  
वालादीप्योश्च शङ्कौ च मयूख परिकीर्तित ॥४१९३॥  
अग्निभेदेऽपि दीप्तौ तु मयूखाऽपि स्त्रियां क्वचित् ।  
मयूरो बहिणे द्वे नाऽपामार्गे तुलसीमिदि ॥४१९४॥  
अपपत्रसुग धौ च स्यान्मयूरशिखौषधे ।  
कालमाना तरे नृत्यगतिभित्कविभेदयो ॥४१९५॥  
अथ तुत्थाञ्जने क्लीब मयूरञ्चासवान्तरे ।  
क्वचिद्द्वयो कुक्कुटेऽथ मयूर्यप्यौषधातरे ॥४१९६॥  
मयूरक सुगधौ मञ्जीरकारये फणिजके ।  
अपामार्गेऽप्यथ मयूरकन्तुत्थाञ्जने मतम् ॥४१९७॥  
मयूरचूड स्त्रीत्वे तु स्यामयूरशिखौषधौ ।  
मरो मृत्यौ मर्त्यलोके नारकेषु त्वनी नृभू ॥४१९८॥

मरका जनमार्या नृ जातिभेदे पुनर्नृभू ।  
 मरतोऽग्नौ पुमाञ्जन्तौ द्वयोर्मरत इष्यते ॥४१९९॥  
 मरणं तु मृतौ स्थानेऽप्यष्टमे गरलातर ।  
 मरायो मृत एकाह ऋतुभेदकुसलयो ॥४२ ॥  
 नपुसक मराय स्यादुभयो सामभदयो ।  
 अग्नि नरो दीधतिभिरित्यस्यामृचि गीतयो ॥४२ १॥  
 मरायी घातके दीप्ते कैश्चि सञ्ज्ञातरे स्मृत ।  
 मराल पुसि वर्णेऽपपीतरक्त त्रि तद्वति ॥४२ २॥  
 मराल कज्जले जामे मेघे दाडिमकुञ्जके ।  
 मृदौ शुभे विशालेऽथ द्वे तु हसाश्वहस्तिषु ॥४२ ३॥  
 मरिचस्तु मरीचेऽपि कतके तुलसीभिदि ।  
 मरिच तु मरीचस्य फले कक्कोलकेऽपि च ॥४२ ४॥  
 मरीचौ च मरीच तु मरिचस्य फले मतम् ।  
 मरीचिर्मृगतृष्णाया किरणे च द्वयोर्मत ॥४२ ५॥  
 अष्टके त्रसरेणूना लिक्षारयपरिमाणके ।  
 ना तु सप्तर्षिभेदेऽपि कृपणे तु त्रिषु स्मृत ॥४२ ६॥  
 मरीचिका स्त्री लिक्षारये त्रसरेणुभिरष्टभि ।  
 समिते मानभेदेऽपि मृगतृष्णाख्यतेजसि ॥४२ ॥  
 मरीचिकस्तु पुलिङ्गो लोकभेदे प्रकीर्तित ।  
 मरीचिगर्भो लोकेऽपि हरिवशादिवर्णिते ॥४२ ८॥  
 नृभूमिन् दाक्षसावर्णिमवतरसुरे वपि ।  
 मरीचिपत्निर्योगार्थे किरणषु नृभूमनि ॥४ ९॥  
 मरुस्तु निजले देशे शैले चेक्ष्वाकुवशजे ।  
 पितामहेऽम्बरीषस्य हर्यश्वतनयेऽपि च ॥४२१ ॥  
 सोमवश्येऽथ पुभूमिन् स्युर्दाशेरकनीष्वति ।  
 तन्निवासिष्वपि तथा द्वयोस्तु हरिणे मरु ॥४२११॥

क्वाप्याद्भदतरे पुसि स्यान्निरम्बुपवासके ।  
 वसुभेदे तथा दंत्यभेदे चापि मरुर्मत ॥४२८॥  
 मरुस्तु मयूरेऽपि हरिणऽपि द्वयोर्मत ।  
 मरुजा तु स्त्रियामुच्चमृदुपाण्डुरोमिका ॥४२९॥  
 रोमराजिमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसमिता ।  
 इत्युक्त मृगभेदे स्यादथ त्रिमरुसम्भवे ॥४३०॥  
 नखात्यगधखदिरभिदोस्त्री त्विद्रवारुणी ।  
 मरुजो हसभेदे द्वे श्वापदेऽप्यथ नञ्जले ॥४३१॥  
 मरुण्डोच्चललाटा स्त्री नृभूमि तु जनान्तरे ।  
 मरुका पवने शैलशिखरे चामरातरे ॥४३२॥  
 बृहद्रथ साध्यभेदे स्यात्तथैवोद्भिदतरे ।  
 मरुदेशे च रूपे चत्विर्जि स्वर्णे तु नप्समृतम् ॥४३३॥  
 द्वे देवमात्र स्पृक्कायां स्त्री क्लीब ग्रन्थिपर्णके ।  
 मरुतस्तु सुरे द्वे स्याद्वायुपाटलयो पुमान् ॥४३४॥  
 मरुतो नृपभेदेऽपि क्वचिद्वायौ प्रकीर्त्तित ।  
 मरुत्पुत्रस्य पर्यायामीमेऽपि च हनूमति ॥४३५॥  
 मरुत्वावा मरुत्मान् वा मेघे ब्रह्मनुमत्सु च ।  
 मरुत्सखोऽगनाविद्वे च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४३६॥  
 मरुद्वद्वो यागपात्रमित्सामाशभिदोर्हरौ ।  
 मरुद्ववा ताम्रमूलाकार्पास्यो परिकीर्त्तिता ॥४३७॥  
 मरुद्रथोऽश्वे देवाना स्यन्दने च प्रकीर्त्तित ।  
 मरुद्वघा नदीभेदे मरुद्वर्भिनि तु त्रिषु ॥४३८॥  
 मरुद्वहस्तु धूमेऽपि तथाऽग्नौ च पुमान्मत ।  
 मरुमाला हि रक्तेऽपि स्पृक्कायां च प्रकीर्त्तिता ॥४३९॥

१ मरुस्तु नखाग्रे गन्धर्वव्ये खदिरात्मरे ।

२ मरुद्वयोर्येवमात्रे स्पृक्कायां तु मरुत्स्त्रिवाक् ।

मरुत्वेने समीरे ना ग्रन्थिपर्णे नपुंसकम् ॥

३ भवे मरुवक पुसि मदनप्रौ फणिज्जके ।

भवेन्मरुबक पुमि मदनद्रौ फणिजके ।  
 राहौ भयानके तु त्रि द्वयो र्याघ्रे बकेऽपि च ॥४२२४॥  
 महे द्रवारुण्यायासभेदयोर्मरुसम्भवा ।  
 अथ मूलकभेदेऽय पुमा स्या मरुसम्भव ॥४२२५॥  
 मरुक केकिहरिणभेकेषु च पुमानयम् ।  
 मर्कोऽग्राकमरुवृद्धो दमनोदेवदारुषु ॥४२२६॥  
 सूर्यापरागे शुक्रस्य पुत्रे बालग्रहा तरे ।  
 द्वयो सर्पेऽथ विघ्नस्य कर्त्तरि त्रिषु कीर्त्तित ॥४२२ ॥  
 प्राणवायावपि तथा मर्को यक्षा तरे क्वचित् ।  
 मर्कटस्तु कपौ द्वे स्याल्लूतायां चाथ नस्त्रियो ॥४२२८॥  
 कपाटबन्धनार्थाया सूचेर्विष्कम्भयत्रके ।  
 मर्कट मर्कटी चेति स्यास्त्रिया त्वेव मर्कटी ॥४२२९॥  
 कपिकच्छ्वारयवत्स्याञ्च करञ्जद्रुमभिद्यथ ।  
 तुरुष्कनिर्यासे वयारयद्रुद्वेपि च मर्कट ॥४२३ ॥  
 विषभेदेऽपि च स्त्रीणा पुमा स्यात्करणा तरे ।  
 धान्यभदे मर्कटको द्वे तु मस्या तरे मत ॥४२३१॥  
 मर्करो भृङ्गराजे ना मर्करा वक्ष्ययोषिति ।  
 क्षितगर्भे च गर्त्ते च भाजनेऽपि स्त्रिया मता ॥४२३२॥  
 मर्जु समाजनीशुद्धयोनद्या तीरे नदीतटे ।  
 शिलायां च स्त्रियामुक्ता रजके तु द्वयोर्मता ॥४२३३॥  
 पुमांस्तु पीठमर्देऽपि स्त्रीधर्मिपुरुषे क्वचित् ।  
 मर्त्तु स्त्वृष्य तरे मर्त्यलोके ना मनुजे द्वयो ॥४२३४॥  
 मर्त्त्यो मरणार्हे त्रिरवश्यमरण तु नप ।  
 मर्त्यो द्वयोर्मनुष्ये भगवन्मरणधर्मिणि ॥४२३५॥  
 मर्त्यलोके पुमान्मर्त्या मृत्यौ स्त्री क्ली पुन स्तनौ ।  
 मर्दो ना मर्दने बाधे पीडाया त्रिस्तु मर्दके ॥४२३६॥  
 मदनी तु स्त्रिया योषपादरक्षार्थयत्रके ।  
 युचि स्यान्मर्दन प्राय उत्तरस्थ प्रबाधके ॥४२३ ॥

१ मरुज्जवा वासभेदे तथैव खविरान्तरे ।

मरुज्जबस्तु [पुल्लिङ्ग भेदे स्यान्मूलकस्य च] ॥

नपुसक तु मृदनातेरर्थे मदनमिष्यते ।  
 स्यात्प्रसाधनसवाहनादितद्वाधनादि च ॥४ ३८॥  
 मर्दिनी गीतभेदे स्याद्योगार्थे तूत्तरस्त्रिषु ।  
 मर्म व्रणाहस्थानेऽङ्गसधौ गोप्ये नपुसकम् ॥७ ३९॥  
 मर्मरो वस्त्रपर्णादिस्वनिते त्रिस्तु तद्वति ।  
 ममरा भक्ष्यभेदे स्त्री मोडी (ही) सङ्ग्रेऽथ ममरी ॥४ ४ ॥  
 श्रुतिशङ्कुलितानाडीभिद्यपि स्त्री देवदारुणि ।  
 ममरीकोऽनले शूरे ना द्व श्येनेऽधमे त्रिषु ॥४२४८॥  
 मर्यो म र्येपि तरुणे वरणीयेऽव उष्ट्रके ।  
 मर्या तु चिह्ने सीमातेऽपि च स्त्रीत्वे प्रकीर्तिता ॥४२४२॥  
 मर्यादा स्त्री यवस्थासीमयो रक्षाङ्गुलीयके ।  
 क्वाप्यथर्वेऽपादष्टेऽथ चायनिर्णेतारि त्रिषु ॥४२४३॥  
 अर्वाचीनस्य वैदर्भ्याम्पत्या द्वातिथरपि ।  
 विदेहजायां भार्याया मर्यादा नाम दृश्यते ॥४२४४॥  
 मर्श क्षुताभिजनने चोपदेशे पुमानयम ।  
 मर्शन घर्षणे स्पर्शे स्याद्धारयाने परीक्षणे ॥४२४५॥  
 मर्षित क्ली क्षमाया तद्युक्त स्यान्मर्षितर्यपि ।  
 मल पापे च वातादावस्त्रिया किङ्कविष्टयो ॥४२४६॥  
 मधुद्रफेने कपूरे क्ली तु स्यात्कास्यलोहयो ।  
 वृश्चिकस्य च शूकेपि तथा चर्मणि शोधिते ॥४ ४७॥  
 मला तु भूम्यामया स्त्री त्रि स्यान्मलिनपापिनो ।  
 द्वयोस्तु मालुकीशूद्रसम्भवे वर्णसङ्करे ॥४२४८॥  
 मलघ्न शामलेमूले मलघ्नी नागमर्दिनी ।  
 तथाय स्यात्त्रिलिङ्गस्तु मलघ्नम्मलह तरि ॥४ ४९॥  
 मलज तु मत पूये नृभूमलदजातिषु ।  
 मलदो माषधान्ये ना मलदास्तु नृभूमनि ॥४२५ ॥  
 स्थौराख्यनीष्टुद्धेदे स्युस्त्रिष्वय मलदातरि ।  
 मलन पटवासे ना मलन मदने नपि ॥४२५१॥

मलपु कली नले शृङ्गया त्रिस्तु स्यामलमाजके ।  
 काकोदुम्बरिकाक्षीरविदार्योर्मलपु स्त्रियाम् ॥४२५२॥  
 मलयो देश आरामे शैलाशे पवतातरे ।  
 उपद्वीपान्तरे नन्दनोद्यानोद्यानयो क्वचित् ॥४ ५३॥  
 तालभेदेपि न स्त्री स्यात् त्रिष्टुताया तु योषिति ।  
 च दने क्ली मलयज राहौ मलयज पुमान् ॥४२५४॥  
 मलवान्मलिने त्रि सात्तवायां मलवत्यसौ ।  
 स्त्रिया तु मलवद्वासा उदक्याया त्रियौगिके ॥४ ५५॥  
 मलहारक इयेष मलहत्तरि वाच्यवत् ।  
 गजोपचारकुशले पुसि स्यामलहारक ॥४२५६॥  
 मलाका स्वैरिणीदूतीकरेणुष्विष्यते स्त्रियाम् ।  
 मलिना मलिनी पुष्पवत्यां स्त्री मलिन नपि ॥४ ५॥  
 पापटङ्गणतुच्छेऽस्तु त्रिस्तु कृष्णे मलीमसे ।  
 मलिनस्तु पुमास्तसुपुत्रे पाशुपते यतो ॥४२५८॥  
 क्ररे त्रिर्ना तु मलिनमुखोऽग्नौ प्रतमिद्यपि ।  
 गोलाङ्गूले तु मलिनमुख स्त्रीपुसयोर्मत ॥४२५९॥  
 मलिम्लुचोऽयश्च यज्ञे गृहस्थे पावकेऽपि च ।  
 अधिमासेऽपि पुसि स्याचौरे तु त्रिष्वथ स्मृत ॥४२६॥  
 मशके शावके चापि चातके रजके द्वयो ।  
 मलिष्ठो मलिने त्रि स्त्री मलिष्ठा सात्तवस्त्रियाम् ॥४२६१॥  
 मलीकन्त्वञ्जने क्लीबम्मलीक पुसि विद्विषि ।  
 मलीमसस्तु मलिने पुष्पकाशीशलोहयो ॥४२६२॥  
 मल्लुको जठरे पुसि द्वयोस्तु स्याचतुष्पदे ।  
 मल्लक कृमिभेदे द्व सरोजशङ्कुनौ खगे ॥४२६३॥

१ ना लोहे पु पकाशीका मलिने त्रिमलीमस ।

२ मल्लक पक्षिमात्रे च सरोजशङ्कुनौ द्वयो ।

मल्लो योधे बलिष्ठ च श्रेष्ठे स्यादुत्तरस्थित ।  
स्या नारायणराजेऽर्हत्येकविंशे भविष्यति ॥४ ६४॥  
हवि शेषासुरभिदोहनौ पात्रातरे पुन ।  
मल्लो मल्ली कपाल्यारयमस्त्यभेदेऽप च द्वया ॥४ ६५॥  
प्रात्यपूर्वक्षत्रियाजे प्रात्याज्जाते द्वयोमत ।  
मल्लनाग पत्रवाहे वात्स्यायनसुरेभया ॥४ ६६॥  
मल्लरिस्तु पुमा कृष्णे शिवेऽपि परिकीर्तित ।  
मल्लकस्तु पुमान्दते नृभूमि तु जनातरे ॥४२६॥  
मल्ला तु प्रमदाया स्त्री मल्लिकाया तु मयपि ।  
मल्ला मल्लिश्च पीठे तु पत्रवल्लीविभूषणे ॥४२६८॥  
द्र तु पत्रपुटे पात्रे नारिकेलास्थिभाजने ।  
मल्लारो रागभेदेऽथ मल्लारी रागिणीभिदि ॥४२६९॥  
मल्लिस्त्री मस्त्यभेदेऽपि स्यात्कपालकरङ्गयो ।  
मल्लिकाया च मृत्पात्रेऽथासनेऽप्यथ मल्लतौ ॥४ ७॥  
धातावहत्यूनविंशेपि च मल्लि पुमा मत ।  
मल्लिको नृस्त्रियोर्दीपाधारे स्याद्द्वसभिद्यपि ॥४२ १॥  
मल्लिका भूपदीनाम्न्या पुष्पवल्या स्त्रिया मता ।  
मल्लिका तृणशूयेऽपि मीनमृत्पात्रभेदयो ॥४२ ॥  
मल्लिकाकुसुम पुंसि करुणारथे फलद्रुमे ।  
योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम् ॥४२ ३॥

१ सरोजशकनिं वेद् भगवाण्छाकटायन ।

मल्लो योधे बलिष्ठे च पात्रभेदे तु नृस्त्रियो ।

मल्लो मल्ली च मल्ली तु मल्लिकापीठयो स्त्रियाम् ॥

नस्त्रियोर्धारणे मल्लो मल्ला चेति द्वयो पुन ।

२ मल्लनागो भ्रमातङ्गे वात्स्यायनमुनावपि ।

३ मल्लिका मस्त्यभवे तु मल्लया कृष्णोभिदो स्त्रियाम् ।

मल्लिको हंसभिदीपाधारभाजनयोद्भयो ॥

मल्लिका भूपदीनामल्लिकावाद्या तरे स्त्रियाम् ।

मल्लिकस्तु पुमान् ॥

मल्लिस्तु मल्लतौ धातौ पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ।



मल्लिकाक्ष सितैर्नेत्रैरलक्षितेऽङ्गे शुनि द्वयो ।  
 हसे च चक्षुचरणमलिनैरुपलक्षिते ॥४२७४॥  
 मल्लिकाक्षी श्वेतचिह्नेत्रशु या क्वचिन्मता ।  
 मश श दपि कोपे ना मशके तु द्वयोर्मत ॥४२ ५॥  
 मशकस्त्वृषिभेदे ना चमरोगातरे द्वौ ।  
 शाकदीप्ये जनपदे द्वयोस्तु स्यामलिम्लुच ॥४२ ६॥  
 वस्त्रै कृते स्यान्मशकहरी मशकरुद्वये ।  
 मशक क्षिपते योयस्तत्र वाच्यवदिष्यत ॥४२ ॥  
 मसन हिंसने माने सामरायाश्च कीर्तितम् ।  
 मसारो नीलरने स्यात्तथा जनपदातरे ॥४२ ८॥  
 मसि कृपणतृष्णाया शस्या मण्याश्च काण्डके ।  
 मसिक सर्पविवरे शेफाली मसिका स्मृता ॥४ ९॥  
 मसूर पुसि मङ्गयधाये चर्मासनातरे ।  
 मसूरी ब्रीहिकङ्कारयधान्ये स्त्री मारिवेद्ययो ॥४२८ ॥  
 मसूरो मसुरी चापि हस्वमध्यावपि स्मृतौ ।  
 मसूरी पापयोगे स्यादुपधाने पुन क्षुमान् ॥४२८१॥  
 मसृणी तु स्त्रियामेषा क्षुमाधाये प्रकर्त्तिता ।  
 अथाप्यककशे स्निग्धे मसृणो वा यवन्मत ॥४२८२॥  
 मस्त माने त्रिषु क्लीब मस्तके देवदारुणि ।  
 मस्तकोऽङ्घ्री शिरःपूर्वभागमध्ये शिरस्यपि ॥४२८३॥  
 शिवस्य रूपभेदेऽपि तरुगिर्यादिकस्य च ।  
 मस्तिष्कोऽङ्घ्री शिरःस्नेहे तच्चिकित्साक्षमौषधे ॥४२८४॥  
 मस्तु स्त्रीपुंसयोश्चष्टौ पिण्डिताङ्गुलिरूपके ।  
 दधिमण्ड तु त मस्तु नपुंसकस्युदीरितम् ॥४२८५॥  
 दधिवारिण्यपि क्लीब प्रयुक्त मस्तु सुश्रुते ।  
 मस्तुलङ्ग शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥४२८६॥

१ मशकस्त्वृषिभेदे न द्वयोस्तु स्यामलिम्लुचे ।

२ मसूरो मसुरो वा ना वेद्याब्रीहिमभेदयो ॥

मह पुस्युत्सवे स्त्री तु मही वाचि गवि क्षितौ ।  
नदीभेदेऽप्यथ द्विवे द्यावाभूम्योर्मही इति ॥४८॥  
महद्राये च वृदे च जले चापि नपुसकम् ।  
त्रिवृहत्यपि पूज्यऽथ महर्लोके मतो न ना ॥४९॥  
महती तु त्रिवृहद्राया वीणाया नारदस्य च ।  
निशोऽन्तिमे त्रिभागे वा यामे वाऽज्ञातलिङ्गक ॥४९॥  
महत्तरी तु स्त्री राज्ञो वृद्धा या परिचारिका ।  
आशीस्वस्त्यनाभिज्ञा तस्या त्रिस्तु बृहत्तर ॥४९॥  
महो नपुसक सान्त जले तेजसि चोत्सवे ।  
महाकच्छस्तु पुसि स्यात्समुद्रे च प्रचेतसि ॥४९॥  
महाकन्द तु शुण्ठ्या क्ली लशुने त्वस्त्रिया मतम् ।  
महाकायो बृहद्देहे त्रिष्वथ स्याद्रजे द्वयो ॥४९॥  
महाकाल प्रमथकिपाकबाणासुरे शिवे ।  
महाग्रीवा द्वयोरुष वायवदीषकन्दरे ॥४९॥  
महाघोषोऽतिघोष ना क्लीब हृद्वे प्रकीर्तितम् ।  
अथ ककटभृङ्ग्या स्त्री महाघोषाऽभिधीयते ॥४९॥  
महाजाली स्त्रिया पीतघोषवल्लौ त्रि यौगिके ।  
महादष्टो द्वयोर्थाग्रे चित्राङ्गारये त्रि यौगिके ॥४९॥  
महादिवाकीर्त्यं सामभेदे त्रिषु तु यौगिके ।  
पावत्यामपि राज्ञश्चाभिषिक्ताया च योषिति ॥४९॥  
महाधन युधि स्वर्णे सिल्हे त्रिस्तु महाहके ।  
महानट शिवे पुसि योगार्थे तु यथायथम् ॥४९॥  
महानद्युत्कलनदीभेदे स्यात्फल्लुगङ्गयो ।  
ततो गयाप्रदेशे तु पूवतोऽस्ति महानदी ॥४९॥  
महानर्मा द्वयोर्वैश्याक्षत्रपुत्रे त्रि यौगिके ।  
महानस तु शकटे पाकस्थानेऽपि कीर्तितम् ॥४९॥  
महानादो द्वयो सिंहेभयोर्ना वर्षुकाम्बुदे ।  
महानीलो भृङ्गराजे मणिनागविशेषयो ॥४९॥

महापक्षस्त्रियोगार्थे द्व कारणद्वयपक्षिणि ।  
 महापक्षी तु धूके द्व यौगिके तु यथायथम् ॥४३ १॥  
 महापत्रस्तालवृक्षे योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ।  
 महापद्मो द्वयो षडवशतिदर्वीकरोरगा ॥४३ २॥  
 ये तेषामेकभेदे ना क्षाटे शोथारिनाम्नि च ।  
 क्लीब तु रक्तकमले महापद्म प्रकीर्तितम् ॥४३ ३॥  
 महाफला तु कूष्माण्डे महाजम्ब्वामपि स्त्रियाम् ।  
 महाबल सीसके तु बलाया तु महाबला ॥४३ ४॥  
 महाबलस्वतिबले वा यवत्परिकीर्तित ।  
 महाबुसा यवे चापि धाये हायनसञ्ज्ञके ॥४३ ५॥  
 महामात्र समृद्धे चामाये हस्तिपकाधिपे ।  
 महामुखो द्वयोनक्रे बृहद्रक्त्रे च वाच्यवत् ॥४३ ६॥  
 महामुनिस्तु रुद्राक्षेऽगस्त्ये चापि मह यवौ ।  
 अथ कुस्तुम्बुरुण्येत महामुनि नपुंसकम् ॥४३ ७॥  
 महामूय पद्मरागे ना महार्हे तु वाच्यवत् ।  
 महारजतमुद्दिष्ट शातकुम्भकुसुम्भयो ॥४३ ८॥  
 महारसा द्रोणपुष्पीनील्योषधयो स्त्रियां मता ।  
 महारसस्तु खर्जूरवृक्षे चक्षे तथा पुमान् ॥४३ ९॥  
 महाराज कररुहे कुबेरे च महानृपे ।  
 महार्घस्त्रिर्महामूये द्व तु लावकपक्षिणि ॥४३ १०॥  
 महालयो धनिगृहभेदेऽपि परमामनि ।  
 तीर्थे विहारे चामायामाश्विनस्य प्रकीर्तित ॥४३ ११॥  
 महावीरो महादेवे पावके गरुडे पुमान् ।  
 सोमर्वशसमुद्भूते बृहद्रथसुते नृपे ॥४३ १२॥  
 वर्द्धमानजिने सोमवश्ये बाहद्रथौ नृपे ।  
 प्रवर्ग्यपात्रे सुभटे वीरे वज्रेऽप्यपत्रिषु ॥४३ १३॥  
 प्रवरे द्वे तु हसे च श्वेताश्वे च खगेऽपि च ।  
 यौगिकार्थे तु लिङ्गादि तकणीय यथायथम् ॥४३ १४॥

महावेग कपौ द्वे स्याद्रात्रयवत्तु महारये ।  
महाप्रत शिवे पुसि क्ली त्वेकाहमखान्तरे ॥४३१५॥  
अस्त्री प्रते स्यामहति त्रि तु स्याद्विपुलव्रते ।  
स्यान्महाशकुना घूक द्वयोरपि महाखगे ॥४३१६॥  
महाशङ्खो मानुषास्थिसरयाभेदालिकेषु च ।  
महाशको द्वयोर्मत्स्यभद एथालनामनि ॥४३१७॥  
देविकारये महाशल्का मातुलङ्गातरे स्त्रियाम् ।  
महाशिला महाग्राव्णि शस्त्रभद यदीशम् ॥४३१८॥  
शतघ्नी तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।  
अय कण्टकसञ्चना शतघ्न्येकमहाशिला ॥४३१९॥  
महाखेता नीलगिरिकर्ण्य स्त्रीत्वे प्रकीर्तिता ।  
तथा क्षीरविदार्या च कण्टकिप्रततीभिदि ॥४३२०॥  
पुण्डरीकप्रियाया च योगार्थे तु यथायथम् ।  
महासर्पो द्वयो षड्विंशतिदर्वीकरोरगा ॥४३२१॥  
ये तेषामेकभेदेऽथ क्ली ससर्पारयसामसु ।  
महासहा माषपर्ण्या स्तम्भे चाम्लानसङ्गके ॥४३२२॥  
महासेन कार्तिकेये महासैयपतावपि ।  
महिस्तु धरणौ स्त्रीत्वे महति त्वेष भेद्यवत् ॥४३२३॥  
महिन तु भवेद्रात्रय शय्यायाञ्च नपुंसकम् ।  
महिला तु फलिन्यां च स्त्रीत्वे योषित्यपीष्यते ॥४३२४॥  
महिषी त्वोषधीभेदेऽभिषिक्ताया नृपस्त्रियाम् ।  
सैरिभे तु द्वयोरेष महिष परिकीर्तित ॥४३२५॥  
मही भूमावपि स्त्रीत्वे तथा नद्यन्तरे मता ।  
महीपतिस्तु नृपतौ पुसि भव्यतरावपि ॥४३२६॥  
महेन्द्रस्तु भवेच्छैलविशेषेऽपि पुरन्दरे ।  
महेश्वरो महादेवे पुसि स्याद्गुल्गुलावपि ॥४३२७॥  
महेश्वरी तु स्त्री ब्रह्मरीतिसङ्गकलोहके ।  
पार्वत्याञ्च श्रिया चाथाऽधीश्वरे तु त्रिषु स्मृत ॥४३२८॥

महोपा तु त्रयोदश्या तिथावत्युग्रके त्रिषु ।  
 महोदया नना कायकुब्जारयनगरे मता ॥४३९॥  
 स्त्रीत्वे किञ्चित्प्रौढाया कयाया परिकीर्तिता ।  
 महोदरी नादेशीनाम्नि स्याद्युस्तकान्तरे ॥४३३॥  
 रावणस्य त्वमात्ये ना क्ली तूदररजातरे ।  
 महौषधतु लघुनातिविषाणुष्ठिषु स्मृतम् ॥४३३१॥  
 महति वौषधे न स्त्री महौषध उदीरित ।  
 अन्यस्मिञ्चैव लघुनादशस्वपि पलाण्डुषु ॥४३३२॥  
 मास स्यादाभिषे मांसी कक्लोलोजटयोर्मता ।  
 मा स्त्री शिवाश्रियोरयय त्वक् पे निवारण ॥४३३३॥  
 माकन्दोऽस्त्री रसाले स्त्री घात्रीनगरमेदया ।  
 माक्षिक चक्रसङ्ग स्याच्छैलधात्वतरे तथा ॥४३३४॥  
 सारधे मधुनि क्लीब मक्षिकायोगिनि त्रिषु ।  
 मागधी तु स्त्रिया यूथीपिप्पल्यो परिकीर्तिता ॥४३३५॥  
 द्वयोस्तु वैश्याद्विप्राया जाते मर्त्यातरेऽपि च ।  
 वैश्याश्चत्रियकयाया जाते च स्याच्च वदिनि ॥४३३६॥  
 पुमांस्तु मगधानां स्याद्राज्ञि जीरकजीवके ।  
 माघी स्त्री पूर्णिमाया स्या मघायुज्यथ तद्वति ॥४३३७॥  
 मासे माघस्त्रिस्तु मघानक्षत्रयुतकालजे ।  
 मान्यस्तु कुदवृक्षे स्यामाध्य तत्प्रसवे मतम् ॥४३३८॥  
 माघसाधौ तु माध्योऽसावभिधेयवदिष्यते ।  
 माचलो वदिचौरे च तथा स्याद् ग्राह्रोगयाः ॥४३३९॥  
 माठरस्तु पुमाव्यासे रवे स्यापारिपार्श्विके ।  
 माठि स्त्रिया स्यात् कवचे तरुपत्रसिरास्वपि ॥४३४०॥  
 माहि स्त्री पत्रपत्तौ च दैन्यस्यापि प्रकाशने ।  
 माणवस्तु पुमाहारमेदे षोडशयष्टिके ॥४३४१॥  
 द्वयोस्तु माणवो बाले तथा कुपुरुषेऽपि च ।  
 भवेन्माणवक पुंसि हारे षोडशयष्टिके ॥४३४२॥

द्वयोस्तु गङ्गपुरुषे बाले माणविका मता ।  
 माणिक्या गृहगोधाया माणिक्य रनसत्तमे ॥२३४३॥  
 मातङ्गस्तु द्वयोस्को हस्तान् शपचऽपि च ।  
 मातामहस्तु पित्रो स्यान्मातुर्मातामहीत्यपि ॥४३२४॥  
 मातामहास्तु मातु स्यु पूवजेषु नृभूमनि ।  
 माति स्त्रियामवच्छेदे तथा मानेऽपि कीर्त्तिता ॥४३४५॥  
 मातुल पुंसि धुपूरे मातुलारयद्रुमेऽपि च ।  
 मातुर्भातरि च स्त्री तु भार्याया तस्य मातुली ॥४३४६॥  
 द्वयोस्तु मालुधानारयसपभदेऽपि मातुल ।  
 मातुलानी कलाये स्याद्भङ्गाया मातुलास्त्रयाम् ॥४३४७॥  
 मातुलङ्गस्तु रुचकगुल्मेऽत्यम्लफले पुन ।  
 भेदेऽस्य मातुलङ्गी स्यादथ क्लीब फलेऽनयो ॥४३४८॥  
 मातोभाजननीगोषु वेपणीसरितोभ्रुवि ।  
 अकारादिकवर्णानामाम्नाये तारकासु च ॥४३४९॥  
 आश्वि यादिषु पौष्यारयपूर्णिमायामपि स्त्रियाम् ।  
 ब्राह्मणादिदेवीषु त्रिस्तु मात्री स्यान्मानकारिणि ॥४३५०॥  
 स्यान्मातरि स्त्रियां नित्य धातृकाकारणे स्वरे ।  
 मातु यस्त्रायते तत्र मात्र स्यादभिधेयवत् ॥४३५१॥  
 मात्रा कणविभूषाया वित्ते माने परिच्छेदे ।  
 अक्षरावयवे स्वप्ने क्लीब कात्स्न्येऽवधारणे ॥४३५२॥  
 माथस्तु मथने चापि मार्गे चापि पुमान्मत ।  
 माधवी ना वसन्ते वैशाखमासे हरावपि ॥४३५३॥  
 मध्वासवसमारये तु मद्यभेदे नृशण्डयो ।  
 अतिमुक्तलतायां तु सुरायामपि माधवी ॥४३५४॥

१ मातुलानी च भङ्गाय धान्ये स्या ।

२ मातुली ग्रीहिभिर्ममातुर्मात्रोश्च मदनश्रुमे ।

३ मात्रा धने प्रवृत्तौ च पर्वते कर्णभूषणे ।

हस्तोच्चारणकालेऽपि परिच्छेदे परिच्छेदे ।

एकदेशे थ मात्रन्तुत्तरं कात्स्न्ये वधारणे ।

जयत्यामपि कोशातक्यां दीर्घफलनामनि ।  
 शतपुण्यामपि मधुशकराया तथा स्त्रियाम् ॥४३५५॥  
 मधुपुत्रादिषु पुनर्माधवस्त्रिषु कीर्तित ।  
 माधुक मधुनि क्लीब पुराणे यौगिके त्रिषु ॥४३५६॥  
 माधुर षोडशेऽनौ यूपस्यारम्य मूलत ।  
 भवे सप्तदशारत्नेर्योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ॥४३५७॥  
 मान क्लीब परिछेदे हस्तादौ चापि हिंसने ।  
 लग्नाद्दशमराशौ च प्रक्षेपप्रणिदानयो ॥४३५८॥  
 आधारानतिरिक्तत्वं यदाधेयस्य सम्भव ।  
 तत्राथ मान पूजायां ज्ञाने चित्तोन्नतौ च ना ॥४३५९॥  
 स्त्रिया तु मानी कुडुबपरिमाणद्वये मता ।  
 मानवस्तु मनुष्ये द्वे मनुसम्बन्धिनि त्रिषु ॥४३६०॥  
 मानस तु मत चित्ते हिमवसरसामपि ।  
 एकस्मिंस्तोत्रभेदेऽपि यवनां त्रि तु यौगिके ॥४३६१॥  
 मानिनी तु स्त्रिया फ या मानी मानवति त्रिषु ।  
 मामक स्यान्मदीयार्थे त्रिषु पुंसि तु मातुले ॥४३६२॥  
 माया स्त्री शाम्बरीबुद्धयोर्विष्णोर्नवसु शक्तिषु ।  
 एकस्यां सारयतत्त्वे च प्रधानारयेऽथ स त्रिषु ॥४३६३॥  
 मायके यश्च मां याति तत्रापि परिकीर्त्तिता ।  
 मारस्तु मरणे कामे मृतावपि पुमां मत ॥४३६४॥  
 मारिर्मारी स्त्रियामुक्ते मद्धरीसङ्गके गदे ।  
 [कालरात्रौ] सर्वलोकतते मृत्यौ [सुरातरे] ॥४३६५॥  
 मारिर्मारयतौ धातौ पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 मारिषो जीवशाकेऽपि चार्ये नाट्योक्तिगोचरे ॥४३६६॥  
 दक्षमातरि तु स्त्रीत्वे मारिषा परिकीर्त्तिता ।  
 मारीचो रक्षसो भेदे कक्कोले याजकद्विजे ॥४३६७॥

१ माया स्यात्शाम्बरीबुद्धयोर्माय पीताम्बरे सुरे ।

२ मारी मारि स्त्रिया कालरात्रौ व्यापिमृतावपि ।

कश्यपेऽथ स्त्रियामुक्ता मारीची देवता तरे ।  
 मारुण्डोऽण्ड भुजङ्गाना मार्गे गोमयमण्डले ॥४३६॥  
 मारुतो हनुमद्भीमसेनवायुः पुमान् ।  
 पुराभिन्दुर्युवेत्यस्यामृचि गीते तु साम्नि नप ॥४३६९॥  
 मार्गो मृगमदे माष्टा मागशीर्षाऽध्वनोश्च ना ।  
 सौम्यगेऽथ द्वयोर्मागा प्रोक्ता मागणकर्मणि ॥४३७॥  
 मागणो याचके बाणऽपि च पुसि प्रकीर्तित ।  
 मागणा तु न नायाच्चाद्वेषयोरियमिष्यते ॥४३८॥  
 मागरस्तु द्वयोरायोगया जाते निषादत ।  
 कैवर्त्तेऽप्यथ मार्गस्य दातरि त्रिषु मागर ॥४३९॥  
 मागशीर्षं पूणिमायां मृगशीषयुजि स्त्रियाम् ।  
 पुमास्तु मासे तद्युक्त मागशीर्षं प्रकीर्तित ॥४३३॥  
 मार्जनोऽस्त्री स्नहगुण पुसि स्यालोभ्रशाखिनि ।  
 माजन माजना चेति माष्टा स्त्रीक्लीबयोर्भवेत् ॥४३४॥  
 मार्जारो द्वे विडालेऽगस्त्येऽङ्गुदद्रुमयोस्तु ना ।  
 मार्जारी चमराकारे कोद्रङ्गारये मृगान्तरे ॥४३५॥  
 कस्तूरिकामगाण्डेऽपि मार्जारी स्त्रीत्व इष्यते ।  
 मार्जारीय स्मृत शूद्रे विडाले कायशोधने ॥४३६॥  
 मार्जालीय पुमानङ्गशोधने धौतिदेशके ।  
 मार्जालीयस्तु मार्जारे मत स्त्रीपुसयोरयम् ॥४३७॥  
 मार्जित शोधिते त्रि स्याद्रसालायां तु मार्जिता ।  
 अपक्वतक्र सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥४३८॥  
 सजीरक रसाला स्यादिति तल्लक्षण विदुः ।  
 मार्त्ताण्डस्तु खगे चापि द्वयोर्दक्षिणि च स्मृत ॥४३९॥  
 रवौ तु पुसि मार्त्ताण्डमार्त्ताण्डौ परिकीर्त्तितौ ।  
 मालस्तु ग्रहतक्षेत्रभूतले त्रिषु कीर्त्तित ॥४३८॥

१ मारुतस्तु पुमान्वायौ भीमसेने हनुमति ।

पुराभिन्दुर्युवेत्यस्यामृचि गीते च साम्नि नप ॥



माला पृक्कासजोर्माल स्रुतीशूद्रोद्भवे द्वयो ।  
 तत्र माली जातिङ्गीषि मालस्तु स्यात्कठिञ्जरे ॥४३८१॥  
 पुलिङ्ग कालपण्यारयतुलस्यां धारणेऽप्यथ ।  
 क्ली दक्षिणातरद्वीपे मालमस्मा च भारतात् ॥४३८२॥  
 मालको धारके विज्ञैरभिधेयवदिष्यते ।  
 वनदुगनिवासे तु मालक खेटकाभिधे ॥४३८३॥  
 मालिका तु स्त्रिया पङ्क्तावाढ्यानां च गृहातरे ।  
 सप्तलासङ्गके पुष्पवल्लभेदेऽपि मालिका ॥४३८४॥  
 ग्रैवेयके पुष्पमाये पुत्रिकाहस्तिमलयो ।  
 मालकी तु स्त्रियां पु पवलीषु सकलास्वपि ॥४३८५॥  
 मालवा स्युजनपदज्वतिनाम्नि नृभूमनि ।  
 तनिवासिब्रते तु द्व मर्त्यजात्यतरेऽपि च ॥४३८६॥  
 मालिको द्व भवेमालाकारे मालावति त्रिषु ।  
 मालिनी मातृकावृत्तभिदोर्मालिकयोषिति ॥४३८७॥  
 गौरीचम्पानगर्योश्च मन्दाकिन्या नदीमिदि ।  
 मालु पत्रलतायां च नार्यां च स्त्रीत्व इष्यते ॥४३८८॥  
 मालुधानो मातुलाहौ मालुधानी लतातरे ।  
 माल्य क्ली कुसुमे पुष्पस्रजि धार्ये तु मेधवत् ॥४३८९॥  
 माषस्तु धान्ये वृष्यारये पुनपुसकयोर्मत ।  
 पञ्चगुञ्जात्मके माने तण्डुलोन्मितवस्तुनि ॥४३९०॥  
 कार्षापणग्रभदेऽपि हिंसाथमषणे तु ना ।  
 माषा व्रीह्यतरे मूर्खे मान वग्दोषभेदयो ॥४३९१॥  
 माषाशी तु तुरङ्गे द्वे माषस्य त्राशके त्रिषु ।  
 माष्यतु हिंस्यमाषीणमाषसाध्यादिषु त्रिषु ॥४३९२॥  
 मास्तु मासेऽपि च द्रेऽपि सान्त पुलिङ्ग इष्यते ।  
 मासरो भक्तमण्डे वक्सारये भक्तसाधने ॥४३९३॥  
 मासिक स्यात्स्त्रीरजसि मासश्चाद्वे तु न स्त्रियाम् ।  
 मासिक तु त्रिषु ज्ञेय मासम्भूतभृतादिषु ॥४३९४॥

माहिरस्तु पुमानिन् क्लीब शयनबालयो ।  
 माहूर पर्वते पुसि पृजके तु त्रिषु स्मृत ॥४३९५॥  
 माहेद्री सप्तमातृणामेकस्या कदलीभदि ।  
 पृथुदीघफलाया स्यादथ त्रियोगिके भवत् ॥४३९६॥  
 मित्र क्ली सुहृदि स्थोणयोपधं लग्नतत्तथा ।  
 चतुथराशावथ ना मित्रेऽर्केऽर्का तरेऽपि च ॥४३९७॥  
 मित्रविन्द पुमानुक्त कोहलस्य मुन सुते ।  
 मित्रावन्दा स्त्रियामष्टिविशेष यज्वनि श्रुते ॥४३९८॥  
 कृष्णप्रधानपत्नीना सप्तानामपि कुत्रचित् ।  
 मिथोऽन्योन्येऽयय प्रोक्त रहस्यपि तथा स्मृतम् ॥४३९९॥  
 मिथुनस्तु क्लीबलिङ्ग स्त्रीपुंसयुगले तथा ।  
 मधुसर्पिद्वये राशौ तृतीये च द्वयोगणे ॥४४०॥  
 युग्मारये तद्वति त्रि स्यादम्पत्योमिथुन पुमान् ।  
 मिथुनत्व रते भावक्रमणोमिथुनस्य च ॥४४१॥  
 मिथुनी तु द्वयो खञ्जरीटे त्रिषु तु यौगिके ।  
 मिद्ध चित्ताभिसंक्षेपे क्लीबमालस्यनिद्रयो ॥४४२॥  
 मिथिस्तु तुत्थनीलिन्या सूक्ष्मैलाया च कीर्त्तिता ।  
 मिश्रक यजमानस्य क्लीबपुक्त घृताञ्जने ॥४४३॥  
 मिश्रकस्त्रिषु सकीण तथा मिश्रयितर्यपि ।  
 मिष तु क्ली छलेऽथ द्वे घघरीक्षत्रियोद्भवे ॥४४४॥  
 मिष व्याजे मत क्लीब स्पधनेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।  
 मिसि स्त्री मधुरामास्यो शतपुष्पाजमोदयो ॥४४५॥  
 मिहिरोऽर्केऽनिले मेघे बद्धे नप् सलिले स्मृतम् ।  
 मीढो मेघे द्वयो क्लीब मूत्रणे मूत्रितेऽन्यवत् ॥४४६॥  
 मीढा तु देवरे याऽन्य नियुक्तेत्यभिसारिका ।  
 मीनो ना द्वादशे राशौ द्वे तु मत्स्ये त्रि हिंसिते ॥४४७॥  
 यष्टौ तु मीना स्त्री क्ली तु हिंसने मीनमिष्यते ।  
 मीनी म्रीणस्तु पुल्लिङ्गो दर्दुराम्ने च खञ्जने ॥४४८॥

मीमांसा श्रौतवाक्यार्थशास्त्रेऽपि च विचारणे ।  
मीर क्लीबमुखाया मास्यचया ना तु वारिधौ ॥४४९॥  
मीलितो मुद्रिते चापि योजिते चाभिधेयवत् ।  
मुकु दो निधिभिद्विष्णुरत्नभेदे च कुदुरौ ॥४४९॥  
मुकुरो वकुले दण्डे कुलाले स्याच्च दण्डणे ।  
स्त्री मुक्तबधना मलिकायां त्रिषु तु यागिके ॥४४९१॥  
मुक्ता स्त्री मौक्तिके त्रिस्तु विसृष्ट मुक्तिभाजि च ।  
मुक्ताफल तु कर्पूरमाक्तिके लवलीफले ॥४४९॥  
मुक्ति स्त्रियां स्यात्स्वर्गे चाप्यपवर्गे च मोक्षणे ।  
मुख वक्त्रेऽभ्युपाये च मुरये ताम्रे च सैषवे ॥४४९३॥  
आदौ नि सरणे गेहपुरादद्वार एव च ।  
सभ्यतरे नाटकादे शदऽपि च नपुसकम् ॥४४९४॥  
मुखभूषणमास्यालङ्कृतौ वङ्गारयलेखके ।  
मुखमण्डन इत्युक्तस्तिलकारयद्रुमे पुमान् ॥४४९५॥  
मुखस्य भूषणे क्लीब वर्ण्यते येन वस्तुना ।  
मुख वाच्यवदन्नत मुखमण्डन उच्यते ॥४४९६॥  
मुखरा शारिकाया स्त्री मुखरो दुमुखे त्रिषु ।  
मुखशोभा वेदशालिमुख कातौ मुखस्य च ॥४४९७॥  
मुरय वक्त्रेऽभ्युपाये च नपुसकमुदीरितम् ।  
त्रिषु तु स्या मुखमवे प्रधाने प्रथमेऽपि च ॥४४९८॥  
मुग्ध मूढे च सौम्ये च नूतनेऽप्यभिधेयवत् ।  
मुचिरोऽर्केऽम्बुदे घर्मे पुमान्दातरि तु त्रिषु ॥४४९९॥  
मुचुकुद पुष्पवृक्षभेदमा धातुपुत्रयो ।  
क्लीब तु मुचुकुन्दस्य प्रसवे परिकीर्तितम् ॥४४९०॥  
मुण्ड स्यान्मस्तके त्रिस्तु परिवापितकेशके ।  
स्त्री तु मुण्डा च मुण्डी च स्तम्भे श्रमणिकाङ्क्षये ॥४४९१॥

सा तु मुण्डैव भिक्षुक्या मण्डने तु नरस्त्रियो ।  
 मुण्डो दैत्यान्तरे राहुग्रहे ना मुण्डिते त्रिषु ॥४४२ ॥  
 मु डन वपने चापि त्राणेऽपि च नपुसकम् ।  
 मण्डितस्तूषकेशे त्रिमुण्चारये भेषजे स्त्रियाम् ॥४४ ३॥  
 मुदिरोऽर्के च मेघे ना भके द्वे कामुके त्रिषु ।  
 मुद्गरो द्रुघणे पुसि तथा वेण्वादिभेदने ॥४४ ४॥  
 मलिकायाम्मुद्गदे त्रि क्लीब स्यान्मलिका तरे ।  
 मुद्राऽङ्गुलीये लिखिताक्षरे चिह्नेऽप्सरोऽन्तरे ॥४४ ५॥  
 हस्तवि यासभेदेषु स्थापनीनिष्ठरादिषु ।  
 अथाऽभिधेयव मुद्रशब्दो मोदस्य दातारं ॥४४ ६॥  
 मुनिऋषावगस्त्यर्षौ बुद्धे दमनके कुशे ।  
 अगस्त्यद्रा द्वयोस्तु स्याद्भेके वाचयमे त्रिषु ॥४४ ७॥  
 मुनिप्रिया ना श्यामाके योगार्थे तु यथायथम् ।  
 मुनिभेषजमागस्त्यहरीतक्या च लङ्घने ॥४४ ८॥  
 मुनिसेवित उक्तो ना नीवारे त्रि तु यौगिके ।  
 मुमुचानो मोक्तमुमुक्षिन्नोस्त्रिर्ना तु वारिदे ॥४४ ९॥  
 मुरली वशवाद्ये पुण्डिकारये काहला तरे ।  
 मुरवो बाधभेदे च खण्डिकाद्वयमानके ॥४४ १०॥  
 मुरा तु गन्धकुट्या च चन्द्रगुप्तस्य मातरि ।  
 अथ दैत्यान्तरे विष्णुनिहते स्यामुर पुमान् ॥४ ३१॥  
 मुमुरस्तुषवह्नौ स्याम मथ रविवाजिनि ।  
 मुषल स्यादयोत्रे च पुनपुसकयो स्त्रियाम् ॥४४ ३२॥  
 तालमूल्यामाखुपर्णीगृहगोधिकयोरपि ।  
 मुषित तु हृतेऽपि स्यात्खण्डितेऽयभिधेयवत् ॥४४ ३३॥  
 मुष्को मोक्षकवृक्षे स्यात्सहते वृषणेऽपि च ।  
 मुष्टि फलकखड्गादे पलारये ग्रहणाश्रये ॥४४ ३४॥

१ मुद्गरं क (म) ण्डिकाभेदे पुसि छोद्गादिभेदने ।

२ मुमुचो ज्वलद्वक्त्रारपूर्णांगौ च मुषानके ।

३ मुष्कस्तु वृषणे न स्त्री भगस्यावयवे तु ना ।

उन्मानभेदे सुदृढपिण्डिताङ्गुलिसहृत् ।  
 धानुष्कहस्तवियासभदे ग्राह्ये च मुष्टि नप् ॥४४३५॥  
 मुष्टिकस्तु पुमास्वर्णकारे स्यात्स्त्री तु मुष्टिका ।  
 स्वर्णकारोपकरणभेद एषा प्रकीर्तिता ॥४४३६॥  
 मुसलोऽस्यवधाताय द डे स्त्री तु मुसल्यसौ ।  
 गृहगोधातालमूलीकुस्तुम्बुरुषु कीर्तिता ॥४४३७॥  
 मुस्ता तु मुस्तके त्रि स्याद्विषभेदे तु न स्त्रियाम् ।  
 मुहरिस्तु पुमास्त्रये तथा स्यादनडुहपि ॥४४३८॥  
 मुहिरोऽर्के सरे पुसि त्रिर्मूर्खे क्ली तमस्यपि ।  
 मूको दैत्यातरे ना त्रि [रवाच्यमतिदीनयो] ॥४४३९॥  
 अश्वाया वेसराजाते [पशौ द्वे कल्याविलाम्बुनि] ।  
 मूढा प्रहेलिकामेदे मोहने तु नपुसकम् ॥४४४०॥  
 मूढस्तु तद्वितेऽप्यज्ञे क्रद्धमूर्च्छितयोस्त्रिषु ।  
 मूत आतचने व्रीहावपि पुसि मतस्तथा ॥४४४१॥  
 आचमयां तृणैबद्धे भारे त्रीक्षादिकस्य च ।  
 वस्त्रवेष्टनबधेऽथ त्रिर्बद्धे क्ली तु व धने ॥४४४२॥  
 मूर्च्छन स्यादभियाप्तौ मोहे चाप्यथ मूर्च्छना ।  
 गीतिधर्मान्तरे स्त्री स्यान्नना मूर्च्छयते कृतौ ॥४४४३॥  
 मूर्च्छितस्तु प्रवृद्धेऽपि मूढसोऽज्ञाययोस्त्रिषु ।  
 मूर्त्त स्यात्त्रिषु मूर्च्छाले कठिने मूर्त्तिमत्यपि ॥४४४४॥  
 मूर्त्ति काये च काठिन्ये काकप्रतिमयोरपि ।  
 मूर्धाभिषिक्तो ना राक्षि क्षत्रिये तु द्वयोमत ॥४४४५॥  
 अथ प्रधाने मूर्धाभिषिक्त स्यात्त्रिषु च प्रमौ ।  
 मूर्धावसिक्तो द्व विप्रात्क्षत्रियाजे त्रियौगिके ॥४४४६॥  
 मूलोऽस्यादौ समीपे च वृक्षाङ्गौ च वशीकृतौ ।  
 नक्षत्रभेदे स्वीये च कारणेऽपि प्रकीर्तित ॥४४४७॥

मूलकोऽस्त्री बुस्तिकारयशाकस्तम्बात्तरे मत ।  
 मूलनक्षत्रसयुक्तकालजाते त्रिषु स्मृत ॥२४८८॥  
 मूलैरस्तु पुमानुक्त आपणीयवनस्पतौ ।  
 स्याद्वनस्पतिमात्राऽपि पण्ये तु स्यान्नपुसकम् ॥२४८९॥  
 मूल्य क्ली वेतने [त्रिस्तु वहने मूय इष्यते] ।  
 माषमुद्रादिके मूलोपात्ये तत्रापि त्रष्यते ॥२४९०॥  
 य परादिरुपादानद्रयतुल्यप्रयोजन ।  
 मूषा लोहकृता तेजसावचन्यारयभाण्डके ॥२४९१॥  
 द्वे तु चोरे भजे मूषा मूषश्चोरे भवेत्त्रिषु ।  
 मूषिकस्त्वाखुजातौ द्वे स्त्रीत्ये त्वेतस्य मूषिका ॥२४९२॥  
 अनिष्टगधे विज्ञेया मूषिकं सदृशाकृता ।  
 मूषिका निर्विषाणा च जातिभेदे जलौकसाम् ॥२४९३॥  
 मृगो मकरराशौ च मृगशीर्षे च तद्युते ।  
 काले पश्ववेषणयोर्द्वे तु हस्तिकुरङ्गयो ॥२४९४॥  
 स षडङ्गुलयोनौ तु नायिकाया भवेत्मृगी ।  
 मृगनेत्रा रात्रिभेदे त्रिर्मृगाक्षे स्त्रियो भिदि ॥२४९५॥  
 मृगयु पुंसि गोमायौ याधे च परमेष्ठिनि ।  
 पुमान्मृगरिपु सिंहे याग्रेऽपि परिकीर्तित ॥२४९६॥  
 नपुसक मृगशिरो मृगशीर्षे त्रि यौगिके ।  
 मृगशीर्षं सोमऋक्षे योगार्थे तु यथायथम् ॥२४९७॥  
 मृगारिस्तु तरक्षौ स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।  
 कण्ठीरवे च शादूले मृगारिस्तु भवेद्द्वयो ॥२४९८॥  
 मृणालोऽस्त्री त्रिसे पद्माङ्कुरे स्यात्पद्मकीरके ।  
 मृत त्रि नष्टे मैक्षे तु याचिते मरणे च नप् ॥२४९९॥  
 मृत्युद्वयो स्यामरणे पुमानेवाऽन्तके मत ।  
 मृत्यु [अयोमहादेवे] श्रीफलद्रोणकाकयो ॥२५००॥

१ मृग पशौ कुरङ्गे च करिनक्षत्रभेदयो ।

अवेषणे च यावज्जायां मृगी तु वनितान्तरे ।

मृत्युपुष्पः पुमावेणाविक्षावपि तथा मत ।  
 स्यात्कदयां मृयुफला महाकालफले पुमान् ॥४४६१॥  
 मृत्युसयमन पुस्यासनभेदस्य लक्षणम् ।  
 भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावने ॥४४६२॥  
 पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसयमनो हि स ।  
 योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तकणीय यथायथम् ॥४४६३॥  
 मृसा मृस्ना तुवर्याञ्च तथा श्रेष्ठमृदि स्मृते ।  
 मृत्स्त्री जले मृत्तिकाया तुवरीसङ्गमपजे ॥४४६४॥  
 मृदङ्गो लतयो स्तल्पफलकोशातकीति च ।  
 महाकोशातकीतिख्यातयोर्वाद्यातरेऽपि च ॥४४६५॥  
 मुरजारयेऽथ लतयोरुक्तयो प्रसवे नपि ।  
 मृदु वङ्गे कोमले तु त्रि स्यादकठिनेऽपि च ॥४४६६॥  
 मृदुकण्टक उक्तो द्वे पाठीने त्रि तु यौगिके ।  
 मृदुवक पुसि भूर्जे च मुञ्ज त्रिषु तु यौगिके ॥४४६७॥  
 मृदुरोमा शशे द्वे स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।  
 मृदुल क्लीबमगुरौ मृदुनि त्रिषु कीर्तितम् ॥४४६८॥  
 मृष्टेरुको वदायेऽपि मृष्टाशयतिथिद्विषि ।  
 मेकला विध्यपर्यतनीष्टवभेद नृभूमनि ॥४४६९॥  
 मेकलोऽद्रय तरे शीतगुण त्रिषु तु तद्वति ।  
 मेखला कटिद्वयेऽपि श्राणिस्थानेऽपि च स्त्रियाम् ॥४४७॥  
 खड्गतसरुबिषधस्याश्रयेऽद्रकटके तथा ।  
 मेघ स्या पुसि जलदे मुस्ताया च तदथका ॥४४ १॥  
 मेघज तु जले क्लीब त्रि तु स्यान्मेघसम्भवे ।  
 मघनादो मघघोष इद्रजित्तण्डुलीययो ॥४४ २॥  
 वरुणे च द्वयोस्त्वेष आखुजात्यतरे मत ।  
 मेघपुष्पो हरेरश्वे पुलङ्ग परिकीर्तित ॥४४ ३॥  
 मेघपुष्प तु पिण्डाभ्राम्बुनादेयेषु नप्स्मृतम् ।  
 मेघवाहन इत्येष पुसि शक्र शिवेऽपि च ॥४४ ४॥

मेघान दा बलाका स्या मेघान दास्तु बर्हिण ।  
 मन्थ प्रावृषि ना त्रिस्तु मेघसाधुनि तद्भवे ॥४४१॥  
 मेचक श्यामले कृष्ण पुमास्तद्वति तु त्रिषु ।  
 मेचकोऽस्त्री मयूरस्य च द्रुके स्तनचूचुके ॥४४२॥  
 मेचक वधकार च क्लीब स्रोतोऽजने मतम् ।  
 मेद्र नपुसक शिशने मढा मेघ द्वयोर्मत ॥४४३॥  
 मेथि पुमान्खले दारुयस्त यपशुबधने ।  
 मेथीवमथिकाया सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥४४४॥  
 मेदा तु स्योषधीभेदे मेदने ना द्वयो पुन ।  
 वैदेहकानषादीजे मर्त्यजा यन्तर भवेत् ॥४४५॥  
 मेदुराषधिभेद स्त्री सा द्रस्निग्धे पनस्त्रिषु ।  
 मेधा स्त्री धारणावत्या भवेदबुद्धा धनेऽयथ ॥४४६॥  
 मेधो यज्ञ सङ्गमे तु द्वयोर्मेधाविनि त्रिषु ।  
 मेधातिथि शुके द्व स्या मुनिभेदे पुन पुमान् ॥४४७॥  
 मेधावती महायोतिष्मत्या स्त्री त्रि समेधके ।  
 मेध्य शुचिनि यज्ञार्हे मेधाभ्वर्हादिषु त्रिषु ॥४४८॥  
 मेध्यस्तु खदिरे छाग यवे मुञ्जे पुमान्मत ।  
 मेध्य धने बले स्वर्णे मेध्या तु स्यान्नदीभिदि ॥४४९॥  
 केतकीरोचना योतिष्मतीब्राह्मीशमीषु च ।  
 माण्डूक्या शङ्खपुष्प्या च वचयो श्वेतरक्तयो ॥४४१०॥  
 मेनो ना पृषदश्वारये कीर्त्तित पूवपार्थवे ।  
 मेनाऽस्य पुत्र्या स्त्रीमात्रे वा गुप्तामावृष्ट स्मता ॥४४११॥  
 मेनादस्तु द्वयोश्छागे स्या मार्जारमयूरयो ।  
 मेनिस्तु वाचि च स्त्रीत्वे सङ्कल्पे च प्रकीर्त्तिता ॥४४१२॥  
 मेरुक शल्लकीवृक्षे देशभेदे तु मेरुका ।  
 मेला पत्राञ्जने मस्या मेलस्तु नारिसङ्गमे ॥४४१३॥  
 मेघो ना प्रथमे राशादुरग्रे तु द्वयोरयम् ।  
 मेषको जीवशाके स्यान्मेघ्यां स्त्री मेषिका मता ॥४४१४॥



मेषशृङ्गयौषधमिदि न तु स्त्री विषमिद्यपि ।  
 अथ मेष्यो हिमोसगक्षमा ये रविरश्मय ॥४४८९॥  
 शतत्रयमितास्तेषामेकसिञ्छत ईरिता ।  
 मेहा भुवि स्यान्मेहस्तु मूत्रणे मूत्ररुग्भिदि ॥४४९०॥  
 मेहघ्नी स्त्री हरिद्राया त्रिमेहारावमानने ।  
 मेहन मूत्रण क्लीबमस्त्री मेह प्रकीर्तितम् ॥४४९१॥  
 मेही मेहवति त्रि स्याद्व्याघ्र द्वीप्यभिधे द्वयो ।  
 मत्रो विप्रे वैश्यपूर्ववैश्याया व्रात्यजे द्वयो ॥४४९२॥  
 मित्रे वपाने ना सधियोगाऽऽदत्यान्तरेष्वथ ।  
 मैत्र पुरीषोसर्गे क्ली मित्रसङ्गे तथा मतम् ॥४४९३॥  
 मृगात्यचित्रामित्रक्ष मृदु मैत्र भृगुस्तथा ।  
 उपस्थानेऽपि सूर्यस्य सूत्रभदे तथा भवेत् ॥४४९४॥  
 मैत्री मुनेष्टुत्तिभेदेऽनुराधासरययो स्त्रियाम् ।  
 वसिष्ठागस्त्यवा मीक्यर्थे मैत्रावरुणि पुमान् ॥४४९५॥  
 स्यान्मैथिली स्त्री सीताया ना वैदेहप्रदोषयो ।  
 मैथुन सुरते क्लीब सङ्गतावपि कीर्तितम् ॥४४९६॥  
 त्रिमेथुनोद्वाहयुक्ते मिथुनाङ्ग तथा मत ।  
 द्वे तु मैथुनिक त्रि तु मैथुनवयसौ ॥४४९७॥  
 स्त्री तु मेथुनिका पाणिग्रहणे परिकीर्तिता ।  
 मैथुनी सारसे द्वे स्यात्त्रि तु मैथनवयसौ ॥४४९८॥  
 मोको ना मोचने शिष्ये मोकी रात्रौ स्त्रियां मता ।  
 स्त्रीपुसयोस्तु मोकी च मोकश्च स्या चतुष्पदे ॥४४९९॥  
 मोक तु पशुवृत्तौ तत् क्लीबलिङ्ग प्रकीर्तितम् ।  
 मोक्षो मुष्करवृक्षे च मृतौ मुक्तो विमोचने ॥४५०॥  
 मोचा तु कदलीमात्रे सुगन्धपफलेऽपि च ।  
 स्यात्कदयतरे किं च शमलौ ना तु शिग्रुके ॥४५१॥

वृक्षस्य च रसे माच पाट या तु द्वयोभयत् ।  
 मोचक कदले शिग्रुनिर्मोचरविरागिषु ॥४२॥  
 मोचाट कृष्णजीरे च रम्भास्थिन मलयोदभवे ।  
 मोण शुष्कफले तक्रमक्षिकाहिकरण्डया ॥४३॥  
 मोदक पूषभेदे स्यापुल्लिङ्ग च नपुसके ।  
 वायवन्मोदयितरि मोदितर्यपि मादक ॥४५४॥  
 मोरट कृष्णजीरे च रम्भास्थिन मलयोदभवे ।  
 मोरट तु प्रसृत्यादिसप्ताहात्क्षीर ऊर्ध्वज ॥४५५॥  
 मोरकारये गजादीनामिषुमूल च गारसे ।  
 मोरटा तु स्त्रिया मूर्गासङ्गणे भेषजातरं ॥४५६॥  
 मूर्खावर्त्ते पर्णिकारयस्तम्बे च परिकीर्त्तिता ।  
 मोह क्रोध च मूर्च्छाया तयवाज्ञानत द्वयो ॥४५७॥  
 मोहन क्ली रते मोहेऽथार्थे माहयतेरना ।  
 मोहना विष्णुशक्तौ तु कस्याश्चिन्मोहनी मता ॥४५८॥  
 मौढी यक्षे मर्मरारये मूढयोगिनि तु त्रिषु ।  
 मौलिस्त नृस्त्रियोर्मूर्ध्नि चूडामुकुटयोरपि ॥४५९॥  
 धम्मिल्लेऽशोकवृक्षे तु नाभूमो त स्त्रिया भवेत् ।  
 मौष्टिको ना स्वर्णकारे त्रि तु मुष्टिप्रहारिणि ॥४५९॥  
 म्लान म्लानवति त्रि स्यात्क्लीब म्लानौ प्रकीर्त्तितम् ।  
 मण्डूकभेदे गृहजे म्लान स्त्रीपुंसयोर्मत ॥४५९१॥  
 म्लिष्ट म्लानेऽप्यविस्पष्टवाक्ये स्यादभिधेयवत् ।  
 म्लेच्छास्त द्वे म्लेच्छवाक्षु स्यु प्रत्यतनिवासिषु ॥४५९२॥  
 म्लेच्छने तु द्वयोर्म्लेच्छा ताम्रे तु म्लेच्छमिष्यते ।  
 म्लेच्छभोजास्तु गोधूमे योगार्थे तु यथायथम् ॥४५९३॥  
 म्लेच्छास्य ताम्रसञ्ज्ञ स्याल्लोहे म्लेच्छमुखेऽपि नप ।  
 म्लेच्छाना त्वसने स्त्रीत्वे म्लेच्छास्या परिकीर्त्तिता ॥४५९४॥

१ मोचक शा-मक्षि सौभाषिनो रम्भा च मोकरि ।

२ दूर्वाया बीजमूले तु गोरसे पि च मोरटम् ।

## य

यो ना वायौ यानयोगयशोयमनयातृषु ।  
 या यात्राधूमितत्यागसमज्ञायोगवारण ॥४५१५॥  
 आसौ रथादियानेपि स्त्रीयोनावपि च स्त्रियाम् ।  
 यक्षी तु पूजनीये त्रिर्यस्या स्त्री यक्षिणीष्यते ॥४५१६॥  
 यक्षो वैश्रवणे पुंसि प्रासादेपि विडौजस ।  
 यक्ष नपुसक सवे स्यात्खापेयशुनोर्द्रयो ॥४५१७॥  
 यक्षकर्दम इत्येष यक्षाणामपि कदमे ।  
 कर्पूरागरुकस्तूरी तक्कोलै साधितेऽपि च ॥४५१८॥  
 गन्धयुक्तिविशेषे स्यादेतवा स्यात्सकुङ्कुमै ।  
 यक्षराट पुंसि घनदे मल्लाना रङ्गचत्वरे ॥४५१९॥  
 यक्ष्मस्तु याधिमात्रेऽपि क्षयरोगे च पूजने ।  
 यक्ष्मा न याधिमात्रेऽपि क्षयरोगे विशेषतः ॥४५२०॥  
 यजतस्तु शशाङ्कऽपि यज्ञद्रव्ये च ऋविजि ।  
 शिवेऽपि यजनीये तु शदोऽयम्परिकीर्त्तित ॥४५२१॥  
 यजत्रमग्निहोत्रे च यज्ञोपकरणे मतम् ।  
 यजत्रस्तु त्रिलिङ्गोऽसौ यजनीये प्रकीर्त्तित ॥४५२२॥  
 यजत्रस्तु पुमानग्निहोत्रिण्यपि च कस्यचित् ।  
 यजन तु यजत्रारये यागोपकरणे क्रतौ ॥४५२३॥  
 यागस्य चाधिकरणे करणे च नपुसकम् ।  
 यजिस्तु यजधातौ ना यजमाने द्वयोर्मत ॥४५२४॥  
 यजनार्थे तु मन्त्रादौ लिङ्ग नाऽस्य विभाव्यते ।  
 यजुरध्वयुवहन्योर्ना द्वे शिष्ययजमानयो ॥४५२५॥  
 च द्राऽश्वमेदेऽपि यजु कैश्चित्पुंसि कीर्त्तित ।  
 यजुर्यज्ञोत्सवे क्लीब मन्त्रजात्यतरेऽपि च ॥४५२६॥  
 यज्ञस्तु केशवे चाग्नौ योगे चात्मनि चेष्यते ।  
 यज्ञार्हो यागयोग्ये त्रि कृष्णसारमृगे द्वयोः ॥४५२७॥

यज्ञियो यज्ञरुमाहं त्रिमुञ्ज तु पुमा मत ।  
 यत तु यमने हस्तिपकाना पादकर्मणि ॥४५२८॥  
 भगलिङ्ग तु बद्धे स्यात्तथैवोपरतेऽपि च ।  
 यतिजितेन्द्रिये चापि परित्राजि तथा त्रिषु ॥४५ ९॥  
 स्त्रिया तु यमने पादच्छेदभेदे यतिर्मता ।  
 तथा कारागृहे धातौ त्वेष ना यततौ मत ॥४५३ ॥  
 यथा तु योग्यतावीप्सापदार्थानतिवृत्तिषु ।  
 सादृश्ये चैव माने च प्रशसायामपीष्यते ॥४५३१॥  
 यथासुख पुमाश्चन्द्र यौगिके तु यथायथम् ।  
 यदयय स्याद्गर्हायां तथा हेत्ववधारणे ॥४५३२॥  
 यदि त्वेतद्विकल्पेऽपि गर्हायामयय मतम् ।  
 यदुर्नाऽऽद्यनृपे द्वे तु तद्वश्येपु च मानवे ॥४५३३॥  
 यद्वत्प्रश्ने वितर्के चाऽप्ययय परिकीर्तितम् ।  
 यन्ता हस्तिपके सूते पुसि त्रिर्मकर्त्तरि ॥४५३४॥  
 यत्र तु क्ली लघूपायकर्मनिर्माणसाधने ।  
 यन्त्रणाया तु पुलिलङ्गो यत्रोऽय परिकीर्तित ॥४५३५॥  
 यन्त्रण स्यान्नियमने रक्षणे बन्धनेऽपि च ।  
 यमो वैवस्वते पुसि यमने च शनैश्चरे ॥४५३६॥  
 शब्दवणविशेषेषु तथैव स्याच्चतु वपि ।  
 शरीरसाधनाऽपेक्षे सत्यादौ नित्यकर्मणि ॥४५३ ॥  
 वलितारयस्य घोटाना गतिभेदस्य चाष्टसु ।  
 भेदेष्वेकत्र भेदे स्यात्कली तु युग्मे त्रिषु त्वद ॥४५३८॥  
 मरणे युग्मवति च यमी तु यमुना सरित् ।  
 स्त्री यमाविति तु द्यावापृथिव्योरथ वायसे ॥४५३९॥  
 हीनाधिकाङ्गतुरगे तथा स्त्रीपुंसयोर्मतः ।  
 महिषे स्याद्यमरथो यमस्य स्यदनेऽपि च ॥४५३४ ॥  
 यमल युगले क्लीब यमली चोदिकाद्वये ।  
 यमस्वसा तु दुर्गाया यमुनायामपि स्त्रियाम् ॥४५४१॥

यम्या रात्रौ स्त्रियामुक्ता य तव्ये तु त्रिलिङ्गके ।  
 यम्यो यमयितये च यमसाधावपीष्यते ॥४५४२॥  
 ययीस्तु पुसि द्वयेऽपि मोक्षमार्गेऽपि कीर्तित ।  
 ययी स्त्रीपुसयोर्विप्र घोटके च प्रयुज्यते ॥४५४३॥  
 स्त्री तु प्राप्तौ दीघवृष्टौ दि-यवृष्टौ ययीर्मता ।  
 ययुस्तु नाऽऽवमेधाऽऽवेऽऽवमात्रे तु द्वयोर्ययु ॥४५४४॥  
 यवा रश्मौ मनीषायां [ना ब्रीहौ महति त्रिषु] ।  
 यवन मिश्रणे द्वे तु शूद्राक्षत्रियजे तथा ॥४५४५॥  
 वैश्याक्षत्रियजेऽपि स्याद्यवना तु नृभूमनि ।  
 देशे हुरुष्करारये तन्मर्त्ये सववचो द्वयो ॥४५४६॥  
 यवनेष्ट पलाण्डूनां दशानामेकभेदके ।  
 योगार्थे तु त्रिलिङ्गोय यवनेष्ट प्रकीर्तित ॥४५४ ॥  
 पुमायवफलो वेणौ मासीकुटजयोरपि ।  
 यविष्ठस्त्रियुवतमेऽनौ तु ना सवनाहुते ॥४५४८॥  
 यवीयाननुजेऽपि स्यादिति यूनि च वाच्यवत् ।  
 यव्य यवोत्प-युचिते क्षेत्रे यवहितेऽपि च ॥४५४९॥  
 यवसाधावथ स्त्रीत्वे य या नद्या प्रकीर्तिता ।  
 यशस्तु सत्त्वरयातिश्रीज्ञानमाहात्म्यवारिषु ॥४५५ ॥  
 धनप्रतापयोश्चापि नपुसकमुदीरितम् ।  
 यशोदा त्वग्निचित्याया इष्टकासु च कासुचित् ॥४५५१॥  
 नन्दगोपस्य पत्याश्च त्रि तु कीर्त्ते प्रदातरि ।  
 यष्टिरस्त्री गृहस्थस्य द डे स्यादण्डमात्रके ॥४५५२॥  
 तरवारौ च यष्टि स्यात् तथा खड्गायुधाक्षरे ।  
 तथा हारलतायाश्च स्त्री तु स्यान्मधुकोषधौ ॥४५५३॥  
 यागो यज्ञेऽपि पुल्लिङ्गो मण्डलेष्वपि कीर्त्तितः ।  
 शैवागमग्रसिद्धेषु सवतोभद्रकादिषु ॥४५५४॥  
 याच्याऽनुवत्तने स्त्री स्यात्प्राथनेऽपि तथेष्यते ।  
 याजकस्त्रिर्याजयितृयष्टौ पुसि तु ऋत्विजि ॥४५५५॥

याजुयस्तु पुमा यज्ञे क्षत्रिये तु द्वयोर्मत ।  
 याजिको ना यज्ञविद्यामधीयाने विदत्यपि ॥४५६॥  
 कुशे च याजके त्रिस्तु यज्ञेन नयतीदृशे ।  
 यात हस्तिपककृत्ये तथा चाङ्कुशवारणे ॥४५७॥  
 गते तथा यतियतसम्बन्धियभिधेयवत् ।  
 यातयाम तु जीर्णेऽपि परिशुक्तोज्झिते त्रिषु ॥४५८॥  
 याता देवरपत्या स्त्री यात्री तु त्रिषु गन्तरि ।  
 यातु क्ली राक्षसे यातु पापे ना पथिके त्रिषु ॥४५९॥  
 यात्रा तु यापनेऽपि स्याद्गमनोत्सवयो स्त्रियाम् ।  
 याद पतिस्तु वरुणे समुद्रऽपि पुमान्मत ॥४६०॥  
 यादव केशवे पुसि [यदुसम्बन्धिनि त्रिषु] ।  
 यादसाम्पतिरम्भोधौ पश्चिमाशापतावपि ॥४६१॥  
 यानोऽस्त्री वाहने प्रोक्तो यान क्ली गमने मतम् ।  
 यापनावचने प्रस्थापने निरसनेऽपि च ॥४६२॥  
 कालक्षेपेऽपि च प्रोक्ता स्त्रिया चैव नपुसके ।  
 याप्यन्तु यापनीयेऽपि वाच्यवच्च विगर्हिते ॥४६३॥  
 याम सामातरे ना तु ग्रहरे यमनेऽपि च ।  
 यामको यतरि त्रि स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥४६४॥  
 यामि कुलस्त्रियामिष्टा तथैव स्वसरि स्त्रियाम् ।  
 याम्नुन स्रोतोऽञ्जने क्ली यमुनायोगिनि त्रिषु ॥४६५॥  
 याम्याऽवाच्यां भरण्या च याम्योऽगस्त्ये च चन्दने ।  
 यावो नाऽलक्तके माषे यवयोगिनि तु त्रिषु ॥४६६॥  
 यावको यवभेदे स्यात्कुल्माषारयेऽप्यलक्तके ।  
 यावको यवितर्येष त्रिलिङ्ग परिकीर्तित ॥४६७॥  
 यावत् कात्स्न्ये प्रशसायां परिच्छेदेऽवधारणे ।  
 पक्षान्तरेऽपि च प्रोक्तोऽधिकारे मानसम्भ्रमे ॥४६८॥  
 यावतस्तु तुरुष्कार्यनिर्यासे पुसि कीर्तितः ।  
 यावता यावदर्थे तु स्त्रीनपुसकयोर्मता ॥४६९॥

यावस तु मत् क्लीब मित्रे रक्ततृणोऽपि च ।  
 युक्त प्रकारे ना वाय्यसमाहितयुते त्रिषु ॥४५७॥  
 युक्ति स्त्रिया समाधावप्युपपत्तौ च योजने ।  
 युग तु क्ली चतुहस्ते षडशी यङ्गुलेऽपि या ॥४५ १॥  
 युग्मेऽथ तद्वति त्रि स्याद्युगा स्त्री ऋद्धिभेषजे ।  
 युगोऽस्त्री स्य दनादीनामीषाव धनदारुणि ॥४५ २॥  
 माने कृतादित्रेतादिकाले स्याज्जमपवसु ।  
 युगधरोऽस्त्रियामेष प्रोक्त स्यन्दनकूवरे ॥४५७३॥  
 साल्वैकावयवे तु स्युनृभूमनि युगधरा ।  
 युग्म नपुसक शम्भुकामुके वाहनेऽपि च ॥४५ ४॥  
 युग्यस्तु युगसाधौ च युगवोहरि च त्रिषु ।  
 युढ सहाये द्वितीयादिसमसरये त्रि वस्तुनि ॥४५ ५॥  
 युञ्जान सारथौ पुंसि विग्र द्वे योत्तरि त्रिषु ।  
 युतोऽपृथक्कृते युक्त बद्धे च त्रिषु नप्पुन ॥४५ ६॥  
 मिश्रणे च पृथक्कारे बन्धने च युतादि तत् ।  
 युतक योषितो वस्त्रमेदे शूर्पाग्र एव च ॥४५ ७॥  
 यौतके युगले चापि सश्रये वसनाञ्चले ।  
 युतकम्भेद्यवद्युक्ते युग्मावयवयोरपि ॥४५७८॥  
 युद्धस्तु शत्रौ संग्रामे ना योद्धरि तु स त्रिषु ।  
 युधिष्ठिर पाण्डवाना येष्टे शक्रे तथा पुमान् ॥४५ ९॥  
 युष्मस्तु सयुगे पुंसि तथा धनुषि कीर्त्तित ।  
 युयुधानो युयुत्सौ त्रि साहासावितयोद्धरि ॥४५८ ॥  
 युयुधानस्तु कर्षिश्चिपुलिङ्गो राजनि स्मृत ।  
 युवा स्यात्तरुण श्रेष्ठे निसर्गबलशालिनि ॥४५८१॥  
 यूथिकाऽम्लानके पुष्पविशेषेऽपि च योषिति ।  
 यूथी स्त्री मागधीवयां न स्त्री तिर्यक् [समूहयो] ॥४५८२॥  
 यूषोऽस्त्री यञ्जनरसे छायायां तु स्त्रियामियम् ।  
 यूषा तु पुंसि च स्त्रीत्वे हिंसायां परिकीर्त्तिता ॥४५८३॥

१ युतो युक्ते पृथग्भूते क्लीबं हस्तपदौ ये ।

योक्त्र स्यादङ्गुलौ तद्वत्करणं च युजेरपि ।  
 योग स्यात्सङ्गतौ प्राप्नौ जवे विस्रधधातिनि ॥४५८४॥  
 ध्यानयोजनकार्ये सनहनेऽपि च भयजे ।  
 योमी ना यावशूकारयलवण नागरङ्गके ॥४५८५॥  
 समाहिते तु सयोगशीले योगप्रति त्रिषु ।  
 योगिनी तु स्त्रिया शैलराजपुत्रा प्रकीर्त्तिता ॥४५८६॥  
 योग्य वृद्धधौषधेऽपूपे ग्राहनक्षीरचन्दने ।  
 योग्य क्षमे प्रवीणेऽर्हेऽप्युपायि-यभिधेयवत् ॥४५८७॥  
 योग्यो ना पुष्यनक्षत्रे योग्या ऋद्धधौषधे न ना ।  
 योग्या पुनर्नवायां स्त्री रक्तायां गुणनेऽपि च ॥४५८८॥  
 योग्यास्तु भूमनि स्त्रीत्वे भरणीषु प्रकीर्त्तिता ।  
 योजन परमा-मन्यप्यध्वमाने नपुसकम् ॥४५८९॥  
 कोसलाद्येष्टय-क्रोशचत्वारो मगणादिषु ।  
 तथा युक्तिक्रियायां च लतापूगे तु योजन ॥४५९०॥  
 अथ योजनग-धेति जानक्या व्यासमातरि ।  
 तथा कस्तूरिकायाश्च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥४५९१॥  
 योनि स्त्रीणां भगे स्थाने गृहे कारणताम्रयो ।  
 आकरे च स्त्रियामेषा पुंसि चापि प्रकीर्त्तिता ॥४५९२॥  
 यौतुक कन्यया प्राप्ये पित्रादे स्यान्नपुसकम् ।  
 लेरयेऽपि च त्रिषु त्वेतदात्मीये परिकीर्त्तितम् ॥४५९३॥  
 यौन त्रि योनिसम्बद्धे क्ली गर्भाधानसंस्कृतौ ।  
 यौवन नपि तारुण्ये युवतीना कदम्बके ॥४५९४॥  
 लावण्ये च कुचे चापि प्रोक्त यौवनलक्षणम् ॥४५९४॥

र

रह क्ली वेग औसुक्ये सान्तोऽदन्तस्तु पुस्ययम् ॥४५९५॥  
 रहस च समासान्ते सातो ना स्याच्छिवे हरौ ।  
 रहिर्द्वयोर्जघिन्यश्चे धारौत्सुक्यजवे स्त्रियाम् ॥४५९६॥



रो रेफे लघुमध्ये रप्रत्याहारे रलात्मके ।  
 प्रमेच्छाभिजवे तीक्ष्णदातृधातृषु तु त्रिषु ॥४५९॥  
 रा दाने विभ्रमे स्वर्णे री गतौ र मत घृतौ ।  
 रक्त कुङ्कुमताम्रासुक स्त्रीपुष्पे रागवस्तुनि ॥४५९८॥  
 पत्राङ्गारयेऽपि सिद्धे हिङ्गुले पद्मकेऽपि च ।  
 भूषाभ्याश्च फले क्लीब ना तु रोहीतकद्रमे ॥४५९९॥  
 कुसुम्भेऽपि शिव स्वर्यकाते स्यामङ्गलग्रहे ।  
 गर्णे च लोहिते त्रिस्तु रक्त तद्वति रागिणि ॥४६॥  
 कृतायवर्णे मधुरेऽनुरक्ते चानुनासिके ।  
 रक्तस्तु रक्तिकालाक्षामञ्जिष्ठाश्रुतिभिस्तु च ॥४६॥ १॥  
 सप्तानां वह्निजिह्वानामेकस्या काचसारयो ।  
 रक्तकोऽम्लानवधूकपत्राङ्गे रक्तशिग्रुके ॥४६॥ २॥  
 रक्तवस्त्रे वायवत्त सानुरागे सविभ्रमे ।  
 सशोणिते रक्तिका तु श्रुतिभिर्द्रुञ्जयोर्मता ॥४६॥ ३॥  
 रक्तकण्ठ कोकिले द्वे त्रिस्तु स्यामधुरस्वरे ।  
 रक्तकदो विद्रुमे त्रिस्तथा राजपलाण्डुक ॥४६॥ ४॥  
 रक्तग्रथिव्याधिभेदे स लकीभद एव च ।  
 रक्तग्रीवस्तु रक्षोभि पारावतभिदोद्वयो ॥४६॥ ५॥  
 रक्तघ्नो रोहितको दूर्वा रक्तघ्न्युदीरिता ।  
 पत्राङ्गेऽपि कुसुम्भेऽपि योगार्थे रक्तचन्दनम् ॥४६॥ ६॥  
 अतिरक्ते रक्ततरस्त्रि क्लीब रक्तगौरिके ।  
 रक्तदती तु पावत्या त्रि तु शोणरदे भवेत् ॥४६॥ ७॥  
 रक्तदृष्टिद्वयो पारावतयोग यथायथम् ।  
 रक्तपा तु जलौकायां डाकिया ना तु राक्षसे ॥४६॥ ८॥  
 रक्तपुच्छी त्रि योगार्थे ब्राह्मणीकीटके स्त्रियाम् ।  
 रक्तपुष्प कोविदारासनयोर्ना त्रियौगिके ॥४६॥ ९॥

१ रस्तु रेफेपि रलयोरिच्छाग्नेमाग्निषु स्थित ।

दातृधात्रोस्तु रात्रातोस्तीक्ष्णे चाप्येव वाच्यवत् ॥

स्त्रिया रक्तफला बिम्बीलताया त्रि तु यागिके ।  
 रक्तेणुस्तु सिदूरे पलाशस्य च कोरके ॥४६१॥  
 रक्तशीर्षो नृनिर्यासे ग्रीपिष्टाग्ये त्रयागिके ।  
 रक्ताक्ष कासरे क्ररे पारावतचकोरयो ॥४६११॥  
 रक्ताङ्ग पिद्रुम क्लीब रक्ताङ्गो मङ्गलग्रहे ।  
 स्त्री रक्ताङ्गति काम्पि ल्यजीवत्यो परिकीर्त्तिता ॥४६१२॥  
 रक्षणा रक्षण प्राण विष्णौ स्यापुसि रक्षण ।  
 रक्षस्तु रक्षके त्रि स्याद्द्विपद्राक्षसयोस्तु नप ॥४६१३॥  
 रक्षा भस्मनि लाक्षायां रक्षणे यत्रबधने ।  
 स्याद्रक्षापेक्षको द्वारपालेऽत पुररक्षिणि ॥४६१४॥  
 रक्षोघ्नो गौरसिद्धाथभ लातक्यो क्ली काम्जिके ।  
 हिङ्गु यथ स्त्री रक्षोघ्नी रक्षोहन्तरि वायवत् ॥४६१५॥  
 रक्षिका धार्ययत्रादौ स्त्रीत्रातरि तु वाच्ययत् ।  
 रघुलघौ वेगवति त्रिद्वे तु जविवाजिनि ॥४६१६॥  
 पुमान्दिलीपपुत्रेऽपि ककुत्स्थस्य सुतेऽपि वा ।  
 रघुवशारयकायेऽपि प्रयुक्तो लक्षणाबलात् ॥४६१७॥  
 रङ्गोऽनुदारे लुघे त्रिर्मन्दे दीने बुधुक्षिते ।  
 रङ्गुर्दे मृगभेदे स्यान्नीचुङ्गेदे तु पुंस्ययम् ॥४६१८॥  
 रङ्ग स्थाने नृत्तयुद्धस्थाने स्याद्वपवर्णयो ।  
 नासयोच्चारणे हर्षे प्रेम्णि तालातरेऽपि च ॥४६१९॥  
 टङ्गे खदिरसारेऽथ रङ्गा नद्यतरे स्त्रियाम् ।  
 रङ्ग तु नागे सीसे च वङ्गवस्यान्नपुसकम् ॥४६२०॥  
 रङ्गजीवक इत्येष वणकारे नटेपि ना ।  
 रङ्गदा खजिका ना तु टङ्गणे खादिरे रसे ॥४६२१॥  
 रङ्गमाता तु कुट्टिया लाक्षायां च मुटावपि ।  
 रङ्गाजीवश्चित्रकरे पुसि त्रिषु तु यौगिके ॥४६२२॥  
 रङ्गावतारी तु नटे वायवत्परिकीर्त्तित ।  
 पुमांस्तु तस्मिन्सप्राप्तो यो नाट्ये रुद्रभूमिकाम् ॥४६२३॥

१ रक्ताक्षो द्वे कपोते चकोरे मरिचरक्षसौ ।

२ रक्षिका कृष्णलाया स्त्री बन्धूकाम्बानयोस्तु ना ।

रचन स्यात्प्रणयने करणे रचना पुन ।  
 रीतौ च रचनार्थे च त्वष्टु पत्यामपि स्त्रियाम् ॥४६२४॥  
 रजस्त्वदन्त स्त्रीपुष्पे पासावपि रजोगुणे ।  
 रजकस्तु शुके चापि पुसि निर्णेजके द्वयो ॥४६२५॥  
 रजकस्त्रिर्मुगाणा स्यादय रमयितर्यपि ।  
 रजतोऽस्त्री मतो रूप्ये शोणिते हृदहारयो ॥४६२६॥  
 अथ श्वेते त्रिलिङ्गोऽय रजत परिकीर्त्तित ।  
 रजती स्त्री हरिद्राया तथा नील्योषधौ निशि ॥४६२७॥  
 जतुकुत्सञ्जबल्या च रागद्रव्ये तु नप्स्मृतम् ।  
 रज पूता सुरभ्यां स्याद्यौगिके तु यथायथम् ॥४६२८॥  
 रजोऽह्नि शरदि क्ली स्त्री पुष्पे रेणौ जले स्नाजि ।  
 सत्त्वाद्य यतमे राजौ लोहे तेजसि रेतसि ॥४६२९॥  
 रजस्वलो द्व महिष उदक्यायां रजस्वला ।  
 रजस्वलस्तु रजसा युक्त स्यादाभघेयवत् ॥४६३०॥  
 रजिर्ने द्रपराभूते नृपे वा दानवा तरे ।  
 कस्यांचिद्वनितायां वा रात्रे वेत्याह सायण ॥४६३१॥  
 आयो पुत्रेऽप्याङ्गिरसे रोदस्योर्वे दुस्तर्ययो ।  
 उभारजी रजिस्त्रीवे ऋक्षुदृष्टा दिगर्थिका ॥४६३२॥  
 रज्ज्वराटके स्त्र्यष्टहस्तमानेऽपि रज्जुवत् ।  
 नाडीभेदेऽपि पृष्ठास्थिनिर्गते तारका तरे ॥४६३३॥  
 रञ्जन नील्योषधौ च क्लीब स्याद्रक्तचन्दने ।  
 मन शिलायां तु स्त्री स्याद्वरिद्रायां च रञ्जनी ॥४६३४॥  
 अथ रञ्जयतेरर्थे रञ्जना रञ्जन द्वयम् ।  
 रञ्जसान पुमा मेघे धर्मेऽपि परिकीर्त्तित ॥४६३५॥  
 रणोऽस्त्रिया मतो युद्धेऽतिशब्दे शब्द एव च ।  
 रणकस्तु वियोगे स्यात्पुस्यप्यौत्सुक्य इष्यते ॥४६३६॥  
 रण्डा मूषिकपण्यां स्याद्विधवायामपि स्त्रियाम् ।  
 स्वसम्बन्धाथशून्येऽन्त करणे क्ली नरे तु ना ॥४६३७॥

रतस्त्रि कृतराम च तन्निष्ठे सुरते तु नप ।  
 स्मरे तु रतनारी न नारीणा सीत्कृतौ शुनि ॥४६३८॥  
 रतद्विक स्याद्विसे सुखस्थानेऽष्टमङ्गले ।  
 रतिस्तु सुरतोत्कण्ठापरमप्रीतिषु स्मृता ॥४६३९॥  
 रागे कामस्य भार्याया गुह्यरत्ननदीसृतौ ।  
 रतुदूते पुमान्स्त्री तु नद्या पथि च बन्धने ॥४६४॥  
 रत्न स्रजातिश्रेष्ठोऽप माणिक्यादौ धनेऽम्बुनि ।  
 रत्नगर्भा भुवि स्त्री ना कुबेरे त्रि तु यागिके ॥४६४१॥  
 भवेद्रत्नवर स्वर्णे रत्नाना प्रवरेऽपि च ।  
 रत्नाकरस्तु रत्नानामाकरेऽम्भोनिधावपि ॥४६४२॥  
 रथस्तु स्यन्दने पुसि वेतसे च प्रकीर्तित ।  
 द्वयोस्तु चक्रवाके स्याद्गन्ध्या तु स्त्री रथी स्मृता ॥४६४३॥  
 रथकारस्त्रि तक्षिण द्वे माहिष्यात्करणीसुते ।  
 रथाङ्ग रथचक्रे क्ली स्यन्दनावयवेऽपि च ॥४६४४॥  
 चक्रवाकाह्वये तु स्यात्पक्षिभेदे द्वयोरयम् ।  
 र या रथसमूहे च प्रतोल्या पथि च स्त्रियाम् ॥४६४५॥  
 रथस्य वोढस्वीयादौ रथ्य स्यादभिधेयवत् ।  
 रदो विलेखने पुसि तथा दत्तेऽपि कीर्तित ॥४६४६॥  
 रन्तिदेव पुमाविष्णौ तथैव स्यान्नृपातरे ।  
 रध स्याद्विवरे क्लीबमपराधे च दूषणे ॥४६४७॥  
 राशौ लग्नाऽष्टमे द्वे तु विप्रमयीसमुद्भवे ।  
 रप (पा) ठस्तु द्वयोर्ज्ञेयो मण्डूके विदुषि त्रिषु ॥४६४८॥  
 रभसो वेजसरम्भहर्षेऽथ महति द्वयो ।  
 रमठस्तु द्वयोर्म्लेच्छे त्रिषु क्रीडनशीलके ॥४६४९॥  
 रमणस्तु धवे [कामे नपि क्रीडानितम्बयोः] ।  
 [पटोलमूले नार्या स्त्री रमणी रमणा न ना] ॥४६५०॥

१ रति परप्रीतिरतोत्कण्ठारानो स्मरस्त्रियाम् ।

२ रतिः स्त्री स्मरवारेषु रागे सुरतशुद्ध्यो ।

३ र या रथौचक्षित्वावर्त्तनीषु च अपिपति ।

रसन तु फले स्नेहे निर्यासे हेमरूप्यया ।  
 स्यात्कषायद्रवेऽन्ने च विषऽपि च नपुसकम् ॥४६६४॥  
 आस्वादने तु जिह्वाया शब्दने रसना न ना ।  
 रसवत्रि रसारये रसवती स्त्री महानसे ॥४६६५॥  
 रसायन दीर्घायुष्ट्रमेषजेऽपि रसाश्रये ।  
 रसायन विषेऽपि स्याज्जराव्याधिजिदौषधौ ॥४६६६॥  
 पुल्लिङ्ग पक्षिराजे च विडङ्गारयौषधेऽपि च ।  
 रसालस्तु पुमानिक्षावाग्रेऽपि वरुणद्रुमे ॥४६६७॥  
 समिश्ररसभेदे च कटुतिक्तकषायके ।  
 त्रि तु स्यात्तद्वति स्त्री तु रसाला पानकान्तरे ॥४६६८॥  
 अपक्वतक्र सव्योषचतुर्जातगुडाद्रकम् ।  
 सजीरक यन्निर्दिष्ट पानकतत्र सा भवेत् ॥४६६९॥  
 रसाला रसनादूर्वाविदारीमाजितासु च ।  
 रसिको मद्यभदे स्यादपक्वेश्वरसै कृते ॥४६७०॥  
 रसिकस्तु रसज्ञेऽयमभिधेयवदिष्यते ।  
 रसिका स्त्री रसालेश्वरसयो सरसे त्रिषु ॥४६७१॥  
 रसित मेघनिर्घोषे रुते च स्या नर्पुसकम् ।  
 त्रिषु त्वास्वादिते चैव स्वर्णादिरत्रितेऽपि च ॥४६७२॥  
 रसनो लघुने पुंसि रसहीने तु स त्रिषु ।  
 रसनो दण्डे पुमानश्वे द्वयो रस्न प्रकीर्तित ॥४६७३॥  
 रहोऽव्यय वा विजने [नसत्वे रतिगुह्ययो] ।  
 रहस्या तु नदीभेदे स्त्रिया त्रिस्तु रहोभवे ॥४६७४॥  
 राक स्यादातपे सूर्ये पुमान् राका त्विय स्त्रियाम् ।  
 नद्यन्तरे च कच्छवां च नवजातरज स्त्रियाम् ॥४६७५॥  
 सम्पूर्णदुत्तिथौ पूर्णिमा चेत् प्रतिपद्युता ।  
 राक्षसो यातुधाने द्वे राक्षसी गन्धवस्तुनि ॥४६७६॥

१ स्याज्जातार्त्तकषाययां तथा पूर्णेन्दुपर्वणि ।

२ राक्षसो यातुधाने द्वे राक्षसी गन्धवस्तुनि ।

विवाहभेदे तु त्रिषु गृह्यत योगमिद्यपि ।

वत्सरे चोनपञ्चाने नन्दाऽमास्यान्तरे पुमान् ।

चण्डासङ्गे तथा रात्रौ लङ्काद्वीपेऽपि च स्त्रियाम् ।  
 सायाह्निप्रसूहूर्ते च दध्नाया च प्रकीर्त्तिता ॥४६ ॥  
 नन्दाऽमात्ये विवाहस्य भदे वर्षमुहूर्त्तयो ।  
 यागस्य ना राक्षसस्तु रक्षस्सम्बन्धिनि त्रिषु ॥४६ ८॥  
 रागोऽनुरागे मात्सर्ये रक्तवर्णे रजस्यपि ।  
 लाक्षादिरञ्जनद्रव्ये दीप्तौ क्लेशादिकेऽपि च ॥४६ ९॥  
 लोहितादिषु वर्णेषु गीतिधर्मातरेऽपि च ।  
 रागचूण पुमान्दतधावने मकरध्वजे ॥४६ ८ ॥  
 रागवापूगवृक्षे नात्रि तु रागवति स्मृत ।  
 रागसूत्र पट्टसूत्रे तुलासूत्रेऽपि कीर्त्तितम् ॥४६ ८१॥  
 रागी रक्ते कामुक च वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।  
 राघवो द्वे महातिम्यतरे वश्ये रघोरपि ॥४६ ८२॥  
 रघुसम्बन्धिमात्रे तु राघवस्त्रिषु कीर्त्तित ।  
 राट तु छन्दोविशेषे स्त्री द्वाविंश यक्षरे मता ॥४६ ८३॥  
 अथ राट ऋतुभेदे च पार्थिवेऽपि पुमान्त ।  
 राजकन्या तु राज्ञश्च कन्यायां च नपुंसके ॥४६ ८४॥  
 अपि केसरमालारयझाटे सा परिकीर्त्तिता ।  
 राजजम्बूस्तु जम्बूभित्तिण्डस्तजूरया स्त्रियाम् ॥४६ ८५॥  
 अथ राजतरु कर्णिकारारग्वगृक्षयो ।  
 राजा ना सोमवल्ल्या च चद्रे शक्रे तु पार्थिवे ॥४६ ८६॥  
 क्षत्रिये द्वे प्रभौ तु [यक्षे नाऽथ भवेत्स्त्रियाम्] ।  
 राज्ञी लोहे ब्रह्मरीतिनाम्नि रूप स्त्रियामिदम् ॥४६ ८ ॥  
 राजन सामभेदे क्ली राज्ञ शूद्रासुते द्वयो ।  
 राजय क्षत्रिये राजपुत्रेऽग्नौ क्षीरिकाव्रुमे ॥४६ ८८॥  
 राजपुत्रो महाराजात्र बुधे राजनन्दने ।  
 राजपुत्री तु मालत्यां तित्कालावा च कीर्त्तिता ॥४६ ८९॥

१ चण्डासङ्गे वाच्यवत् रक्ष सम्बन्धिनि त्रिषु ।

मुहूर्त्तवर्षयोगाना भवे स्याद्वाक्षस पुमान् ।

चुछु दर्यामाप स्त्रीत्वे योगार्थे तु यथायथम् ।  
 स्याद्राजबदर रक्तामलके लवणऽपि च ॥४६९॥  
 राजराज कुबेरेऽपि सावभौमे सुधाकरे ।  
 राजवृक्ष समाख्यात सुपर्णाकपिपालयो ॥४६९१॥  
 म थानके समारयातो राजवृक्षस्तृणाधिपे ।  
 स्त्रिया राजसभाराष्ट्रे राज्ञश्चास्थान इष्यते ॥४६९२॥  
 राजसी निशि शैशिया रजोयोगिनि तु त्रिषु ।  
 राजहसस्तु कादम्ब कलहसे नृपोत्तमे ॥४६९३॥  
 द्वयो स्त्रियां राजहसी रसालाभिदि कीर्त्तिता ।  
 राजादन प्रियालद्रौ क्ली पलाशद्रुमे तु ना ॥४६९४॥  
 फलाध्यक्षद्रुमे त्वेष न स्त्री राजादनो मत ।  
 राजार्ह राजयोग्ये त्रि कस्तूर्यण्डे नपुंसकम् ॥४६९५॥  
 जोङ्गके चाथ राजार्हा स्त्री वे जम्बा प्रकीर्त्तिता ।  
 राजिस्तु राजसर्पे चाधोभागे रसनस्य च ॥४६९६॥  
 क्षेत्र कारादिलेखाया पङ्क्तावपि भवेत्स्त्रियाम् ।  
 केदारेऽपि च पङ्क्तौ च राजवृन्दे तु राजकम् ॥४६९७॥  
 राजको राजितर्येष त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 राजिकाक्षवसङ्गे स्त्री विज्ञेया सषपातरे ॥४६९८॥  
 राजीव कमले क्लीष त्रिस्तु तद्वति वस्तुनि ।  
 राजोपजीविनि द्वे तु मत्स्ये हस्तान सारसे ॥४६९९॥  
 राजीवो हरिणारयेपि राजीमत्तिमृगान्तरे ।  
 राठा नीवृत्तिमुखाषु शोभायामपि च स्त्रियाम् ॥४७०॥  
 रातोऽभिधेयवद्चे राती त्री रतयोगिनि ।  
 विहारशीलकयायां रातादान तु नप्स्मृतम् ॥४७१॥  
 रात्रक पञ्चरात्रे ना वेद्यावेश्मा दवासिनि ।  
 द्वे राक्षसे रात्रिचरी रात्रिचारिणि तु त्रिषु ॥४७२॥  
 रात्रिज तारके क्लीष रात्रिजाते त्रिषु स्मृतम् ।  
 रात्रिजागर उक्तो द्वे शुनके त्रिस्तु यौगिके ॥४७३॥

राधा विशाखानक्षत्रे तद्युक्ते कालमात्रके ।  
 कर्णमातरि च स्त्री स्याद्विशाखासम्भवे त्रिषु ॥४७॥ ४॥  
 राधस्तु मासे वैशाखे राधी तत्पूर्णिमा मता ।  
 गधो मासातरे राधा चित्रभेदे च धविनाम् ॥४॥ ५॥  
 गोपीविशाखामलकीविष्णुकातासु विद्युति ।  
 राधन साधने ग्राप्तौ राधना भाषण स्त्रियाम् ॥४॥ ६॥  
 राधस्तु सात क्लीब स्याग्ररूढे च धनेऽपि च ।  
 राधेरक पुमान्सीरे सीरके च धनोपले ॥४॥ ७॥  
 राम परशुरामे ना विष्णौ दाशरथा रतौ ।  
 बलभद्रे ध्वजे शूदे मौलौ लक्ष्मणि कीर्त्तित ॥४॥ ८॥  
 वर्णेषु शुक्लशबलकृष्णषु त्रि तु तद्वति ।  
 चारुप्रधानयोश्चापि रामा तु स्यतरे स्त्रियाम् ॥४॥ ९॥  
 द्विजुनघोस्तथा क्लीब कुष्ठवास्तूकयोरथ ।  
 ना ह्ये पशुभेदे च वरुणे च प्रकीर्त्तित ॥४॥ १॥ १॥  
 रामको रक्तरि त्रि स्यामर्त्यजायन्तरे द्वयो ।  
 रामिलो रमणे कामे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४॥ ११॥  
 राम्भो ना वैणवे दण्डे रम्भासम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 राशि क्रत्वन्तरे पुञ्जे मेषादावाहकेऽपि ना ॥४॥ १२॥  
 साम्नोस्त्वर्गिन नरोवर्गगीतयो स्यान्नपुसकम् ।  
 राष्ट्रस्त्वजन्ये विषयेऽप्यस्त्रियां परिकीर्त्तित ॥४॥ १३॥  
 रास कोलाहले ध्वाने भाषाशृङ्खलकेऽपि च ।  
 क्रीडाभेदे यादवाना पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४॥ १४॥  
 रासेरसस्तु गोष्ठ्यां स्याद्रासशृङ्गारयोरपि ।  
 रससिद्धौ रसावासषष्ठीजागरयोपि ॥४॥ १५॥  
 रास्ना स्त्रीत्वे मता धेनौ सुवारयेपि च भेषजे ।  
 रिक्त शून्ये त्रिषु क्ली तु रेचने ऽ वनेऽपि च ॥४॥ १६॥  
 स्त्रीयमाणतिथिप्रायपक्षे रिक्त पुमान्मत ।  
 रिक्ता चतुर्थनवमचतुदशतिथिष्वियम् ॥४॥ १॥ १॥

१ रामा योषाहिंशुनघो क्लीब वास्तूककुष्ठयो ।

ना राधवे च वरुणे रैणुकेने हलायुधे ॥



रिद्धाऽश्वगतिमदेपि शूकशिम्भ्या च नत्तने ।  
 रित गतौ हिंसनेऽप त्रिगर्त्ते हिंसितेऽपि च ॥४ १८॥  
 रिपु शत्रौ पुमाश्चौरे तथा षष्ठगृहे रिपु ।  
 रिप्र दुखे च पापे च क्लीबलिङ्ग प्रकीर्तितम् ॥४ १९॥  
 रिष्ट वभावे पापेऽथ त्रिर्याप्येऽप्यशुभे शुभे ।  
 खड्गे च फेनिले पुसि रिष्टिरित्यपि रिष्टवत् ॥४ २०॥  
 रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयो ।  
 प्रचारे स्रवणे पडक्तौ स्वभावे पित्तले स्त्रियाम् ॥४ २१॥  
 वैदर्भी मागधी लाटी गौडी पाञ्चाल्यवतिका ।  
 इत्यादि नामधेयासु का यवृत्तिषु चेभ्यते ॥४ २२॥  
 रीतिक रीतिकुसुमे रीतिधातौ तु रीतिका ।  
 री याऽवमाननाया च लजायां स्त्रीत्व इष्यते ॥४ २३॥  
 रुस्तु शदे भये युद्धे विच्छेदेऽपि पुमामत ।  
 रुक्म सुवर्णे तीक्ष्णारये चायोभेदेऽञ्जनातरे ॥४ २४॥  
 रुक्मस्तु निष्कालकारे धत्तरे नागकेसरे ।  
 रुक्मिणी द्वारवत्या दाक्षायणी कृष्णपत्न्यपि ॥४ २५॥  
 रुक्मी तु तद्भ्रातरि पुमास्तथा स्यात्पर्वतातरे ।  
 रुग्णो भग्ने याधिते त्रि क्ली रुग्ण भगरत्रयो ॥४ २६॥  
 रुक्प्रभाकातिवाञ्छासु चकारात्ता स्त्रियां मता ।  
 रुचको विपुले चापि वाच्यवद्गुचिकारिणि ॥४ २७॥  
 अस्त्री दन्तेऽङ्गुलीये च निष्के सौभाग्यभूषणे ।  
 द्वे मातुलङ्गजम्बीरकपोतेष्वेरण्ड एव ना ॥४ २८॥  
 चतुरस्रस्तम्भभेदे पञ्चाना भाग्यशालिनाम् ।  
 ग्रहयोगविशेषेण चैकस्मिन् पवतान्तरे ॥४ २९॥

१ रिष्ट क्षेमाशुभाभावे पुसि खड्गे च फेनिले ।

२ रुक्मस्तु पुसि निष्कालये मती वक्षोविमूपणे ।

३ रुक्तु याधौ अकारान्ता व्यथाया च स्त्रियां मता ।

रुग्ण्याधिव्यययोर्जान्ता स्त्री तथा कृष्टमेव जे ॥

अश्वभूषा तरे तु क्ली मायेऽपि रुचक मतम् ।  
 सौवर्चले विडङ्ग च क्षारे च मधुरद्रवे ॥४ ३ ॥  
 गोरोचनायां रुचिकृद्द्रव्यभेदेऽपि कीर्तितम् ।  
 उत्तरालिन्दशून्ये च रुचक मन्दिरान्तरे ॥४ ३१॥  
 रुचि स्त्री दीप्तिशोभाभिलाषाभिष्वङ्गरश्मिषु ।  
 रतबधातरे चैव रोचनायां मता रुचि ॥४ ३२॥  
 वृक्षाम्लसङ्गे तित्तिण्या फले स्त्री देवतातरे ।  
 आकूतेस्तु पुमापत्यौ यज्ञस्य पितरि स्मृत ॥४ ३३॥  
 क्लीब रुचिफल बिम्बीफले पारेवतेऽपि च ।  
 रुचिभर्ता पुमासूर्ये पत्यावपि रुचेर्मत ॥४ ३४॥  
 रुचिराऽतिजगयन्तवृत्तरोचनयो स्त्रियाम् ।  
 वाच्यवत्सुन्दरे चैव दीप्तेऽपि रुचिकारिणि ॥४ ३५॥  
 क्ली कुङ्कुमे रुधिरवल्लवङ्ग सुषिर यथा ।  
 कैश्चिदुक्त मूलकेऽपि रुचिर स्या नपुंसकम् ॥४ ३६॥  
 रुचिष्य स्वदमाने त्रि खद्योते तु द्वयोर्मत ।  
 रुचिष्य श्वेतलवणे क्लीबलिङ्ग प्रकीर्तितम् ॥४ ३ ॥  
 रुय पत्यौ च कतके विवे शालौ पुमानथ ।  
 रुच्या तु ककटीभेदे कृष्णजीरे तथा स्त्रियाम् ॥४ ३८॥  
 रुच्य सौर्वर्चले क्लीब भूषणेऽपि विलेपने ।  
 रुचिकारिण्यय रुच्यो वाच्यवत्परिकीर्तित ॥४ ३९॥  
 रुक व्याधिव्यधयोर्जाता स्त्री तथा कुष्ठमेषजे ।  
 रुजा भङ्गजरामृत्युरोगेषु स्त्रीव इष्यते ॥४ ४ ॥  
 मेघ्यामपि तथा कुष्ठमेषजे भङ्गके त्रिषु ।  
 रुजाकरो रोगकरो कमरङ्गफलेऽपि च ॥४ ४१॥  
 रुजासहो रोगसहे परुषेऽपि तथा पुमान् ।  
 रुणि क्रमुकमदेऽपि दुष्टदेवश्रुतौ स्त्रियाम् ॥४ ४२॥

हिमालयोपत्यकाया प्रयुक्ताऽऽमरुत्फले ।  
 रुण्डो नृजातिभेदे द्वे वरुटीशूद्रसम्भवे ॥४ ४३॥  
 चतुष्पाज्जातिभेदे च स्यादश्वावेसरोद्भवे ।  
 कबधे तु पुमाण्ड खण्डिते वेष वाच्यवत् ॥४ ४४॥  
 रुण्डिका युद्धभूद्वारपिण्डीदूतीविभूतिषु ।  
 रुत क्लीब रवे प्रोक्त विच्छिन्ने वाच्यवन्मतम् ॥४ ७४५॥  
 रुद् स्त्रिया रोदनयाभ्यो रोदके पुत्तरस्थित ।  
 रुदथस्तु शिशुच्छात्रकुक्कुटेषु शुनिद्वयो ॥४ ४६॥  
 रुदित क्ली रोदनेऽथ त्रि साक्रन्दे च शोचिते ।  
 रुद्रस्तु नाशिवेजनौ च रुद्राणी पावती स्त्रियाम् ॥४ ४ ॥  
 देवभेदेषु मात्रेषु भीमे स्तोतरि च त्रिषु ।  
 अजैकपादहिबुधो हरो निर्ऋत ईश्वर ॥४ ४८॥  
 भ्रवनोऽङ्गारको मृयुरर्धकेतुकपालिनौ ।  
 सर्वश्चेत्येकादशमी रुद्रा वायव्यकीर्त्तिता ॥४ ४९॥  
 स्यादेकादशसखाया प्रथमे च मुहूर्त्तके ।  
 एकारवीणातरयो कोशकारातरेऽपि च ॥४ ७५ ॥  
 रुद्रा तु स्याल्लताभेदे स्त्रीभूमि चर्यमाशुषु ।  
 शतसरयेषु ये ताप वितरन्त्यथ च स्त्रियाम् ॥४ ५१॥  
 स्याद्भुद्रतनयो दण्डे तथा खड्गेऽपि पुंस्ययम् ।  
 रुद्रपत्नी तु दुर्गायामतस्याश्च प्रकीर्त्तिता ॥४ ५ ॥  
 रुद्रप्रिया तु पावत्या हरीतक्यामपि स्मृता ।  
 रुधिराङ्गारके चाथ शोणिते कुङ्कुमेऽपि नप् ॥४ ५३॥  
 रुमा सुग्रीवदारषु विशिष्टलवणाकरे ।  
 रुम्रस्त्र्यस्रते चैव विनाशेऽपि पुमा मत ॥४ ५४॥  
 ब्राह्मणे तु द्वयोरुग्रो दर्शनीये तु स त्रिषु ।  
 रुरु प्रमद्वारायाश्च पत्यौ ना मृगदैत्ययो ॥४ ५५॥

रुक्थो ना ध्वनौ द्वे तु कुक्कुटे शकुनावपि  
 रुशद्रणविशेषेण युक्त वाक्येऽप्यमङ्गले ॥४ ५६॥  
 हिंसितर्यपि पूर्वत्र स्यर्थे स्याद्गुशतीति हि ।  
 रुह्मा पुमाप्रावृषि च तथा प्रावृडवनस्पतौ ॥४ ५७॥  
 रुह्वरीति स्त्रियामेषा वसुधारां प्रकीर्त्तिता ।  
 रुक्ष क्ली निशरे दग्नि त्रिष्वप्रेम्ण्यपि चिकणे ॥४ ५८॥  
 पादपे तु पुमानेष रुक्ष सम्परिकीर्त्तित ।  
 रुक्षणी यागवीथौ स्यात्स तु शीथुनि नामत ॥४ ५९॥  
 अथ रुक्षयितये च सरुक्षणहिते त्रिषु ।  
 रुक्षस्वरो गदभे स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ॥४ ६०॥  
 रुढो यवे ना क्ली जाते प्रसिद्धे वा यवश्च स ।  
 कुतप्ररोहणे शदेऽवयवार्थबहिष्कृते ॥४ ६१॥  
 रूप स्वभावसौंदर्यश्लोकाकृतिवपुषु च ।  
 शब्दे च नाटके नाटकादौ शुक्लादिकेष्वपि ॥४ ६२॥  
 ग्रथावृत्तौ च मृगजात्यतरे तु द्वयोरयम् ।  
 रूपणे तु पुमानेव रूप एष प्रयुज्यते ॥४ ६३॥  
 रूपक नाटके मूर्त्ते काव्यालङ्करणेऽपि च ।  
 रूप्य विभूषणे हेम्नि रजते चाहते मतम् ॥४ ६४॥  
 अथ प्रशस्तरूपेऽपि रूपणीये च वाच्यवत् ।  
 रेको विरेके शङ्कायां रेक स्यादवमेऽपि च ॥४ ६५॥  
 रेखा तु कृत्रिमे मार्गे हस्तपादतलादिषु ।  
 निरतरालपङ्क्तौ च [चिह्ने रेखा प्रकीर्त्तिता] ॥४ ६६॥  
 रेचना रेचयत्यर्थे न ना रिक्तौ तु रेचनम् ।  
 रेचनी दन्तिकागुमे कम्पिल्ले त्रिष्वदोषधौ ॥४ ६७॥  
 क्लीव रेचितमावक्रवृतात्पाश्वगतौ मतम् ।  
 वियोजने च भ्रुकुटौ कृतायामेकया भ्रवा ॥४ ६८॥

मत रेचयतेरर्थे तथा सम्पचनेऽपि च ।

रेचित वायवत्प्रोक्त सम्पृक्त च वियोजिते ॥४७६९॥

कर्मभूते रेचयतेस्तथोक्तगतिमत्यपि ।

रेटि स्त्री वह्निरटिते सयतोत्कटवाचि च ॥४७ ॥

तित्रिटीके स्पृहाया च तथा कात्यचिषोरपि ।

रेणु स्त्रियां हरण्वारयभपजे परिकीर्त्तिता ॥४ १॥

स्त्रीपुसयोस्तु पांसौ स्यात्सरेण्वष्टकेपि च ।

रेणुका तु हरेणौ स्त्री जमदग्नेश्च योषिति ॥४ ७२॥

रेतो जले च शुक्रे च सात क्ली पारदेऽपि च ।

रेत्र रेतसि पीयूषे पटवासे च स्रतके ॥४ ३॥

रेपा स्यादधमे क्ररे कृपणेऽप्यभिधेयवत् ।

रेफस्तु पुसि मूधयोतस्स्थावर्णे प्रकीर्त्तित ॥४ ४॥

वायवत्तु मतो रेफ स्तोतर्यपि च कुत्सिते ।

रेरिहाणस्तु पुसि स्यामहादेवेऽम्बरेऽपि च ॥४७ १॥

रेवट दक्षिणावत्तशङ्खे क्लीब प्रकीर्त्तितम् ।

रेणुवातूलयो पुसि विषवैद्ये पुनद्वयो ॥४ ६॥

रेवती बलभद्रस्य पत्न्या गवि च पौष्णम् ।

तद्युक्ते कालमात्रे च तत्र जातस्त्रिया तथा ॥४ ॥

मालत्यां नागदन्तारयस्तम्बे मातृषु च स्त्रियाम् ।

केषुचित्सामभेदेषु रेवत्य इति भूमिनि च ॥४ ८॥

प्रत्येक स्युस्तृचे चापि रेवतीर्न उपक्रमे ।

[रेवा नील्योषधौ रत्यां नर्मदारयनदीभिदि] ॥४ ९॥

रैशब्दो द्वे धने स्वर्णे मेघे त्वेष पुमान्त ।

रैवतोऽद्वौ शिवे मेघारग्वधाऽद्रथन्तरेषु च ॥४ ८ ॥

सम्बन्धिनि तु रेवत्या रैवत मेघवन्मतम् ।

रोको दीप्तौ बिले रोक नौकाक्रयणभेदयो ॥४ ८१॥

रोग कुष्ठौषधे व्याधौ [तथाऽऽधौ परिकीर्त्तितः] ।

रोचकस्तु पुमान्द्विस्तिकर्ण इत्यतिविश्रुते ॥४ ८२॥

कम्बलस्य ग्रमेदे स्यात्त्रितु रोचितरि स्मृत ॥४ ८३॥  
 रोचना रक्तक हारे ककशावारयोषितो ।  
 रोचनी तु त्रिष्टुद्रल्या गोपित रोचना मता ॥४ ८४॥  
 मन शिलायां काम्बयसङ्गवृक्षेपि च स्त्रियाम् ।  
 रोचन कूटशाल्मल्यां रोचत्यर्थे तु रोचनम् ॥४ ८५॥  
 रोचना रोचयत्यर्थे न ना त्रिषु तु रोचके ।  
 रोड क्षोदे भवे पुसि तृप्ते स्याद्वाच्यलिङ्गक ॥४ ८६॥  
 रोडा तु पासुलाया स्त्री त्रिषु हस्तादिवर्जिते ।  
 रोदनी तु यवासेऽथ रोदन रुदिताश्रुणो ॥४ ८७॥  
 रोद क्ली रोदसी च स्त्री द्वय ज्योम्नि तथा भुवि ।  
 सहोक्तौ तु भवेवद्यावा पृथियो रोदसी इति ॥४ ८८॥  
 रोधस्तीरेऽन्तरिक्षे च पृत्तौ कुड्ये च बधने ।  
 रोधसी इति तु द्वित्वे रोदसोरिदमुच्यते ॥४ ८९॥  
 रोध्रो ना सावरे क्लीबमपराधे च किल्बिषे ।  
 रोपस्तु रोपणेऽपि स्यात्तथा बाणे पुमामत ॥४ ९०॥  
 रोपणस्तु शरे पुसि त्रि तु रोहणसाधने ।  
 रोपणा रोहणाया च मता क्लीबे स्त्रियामपि ॥४ ९१॥  
 रोमशस्तु द्वयोर्मेषे ना निम्बे ऋषिभिद्यपि ।  
 रोमशा तु स्त्रिया शूकशिण्या कासीस इष्यते ॥४ ९२॥  
 काकजङ्घासहामांसीमेदासु त्रिस्तु लोमशे ।  
 रोमहषण [सूतमुनौ रोमाश्चजनके त्रिषु] ॥४ ९३॥  
 रोषणस्तु पुमा स्वर्णकषणग्राणि पारदे ।  
 क्रोधने रोषशीलार्थे त्रिषु स्यादूषरेऽपि च ॥४ ९४॥  
 रोहक प्रेतमेदे ना रोहरि त्रिषु विश्रुत ।  
 रोहती स्त्री लतायां स्याद्रोहतस्तु पुमाद्भुमे ॥४ ९५॥  
 रोहतो मेघवच्चैष रोहतादिति कत्तरि ।  
 रोहिणी लोहिनीपथ्याऽत्तसीकयासु गायपि ॥४ ९६॥

कण्ठरोगप्रभदे च नक्षत्रे च प्रजापत ।  
 तद्युक्ते कालमात्रे च तत्रजातस्त्रियामपि ॥४९॥  
 [एकत्र कृष्णपत्नीषु मूलम च तडियपि] ।  
 रोहिदग्निहये पुस वणभेदेऽर्क एव न ॥४९॥  
 त्रि तु तद्वणवत्येष वायवत्तु द्वयोर्मत ।  
 स्त्रिया त्वृश्यस्य भार्याया नद्यङ्गुलिलतासु च ॥४९॥  
 रोहित पुसि वृषभ रक्तवर्णे प्रकीर्तित ।  
 रक्ते वर्णेऽथ तद्युक्त रोहिता रोहिणी त्रिषु ॥४८॥  
 द्वे श्वेतराजिमृगभिद्यश्चमत्स्यातरे वपि ।  
 रोहिणी तु स्त्रिया रक्तवर्णाया गनि कीर्तिता ॥४८॥  
 रोहित कुङ्कुमे घासे ऋजौ शक्रशरासने ।  
 रोहिताश्वश्चित्रभानौ हरिश्च द्रनुपामजे ॥४८॥  
 रोही रोहितकदौ ना रोहवत्येष वाच्यवत् ।  
 रोहिषो गदभाभासमृगभिन्मत्स्यभेदयो ॥४८॥  
 कचृणाकाशयो स्त्री तु वात्याया रोहिषी स्मृता ।  
 रौद्रो न स्त्री भवेद् घर्मे कायस्य च रसातरे ॥४८॥  
 शिवशक्त्यतरे चैवोग्रताचण्डिकयो स्त्रियाम् ।  
 एकस्या सप्तमातृणां त्रि तूये रुद्रयोगिनि ॥४८॥  
 रौरव सामभेदेऽपि पुमांश्च नरकातरे ।  
 रुरुसम्बन्धिनि त्वेष वायव च भयङ्करे ॥४८॥  
 रौहिणेयो बुधेऽपि स्याद्वलभद्रे तथा पुमान् ।  
 स्यादपत्ये तु रोहिण्या रौहिणेयो द्वयोरयम् ॥४८॥  
 रौहिष कत्तणे क्लीब पुसि स्याद्वरिणातरे ॥४८॥

ल

लक्तिका गवि गोधाया वाद्यभेदेऽपि च स्त्रियाम् ॥४८॥

१ रोहित ऋषिजौ शक्रचापे चापि तृणे पि च ।

पुसि स्यान्मीनमृगयोभेदे रोहितकद्रमे ।

लक्ष शरये क्लीब स्यालक्षोऽस्त्री याज इष्यत ।  
लक्ष करुणवृक्षे ना दर्शनाङ्कनयोरपि ॥४८९॥  
अयुते तु दशाम्यस्ते लक्ष लक्षा च नप्त्रियो ।  
लक्षण कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्कसम्पदो ॥४८९॥  
भक्त्या स्त्री लक्षणा स्यात्तु सारस्या दशनाङ्कयो ।  
लक्ष्मण सारसे द्व स्यात्पुमान्नामानुजे मत ॥४८९१॥  
प्रियाया सारसस्य स्यालक्ष्मणा लक्ष्मणीति च ।  
स्त्रिया लतातरे पुत्रजननीनाम्नि लक्ष्मणा ॥४८९२॥  
योतिष्मत्योषधौ चापि स्यात्त लक्ष्मवति त्रिषु ।  
लक्ष्मचिह्ने प्रधाने च प्रोक्त नात नपुसकम् ॥४८९३॥  
लक्ष्मी श्रीभूतिशोभासु ऋद्विशुद्धयौषधद्वये ।  
लवङ्गे नवशक्तीनां विष्णोरेकत्र च स्त्रियाम् ॥४८९४॥  
लक्ष्मीपतिर्नृपे चापि विष्णावपि पुमान्त ।  
लक्ष्मीपुत्रो द्वयोरश्वे श्रीसुतेऽथाढ्यके त्रिषु ॥४८९५॥  
लक्ष्मीवाञ्छ्रीमति त्रि स्यात्कतकारयद्रुमे तु ना ।  
लक्ष्य शरये क्ली श दे सिद्ध लक्षणतस्तथा ॥४८९६॥  
द्रष्टव्ये त्वङ्कनीये च लक्ष्य स्यादभिधेयवत् ।  
लग्न राशुदये क्लीब सत्कलजितयोस्त्रिषु ॥४८९७॥  
लघ्वन्मेषे टकारान्तो वायावपि पुमान्त ।  
हिरण्यमाषकस्यापि भेदे स्त्री त्वप्सरस्यसौ ॥४८९८॥  
लघ्वसारेष्टरम्या पशीघ्रे प्रतिभटे गुरो ।  
एकमात्रस्वरे चैषु स्त्र्यर्थे लङ्नी लघुस्तथा ॥४८९९॥  
अथ क्लीब लघुशरिरेऽप्यगुरावपि कीर्तितम् ।  
गुग्गुलौ तु पुमान्स्त्री तु स्पृक्कायां स्यन्दनातरे ॥४८९०॥  
लङ्का रक्ष पुरीशाखाशाकिनीकुलटासु च ।  
लङ्ग सङ्गे च षिङ्गे च पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥४८९१॥  
लङ्गन तु गतौ क्लीब लङ्गनी तु स्त्रियामियम् ।  
वस्त्रलम्बनदण्डे स्यात्तिरश्चीने गृहादिषु ॥४८९२॥



लङ्ककखिलद्वितरि द्व तु रङ्गोपजीविनि ।  
लङ्कनतूपगासे स्यात्क्रमणे प्लवनेऽपि च ॥४८२३॥  
लज्जालु स्त्री नमस्कार्यारयेऽनूपलता तरे ।  
शमीफलारये सलिलोद्भूतव ल्य तरेऽपि च ॥४८२४॥  
लज्जालुर्वायव चैष लज्जाशीले प्रकीर्तित ।  
लटव कटाह लटवा तु कुसुम्भे पक्षिभिद्यपि ॥४८२५॥  
लटवा करञ्जभेदे स्यात्फले वाद्य स्त्रियामियम् ।  
लडहो ना विलासे त्रिविलासवति सुन्दरे ॥४८२६॥  
लता तु बल्या शाखाया प्रियङ्गुस्पृक्कयोरपि ।  
लता बृहत्यामपि च ज्योतिष्मत्यतिमुक्तयो ॥४८२७॥  
तथैव शारिवायां च माधवीदूवयोस्त्रियाम ।  
लधवण पण्डिते त्रिर्योगार्थे तु यथायथम् ॥४८२८॥  
लभ्य याप्ये च ल धव्ये वाच्यवत्परिकीर्तितम् ।  
लम्पाको लम्पटे देशे पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥४८२९॥  
लम्बस्तु लम्बने पुसि स्त्रियां चैव प्रकीर्तित ।  
लम्बकर्ण स्मृत कोहपादपे छगलेऽपि च ॥४८३०॥  
लम्बन शकुने द्वे स्याल्लम्बनम्भूषणे मतम् ।  
ललन्तिकासमारयेपि तथा लम्बनकर्मणि ॥४८३१॥  
लम्बा पद्मालयागौर्योस्तिक्ततुम्यामपि स्त्रियाम् ।  
लम्बा स्त्रीभूमिभेदेऽपि तथोत्कोचे प्रकीर्तिता ॥४८३२॥  
लम्बोदरो विघ्नराजे विशेषे नृपतौ तथा ।  
लयो विनाशे सश्लेषे साम्ये तौर्यत्रिके मतम् ॥४८३३॥  
लर्जुशब्दो मत स्त्रीत्वे वणिग्यपि च विद्युति ।  
लल तु पल्लवेऽपि स्यादुद्यानेऽपि नपुसकम् ॥४८३४॥  
ललजिह्वोऽयवत् हिंस्रे क्रमेलकशुनो पुमान् ।  
ललत् त्रिषु विलासस्य कर्चर्येतत्प्रकीर्तितम् ॥४८३५॥  
लम्बनारये त्वलङ्कारे ललन्ती स्त्रीत्व इष्यते ।  
ललना कामिनीजिह्वानाडी [पञ्चाचारसर्जयो] ॥४८३६॥

नपुसक तु ललन विलासे परिकीर्तितम् ।  
 ललाटिका ललाटस्थपत्राङ्गुल्यां प्रकीर्तिता ॥४८३७॥  
 तथैव पत्रपाश्यायामपि स्त्रीलिङ्ग इष्यते ।  
 ललामोऽस्त्री ध्वजे चिह्ने प्रभावे पुरुषे नृपे ॥४८३८॥  
 छत्रे धाम्नि पशो शृङ्गे पुण्ड्र पुच्छे च भूषणे ।  
 वाच्यवल्लिङ्गिनि श्रष्टेऽथ ललामो द्वयोहये ॥४८३९॥  
 ललित हारमदे क्ली लसितेऽथ त्रिरीप्सिते ।  
 लवश्छेदे च लेशे च काले नाशे च राघवे ॥४८४०॥  
 लवणो दैत्यभेदे च पुमा पटुरसेऽप्यथ ।  
 लवणद्रयससृष्ट त्रि स्यापटुरसान्विते ॥४८४१॥  
 लताभेदे तु लवणी क्ली तु स्यासैधवादिषु ।  
 [ना तु सिधौ च लवणी नदीभेदद्विषो स्त्रियाम्] ॥४८४२॥  
 लवानकस्तु कालेऽपि दात्रेऽपि तृणभिद्यपि ।  
 लब्धो (ष्यो) द्वयोरपये स्याद्विस्थाने तु पुस्ययम् ॥४८४३॥  
 ला स्त्रीलिङ्ग हि दाने स्याद्ग्रहणेऽपि निगद्यते ।  
 लाक्षा चलक्तकेऽप्यथर्वणोक्तेऽपि लतातरे ॥४८४४॥  
 लाक्षावृक्ष पलाशे पुम् कोशाम्रऽपि प्रकीर्तित ।  
 लाक्षिको लाक्षयारक्ते लक्षमूल्ये च मेघवत् ॥४८४५॥  
 लाङ्गल तु हले गेहदारुपुष्पविशेषयो ।  
 ताले मेद्रे [च पुच्छे च लाङ्गल] कस्यचिन्मतम् ॥४८४६॥  
 लाङ्गल्यग्निशिखातोयपिप्लीशालिभित्स्वपि ।  
 मञ्जिष्ठानारिकेयोश्च रास्नायामपि कीर्तिता ॥४८४७॥  
 नदीभेदेऽथ चरक शालिभेदेऽवदन्नरम् ।  
 नृभूमि लाङ्गला शाखाभि नृजातिभिदोरपि ॥४८४८॥  
 स्याल्लाङ्गले लाङ्गलकमथ लाङ्गलिका स्त्रियाम् ।  
 भवेदग्निशिखायामप्यथ लाङ्गलकी मता ॥४८४९॥  
 विषभेदे लाङ्गलिको नृभू सामगशास्त्रिषु ।  
 लाङ्गली बलदेवे नालिकेरे ना त्रियौगिके ॥४८५०॥

अथ लाङ्गलिनी लाङ्गलिक्यां स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।  
 लाङ्गूलवलाङ्गुल क्ली कीर्त्तित मेढपुच्छयो ॥४८११॥  
 लाङ्गूली पृश्निपर्ण्या स्याल्लाङ्गूल मेढपुच्छयो ।  
 लाङ्गूली वानरे कदमेदे हैमवतेऽपि ना ॥४८१२॥  
 लाङ्गूलिनी नदीमेदे लाङ्गुयपि च सा मता ।  
 लाज क्लीबमुशीरेऽथ स्त्रियां पुभूमि चाक्षते ॥४८१३॥  
 मृष्टधायेऽपि च स्त्रीत्वे किंवा पुभूमि कस्यचित् ।  
 लाञ्छनी स्त्री च मुद्राया क्लीचिह्नाङ्गननामसु ॥४८५४॥  
 लाटो देशातरे वस्त्रे लाटदेश्येषु भूम्ययम् ।  
 लातशब्दस्तु पुल्लिङ्गो वृत्तिकादानभाजने ॥४८५५॥  
 आत्त तु भेद्यलिङ्ग स आदाने तु नपुंसकम् ।  
 लाव पक्षिविशेष द्वे [लावा रूप स्रयाम्भवेत्] ॥४८५६॥  
 लालिकाऽश्वनसो रजौ त्रिस्तु स्याल्ललितर्यपि ।  
 बालानुकृतिशब्दे तु लालक परिकीर्त्तित ॥४८५७॥  
 लालना लालयत्यर्थे न ना सजरसे तु ना ।  
 द्वयोस्तु मूषिकाकारसविषप्राणिभिद्यपि ॥४८५८॥  
 लालसा तु न नौत्सुक्ये प्रार्थनायां च दोहदे ।  
 अतिमात्रामिलाषेऽथ स्त्री छन्दोगिनीभिदो ॥४८५९॥  
 लाला मुखजले काञ्च्या कात्याश्च लवलीद्वये ।  
 द्वयोस्तु लालो मैत्रेय ब्राह्मणीसम्भवे मत ॥४८६०॥  
 विलासे तु पुमाल्लाल स्यादुपक्रन्दने तु नप् ।  
 स्यादुपच्छन्दने लाल गुह्यार्थपरभार्ययो ॥४८६१॥  
 लालाटी तु ललाटे स्त्री ललाटयुजि वाच्यवत् ।  
 लालाटिक प्रभोर्भावदर्शि याश्चेषणान्तरे ॥४८६२॥  
 कार्याक्षमे [चैव पुमामतोऽय शब्देदिभि] ।  
 लालासावस्तु लतायां द्वे लालास्रवणे पुमान् ॥४८६३॥

लावश्छेत्तयुत्तरत्र त्रिर्द्धे लावारयपक्षिणि ।

लावणी स्त्री नृत्यगीतमिदोलवणयोगिनि ॥४८६४॥

लवण यस्य पण्य त्रिस्तत्र लावणिको मत ।

[कलीवे लावणिक प्रोक्तम्पात्रे च लवणस्य तु ॥४८६५॥

लास स्यान्नर्त्तने पुसि मांसमूषे तथा मत ।

स्त्री लासिका स्यान्नर्त्तक्यां त्रिषु स्यालसितर्यपि ॥४८६६॥

लासको ना शिवे वेष्टे न स्त्री स्यादायुधातरे ।

इ मयूरे दृश्यकायविशेषे लासिका स्त्रियाम् ॥४८६७॥

लासिका लासकी नत्तक्यामद्वे लासक नपि ।

लास्य तौर्यत्रिके नृत्ये लास्या द्वे नृत्यकारिणि ॥४८६८॥

लि कलमेऽन्ते क्षये साम्ये कङ्कणेऽपि पुमामत ।

लिकुचो लकुचे पुसि लिकुच फलभक्षणे ॥४८६९॥

लिक्ष लिक्षोऽपि लिक्षा च यूका डे मानभिद्यपि ।

लिखिर्ना लिखनौ द्वे तु शिल्पिनि त्रिस्तु पण्डिते ॥४८ ॥

लिखित कृतलेखादौ लिखित स्मृतिकृद्भिदि ।

लिगुर्गोत्रातरे मन्त्रे द्वारभूमिप्रदेशयो ॥४८ १॥

ना द्वयोस्तु मृगे क्ली तु हृदये लिगु कीर्त्तितम् ।

लिङ्ग बुद्धयादिसहत्यां सारयानां प्रकृतावपि ॥४८ २॥

स्त्रीपुसादेश्च सस्थाने शरीरे चिह्नशेफसो ।

प्रव्रयायामवयवे वेषे बुद्धयनुमानयो ॥४८ ३॥

शिवमूर्त्तिविशेषेपि पुराणे लिङ्गनामके ।

लिङ्गकस्तु कपिथ स्याल्लिङ्गिकाभेषजातरे ॥४८ ४॥

लिङ्गज स्याच्छिश्नमले लिङ्गजा भेषजातरे ।

लिङ्गी परशुरामे ना लिङ्गव्यव्यक्ते नपुसकम् ॥४८ ५॥

लिङ्गिन केपि शैवा स्युर्लिङ्गिनी भेषजातरे ।

लिङ्गुर्गोत्रातरे मस्तौ चित्तपि च पुमामत ॥४८ ६॥

चित्रकारे लिपिकरो लेखकेऽपि च वायवत् ।  
 लिप्त क्ली भोजने लेपे त्रिस्तु दिग्धे विषादिना ॥४८॥  
 श्रुक्तऽपि लिप्ता तु स्त्रीत्वे मता षष्टितमांशके ।  
 लिम्पाको गदभे द्वे स्याज्जम्बीरे तु मत पुमान् ॥४८॥  
 ली श्लषणे च चपले स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ।  
 लीलाविलासे क्रीडायां छदोभिद्योगिनीभिदो ॥४८७९॥  
 शृङ्गारभावचेष्टायाम् (अपि स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता) ।  
 लीलाखेलस्त्रि सलीले क्ली तु छदोभिदि स्मृतम् ॥४८८॥  
 लीलावासविलासे त्रि स्त्रिया लीलावती मता ।  
 दुर्गायाम्भास्कराचार्यपाटीगणितपुस्तके ॥४८८९॥  
 लुञ्चको लुञ्चनकृति त्रिर्ना धान्या तरे मत ।  
 लुण्ठाकस्त्रिषु चोरे स्याद्द्वयो काके प्रकीर्त्तित ॥४८८२॥  
 लुण्ठन दस्युकार्ये क्ली लुञ्चने लुठनेऽपि च ।  
 लुण्ठाकस्त्रिषु चोरेऽथ काके स्त्रीपुंसयोर्मत ॥४८८३॥  
 लुण्डी तु लुण्डिकायां च निगमेऽपि स्त्रियाम्मता ।  
 लुप्त लोपेऽपि लुप्ते तु लुप्स्यादेशोऽभिधेयवत् ॥४८८४॥  
 लुधो याधे पुमांस्त्रिस्तु कदर्येच्छावतोरयम् ।  
 लुधकस्तु मतो याधे तथार्द्रायामपीष्यते ॥४८८५॥  
 लुम्बिका मक्ष्यभेदेऽप्युलुम्बारये बाधभिद्यपि ।  
 स्यास्त्रिषु त्वदनारयस्य लुधनस्य च कर्त्तरि ॥४८८६॥  
 लुशभो मत्तकरिणि लुशभ तु वने स्मृतम् ।  
 अथ लूतश्च विच्छिने वायवत्परिकीर्त्तित ॥४८८७॥  
 लूता चर्मगदेऽप्युणनामे चापि पिपीलके ।  
 लूतो मर्कटके पुत्रीनवमालिकयो स्त्रियाम् ॥४८८८॥  
 लूनश्छिने त्रिषु प्रोक्तो लून पुच्छे नपुंसकम् ।  
 लूनको द्वे पशौ प्रोक्तो भेदिते वायवन्मत ॥४८८९॥  
 लूनिश्छेदे स्त्रियामुक्ता तथा शालौ प्रकीर्त्तिता ।  
 लेखो देवे द्वयोर्ना तु लेख्ये चैव विलेखने ॥४८९॥

लेखा लिपौ कृत्रिमाया सरयाने राजिसीमयो ।  
 आभोगचूडाग्रशिखाकलास्वपि तथा स्त्रियाम् ॥४८९१॥  
 लेखन लिखतेरथे साधने लेखकर्मण ।  
 लिपियासे छदने च भूर्जे चापि नपुसकम् ॥४८९२॥  
 लेखनिक कथितो लेखहारके पुस्त्रियोरयम् ।  
 लेखेषु परहस्तेन स्वहस्तस्य च लेखके ॥४८९३॥  
 लेखनी तूलिकायां स्त्री त्रिस्तु लेखनसाधने ।  
 लेख्य नपुसक पत्रे सरयाया लिखिताक्षरे ॥४८९४॥  
 लेख्यो लेखयितये च लेखितयेऽपि च त्रिषु ।  
 लेख्यपत्रो मतस्ताले लेखपत्रे पुननपि ॥४८९५॥  
 लेहा तु मृदुवातं ना लेहके तु त्रिषु स्मृत ।  
 लेपस्तु भोजने लिप्तिक्रियायां रोगभिद्यपि ॥४८९६॥  
 लेपन चन्दनादौ च मांसेऽपि रुधिरं नपि ।  
 ना तु लिप्तिक्रियाया स्यात् त्रि तु त साधने मतम् ॥४८९७॥  
 लेभ्य तु लेपनीये त्रि क्लीब स्यात्पुस्तकर्मणि ।  
 लेयस्तु सिंहराशौ ना स्यादादेये तु मेघवत् ॥४८९८॥  
 लेलिह कृमिभेदेऽपि सर्पे चापि द्वयोर्मत ।  
 लेलिहा तु स्त्रियामेषाऽङ्गुलिमुद्रातरे मता ॥४८९९॥  
 लेलिहानस्तु सर्पे द्व शिवे ना रेरिहाणवत् ।  
 लेलिहाना स्त्रियामेषाऽङ्गुलिमुद्रातरे मता ॥४९०॥  
 मुहुर्लेहः तु त्रि वे लेलिहान प्रकीर्तित ।  
 लेष कलाद्वयमिते काले सूक्ष्माश्च एव च ॥४९१॥  
 गीतभेदे कणायाश्च नाट्यालङ्कारणातरे ।  
 लेहस्तु लेहने [पुंसि तथा लेहनकर्मणि] ॥४९२॥  
 लेहनस्तु शुनि द्वे स्याचौर्यग्रासिनि तु त्रिषु ।  
 सौवचलद्रवे वल्ली लोहिते जारणाङ्गये ॥४९३॥  
 तथा लेह्यते कर्मभूते स्याल्लेढिकर्त्तरि ।  
 लेही त्वेषा स्त्रियां कणशङ्कुलीरोगभिद्यपि ॥४९४॥

लेह्य त्रिलेहनीयं स्यादमृते तु नपुसकम् ।  
 लैङ्ग पुराणभेदे क्ली लङ्गी स्याद्भषजातरे ॥४९५॥  
 लेलिहानो द्वयो सर्पे मुहुर्लेहरी तु त्रिषु ।  
 लोको जने च स्थाने च त्रिष्टप सामाभद्यपि ॥४९६॥  
 लोककर्त्ता पुमात्रिणौ शिवे ब्रह्मणि चक्ष्यते ।  
 लोककाताषधमिदि लोककातो जनप्रिये ॥४९७॥  
 लोककृत् स्थानकृल्लोकस्त्वष्टा वा परिकीर्त्तित ।  
 लोकनाथो ब्रह्मविष्णुशिवतुद्धनृपेष्पि ॥४९८॥  
 रसातरे तथैवावलोकितेश्वर उ यते ।  
 लोकपालस्तु शुक्रादौ राजन्यपि पुमांमत ॥४९९॥  
 लोकव धु शिवे चैव द्वये चापि पुमांमत ।  
 लोकमाता तु दुर्गायां लक्ष्म्या चैव प्रकीर्त्तिता ॥४९९॥  
 लोकम्पृणो लोकसुख त्रि स्त्री स्यादिष्टका तरे ।  
 अथ लोकविसर्ग स्या प्रलये [वा यवत्यपि] ॥४९९॥  
 लोकेशो ब्रह्मणि तथा पारदेऽपि पुमांमत ।  
 लोचको मासपिण्डेऽक्षितारकाया च कजले ॥४९९॥  
 ललाटाभरणे स्त्रीणा कदली नीलवस्त्रयो ।  
 नीलि-यां कणपूरे च मौ-यां अश्लथचर्मणि ॥४९९॥  
 रक्ताशुके चर्मणि च स्तुचि स्यात्सपक-शुके ।  
 अथ निबुद्धिदुबुद्ध्योर्लोचितर्यपि वाच्यवत् ॥४९९॥  
 लोचिका तु स्त्रियामेषा शङ्कुल्यां परिकीर्त्तिता ।  
 लोचन त्वक्षणि क्लीब पश्यत्यर्थे तु सा न ना ॥४९९॥  
 लोचन लोचना स्त्री तु विचारोक्तौ च लोचना ।  
 लोचनीति पुन स्त्रीत्वे भेषजा तर ह्य्यते ॥४९९॥  
 लोट उमादरोगस्यात्तथा लोटाम्लवास्तुके ।  
 लोटना स्त्री सानुसारवाचि क्ली तु विलोटने ॥४९९॥  
 लोणिका च बृहल्लोण्यां घोटिकायाम्प्रकीर्त्तिता ।  
 लोतोऽश्रुचिह्नयोर्लोत लोप्ता-रये मुषिते धने ॥४९९॥

लोधो लोत्रे द्वे तु ज तुभेदे लुधे त्रिसायण ।  
 लोपस्तु छेदने पुसि तथा वर्णाद्यदर्शने ॥४९१९॥  
 लोपा शुकातरे लोपामुद्राया च प्रकीर्त्तिता ।  
 लोसा त्रिलोपके लोप्त्री चोरीते च धने स्मृता ॥४९२ ॥  
 लोभन तु सुवर्णे च लोभे चापि नपुसकम् ।  
 अथ लोभयतेरर्थे लोभन लोभना न ना ॥४९२१॥  
 लोभ्यो मृद्नेऽप्यारकूटे लोभ्य त्रिलोभनीयके ।  
 लोम क्लीब तनुरुहे सामभेदे तथा मतम् ॥४९२२॥  
 लोमशो मुनिभेदे ना तथा स्याद्भेषजातरे ।  
 लोमशा तु स्त्रियां काकजङ्गामांसीवचासु च ॥४९२३॥  
 शूकशिम्बिमहामेदाकाकोलीककटीषु च ।  
 काशीशे शालिनीभेदे लोपाश्यां च प्रकीर्त्तिता ॥४९२४॥  
 द्वे तु मेघे त्रि सलोम्नि क्ली तु छदोतरे मतम् ।  
 क्ली लोमहवण रोमाश्चेऽथ स्रतमुनौ पुमान् ॥४९२५॥  
 रोमाश्चजनके तु त्रिलोमहर्षण उच्यते ।  
 लोलश्चले सतृष्णे त्रिलोला जिह्वाश्रियो स्त्रियाम् ॥४९२६॥  
 दाक्षायण्यामुपलावर्त्तकथाया च विद्युति ।  
 मधुदैयजन या च ऊन्दोभिद्योगिनीभिदो ॥४९ ॥  
 लोलस्तु पुसि मेढ्र स्यालोलो सगीतभिद्यपि ।  
 लोलुपस्त्रिषु लुधे स्या लोलुपा योगिनीभिदि ॥४९२८॥  
 लोष्टोऽस्त्री लेष्टुके सीम्नि लोष्ट क्लीबमयोमले ।  
 लोहोऽस्त्री मरिचस्वर्णागुर्वय सु च तैजसे ॥४९२९॥  
 द्वयो पक्ष्यतरे रक्तच्छागे रक्ते तु वायवत् ।  
 लोहज कांस्यलोहे क्ली भेद्यव लोहसम्भवे ॥४९३ ॥  
 लोहद्रावी तु योगार्थे स तु स्यात्पुसि टङ्कणे ।  
 लोहपृष्ठो द्वयो कङ्के चरक प्रतुदातरे ॥४९३१॥  
 लोहलोऽस्फुटवाचि त्रि शृङ्खलाधार्य एष ना ।  
 स्या लोहसङ्करो लोहमिश्रणे कल्पुत्तमायसे ॥४९३२॥

१ लोमशो मुनिभेदे ना मेघे द्वे लोमशस्त्रिषु ।  
 लोम श्रिते स्त्रियां काकजङ्गामांसीवचासु च ।  
 शूकशिम्बिमहामेदे काकोलीषु प्रकीर्त्तिता ॥



लोहायसं ताम्रभवे त्रि क्ली तु ताम्रेण मिश्रित ।  
लोहितं तु मत ताम्रे कुङ्कुमे रक्तचन्दने ॥४९३३॥  
रुधिरं रक्तगोशीर्षं पद्मरागमणावपि ।  
अशुभद्रायुधमिदं कदनेऽपि प्रकीर्तितम् ॥४९३४॥  
रोहिताख्यातरे सपभदेऽपि हरिणातरे ।  
पुमास्तु रत्नभेदेऽपि रोगेऽप्यक्षिपुटादिनि ॥४९३५॥  
रक्तशालावतस्या चाङ्गारके मस्यभिद्यपि ।  
ब्रह्मपुत्रनदे वाध्वं तरे दशातरे तथा ॥४९३६॥  
रक्तवर्णं त्रिस्तु तद्वत्यत्र रूपद्वयं त्रियाम् ।  
लोहिनी लोहिता चेति लोहिता तु स्त्रियामियम् ॥४९३७॥  
पुनर्नवायां रक्तायां स्तम्भे लज्जालुनामनि ।  
पद्मरागे लोहितकोऽस्त्री त्रि कोपादिलोहिते ॥४९३८॥  
तत्र स्त्रिया लोहितिका रूप लोहिनि केति च ।  
कांस्ये लोहितकं क्लीबं स्त्री तु लोहितिकामता ॥४९३९॥  
रक्ताशयातरे कस्याश्चनभपजभिद्यपि ।  
लोहिते च दने न स्त्री प्रोक्तो लोहितच दन ॥४९४०॥  
कुङ्कुमे तु मत क्लीबमिदं लोहितच दनम् ।  
स्त्रीत्वे लोहितपुष्पी स्यात् पु तु दाडिमवृक्षके ॥४९४१॥  
पुमाल्लोहितपुष्पोऽसौ दाडिमे परिकीर्तितः ।  
लोहिताक्ष सपभदे कोकिलेऽपि द्वयोर्मत ॥४९४२॥  
विष्णौ तु लोहितेऽप्यक्षे [त्रिर्नब् रक्ताशयातरे] ।  
लोहिताक्षो मतो वह्नी तथा शम्भावपि क्वचित् ॥४९४३॥  
योगार्थं नकुले तु द्वे कथितो लोहिताननः ।  
लोहित्यो दक्षिणाधौ च शालिभिर्वृक्षपुत्रयो ॥४९४४॥  
लौल्यं क्लीबं सतृष्णात्वे चाश्वत्थेऽपि प्रकीर्तितम् ।  
लौहं क्लीबमयस्युक्तं लोहसम्बन्धिनि त्रिषु ॥४९४५॥  
लौहा तु लोहरचितपाकपात्रान्तरे मताः ।  
लौहित्यं लोहितत्वे क्लीबं ब्रह्मपुत्रनदे पुमान् ॥४९४६॥

## व

व सावने च वाते च वरुणे वन्दने [शुभे] ।  
 [मन्त्रणे] वसतौ बाहौ वरत्रेऽपि वरुणालये ॥४९४७॥  
 शार्दूले चैव शालूके बलवत्यपि पुंसि च ।  
 व बीजे वरुणस्य स्यादिवार्थे तु तदययम् ॥४९४८॥  
 वा स्त्री वयनहिंसेषु गमे ना त तुवायके ।  
 वश पृष्ठास्त्रि गोहोष्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥४९४९॥  
 नासोर्ध्वास्त्रीक्षुभेदे च शाले विंशतिहस्तके ।  
 रागभेदे तुगाक्षीयां विष्णौ वश प्रकीर्तित ॥४९५॥  
 वशकसि वक्षुवेण्वोऽस्थनोर्द्वे तु मत्स्यातरे मत ।  
 स्त्री वशिका मुरया च वशके त्वगुरौ न ना ॥४९५१॥  
 वशज कुलजे त्रि स्याद्वशबीजे पुमानयम् ।  
 वशजा तु तुगाक्षीयां स्त्रीवे क्लीबेऽपि च क्वचित् ॥४९५२॥  
 [वशपत्र मत क्लीब हरिताले स्त्रियामपि ।  
 पुंसि मीनेक्षुभेदे च वशपत्रक इष्यते] ॥४९५३॥  
 वशर्णवस्तु चणकधाये ना त्रि तु यौगिके ।  
 वशिकस्त्वध्वमाने ना दशस्तोमात्मके मत ॥४९५४॥  
 वशिका वशवाद्ये च वशजालेऽपि च स्त्रियाम् ।  
 वशिक मद्यवत्तुच्छे क्लीब त्वगुरुणि स्मृतम् ॥४९५५॥  
 वशि तु दैर्घ्यमाने तुगाक्षीरीवीणयोरपि ।  
 रक्ताशये चतु कषमाने चापि स्त्रियां मता ॥४९५६॥  
 वश्यां कुस्तुम्बुरीसङ्गधाये स्त्री वशजे त्रिषु ।  
 वक्तव्य कुत्सिते नीचे वाच्येऽधीने तथा त्रिषु ॥४९५७॥  
 वक्तव्यवाक्ये वक्तव्यपुरुषे च तथा मत ।  
 वक्ता तु पण्डितेऽपि स्याद् वाग्मिन्यप्ययलिङ्गक ॥४९५८॥  
 वक्रत्रोऽस्त्री स्या मृखेऽनुष्टुप्छन्दो वृत्तान्तरेषु च ।  
 वक्त्रभेदेऽपि तगरमूलेऽपि परिकीर्तितः ॥४९५९॥

वक्रो विष्णौ शनावङ्गारके पपटमेषज ।  
 रुद्रे वाणासुरे पुसि तगरे तु नपुसकम् ॥४९६॥  
 वक्रा वीणान्तरे चापि कुटिलक्ररयोस्त्रिषु ।  
 वक्रकण्टस्तु बदरे खदिरेऽपि मत पुमान् ॥४९६१॥  
 वक्रतुण्डो गणश ना शुके स्त्रीपुसयोर्मत ।  
 वक्रदण्डो वराहे द्वे योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ॥४९६॥  
 वक्रदतो [वराहे स्याद] दतवक्र नृप तु ना ।  
 वक्रनक्रस्तु पिशुने तथैव शुकपक्षिणि ॥४९६३॥  
 वक्रपुष्पो वकागस्त्यपलाशतरुषु स्मृत ।  
 वक्रशया कुटुम्बि या गुञ्जायाञ्च प्रकीर्त्तिता ॥४९६४॥  
 वक्रि पशुसमारयेऽस्मि पाश्वस्य स्त्री पुमापुन ।  
 दिवसे त्रिस्तु कुटिल शयके तु द्वयोरयम् ॥४९६५॥  
 वक्षणा वक्षसि तथा तदादावपि कीर्त्तिता ।  
 वक्षा पुल्लिङ्ग उक्षिण स्याद्वक्ष क्लीबमुरस्थले ॥४९६६॥  
 वग्न पुमास्याद्वचने वाचाले त्वभिधेयवत् ।  
 वङ्गा पर्याणभागे द्वे ना नदीपात्रभङ्गुरे ॥४९६॥  
 वङ्किर्वाद्यावशेषे स्त्री कण्टके तु पुमान् मत ।  
 वङ्कुमुनिविशेषे ना वङ्कत्कारि वभिधेयवत् ॥४९६८॥  
 वङ्गा पौरस्त्यजनपदातरे तज्जनेषु च ।  
 नृभूमि ना तु वङ्ग स्याद्वक्षे वृक्षान्तरेऽप्यथ ॥४९६९॥  
 न स्त्री वृताककार्पास्यो क्ली सीसे यशदेऽपि च ।  
 गतौ तु वङ्गो वङ्गा च पुसि स्त्रीवे तथा भवेत् ॥४९७॥  
 वच कीरे द्वयो स्त्री तु शारिकौषधयोर्वचा ।  
 पुमास करण सूर्ये चापि केचिद्द्वय विदु ॥४९१॥  
 वचक्नु श्रोत्रिये पुसि तथाचार्ये प्रकीर्त्तित ।  
 त्रिषु वाग्मिनि विप्रे तु वचक्नु कीर्त्तितो द्वयो ॥४९७२॥  
 वचण्डा च वचण्डी च छुरिका सारिकाजनयो ।  
 वचन वाक्य उक्तौ च सरयाशुण्ठयोस्तथेभ्यते ॥४९३॥

वचनीय तु वाक्येऽपि तथा दोषे नपुसकम् ।  
 वचर कुक्कुटे द्व स्याच्छठे पुलिङ्ग इष्यत ॥४९४॥  
 वचलुस्तु पुमाप्रतेऽपराधेऽप प्रकीर्तित ।  
 वचिस्तु वचधातौ ना वचने तु स्त्रियाम्भवेत् ॥४९५॥  
 वचुष्यो वक्तरि त्रि स्यान्नकुले तु द्वयोर्मत ।  
 वज्रोऽस्त्री कुलिश शस्त्रेऽप्यशनौ मणिवेधके ॥४९६॥  
 हीरकेऽभ्रकमेदेऽपि चासने यस्य लक्षणम् ।  
 जङ्घे पद्मासनावस्थ तस्यिनिहितौ करौ ॥४९७॥  
 ताम्यामेव स्थितौ भूमावतरिक्षासन च तत् ।  
 व्रतभदे च गोमूत्रे दम्भे यावकजीवने ॥४९८॥  
 वज्र स्याद्बालके धाया योगयज्ञभिदोस्तु ना ।  
 वज्रा स्नुषा गुह्या च वज्री दुर्गास्तुहीभिदो ॥४९९॥  
 वाग्वज्रेऽपि च शयेऽपि ग्रहस्थित्यतरेऽप च ।  
 तिलपुष्पे श्वेतकुशे कोकिलाक्षे च निष्ठुरे ॥४९८॥  
 स्नुषा च कोकिलाक्षे च पुमास्याद्वज्रकण्टक ।  
 वज्रतुण्डो द्वयोर्गृध्रे दशेऽपि गरुडे तु ना ॥४९८१॥  
 वज्रदन्त सूकरेऽपि मूषिकेऽपि द्वयोर्मत ।  
 शतपुष्पां वज्रपुष्पा स्त्री क्ली तु तिलपुष्पके ॥४९८२॥  
 वज्रवृक्ष पत्रहीनस्तुहीद्रो ना क्वचि मतः ।  
 वज्रशल्य शयके द्वे वज्रशयाषधातरे ॥४९८३॥  
 वज्रहस्त पुमानि द्वे वज्रहस्ता सामञ्जिदि ।  
 वज्राङ्गस्तु द्वयो सर्पे वज्राङ्गी च गवेधुका ॥४९८४॥  
 वज्री तु वज्रयुक्त त्रि पुमानिद्र तथागते ।  
 ग (र) ति लक्षणमप्युक्त यस्य नामातर तथा ॥४९८५॥  
 वज्री द्रबुद्धयो पुसि स्यात् विश्वेदेवातरेऽपि च ।  
 वज्रिणी तु स्त्रियामिष्टकातरे परिकीर्तिता ॥४९८६॥  
 वञ्चकस्तु खले चापि धूर्ते वाच्यवदिष्यते ।  
 द्वयोस्तु गृहवधौ च जम्बुके चापि वञ्चक ॥४९८७॥

वञ्चितो वप्रलघे त्रिवाचता नायिकाभिदि ।  
 वञ्चुथ कोकिले कारौ द्वे ना दम्भऽध्वकालयो ॥४९८८॥  
 वञ्चुलस्तिमिशेऽशोके वेतसेऽपि मत पुमान् ।  
 वञ्जुलस्तिमिशेऽशोके वेतसेऽयापगा तरे ॥४९८९॥  
 द्वे स्त्री गवि सुदाह्याया न क्ली नदनदीभदो ।  
 वटो यग्रोधवृक्षेऽपूपा तरे ग धके पुमान् ॥४९९०॥  
 साम्ये चाथ द्वे कपर्दे पक्षिभेद तथा वटी ।  
 वेणुकीवैश्यजे चाथ स्त्री क्रीडागुटिकाथिका ॥४९९१॥  
 वृक्षान्तरेऽप गाढाया रजो तु स्याद्वटी त्रिषु ।  
 वटक पुसि मानस्य भदे स्यादष्टमापके ॥४९९२॥  
 वटिका तु स्त्रिया क्रीडागुटिका गुलिकाऽथका ।  
 वटपत्रस्तु तुलसीभेदे शुक्ले पुमा मत ॥४९९३॥  
 वटपत्रा पुन स्त्रीत्वे कीर्त्तिता मलिका तरे ।  
 वटपत्री त्विरावत्या स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ॥४९९४॥  
 वटम्बस्तृणपु जे च शैले च परिकीर्त्तित ।  
 वटर कुक्कुरे वस्त्रे शठे त्रिश्चौरचञ्चले ॥४९९५॥  
 वटिरुद्धिकाशूननाभ्यो कल्केऽपि च स्त्रियाम् ।  
 पुमास्तु वटतौ धातौ वेष्टनार्थे वटि स्मृत ॥४९९६॥  
 वटी तु रज्जुके नातो कर्तु लेऽप्यभिधेयवत् ।  
 चतुरङ्गादिगुलिकार्थे तु पुसि वटी स्मृत ॥४९९७॥  
 वठरस्तु शठ स्थूले मदे वक्रेऽपि च त्रिषु ।  
 अथाम्बष्ठ शदकारे वर्षे च वठर पुमान् ॥४९९८॥  
 स्त्रिया तु वडवाऽश्वाया कुम्भदास्या द्विजस्त्रियाम् ।  
 कामतन्त्रप्रसिद्धे स्त्रीभदे तत्र तु ना वृषे ॥४९९९॥  
 गाव पुमास यस्य तमारोहति यियप्सव ।  
 वडवामुखमश्वाया मुखे क्ली च रसातले ॥५०॥  
 वडवामुख इत्येष पुमा स्यादौवपावके ।  
 वणिक्पथस्तुलाराशौ वणिग्वर्त्मनि चेप्यते ॥५०१॥

वणिक्कर्मणि केषाञ्चित् वणि-यपि पुमा-मत ।  
 वणिक् स्त्रियां वणि-यायां क्रयविक्रयिके त्रिषु ॥५ २॥  
 तुलाराशौ तु करणभेदे ना वणिजो वणिक् ।  
 वण्टो भागे दात्रमुष्टावथो विभजने द्वयो ॥५ ३॥  
 वण्टालो युद्धभेदे च नौकायां च खनित्रके ।  
 वण्ठ स्यादकृतोद्वाहे खर्वे कु तापुधेऽपि च ॥५ ४॥  
 वण्ठरस्तु स्तने तालाङ्कुरे मेघे श्वपुच्छके ।  
 करीरकोशे स्थगिकारजौ द्व ना तु कुक्कुरे ॥५ ५॥  
 वण्डो ना मृतभार्येऽथाभिनिविष्ट त्रिषु स्मृत ।  
 अपे दुश्चर्मणि तथा छिन्नपुच्छपशावपि ॥५ ६॥  
 वण्ड निष्कुषितवच्यग्रशिश्ने शिश्नमात्रके ।  
 वण्डाल शूरयोर्युद्ध नौकायां च खनित्रके ॥५ ७॥  
 वतस शेखरे कणपूरे वीतसके क्वचित् ।  
 वतामन्त्रणस तोषखेदानुकोशविस्मये ॥५ ८॥  
 वतूर्देवनदीसत्यवाक्पथ्यक्षिरुजि स्त्रियाम् ।  
 वत्स सवत्सरे वृक्षभेदे कुटजसङ्गके ॥५ ९॥  
 ऋषिभेदे च तद्वश्यपुरुषेषु तु भूमनि ।  
 फले तु कुटजस्य क्ली द्वे तु तणकसङ्गके ॥५ १०॥  
 गोमहिष्यादिपोतेऽपि बालेऽपि तनयादिके ।  
 वर्ये तु वाच्यवद्वत्सो न तु स्त्री वक्षसि स्मृत ॥५ ११॥  
 वसको वसवा-येऽथ पीततु-थे नपुसकम् ।  
 तथैव वत्सनाभेऽपि वत्सक क्लीवमिष्यते ॥५ १२॥  
 वत्सनाभो वृक्षभेदे विषभेदेऽपि दृश्यते ।  
 वत्सरस्तु पुमान्वर्षे पञ्चषान्यतमेऽपि च ॥५ १३॥  
 वत्सलो हरिणादौ द्वे त्रिषु प्रेमवति स्मृतः ।  
 गवि सा वत्सकामाया वत्सला स्त्रीत्व इष्यते ॥५ १४॥  
 पुमांस्तु रसभेदेऽपि तृणाग्नावपि वत्सल ।  
 वसादनी गुह्य्यां स्त्री द्वयोस्तु वृक इष्यते ॥५ १५॥

वदो वक्तृर्यपि त्रि स्या मगवेदादिमं पुमान् ।  
 वदन स्या मुखऽयुक्तावग्रेऽपि शिखरेऽपि च ॥५ १६॥  
 वदा यो व गुवाचि स्यात्रिषु वाग्मिनि दातरि ।  
 सहस्रदष्ट्रे पाठीने वदालो मत्स्ययोद्वयो ॥५ १ ॥  
 वधो ना हनने वज्र बले त्रिषु तु हिंसके ।  
 वधस्तु हनने वज्रे बलेऽपि गुणनेऽपि च ॥५ १८॥  
 वधा तु स्त्री कलम्यारयजलशाके प्रकीर्त्तिता ।  
 वधक पद्मबीजे क्ली ना याधौ त्रि तु घातके ॥५ १९॥  
 वधत्रमायुधे त तुवायदण्डे च कीर्त्तितम् ।  
 शूरे धवयिमर्मरये क दके च नपुसकम् ॥५ ॥  
 वधिको घातके त्रि स्या कस्तूर्या क्लीबमिष्यते ।  
 वधू स्त्री शारि [वायाञ्च नदीपूवजभार्ययो] ॥५ २१॥  
 स्तुपाशटीनवोढासु चाणस्पृक्काङ्गनासु च ।  
 वधूटी तु नवोढायां पुत्रपत्न्या तथष्यते ॥५ २॥  
 वध्यस्तु हननीये त्रिर्वध्या हत्या प्रकीर्त्तिता ।  
 वध्री वध्न वरत्रायां नपि त्रिषुणि कीर्त्तितम् ॥५ ३॥  
 वधिका तु वरत्राया वत्रिक स्यान्नपुसके ।  
 वन यज्ञे जलेऽरण्ये गहर्नेऽशौ धने मुदि ॥५ २४॥  
 काष्ठ मुस्ते निवासे च वनी स्त्री गहने मता ।  
 वनकन्दस्तु धरणीकन्देऽपि वनशूरणे ॥५ २५॥  
 अगुरौ देवदारौ च वनचन्दनमिष्यते ।  
 वनजो द्वे गजे ना तु मुस्तेऽपि वनशूरणे ॥५ २६॥  
 जम्बीरेऽपि च घायाके वनजा तु वनार्द्रके ।  
 अश्वगधाहरिद्राभिद्वनकार्पासिकासु च ॥५ २ ॥  
 मुद्गपर्ण्या लताभेदे क्ली कसोत्पलपद्मयो ।  
 वनतिक्तो हरीतक्यां वनतिक्ता पुनस्त्रिष्वयम् ॥५ २८॥  
 वनद्रुमस्त्वगुरुणि वनस्थविटपिन्यपि ।  
 वनप्रिय कोकिले द्वे तथैव हरिणान्तरे ॥५ २९॥

वनमाली हरौ तालभेदे स्त्री वनमालिनी ।  
 वराक्षां द्वारकापुर्यामपि चैव प्रकीर्तिता ॥५ ३ ॥  
 वनवासी तु काके द्व नृभूमि वनवासिन ।  
 दाक्षिणात्येषु देशेषु केषुचित्परिकीर्तित ॥५ ३१॥  
 पुमांस्तु वानप्रस्थ स्याद्वनवस्तरि च त्रिषु ।  
 वनश्वा गधमार्जारै द्वे याघ्रे जम्बुकेऽपि च ॥५ ३२॥  
 वनस्थो द्व वनगजे हरिणेऽप्यथ च स्त्रियाम् ।  
 वनस्थाऽत्यम्लपर्ण्याञ्च क्षुद्राश्च तथैव मता ॥५ ३३॥  
 वनस्पतिर्ना दुमात्रे विनापुष्प फलिद्रुमे ।  
 सोमे वटे पाटले च धृतपृष्ठस्य चामज ॥५ ३४॥  
 वनहासस्तु काशेऽपि तथा स्यामलिकान्तरे ।  
 वनायवो जनपदभेदे तद्वासिनृष्वपि ॥५ ३५॥  
 वनायुस्तु सुते पुंसि स्यापुरुवरस क्वचित् ।  
 वनि सनुनि चाग्नौ च याज्याया च पुमा मत ॥५ ३६॥  
 वनि स्त्रिया स्यादिच्छाया पुमाकामे वनिर्मत ।  
 वनतौ च वनोतौ च शकुनौ तु द्वयोर्मत ॥५ ३७॥  
 वनिता स्त्रीमात्रकेऽपि जातरागस्त्रियामपि ।  
 अथ प्रिये याचिते च सेवितेऽप्यभिधेयवत् ॥५ ३८॥  
 वनिष्ठस्तु गुदे नाऽश्वे सम्भक्ते त्वभिधेयवत् ।  
 वनी वृक्षे मतौ मेघे सोमे त्रिष्वभिलाषिणि ॥५ ३९॥  
 वनोद्भवा मुद्गपर्ण्या वये स्याद्वीजपूरके ।  
 वनदार्वासिफाया च योगे तु स्याद्यथायथम् ॥५ ४ ॥  
 वनौका वनवास्तये त्रि द्वयोर्वानरे मत ।  
 वन्दकस्तु द्वयोर्वन्दावृक्षे नाश्रमणान्तरे ॥५ ४१॥  
 वन्दथस्तु पुमास्तुत्ये तथा स्तोतरि कीर्तित ।  
 वन्दना तु न नास्तुत्यामभिवादन एव च ॥५ ४२॥  
 वन्दनी नतिजीवातुवटीयाचनकर्मसु ।  
 वन्दनीयस्त्रिषु स्तुत्ये वदनीया तु भिक्षुकी ॥५ ४३॥



वन्दा व दाकष्टक्षेऽपि भिक्षुक्या च स्त्रिया मता ।  
 वन्दारु स्तोतरि त्रि स्याद्द दारु क्ली स्तुतौ मतम् ॥५ ४४॥  
 वन्दि स्त्री प्रग्रहे ना तु वन्दतौ त्रि तु वन्दिनि ।  
 वन्दी त्रिस्तावके द्वे तु वैदेहे मागधेऽपि च ॥५ ४५॥  
 वन्दी तु निगृहीते स्यात्स्त्रीत्वे चैव प्रयुज्यते ।  
 वन्दीकस्तोरणस्तम्भे तथैव स्यात्पुरन्दरे ॥५ ४६॥  
 वद्यस्तुत्ये त्रि व द्या स्त्री भिक्षुकीवन्दयोर्मता ।  
 वध्य त्रिर्निष्फले शू ये व ध्या तु स्त्रीत्व इष्यते ॥५ ४७॥  
 गधद्रयातरे गभष्ट्ययोग्यस्त्रियामपि ।  
 वयस्तु पुसि वेत्रे च धाये मकटकाह्वये ॥५ ४८॥  
 वनशूरणकदेऽपि रक्तालौ ।  
 नवबौद्धोपासके तु द्वे वया तु जलप्लवे ॥५ ४९॥  
 अरण्यान्या तित्तकोशातकी वयश्चगधयो ।  
 क्ली तु कसोत्पले वन्य वनसाधौ तु वाच्यवत् ॥५ ५०॥  
 वय त्रिषु वनोद्भूते स्त्री वनाम्बुसमूहयो ।  
 वपन बीजानक्षेपे क्लीब स्यात् क्षौरकर्मणि ॥५ ५१॥  
 खरकुट्यारयवपनशास्त्राया वपनी स्त्रियाम् ।  
 वपनी तु स्त्रिया क्षौरशालायां परिकीर्तिता ॥५ ५२॥  
 वपा मेदसि रघ्रे च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्तिता ।  
 वपु शरीरे लावण्ये दीप्तिप्रकृतिवारिषु ॥५ ५३॥  
 वप्ता पितरि ना त्रिमुण्डके व्रीह्यादिवापके ।  
 वप्रोऽस्त्री वास्तुभूक्षेत्रोद्य प्राकारसानुषु ॥५ ५४॥  
 प्राकारमूले क्ली सीसे मञ्जिष्ठायां स्त्रियामथ ।  
 निष्ठुरे वनजे वाजिकायां पाटीर इष्यते ॥५ ५५॥  
 रेणौ चये पुसि तटे जनके च प्रजापतौ ।  
 वग्नि समुद्रे क्षेत्रे ना दुर्गतौ तु स्त्रियां मता ॥५ ५६॥  
 वमधुर्वमने मेघे गजहस्तोत्थशीकरे ।  
 वमनोऽङ्गोष्ठक्षेऽपि भङ्गायां च पुमान्मत ॥५ ५७॥

वमनी तु जलौकाया कार्पास्यां योगिनीभिदि ।  
 अना तु छदने तद्वदनेऽप्याहुतावपि ॥५ ५८॥  
 नृजातिभेदे वमना नृबहुत्वे प्रकीर्त्तिता ।  
 वमिर्नाजनौ च घत्तूरे वातौ स्त्री वमतौ तु ना ॥५ ५९॥  
 वम्र पुस्युषिभेदे स्याद्धूमवणप्रभेदयो ।  
 उपदीका जातिमात्रे वम्रो वम्री च नृस्त्रियो ॥५ ६०॥  
 वयो धनेऽन्ने बाल्यादौ वत्सरे जीविते खगे ।  
 जातौ च यौवने चैव सात क्लीबमुदीरितम् ॥५ ६१॥  
 वयस्यस्तरुणे त्रि द्वे मित्रे ब्राह्मणां पुन स्त्रियाम् ।  
 काकोलीक्षीरकाकोल्यत्यम्लपर्णीगुह्याचषु च ॥५ ६२॥  
 स्रक्षमैलाया हरीतक्यां वयस्या परिकीर्त्तिता ।  
 वया स्त्री तरुशाखाया ना तु गत्यशनादिषु ॥५ ६३॥  
 वयुन मदिरे शस्ते वैदुष्येऽपि मखे तु ना ।  
 वयुना कातिबुद्धयो स्त्री द्वे तु स्याद्देवविप्रयो ॥५ ६४॥  
 वयोधास्तु द्वययूनि वयसो धातरि त्रिषु ।  
 आकारातोऽपिद्व्येऽर्थे तु वयोधा परिकीर्त्तित ॥५ ६५॥  
 वरो ना भूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते क्रुधि ।  
 सभक्तौ चानिरोधे च बृहवृषोर्भाववाचक ॥५ ६६॥  
 विडेऽपि वरटारयेऽपि धान्यभेदे प्रकीर्त्तित ।  
 यवक्षारे तुरुष्कारयनिर्यासे मारिषा तरे ॥५ ६७॥  
 लतामारिष इत्युक्त चटके तु द्वयोरयम् ।  
 अथोत्तरेषु षट्सु क्ली तकोले कुङ्कुमेऽपि च ॥५ ६८॥  
 गुग्गुलौ हरिताले च महोदर्यारयमुस्तके ।  
 वत्तु लाकाररचितवह्निकुण्डेऽप्यथ स्त्रियाम् ॥५ ६९॥  
 विड्मेऽपि गुह्य्यां च ब्राह्मीरेणुकयोरपि ।  
 पाठायाञ्च नदीभेदे पावत्यामपि कीर्त्तिता ॥५ ७०॥  
 पथ्यागुञ्जाहरिद्रासु दूर्वादारुहरिद्रयो ।  
 आस्फोताकण्टकार्योश्च वरापि स्यात्फलत्रिके ॥५ ७१॥

शरपणीमुद्रपण्यो शालिभेदेऽपि पपटे ।  
 अस्त्रिया तु द्विखण्डारये मत प्रावरणातरे ॥५ २॥  
 क्लीबमेव मनागिष्टऽयय वा थोतमे त्रिषु ।  
 वरक स्यापटगृहे वस्त्रेऽपि च नपुसकम् ॥५ ३॥  
 वरको वनमुद्रे ना रूक्षणारये च कोद्रवे ।  
 भाग्या वराटिकातु यधान्ये च वरकाष्टका ॥५ ४॥  
 देवदारणि कालेयेऽपि प्रोक्त वरच दनम् ।  
 वरटो धायभेदे कुसुम्भबीजारययोदिते ॥५ ७५॥  
 वरटाऽप्यथ हसस्य योषायातु स्त्रियाम् मता ।  
 वरटा वरटी चेति सविषे शलभान्तरे ॥५ ७६॥  
 नृजातिभेदे वरटा मलीपुष्पे नपुसकम् ।  
 वरणस्तु पुमास्तित्तशकप्राकारयोरपि ॥५ ॥  
 अथावृतौ च सम्भक्तौ कथादिवरणे नपि ।  
 वरणा स्यान्नदीभेदे काशीस्थ वरुणाऽपि च ॥५ ८॥  
 वरण्ड पुम्बलारये स्यामुखरोगे च स ह्यना ।  
 प्राकारेऽप्यतरावेदौ तृणकाष्ठादिभारके ॥५ ९॥  
 वडिशे स्यसिपुत्र्याश्च रज्जुशारिकयोरपि ।  
 स्त्रिया वरतनुश्चारुनाया छन्दोऽन्तरेऽपि च ॥५ ८॥  
 वरतित्तस्तु कुटजे स्यानिम्बे पपटेऽपि च ।  
 वरतित्ता तु पाठाया सैव स्याद्वरतित्तिका ॥५ ८१॥  
 वरत्रा तु स्त्रिया वर्त्ता तथा स्याद्वधिकक्षयो ।  
 वरदस्तु प्रसनेऽपि वायवत्स्यात्समर्थके ॥५ ८२॥  
 नृजातिभेदे वरदा कथाया वरदा मता ।  
 त्रिपण्यमपि रक्तालौ वरततो कुलस्य च ॥५ ८३॥  
 देव्यां योगियन्तरे च मध्यदेशे नदीभिदि ।  
 वरपोतो द्वे हरिणे शाकभेदे नपुसकम् ॥५ ८४॥  
 वरप्रदो विधौ लोषामुद्रायां तु वरप्रदा ।  
 धवे वरयिता पुसि त्रि स्याद्वरयतेस्तुचि ॥५ ८५॥

कात्यायने वररुचि कोषकारे कवौ शिवे ।  
 वरलो वरला चापि गधोलीहसयोषितो ॥५ ८६॥  
 वरलधश्चम्पकेऽपि काञ्चीभेदे पुमामत ।  
 वरवर्णिन्यस्तु लाक्षाहरिद्रारोचनासु च ॥५ ८ ॥  
 स्त्रीरले च फलियां च साधीयस्यामपि स्त्रियाम् ।  
 दुर्गायामपि लक्ष्म्याञ्च सरस्वयामपीष्यते ॥५ ८८॥  
 वराक शङ्करे पुसि हिंसायां भेषजा तरे ।  
 शोचनीये पुनरय स्याद्वराकोऽभिधेयवत् ॥५ ८९॥  
 वराङ्ग योनिमातङ्गमस्तकेषु गुडे वचि ।  
 हस्ते चोचारयौषधौ ना विष्णौ नाक्षत्रवत्सरे ॥५ ९ ॥  
 चतुर्विंशतिसयुक्तवासरत्रिशतीभिते ।  
 वराङ्गा तु चतुर्वषसुरमौ परिकीर्त्तिता ॥५ ९१॥  
 वराङ्गी तु हरिद्राया शाकाम्ले तु प्रकीर्त्तिता ।  
 वराङ्गना श्रेष्ठनार्या तथा तालीवृमेऽस्त्रियाम् ॥५ ९२॥  
 वराटो बीजकोशे नाऽजस्य स्याद्रज्जुनीचयो ।  
 खड्गभेदेऽपि चैरण्डबीजाभपुलकावलौ ॥५ ९३॥  
 कपर्देऽपि वराटी तु रागभदे प्रकीर्त्तिता ।  
 वराटको द्वे कपर्देऽजबीजकोशे त्रि सेवके ॥५ ९४॥  
 स्याद्वराणस्तु शक्रेऽपि वात्स्यायनमुनावपि ।  
 वराणक पुमानुक्तो वात्स्यायनमुनावयम् ॥५ ९५॥  
 द्वयोवराणक प्रोक्तस्तीवरीडोम्बयो सुते ।  
 वराणसो वराणीये त्रि काश्या तु वराणसी ॥५ ९६॥  
 तथैव च नदीभेदे स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तित ।  
 वरारोहा श्रेष्ठनार्या महोदर्यारयमुस्तके ॥५ ९ ॥  
 मल्लिकाया विशेषे च देवमल्लीति विश्रुते ।  
 सोमेश्वरस्थदाक्षायण्या रम्ये च नितम्बके ॥५ ९८॥  
 अथ विष्णौ गजारोहे नोत्तमारोहिणि त्रिषु ।  
 वरालः सितपिङ्गाभवर्णे त्रिषु तु तद्वति ॥५ ९९॥

वराला हसकाताया वराल भेषजातरे ।  
 वरालस्तु पुमाश्चन्द्र रागभदे प्रकीर्त्तित ॥५१ ॥  
 वराह पवते मेघञ्ज्जिर सुप्रवरेजह्व ना ।  
 विष्णौ वराहमिहिरे मानद्वीपाद्रिभित्स्वपि ॥५१ १॥  
 यूहभदे मुस्तकेऽपि रक्तालौ च प्रकीर्त्तित ।  
 लूकरे तु पशौ मेष शिशुमारे द्वयोर्मत ॥५१ २॥  
 वराही मातृभदे स्याद्विष्ण्वक्सेनप्रियौषधौ ।  
 स्त्रीलिङ्ग एव कथिता तथैषा मुस्तकानरे ॥५१ ३॥  
 वराहनामा रक्तालौ लज्जालौ च पुमांमत ।  
 वराहिकाश्चगन्धाया नागभदे वराहक ॥५१ ४॥  
 वराहुस्तु वराहे द्वे नृभूमि तु वराहव ।  
 वरिमा तु वरत्वेऽपि तथोरुत्वे पुमांमत ॥५१ ५॥  
 वरिषस्तु धनेऽपि स्याद्वरत्वेऽपि नपुंसकम् ।  
 वरिषस्तु पुमावृष्टौ वर्षासु स्त्री बहुत्वके ॥५१ ६॥  
 वर्षे तु वरिष क्लीबलिङ्गमेव प्रकीर्त्तितम् ।  
 वरिष्ठ स्यादुरुत्तमे तथा वरत्तमे त्रिषु ॥५१ ॥  
 द्वे तित्तिरे बीजपूरे ना क्ली मरिचताम्रयो ।  
 वरीता त्रिवरयितर्यथ पुंसि वरे स्मृत ॥५१ ८॥  
 वरीयायोगभेदो ना स्यात्प्रशस्तरे त्रिषु ।  
 अतियूथुरुत्तरे शतावर्षा वरीयसी ॥५१ ९॥  
 वरुटस्तु प्राक्प्रसूतस्य जातौ क्षत्रियस्त्रियाम् ।  
 ब्राह्म्याज्जाते निषाद्यां च भेदे नैदेहजे द्वयो ॥५११ ॥  
 वरुणो वरुणद्वौ च प्रचेतसि जलोदरे ।  
 आदित्यभेदो धावप्सु ग्रहनागाग्निभित्स्वपि ॥५१११॥

१ वराहकर्णद्विभिर यश्चगन्धा प्रकीर्त्तिता ।

२ द्वे तित्तिरे क्ली मरिचे बीजपूरे पुमांमत ।

पक्षिजात्यन्तरे तित्तिर्याक्ये क्लीपुंसयोरयम् ।

तामे क्लीब तित्तिरौ ना वरोहसमयोक्षिषु ।

३ रोगे महोदरायाक्ये धोकद्रुप्रसवे नपि ।

तथाऽऽयुधविशेषेऽपि वरुणा तु नदीभिदि ।  
 द्वे मस्यमेदे वरुणपाशो योगे यथायथम् ॥५११२॥  
 अहीनमेदे वरुणप्रघास पुसि कीर्त्तित ।  
 चातुर्मास्ये नृभूकार्ये श्रावणाषाढपूर्णयो ॥५११३॥  
 वरूथो रथगुप्तौ ना मृग क्ली चर्मवेश्मनो ।  
 अस्त्री सैयेऽपि वृदे द्व पुमास्तु निजराष्ट्रके ॥५११४॥  
 वरूथी स्याद्युद्धरथे सेनायान्तु वरूथिनी ।  
 श्रेष्ठे क्लीब वरेण्य स्याद् वायवचापि कुत्रचित् ॥५११५॥  
 वरेण्या पितृभदेषु वरे य कुङ्कुमे मतम् ।  
 सर्वोचलोके पार्वत्या तु वरेण्या प्रकीर्त्तिता ॥५११६॥  
 वकर परिहासे स्याच्छागे युवपशावपि ।  
 वकराट कटाक्षे स्यात्तरुणादित्यरोचिषि ॥५११७॥  
 नारीपयोधरोसङ्गका तदत्तनखक्षते ।  
 वर्ग समानानिवहे वज्रे शक्त्याह्वये बले ॥५११८॥  
 तावत्कृत्व कृता चापि [पक्षे] पुल्लिङ्ग [इष्यत] ।  
 वगणा गुणने वर्गीकरणे खण्डनेऽपि च ॥५११९॥  
 वर्ग्यश्छात्रालये पुसि पक्ष्ये तु त्रिषु कीर्त्तित ।  
 वर्चोऽनविष्टातेज सु लावण्येऽपि तथाचिषि ॥५१२०॥  
 रूपे नपुसक पुसि वर्चाश्च द्रस्यते मत ।  
 वजन तु मत क्लीब हिंसाया त्याग एव च ॥५१२१॥  
 वर्णोऽस्त्रिया प्रकारे च शोभायाञ्च विलेपने ।  
 सुवर्णेऽपि तदुर्कर्षे [कथायामपि कीर्त्तित] ॥५१२२॥  
 ना तु द्रयाश्रितगुणमात्रे शुक्लादिके स्तुतौ ।  
 गोतिक्रमे च विप्रादौ कुथ चित्रे तथाऽऽकृतौ ॥५१२३॥  
 उक्तिमात्रेऽक्षरे कीर्त्तौ माल्ये वेषे वृतेऽपि च ।  
 ब्रह्मचर्येऽथ वर्णा स्यादाढकी पृथुबीजयो ॥५१२४॥

वर्णं तु कुङ्कुमे क्लीबलिङ्गमेव प्रकीर्तितम् ।  
 ना वर्णकस्तातवे स्याद्द्वयो रागषु वर्णिका ॥५१२५॥  
 पर्यायार्हादिकथने -यारयातरि भवेत्त्रिषु ।  
 वर्णकश्चारण स्त्री तु च दने च विलेपने ॥५१ ६॥  
 द्वयोर्नीयादिषु स्त्री स्यादुत्कर्षे कथनस्य च ।  
 वर्णाट स्त्रीकृताजीवे त्रिश्चित्रकृता गायने ॥५१२ ॥  
 श्लोकस्तेने सन्धिचौरेऽपि च वर्णविलोडक ।  
 वर्णा त्रिलेखके चित्रकरेऽपि ब्रह्मचारिणि ॥५१२८॥  
 वर्णवत्यथना वृक्षभदेऽपि श्रमणान्तरे ।  
 स्त्रीमात्रे तु स्त्रीवशेष हरिद्राया च वर्णिनी ॥५१२९॥  
 वर्णुर्नदा तरे वेदेऽर्के ना जनपदा तरे ।  
 वर्ण्यं तु वर्णनीये त्रि सुवर्णे तु नपुंसकम् ॥५१३ ॥  
 वर्त्तक स्याल्लोहभद त्रि तु वर्त्तितरि स्मृत ।  
 वत्तका वर्त्तिका चाथ त्रिषु वर्त्तितरि स्मृत ॥५१३१॥  
 वत्तकोऽश्वखुरे स्त्री तु विहगे वत्तकी द्वयो ।  
 वत्तन धूलिलुठनेऽश्वस्य -यावत्तनेऽपि च ॥५१३२॥  
 कुटीपिण्डे प्रवृत्तौ जीविकाया वचने मुहु ।  
 त्रिवर्त्तिणौ न ना वत्तयत्यर्थे प्रेषण तथा ॥५१३३॥  
 पिण्डने तूलनालायां तकुपीठ तथप्यते ।  
 वत्तन वामने क्लीब वृत्तौ स्त्री प्रेषणाध्वनौ ॥५१३४॥  
 नदीभेदे वत्तरुक काकनीडे जलावटे ।  
 वत्तिर्भेषजनिर्माणे नयनाञ्जनलेखयो ॥५१३५॥  
 गात्रानुलेपनीदीपदशादीपेषु योषिति ।  
 वत्तु लस्तु कलाये ना तकुपीठे च चक्रके ॥५१३६॥  
 वत्तुली गजपिप्पल्या स्यात्पलाण्डवन्तरेऽपि च ।  
 वर्त्म मार्गे तथा नेत्रछदे नात्त नपुंसकम् ॥५१३ ॥  
 वधन्तु सीसके सेतौ भाङ्ग्या वर्षो द्वयोर्मत ।  
 अथ वर्धयितर्येष वर्धः स्यादभिधेयवत् ॥५१३८॥

वधको द्व तीक्ष्णभाङ्ग्या ना वर्धयितरि त्रिषु ।  
 वधन छेदने वृद्धिक्रियायाञ्च नपुसकम् ॥५१३९॥  
 वधनस्त्रिषु वधिष्णौ तथा स्याद्वृद्धिसाधने ।  
 गलतिकायातु स्त्री स्यासमार्जया च वधनी ॥५१४ ॥  
 वर्धना तु न ना घातोरर्थे वधयतेर्मता ।  
 वधमान प्रश्नभेदे शरावैरण्डविष्णुषु ॥५१४१॥  
 पुरातरे जनपदातरे पौरस्त्यादग्गजे ।  
 महावीराहति तथा शदोऽय त्रि सवृद्धिके ॥५१४२॥  
 वर्धमान पुनश्छदोऽन्तरे क्लीब प्रकीर्तितम् ।  
 वर्धमानक उक्तो ना करमुद्रा तरेऽपि च ॥५१४३॥  
 वर्धापक पूणपात्रे कञ्चुके पासुचामरे ।  
 वर्धापन नाभितालछदे स्यापूर्णपात्रके ॥५१४४॥  
 वर्धित प्रसिते छिने पूरितेऽपि शरावके ।  
 वर्ध वर्धी वरत्रा ना वेष्टे क्ली चर्मसीसयो ॥५१४५॥  
 वर्म स्यात्कवच चापि वचि गोहे नपुसकम् ।  
 वर्मवत् क्ली तनुत्राणे सर्वर्मणि तु वाच्यवत् ॥५१४६॥  
 वर्या पतिवराया स्त्री वरेण्ये त्रिषु ना स्मरे ।  
 ववर फल्लिका केशनीवृद्धतरचक्रले ॥५१४ ॥  
 पारसीकजने तु द्वे शबरेऽप्यथ च स्त्रियाम् ।  
 पयां स्याद्ववरी नद्या केशविन्यासभिद्यपि ॥५१४८॥  
 शाकपुष्पभिदोस्त्रिस्तु वक्रकेशेऽपि चाधमे ।  
 वर्वरीका सरस्वत्या द्वे तु पक्षिणि चोरण ॥५१४९॥  
 केशसस्थानभेदे च त्रिषु वाक्यकृति स्मृत ।  
 वर्वरीको [महाकालशाकमित्केशकर्मसु] ॥५१५ ॥  
 वर्वी स्त्री शकटे द्वे तु शरभारयमहामृगे ।  
 वर्षोऽस्त्री वसरे वृष्टौ दिवसे भारतादिके ॥५१५१॥  
 प्रावृटसङ्गत्तु भेदे तु वर्षा स्त्री भूमि कीर्तिता ।  
 उपवषभ्रातरि तु वष पुसि प्रकीर्तित ॥५१५२॥



वर्षा तु स्त्री च वार्षिक्या वृष्टौ स्यात्कस्यचि-मते ।  
 वर्षकस्त्रिवृष्टिकृति वर्षात्स्वार्थे यथायथम् ॥५१५३॥  
 अथ ग्रीष्मालये क्लीा वर्षक कैश्चिदीष्यते ।  
 वर्षकोऽस्तु मासेऽपि तथा -योतिषिके पुमान् ॥५१५४॥  
 वर्षण तु मत वृष्टौ दाने मोक्षादिके गुणात् ।  
 वर्षणिवत्तनेऽपि स्याद्वर्षणेऽपि कृतौ क्रतौ ॥५१५५॥  
 षण्ठे वर्षधरो वर्षपवतेऽपि पुमा-मत ।  
 वर्षवृद्धिस्तु वर्षोपचये ज-मदिनोत्सवे ॥५१५६॥  
 पुनर्नवाया वर्षाङ्गी वर्षाङ्गो मास इष्यते ।  
 वर्षाभू स्त्री च शोथ-या भूलताप्लवयो पुमान् ॥५१५ ॥  
 वर्षाभूस्तु द्वयोर्भेके वर्षाभूति यदा तदा ।  
 वृत्ति स्याद्योनिमत्यर्थे तथा ग-हूपदेऽपि च ॥५१५८॥  
 भेकोक्त-यायभाव स्यात्परेषा तु मत विदु ।  
 पुनर्नवासमारयायामोषधी स्त्री तु तत्पुन ॥५१५९॥  
 स्यात्सशयितमस्माभिर्यतश्छ-दसि दृश्यते ।  
 अनादिसम्प्रदायात्ते प्रयोगे कण्ठजोष्मवान् ॥५१६ ॥  
 युत्प-नो ह्ययतेर्धातोवर्षाह श-द एष वै ।  
 उत्तम्भयेति वर्षाह्वा जुहोतीति ततश्च स ॥५१६१॥  
 अपभ्रष्ट उताहोस्विद्वर्षाभूरिति चापर ।  
 पुननवायां श-दोऽस्ति युत्प-नो भवतेरिति ॥५१६२॥  
 व्युत्पद्यमानो भवतेर्मण्डूके सावकाशक ।  
 तस्मात्पुननवाया स्यादयमोष्ठ्यभकारवान् ॥५१६३॥  
 पुनर्नवाया स्त्री द्वे तु वर्षाभूर्भेक इष्यते ।  
 वर्षुस्तु वर्षुके वापि वृद्धे स्यादभिधेयवत् ॥५१६४॥  
 वर्षम् न स्त्री परिच्छेदे शरीरश्रेष्ठयोरपि ।  
 स्यादु-च्छाये च महति शुष्मण्यपि च सुन्दरे ॥५१६५॥  
 वर्ष्या वृष्टयम्बुषु स्त्री भू त्रिस्तु वृष्टयन्दसम्भवे ।  
 बलो दैत्यान्तरे मेघे पवतेऽपि पुमांस्तथा ॥५१६६॥

वल्कस्तु दशने पुसि व कले त्वस्त्रिया मत ।  
 वल्कस्तु दशने पुसि न स्त्री व कलशल्कयो ॥५१८१॥  
 वल्कलस्त्वचि वृक्षस्य न स्त्री वस्त्रेऽपि तत्कृते ।  
 ना वल्करोत्रे त्वक्पत्रे क्ली वलभिदि वल्कला ॥५१८२॥  
 वल्गित वगनेऽप्यश्वगतौ त्रिषु तु तद्युते ।  
 वगु त्रिरम्ये स्त्री वाचि द्वे छागे नेत्रोष्णि नष ॥५१८३॥  
 वगुको ना वृभेदे क्ली चन्दनेऽपि वने पणे ।  
 वल्मीरिद्वे समुद्रे च पुसि साद्र तु वाच्यवत् ॥५१८४॥  
 वल्मीक सातपे मेघे पुमास्त्र्येऽप्यथास्त्रियाम् ।  
 वमीक करपादादिशोथे नाकौ तथा मत ॥५१८५॥  
 वलो गोधूमभेदेऽपि तथा मानातरे पुमान् ।  
 वल्लकी कुदुरुक्यामक्षयोगा तरवीणयो ॥५१८६॥  
 वलभो दयितेऽप्यक्षे त्रिर्ना सलक्षणे ह्ये ।  
 स्यादगुर्वतरे स्त्री तु वल्लभी परिकीर्त्तिता ॥५१८७॥  
 वल्लभा तु प्रियङ्गौ चाऽतिविषायाञ्च कीर्त्तिता ।  
 वल्लरिस्त्री लताया च मञ्जर्या वलरी तथा ॥५१८८॥  
 वल्लवो द्वे सूपकारे गोपे भीमे पुन पुमान् ।  
 वला स्त्री तुवरीधान्ये सा तु सवरणे द्वयो ॥५१८९॥  
 मल्लीक्षत्रियजे त्वेषा द्वयोवल्ली प्रकीर्त्तिता ।  
 वली कैवर्त्तिकाचव्याज्जमोदाव्रततिष्वपि ॥५१९०॥  
 फलवल्लीग्रथकाण्डभूषु स्त्री वल्लिवन्मता ।  
 वल्लिज मरिचे वशक्षीर्या चव नपुसकम् ॥५१९१॥  
 सविषप्रसवे तूद्भिद्भेदे स्याद्वल्लिज पुमान् ।  
 वल्लु(ल्ल)रस्तु वनक्षेत्र ऊषरे वाहने तथा ॥५१९२॥  
 गहनेऽपि च नक्षत्रे क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ।  
 वल्लुर शाद्वले क्षेत्रगहनेऽनम्मसि स्मृतम् ॥५१९३॥  
 मञ्जर्यामौषधे कुञ्जेऽपि क्लीबमिति केचन ।  
 वल्लूरकस्तु वल्लूरे कणवैकृतमिद्यपि ॥५१९४॥

वल्लरा तु त्रयी शुष्कमांसद्वकरमांसयो ।  
 वव्र पुमाह्वदे त्रिस्तु वव्रो वरणकारिणि ॥५१९५॥  
 वशङ्गमस्त्रिर्वशगे मत्रभदे वशङ्गतौ ।  
 वशवर्त्ति-योषधीभिद्यथ त्रिषु तु यौगिके ॥५१९६॥  
 स्त्रियां वशा स्याद्वध्याया स्त्रीमात्रे दुहितर्यपि ।  
 करिण्या वध्यगव्यां चाप्यग्निमथद्वमेऽप्यथ ॥५१९७॥  
 आयत्तत्वे प्रभुत्वे च स्पृहाया च जनेऽपि ना ।  
 केचिद्वश्यालये वाल्मीक्यविमिजन्मसूचिरे ॥५१९८॥  
 वशद्रुतवसायां च क्लीब क्वाप्युपलभ्यते ।  
 त्रिष्वायत्ते द्वयोस्तु स्यात्करणीवैश्यसम्भवे ॥५१९९॥  
 वशि काते त्रिषु क्लीब वशित्वे वशि कीर्त्तितम् ।  
 वशी वश्यामनि त्रि स्याद्वशिनी तु स्त्रिया मता ॥५२ ॥  
 शम्यामपि च वदायां न क्ली जलविडालके ।  
 वशिर किणिहीहस्तिपिप्पयो पुसि कीर्त्तित ॥५२ १॥  
 सामुद्रलवणे त्वेतद्वशिर स्यान्नपुसकम् ।  
 वशीरोऽपि वसीरोऽपि वसिरश्चैव न स्त्रियाम् ॥५२ २॥  
 वश्या वशित्वसिद्धौ न नाऽथ स्याद्वशगे त्रिषु ।  
 वसति स्त्री गृहे रात्राववस्थाने जिनाश्रमे ॥५२ ३॥  
 वसन छादने वस्त्रे निवासारये च कर्मणि ।  
 वसन्त सुरभौ छदोरागतालातरेषु च ॥५२ ४॥  
 तथाऽतिसाररोगेऽपि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 वसतजा सुरभिमासोत्सवे मलिकाभिदि ॥५२ ५॥  
 वसततिलका न क्ली छन्दोभेदे प्रकीर्त्तिता ।  
 तिलकस्य तु पुष्पे क्ली भाणभेदे रसातरे ॥५२ ६॥  
 वसन्तदूतश्चैत्रेऽपि चूते ना पञ्चमस्वरे ।  
 वसतदूती पाटल्या माघया च स्त्रियां मता ॥५२ ॥  
 द्रुमान्तरेऽग्निमथाभे कोकिले तु द्वयोभवेत् ।  
 स्याद्वसन्तसख पुसि कामे च मलयानिले ॥५२ ८॥

वसन्ध वसुदवैस्त्रि सबद्ध धनयोगिनि ।  
 वसाऽस्यादाद्रकाभोज्झिद तरे मेदसि तथा ॥५१॥  
 वसादनी शिंशपायामटरुषऽपि च स्त्रियाम् ।  
 छत्राक क्ली तु कवके वसारोह शिलीघ्रके ॥५२१॥  
 वसिस्तु वसधातौ ना वस्त्रे स्यापुसि वा स्त्रियाम् ।  
 वसिष्ठ ऋषिभदेऽपि पुमास्तारातरेऽपि च ॥५२११॥  
 वसिष्ठ तूयते वासिष्ठवत्कैत्रिचनपुसकम् ।  
 वसुर्नाऽनौ हृदे योक्त्रे किरणऽधुकपादपे ॥५२१२॥  
 पादपे पीतमुद्गे चारत्निसज्ञप्रमाणके ।  
 पूर्वक्षत्रियभदे च देवमेदे बके द्रुमे ॥५२१३॥  
 आदित्यमरुदग्नी द्रवायुरुद्रोऽश्विविष्णुषु ।  
 शिवे कुबेरेऽप्युषसि सूर्ये च द्राष्टसख्ययो ॥५२१४॥  
 त्रिशुष्कस्वादुशस्तेषु न तु कला नरमत्स्ययो ।  
 मणौ जले च द्रविणे क्लीब स्याद्वसिरौषधे ॥५२१५॥  
 वसुदेवे तथा कृष्णे भारद्वाजऋषौ जिने ।  
 वृद्धयौषधे तथा श्यामरैरलेऽश्वेपि मौक्तिके ॥५२१६॥  
 रौमकारयेऽपि लवण वस्वी तु स्यात्स्त्रिया निशि ।  
 वसुको वासयितरि त्रि पुमास्तु बकद्रुमे ॥५२१७॥  
 अर्वागस्त्याटरुषेषु तालभिद्यपि (कीर्त्तित) ।  
 रौमकारये तु लवण क्लीब वसुकमिष्यते ॥५२१८॥  
 वसुदेव कृष्णताते कण्ववश्यनृपातरे ।  
 वसुदेव धनिष्ठायां स्त्री श्वफल्कसुतार्थिका ॥५२१९॥  
 वसुदैया धनिष्ठाया तथैव नवमीतिथौ ।  
 वसुधास्त्रिधनवति भूलक्ष्म्यो (स्तु स्त्रियामियम्) ॥५२२॥  
 वसुधा तु नदीवौद्धदेवीभिदलकास्वपि ।  
 वसुधासुत इत्येष मौमे च नरकासुरे ॥५२२१॥  
 वसुप्रभाऽग्निजिह्वानामेकस्यामलकापुरि ।  
 वसुमावसुयुक्ते त्रिर्वसुमत्यवनि स्त्रियोः ॥५२२२॥

वसुरेतास्तु वह्नौ स्याच्छिवे चापि प्रयुज्यत ।  
 वसुलस्तु द्वयोर्देवे वसुदत्ताऽभिधे तु ना ॥५२२३॥  
 वसुश्रेष्ठस्तु विष्णौ ना रजते तु नपुसकम् ।  
 वसुषेणस्तु कर्णेऽपि विष्णावपि पुमान्त ॥५२२४॥  
 वसुसाराज्जलकापुर्यां योगार्थे तु यथायथम् ।  
 वसुको वसुक्षे ना क्ली तु स्याल्लवणातरे ॥५२२५॥  
 वसोर्धाराऽग्निचयनघृतहोमे ग्रहाऽतरे ।  
 स्वगङ्गाया तथा स्वाहादेव्या तीर्थातरेऽपि च ॥५२२६॥  
 वस्तिर्मृत्राशये नाभेश्चाधोदेशऽभिषय ताम् ।  
 द्वे स्नेहनोपकरणे दशायामम्बरस्य च ॥५२२७॥  
 अथ वस्ति पुमा घातौ वसावादादिके स्मृतः ।  
 वस्ति ग्रामनगर्यादिपदार्थेऽपि धने (नपि) ॥५२२८॥  
 वस्तुक वस्तुनि तथा वास्तूके क्लीबमुच्यते ।  
 वस्त्र स्यादशुके क्लीब तथा (वस्त्रा नदीभिदि) ॥५२२९॥  
 स्याद्वस्त्रकुट्टिम छत्रे तथैव पटवेश्मनि ।  
 वस्न रुमाजे लवणे मूल्ये मेढागमे तु ना ॥५२३०॥  
 वस्नोऽङ्घ्रि वस्त्र तु गृहे वेतने च नपुसकम् ।  
 वस्वौकसारा वस्वोकसारापि स्यान्नदीभिदि ॥५२३१॥  
 अलकायामपि तथाऽमरावत्यामपीष्यते ।  
 वह्ना नद्या वह्नौ वायौ गोश्वादिस्कन्धदेशके ॥५२३२॥  
 मानातरे चतुर्दशे युगांशे भाग एव च ।  
 वहतो वृषभेऽपि स्यापथिकेऽपि तथा पुमान् ॥५२३३॥  
 वहतिस्तु कुटुम्बेऽपि पुत्रेऽप्याये वृषे पुमान् ।  
 वहती त्वापगायां स्त्रीलिङ्ग एव प्रकीर्त्तिता ॥५२३४॥  
 वहतुस्तु बलीवर्दे कालेऽग्नौ पथिके पुमान् ।  
 वहर्न भारभरणे रथादीनां च यापने ॥५२३५॥  
 स्यन्दे रथविशेष च चतुरस्रे सकूबरे ।  
 वहन्तो रथरेणौ ना वहती वोढरि त्रिषु ॥५२३६॥

ना विस्तृतकरे हस्ते क्ली ताम्रे मन्त्रेऽपि च ।  
 गृह्यस्तु सरतीषु स्त्रीबन्धत्वेऽप्सु कीर्त्तिता ॥५२३॥  
 क्लीब वहिर्ग पोतोपवहनारयरथातरे ।  
 वह्निस्त्वग्नौ पुमानुक्षिण द्वयोस्त्वश्वे गृहिन्तथा ॥५२४॥  
 भलातक्या त्रिसरयायाञ्जम्बीरे चित्रकेऽपि च ।  
 रेफे कपेऽष्टमे चाप वाहने न पुमानयम् ॥५२५॥  
 बाह्वगम समुद्रेऽपि वेणौ वृक्षे तथा पुमान् ।  
 वह्निगर्भा पुन स्त्रीवे शमीवृक्षे प्रकीर्त्तिता ॥५२६॥  
 बाह्ववाला तु धातक्या पुमास्तु नरकातरे ।  
 अजमोदा वह्निदीपका कुसुम्भे पुन पुमान् ॥५२७॥  
 वह्निबीज सुवर्णेऽपि जम्बीरे रेफ एव च ।  
 स्यात्कुसुम्भे वह्निमुख योगार्थे तु यथायथम् ॥५२८॥  
 कुसुम्भ कुङ्कुमे क्लीबलिङ्ग वह्निशिख मतम् ।  
 धातक्या गणिकारीकाश्मर्योर्वह्निशिखा स्त्रियाम् ॥५२९॥  
 अथ वह्निसखो वायौ जीरकेऽपि पुमा मत ।  
 वा स्याद्विकल्पोपमयोर्वितर्के पादपूरणे ॥५३०॥  
 समुचये च विस्तम्भे नानार्थाऽस्तीतयोरपि ।  
 एवार्थेऽपि तथवार्थे चार्थे तच्चाययम्मतम् ॥५३१॥  
 वाशी स्त्री स्यात्तुगाक्षीया वशसम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 वाशिकस्त्रिषु वेणोश्च वादके वाशभारिके ॥५३२॥  
 वाको वाका द्वयोरुक्तौ वाक् स्यात्सामभिस्त्वपि ।  
 वाक्य तु वचने क्लीब सक्रिये कारके तथा ॥५३३॥  
 मीमासाया तकशास्त्रे शास्त्रार्थे परिकीर्त्तितम् ।  
 वागरो वारके शाणे निजरे बाढवे वृक्षे ॥५३४॥  
 मुमुक्षौ पण्डिते चापि परित्यक्तभयेऽपि च ।  
 निणकेऽपि विशाले च वागरो वारके पुमान् ॥५३५॥  
 वागीशा तु सरत्वत्या ना ब्रह्मणि बृहस्पतौ ।  
 वागीश्वरस्तु धिषणे ब्रह्मण्याप पुमान्त ॥५३६॥

वागीश्वरी सरस्वत्या स्त्रिया वागीश्वराऽपि च ।  
 वागुरा मृगव ध्या स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५२५१॥  
 वागुरस्तु द्वयारुक्तो वैश्यवेनीसमुद्भवे ।  
 वाग्दुष्ट दूषते वाचा द्वयोस्तु त्रा य इष्यते ॥५२५२॥  
 वाग्मी शुके द्वे ना जीवे वाचोयुक्तिपटौ त्रिषु ।  
 वाग्य कथेऽपि निर्वेदे वाग्दरिद्रेऽपि वाच्यवत ॥५ ५३॥  
 वाघ स्याद्विजि पुमान्मेधाविनि तथा मत ।  
 साहिये वाङ्मय क्लीब वाग्देया वाङ्मयी स्त्रियाम ॥५२५४॥  
 वाग्वाण्या गौणावृत्त्या सा श द वक्त्रेऽपि च स्त्रियाम ।  
 एकाहमदे जिह्वाया साम्नि वाङ्निघनाभिधे ॥५२५५॥  
 वाचयमो मुनौ त्रिस्तु वाग्यते परिकीर्त्तित ।  
 वाचो मत्स्यविशेषे द्वे पुमास्तु मदनद्वये ॥५२५६॥  
 वाचको वा यवत्पाठकेऽपि चार्थामधायके ।  
 वाचनस्योपयुक्तेऽपि तथा वाचनक मतम् ॥५२५ ॥  
 वाचाला शारिकाया स्त्री बहुगद्यगिरि त्रिषु ।  
 स देशे वाचिक क्ली वागाशीदत्ते पुमा मत ॥५२५८॥  
 वाच्यस्त्रि कुत्पितेऽधीने विहीन वदितयके ।  
 प्रजापतौ तु पुष्टिङ्ग वा यन्दोषे नपुसकम् ॥५२५९॥  
 वाज पक्षीषुपक्षे रेतसि वेगे स्वने युधि ।  
 अन्ने चैत्रे ऋभूणा च त्रयाणां क्वचिदिष्यते ॥५२६ ॥  
 वाज केचित्क्लीबमाहुवृत्तयज्ञाश्ववारिषु ।  
 वाजपेयोऽस्त्रिया सोमसप्तसरयासु च क्वचित् ॥५२६१॥  
 पुमास्तु तस्य मन्त्रे च कल्पे च परिकीर्त्तित ।  
 पुमान्वाजसनिर्विष्णौ साम्नोरपि कयोश्चन ॥५ ६२॥  
 याज्ञवल्क्ये वाजसनेयो नृ भूयाजुषेषु च ।  
 वाजिस्त्री पुङ्गवसने केशपटक्तौ द्वयोहये ॥५२६३॥  
 वाजी नागनौ गुरौ बाणे द्वे तु घोटकपक्षिणोः ।  
 त्रि वाजवति ना सप्तसरयाऽयम्णोस्तथाऽनिले ॥५२६४॥

वायवद्वाजिन वाजिसम्बन्धिन समीरितम् ।

वाजिन तु मत क्लीब नवामिक्षाजस्तुनि ॥५२६५॥

वाजिनी वश्वगधायामश्वार्या चोषसि स्मृता ।

वाञ्छितस्तालभेद स्यादि जाया तु नपुसकम् ॥५२६६॥

वाटस्तु वेष्टने पुसि नगरे भोजने गृहे ।

मण्डले बलये मार्गे स्त्रिया वाटी तथा मता ॥५२६७॥

कुट्या पक्षिविशेषेऽथ वरण्डाङ्गान्नभित्सु नप ।

स्त्रिया तु वाटी गोहा त क्लृप्ते पुष्पफले वने ॥५२६८॥

अस्त्री वृत्तौ द्वे तु वैश्यमग्रीपुत्रेऽपि वास्तुनि ।

वाट्या बलाया स्त्री त्रिस्तु वेष्ट्रवेष्टयितययो ॥५२६९॥

वटयोगिनि वाट्यस्तु पुमाभृष्टयवे मत ।

वाडबो वडबाजनौ ना ब्राह्मणे तु द्वयोर्मत ॥५२७०॥

वाडब करण स्त्रीणा घोटकौषे नपुसकम् ।

मुहूत्तभेदऽप्यस्त्री तु पाताले दक्षिणध्रुवे ॥५२७१॥

नरकेऽपि च केषाञ्चित् मते वाडबमिष्यते ।

वाडबेयोऽश्विना पुसि वृषेऽथ ब्राह्मणे द्वयो ॥५२७२॥

वाण हुडुक्कहिक्काया (छन्दोभिद्वीणयोस्तु ना) ।

वाण स्याद्गोस्तने दैत्यभदे केवलकाण्डयो ॥५२७३॥

वाणा तु वाणमूले स्त्री नीलीझण्ड्या पुनर्द्वयो ।

वाणिनी तु विदग्धाया नत्तक्या मत्तयोषिति ॥५२७४॥

वाणिर्वानेऽम्बुदे वाचि स्तुतावपि भवेत्त्रिष्याम् ।

वाणी वाने सरस्वत्या वाग्वाद्यस्वरवेषु ॥५२७५॥

छन्दोभिदोश्च वाण्यौ तु युगेऽपि स्याद्रथादिन ।

नदीभेदेऽपि वाणी स्यात्सा केषाञ्चित् सरस्वती ॥५२७६॥

वाणिजो वणिजि प्रोक्तस्तथैव वडवानले ।

वात त्रिकृतवाने ना वायौ वातिकृतौ तु नप् ॥५२७७॥

वातकेलि कलालापे पिङ्गदतक्षते पुमान् ।

वायार्या पिच्छिलस्फोटे वामाया वातशोणिते ॥५२७८॥



स्त्रिया वातखुडा वातहुडावत्परिकीर्त्तिता ।  
 वातगामी पाक्षणि द्वे त्रि तु स्याद्वातयाधिनि ॥५२९॥  
 वातगामी तु वातूलोकचयो शक्रकाम्बुके ।  
 वातगु मस्तु वात्याया (वात) याधौ पुमान्त ॥५२८॥  
 वात नस्तु पुमानेष उक्त एरण्डपादपे ।  
 वातघ्नी वमनुष्ये स्याद्वाच्यवद्वातघातके ॥५२८१॥  
 वातज शूलभेदे स्याद्योगे तु स्याद्यथायथम् ।  
 वातपुत्रो महाधूर्त्ते भीमसेने हनूमति ॥५२८२॥  
 वातग्रमी स्त्री वात्याया द्व तु वातमृगाश्वयो ।  
 नकुलेऽपि च कषाञ्चिन्मते वातग्रमी स्मृत ॥५२८३॥  
 द्वयोर्वातमृग द्वे वातग वातमजो मत ।  
 वातरायण उमत्ते निष्प्रयोजनपूरुषे ॥५२८४॥  
 क्रकचे करपत्रे च सायके शरसङ्क्रमे ।  
 वातरायण इ युक्त कैश्चिच्च सरलद्रुमे ॥५२८५॥  
 वातारुषश्चक्रवातो कोचे द्रधनुरुत्कटे ।  
 वातवेगस्तु गरुड धृतराष्ट्रसुते क्वाचत् ॥५२८६॥  
 वातयाधिस्तु योगार्थेऽनिरुद्धे तु पुमान्त ।  
 पुमावातसुतो वेश्याऽऽचार्ये योगे यथायथम् ॥५२८७॥  
 स्त्रिया वातहुडा वात्या राजशोणितयोरपि ।  
 पिच्छिलस्फोटिकाया च वामायामपि योषिति ॥५२८८॥  
 वातादो मृगभेद द्वे बादामे ना फलेऽस्य नप् ।  
 वातापिर्देत्यभेद ना त्रिषु [वातस्य पातरि] ॥५२८९॥  
 वातायनोऽनिले चोलौ नृभृस्यात्सामशाखिषु ।  
 द्वयोरश्वे गवाक्षे तु क्लीब वातायन मतम् ॥५२९०॥  
 वातारिस्तु शतावर्या निगुण्ड्येरण्डयोरपि ।  
 अजमोदास्तुहीभार्गीमलातकविडङ्गके ॥५२९१॥  
 सूरण पुत्रदायां च जतुकायाम्प्रकीर्त्तिता ।  
 वातिर्वायौ रवीन्द्रोर्ना गतिगन्धनकर्मणि ॥५२९२॥

धातौ तत्क्रिययोस्तु स्त्री वाति शोषे तथा मता ।  
 वातिको विषवैद्ये द्वे त्रिषु स्याद्वातरोगिणि ॥ ५३ ॥  
 तथा वातस्य शमने कोपने चापि वस्तुनि ।  
 द्वयोस्तु चातकेऽप्येष वातिको मात्रिकेऽपि च ॥ ५४ ॥  
 स्कन्दानुगामनि क्वचित्पुस्येप परिकीर्तित ।  
 वातिग पुंस भण्टाक्या धातुगदिनि वायवत् ॥ ५५ ॥  
 वातुलस्तु सनाते त्रि शिम्बीधा यातरे पुमान् ।  
 प्रियङ्गो चक्रवाते च वातुल परिकीर्तित ॥ ५६ ॥  
 वातूल पुंसि वात्यायां त्रिर्वातासहवातले ।  
 वात्या स्त्री चक्रवातेऽथ वात्यस्त्रिर्वातयोगिनि ॥ ५७ ॥  
 वात्सक वत्सयूथ क्ली त्रिस्तु उत्सकयोगिनि ।  
 वात्सीपुत्रो नापिते द्वे नाग र्यन्तरयो पुमान् ॥ ५८ ॥  
 वात्स्यस्त्रिवत्साऽपत्यादौ वास्य वत्सत्व इष्यते ।  
 वादस्तु कलहेऽप्युक्तस्तथा वीणादिवादने ॥ ५९ ॥  
 वादन वदनेन त्रि सम्बद्धऽथ न ना शुचि ।  
 वादल स्याद्यष्टिमधौ वादल स्याच्च दुदिने ॥ ६० ॥  
 वादायस्त्रिवदायेन सम्बद्धेऽन्यत्र वादत ।  
 वादिकस्त्रिर्वादवति मात्रिके वातकाभिधे ॥ ६१ ॥  
 वादिक क्ली तु वाद्ये स्याद् भगलिङ्ग तु कर्त्तरि ।  
 अण्यत वदतेर्न्यते वदते कर्मणि स्मृत ॥ ६२ ॥  
 वादित्र वाद्यनिर्घोषे वाद्ये चापि नपुसकम् ।  
 वदितुस्तु त्रिसम्बन्धि येतद्वादित्रमिष्यते ॥ ६३ ॥  
 वादिराट पुंसि मञ्जुश्रीबुद्धे योगाथ इष्यते ।  
 वाद्यन्तु क्लीबमातोद्ये त्रिर्वाद्यो वादनीयके ॥ ६४ ॥  
 वाद्यमान त्रियोगार्थे वाद्यभाण्डे नपुसकम् ।  
 वाध्रीणसो द्वयोश्छागे गण्डकेऽप्युक्षिण पक्षिणि ॥ ६५ ॥  
 कृष्णग्रीवे रक्तशीर्षे श्वेतपक्षे प्रकीर्तित ।  
 वान शुष्कफले शुष्के त्रि क्ली स्यूतौ च शोषणे ॥ ६६ ॥

वातेर्धातो क्रियाया च कटे वान प्रकीर्तितम् ।  
 वानक ब्रह्मचर्ये क्ली त्रि तु स्याद्वनितर्यपि ॥५३ ॥  
 वानप्रस्थो मधूके च वैखानसपलाशयो ।  
 नपुसक तु प्रसवे स्यामाधूकपलाशयो ॥५३ ८॥  
 वानरो ना तुरुष्कारयनिर्यासेऽथ कपौ द्वयो ।  
 कपिक द्वौ पुन स्त्रीत्वे वानरी परिकीर्त्तिता ॥५३ ९॥  
 वानस्पत्य शिव पुसि फला पुष्पवति द्रुमे ।  
 क्ली द्रुमाणा फल कुञ्जे त्रैर्वनस्पतियोगिनि ॥५३ १ ॥  
 वानायुस्तु द्वयोरथ वनायुविषयोद्भवे ।  
 नृभूमि तद्दृशने वाताया कस्यचिद्द्वयो ॥५३ ११॥  
 वानीरो वतसे पुसि तथा चित्रक इष्यते ।  
 वानीरकस्तु वानीरे मुञ्जऽपि च पुमामत ॥५३ १२॥  
 वानीरजस्तु मु जे वनीरज कुष्ठमषजे ।  
 वानेय मुस्तके क्लीब त्रिषु स्याद्वनसम्भवे ॥५३ १३॥  
 वान्ताद कुक्कुरेऽपि द्वे तथा पक्ष्यन्तरे मत ।  
 वापयोदनभिक्षायां ग्रासमात्र्यां स्त्रिया मता ॥५३ १४॥  
 अथ वापयतेरर्थे वापन वापना नना ।  
 वापित तु मत बीजाकृतमुण्डितयोस्त्रिषु ॥५३ १५॥  
 वापी तु दीर्घिकाया स्याज्योतिर्योगा तरेऽपि च ।  
 वामस्तु प्रतिकूले च त्रिषु सुन्दरस ययो ॥५३ १६॥  
 द्वयोस्तूष्णऽथ पुष्टिङ्गो वाम स्याद्वरुण सरे ।  
 पयोधरे हरे वातौ रुद्रभिद्रामहस्तयो ॥५३ १ ॥  
 वामा स्त्री नवशक्तीना शिवस्यैकत्र योषिति ॥  
 योषिद्वेदेऽपि दुर्गाया सरस्वत्यां त्रियामपि ॥५३ १८॥  
 नदीभेदे पार्श्वनाथमातर्यपि तथा मता ।  
 वामी शृगालीवडबारासभीवेसरीषु च ॥५३ १९॥  
 वामकस्त्रिर्मतो वामे द्वे तु स्यात्सङ्करान्तरे ।  
 अथ मुद्राविशेषे तु वामक स्यान्नपुसकम् ॥५३ ॥

वामदेव शिवेऽमात्ये तथा दशरथस्य च ।  
 शामलिद्वीपगिरिभिद्विभिद्व याधिमित्सु च ॥५३ १॥  
 ब्रह्ममासतृतीया वामदेवी तु पावती ।  
 वामनस्तु त्रिषु हस्ते पुमास्तु मदनद्रुमे ॥५३२ ॥  
 अवतारातरे विष्णोस्तथा दक्षिणदिग्गज ।  
 स्त्री वामलोचनेत्येषा स्त्रीभद परिकीर्त्तिता ॥५३ ३॥  
 क्ली कर्मधारये चाथ बहुव्रीहौ तु भद्यवत ।  
 वायसोऽगुरुवृक्षे च श्रीवत्सध्वाङ्गयो पुमान् ॥५३ ४॥  
 वयस्सम्बन्धिनि तथा वायसस्त्रिषु कीर्त्तित ।  
 काकोदुम्बरिकाया तु काकमाच्या च वायसी ॥५३५॥  
 क्लीब वायुफल शक्रकामुके करकऽपि च ।  
 वार क्रियाभ्यावृत्तौ च समूहेऽसरे क्षणे ॥५३२६॥  
 द्वारे हरे कुब्जवृक्षे चारे सूर्यादिवासरे ।  
 वारी स्याद्रजबन्धन्या कलस्यामपि योषिति ॥५३ ७॥  
 वारकोऽवगतां पुंसि वा यवस्यान्निषेधके ।  
 वारकीरस्तु पुंसि स्याद्भारग्राहिणि वाडवे ॥५३२८॥  
 यूकायां वेणिवेध्यां नीराजितहयेऽपि च ।  
 वारङ्ग पक्षिणि द्वे स्यात्खड्गैकावयवे तु ना ॥५३२९॥  
 वारणो हस्तिनि द्वे स्यात्पुंसि सेतौ प्रकीर्त्तित ।  
 स्त्रियां पुंसि तथवेय वारणा स्यान्निवारणे ॥५३३ ॥  
 वरणद्रोस्तु विकृतौ त्रि स्याद्वरणयोगिनि ।  
 वारवाणोऽस्त्रियामुक्त कञ्चुके कबचेऽपि च ॥५३३१॥  
 वाराह सामभेदे क्ली वाराही तु स्त्रिया मता ।  
 विश्वक्सेनप्रियानाम्न्यामोषधौ ऋ लता तरे ॥५३३ ॥  
 वाराहवृन्दसङ्गे स्यादयस्या क्वचिदोषधौ ।  
 सप्तानां चैव मातृणामेकस्यामपि मातरि ॥५३३३॥  
 वाराह सामभेदेषु वराहमुनिना पुन ।  
 कृते वराहसन्बन्धियपि त्रिषु समीरितम् ॥५३३४॥

वारि स्त्री हस्तिनो यत्र गृह्यते तत्र कीर्त्तिता ।  
 अथ वारिकलश्यां च जलेऽपि च नपुंसकम् ॥५३३५॥  
 वारिज त्वधिलवणे पद्मे शङ्ख तु वारिज ।  
 वारिणिस्तु पशौ द्वे स्यात्पशुवृत्त्या तु सा स्त्रियाम् ॥५३३६॥  
 वारिपिण्डस्तु मण्डूके द्वयो पाषाणगर्भजे ।  
 यौगिके त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम् ॥५३३७॥  
 वारुः शु कफले पुंसि जङ्घाया स्त्री ह्ये द्वयो ।  
 वारुण्युमाग्रती योश्च सुरायाञ्च लतातरे ॥५३३८॥  
 वरुणस्य तु सम्बन्धियुदित वारुण त्रिषु ।  
 वारुहस्तु कपाटे च तथा वस्त्राञ्चलेऽपि च ॥५३३९॥  
 पावके पञ्जरे चैव शम्बलेऽपि पुमान्मत ।  
 वार्क्ष क्लीब वने वृक्षसम्बन्धिनि पुनस्त्रिषु ॥५३४०॥  
 वार्त्ता तु वर्त्तनोदन्तकृषिप्रभृतिवृत्तिषु ।  
 वार्त्ताक्यां च स्त्रिया वार्त्त नि सारारोग्ययोरथ ॥५३४१॥  
 त्रिवृत्तवृत्तिसम्बन्धियपि स्यादवृत्तिमत्यपि ।  
 वार्त्ताकी त्रि श दफलस्तम्बे वातिङ्गनाह्वये ॥५३४२॥  
 प्रसहारये क्षुद्रफले स्तम्बे तत्प्रसवे तु नप् ।  
 वार्त्तिकस्तु द्वयोदूते यारयाग्रथातरे तु नप् ॥५३४३॥  
 तथा विवाहविरयातधूलिभक्तेऽपि कीर्त्तितम् ।  
 वार्दूरं कृष्णलाबीजदक्षिणावत्तशङ्खयो ॥५३४४॥  
 काकचिञ्चीभवे बीजे वारिक्रिमिजनीरयो ।  
 वाधक वृद्धसङ्घाते वृद्धत्वे वृद्धकर्मणि ॥५३४५॥  
 वाधुषिस्त्वृणवृद्धौ स्त्री वृद्धया जीवे तु भेद्यवत ।  
 वार्धणस खङ्गमृगे मत स्त्रीपुंसयोरयम् ॥५३४६॥  
 कृष्णग्रीवे रक्तशीर्षे श्वेतपक्षे विद्वङ्गमे ।  
 त्रिविधे त्विन्द्रियक्षीणे श्वेते चाजापतौ पुमान् ॥५३४७॥

वावटीरो नक्र आम्रास्थयङ्कुरे गणिकासुते ।  
 वाषिक त्रायमाणारयभेषजे नप्यथ त्रिषु ॥५३४८॥  
 वर्षासु भवजातादौ निवृत्त यच्च किञ्चन ।  
 वर्षण वर्षाभिर्वा स्यात्तत्राधीष्टादिकेऽपि तत ॥५३४९॥  
 वालस्तु ना सवरणे चलने केशपुच्छयो ।  
 विशेषादश्वकरिणो पुच्छ हीबेरके तु नप ॥५३५ ॥  
 वाली हषुलकन्या स्यास्त्रियां स्याजतुकाहला ।  
 नारिकेले हरिद्रायां मलिकाभिदि वालधौ ॥५३५१॥  
 वायलिङ्गोऽभके मूर्खे तथाऽलङ्कारभिद्यपि ।  
 बालक त्वस्त्रियां ज्ञेय बलये चाङ्गुलीयके ॥५३५२॥  
 हीबेर क्ली शिशौ द्वे स्त्री वालिका सिकतासु च ।  
 ऊर्मो च कणपृष्ठस्थे विज्ञेया भूषणातरे ॥५३५३॥  
 बालवाय पुमाञ्जलविशेषे परिकीर्तित ।  
 बालै कार्यस्य वस्त्रस्य य कर्त्ता त्रिषु तत्र च ॥५३५४॥  
 बालि नावश्विनी ऋक्षे वाली सुग्रीवपूवजे ।  
 केशहीबेरपुच्छादियुक्तार्थे त्वभिधेयवत् ॥५३५५॥  
 बालुका सिकतासु स्त्री क्ली त्वेलाबालुकौषधे ।  
 पुण्डरीकसमारये च बालुक स्याद्विषातरे ॥५३५६॥  
 बावीर उत्पत्तिक्षेत्रेऽयमोघे परिकीर्तित ।  
 वाशा स्त्रियामाटरूपे वाशी वाचि प्रकीर्तिता ॥५३५ ॥  
 हिमसृष्टयै च सूर्यस्य रश्मीनां यच्छतत्रयम् ।  
 तत्रैकत्राऽथ वाशी स्याद्विशसम्बन्धिनि त्रिषु ॥५३५८॥  
 वाशा तु पुसि स्त्रीत्वे च वाशिते परिकीर्तिता ।  
 वाश तु सामभेदे क्ली क इ वेदेत्यचि स्थिते ॥५३५९॥  
 वाशिरग्नौ वाशयतौ वाशतौ वाश्यतावपि ।  
 द्वे गोमायौ प्रजननप्राप्ताया स्त्री चतुष्पदि ॥५३६ ॥  
 अथ भीरावय वाशिर्भेधवत्परिकीर्तित ।  
 वाशिता तु करिण्यां च स्त्रीत्वे योषिति च स्मृता ॥५३६१॥

वाशुरः पक्षिणि द्वे स्याद्वाशुरा तु स्त्रियां निशि ।  
 वाश्रा चाप्यथ वाश्रस्तु पुरुषे शब्दबृदयो ॥५३६२॥  
 वाश्रो ना दिवसे क्लीब मन्दिर च चतुष्पथे ।  
 वासतेयी तु रात्र्या स्त्री साधौ तु वसतौ त्रिषु ॥५३६३॥  
 वासनस्तु पुमा-गेहावयवे चि दुसञ्ज्ञके ।  
 वारिधायां च वस्त्रे च प्रत्याशाज्ञानयो स्त्रियाम् ॥५३६४॥  
 वासना तु न ना गन्धधूपाद्यर्भावनाविधौ ।  
 तथा निवासयत्यर्थे वस्तेर्हेतुकृतावपि ॥५३६५॥  
 वासनीय कुङ्कुमे क्ली त्रि तु वासयितयके ।  
 वासतो ना कुरवके त्रिषु त्ववहिते तथा ॥५३६६॥  
 जाते वसतात्तद्योगिन्यपि तत्पुष्पजातिषु ।  
 वासती माधवीयूथ्यो [कोकिलायामपीष्यते] ॥५३६॥  
 वासरो दिवसे न स्त्री ना त्वग्नौ प्राश्वषि स्मरे ।  
 वासवो वसुसम्बन्धि-यथ त्रिर्ना पुरदरे ॥५३६८॥  
 यूपस्यारत्नय सप्तदशद्वादश एष्वपि ।  
 वासिका स्त्री माल्यदाम्नि वासिक तु नपुसकम् ॥५३६९॥  
 गृहच्छादिष्काष्ठभेदे सधिकाष्ठाह्वये स्मृतम् ।  
 वासिता करिणीनार्योर्वासित भाविते रुते ॥५३७॥  
 वासुक रौमकारये क्ली लवणेऽकद्रुमे तु ना ।  
 वासुदेवस्तु ना विष्णौ द्वयोस्तु स्यात्तुरङ्गमे ॥५३ १॥  
 वासुरा वासितायां स्याद्वासतेयभृवि स्त्रियाम् ।  
 वास्तुरस्त्री गृहे सीम्नि सुरुङ्गागृहभूपुरे ॥५३ २॥  
 वाहस्तु ना बलीवर्दे वहने त्वसयुग्मके ।  
 प्रस्थद्वयेऽध्वर्या स्यात्तथाखारीचतुष्टये ॥५३ ३॥  
 स्त्रीपुसयोस्तु वाहोऽथ मतो गदमघोटयो ।  
 वाहसो जलनिर्याणे श्यालौ मुनिषण्णके ॥५३ ४॥  
 क्ली तु स्याद्वाहन युग्ये वाहनी तु स्त्रियामियम् ।  
 पुरस्य राजमार्गे स्यादुपनिष्करसञ्ज्ञके ॥५३७५॥

अना तु वाहयत्यर्थे वाहन वाहनाऽपि च ।  
 ना त्वग्नौ सुनिषण्णारयशाके च जलनिगमे ॥५३ ६॥  
 भेद्यलिङ्गस्तु वहनकर्मजीवे प्रकीर्तित ।  
 वाहिका पुसि भूमिन् स्युष्टर्कनामनि नीवृति ॥५३ ७॥  
 तुलासञ्ज्ञोमानभदादृक्ष दशगुण स्मृतम् ।  
 वृद्धया दशगुण तस्मात्स्थितेष्वचितकादिषु ॥५३ ८॥  
 अष्टासु परिमाणेषु षट्को वाहिकमुच्यते ।  
 वाहिनी स्यात्तरङ्गिण्यां सेनासैयप्रभेदयो ॥५३ ९॥  
 वाह्य वाहयित ये त्रिविधे वाहसाधुनि ।  
 नपुसक तु वाह्य तडाहने परिकीर्तितम् ॥५३ १०॥  
 विगतरी त्रिषु खगे द्वयोर्ना परमात्मनि ।  
 विनिग्रहे नियोग च विज्ञाने पादपूरणे ॥५३ ११॥  
 निश्चयेऽसहने हेतावयाप्तिविनियोगयो ।  
 ईषदर्थे परिभवे शुद्धावालम्बनेऽपि च ॥५३ १२॥  
 विकच क्षपणे केतौ नाऽकेशे स्फुटितेऽयवत् ।  
 विकटा वज्रवाराह्या त्रिषूरुविकरालयो ॥५३ १३॥  
 विकर्त्तनो रवौ पुसि कत्तने तु विकत्तनम् ।  
 अथ कत्तयतेरर्थे न पुसि स्याद्विकर्त्तना ॥५३ १४॥  
 विकल्प पुसि भ्रान्तौ च कल्पने (सशयेऽपि च) ।  
 विकसुको ना परिस्रोतो रसे त्रि गुणवादिनि ॥५३ १५॥  
 विकारस्त्वन्यथाभावे रागे च परिकीर्तित ।  
 विकाशः पुसि विजने प्रकाशे (च प्रकीर्तित) ॥५३ १६॥  
 विकुस्रस्तु समुद्रेऽपि च द्रेऽपि परिकीर्तित ।  
 विकृतो न स्त्रियामुक्तो रसे बीभत्सनामनि ॥५३ १७॥  
 त्रि तद्वति विकारेणान्विते पक्षिकृतेऽपि च ।  
 तथा वीतकृतेऽपि स्याद्रोगिदूरूपयोरपि ॥५३ १८॥  
 नानाविधक्रिये क्ली तु विकृत विविध कृते ।  
 त्रपाद्यैरुचितस्याप्यनुक्तौ भावान्तरे स्त्रिया ॥५३ १९॥



विक्रम शाक्तसम्पत्तौ क्रातौ क्षान्तौ तथा पुमान् ।  
 विक्लिन्नो रजसा जीर्णे शीर्णे चार्द्रे च वाच्यवत् ॥५३९॥  
 विगत निष्प्रभे वीतेऽयमिधेयवदिष्यते ।  
 विगूढो गदितेऽपि स्याद् गुप्ते च त्रिषु (कीर्त्तित) ॥५३९१॥  
 विग्रस्तु गतनासेऽपि तथा मेधावनि त्रिषु ।  
 तत्तु मेधाविनि याय्य गतनासे वसाम्प्रतम् ॥५३९२॥  
 यस्मास्मृतिर्वेध इति नतु वेग्र इतीदृशम् ।  
 विग्रहो व्यासवाक्येऽपि विस्तारे युद्धदेहयो ॥५३९३॥  
 वेग्रहे च पुमानुक्तस्त्रि तु स्याद्विगतग्रहे ।  
 विघ्नकारी स्मृतो घोरदशनेऽपि विधातिनि ॥५३९४॥  
 भवेद्विचकिलो मलीग्रभेदे मदने पुमान् ।  
 विचक्षण कृष्णशिम्बौ पण्डिते त्रिविचक्षण ॥५३९५॥  
 विचिकित्सा सशये स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।  
 स्त्री विच्छित्तिस्तु विच्छेदे भावभेदे च योषिताम् ॥५३९६॥  
 स चाय वस्त्रमायादेर्यासे नास्थोपशोभित ।  
 हारभदेऽङ्गराग च शदोऽयमपि च स्त्रियाम् ॥५३९७॥  
 विच्छिन्न तु समाल धे वाच्यवस्याद्द्विधाकृते ।  
 विजमा गद्यजमयप्यभिधेयवदिष्यते ॥५३९८॥  
 शूद्रपूर्वकवैश्यायां व्रात्याजाते द्वयोरयम् ।  
 विजयस्तु जये खड्गे चार्जुनेऽपि पुमा मत ॥५३९९॥  
 विजया तु हरीतक्यां भङ्गाया [तिथिभिद्यपि] ।  
 विजिज्ञासा तु मीमांसने स्त्री योगे यथायथम् ॥५४॥  
 विजृम्भण सुचेष्टायां क्लीब त्रिषु विकस्वरे ।  
 विजृम्भित जम्भणे क्ली त्रि सजृम्भे विकस्वरे ॥५४॥  
 विज्ञान [क्लीबलिङ्ग स्याचेतनाज्ञानकर्मसु] ।  
 विटोद्वौ लवणे पिङ्गे मूषिके खदिरेऽपि च ॥५४॥  
 विटकाता हरिद्राया योगार्थे तु यथायथम् ।  
 विटङ्क पादपाङ्गे च गृहस्यावयवेऽपि च ॥५४॥

विटपो न स्त्रिया स्तम्बशाखाविस्तारपलवे ।  
 विटपतिर्द्वे सुरे ना जामातरि त्रिविशापतौ ॥५४ ५॥  
 विडङ्गस्त्रिष्वभिज्ञे स्यात्कृमिन्ने पुनपुसकम् ।  
 विडालो नेत्रपिण्डे स्याद्वृषदशकके पुमान् ॥५४ ६॥  
 वितण्डा [करवीर्या स्यात्] कच्छी शाकेऽपि च स्त्रियाम् ।  
 स्वपक्षस्थापनाहीने वादे तार्किकविभुते ॥५४ ६॥  
 वितक आशङ्काया स्याद्वीततर्के तु भेद्यवत ।  
 वितकस्तु पुमानूहे सशये च निगद्यते ॥५४ ७॥  
 वितानो यज्ञ उलोचे त्वस्तारे पुनपुसकम् ।  
 क्लीब वृत्तविशेषे स्यात्त्रिलिङ्गो मत्ततुच्छयो ॥५४ ८॥  
 वितुन्नस्वामलक्या वितुन्न तुत्थाङ्गने मतम् ।  
 वितुन्न सुनिषण्णे च शैवाले च नपुसकम् ॥५४ ९॥  
 वितुन्नकस्तु धायाके झाटामलमयूरके ।  
 वितुन्नक तु भूधाया कुस्तुम्बुर्या [नपुसकम्] ॥५४ १०॥  
 वित्त धने क्ली त्रिषु तु ग्रथिते च विचारिते ।  
 वित्ति सम्भावनाया स्याद्विचारे लाभ एव च ॥५४ ११॥  
 विज्ज्ञातरि त्रिषु ज्ञाने स्त्रिया ना तु बुधग्रहे ।  
 विदण्डो मागरोधार्थागले त्रिस्तु वियष्टिके ॥५४ १२॥  
 विदथो योगिकृतिनो [पुलिङ्ग परिकीर्तित] ।  
 विदाज्ञाने च निर्दिष्टा मनीषायाश्च योषिति ॥५४ १३॥  
 विदारो ना जलोच्छावासो [तथा स्यात्प्रविदारणे] ।  
 विदारी शालपर्ण्या च रोगभेदेक्षुगधयो ॥५४ १४॥  
 विदारणा ननाभेदे तथैव स्याद्विडम्बने ।  
 विदारण विडम्बे च भेदे क्लीब रणे द्वयो ॥५४ १५॥  
 विदारिका च काश्मर्या शृगाल्याश्च [स्त्रियाम्मता] ।  
 विदित सश्रुतेऽपि स्याद्ज्ञाते चाप्यभिधेयवत् ॥५४ १६॥

विदुरो नागरे धीरे कौरवाणां च मन्त्रिणि ।  
 विदुलस्तु पुमान्भुवेतसे वेतसेऽपि च ॥५४१॥  
 विदूषकश्चादुवटौ परनिन्दाकरेऽपि च ।  
 विदेहास्तीरश्रुतौ नृभूमिनि वीततनौ त्रिषु ॥५४१८॥  
 विदेह कायश्च ये स्याज्जनकावयभूमिपे ।  
 विद्ध स्यादादिभभिन्ने सदृशे [बाधितेऽपि च] ॥५४१९॥  
 क्षिप्ते च त्रिषु तज्जात योतिर्विद्वीक्षितेऽपि च ।  
 विद्या शास्त्रेऽपि विज्ञाने मन्त्रेष्वपि मता तथा ॥५४२॥  
 शैवागमप्रसिद्धेषु तन्मतेषु केषुचित् ।  
 महाविद्यारयदेवीषु [सरस्वत्यामपि स्त्रियाम्] ॥५४२१॥  
 विद्युत्त तडिति स्त्री स्याद्दीप्ते विद्युत्त्रिषु स्मृत ।  
 [शिलायाञ्चैव] सध्यायां स्त्रिया त्रिषु तु निष्प्रभ ॥५४२२॥  
 विद्रवो विद्रुतौ [पुसि बुद्धावपि तथा मत] ।  
 विद्रुत विद्रवे क्ली त्रिविलीने च पलायिते ॥५४२३॥  
 विद्रुम पलवे वृक्ष प्रवाले मणिभूरुहे ।  
 विद्वान् विद्वद्बुधात्मज्ञेष्वपि स्याद्विदुरे त्रिषु ॥५४२४॥  
 विधर्मा त्वहिते पुसि यतीचारे च कीर्तित ।  
 सामप्रमेदे तु क्लीब त्रि स्याद्विगतधर्मके ॥५४२५॥  
 उच्चारणप्रमेदे च स्पृष्टताद्ये विध मतम् ।  
 विधा गजाने ऋद्धौ च प्रकारे वेतने विधौ ॥५४२६॥  
 विधाता [ना विधौ कामे] कत्त मेधाविनोस्त्रिषु ।  
 विधान हस्तिकवले प्ररणेऽभ्यचने घने ॥५४२७॥  
 वेदनायामुपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ।  
 विधिर्ना नियतौ काले विधाने परमेष्ठिनि ॥५४२८॥  
 विधुर्विष्ण्वग्निकाले दुवात [कपूरकेषु च] ।  
 [पुल्लिङ्गो द्वे राक्षसे तु शदोऽयम्परिकीर्तित] ॥५४२९॥  
 विधुत कम्पितेऽपि स्यात्त्यक्ते चाप्यभिधेयवत ।  
 विधुर कष्टविश्लिष्टापनीकविकलेषु च ॥५४३॥

[क्लीब तु तत्र विश्लेष रसालाया स्त्रियामपि] ।  
 विनत प्रणते भुग्ने शिक्षिते चाभिधेयवत् ॥५४३१॥  
 विनता ताक्ष्यजननी पटकाण्डभिदोस्त्रियाम् ।  
 विनया स्त्री बलाया ना शमेकीतनये त्रिषु ॥५४३ ॥  
 विनायकस्तु हेरम्बे ताक्ष्ये विघ्ने जिने गुरा ।  
 विनिपातो निपाते स्याद्वादि यसने पुमान् ॥५४३३॥  
 विनीत सुवहाऽश्वे स्याद्वणि-यपि पुमास्त्रिषु ।  
 जितेन्द्रियेऽपनीते च निभृते विनयाविते ॥५४३४॥  
 विनेता केशवे राज्ञि ना [च त्रिषु विनेतरि] ।  
 अजयस्तु प्रकरणे दन्त्योष्ठादिपदावले ॥५४३५॥  
 दन्त्योष्ठादिं च विदुषो वाचक विदुरियमुम् ।  
 विप्रुहवाचिनमोष्ठ्यादिविदुशद च विभ्रमात् ॥५४३६॥  
 एक मवा द्वयोरथा विदुर्ज्ञातरि विप्रुषि ।  
 विघ्न्या स्त्रिया लवल्या स्यात्पुसि याधाद्रिभदयो ॥५४३ ॥  
 विन तु प्राप्तसत्ताके त्रिषु लघे विचारिते ।  
 विपक्ष पक्षिपक्षेऽरौ त्रि तु स्याद्वीतपक्षके ॥५४३८॥  
 स्त्रियां विपश्ची वीणायां वीणाभदे च कीर्त्तिता ।  
 योऽल्पदण्डश्च तन्त्रीभिस्तथा नवभिरवित ॥५४३९॥  
 विपणि पण्यवीथ्या च भवेदापणपण्ययो ।  
 विपत्ति[योनाया स्यात्पदि चापि स्त्रियामियम्] ॥५४४ ॥  
 विपनस्तु द्वयो सर्पे त्रिर्मृते च विपद्गते ।  
 विपाक पचने स्वेदे विरुद्धे कर्मण फले ॥५४४१॥  
 विपाकी ना यवक्षारे विपाकवति तु त्रिषु ।  
 विपिन गहने त्रि क्ली जलदुर्गे वनेऽपि च ॥५४४२॥  
 विपुल पृथुलेऽगाधे मेरुपश्चिमभूधरे ।  
 विप्रतीसार उद्दिष्ट कौकृत्येऽनुशयेऽरुणि ॥५४४३॥  
 विप्रलापो विरोधोक्तौ विप्रलम्भोपमदयो ।  
 विप्रस्य भाषणे चापि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥५४४४॥

विप्रिय त्वपराधे क्ली भेद्यवद्विगतप्रिये ।  
 विबुधस्तु द्वयोर्देवे विदुषि त्वभिधेयवत् ॥५४४५॥  
 विभक्ति स्त्री विभागेऽपि सुसिद्धो प्राग्दिशीयके ।  
 प्र ययेऽपि तथा शोक्ता वीतमक्तौ तु भेद्यवत् ॥५४४६॥  
 विभवो ना धने मोक्षेऽप्यैश्वर्येऽपि पुमान्मत ।  
 विभाकरोऽग्नौ सूर्ये ना त्रिषु तु स्याद्विभाकृतिः ॥५४४७॥  
 विभाजन शाकभेदे देवमारिषसङ्गके ।  
 विभागनेतुव्यापारे तु नना स्याद्विभाजना ॥५४४८॥  
 विभावः स्यात्परिचये रसस्योद्दीपनादिषु ।  
 विभावती सप्तलारयपुष्पवत्या प्रकीर्तिता ॥५४४९॥  
 विभावना साधनायामुपलब्धौ तथा न ना ।  
 विभावरी निशारायो कुट्टया वक्रयोषिति ॥५४५०॥  
 विवादे वस्त्रगुण्ठ्या च [स्त्रीलिङ्गे परिकीर्तिता] ।  
 विभावसुर्ना सूर्याग्नीदुषु द्वे शतपत्रके ॥५४५१॥  
 विभीषण पुमाञ्शक्रे रावणस्याऽनुजेऽपि च ।  
 विष्णु कुबरे [सूर्ये च पुसि ब्रह्मणि शङ्करे] ॥५४५२॥  
 [त्रिषु स्यात्सर्वगे नित्ये प्रभावपि तथा मत] ।  
 विभूतिस्तु स्त्रियाम्भूतौ विभोरैश्वर्यसम्पदो ॥५४५३॥  
 वीतभूतौ तु कथिता विभूतिरभिधेयवत् ।  
 विभ्रम सशये आ तौ शोभाया वेभ्रमे पुमान् ॥५४५४॥  
 शृङ्गारचेष्टाभेदे च द्वाग्विपर्यासरूपके ।  
 वीतभ्रमे वय प्रोक्तो विभ्रमश्चाभिधेयवत् ॥५४५५॥  
 [विमला स्त्री भ्रुवो मेदे शतलायां त्रि निर्मले] ।  
 विमानो योमयाने च सावभौमगृहेऽपि च ॥५४५६॥  
 घोटके यानपात्रे च पुनपुसकयोर्मत ।  
 शिविकार्या तथा सप्तभूमिके भवनेऽपि च ॥५४५७॥  
 विरजा तद्भेदे स्त्री पूर्वभेदे जम्बुपादपे ।  
 विरला गृध्रनरयारयलतायां स्यधने त्रिषु ॥५४५८॥

विराग पुसि वैराग्ये वीतरागे त्रिषु स्मृत ।  
 विराट छन्दोऽतरेषु स्यात्क्षत्रिये तु द्वयोरयम् ॥५४१५॥  
 अथ विष्णौ तथा यज्ञभेदे पुसि विराड भवेत् ।  
 विरिञ्चिर्ना विरिञ्चश्च वैकुण्ठ परमेष्ठिनि ॥५४६ ॥  
 विरुढोऽङ्कुरिते जाते [वायवत्परिकीर्तित] ।  
 विरोचनोऽर्के च द्रेज्जनौ प्रह्लादतनयेऽपि च ॥५४६१॥  
 विरोधी पुसि शत्रौ स्यात्त्रिषु तु स्याद्विरोद्धरि ।  
 विलग्न कायमध्ये क्ली सक्ते तु त्रिषु कीर्तितम् ॥५४६ ॥  
 विलम्बो विषभेदेऽपि पुमाप्रोक्तो विलम्बके ।  
 विलम्बित वञ्चिते स्यात्तथा मदेऽपि च त्रिषु ॥५४६३॥  
 विलासशब्दो लीलाया [हारभेदे च ना मत] ।  
 तथैव भावभेदेऽपि य उक्त श्लिष्टप्रक्रिया ॥५४६४॥  
 विलासी भोगिनि [त्रि स्याद्द्वगले चाज्यम्पुमामत] ।  
 विलीन विद्रुतेऽपि स्यात्तथा लीनेऽपि वायवत् ॥५४६५॥  
 विलेपस्त्वनुलेपार्थद्वयेऽपि स्याद्विलेपने ।  
 विलेपी स्त्री मता तस्या यमागवा या घनद्रवा ॥ ४६६॥  
 विलेपनी सुवेषस्त्रीयवाग्वोरपि योषिति ।  
 विलेप्या त्रिविलेप्ये विलेप्या तु स्त्रियां मता ॥५४६ ॥  
 विलोमस्तु प्रतीपे स्याद्भुजङ्गे वरुणे शुनि ।  
 आमलक्या विलोमी च विलोम चारघट्टके ॥५४६८॥  
 विवक्षित तु रुचिरे वक्तुमिष्टेऽपि च त्रिषु ।  
 विवधो वीवध पर्याहारे भारे तथाऽध्वनि ॥५४६९॥  
 विवत्त समुदाये स्यादपवर्त्तननृत्ययो ।  
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्मन्यवश्ये च प्रकीर्तित ॥५४७ ॥  
 अरिष्टदुष्टबुद्धौ च त्रिलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 विवस्वास्तु पुमान्स्वर्ये द्वे तु देवे नरेऽपि च ॥५४७१॥  
 वायुदिग्गजहस्ति यां पुनस्त्री स्याद्विवस्वती ।  
 विविक्त निर्जने शुद्धे पृथग्भूते विचारिते ॥५४ २॥

असम्बाधेऽपि च तथा वायवत्परिकीर्तितम् ।  
 विबुद्धता क्षुद्ररुग्भेदे विस्तृते त्वभिधेयवत् ॥५४ ३॥  
 विबुद्धाक्ष कुक्कुटे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ।  
 विवेकस्तु पृथक्कारे पृथग्भावे त्वचारणे ॥५४ ४॥  
 जलद्रो यामपि तथा पुलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 विट (श) / तु गूथ ननाञ्जुया स्त्री द्वयोर्मर्त्यवैश्ययो ॥५४ ५॥  
 विशद पाण्डुरे रक्त [स्पष्टे चाऽपि तथा मत] ।  
 विशय सशये तद्वद्वेऽपि शयने पुमान् ॥५४ ६॥  
 विशल्याऽग्निशिखादतीगुह्यचीषु स्त्रियां मता ।  
 निशये तु विशयोऽयमभिधेयवदिष्यते ॥५४ ७॥  
 क्लीहिंसाया विशसन खड्गे विशसन पुमान् ।  
 विशाखा ऋक्षभेदेऽपि धारासन्न द्रुमाङ्गके ॥५४ ८॥  
 स्कन्ददेवे स्कन्ददेवपृष्ठजेऽपि सुरान्तरे ।  
 विशाखावितकालेयो जातस्तत्राभिधेयवत् ॥५४ ९॥  
 विशारदस्त्रिषु बुधे धृष्टे विगतशारदे ।  
 विशाला त्विद्रवारुण्यामुज्जयिन्यान्तु योषिति ॥५४ १०॥  
 मृगपक्षिभिदो पुंसि पृथुले त्वभिधेयवत् ।  
 विशालाक्षो हरे ताक्ष्ये नासुनेत्रेऽभिधेयवत् ॥५४ ११॥  
 विशिख चेतसि क्लीब निशिखे तु त्रिषु स्मृतम् ।  
 [पुंस्यय विशिख प्रोक्तस्तोमरे च तथा शर] ॥५४ १२॥  
 विशिखा तु खनिर्या च रथ्यानलिकयोरपि ।  
 विशुद्धलवण तु स्यात्सैधवे लवणे शुचौ ॥५४ १३॥  
 विशेलिम शशाङ्केऽपि भास्करे पाशकेऽपि च ।  
 विदुतन्त्रे तथा पुंसि च तुरङ्गेऽपि कीर्तित ॥५४ १४॥  
 विशेषोऽतिशये भेदे योगार्थे तु यथायथम् ।  
 विशेषकस्तु तिलके पुंसि क्लीबे च कीर्तित ॥५४ १५॥  
 विशेषयितरि त्वेष त्वशेष्टरि तथा त्रिषु ।  
 विश्वधोऽनुद्धटेऽपि स्याद्वाहविश्वस्तयोस्त्रिषु ॥५४ १६॥

अवश्लेषस्तु पृथक्कारे विरहेऽपि पुमान्मत ।  
 अवशा त्वातावषाभूम्यो स्त्री शुण्ठ्या स्त्रीनपुसकम् ॥५४८॥  
 सर्वनाम त्रि सर्वार्थे क्लीबं तु जगति स्मृतम् ।  
 विश्वे तु देवभद्रेषु भवेयु पुंसि भूमनि ॥५४८८॥  
 विश्वकर्मा तु सूर्येऽपि विरिञ्चे देववधकौ ।  
 विद्मगोप्ता तु शक्रेऽपि विष्णावपि पुमान्मत ॥५४८९॥  
 विश्वप्सा तु पुमाञ्शके [चन्द्रज्जना] वातरेऽनिले ।  
 विश्वम्भरोऽच्युते शक्र वह्नी विश्वम्भरा शुवि ॥५४९॥  
 ना शुण्ठ्या पुंसि देवप्रभदेऽप्यखिले त्रिषु ।  
 विश्वरूप शिवे विष्णावश्वे चाष्ट्र बृहस्पतौ ॥५४९१॥  
 विश्वरूपा गवि स्त्री स्याद्भूमिनि गायत्रिसामनि ।  
 त्रिरभ्यासेन गीते च यूषुवाच प्रमेत्यचि ॥५४९॥  
 विश्वस्ता विधवाया त्रिस्त्वाप्तविश्रासयोग्ययो ।  
 विश्वात्मा तु विरिञ्चेऽपि भास्करेऽपि प्रकीर्तित ॥५४९३॥  
 विश्वावसुर्ना गन्धर्वभदे रात्रौ स्त्रियां मता ।  
 विश्वेदेवास्तु सूर्येऽपि वह्नावपि पुमान्मत ॥५४९४॥  
 [विटशदस्तु षकारात् स्त्रिया पावनविष्टयो ] ।  
 विषघाती द्वयोराखुजातिभदे त्रियौगिके ॥५४९५॥  
 विषघ्नी त्रिष्टुताभाङ्गीगुह्नीचुष्ट्रिकालिषु ।  
 यमनुष्ये विषारौ ना श्लेष्मातकशिरीषयो ॥५४९६॥  
 विषधरो द्वयोः सर्पे पुमाभेदे प्रकीर्तित ।  
 विषयो गोचरे देशे तथा रूपरसादिके ॥५४९॥  
 पुमाञ्जनपदे नित्यसेवितेऽपि प्रकीर्तित ।  
 विषयी मन्मथे भूपे विषयस्थजनेऽपि ना ॥५४९८॥  
 विषयासक्तविषयान्वितयोस्त्रीन्द्रियं तु नप् ।  
 विषा त्वतिविषाया स्त्री क्ष्वेडे न स्त्री जले तु नप् ॥५४९९॥  
 विषाणी क्षीरकाकोल्यामजमृङ्गार्था च योषिति ।  
 कुष्ठनामौषधे क्लीबं पशुशृङ्गेभदन्तयो ॥५५॥



विषाद पुसि चित्तावसादे त्रिविषमक्षके ।  
 विषायी स्यात्पुमाराक्षि वैषयिकजनेऽपि च ॥५५ १॥  
 इन्द्रिये कामदेवे च विषयासक्तपूरुषे ।  
 विषुवनृनपो काले समरात्रिन्दिवे मतम् ॥५५ २॥  
 क्रतुभेदे त्वय शब्द पुँल्लङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 विष्कम्भ प्रातर्बधे च प्रतिबन्धस्य साधने ॥५५ ३॥  
 रूपकाङ्गातरे योगातरविस्तारयोराप ।  
 विष्किरो द्वे पक्षिमात्रे मयूरे कुक्कुटेऽपि च ॥५५ ४॥  
 विष्टप् तु स्त्री दिवि प्रोक्ता विष्टप्स्वर्ये पुमान्त ।  
 विष्टप भुवने देवविमानेऽपि नपुंसकम् ॥५५ ५॥  
 विष्टम्भ प्रतिबन्धेऽपि स्यास्तोमदशके परे ।  
 महावैराजसञ्ज्ञस्य साम्न प्रस्तावभक्तित ॥५५ ६॥  
 विष्टरस्त्वासने वृक्षे दभमृष्टौ तथा पुमान् ।  
 विष्टिर्ना कर्मणि हठाकारिते त्रिषु तत्कृति ॥५५ ७॥  
 स्त्री वाज्रवेदनाकालभेदमूयप्रवेशने ।  
 विष्णुर्मेधे केशवस्यावतारे वामनाभिधे ॥५५ ८॥  
 चन्द्रे द्वादशसूर्याणां तथैवान्यतमे पुमान् ।  
 [यज्ञ तथा केशव च वि णुशब्द प्रकीर्त्तित] ॥५५ ९॥  
 विष्णुक्राता तु सुमुखीगिरिकर्णिकयोरपि ।  
 विष्णुगुप्तस्तु कौटिल्ये योगार्थे तु यथायथम् ॥५५ १०॥  
 क्लीब विष्णुपद योम्नि तीर्थभेदेऽपि कीर्त्तितम् ।  
 गङ्गाया स्त्री विष्णुपदी रविसङ्क्रमणेषु तु ॥५५ ११॥  
 वृषवृश्चिकसिंहेषु कुम्भे च स्त्रीनपुंसकम् ।  
 विष्वक् तु सवतोऽर्थेऽयं नानागतिके त्रिषु ॥५५ १२॥  
 स्त्रीत्वे विष्णुची तत्रापि सूर्येव सा स्याद्भुजातरे ।  
 विष्वक्सेना फलिन्या स्त्री विष्वक्सेनस्तु ना हरौ ॥५५ १३॥

१ रूपकङ्गप्रभेदे च बन्धभेदे च योगिनाम् ।

२ विष्टिस्त्रिषु कर्मकरे स्याज्ज्वेतनकर्मसु ।

विष्ण्वक्त्रेनप्रिया लक्ष्म्या वाराह्यामपि योषिति ।  
 विसर प्रसरे चैत्र त्रजेऽपि स्यात्प्रमानयम् ॥५५१४॥  
 त्रसगस्तु पुमा दाने त्यागे च जलनिगमे ।  
 विसजनीयेऽप्ययनभदेऽपि च विभावसो ॥५५१५॥  
 विसृत विगते चापि तते चाप्यभिधेयवत् ।  
 विस्तरा वाक्प्रपञ्च स्याद्विस्तारे प्रणयेऽपि च ॥५५१६॥  
 विस्तारो विस्तृतौ तद्वत्स्तम्बेऽपि च पुमा मत ।  
 विस्फुलिङ्गस्त्वग्निकणे विषभेदे तथा पुमान् ॥५५१७॥  
 त्रिस्फोट स्फुटनेऽपि स्या मसूर्याञ्च तथा पुमान् ।  
 विस्मयस्वद्भुते तद्वद्भवेऽपि च पुमा मत ॥५५१८॥  
 स्मयेन रहिते त्वेष वाच्यवत्परिकीर्तित ।  
 विस्मापनो ना कुहके ग धवनगरे स्मरे ॥५५१९॥  
 विस्मितस्त्रिषु त्रिस्मरे छदोभेदे वना भवेत् ।  
 विस्रगधिस्यामगधौ हारताले नपुसकम् ॥५५२०॥  
 विस्रध निभृते शस्ये तथा विश्वसिते त्रिषु ।  
 विस्रम्भ केलिकलहे विश्वासे प्रणयेऽपि च ॥५५२१॥  
 विस्रा स्त्री हपुषायां क्ली रुधिरे त्वामगधिनि ।  
 विस्वर क्ली विरुद्ध स्यात्स्वरे त्रिविकृतस्यरे ॥५५२२॥  
 विहङ्ग पक्षिणि द्व ना रविचन्द्राम्बुदेषुषु ।  
 विहगस्त्वेषु दशमे राशौ सवग्रहस्थितौ ॥५५२३॥  
 विहङ्गक पक्षिणि द्वे पर्याहारे विहङ्गिका ।  
 विहङ्गम पक्षिणि द्वे सूर्ये नाऽथ नृभूमनि ॥५५२४॥  
 एकादशान्तरभवे निजराणां गणात्तरे ।  
 विहङ्गिकाया तु स्त्रीत्वे पक्षिण्या च विहङ्गमा ॥५५२५॥  
 विहगस्तृषुभिभेदे ना शठ वायवदिष्यते ।  
 क्लीव विहनन विघ्ने पिञ्जनेऽपि वधेऽपि च ॥५५२६॥  
 तथा कार्पासतूलादेर्विघातेऽपि प्रकीर्तितम् ।  
 विहङ्ग्या इष्टकाभित्सु स्त्री क्ली ऋक्छक्तभिद्यपि ॥५५२७॥

विहस्तस्त्रिषुध व्यग्रे निर्हस्ते ना नपुसके ।  
 विहा वसत्यामपि च विहगेषु भवे स्त्रियाम् ॥५५२८॥  
 विहाया योमि नूनपोर्विहगे तु द्वयोर्मत ।  
 विहायसस्तु नूनपो योमि पक्षिणि तु द्वयो ॥५५२९॥  
 विहाया महति स्तेने त्रिषु व्यासरि वञ्चके ।  
 विहारो भ्रमणे स्कन्ध लीलायां सुगतालये ॥५५३॥  
 वैजयन्ते पुमा द्वे तु विदुरेखकपक्षिणि ।  
 त्वहेठन तु हिंसाया मदने च विडम्बने ॥५५३१॥  
 विह्वलस्त्रिर्विकलवे स्यात् रसगन्धे च पुम् स्मृत ।  
 वीको वायौ वसतेऽर्थे नाशे वीका दृशोर्मले ॥५५३२॥  
 द्वयो पक्षिणि चित्ते तु वीक पुसि विदु परे ।  
 वीकाशस्तु प्रकाशेऽपि (तथा प्रोक्तो रहस्यपि) ॥५५३३॥  
 वीक्षो वीक्षा विस्मये द्व वीक्षा स्याद्वीक्षणे स्त्रियाम् ।  
 वीक्षण दर्शने नेत्रे [नपुसकमुदीरितम् ॥५५३४॥  
 वीक्ष्य तु विस्मये दृश्ये पुसि लासकवादिनो ।  
 वीङ्क्षा लास्यातरे स धौ कपिकञ्छ्वामपि स्त्रियाम् ॥५५३५॥  
 वीचि स्त्रीपुसयोरुभौ लेशे पङ्क्तौ तथा मता ।  
 मुखेऽवकाशे किरण [मुखे] वी यपि च स्त्रियाम् ॥५५३६॥  
 वीजनस्तु द्वयो हाकजीवजीवकपक्षिणो ।  
 वीजन यजने वस्तुयाप व्यजनचालने ॥५५३७॥  
 वीटक स्याच्च ताम्बूले वीटिका तु स्त्रिया मता ।  
 कञ्चुक्यादेव धनेऽपि ताम्बूलादिकवेष्टने ॥५५३८॥  
 वीडुद्वे मेघवत्स्याद्वले तु स्यान्नपुसकम् ।  
 वीणा विद्युति वल्लक्या ग्रहयोगातरे तथा ॥५५३९॥  
 नदीभेदेऽपि च स्त्रीत्वे कीर्तिता सरिदन्तरे ।  
 वीणावादस्त्रि वीणार्या वादके वादने तु ना ॥५५४॥  
 वीत वसारे हस्त्यश्वे हस्त्यारोहाद्धिकर्मणि ।  
 वीतस्तु वा यवत्प्रोक्तो गते शांते त्रिषु वथ ॥५५४१॥

गतिका त्यशनादा विगतावङ्कुशवारणे ।  
 वीतरागो जिन बुद्धे ना रागरहित त्रिषु ॥५५४२॥  
 वीतशोकोऽशोकवृक्षे वीतशोका तु पूर्भिदि ।  
 वीतहयो नृपभिदि कृष्णेऽपि च पुमामत ॥५५४३॥  
 वीतिर्दीप्तौ गतौ धावनेऽशने प्रजने स्त्रियाम् ।  
 गीतिहोत्रोऽनलेऽर्के ना नृभूमिन् क्षत्रियातरे ॥५५४४॥  
 वीथी तु पङ्क्तौ मार्गे च गृहाङ्गे रूपकातरे ।  
 वीत्रोऽग्राग्नयनिले ना क्ली नभसि त्रिस्तु निर्मले ॥५५४५॥  
 वीर शिवकुबेरे द्रराहुस्कदसुतेषु ना ।  
 अग्निभेदे तप पुत्रे यज्ञाग्नावजुनद्रुमे ॥५५४६॥  
 रक्तालुके महावीरजिने स्यात्तात्रिकातरे ।  
 वीरा तु मलपूक्षीरविदारीदुग्धिकासु च ॥५५४७॥  
 गम्भारीक्षीरकाकोलीतामलक्येलालुके ।  
 रम्भायां च सुराया च पतिपुत्रवती स्त्रियाम् ॥५५४८॥  
 वीर तु शृङ्गीशृङ्गाटनतोशीरारुके नले ।  
 क्लीब पुष्करमूलेऽपि मरिचे काञ्जिके तथा ॥५५४९॥  
 त्रि तु शूरे परे पक्षिक्षेपके विगतं रणे ।  
 पक्षिक्षेपे तु त्रिक्षेपे वीरा वीर इति द्वयो ॥५५५०॥  
 शूरे वीरतर पुंसि शवे त केचिद्चिरे ।  
 वीरणे क्ली वीरतर वीरश्रेष्ठ पुनस्त्रिषु ॥५५५१॥  
 अथ वीरतरु शृङ्गाटकोशीरनडाजुने ।  
 भालातकेऽपि पुल्लिङ्ग करवीरेऽपि चेष्यते ॥५५५२॥  
 नयातरे मयूरे तु द्वयोर्वीरधरो मत ।  
 वीरभद्रोऽश्वमेधाश्वे वीरश्रेष्ठ च वीरणे ॥५५५३॥  
 रुद्रातरे शिवस्यापि कीर्तितोऽनुचरातरे ।  
 स्याद्वीरललित वीरक्रीडाच्छदोभिदोरपि ॥५५५४॥  
 वीरलोको वीरजने वीरावासे तथा मत ।  
 वीरवान् वीरयुक्ते त्रिवीर्यवत्यपि च क्वचित ॥५५५५॥

स्त्रीत्वे वीरवती गच्छद्र यमदाऽऽपगाभिदो ।  
 वीरवृक्षो बिल्वधायभिदोमल्लातकेऽजुने ॥५५५६॥  
 वीरसेनो नलपिता आरूकफले तु नप् ॥  
 वीरहा त्रिषु वीरारो ना तूत्सन्नाग्निहोत्रिणि ॥५५५ ॥  
 वीराशसनमाजेभूर्या स्यादतिभयप्रदा ।  
 तस्या तथैव वीरस्याशसनेऽपि नपुसकम् ॥५५५८॥  
 वीरिणी वीरमातर्यप्यसिक् थां दक्षयोषति ।  
 सरिद्धेदे वीरिणीत यस्या नामातरावदु ॥५५५९॥  
 वीरेद्रो वीरवर्ये स्याद्वीरेद्री योगिनीभिदि ।  
 वीरोद्भो योऽग्निहोत्री सन्नाऽब्दमग्निं जुहोयसौ ॥५५६ ॥  
 वीरस्य तूज्झके चैष वीरोद्भो वायवमत ।  
 वीर्यं रेतोऽन्नशक्त्याह्वबलशौर्यपराक्रमे ॥५५६१॥  
 दीप्तिमाहाम्ययो क्लीब स्त्रीवीर्याऽतिबलौषधे ।  
 वीवधो विवध पर्याहारे भारे तथाऽञ्चनि ॥५५६२॥  
 वीश स्याद्विशतिपलमाने पुँलिलङ्ग एष तु ।  
 वृक सूर्ये दुवजेषु जठराग्नौ बकद्रुमे ॥५५६३॥  
 नृभूमि देशभेदे स्याद्वृक क्लीब हले मतम् ।  
 त्रिषु स्तेने च धूर्ते च द्वयोस्त्वीहामृगे शुनि ॥५५६४॥  
 काकोलकशृगालेषु क्षत्रियेऽपि वृको वृकी ।  
 वृकी तु वृद्धवाशि या स्त्रियामेव निरु यते ॥५५६५॥  
 वृका वृकीति द्वितयमम्बुष्टाया प्रकीर्त्तिता ।  
 वृकधूप कृत्रिमश्रीपिष्टनिर्यासयोर्मत ॥५५६६॥  
 वृकधूपस्तु सरलद्रवकृत्रिमधूपयो ।  
 वृकलो वकले स्त्री तु अत्रे च वृकला स्मृता ॥५५६ ॥  
 द्वाराध काष्ठपार्श्वे स्त्री वृकवाला प्रकीर्त्तिता ।  
 वृकोदरो भीमे भूमि प्रमथाना गणातरे ॥५५६८॥  
 वृक्षादनश्चलदले मधुच्छत्रकुठारयो ।  
 वृक्षादनी तु वदाया विदारीकदकेऽपि च ॥५५६९॥

वृक्षावासो मिक्षुभेदे पक्षिणि त्वनपुसके ।  
 वृक्षेशयास्त्रद्रुशय द्वयो सर्पात्तरं मत ॥५१ ॥  
 वृजिन क्ली बले पापे केशेऽथ कुटिले त्रिषु ।  
 वृत्त धने वायवत्तु तत्र यद्वरणं कृतम् ॥५१ १॥  
 वृत्तिर्निराधे सम्भक्तावपि चाग्नेष्टके स्त्रियाम् ।  
 धात्वोस्तु उत्ततां नापि वृत्तौ च पुमानयम् ॥५१ ॥  
 वृत्तोऽस्तीतेऽप्यधीतेऽतिवत्तु लेऽपि वृत्ते मृते ।  
 दृष्टेऽयलिङ्ग वा क्लीब छदश्चारित्रवृत्तिषु ॥५१ ३॥  
 वृत्त कूर्मे द्वयो [नस्त्री सम्भक्तौ च स्वरूपके] ।  
 वृत्ता महाकोशातक्या रेणुकाक्षिञ्जरिष्टयो ॥५१ ७४॥  
 प्रियङ्गा मासरोहिण्या छदोभेदे तथा स्त्रियाम् ।  
 वृत्तक श्रमणे द्वे स्याद्वृत्तक गद्यभिद्यपि ॥५१ १॥  
 वृत्तपर्णी महापूर्वशणपुण्यौषधे तथा ।  
 पाठारयभेषजऽप्येषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५१ ६॥  
 वृत्तपुष्प कदम्बेऽपि शिरीषे चैव मुद्गरे ।  
 दाडिमे बदरे वृत्तफल क्ली मरिचे मत ॥५१ ॥  
 हरीतक्या तु वृत्ताके स्त्रिया ककटिकातरे ।  
 वृत्तभङ्गश्चारित्रस्य छदसश्चैव विप्लवे ॥५१ ७८॥  
 अकपर्णेऽपि मल्लया च स्त्रिया स्याद्वृत्तमलिका ।  
 वृत्तात् प्रक्रियाया स्यात्कात्सर्यवात्ताप्रभेदयो ॥५१ ९॥  
 वृत्ताध छन्दसोऽर्धेऽपि वृत्त लार्धे तथा मतम् ।  
 वृत्तिस्तु वर्त्तने कृष्या मारभत्यादिकेष्वपि ॥५१ ॥  
 शदो चारणधर्मेषु द्रुतमध्यादिषु त्रिषु ।  
 ऋक्पादस्याप्युपा तेऽप्यप्रतिबन्धवर्त्तने ॥५१ ८१॥  
 यारयाने ग्रन्थभेदे च सामगीतिगुणातरे ।  
 कृत्तद्धितादावभिधादौ च मल्लीरुजोरपि ॥५१ ८२॥  
 सम्भक्तौ मरणे चापि स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ।  
 वृत्र धने ध्वनौ पापे वृत्रो दैत्यातरे गिरौ ॥५१ ८३॥

मेघेऽधकारे शत्रौ च पुलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 वृथाजातो द्विजे यज्ञ यागिनि त्रि तु यौगिके ॥५५८४॥  
 वृद्धो वैवस्वते क्ली तु शैलेये स्थविरे त्रिषु ।  
 त्रिमात्रसामवर्णे च स्यादेधितमनीषिणो ॥५५८५॥  
 गजे त्वशीतिवर्षे द्वे वृद्धापये तथा मत ।  
 वृद्धदारक उक्ता ना छगलायारयमेषजे ॥५५८६॥  
 जीणभार्ये तु वृद्धस्य भेदकेऽपि त्रिषु स्मृत ।  
 वृद्धधूप शिरीषेऽपि श्रीवासेऽपि पुमान्त ॥५५८७॥  
 वृद्धश्रवा पुमानिद्र महायशसि वाच्यवत् ।  
 वृद्धावस्कन्दी तु पुंसि शक्रे त्रिषु तु यौगिके ॥५५८८॥  
 वृद्धिस्तु वर्धने योगेऽप्यष्टवगौषधान्तरे ।  
 कालातरे चाभ्युदये समृद्धावपि योषिति ॥५५८९॥  
 ऋणातिरिक्तदातये प्रयोक्त्रे पुत्रजमनि ।  
 मुष्कवृद्धयात्मके वर्ध्मसङ्गे रोगान्तरेऽपि च ॥५५९०॥  
 वृध सुहृदि सौहार्दे त्रिस्तु सौहार्दकारिणि ।  
 वृधसानस्तु पुरुषे मृत्यौ भूमिघनेऽपि च ॥५५९१॥  
 अथाभिधेयवत्पृष्टिशालि येष प्रकीर्तित ।  
 वृधसानु पुमा पत्रे पुरुषे च कृतावपि ॥५५९२॥  
 वृत्त तरुणा प्रसववधने चूचुकेऽपि च ।  
 शल्कादिमूलेऽपि घटीधाराया च नपुसकम् ॥५५९३॥  
 कालिङ्गसङ्गवया तु वृत्ताके वृत्त इष्यते ।  
 वृत्तो वृत्तीति च स्त्रीपुसयोज त्वन्तरे मत ॥५५९४॥  
 वृत्ताच्छदोविशेषेऽपि तथैव स्थावरातरे ।  
 वृत्त कदम्बे तौर्यत्रिकिणा सङ्गे तथा मतम् ॥५५९५॥  
 वृन्दस्त्वर्बुदसरयायां [समूहेऽपि पुमानथ] ।  
 वृत्ता तु तुलसीस्तम्बे राधायां च प्रकीर्तिता ॥५५९६॥  
 जल धरस्य पत्न्यां च जिनशक्तातरेऽपि च ।  
 वृत्तदारकस्त्रिषु श्रेष्ठ तत्र वृत्तदारका तथा ॥५५९७॥

वृद्धारिका मता स्त्रीत्वे द्वयोर्देवे प्रकीर्त्तिता ।  
 वृद्धावन तु मयुरोपश यारण्यभिद्यथ ॥५९८॥  
 वृद्धावनी तु तुलसीस्तम्ने स्त्री परिकीर्त्तिता ।  
 वृद्धावनेश्वर कृष्णे राधा वृद्धावनेश्वरी ॥५९९॥  
 वृद्धा स्याददरूपे ना वृद्धा स्तम्भातरे मता ।  
 भौमायार्कायिते तत्र या च श्वेतपुननवा ॥६०॥  
 वृद्धिकस्तु द्रुणे राशौ पुमास्या मदनद्रुमे ।  
 अग्रहायणमासेऽपि हालिकेऽपि प्रकीर्त्तित ॥६१॥  
 वृद्धिका तु द्वयोस्तत्र याऽसौ श्वेतपुननवा ।  
 वृद्धिकी तु द्वयोश्चक्रीटेऽथो वृद्धिचकी तथा ॥६२॥  
 वृद्धिका च मता पादाङ्गुलीये स्त्रीत्व एव सा ।  
 वृद्धिकाली स्त्रियासुष्ट्रधूम्रपुच्छधारयमेषजे ॥६३॥  
 वृद्धिकाल वृद्धिकस्य क्लीब स्यात्तुल्यकण्टके ।  
 वृष आद्रक ओषध्या बलेऽपि लघुनेऽपि च ॥६४॥  
 वृत्तौ मुष्कफलयो कोष्ठावयवमेदयो ।  
 उक्षिण धर्मे बलीवर्दे पुसि शक्रे बृहस्पतौ ॥६५॥  
 मेषाद्वितीयराशौ च बले कर्णे शिवे हरौ ।  
 सूर्ये रेतसि कामेक्षु या च चित्रपुननवा ॥६६॥  
 तत्र हैमवते कदविशेषे मन्दिरातरे ।  
 वास्तुस्थानान्तरे पञ्चदशेऽब्दे च बृहस्पते ॥६७॥  
 शत्रौ साध्यातरेऽध्यक्षे करणस्य चतुष्पद ।  
 वाच्यवत्सुकुले श्रेष्ठे तस्या स्याद्भूरिरेतसि ॥६८॥  
 इ त्वरे मूषिके देवे क्ली त्व त पुररेतसो ।  
 वृषा स्त्री कदली ऋद्धयौषधयग्रोधिकास्वपि ॥६९॥  
 कपिकच्छवा वृषाऽप्यषाऽदरूपे कैश्चिदिष्यते ।  
 सामभदेऽप्यथ हरीतक्या चापि प्रकीर्त्तिता ॥७०॥  
 वृषी तु कैश्चिद्भ्रमतो वृषीति परिकीर्त्तिता ।  
 वृषा मूषिकपर्ण्या च मुनीनामासने वृषी ॥७१॥



छ दोभेदे निदानोक्तेऽप्यष्टपचाशदक्षरे ।  
 वृषक सामभेदे स्याद्वृषकस्तुद्धिद तरे ॥५६१२॥  
 वृषकर्मा तु योगेऽथायुधो मन्त्रान्तरे पुमान् ।  
 वृषणोऽस्त्र्यण्डकोशोऽण्डौ वृषणौ वृषण शिवे ॥५६१३॥  
 वृषणश्चो वर्षकाश्च इद्रेऽपी द्राश्च एव च ।  
 वृषण्वसु पुमानिद्रे वृषण्वसु तु तद्धने ॥५६१४॥  
 वृषध्वज शिवे पुसि दुर्गाया तु वृषध्वजा ।  
 वृषपर्वा कशेरौ च क्रमुके केशरे शिवे ॥५६१५॥  
 वृषभस्तूष्णि शक्रेऽपि वृषराशौ श्रवे बिले ।  
 वृषकेतू मुहूर्त्तेऽष्टाविंशे चाप्यहदन्तरे ॥५६१६॥  
 दशद्यनृपतौ कृष्णनिहते चासुरातरे ।  
 अद्रिभेदेऽथ वृषभा त्वार्षभे सरिदन्तरे ॥५६१७॥  
 वृषभी विधवाया च कपिकच्छवा प्रकीर्तिता ।  
 स पुस्त्वे तूत्तर श्रेष्ठे वृषभो वाच्यवमत ॥५६१८॥  
 शिवेऽपि चाद्रिभेदेऽपि पुमान्स्याद्वृषभध्वज ।  
 वृषलो वृषभे शूद्रे च द्रगुप्तनृपे नदे ॥५६१९॥  
 पलाण्डुभेदेऽथ ह्ये द्वे स्त्री स्याद्वारयोषित ।  
 वृषलण्डी तु पिप्पल्यां स्त्री न स्त्री वृषवर्चसि ॥५६२०॥  
 वृषाकपिस्तु पुसीद्रेऽप्यग्नौ सूर्ये हरे हरौ ।  
 सक्ता तरे रुद्रभेदे स्यादिद्रतनयेऽपि च ॥५६२१॥  
 वृषाकपाय्युमास्वाहाश्रीशचीषूषसि स्त्रियाम् ।  
 शतावर्या च जीवन्त्यामोतौ तु द्वे वृषाकपि ॥५६२२॥  
 वृषाङ्ग व्लीषभ लातमह वशिवसाधुषु ।  
 वृषाणक शिवे ऋष्यतरेऽपि प्रमथातरे ॥५६२३॥  
 वृष्टिस्तु वर्षणेऽप्येकाहातरेऽपि स्त्रियां मता ।  
 त्रिषु वृष्टिसनिर्गृष्टिदातरि स्त्रीबहु वके ॥५६२४॥  
 ता इष्टकान्तरे वृष्टिसनय परिकीर्तिता ।  
 वृष्णिश्चण्डेऽपि पाषण्डे स पुस्त्वे वायवन्मत ॥५६२५॥

वृष्णय पाण्डवेषु स्युर्यदुष्वपि नृभूमनि ।  
 वृष्णिर्द्वे गविमेषेऽथ किरणे मारुते शिवे ॥५६२६॥  
 अग्नाविद्रे च कृष्णे च वृष्णि पुास प्रकीर्त्तित ।  
 वृष्णयस्तु वर्षके त्रि स्याद्वृष्णय पुस्त्वे नपुसकम् ॥५६२ ॥  
 वृष्य इक्षौ माषधाये ना त्रि स्याच्छुक्रवधके ।  
 वृष्या शतावरीपथ्याविदारीवृद्धिमषजे ॥५६ ८॥  
 वृष्य नपुसक प्रोक्त विदारीसङ्गमेषजे ।  
 वेकटो मणिकारे ना यूनि चैव विदूषके ॥५६२९॥  
 द्वयोस्तु मस्यभेदे स्याद्वकट त्वद्धुतेऽययम् ।  
 वेगो जवे प्रवाहे च महाकालफलेऽपि च ॥५६३ ॥  
 पुमान्मूलादिप्रवृत्तौ स्याद्रेतो रोगवायुषु ।  
 वेगवाद्दे तरक्षौ स्त्री वेगवत्योषधीभिदि ॥५६३१॥  
 छन्दोऽन्तरे सरिद्धेद त्रिस्तु वेगिनि वेगवान् ।  
 वेगी वायौ पुमाञ्ज्येने द्वयोर्वेगवति त्रिषु ॥५६३२॥  
 स्याद्वेजन सप्तदशेऽर्गनौ यूपस्य मूलत ।  
 अरत्रय सप्तदशपदीया सरयया मता ॥५६३३॥  
 अना तु वेजयत्यर्थे क्लीब तु चलने भये ।  
 वेटी स्त्री ना विवेटस्तु पुमाञ्शदे प्रकीर्त्तित ॥५६३४॥  
 वेडा नावि स्त्रियां वेड साद्रविच्छिन्नचन्दने ।  
 वेणस्तु द्वे मनुष्याणा जातिभेदे प्रकीर्त्तित ॥५६३५॥  
 पुत्रे वैदेहकाऽम्बष्ठयोर्वेन नाम्न्येव जीवति ।  
 लङ्घनप्लवनाद्यै स्यात्तग्रराज्ञीसुतेऽपि च ॥५६३६॥  
 मायासमोहनादीनि वृत्तिस्तस्य भवेद्यदि ।  
 केषाञ्चिद्वेणुकारेऽपि वेणस्त्रीपुसयोर्मत ॥५६३७॥  
 वेणा तु नृ स्त्रियां ज्ञातिनिशामनगतिष्वपि ।  
 चितायामपि वादित्रग्रहणेऽपि सरिद्धिदि ॥५६३८॥

१ वृष्या स्त्रियां विदार्या स्याद्वृद्धिसङ्गे च मषजे ।

२ वेगो रहसि किपाके पि प्रभावप्रवाहयो ।

तथा रेतसि वायौ च पुंलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥

३ वेगी नृ मारुते पुंसि त्रिषु वेगवति स्मृत ।

वेणि (णी) व्य्याधौ केशव धे जन या च सरित्यपि ।  
 वेणिजलस्रुतौ केशव धमेदे लतान्तरे ॥५६३९॥  
 देवताडाह्वये मध्ये नद्यादेरपि च स्त्रियाम् ।  
 वेणिस्तु वेणतौ धातौ पुल्लिङ्गे परिकीर्त्तित ॥५६४ ॥  
 वेणिका स्त्री मता वेण्या नरजात्यतरे नृभू ।  
 वेणुनृपातरे त्वक्सारेऽपि बाद्यान्तरे पुमान् ॥५६४१॥  
 वेणुक गजतोत्रे स्याद्वशवाद्ये तु वेणुका ।  
 स्त्रीपुसयोर्वेणुकी स्यान्निषादी क्षत्रियोद्भवे ॥५६४२॥  
 अथ स्त्री वेणुका स्यादुद्भिद्भेदे विषवत्फले ।  
 सरिद्भेदेऽथ पुभूमि नृजातिभिदि वेणुका ॥५६४३॥  
 वेणुजो वेणुबीजे स्याद्वेणुज मरिचे मतम् ।  
 नागभेदे द्वयो स्त्री तु तृणभिद्भेणुपत्रिका ॥५६४४॥  
 ना ज्योतिष्मत्सुते स्त्री वेणुमती सरिद तरे ।  
 वेणुबीजे वेणुयवो तथा वेणुयवी स्त्रियाम् ॥५६४५॥  
 वेतस्तु वेत्रे वेता तु वेतने परिकीर्त्तित ।  
 वेतण्डो द्वे गजे वेतण्डा दुर्गायां प्रकीर्त्तिता ॥५६४६॥  
 वेतन रजते मूल्ये भृतावपि नपुसकम् ।  
 वेतसी निचुले द्वे स्याद्वेतस छुरिकातरे ॥५६४७॥  
 वेतस्वती तु स्त्रीनद्यां त्रिषु स्याद्वेदुवेतसे ।  
 वेतालाऽपि च वेताली दुर्गा वेतातरे तु ना ॥५६४८॥  
 वेत्रोऽस्त्री स्तम्भभेदे क्ली यष्टौ वश्यङ्गभिद्यपि ।  
 वेत्रवत्थापगामेदे दुर्गा चित्ररथीति या ॥५६४९॥  
 तत्र वेत्रासुरस्यापि मातरि स्त्रीत्व इष्यते ।  
 वेत्री तु द्वारपाले द्वे त्रिषु वेत्रवति स्मृत ॥५६५ ॥  
 वेद श्रुतौ चतु सख्या विष्णोर्वित्त प्रकीर्त्तित ।  
 कुशे मृञ्जेऽपि वेदा तु नदीभेदे प्रकीर्त्तिता ॥५६५१॥  
 वेदकर्त्ता शिवे विष्णौ सूर्येऽपि च पुमान्मत ।  
 वेदगर्भो द्वयोर्विभ्रे पुमास्तु ब्रह्मणि स्मृत ॥५६५२॥

वेदगर्भा पुन स्त्रीत्वे सरस्वत्यां प्रकीर्त्तिता ।  
 वेदन तु न ना ज्ञाने तथानुभवपीडयो ॥५६५३॥  
 नपुसकतु सत्ताया तथा लाभावचारयो ।  
 वेदमाता तु गायत्री सावित्री च सरस्वती ॥५६५४॥  
 नदीभेदे वेदवती श्रीसीताद्रौपदीषु च ।  
 ऋषौ क्वचिद्वेदशिरा क्लीब तूपनिषत्स्वपि ॥५६५५॥  
 वेद सात मत ज्ञाने [नपुसकमिदम्भवेत्] ।  
 वेदाङ्ग षट्सु शिक्षादिष्वथ सूर्ये पुमा मत ॥५६५६॥  
 आदित्याना द्वादशानां तथैव क्वचिदिष्यते ।  
 वेदात्मा तु पुमाविष्णौ सूर्ये ब्रह्मण्यपीष्यते ॥५६५७॥  
 वेदिवित्तदौ यागाय परिष्कृतभुवि स्त्रियाम् ।  
 चतुष्कोणाऽग्निकुण्डेऽग्निकुण्डे वेदयतौ तु ना ॥५६५८॥  
 पुमास्तु पण्डितेऽपि स्या [सुद्रायामङ्गुले स्त्रियाम्] ।  
 वेदिकाङ्गुलिमुद्राया स्त्रीत्वे वेद्यामपीष्यते ॥५६५९॥  
 अम्बष्ठाया पुनर्वेदि क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ।  
 वेदी तु ब्रह्मणि पुमा वेदिनी स्त्री सरिद्भिदि ॥५६६॥  
 वेद्य तु वेदै सबद्धे वेदितयेऽपि वाच्यवत् ।  
 ज्ञानकार्ये तु वेद्या सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५६६१॥  
 वेधश्छेदे ग्रहादीनां दशने धातुमिश्रणे ।  
 शतशुद्धात्मकलवज्यशमाने तथा पुमान् ॥५६६२॥  
 वेद्या पुनर्मकारे सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।  
 वेधक यद्भरि त्रि स्यात्क्ली धान्याके च सैधवे ॥५६६३॥  
 वेधक पुसि कर्पूरे चन्दने चाम्लवेतसे ।  
 वेधन यधने स्त्रीत्वास्फोटया वेधनी मता ॥५६६४॥  
 वेधमुरया तु कस्तूर्या ना तु कर्चूरके भवेत् ।  
 वेद्या विदुषि सबद्धे त्रिर्ना देशे हरौ विधौ ॥५६६५॥  
 [पर्णह्रस्वर्यधर्मेषु प्रणेतारि तथा पुमान्] ।  
 वेध्यस्त्ववेतसे वेधिनी तु मेथीजलीकसोः ॥५६६६॥

वेध्य शरये क्लीब स्याद्वध्या वाधातरे मता ।  
 वेनो द्वयोजनेऽम्बष्ठीवैदेहकसमुद्भवे ॥५६६॥  
 स्यात्पारधैनुके चापि वैदेह्याम्बष्ठजेऽपि च ।  
 ना तु यज्ञप्रजापत्योर्ध्वानिमेधाविनोरयम् ॥५६६८॥  
 [पुसीद्रे च पृथुपितर्यथ स्त्री पाण्डुरोगके] ।  
 वेर न स्त्री शरीरे क्ली वात्ताकौ कुङ्कुमे मुखे ॥५६६९॥  
 वेरट चूचुके क्लीब त्रिमिश्रीकृतनीचयो ।  
 (वेलञ्चूते) पुमानेतत्फले तु स्या नपुसकम् ॥५६७०॥  
 उद्यानेऽपि च बौद्धानां महासरयातरे तथा ।  
 वेला कूले समुद्रस्य तदम्बुविकृतावपि ॥५६७१॥  
 तरङ्ग वसरे काले व्यवस्थायामपि स्त्रियाम् ।  
 अक्लिष्टमरणे रागे ईश्वरस्य च भोजने ॥५६७२॥  
 वेग रागेऽपि केषाञ्चि स्वाध्याये दन्तमांसके ।  
 बुधपत्न्यां मेरुपुया समुद्रस्य च योषिति ॥५६७३॥  
 वेलन स्याद्विलुठने दूर्वाभेदे स्त्रियाम्मता ।  
 वे ला तु वेलने नृस्त्री विडङ्गे तु नपुसकम् ॥५६७४॥  
 वेलित गमने क्लीब कुटिले विधुते त्रिषु ।  
 वेश प्रवेशे नेपथ्ये वेश्यावासे गृहेऽपि च ॥५६७५॥  
 पटगेहे तथा वेश्याकर्मण्यपि पुमान्मत ।  
 अथोग्रीवैश्यजे द्व स्याद्वेशके तु त्रिषु स्मृत ॥५६७६॥  
 वेशत पवले चापि तथाकाशे प्रकीर्तित ।  
 वेशवार पिष्टमांसविशेषे चाप्युपस्करे ॥५६७७॥  
 वेश्मको वेश्मसम्बद्धे त्रिनृभूमि नृजातिषु ।  
 वेश्म स्यान्मन्दिरे राशौ तुर्यराशौ च लग्नत ॥५६७८॥  
 वेश्या मल्लीगणिकयो पाठाच्छदोमिदोरथ ।  
 क्ली वेश्यागेहम लीभेदयोस्त्रिवेशयोगिनि ॥५६७९॥  
 वेष क्रियायामाकपे पुल्लिङ्गऽपि प्रकीर्तित ।  
 वेषस्त्रिविष्टपे रूपे क्लीब तु व्योम्नि वारिणि ॥५६८०॥

वेष्ट श्रीवेष्टनिर्यासे वेष्टा स्याद्वेष्टने द्वयो ।  
 वेष्टक तु शिरोवेष्टनिर्यासेऽपि नपुसकम् ॥५६८१॥  
 कूष्माण्डे तु पुमाञ्श दद्वित्वे स्यादितियोगत ।  
 वेष्टन मुकुट वाट उष्णीषे कणशङ्कुलौ ॥५६८२॥  
 तथा परिष्टते चापि गुग्गुलौ च नपुसकम् ।  
 वेष्टित त्रिषु रद्धे क्ली लासके करणातरे ॥५६८३॥  
 वेसरोऽश्वतरे स्त्रीपुसयो क्लीब तु वासरे ।  
 वेसवार पिष्टमासविशेषे चाप्युपस्करे ॥५६८४॥  
 वै स्यात्सम्बोधने पादपूरणेऽनुनयेऽपि च ।  
 वैकङ्कतस्त्रिषु विकङ्कताज्जाते द्रुमे न ना ॥५६८५॥  
 वैकक्ष्य पुष्पमायेऽपि तिर्यग्वक्षसि धारिते ।  
 तथा प्रावरणे चापि वैकक्ष कस्यचिमतरे ॥५६८६॥  
 वैकत्तनो यमे कर्णे सुग्रीवेऽपि शनैश्चरे ।  
 वैकुण्ठ केशवे शक्रे पुल्लिङ्गस्तुलसीद्रुमे ॥५६८७॥  
 तालभेदे चतुर्विंशब्रह्ममासदिनेऽपि च ।  
 अस्त्री तु विष्णुलोके वैकुण्ठा शक्त्य तरे हरे ॥५६८८॥  
 वैखानसो द्वयोर्वानप्रस्थेऽप्यपिषु केषुचित ।  
 वज्रेऽपि तारकाभेदे ना नृभूरुषिभिस्तु च ॥५६८९॥  
 वैष्णवानां प्रभेदेषु क्वचिद्वैखानसा मता ।  
 क्ली सामभेदे त्रिवैखानससम्बन्धिनि स्मृत ॥५६९०॥  
 वैदूर्यो रत्नभेदेऽस्त्री पुमा स्यात्पर्वतातरे ।  
 वैजयन्ती पताकायां तर्कार्या स्त्री हरिस्त्रिजि ॥५६९१॥  
 वैण सामा तरे द्वे तु वेणुकृत्सङ्करान्तरे ।  
 वैणवो वेणुबीजेऽपि वशीवाद्ये पुमान्मत ॥५६९२॥  
 वैणवी तु स्त्रियां वीणातुगाक्षीर्यो प्रकीर्तिता ।  
 वैणव स्याद्वेणुफले स्वर्णे वेणुतटोद्भवे ॥५६९३॥  
 वर्षातरे कुशद्वीपे तथा स्यात्सामभेदयो ।  
 द्वयोस्तु ब्राह्मणीमाहिष्यजे स्यात्सङ्करातरे ॥५६९४॥

१ वैजयन्ती गुह्ये शक्रस्य प्रासादे वक्ष्यते पि ॥

वैश्वकं क्षिप्रतैले च द्वेत्तौ सद्योऽङ्कुरे तु ना ॥

वैधृतो योगभदे स्याददृ चैकादशातरे ।  
 वासिष्ठसामभेदे तु ऋधृत स्यान्नपुसकम् ॥५ ९॥  
 वैधेयस्त्रिषु मूर्खे नृभूयजु शाखिभित्सु च ।  
 वैनतेयस्तु गरुडे ना प्रभाकरसारथौ ॥५ १ ॥  
 वैनाशिकस्तु बोद्धेऽपि योतविल्लूतयोरपि ।  
 वैनाशिक तु लग्नाकली त्रयोविंशगृहे मतम् ॥५ ११॥  
 वैभ्राजो लोकभदेऽपि विष्णुक्सेनेऽद्विभिद्यपि ।  
 देवोद्यानविशेषे तु तत्सरोभिदि चापि नप ॥५ ॥  
 वैमन्यो विमतापये विमतत्वे पुननपि ।  
 वैयश्वो विश्वमनसि वैयश्व सामभिद्यपि ॥५ १३॥  
 वैयाघ्रस्तु रथे याघ्रचर्माच्छने त्रियौगिके ।  
 याघ्रचर्मणि तु क्लीब वयाघ्र परिकीर्तितम् ॥५ १४॥  
 वैराज सामभेद क्ली कपलोकभिदोस्तु ना ।  
 वैराट शक्रगोपे द्वे वैराट रत्नभिद्यपि ॥५ १५॥  
 वैराटस्तु विराटस्थापत्यादौ वाच्यव मत ।  
 वैरिण त्रिवीरणन सम्बद्धे परिकीर्तितम् ॥५ १६॥  
 वैरी शत्रौ तथैव स्याद्वरवत्यभिधेयवत् ।  
 वैरोचनिस्तु मुगते वलिदैत्यार्कपत्रयो ॥५ १७॥  
 वैवस्वत शनियमरुद्राभ मनुभित्स्वपि ।  
 वैवस्वती दक्षिणस्यां यमुनायामपि स्मृता ॥५ १८॥  
 वैशतापि च वैशता पल्वले स्त्रीत्व इष्यते ।  
 वैशतयोगिनि पुनर्वशत वाच्यवमतम् ॥५ १९॥  
 शौकनासे यासशिष्ये वैशम्पायन इष्यते ।  
 वैशस वैकृतविपन्नरके नरकातरे ॥५ २ ॥  
 वैशाखो मथदण्डेऽपि पुमा माघवमासि च ।  
 वर्षाणा द्वादशानाञ्च सप्तमे स्याद्बृहस्पते ॥५ २१॥  
 अस्त्री तु धनिनां यत्र त्रिवितस्स्यतरौ पदौ ।  
 तत्र स्यात्स्थितिभेदे च वैशाली तु स्त्रिया मता ॥५ ७२२॥

पूर्णिमाया विशाखक्षयुक्तायां करिणो नखात् ।  
 ऊर्ध्वङ्कृतस्य पूर्वाङ्गैरुध्वभागे च कीर्त्तिता ॥५ २३॥  
 पुननवायां रक्तायां वसुदेवस्त्रियामपि ।  
 वैशिको वेशसम्बद्ध त्रिविंशे नपुसकम् ॥५ २४॥  
 वैशेषिक विशेषत्वे शास्त्रे काणभुजेऽपि च ।  
 वैशेषिकस्त्रिस्त ज्ञेऽपि विशेषस्य च योगिनि ॥५७२५॥  
 पुमान्वैश्रवणस्तूर्यमुहूर्त्ते धनदेऽपि च ।  
 वैश्रवदेवो ग्रहैकाहभिदो पुसि प्रकीर्त्तित ॥५ २६॥  
 वैश्रवदेवीष्टकामेदे माघशुक्लाष्टकोत्सवे ।  
 छन्दोभेदेऽथ त क्लीब स्या छत्रश्राद्धभेदयो ॥५ २ ॥  
 सामातरेऽपि प्रथमे चातुर्मास्यस्य पवणि ।  
 वैश्रवदेव मन्त्रभदोत्तराषाढक्षयोर्मतम् ॥५७ ८॥  
 वैश्वानरोऽग्नावप्यग्निभेदे सूर्येऽपि तत्करे ।  
 आत्मयप्यवैश्वानयु यते ऋक्षपद्धतौ ॥५ २९॥  
 पूवभाद्रपदादौ रेवयतायामथो नपि ।  
 वैश्वानर सामभेदे तथा [स्याक्लीबलिङ्गकम्] ॥५ ३ ॥  
 वैश्वामत्री तु गायत्र्यां सामभेदे नपुसकम् ।  
 स्त्रियां वैषयिकी या स्त्री गता वेश्या वमात्मन ॥५७३१॥  
 भोगाय तत्र विषयभवादौ तु त्रिषु स्मृता ।  
 मध्यविन्दौ वैषुवत विषुवसक्रमेऽपि च ॥५ ३२॥  
 तथा ब्राह्मणभेदेऽपि नपुसकमुदीरितम् ।  
 वैष्ट्र तु यकृति स्वर्गे रोहेऽपि परमात्मनि ॥५ ३३॥  
 विष्टपे द्यवि वायौ च विष्णौ स्यात्कस्यचिन्मते ।  
 वैष्णवो विष्णुभक्ते विष्णुदेवे विष्णुयोगिनि ॥५७३४॥  
 त्र्यथ सप्तदशारत्नेयूपस्यारम्य मूलत ।  
 ज्ञयस्त्रयोदशेश्वरौ वैष्णवी तु स्त्रियामियम् ॥५ ३५॥  
 सप्तानामपि मातृणामेकस्या स्यात्तथैव सा ।  
 नवानां विष्णुशक्तीनामेकस्यामपि नपुन ॥५ ३६॥



नवाह सोमवगस्य साम्नोराकरजातरे ।  
 शतावर्या तुलस्या च तथा स्यामृच्छनातरे ॥५३॥  
 तथाऽपराजिताया च श्रवणर्क्षे तु वेष्णवम् ।  
 वैहायस तु धानुष्कस्थितिभदे नपुसकम् ॥५७३८॥  
 प्रत्यालीढाह्वये त्रिस्तु सम्बन्धिनि विहायस ।  
 वैहायसी नदीभदे म्ली व्योम् गुडडयनेऽपि च ॥५३९॥  
 वोड्री स्त्री पणतुर्ये द्वे वोड्रो मत्स्यादिभदयो ।  
 वोढा स्याद्वृषभे पुसि तथा स्याद्वपभौषधो ॥५४॥  
 परिणेतारि मूढे तु त्रिर्भाराश्वे द्वयोर्मत ।  
 वोडी स्त्री पणपादे ना गोनसाहौ क्षपातरे ॥५४१॥  
 व्यक्त त्रिर्निश्चिते स्पष्ट यङ्ग्येऽपि च मनीषिणि ।  
 व्यक्त तु यञ्जनारये स्यात्कार्येऽङ्गगणिते तथा ॥५४२॥  
 यक्तगधा मलिकाया पिप्पलीमूर्मयोरपि ।  
 व्यक्तिस्त्री पृथगात्मत्वे लिङ्गयञ्जनयोरपि ॥५४३॥  
 यग्रस्तु विगताग्रे च यापृताकुलयोस्त्रिषु ।  
 यङ्गो भेके द्वयोस्त्रिस्तु विरूपाङ्गगताङ्गयो ॥५४४॥  
 पुमास्त्रीलपृषद्रूपवक्त्रयाधौ तथायसि ।  
 यजन बीजने तालवृतादौ वायुसाधने ॥५४५॥  
 व्यञ्जन स्यादवयवे श्मश्रुनिष्ठानलक्ष्मसु ।  
 व्यनक्त्यर्थे न ना यज्ञपशुसंस्कारकर्मणि ॥५४६॥  
 अस्त्री तु हल्समारयेषु वर्णेषु यञ्जन मतम् ।  
 वृत्तिभेदे व्यञ्जना स्त्री क्लीबे चापि प्रयुज्यते ॥५४७॥  
 अथ यक्तिकरो याजे यस्य यतिषङ्गयो ।  
 प्रस्तावेऽपि च सम्पर्के पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥५४८॥  
 व्यतिक्षेपस्तु युद्धेऽतिक्षेपणेऽपि पुमान्मत ।  
 व्यतिरेको निषेधेऽतिरेकेऽलङ्कारमिद्यपि ॥५४९॥  
 व्यतीपातो महोत्पाते योगभेदापमानयो ।  
 व्यत्यस्तस्त्रिर्विपर्यस्ते महासख्यातरे तु नप् ॥५५॥

यथि क्ली वर्त्मनि क्रोधे सात त्रिस्तु व्यथावति ।

यध्य पुसि धनु र्यायां वेधनीयेऽभिधेयवत् ॥५ ५१॥

यध्वो दुरध्वे पुसि स्यात्रिस्तादृक्षाध्वयोगिनि ।

यतरे द्व पिशाचादौ यन्तर ॥५ ५२॥

महोरग किम्पुरुषो भूतग धर्वकिन्नरा ।

यक्षरक्ष पिशाचाश्च जैनानां व्यतरा मता ॥५ ५३॥

यपदेशोपदेश यवहाराभिजनेष्वपि ।

व्ययो वित्तसमुत्सर्गे निगमे पक्षिणो गतौ ॥५ ५४॥

लग्नाच्च द्वादशे राशौ विंशे वर्षे बृहस्पत ।

यथोऽभिधेयशू येऽपि त्रिषु स्यान्निष्प्रयोजने ॥५ ५५॥

यलीकमप्रियाकार्यवैलक्ष्यव्यङ्ग्यपीडने ।

विपर्ययेऽपराधे च रोगे दोषेऽपि कामजे ॥५ ५६॥

अनिष्टे तु यलीकस्त्रिर्नागरे तु पुमान्मत ।

यवच्छेदस्तु यावृत्तौ चापाच्च शरमोक्षणे ॥५ ५७॥

यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बधे द्यतदण्डयो ।

शासने वित्रसवाद विवादेऽसिवणिज्ययो ॥५ ५८॥

व्यवहारो दुभेद स्यान्न्यायेऽपि च पणे स्थितौ ।

यवहारिका स्यालोकयात्रासमाजनीकुदे ॥५ ५९॥

व्यवाय सुरतेऽतर्धौ पुसि क्लीब तु तेजसि ।

यसन सक्तिविपदोदैर्बानिष्टफलैर्ऽहसि ॥५ ६०॥

पैशुयादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ।

निक्षेपे निष्फलोद्योगेऽप्यशुमे च नपुसकम् ॥५ ६१॥

व्यस्त तु याकुले व्याप्ते विमक्तेऽप्यभिधेयवत् ।

शदशास्त्रे याकरण ज्याटङ्कारे स्फुटीकृतौ ॥५ ६२॥

याघातो याहतावारग्वधे योगातरेऽपि च ।

विघ्ने प्रहारेऽलङ्कारभेदे व्याघात इष्यते ॥५ ६३॥

याघ्र स्यात्पुसि शार्दूले रक्तैरण्डकरञ्जयोः ।

श्रेष्ठे नराद्युत्तरस्थ कण्टकार्या तु योषिति ॥५ ६४॥

अन्त्री याघ्रनख द्वीपिनखे व्यालायुध तु नप ।  
 भवेदयाघ्रनख कदगधद्रयनिशषयो ॥५६५॥  
 नखक्षतातरे क्लीब तथा स्यादायुधा तरे ।  
 याघ्रपादपिभदऽपि पुसि न स्याद्विकङ्कते ॥५६६॥  
 एरण्डे याघ्रपुच्छो ना द्वीपिपुच्छे तु पुनपो ।  
 याज शास्त्रेऽपदेशे च स्यादयाजमपि न स्त्रियाम् ॥५६७॥  
 याडो नेत्रे द्वयो सर्पे शृगाले स्नापदऽपि च ।  
 व्यादीर्णास्या द्वयो सिंहे योगार्थे तु यथायथम् ॥५७६८॥  
 याधो दुष्ट त्रिषु द्वे तु मृगयौ सङ्करातरे ।  
 व्याधि कुष्ठ च रोगे ना ककशाया स्त्रिया तथा ॥५६९॥  
 याधिघात पुमानारग्वधनेतसयोर्मत ।  
 याधी रोगिण्युत्तरस्थो वेधकारिणि वायवत् ॥५७०॥  
 यापारस्तु कृतौ पुसि दशमे भवनेऽपि च ।  
 याप्त रयाते समाक्राते [त्रिलिङ्ग परिकीर्तितम्] ॥५७१॥  
 याप्य त्रिव्यापनीये क्ली साधने कुष्ठमषजे ।  
 यायत व्यापृते दीर्घे दृढे चातिशयेऽयवत् ॥५७२॥  
 यायाम पौरुषे यामे स्पर्धाया दुर्गसश्चरे ।  
 बल्लाद्याकर्षणे दीर्घाकरणे विषमे श्रमे ॥५७३॥  
 व्यालो दुष्टगजे भूपे द्वेष्काणमिदि चित्रके ।  
 बहुप्रदे त्वपि शठे खले यालस्त्रिषु स्मृत ॥५७४॥  
 यालदष्ट कोकिलाक्षे गोक्षुरेऽपि मत पुमान् ।  
 द्वयोर्व्यालमृगो हिंस्रमृगो चापि मृगातरे ॥५७५॥  
 व्यालम्बो लम्बिनि त्रि स्यादरण्डे तु पुमान्त ।  
 व्यावक्तकस्त्रि र्यावृत्तिकृति ना चक्रमदके ॥५७६॥  
 यासो वृत्तार्द्धसीम्नि स्याद्विस्तारे बादरायणे ।  
 यास धनुर्विशेषे क्ली योगार्थे तु यथायथम् ॥५७७॥  
 व्युत्थान प्रतिकूलवे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ।  
 पुष्ट तु युषिते त्रि स्यात्क्ली प्रमातविवासयो ॥५७८॥

युष्टि प्रयोजनाभिरयफले स्त्रीलिङ्ग इष्यते ।  
 अग्निचि-येष्टकाना च भेदेष्टद्विविवासयो ॥५ ७९॥  
 कालेऽष्टमेऽष्टमे भुङ्क्ते यस्तत्र युष्टिरिष्यते ।  
 यूह सहतवि-यस्तपृथुलेष्वभिधेयवत् ॥५ ८ ॥  
 यूहो व्रजेऽपि वि-यासे वि-यस्तेऽपि पुमा-मत ।  
 व्योम स्थाने दिशि जले चाकाशेऽपि नपुसकम् ॥५ ८१॥  
 अभ्रके कामवायौ च दशमे भवने तथा ।  
 सूर्यस्यायतने त्राणेऽवकाशेऽपि प्रकीर्तितम् ॥५ ८२॥  
 तथैवाक्षितसरयाया यरयाया दशकामनि ।  
 वृन्दादिषु तु षट्स्वये निखव बद्धमक्षितम् ॥५ ८३॥  
 योमा त्वेकाहभेदे ना वाच्यवत्स्यादरक्षिते ।  
 व्योमचारी द्वयोर्देवे खगे त्रिश्चिरजीविनि ॥५ ८४॥  
 योष स्यात्रिकदुद्रये करिभेदे पुमानयम् ।  
 मरिच पिप्पली चैवार्द्रक त्रिकदु कीर्तितम् ॥५ ८५॥  
 व्रजोऽस्त्रियामश्वगोष्ठे गोष्ठ मार्गसमूहयो ।  
 व्रजस्तु मेघे शैले च पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ॥५ ८६॥  
 व्रजभूव्रजभूमौ स्त्री स्यात्कदम्बान्तरे पुमान् ।  
 अथ व्रजोद्भवे त्वेष वा-यवद्व्रजभूर्मत ॥५ ८ ॥  
 व्र-या वर्गे गतौ चापि तथा पर्यटने स्त्रियाम् ।  
 व्रण क्षतेऽपि दोषेऽपि ना स्त्रियां परिकीर्तित ॥५ ७८८॥  
 व्रणकृत्रिषु योगार्थे पुमा भ-लातकद्वये ।  
 व्रणह पुसि चैरण्डे गुह्यां व्रणहा स्त्रियाम् ॥५ ८९॥  
 व्रणहृद्रणिकार्या ना व्रणहारिणि तु त्रिषु ।  
 व्रणारिः पुस्यगस्त्येऽपि [त्रिषु वाच्यवदिष्यते] ॥५ ९ ॥  
 व्रतोऽस्त्री नियमे क्ली तु व्रत मासतुवसरे ।  
 विष्णावग्नौ धनेऽने च विधाने भुक्तिकर्मणो ॥५ ९१॥  
 महाव्रतसमारयेऽपि क्रतुभेदे व्रत मतम् ।  
 व्रती व्रतवति त्रि स्याद्वृथोरश्वे प्रकीर्तित ॥५ ७९२॥

व्रश्चन पत्रपरशौ पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 छेदने व्रश्चन क्लीबं त्रि तु छेदनसाधने ॥५७९३॥  
 ब्राजिवाक स्रसार्थेऽश्वे कुक्कुट तु द्वयोरयम् ।  
 ब्रातस्तु ना समूहे स्यात्सङ्घे वा यस्य लक्षणम् ॥५७९४॥  
 ग्राहुरुत्सेधजीवाश्च नानाजातीयका अपि ।  
 अयवस्थितवृत्ताश्च सङ्घा ब्राता इतीदृशम् ॥५७९५॥  
 मनुष्ये तु द्वयोप्रातो प्रात्ये यस्य च लक्षणम् ।  
 प्रात्यस्त्वनुपनीतो यो विवाह ब्राह्मणादिक ॥५७९६॥  
 करोति तस्मिन्संस्कारहीनमात्रेऽपि ना मत ।  
 द्वयोस्तु प्रतिलोमाना प्रतिलोमजमानुषे ॥५७९७॥  
 ब्रात्या तु ब्रातचयाया स्त्री त्रिस्तु व्रतसाधुनि ।  
 ब्रीहि सामायधाये स्यादाशुधाये तु पुंस्ययम् ॥५७९८॥  
 स्याद्ब्रीहिराजिक कङ्गुधायचीनकधाययो ॥५७९९॥

## श

शसा स्तुतौ तथेच्छायामुक्तौ स्त्रिया मता ॥५८०॥  
 इच्छाया वाऽजय ग्राह तदसत्स्मर्यते यत ।  
 आङ्गपूर्वस्यैष शदज्ञैः शसेरिच्छार्थवाचिता ॥५८१॥  
 शस्य आहवनीयाऽग्नौ शसनीये तु वायवत् ।  
 शमव्यय वा क्लीबं वा कल्याणेऽथ पुमान्तः ॥५८२॥  
 शस्त्रे शिवेऽप्युत्तरस्थस्त्वय शयितरि त्रिषु ।  
 शको ना पशुविष्टाया देशभेदे जले तु नप् ॥५८३॥  
 शका तु गवयाभिरपशुजातौ स्त्रियामियम् ।  
 स्याद्वत्सरेऽपि पार्थादेः शको जात्यतरे नृपे ॥५८४॥  
 शकधुर्देवताभेदे तथैव स्याद्वनस्पतौ ।  
 शकलस्त्वृषिभेदे ना खण्डे तु नरशण्डयोः ॥५८५॥  
 रागद्रव्यविशेषे च वल्कलेऽप्यथ भेद्यवत् ।  
 शकलो मूर्खधनिनोर्नीहृद्भेदे नृभूमनि ॥५८६॥

शकली तु द्वयोर्मत्स्ये शकलेन युते त्रिषु ।  
 शकलर्देवतामेदे स्त्रीलिङ्गे परिकीर्तिता ॥५८६॥  
 वनस्पतिविशेष तु शकल पुंसि कीर्तित ।  
 शकुटा पश्चिम भाग विभज्य दशधोष्वत ॥५८७॥  
 हस्तिन पश्चमे भागे शाकस्तम्बा तरे तु ना ।  
 शकुन पक्षिणि द्वे ना मित्रे क्ली भाविष्यचके ॥५८८॥  
 शकुनि पक्षिमात्रेऽपि चिल्लपक्षिणि च द्वयो ।  
 शकुनिस्तु पुमानेष स्याद्दुर्योधनमातुले ॥५८९॥  
 शकुन्तस्तु द्वयो पक्षिमात्रे भासारयपाक्षणि ।  
 स्त्रीपुंसयोस्तु शकुलो मत्स्यमेदे प्रकीर्तित ॥५८९॥  
 अथ कूष्माण्डवल्ल्यां स्त्री शकुला परिकीर्तिता ।  
 रोहिणीतीयपिप्पल्यो शकुलादन्युदीरिता ॥५८९१॥  
 शकुत्कलीबे जले प्रोक्त तथा गोमयविष्ठयो ।  
 स्याच्छकोटस्तु बाहौ ना शक्ते तु त्रिषु कीर्तित ॥५८९२॥  
 शक्तिवसिष्ठपुत्रे ना स्त्री सारयप्रकृतौ श्रियाम् ।  
 सामर्थ्ये च प्रभावादिजातासु च तिसृष्वपि ॥५८९३॥  
 कर्मण्यप्यायुधे कास्त्रनाम्नि शक्तीतिशक्तिवत् ।  
 शक्र कुटजवृक्षे च महे द्वे च पुमान्त ॥५८९४॥  
 शकल प्रियवदे शक्ते वायवपरिकीर्तित ।  
 शक्वा तु हस्ते ग्रथादौ पुंस्यथो शक्वरी स्त्रियाम् ॥५८९५॥  
 नद्यां विद्युति काञ्च्या च तथा बाह्यापिष्यते ।  
 षट्पञ्चाशत्स्वरे चापि छदोमेद तथा मता ॥५८९६॥  
 शङ्कु शम्भौ चतुर्वक्त्रे पुमान्सरयातरेऽपि च ।  
 कोटिलक्षात्मकेऽथास्त्री कीलमेढ्रायुधान्तरे ॥५८९७॥  
 वृक्षपत्रसिराजाले शङ्कुर्गोत्रेऽपि कीर्तिता ।  
 द्वयोर्विडाले हसे च शदोमेदे च राक्षसे ॥५८९८॥  
 एवमुत्पादिवगस्य तृतीये साम्नि च स्मृत ।  
 पुष्पपुसकयोरनमविशेषेण मन्यते ॥५८९९॥

अप्राण्यर्थं तथा ग्राह शङ्कुरप्राणगोचर ।  
 इत्यधर्चादिवगस्य वैजयत्या प्रपञ्चने ॥५८२ ॥  
 शङ्ककर्णस्तु ना मुयतरे द्व तु खरोष्ट्रयो ।  
 शङ्ककर्णी प्रतोया स्यात्परिघ लोहकीलिनि ॥५८२१॥  
 शङ्कोऽस्त्री वलये कम्बौ ललाटास्थिगमर्मयो ।  
 सरयाभेदे निखर्वारयसरयाया दशकात्मके ॥५८२२॥  
 निधिभेद त्वमावास्यातिथो नागभिभेदयो ।  
 मणिभेद च शुक्त्यारयभेषजे शङ्ख एष ना ॥५८२३॥  
 शङ्खपालो द्वयोदर्वीकराणा षट् च विंशति ।  
 ये भेदास्तेषु चैकस्ययोगार्थं तु यथायथम् ॥५८२४॥  
 शङ्खिनी चौरपुण्या स्यात् शङ्खी शङ्खवति त्रिषु ।  
 शठो ना मातुलङ्गे च भयधुधूरयोरपि ॥५८२५॥  
 सिते च सषपे तस्य फले चाथ नपुसकम् ।  
 पाये वङ्गारयलोहे च प्रसवेऽत्रोक्तशाखिनाम् ॥५८२६॥  
 त्रिस्तु धूर्त्ते च शत्रौ च मार्जारे तु द्वयोरयम् ।  
 शणीर पुलिने शोणाम्बुमध्यस्थेऽपि गङ्गया ॥५८२ ॥  
 सरग्ना सङ्गमेनावृतेऽपि स्याद्ददरी तटे ।  
 पुमाञ्शतघृतिर्ब्रह्मण्यथ योगे यथायथम् ॥५८२८॥  
 शतपत्र तु कमले शतपत्रस्त्वय द्वयो ।  
 मयूरे सारसे चापि स्याद्वाघाटपक्षिणि ॥५८२९॥  
 शतपर्वा तु ना वेणौ स्त्री दूर्वावचयोरपि ।  
 कलम्ब्यां च विसे तु क्ली स्थौणेयारये च भेषजे ॥५८३ ॥  
 शतपात्तु शताङ्घ्रावप्यभिधेयवदिष्यते ।  
 अथो शतपदीकणजलौकायां स्त्रिया मता ॥५८३१॥  
 शतमान भवेत्कर्षद्वये ब्रीहेस्तथादके ।  
 शतोमिते तण्डुलानामपि स्यात्पुष्पपुसकम् ॥५८३२॥  
 स्त्रियां शतमुखी पार्वत्यां योगे तु यथायथम् ।  
 शतमूर्धा तु वल्मीके योगार्थे तु यथायथम् ॥५८३३॥

शतवीर्यां श्वेतदूर्वा योगार्थे तु यथायथम् ।  
 शतहृदा तु तडिति तडिद्भदे त्रि गौगिके ॥५८३४॥  
 शताङ्गस्तु रथे पुसि योगार्थे तु यथायथम् ।  
 शतानदस्तु ना विष्णौ विरिञ्चे गौतमेऽपि च ॥५८३५॥  
 शतावर्चा तु तडिति शतावत्तस्तु ना हरौ ।  
 शत्रिस्तु कुञ्जरे क्रौञ्चनाम्नि पक्षिणि च द्वयो ॥५८३६॥  
 शत्रुस्तु पुस्यमित्रे स्यालग्नात्षष्ठे च राशिके ।  
 शत्रुघ्न पुसि भरतानुजे त्रि शत्रुहतरि ॥५८३७॥  
 शत्रिस्तु पवते पुसि द्वयोस्तु गजमेषयो ।  
 शपथ कार आक्रोशे शपने च सुतादिभि ॥५८३८॥  
 शफ पुसि च शण्डे च लाङ्गलाङ्गातरे खुरे ।  
 महावीरारयपात्रस्य परिग्रहणकाष्ठयो ॥५८३९॥  
 बृथश्च यस्ये यचि च गीतयो सामभेदयो ।  
 शफरो मत्स्यभेदे स्यात्प्रोष्ठीसङ्ग द्वयोरयम् ॥५८४०॥  
 शफरी वृक्षभेदे स्यादग्मत्तक इति श्रुते ।  
 शबरस्तु द्वयो शूद्रभिलीसम्भव इष्यते ॥५८४१॥  
 शबरी तापसीभेद रामायणकथाश्रते ।  
 शबरस्तु शिवे पुसि शबर क्ली जले मतम् ॥५८४२॥  
 शबलश्चित्रवर्णे ना चित्रवणध्रुवेऽपि च ।  
 शबली गवि चित्रायां चित्रवणयुते त्रिषु ॥५८४३॥  
 श दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये स्वे श्रवण ध्वनौ ।  
 श दग्राट तु द्वयो शिष्ये त्रि तु शादे प्रकीर्त्तित ॥५८४४॥  
 शमस्तु शातौ पुच्छिङ्ग माने च चतुरङ्गुले ।  
 शमथस्तु जले शातावप्याश्रमपदे पुमान् ॥५८४५॥  
 शमनो ना यमे शातौ क्ली नना शमने नना ।  
 तथैव शमयत्यर्थे त्रि तु स्याच्छातिसाधने ॥५८४६॥  
 शमल तु मत पापे विष्ठायां च नपुंसकम् ।  
 अथ स्त्री शमिता चूर्णे गोधूमस्येति यादव ॥५८४७॥



असाधिन तदाभाति शदज्ञाना यदाग्रणी ।  
 गोधूमचूणसमिध धात पुल्लिङ्गमुक्तवान् ॥५८४८॥  
 शाकटायन आचार्यस्तस्यापभ्रश इययम् ।  
 भासते चापि साधनी चेदीप्स्ये शमयतेस्त्रिषु ॥५८४९॥  
 शमी तु स्यात्सक्तुफलासन्नवृक्षा तरे त्रयाम् ।  
 मुद्गमाषादसस्याना बीजकोश्या च चर्मणि ॥५८५॥  
 शम्बो वज्रे लोहमये बलये मुसलाग्रगे ।  
 आरत्रेऽर्थातरेऽप्यस्ति शम्बबीजात्कृषाविति ॥५९०॥  
 शम्बरो मेघगिर्योदत्यातरेऽप्युरसा स्त्रियाम् ।  
 दधाने द्वे तु मत्स्येऽल्पहरिणऽपि मृगा तरे ॥५९१॥  
 क्लीब तु सलिले बौद्धव्रतभदे बलेऽपि च ।  
 शम्बूको जलशुक्तो द्व शम्बूका तु भवेस्त्रियाम् ॥५९२॥  
 गजस्य मुखमध्यस्य पार्श्वार्धोदेशयोरथ ।  
 ना ह्यक्षमे तण्डुलकणे तण्डुलस्थमलेऽपि च ॥५९३॥  
 शम्भुर्ब्रह्मणि विष्णौ च शिरेऽहति च पुस्ययम् ।  
 शम्या तु युगकीलेऽस्त्री माने षट्त्रिंशदङ्गुले ॥५९४॥  
 अथो शमयितये त्रि शमितव्ये तु तन्नपि ।  
 शयो ना शयने पाणौ कृकलासे तु स द्वयो ॥५९५॥  
 शयथस्तु प्रदोषेऽपि मृत्यौ पुसि प्रकीर्तित ।  
 द्वयोस्त्वजगरे मत्स्ये निद्रालौ त्वेष वायवत् ॥५९६॥  
 शय्याया शयन क्लीब भावे च शरतेर्मतम् ।  
 शयानको गिरौ द्व त्वजगरे कृकलासके ॥५९७॥  
 शयालुस्तु शृगाले द्व निद्रालावभिधेयवत् ।  
 उदुम्बरद्रमे पुसि स्याद्बृक्षावयवातरे ॥५९८॥  
 क्लीब तूदुम्बरफले गन्धद्रयातरेऽपि च ।  
 शयुस्तु नाङ्गे स्वप्ने च द्वयोस्त्वजगरे मत ॥५९९॥  
 शयुनोज्जगरे द्व स्याच्छशाङ्गस्वप्नयोस्तु ना ।  
 शय्या स्त्री शयनीये च ग्रन्थगुम्फे च सा त्रि तु ॥६००॥

शयसाधौ पाणिभवे मदिरे तु नपुसकम् ।  
 शर पुसि शरद्वायौ क्षीरादेमुखबन्धने ॥५८६२॥  
 इन्द्रसङ्गतृणस्तम्बे हिंसामार्गणयोरपि ।  
 अथ ह्रीवेरजलयो शरमुक्त नपुसकम् ॥५८६३॥  
 शरठ वायुधे चापे क्रीडाशीले तु भेद्यवत् ।  
 शरद् सवत्सरे मघाऽयय चापि स्त्रियां मता ॥५८६४॥  
 शरभ सिंहशत्रौ स्यादष्टपात्सङ्गके मृगे ।  
 द्वयोर्मृगा तरे चापि करम च प्रकीर्त्तित ॥५८६५॥  
 अविवाह्यविशीर्णाङ्गक याया शरभा स्त्रियाम् ।  
 शरवारि शरास्ये ना पातक्यशरजीवयो ॥५८६६॥  
 शरु स्यादायुधे क्रोधे द्वयोस्तु स्यात्कपिञ्जले ।  
 शकरा च सितायां च रोगभेदे शलातरे ॥५८६७॥  
 शकरावप्रदेशे च शकलेऽल्पकपालके ।  
 गुडे च खण्डे विकृतौ स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५८६८॥  
 शर्म गेहे मुखेऽप्युक्त नकारात् नपुसकम् ।  
 शव शिवे ना शर्वाणी स्यामृडान्या स्त्रियामियम् ॥५८६९॥  
 शर्वर तमसि क्लीब शवर शिवच द्वयो ।  
 शवरी तु स्त्रिया रात्रौ स ध्यायामपि कीर्त्तिता ॥५८ ॥  
 शल तु शलले क्लीब तल्लोम्नि परिकीर्त्तिम् ।  
 शलस्तु गतरि त्रि स्याद्द्वयोरुष्ट्रे च गदमे ॥५८७१॥  
 शलली नप्स्त्रियो श्वाविलोम्नि श्वाविधि तु द्वयो ।  
 शलाका तु भवेस्त्र्यया द्यतोपकरणेऽपि च ॥५८ २॥  
 अस्थूलदीघकाष्ठादिमये वस्तुनि च स्त्रियाम् ।  
 शक तु शकले चात्तरसेऽपि शकले मतम् ॥५८७३॥  
 वकले मुद्गरे चाथ त्रिषु भीतौ च पातरि ।  
 शल्यमस्त्री शलाकाया शङ्कुसज्ञायुधान्तरे ॥५८ ४॥  
 विवृद्धा शरीर लीनेऽन्त काण्डेऽथ मदनद्रुमे ।  
 मद्राजातरे चाथ श्वाविटसङ्गमृगे द्वयो ॥५८ ५॥

शल्यकस्तु पुमाञ्जरेतखदिरे कदराह्वये ।  
 शल्यकी तु द्वयोरेषा मृगभेदे प्रकीर्त्तिता ॥५६॥  
 शवस्तु कुणपे न स्त्री जले तु क्ली गतौ तु ना ।  
 शशो बोलोपधे द्व तु रोगकर्णमृगे मत ॥५८॥  
 शशशरीकस्तु पुष्पारये द्वयोर्लावारयपक्षिणि ।  
 क्रिमौ च मेघलिङ्गस्तु विकलेद्रियजतुषु ॥५९८॥  
 शङ्कु यूपभदऽपि स्यात्कर्णावयवातरे ।  
 शष्प बालतृणे रूपे रोमभेदे च न स्त्रियाम् ॥५८७९॥  
 शस्ता मित्रावरुणयोर्ना ब्रह्मणि पितयपि ।  
 चण्डाले तु द्वयो शस्ता त्रिषु स्तोतरि कीर्त्तित ॥५८८॥  
 शस्त्री तु छुरिकाया स्त्री शस्त्र तु क्लीबमायुधे ।  
 अयस्पृष्टमत्रभेदेषु शसाया साधनेषु च ॥५८८१॥  
 शस्त्रकष्टङ्गणक्षारे शस्त्रक त्वयसि स्मृतम् ।  
 शाको हरितके पत्रपुष्पादिदशके तरो ॥५८८२॥  
 मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डाधिरूढकम् ।  
 त्वक्पुष्प कवकं चेति शाक दशविध स्मृतम् ॥५८८३॥  
 इत्युक्ते नस्त्रिया ना तु पृथुच्छदतरौ मत ।  
 शक्तौ सहाये सुहृदि साधनेऽपि शक्रेर्धनि ॥५८८४॥  
 भारताऽनतरे द्वीपभेदेऽपि शकटेऽपि च ।  
 शिरीषेऽप्यथ शाका तु हरीतक्यां प्रकीर्त्तिता ॥५८८५॥  
 शाकी तु स्त्री महाशाके नानाशाकसमाहृतौ ।  
 शाककोष्ठा तु जीवतीडोडीसङ्गकशाकयो ॥५८८६॥  
 शाकम्भरी तु दुर्गायां लवणहृदभिधाय ।  
 शाकारय शाकवृक्षे ना शाके तु स्यान्नपुसकम् ॥५८८८॥  
 अथ शाकट इत्येष पुमापलशतात्मन ।  
 तुलासङ्गस्य मानस्य विंशत्यात्मकभारके ॥५८८८॥  
 शाकटी ना पराभिरये यत्त मान व्यवस्थितम् ।  
 उक्तात्तु यदशगुण ततो दशगुण च यत् ॥५८८९॥

तस्माच्च यदशगुण तस्मिन् क्ली भेद्यवत्पुन ।  
 शकटे शकटस्यापि सम्बन्धिनि च बाह्वके ॥५८९॥  
 शकटस्याथ शाकट्यर्थे निदानकृतोदिते ।  
 शाकटीनस्तुलानां स्याद्विशया मकमानके ॥५८९१॥  
 शकटस्य तु सम्बन्धियय वाच्यवदिष्यते ।  
 शाकल शकलारयेन रक्ते द्रव्येण वाच्यवत् ॥५८९२॥  
 शाकलानां च शकलस्यापि सम्बन्धिनि स्मृतम् ।  
 अस्त्रियां शकले पुसि काष्ठखण्डकृताङ्गदे ॥५८९३॥  
 ऋषिभेदे सपभेदे शाकल तु पुरातरे ।  
 मद्राणां सामभेदेऽपि शाकयश्रुतियागयो ॥५८९४॥  
 बाह्वीकग्रामभेदेऽपि नपुसकमुदीरितम् ।  
 शाकी त्रिषु सहायेऽथ शाकिनी डाकिनीभिदि ॥५८९५॥  
 तथैव शाकक्षेत्रेऽपि स्त्रीव एव प्रकीर्त्तिता ।  
 शाकुन स्याच्छाकुनिके निमित्तेऽप्यथ वाच्यवत् ॥५८९६॥  
 शकुने शकुनस्यापि सम्बन्धिनि तथा मत ।  
 परोत्तापि यपि भवेत्पञ्चात्तापिनि कस्यचित् ॥५८९७॥  
 वैतसिक शाकुनिको नामत्तज्ञे तथा त्रिषु ।  
 केषाश्चिन्मस्यबन्धेऽपि तथा शकुनयोगिनि ॥५८९८॥  
 शाकुनी मत्स्यबन्धे त्रि पुमास्यादसुरातरे ।  
 शाकुनेयो लघूल्लके द्वे त्रि शकुनियोगिनि ॥५८९९॥  
 पुल्लिङ्ग शाकुनेयोज्य वृकनाम्न्यसुरे मत ।  
 शाकुतलो ना भरते क्लीब स्यान्नाटकातरे ॥५९०॥  
 द्वयो शाकुलिको मत्स्यबन्धे त्रिर्मत्स्यसहृत्तौ ।  
 शाक्करो वृषभे सोमविशेषेऽप्यथ वाच्यवत् ॥५९०१॥  
 शक्करीयोगिनि क्ली तु यागसामभिदोभवेत् ।  
 शाक्त सामातरे क्ली त्रिस्तान्त्रिके ना पराशरे ॥५९०२॥  
 शाक्तिकश्चि शक्तिजीवि यपि स्यात्तान्त्रिकान्तरे ।  
 शाक्त्य सामान्तरे ना तु गौरवीति ऋषौ भवेत् ॥५९०३॥

शाक्यो गौतममुद्र ना त्रि शकाभिजनादिके ।  
 शाक्री स्त्रिया स्याददुर्गाया शाक्र येष्टश्च इष्यते ॥५९ ४॥  
 शाखा तरोलताया च देहाडग्रथगुलिबाहुषु ।  
 गृहपाश्र्वे द्वाग्पाश्वस्तम्भ भागप्रभागयो ॥५९ ५॥  
 पक्षातरेऽतिके वर्षे वेदयक्तिषु च स्त्रियाम् ।  
 शाखस्तु स्व ददेवस्य पृष्ठजे स्यात्सुरातरे ॥५९ ६॥  
 करञ्जेऽपि च पुल्लिङ्ग शाखा व्याप्तौ द्वयोर्मता ।  
 शाखामृगो वानरे द्व केषांचिचिक्षुरेऽपि च ॥५९ ७॥  
 शाखाशिफा वरोह स्यामूलाचाग्रङ्गता लता ।  
 शाखी तु वृक्षसामान्ये शाखिनस्तु नृभूमनि ॥५९ ८॥  
 तुरुष्केऽथ शाखी तु स्याच्छाखावति ना यवत् ।  
 शारयस्तु शाखासदृशे शाखायोगिनि च त्रिषु ॥५९ ९॥  
 शाङ्कर शङ्करस्य स्यात्सम्बन्धियप वा यवत् ।  
 शाङ्करी तु समाभ्याये वर्णानां शिवसम्भते ॥५९१ ॥  
 क्लीब शाङ्करमार्द्राभे पुमांशाकरवृद्धये ।  
 शाङ्करिस्तु गणेशेऽपि कार्तिकेये तथा पुमान् ॥५९११॥  
 शाङ्गस्त्रि शङ्खसम्बन्धियथ शङ्खस्वने तु नप ।  
 शाङ्गिक्स्त्रि शङ्खयोगियपि शङ्गध्म कीर्त्तित ॥५९१२॥  
 द्वयोस्तु शङ्खककुमिजातौ शङ्गारिनामनि ।  
 शाडवो रागभेदेऽम्लमधुरेऽथ त्रि तद्वति ॥५९१३॥  
 शाणो ना निकषे द्वे तु शाण शाणा चतुष्टये ।  
 माषाणामथ दाने स्त्री शाणी गोण्यामपीष्यते ॥५९१४॥  
 शणसम्बन्धिनि त्वेषा शाणी स्याज्जनचिवरे ।  
 तथा जवनिकामेदे सङ्गायां त्रिस्तु यौगिके ॥५९१५॥  
 शाण्डिल्यस्तृषुभिमेदे ना स्याद्वि वे पावकान्तरे ।  
 शाण्डिल्यस्य त्वपत्ये द्वे गोत्रे स्त्री तत्र शाण्डिली ॥५९१६॥  
 शाण्डिल्य शाण्डिल्यजाते शाण्डिलीत्यग्निमातरि ।  
 शातस्तीक्ष्णे कुशे चापि शतयोगिनि वा यवत् ॥५९१ ॥

क्ली धत्तरसुखयो पुसि अशक्षयादिषु ।  
 शातकुम्भ सुवर्णे क्ली तत्सम्बन्धिनि तु त्रिषु ॥५९१८॥  
 करवीरे तु धत्तरे ना क्लीब प्रसवेऽन्यो ।  
 शातकौम्भ सुवर्णे क्ली स्यात्सौवर्णे तु वायवत् ॥५९ १॥  
 शातन तु भवेन्नाशे तेजनेऽपि नपुसकम् ।  
 शात्रव पुसि शत्रौ त्रि शत्रुयोगानि शात्रवम् ॥५९२ ॥  
 नपुसक तु शत्रूणां समूहे वैर एव च ।  
 शादस्तु शष्पे पङ्क च शदने स्वर्णबन्धयो ॥५९२१॥  
 अथ शातरि तद्व च शदसम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 गृह्यकारस्य शादाभिरित्युक्तोऽचत्यतां गति ॥५९२२॥  
 हृष्टकार्ये गोमिलस्य प्रयोग इति केचन ।  
 शाद्वल शातहरिते त्रिरस्त्रीधासवत्स्यले ॥५९२३॥  
 अय शाडवलवत्प्रोक्त पुल्लिङ्गस्तु वृषे मत ।  
 शानस्तु पुसि शाते स्त्री शानी स्यात्ककटीभिदि ॥५९२४॥  
 शानपाद पारिपानेऽपि चदनकषाश्मनि ।  
 शात शमवति त्रि स्यान्निशातेऽवसिते शुभे ॥५९२५॥  
 क्ली तु शान्तौ पुमाञ्छा त सुनिषण्ण रसातरे ।  
 शाता तु श्रुतिभेदे चाऽप्यामलक्यामपीष्यते ॥५९२६॥  
 दूर्वातरे रेणुकारयौषधे रामस्वसर्पपि ।  
 सप्तमार्हद्वताया शक्तिभेदेऽपि कीर्चिता ॥५९२ ॥  
 वषभद पुनजम्बूद्वीपस्थे शा तमिष्यते ।  
 भीष्मे शातनवस्तद्वत् फटसूत्राणा अणेतरि ॥५९२८॥  
 द्वीपान्तरे पुन क्लीबमिद शातनव मतम् ।  
 शान्तनुर्धायमे शा तनौ भीष्मपितर्यपि ॥५९२९॥  
 शाति शमे चिकिसाया धर्मपत्न्यां च मङ्गले ।  
 स्त्री ना दशमम वतरेद्रेऽपि तुषितातरे ॥५९३ ॥  
 अर्हद्भदेऽपि च तथा शातिनाथाऽभिधातरे ।  
 शाप शपथ आक्रोशे तरत्काष्ठादिके पुमान् ॥५९३१॥

शाबर वपराधेऽघ क्ली लोत्रे ना त्रियौगिके ।  
 जाल्मेऽपि शाबरी वात्मगुप्ताशबरभाषयो ॥५९३॥  
 शाबर ताग्रतमसोस्तथा शम्बरच दने ।  
 रोत्रे शाबरक शाबरिका स्याद्रत्तपातरे ॥५९३३॥  
 शाषय शबलत्वे शाबल्या स्याद्ब धुलस्त्रियाम् ।  
 शाबस्ती पुरभेद शाबन्तस्तत्कत्त भूपता ॥५९३४॥  
 शादी स्त्री वे सरस्वत्या शादस्त्रिशदयोगिनि ।  
 शादिकस्त्रि शदयोगि यपि शदावदि स्मृत ॥५९३५॥  
 शामनस्त्रि शात्तिकृति शामनस्तु यमे पुमान् ।  
 शामित्र शमितुर्यागपशुकत्तनकारिण ॥५९३६॥  
 सम्बाधनि त्रिरग्नौ तु ना यागपशुवाचक ।  
 शामित्र क्ली वधस्थाने तथा शामित्रकर्मणि ॥५९३७॥  
 शामीलस्त्रि शमीयोगयथ क्ली भस्मनि स्मृतम् ।  
 अथ स्त्रियामिय माये शामीली परिकीर्त्तिता ॥५९३८॥  
 स्याच्छाम्बरी स्त्री मायायां त्रि तु शम्बरयोगिनि ।  
 शम्बर शम्बररणे तथा शबरच दने ॥५९३९॥  
 शाम्भवस्त्रि शम्भुयोगियपत्ये स्याच्छिवस्य च ।  
 शिवभक्तेऽप्यथ पुमान् [कर्पूरविषभेदयो] ॥५९४०॥  
 स्त्री शाम्भवी स्याद्दुर्गाया शाम्भवा दवदारुणि ।  
 शाम्य शातो मत क्लीबे शाम्यस्तद्योगिनि त्रिषु ॥५९४१॥  
 शायक कत्तरि त्रि स्याच्छयनस्याऽथ शायिका ।  
 शयनस्यैव पर्यायादौ स्त्रीत्वे परिकीर्त्तिता ॥५९४२॥  
 शारो वायौ हिंसने च शबले त्रि तु तद्वति ।  
 शार शारी द्यूतशारावक्ली शारी पुन स्त्रियाम् ॥५९४३॥  
 शारिकारये पक्षिभदे कुशेय त्रि शरादणि ।  
 [अथ शारक इत्येष हिंसके वाच्यवन्मत] ॥५९४४॥  
 शारदस्तु पुमापीतमुदे सवत्सरेऽपि च ।  
 त्रिस्त्वष्ट्रे च शुद्धे च शरत्पक्षादिकेषु च ॥५९४५॥

शारस्य दातरि नवरोगे चाप्यप्रतिभेऽप्यथ ।  
 शारद शारदीति द्वे सप्तपणतरी भवेत् ॥५९४६॥  
 शारदी तोयपि पल्या कार्तिकाश्विनपूणयो ।  
 शारद तु शरच्छस्ये क्लीब ज्वेतोत्पलेऽपि च ॥५९४ ॥  
 शारदा सारिवाम्राह्मीदुर्गावाग्देवतासु च ।  
 पुसि शारदको दूर्वाभेदे शारदिका स्त्रियाम् ॥५९४८॥  
 शारिपुत्रे द्रोणपुत्रे शारद्वतीपुत्र इष्यते ।  
 शारि स्त्री शारिकासङ्गविहङ्गे नृस्त्रियो पुन ॥५९४९॥  
 पर्याणभेदे घटस्य गुडे शारयतौ तु ना ।  
 [ति यप या तथा बाणे कपटे च स्त्रियामियम्] ॥५९५ ॥  
 शारिका पक्षिभेदे च वाद्यवादनदण्डके ।  
 घृतक्रीडाविशेषे च दुर्गायां तु स्त्रिया मता ॥५९५१॥  
 शारीर पुसि जीवात्म यथ त्रि काययोगिनि ।  
 शारीर कायघटनाऽऽयुर्बेदस्थानभेदयोः ॥५९५२॥  
 वृषऽपि पुसि शारीर विद्वांस केचिदूचिरे ।  
 शारीरको ना जीवात्म यथ त्रि काययोगिनि ॥५९५३॥  
 शारीरके इति द्विवे स्यात्कायसुखदुःखयो ।  
 शाकरो मधुमद्य माघीकारये दुग्धफेनयो ॥५९५४॥  
 साम्नोस्तु योनौ वर्गोऽथयो क्ली शकरिले त्रिषु ।  
 शाङ्ग तु त्व गुचापेऽपि चापे शृङ्गकृतेऽपि च ॥५९५५॥  
 केषुचित्सामभेदेषु यदुक्त तद्वदाद्रके ।  
 चापमात्रेऽपि च क्लीब वायवच्छृङ्गयोगिनि ॥५९५६॥  
 तथा शृङ्गविकारेऽपि द्व तु पक्ष्यतरे स्मृत ।  
 शाङ्गार्ध चर्मपर्यारयलताभेदे नपुसकम् ॥५९५ ॥  
 शाङ्गार्धा तु स्त्रिया दासी षडश्राधारयकौषधे ।  
 शाङ्गी तु पुसि गोविदे तथा शाङ्गवति त्रिषु ॥५९५८॥  
 शादूलो द्वे याघसिंहशरभेष्वपि चूणके ।  
 पक्ष्यन्तरेऽप्युत्तरस्थ पुसि कोष्ठाथको मत ॥५९५९॥



नृभूमिन् शाखाभेदे ना छदोभिचित्रकौपये ।  
 स्याच्छादूली तु याग्रयादो तथाश्वापदमातरि ॥५६॥  
 शार्वरोऽस्य धतमसे घातुके तु त्रिषु स्मृत ।  
 शालस्तु पुंसि प्राकारेऽनकण लकुचेऽपि च ॥५९६१॥  
 स्यासातवाहने वृक्षसामाये द्व क्षपा तर ।  
 शाला तु गेहे गेहैकदशे च स्त्री तरोस्तथा ॥५९६२॥  
 स्कन्धसञ्जातशाखाया सूक्ष्मलाया त्रि गतरि ।  
 शालोऽस्य धर्चादिषु च वायग्रतरे स्मृत ॥५९६३॥  
 अथ शाली स्त्रिया कृष्णजीरे पत्नीस्वसर्षपि ।  
 शालग्रामो ग्रामभेदे गण्डकीतीरस्थिते ॥५९६४॥  
 शालवृक्षावृते त्रिष्णौ शालग्रामशिलास्थिते ।  
 अस्त्री तु तदग्रामभवे पूजार्हे स्याच्छिलातरे ॥५९६५॥  
 शालग्रामी तु गण्डक्या स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ।  
 शालङ्कायन इत्येष ऋषिभिर्ग्रमथातरे ॥५९६६॥  
 शालपुष्प वरवकर्णपुष्प [क्लीब प्रकीर्त्तितम्] ।  
 क्रीडातरे दारुपुत्र्या वेश्याया शालभञ्जिका ॥५९६७॥  
 शालसारस्तु वृक्षेऽपि हिङ्गुयपि पुमान्त ।  
 शालाकस्तु शलाकानां वृदे तत्पावकेऽपि च ॥५९६८॥  
 शालाकी शयवैद्येऽपि तथा स्यात्कुतधारिणि ।  
 शालाक्यस्त्वक्षिवैद्येऽथ क्लीब शल्यचिकित्सिते ॥५९६९॥  
 कुर्वादित्याच्छलाकाया अपत्ये तु भवेत्त्रिषु ।  
 शालाद्वार्यो यागवह्न्यतरे त्रिर्गृहाग्रगे ॥५९७०॥  
 शालामुख गृहद्वारे शालिभेदे तु पुस्ययम ।  
 शालामुखीयो योगे त्रि शालाद्वार्याऽनले तु ना ॥५९७१॥  
 शालामृग कुक्कुरेऽपि केषाञ्चिज्जम्बुके द्वयो ।  
 शालार क्ली हस्तिनखे सोपाने पक्षिपङ्कजे ॥५९७२॥  
 नागदन्तेऽपि भित्तिस्थे शालार केचिदूचिरे ।  
 शालावृका कपिक्रोष्टुस्वविडालादयो मता ॥५९७३॥

शालिर्दशविधे पुसि तण्डुले क्वापि च स्त्रियाम् ।  
 खट्वाशे तु द्वयोर्यक्षातरे सिंहाकृतौ पुमान् ॥५९ ४॥  
 शालिकस्त्रिषु शालाजे शालायां शालिका मता ।  
 शालिकस्त्रि शालियोगियस्य चूर्णे नपुसकम् ॥५९ ५॥  
 शाली फलाढ्ये च तथा शालिमत्येष वाच्यवत् ।  
 तथा शालावात प्रोक्त शोभने तूत्तरस्थित ॥५९ ६॥  
 शालिनी तु स्त्रियामेषाछ दोमदे प्रकीर्त्तिता ।  
 शालिपिष्ट शालिचूर्णे क्लीब काचमणावपि ॥५९ ७ ॥  
 शालिवाह शालिवहमाने शायूहि वा वृषे ।  
 शालिहान पुमानवायुर्वेदकृ मुनिभिद्यथ ॥५९ ८॥  
 शालिहोत्र तु शास्त्रेऽस्य नपुसकमुदीरितम् ।  
 शालीनो गृहसम्बन्धि यष्टृक्कलीबयोस्त्रिषु ॥५९ ९॥  
 पुमानाढ्यगृहस्थेऽथ शालीन विनये भवेत् ।  
 शालुश्चोरारयगधे ना कषाये त्रिस्तु तद्वति ॥५९ ८ ॥  
 उदीच्यफलभदे तु पथकदऽपि न द्वयो ।  
 अथ स्त्रीपुसयो शालुददुरे परिकीर्त्तित ॥५९ ८१॥  
 शालूक कण्ठगडुके तथा जातिफलेऽपि नप् ।  
 अथ द्वयोस्तु शालूको ददुरे परिकीर्त्तित ॥५९ ८२॥  
 शालूरो ददुरे द्वे स्याच्छन्दोमेदे पुमान्मत ।  
 शालेय पुसि मिश्रेयौषधे चाणक्यमूलके ॥५९ ८३॥  
 शालिक्षेत्रे तु शालेय शालेय पर्वतातरे ।  
 शालमलो द्वीपमेद स्यान्निर्यासे शाल्मलेरपि ॥५९ ८४॥  
 उत्तरस्थ शाल्मलिवत्तलवृक्षातरे मत ।  
 शालमलिस्तु द्वयोस्तूलवृभेदे द्वीपभिद्यपि ॥५९ ८५॥  
 यदावृतिघृताम्भोधिस्तथैव नरकातरे ।  
 स्त्रियां रूपद्वयं तस्य शालमलि शाल्मलीत्यपि ॥५९ ८६॥  
 शालमली स्त्री सरिद्धेद नारकीयाऽऽपगान्तरे ।  
 विष्णुशक्त्यन्तरेऽपीति विद्वास केचिदूचरे ॥५९ ८ ॥

रोहिद्रुमे शा मलिक शामलेश्च कनि स्मृत ।  
 शामली गरुडे द्वे स्त्री शामला शामलियपि ॥१९८८॥  
 शामलिस्थस्तु गृत्रपि गरुडेऽपि तथा द्वया ।  
 शामो वृक्षातरे शामा नृभूमि क्षत्रियातरे ॥१९८९॥  
 तेषां वासेऽपि त्रयये शामस्तेषां नृपे मत ।  
 शामा तु स्त्री सरिद्धेदे शामद्रुप्रसवे तु नप् ॥१९९०॥  
 शामोऽस्त्री मृतके पुंसि शिशौ त्रिमृतयोगिनि ।  
 नपुसक तु मृतकाशाचे शाममुदीरितम् ॥१९९१॥  
 शामवतो ना शिवे यासे वायवत्तु सनातने ।  
 शामवत तु सदात्वेऽपि योमिन् स्त्री शामती शुचि ॥१९९२॥  
 शङ्कुलीयोगिनि त्रि शङ्कुलिक क्ली तच्छ्रये ।  
 शासस्त्रि शासकेऽथाज्ञानपिब्रुक्ता तरपु ता ॥१९९३॥  
 शासको दण्डयितरि शिक्षके पालके त्रिषु ।  
 शासन शासके त्रि स्याच्छिक्षिकायां तु शासनी ॥१९९४॥  
 शासन दण्डने क्लीबमाज्ञायामपि पालने ।  
 आज्ञापत्रे लेखशास्त्रसन्दशात्मयमादिषु ॥१९९५॥  
 शास्ति स्त्री शासुधातौ च शासनार्थेषु कीर्तिता ।  
 शास्ता बुद्धे गुरौ भूपे जिने खड्गे तथा पुमान् ॥१९९६॥  
 शास्त्र तु क्लीबमाज्ञाया विद्यायां च नपुसकम् ।  
 शास्त्रचक्षुर्याकरण शास्त्रनेत्रे पुनस्त्रिषु ॥१९९७॥  
 शास्त्रशिपी तु कश्मीरदश भूमिन् तु त जने ।  
 शास्त्रार्थ शास्त्रवाये स्याद्वादेऽपि विदुषाम्मत ॥१९९८॥  
 शास्त्री शास्त्रवति त्रि स्यात्पुल्लिङ्गो बुद्ध इष्यते ।  
 शाहा कश्मीरभागेषु शाहो वैदेशिके नृपे ॥१९९९॥  
 शिर्ना शातौ शिवे भाग्येऽप्यादेशे जशसोर्मत ।  
 शिष्य शिष्या तुलारजौ राजुपाशा तरेऽपि च ॥६॥  
 शिक्षाऽभ्यासे चिकीर्षाया पाठे विनयदण्डयो ।  
 साहाय्येऽध्यापने वेदाङ्गभित्पाटलभूरुहो ॥६॥ १॥

१ शिक्षामारस्तु पुल्लिङ्ग उक्तस्तारामयाऽध्युते ।

शिक्षामारी द्वयोर्वादी न्तरे जलकपावपि ॥

पुमास्तु शिखो गन्धर्वराजभेदे प्रकीर्तित ।  
 शिक्षाकरोऽध्यापके त्रिरथ यासे पुमा मत ॥६ २॥  
 शिखण्डो बर्हिबर्हेऽपि चूडाया (वृक्षभिद्यपि) ।  
 शिखण्डी तु शिखाया स्त्री पुमास्तु शिखिपुच्छके ॥६ ३॥  
 शिखण्डक काकपक्षे चूडाया बर्हिबहके ।  
 तथा शैवविशेषाणा प्राप्तमोक्षे यतौ पुमान् ॥६ ४॥  
 नितम्बाधोभागयोस्तु क्ली द्विवे स्त शिखण्डके ।  
 शिखण्डिक कुक्कुटेऽपि मयूरेऽपि द्वयोर्मत ॥६ ५॥  
 शिखण्डिका शिखाया स्त्री पञ्चराग शिखण्डिकम् ।  
 शिख डी तु द्वयोर्ज्ञयो मयूरेऽपि च कुक्कुटे ॥६ ६॥  
 शिखण्डिनी तु यूथ्याश्च गुञ्जाया चाप्सरोमिदि ।  
 नारायणे तथा बाणे कस्मिंश्चित्पर्वतातरे ॥६ ७॥  
 कलायसञ्ज धाये च शिखण्डवति तु त्रिषु ।  
 शिखरोऽस्त्री गिरे शृङ्ग वृक्षाग्रे पुलकेऽपि च ॥६ ८॥  
 पक्वदाडिमबीजाममाणिक्यशकलेऽप्यथ ।  
 शिखर शोभने चापि वत्सु ले वायव मतम् ॥६ ९॥  
 शिखर शोभने प्रोक्तमित्यसत्तदमूलकम् ।  
 मलिकाकुडमले पाणिमृद्रामदास्त्रभेदयो ॥६ १०॥  
 शिखरा तु गदामदे मूर्वाया शिखरी पुन ।  
 स्त्रीवे ककटशृङ्गार्था स्यालवङ्ग शिखर मतम् ॥६ ११॥  
 शिखरी पुस्यपामागस्तम्बे चापि तरौ गिरौ ।  
 स्याद्वायवत्सु तीक्ष्णाग्रे मल्लीकोरकसन्निभे ॥६ १२॥  
 अत्यष्टिवृत्तभेदे तु स्त्रिया शिखरिणी मता ।  
 मार्जितासङ्गके तक्रभेदे चापि सुसंस्कृते ॥६ १३॥  
 नायिकोत्तमभिद्रोमावलीद्राक्षान्तरेष्वपि ।  
 शिखा मता शिफाशाखाघृणिचालासु मूर्धनि ॥६ १४॥  
 चूडायां केकिचूडायां चूतुकेऽप्यग्रमात्रके ।  
 प्रधानेऽपि तथा वृक्षस्याग्रे छन्दो तरे स्त्रियाम् ॥६ १५॥

ना तु सर्पांतरे सपसत्रयाजि फणाभ्रताम ।  
 शिखी स्त्रियामि द्रजालाग्रधान्तरनदीभिदो ॥६ १६॥  
 शिखाकन्द तु लशुने पलाण्डावाप कीर्त्तितम् ।  
 शिखाधरो ना मञ्जुश्रीनुद्ध बर्हिणि तु द्वयो ॥६ १ ॥  
 शिखामणि शिरोरत्ने ना ऋष्ट तूत्तरस्थित ।  
 शिखामूल तु लशुने पलाण्डो गृञ्जनेऽप च ॥६ १८॥  
 शिखावान्दीपके केतावग्नौ स्याच्चित्रके पुमान् ।  
 त्र सचूडेऽपि तीक्ष्णाग्रे स्त्रियां तु स्याच्छिखावती ॥६ १९॥  
 शिखावलो मयूरे द्वे तच्छिखाया शिखावला ।  
 शिखी नाग्यशुबृक्षेषु शरे केतुग्रहे द्विजे ॥६ २ ॥  
 दीपे गिरौ धूमकेतौ कपिकच्छवा सितावरे ।  
 भिक्षौ नामांतरे शक्रे तामसा तरसम्भवे ॥६ २१॥  
 द्वितीयबुद्ध बौद्धाना ब्रह्मण्यपि तथा मत ।  
 परिव्राजिवृषे वृक्षविशेषेऽश्म-तकाह्वये ॥६ २॥  
 शिखावति त्वय त्रि स्याद्द्वे कुक्कुटमयूरयो ।  
 यति मुक्तशिखावत्सु त्रिर्दे चैव बकाश्वयो ॥६ २३॥  
 तथाग्निपर्यायतया त्रिसरयायामपीष्यते ।  
 शिकु शिक्येऽपि जालेऽपि स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ॥६ २४॥  
 शिशुर्भोजनशाके स्त्री ना तु शोभाञ्जनद्रुमे ।  
 नृभूमि शिग्रवो मर्ये ज्ञातिभेदेऽपि वैदिके ॥६ २५॥  
 शिङ्गो वृक्षे किशारेऽपि पुष्टिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 शिङ्गाण कोशवृद्धावप्यधिकेने तथा पुमान् ॥६ २६॥  
 शिङ्गाणा त्रिषु नासाया मले क्लीब त्वयोमले ।  
 काचपात्रेऽपि कूर्चेऽपि शिङ्गाण परिकीर्त्तितम् ॥६ ॥  
 शिञ्जा धनुगुणे स्त्री स्यान्नूपुरादिध्वनावपि ।  
 शिञ्जित क्ली नूपुरादिध्वनौ तद्वति तु त्रिषु ॥६ २८॥  
 शिञ्जी शिङ्गावति त्रि स्याच्छिञ्जिनी स्त्री चतुर्गुणे ।  
 वृत्तचापेऽपि गणिते नूपुरेऽपि तथा मता ॥६ २९॥

शित त्रि तेजिते ना तु विश्वामित्रसुते शरे ।  
 क्लीब शिता मदोष्णि स्याद्योनौ यकृति मेदसि ॥६३॥  
 शितिस्त्री तेजने ना तु वणयो शुक्लकृष्णयो ।  
 ऋजावप्यथ च त्रि स्यादुक्तवर्णयुते शिति ॥६३१॥  
 भूजवृक्षेऽपि सारेऽथ त्रिस्तद्वणयुते ऋजौ ।  
 शितिकण्ठ शिवे पुसि तथा नागातर मत ॥६३२॥  
 नीलकण्ठखगे तु द्वे तथा दायूहकेकिनो ।  
 चन्दने क्ली शितौ कस्तूर्या च स्याच्छित्तिचन्दनम् ॥६३३॥  
 शितिपृष्ठास्त्रयोगार्थे पुमानागपुरोहिते ।  
 शित्पुटो भ्रमरे च द्वे जतौ मार्जारसनिभे ॥६३४॥  
 शिथिल त्वद्वे त्रि स्याच्छिथिली तु स्त्रियामियम् ।  
 वम्रिकासदृश पिङ्गवर्णे कीटातर भवेत् ॥६३५॥  
 शिपिर्नब्रश्मिशेषु द्वे पशुप्राणिनो शिपि ।  
 शैया छयनयोगा च शिप वारि प्रचक्षते ॥६३६॥  
 शिपिविष्टस्तु खलतौ शिवे विष्णौ पुमान्मत ।  
 त्रिदुश्चर्मणि शेफाग्रचर्महीनेऽपि निर्धने ॥६३७॥  
 शिग्रो हनौ स्याच्छिप्रा तु नासायां च नदीभिदि ।  
 शिमे कपोलौ शिप्रा तु शिरस्त्राणे प्रकीर्तितम् ॥६३८॥  
 शफा मातरि शाखायामवरोहे नदीभिदि ।  
 नद्या कशायां कुमुदमूले मासीहरिद्रयो ॥६३९॥  
 शिबरौशीनरे क्रयात्पक्षिभिर्भूजवृक्षयो ।  
 शिविका तु कुबेरीयगदाशिविकयोर्मता ॥६४॥  
 शिविर तु मत स्कधावारे धायान्तरऽपि च ।  
 शिम्बि शिमीवत्कार्येऽपि शिम्ब्यां च स्त्रीत्व इष्यते ॥६४१॥  
 शिम्बो द्वे मृगजातौ स्त्री शिम्बी निष्पावनामनि ।  
 वयां शिम्बा तु मुद्रादिसस्याना [बीजकोशके] ॥६४२॥  
 शिम्बस्तु चक्रमर्देऽपि पुमान्कैश्चिप्रकीर्तित ।  
 शिम्बल शुद्रशिम्बेऽपि पुमांश्चैव द्रुमातरे ॥६४३॥

शिम्बल शाल्मले पुष्पे ऋग्भाष्ये सायणोऽब्रवीत् ।  
 शिम्बि शिम्ब्यां तथा स्त्रीत्वे बल्यां निष्पावनामनि ॥६ ४४॥  
 शिम्बिक कृष्णमुदे ना शिम्ब्या स्त्री शिम्बिका मता ।  
 शम्बी शिम्ब्या च निष्पावे कपिकच्छर्वा[स्त्रिया मता] ॥६ ४५॥  
 शिम्बु समर्थे त्रि पुभू नृजातिभिदि शिम्बव ।  
 शिरोऽनपिप्लीमूले भूर्जेऽपि शयनीयके ॥६ ४६॥  
 स्त्रीपुसयोस्वजगरे शिर एव प्रकीर्तित ।  
 शिरस्तु मस्तके श्रष्ट क्लीब स्या पवतातरे ॥६ ४७॥  
 आरम्भेऽग्र सामभिद्यापो योतिर्मत्र इष्यते ।  
 शिरस्का शिबिकाया स्याच्छिरस्क तु शिरस्त्रके ॥६ ४८॥  
 शिरस्त्र तु कपालेऽपि शिरोरक्षणवस्तुनि ।  
 शिरस्थो यवहारस्थेऽभियोत्तर्यपि नायके ॥६ ४९॥  
 शिरस्थो ना शिर केशे शिर सम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 वाच्यवद्वातुकेऽथ स्या ना शिरिर्बाणखड्गयो ॥६ ५०॥  
 शिरि र्यालमृगेऽपि द्वे शलमेऽपि प्रकीर्तित ।  
 शिलम्बस्तु कुविन्देऽपि मुनावपि पुमान्मत ॥६ ५१॥  
 शिरिणा तु स्त्रियां रात्रौ गुहाया कस्यचि मते ।  
 शिरिम्बिष्ठ पुमान्मद्ये [ऋग्वेदे परिकीर्तित] ॥६ ५२॥  
 शिरीषो वृक्षभेदेऽथ नृभृग्रामातरे मत ।  
 शिरीषक शिरीषेऽपि तथा नागातरे मत ॥६ ५३॥  
 शिरीषिका वय स्त्रीत्वे वृक्षभेदे प्रकीर्तिता ।  
 शिरोरुजा शिरोयाधौ सप्तपर्णक्षुमेऽपि च ॥६ ५४॥  
 शिरोरुह कचे शृङ्गे काकनासा शिरोरुहा ।  
 शिलजौषधिभेदे स्त्री शैलेये शिलज मतम् ॥६ ५५॥  
 शिलोऽस्त्री कणिशाऽऽदाने पारियात्रसुते तु ना ।  
 शिलाऽश्मनि च कपूरे द्वाराऽधस्स्थितदारुणि ॥६ ५६॥  
 शिलाकुहस्तु टङ्गेऽथ पुमापाषाणशिपिनि ।  
 शिलाज त्वयसि क्लीब शिलाजतुनि च स्मृतम् ॥६ ५७॥

स्याच्छिलाकुसुमे पारसीकतैले तथा मतम् ।  
 शिलाटक स्यादद्वेऽपि विलेऽपि च तिले वृत्तौ ॥६ ५८॥  
 शिलाधातुस्तु खटिकाहरितालकगैरिके ।  
 शिलापेषस्तु पेषण्यां तथा धायादपेषके ॥६ ५९॥  
 शिलावहा नदीभेदे स्त्री नृभूमि जनातरे ।  
 शिलासन तु शैलेये क्ली शिलाकुसुमेऽपि च ॥६ ६०॥  
 शिलिर्ना भूजवृक्षे स्त्री द्वाराधस्थितदारुणि ।  
 शिली गण्डूपदीभेक्योद्वाराधस्थितदारुणि ॥६ ६१॥  
 स्तम्भशीर्षे तथा बाणे शल्येऽपि स्त्री च दृष्यते ।  
 शिलीमुख शरे पुसि अमरे तु द्वयोर्मत ॥६ ६२॥  
 शिलोथ नपि शैलेये क्ली शिलाकुसुमेऽपि च ।  
 शिलोद्भव क्ली शैलेये स्याच्छिलाकुसुमेऽपि च ॥६ ६३॥  
 तथा च दनभेदेऽपि सुवर्णेऽपि प्रकीर्तितम् ।  
 शिल्प नपुसक प्रोक्त कारुर्कमाण कर्मणि ॥६ ६४॥  
 कर्मा तराणां निर्माणविज्ञानेऽपि तथा मतम् ।  
 शिपाचार्या तु वपनशालाया यौगिकेऽपि च ॥६ ६५॥  
 शिव शम्भौ पद्मरागे गोरसे शीघ्रकीलयो ।  
 रुद्रभेदेऽपि शैवेऽपि तथा लिङ्गे शिवस्य च ॥६ ६६॥  
 देवे वेदे षष्ठमासे वालके गुग्गुलावपि ।  
 पारते कृष्णधत्तरे योगभित्पुण्डरीकयो ॥६ ६७॥  
 शुके काले वसौ शाके सुनिषण्णामिधे पुमान् ।  
 द्वे तु वातमृगे स्त्री तु शम्भोर्नवसु शक्तिषु ॥६ ६८॥  
 एकस्याञ्च गवीश्वारयक्षुद्रघाये नदीषु च ।  
 हरीतक्यामामलक्या तामलक्या शमीवृक्षे ॥६ ६९॥  
 श्यामाहरिद्रादूर्वासु पीतवा वतरेऽपि च ।  
 छन्दोभित्पिप्पलीमूलनेमिमातृनदीभिदो ॥६ ७०॥  
 तुलस्यां क्रोष्टुभेदे च दीप्तजिह्वाह्वये स्मृता ।  
 क्ली तु वारिणि कल्याणे स्यौणेये मूलकातरे ॥६ ७१॥



चाणक्यमूलकाभिरये सुखे व्योम्नि च सैधवे ।  
 सामुद्रलवणे श्वेतटङ्कणे च दनेऽपि च ॥६ ७२॥  
 तारेऽप्यामलके लोहे तगरे वर्षभिद्यपि ।  
 जम्बूलक्षद्वीपगते पुराणे शैवनामनि ॥६ ३॥  
 मोक्षे तु नस्त्री गौर्यां तु द्वयमेतच्छिवी शिवा ।  
 त्रि तु स्याच्छुभपुक्तेऽस्य सदा वाऽन्ताद्युदात्तता ॥६ ७४॥  
 शिवङ्कुरो ना खड्गे स्यादथ त्रि शिवकारिणि ।  
 शिवप्रिय पुष्पवृक्षे वसुभट्ट इति श्रुते ॥६ ७५॥  
 शिशिम्बष्ठस्तु मेघेऽपि भरद्वाजऽपि चोच्यते ।  
 विशेषतो च शिशिरो शीते ना त्रि तु तद्वति ॥६ ७६॥  
 शिशु पुस्यभिभेदे च स्कन्दे च द्व तु बालके ।  
 शिशुकस्तु द्वयोर्बाले शिशुमारे तथैव च ॥६ ७७॥  
 उल्पीसङ्गके यादोऽतरे ना तु द्रुमा तरे ।  
 शिशुप्रिय क्ली कल्हारे सौगधिकमिति श्रुते ॥६ ८॥  
 शिशुमारस्तु पुल्लिङ्ग उक्तस्तारामयाञ्च्युते ।  
 शिशुमारो द्वयोर्बादोऽतरे जलकपावपि ॥६ ७९॥  
 शिखिदानो द्वे कृकलासे त्रि स्यात्कृष्णकर्मणि ।  
 शीकरस्तु पुमा वाताहते स्नेहकणे मत ॥६ ८०॥  
 हस्तिहस्तोवभूतदानजले च शबले गुणे ।  
 तथा शीतगुणे त्रिस्तु तद्वगुणा यतरावते ॥६ ८१॥  
 शीघ्र क्लीबमसवे ना वायौ क्षिप्र तु तत्त्रिषु ।  
 शीत जले च शैत्ये क्ली त्रिषु शैत्यगुणाचिरे ॥६ ८२॥  
 शीतस्तु वेतसे पुसि तथा श्लेष्मातके मत ।  
 शीतकस्त्वलसे त्रि स्त्री तु बालामिदि शीतिका ॥६ ८३॥  
 करवीरे पुमाञ्शीतकुम्भस्तत्प्रसवे तु नप् ।  
 शीतपङ्कस्तु ना शीथौ योगार्थे तु यथायथम् ॥६ ८४॥  
 शीतलश्चम्पकतरौ तथा शीतगुणे पुमान् ।  
 त्रि तद्वति स्त्री तु रक्तवर्णायां गवि शीतला ॥६ ८५॥

सैधवे क्ली शीतशिव ना तु शालेयभेषजे ।  
 शीथुरस्त्री मद्यमात्रे पक्वेक्षुरसजेऽत्र च ॥६ ८६॥  
 शीरा कार्पासिकाया स्त्री शीरस्त्वजगरे द्वयो ।  
 लताकुशे तु शीरीति स्त्रीलङ्ग परिकीर्त्तिता ॥६ ८ ॥  
 शीर्णिस्त्वङ्गे विशरणे तथा रोगे भवेत्स्त्रियाम् ।  
 शीर्वी स्त्री पुसयोर्यङ्कौ कृमौ च परिकीर्त्तित ॥६ ८८॥  
 शीर्षण्य क्ली शिरस्त्राणे योधाना शीषकाह्वये ।  
 केशे ना विशदे तु त्रिष्टुरये मूधभवेऽपि च ॥६ ८९॥  
 शीलमस्त्री स्रभावेऽपि सद्रुचेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।  
 शीवा द्वयो शृगाले चाऽजगरे सप एव च ॥६ ९ ॥  
 शुको याससुते कीरे रावणस्य च मन्त्रिणि ।  
 ग्रथिपर्णे शिरीषे च शुक स्याच्छोणके क्वचित् ॥६ ९१॥  
 शुकनासष्टुण्डबुद्धे पुमाश्चागस्त्यपादपे ।  
 शुकपत्रो निविषा ये सपा द्वादशकीर्त्तिता ॥६ ९२॥  
 तेषामेकत्र योगे तु लिङ्गाद स्याद्यथायथम् ।  
 शुक्तस्तु पूतिता प्राप्त परुषेऽम्लेऽपि वाच्यवत् ॥६ ९३॥  
 शुक्त तु काञ्जिके कल्कजातावाप नपुसकम् ।  
 ग्रमस्त्वादिशुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्जिके ॥६ ९४॥  
 त्रिरात्र धायराशिस्थ तत्र चापि प्रकीर्त्तितम् ।  
 शुक्तिस्तु मुक्तास्फोटे स्त्री स्यादङ्गोलदलौषधे ॥६ ९५॥  
 तित्तिब्ध्या तित्तिडीकाया फले दुर्नामिकाह्वये ।  
 जलजतौ च घोटानां रोमावर्त्तातरेऽपि च ॥६ ९६॥  
 कर्षोमाने तथा कर्षे द्विगुणोमानकेऽपि च ।  
 अक्षिरोगविशेषे च पुमांस्त्वष्ट्यतरे स्मृत ॥६ ९७॥  
 शुक्रस्तु श्वेतवर्णे च शुक्लपक्षे पुमान्त ।  
 श्वेतवर्णाविते तु त्रि शुक्र त्वप्सु नपुसकम् ॥६ ९८॥  
 शुक्लोऽर्के सितवर्णे च चद्रेऽग्नौ भागवेऽध्वरे ।  
 दक्षिणाग्नौ क्रतावशौ यज्ञपात्रगृहान्तरे ॥६ ९९॥

ज्येष्ठमासेऽपि शुक्ल तु हेम्नि पुण्ये धने जने ।  
 रेतोऽक्षिरुग्भिदो सामातरे द्वे तु शिशौ द्विजे ॥६१ ॥  
 त्रि तु मेघ्ये सिते चाथ धर्मसजनरन्मिषु ।  
 शतत्रये रवे शुक्रा इति स्त्रीवे प्रकीर्त्तिता ॥६१ १॥  
 शुण्ठोऽपे त्रिषु ना तु स्या पशौ पेख्या तृणा तरे ।  
 शुण्ठिर्ना शुण्ठतौ धातौ स्त्री तु स्यान्नागरौषधे ॥६१ २॥  
 शुण्ढा सलीलहस्ति या मादराहस्तिहस्तयो ।  
 शुद्धोऽस्त्रिया जलेऽर्के तु नात्र केवलपूतयो ॥६१ ३॥  
 शुद्धातोऽत पुरे कक्ष्यातरे गुह्ये तथा पुमान् ।  
 शुनो वायौ सुख तु क्ली शुनके तु द्वयोर्मत ॥६१ ४॥  
 शुनकस्तृषिभदे ना शुनि स्त्रीपुसयोर्मत ।  
 शुध्यवोऽप्सु स्त्रियो शुध्युर्नाऽहोऽयर्के द्वयो खगे ॥६१ ५॥  
 शुभ लग्ना च नवमे राशावप्सु च मङ्गले ।  
 मञ्जुप्रशस्तयोस्तु त्रिर्मङ्गलेन तथाविते ॥६१ ६॥  
 अर्घ्याया तु शुभेत्येषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।  
 शुभिक्षि रम्ये विप्रे द्वे नाऽवनौ च ऋषौ रवौ ॥६१ ॥  
 शुभ्र शौक्ये पुमान्निस्तु शुक्ले स्याद्दीप्तिमत्यपि ।  
 शुल्कोऽस्त्री स्यात्प्रदेयेऽर्थे मार्गादिषु महीपते ॥६१ ८॥  
 विवाहाय वराद्ग्राह्ये धनेऽपि परिकीर्त्तिता ।  
 शुश्रूषा श्रोतुमिच्छायामुपास्तौ च कथानके ॥६१ ९॥  
 शुषिर्ना शुष्यतौ धातौ स्त्री तु रत्रे च शोषणे ।  
 शुषिरो विवरे न स्त्री वाद्यभेदे नखौषधे ॥६१ १०॥  
 पाशादौ तु छिद्रयुक्ते शुषिरस्त्रिषु कीर्त्तित ।  
 एत चासाम्प्रत यस्मादित्यादि शुषिरो मत ॥६१ ११॥  
 शुष्णो ग्रीष्मांशुकक्ष्यर्के ना द्वे शोषे बले तु नप् ।  
 शुष्म बलेऽप्सुसयोगे शुष्म कालेऽनिले रवौ ॥६१ १२॥  
 शुकोऽस्त्री धायस्त्वस्माग्रे शुक्लाऽनुक्राशयोरपि ।  
 शुद्रश्चतुथवर्णे च तथा सकरजे द्वयो ॥६१ १३॥

स्म्यर्थे शूद्राञ्च पुयोगे तु शूद्री भूमि तु स्मृता ।  
 शूद्रा धर्मार्थरक्षिणां त्रिशया प्रथमे शते ॥६११४॥  
 नपुसक तु रजते शूद्रमेतत्प्रकीर्तितम् ।  
 शूय रिक्ते मोहवतो वचस्यपि च वाच्यवत् ॥६११५॥  
 शूरो वीरे त्रिषु श्वेतशालौ ना कुक्कुटे द्वयो ।  
 शूषोऽस्त्री परिमाणेऽपि द्रोणयुग्मात्मके मत ॥६११६॥  
 अर्द्धप्रस्थात्मके मानेऽपि च द्रोणचतुगुणे ।  
 प्रस्फोटनक्रियाया च साधनेऽपि प्रकीर्तित ॥६११७॥  
 शूपकर्णो हस्तान द्वे यौगिके तु यथायथम् ।  
 शूलोऽस्त्री शस्त्रभेदे च तथा रोगान्तरे मत ॥६११८॥  
 स्या हूलनाशक सौवचलारये लवण नपि ।  
 शूलिकस्त्रि शूलवति द्वे विप्राशूद्रसभवे ॥६११९॥  
 शूली तु शूलयुक्ते त्रि शङ्करे तु पुमामत ।  
 शृङ्गल कटिस्त्रे त्रिदत्तिना पादबन्धने ॥६१२०॥  
 शृङ्गोऽस्त्री शैलशिखरे सानौ क्रीडाऽम्बुयन्त्रके ।  
 विषाणे च प्रभृत्वे च स्यात्प्राघायप्रधानयो ॥६१२१॥  
 क्लीब तु बलिनि स्त्री तु शृङ्गी मस्यातरे मता ।  
 मव्गुरस्य स्त्रियां ककटशृङ्ग्यां च विषौषधे ॥६१२२॥  
 अथ शृङ्गस्तु पुल्लिङ्गो जीवकाह्वयभेषजे ।  
 शृङ्गारस्तु पुमान्द तबीजस्तम्बेऽम्बुसभवे ॥६१२३॥  
 शृङ्गाट तत्फले युद्धयन्त्रभेदे चतुष्पथे ।  
 शृङ्गारो लम्पटे पुसि नस्त्री तु रस उज्ज्वले ॥६१२४॥  
 तथा सि दूरचूर्णे च करिणां मण्डनान्तरे ।  
 शृङ्गारी पूगवृक्षे ना सुवेषे त्वभिधेयवत् ॥६१२५॥  
 शृङ्गी तु वृषभेऽश्वे च यस्य शृङ्ग पदे भवेत् ।  
 मांसवुद्बुद उक्तोऽय पुमांश्च वृषभौषधे ॥६१२६॥  
 शृङ्गिणी तु गवि स्त्रीत्वे महिषे तु द्वयोर्भवेत् ।  
 शृङ्गिबेर तु शुण्ठ्यामप्यार्द्रकेऽपि नपुसकम् ॥६१२७॥

शेवा स्त्री प्रचलासङ्गनिद्राया क्ली मुखे धने ।  
 शेषोऽप्रधानेऽनन्तारयसर्पराजे च शार्ङ्गिण ॥६१२८॥  
 अवतारातरेऽप्ये त्रिस्वयत्रोपयुक्तत ।  
 माल्याक्षतादिदाने तु स्त्री शेषा परिकीर्त्तिता ॥६१२९॥  
 शेखस्वनन्यपूर्वाया विप्राया व्रात्यविप्रजे ।  
 द्वयोरथ शिखा योगियेष शैखस्त्रिषु स्मृत ॥६१३ ॥  
 शैय शीतलतायां च नैशित्ये शौक्ल्यकार्ण्ययो ।  
 शैलस्तु भूधरे पुसि शिलासम्बन्धिनि त्रिषु ॥६१३१॥  
 वृत्तौ शीलभवाया स्त्री शैलीति परिकीर्त्तिता ।  
 शैलाट शुक्लकाचे च देवले च पुमा मत ॥६१३२॥  
 शैलाटस्तु द्वयो सिंहे किराते च प्रकीर्त्तित ।  
 शैलूषो ना बिल्वशण्डजात्योर्द्वे कितवे नटे ॥६१३३॥  
 शैलेय सिन्धुलग्न क्लीब स्यात्तार्क्ष्यशैलके ।  
 कालानुसार्यधातौ च मधुपे तु द्वयोरयम् ॥६१३४॥  
 स्त्रिया शैवलिनी नद्या वाच्यवत्तु सशैवले ।  
 शैशव तु द्वयो साम्नोरुचतागीतयोस्तथा ॥६१३५॥  
 नपुसक शिशुत्वेऽथ शिशुसम्बन्धिनि त्रिषु ।  
 शोक शुचि पुमास्त्री तु शोकी रात्रौ प्रकीर्त्तिता ॥६१३६॥  
 शोचिज्वलति शुद्धत्वे पैङ्ग्येशौ शुग्विशुद्धयो ।  
 शोठो धूर्त्तज्जले मूर्खे नीचे पापरते त्रिषु ॥६१३ ॥  
 शोणो हिरण्यबाह्वारयनदमेदे प्रकीर्त्तित ।  
 दुण्डुवृक्षे रक्तवर्णे त्रि तु तद्वति तत्र च ॥६१३८॥  
 स्त्र्यर्थे शोणा शोण्यथाश्वे द्वे कोकनदवणके ।  
 शोणित रुधिरे वृक्षनिर्यासे कुङ्कुमेऽपि नप् ॥६१३९॥  
 रक्तवणयुते त्वेतदभिधेयवदिष्यते ।  
 शोधना शोधयत्यर्थे न ना शुद्धौ तु नप्स्मृतम् ॥६१४ ॥  
 शोधनोऽङ्गोलवृक्षे ना सम्माजया तु शोधनी ।  
 अथ शोधन एष स्याद्वाच्यवच्छुद्धिसाधने ॥६१४१॥

शोभन क्ली सुवर्णेऽर्थे शोभिते त्रि तु सुन्दरे ।  
 शोषक पश्चिमे कोष्ठश्रेणावारम्य दक्षिणात् ॥६१४२॥  
 कोष्ठे य सप्तमे वास्तुदेवस्तत्र पुमान्मत ।  
 अथ त्रि शोषयितरि शोष्टर्यपि च शोषक ॥६१४३॥  
 शौक शुक्समूहे च स्त्रीणां च करणान्तरे ।  
 शौण्डो द्व कुक्कुटे शौण्डी पिप्पल्या जलदावलौ ॥६१४४॥  
 शौण्डो तु मत्त शुण्डासम्भ्रियप्यभिधेयवत् ।  
 औत्थिताशनिके शौन्यादनिकस्तस्करेऽपि च ॥६१४५॥  
 शौर्यं शक्त्याह्वयबले लग्नाद्राशौ तृतीयके ।  
 शूरस्य भावक्रिययोस्तथैव स्यान्नपुसकम् ॥६१४६॥  
 श्यामो ना हरिते वर्णे वर्णे कृष्णे तथाऽम्बुदे ।  
 पीलुद्रुमे च श्यामा तु निशीथि यां स्त्रियामियम् ॥६१४७॥  
 पिप्पलीफलनिविद्युत्पालिनीशारिवासु च ।  
 स्त्री यञ्जनकृताया च कयाया पोतकीखगे ॥६१४८॥  
 क्लीब योम्नि मरीचेऽथोक्तपर्णावितयोन्नपु ।  
 श्यामक श्यामाकघाये हेम्नस्तु श्यामिका मले ॥६१४९॥  
 श्यामलोऽश्वत्थवृक्षे ना कार्थे च त्रिषु तद्वति ।  
 श्यामला स्त्री मृगीभेदे प्रोक्त यस्य च लक्षणम् ॥६१५०॥  
 श्यामवली लताया च श्यामे च मरिचे स्त्रियाम् ।  
 श्यावोऽर्काश्वे च कपिशे वर्णे त्रिषु तु तद्वति ॥६१५१॥  
 श्येनस्तु श्वतवर्णे ना त्रि तु तद्वति तत्र च ।  
 स्त्र्यर्थे श्येना तथा श्येनी मृगे द्वे अपि पक्षिणि ॥६१५२॥  
 श्येन सामातरे क्रत्व तरे चाप्याभिचारिके ।  
 श्येनसञ्ज्ञतृणप्राणिजायो स्यादेतयोर्यदा ॥६१५३॥  
 स्यर्थे वृत्तिस्तदारूप श्येनीयेव प्रकीर्तितम् ।  
 द्वे त्वश्वे पत्रिसङ्गे च श्येन पक्ष्यन्तरे स्मृत ॥६१५४॥  
 श्येना तु प्राचिकासञ्ज्ञपक्षिजातो स्त्रियां मता ।  
 श्येयो द्वयोरजगरे शकुनावपि कीर्तित ॥६१५५॥

अद्वास्तिक्वे स्पृहाया च गभिण्यास्तु विशेषत ।  
 अद्वालुर्दोहदि-या स्त्री अद्वाशीले तु वा यवत् ॥६१५६॥  
 अषणा अषयत्यर्थे ननाऽथ अषणी स्त्रियाम् ।  
 स्यादग्निहोत्रहवणीनामधेये सृगन्तरे ॥६१५७॥  
 अमण तु यत शा तौ अमणी मुण्डिकौषधे ।  
 दध्याल्यारयलताया च क्षपण तु द्वयोभवेत् ॥६१५८॥  
 अवण क्ली शृणोत्यर्थे श्रोत्रे पुसि तु विष्णुभ ।  
 तद्युक्त कालमात्रेऽथ द्वयो प्राण्य-तरे भवेत् ॥६१५९॥  
 अवणा तु स्त्रियां रात्रिविशेषे पूर्णिमान्तरे ।  
 अवो यश श्रोत्रबलधनाऽ नेषु नपुसकम् ॥६१६०॥  
 अविष्ठा वसुभेऽपि स्त्री तद्युक्त कालमात्रके ।  
 अथ अविष्ठो जातेऽत्र वा-यवत्परिकीर्तित ॥६१६१॥  
 आणा स्त्रिया यवाग्वा स्यात्क्षीरात्तु हविषस्तथा ।  
 अयत्र पक्वे आणस्त्रि वथ पाके नपुसकम् ॥६१६२॥  
 आद् अद्वावति त्रि स्यात्स्त्रीत्वे आद्भेऽति तत्र च ।  
 आद् तु भोजनाया स्यात्पितृणा क्लीबलिङ्गकम् ॥६१६३॥  
 आवक आवधितरि श्रोतरि त्रिगुणे तु ना ।  
 कण्ठजे गायकानां यो दूरत आवयेद्भूनिम् ॥६१६४॥  
 स्त्रीपुसयोस्तु जैनानां आवक स्यादुपासके ।  
 आवणी पूर्णिमायां स्त्री अवणर्क्षयुजि स्मृता ॥६१६५॥  
 मुण्डिकौषधे च दध्यालीनाम्नि वल्ल्य-तरेऽपि च ।  
 आवणो ना आवणिके मासि त्रिषु तु यौगिके ॥६१६६॥  
 श्रीरिदिरायां [सम्पत्तौ लवङ्गे च स्त्रियाम्मता] ।  
 श्रीकण्ठस्तु शिवे पुसि तथैव कुरुजाङ्गले ॥६१६७॥  
 श्रीगर्भस्तु श्रियो गर्भे खड्गेऽपि परिकीर्तित ।  
 श्रीघन दधनि क्लीब बुद्धे तु श्रीघन पुमान् ॥६१६८॥  
 श्रीपर्ण अग्निमथेऽपि कमलेऽपि नपुसकम् ।  
 श्रीपर्णी तु स्त्रियां वृक्षे काष्मर्ये कदफलेऽपि च ॥६१६९॥

श्रीपुष्प तु श्रिय पुष्पे सितपद्मऽपि कीर्तितम् ।  
 श्रीफल्यामलकीनील्योर्बिंबे तु श्रीफल पुमान् ॥६१७॥  
 श्रीमास्तु पुसि गोविन्दे कुबेरगृहकेतुषु ।  
 इटचरारयबलीवर्दे कदम्बतिलकारययो ॥६११॥  
 वृक्षयोगुग्गुलौ द्वे तु शुके लक्ष्मीवति त्रिषु ।  
 श्रीवत्स श्रीपतौ तस्य लाञ्छनेऽपि पुमान्त ॥६१२॥  
 श्रीव साङ्गो वासुदेवे वृके त्वेष द्वयोर्मत ।  
 श्रीवास श्रीपिष्टनाम्नि निर्यासे केशवेऽपि च ॥६१३॥  
 श्रीहृदस्तु प्रपाया च पुँल्लिङ्गाऽपि श्रियो हृदे ।  
 श्रुत नपुसक शास्त्रे श्रवणारये च कर्मणि ॥६१४॥  
 आकर्णितेऽत्यवधृतेऽपि श्रुत वायवन्मतम् ।  
 श्रुतकर्मा यौगिकेऽपि पुमास्तु स्याच्छनैश्चरे ॥६१५॥  
 श्रुतिस्तु वेदे श्रवणक्रियाया च श्रोत्र एव च ।  
 गीतिधर्मविशेषे च शब्दे चाप्यभिप्रायके ॥६१६॥  
 श्रूष बले सुखे श्रवा शास्त्रमित्कासमदयो ।  
 श्रेणि पङ्क्तौ च धारायामष्टादशगणान्तरे ॥६१७॥  
 अक्ली समानजातीयशिल्पिना सहतावपि ।  
 श्रेय सामातरे क्लीब होइये मानुकोद्भवे ॥६१८॥  
 मोक्षे धर्मे शुभेऽथ त्रिस्तयतेऽतिप्रशस्यके ।  
 स्वर्थे नपो श्रेयसीति स्त्रिया तु श्रेयसी तथा ॥६१९॥  
 पाठाया हस्तिपिप्पयां हरीतक्यां च कीर्तिता ।  
 श्रेष्ठ ताम्र मत क्लीब स्या प्रशस्यतमे त्रिषु ॥६१८॥  
 श्रोणि कट्यामुपस्थे च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्तिता ।  
 श्रोत्रकान्ता वृद्धिसङ्गमेव यौगिकेऽपि च ॥६१९॥  
 श्लक्ष्ण तु मसृणेऽल्पेऽपि सुन्दरेऽप्यभिधेयवत् ।  
 श्लिङ्गुर्नना विषादे ना ज्योतिषेऽपि मृगास्थनि ॥६१८२॥  
 अथ श्लेष्मघना भल्ल्यां केतव्यां च स्त्रियां मता ।  
 पिण्यामल्ल्यो स्त्रियां श्लेष्मघ्नी त्रिस्तु श्लेष्महतरि ॥६१८३॥



श्लेष्मा कफे चर्मणश्च विकारे दृढकाङ्क्षये ।  
 रथस्य शीघ्रबहनसाधने चापि वस्तुनि ॥६१८४॥  
 गोधूमे श्लेष्मलस्त्रिस्तु श्लेष्मे तच्छ्लेष्मकारिणो ।  
 श्लोको यशसि पद्ये च तथा वाचि पुमान्मत ॥६१८५॥  
 इन्द्रा गोक्षुराऽभिल्यस्तम्बे यत्रातरेऽपि च ।  
 परिखाया बहिभूमौ राज्ञा दत्तातरे शुनाम् ॥६१८६॥  
 श्वपचोऽनयपूर्वायां किरात्या निष्यत सुते ।  
 विप्राचण्डालज च द्वे त्रि शुन पत्तरि स्मृत ॥६१८७॥  
 श्वपाकोऽम्बष्ठतो विप्रद्या क्षत्तुश्चोग्रस्त्रिया सुते ।  
 उग्रात्क्षत्रस्त्रिया चापि शुन पाके तु ना मत ॥६१८८॥  
 श्वयो बले गदे शोषे पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 श्वयी त्रि श्वयथौ चद्रे चापि पुलिङ्ग इष्यते ॥६१८९॥  
 श्ववृत्तिस्तु शुना वृत्तौ सेवाया च प्रकीर्त्तिता ।  
 श्वशुरो जनके पत्युर्जायायाश्च पुमान्मत ॥६१९०॥  
 स्त्रियां तु श्वशुरा ब्राह्मणामिय सम्परिकीर्त्तिता ।  
 श्वशुर्यो देवरे चद्रे ना द्वयो श्यालके मत ॥६१९१॥  
 इन्द्रश्च श्वशुरपत्यां च पितृष्वसरि च स्त्रियाम् ।  
 श्वसन क्लीं मत श्वासे ना वायौ मदनद्भुमे ॥६१९२॥  
 श्वात्र नपुसक क्षिप्त्रे धनेऽपि परिकीर्त्तितम् ।  
 श्वाल स्यादाशुगत्या ना कुक्कुरे तु द्वयोर्मत ॥६१९३॥  
 श्वेतस्तु ऋषिभेदेऽपि शुक्लवर्णे पुमान्मत ।  
 कुलशैलान्तरे मेरोरुत्तराब्जिलपर्वतात् ॥६१९४॥  
 उत्तरे च त्रिषु श्वेत शुक्लवर्णाविते मत ।  
 क्लीब तु दक्षिण रजतेऽप्यथ श्वेता सुराऽतरे ॥६१९५॥  
 पैष्टिकीसङ्गके स्त्री स्याल्लतान्तरनदीभिदो ।  
 भवेत्सुगन्धौ तुलसीसङ्गके च कठिञ्जरे ॥६१९६॥  
 सितशेफालिकायां तु स्याच्छ्वेतसुरसा स्त्रियाम् ॥६१९६॥

ष

षट्क षण्णां गणे त्रि स्याद्विशेषात्कामरोषयो ॥६१९॥  
 मदलोभमुदा मानस्य च सङ्गे पुमान्त ॥  
 षडस्त्रा तु स्त्रियामेषा स्याच्छागलकपादपे ॥६१९८॥  
 प्रसिद्धे चापि शार्ङ्गाष्ठादासाग्रभृतिभि पदै ।  
 वनस्पत्यन्तरे त्रिस्तु षट्कोणे पारकीर्त्तिता ॥६१९९॥  
 षडग्रन्था पिप्पलीमूले वचाशठ्योरपि स्त्रियाम् ।  
 षण्ड स्यादिटचरे षण्डे मूर्ध योष्मादिक पुमान् ॥६२॥  
 एष वर्षवरे नीलवृषोऽसर्गे च कीर्त्तित ।  
 षण्डोऽस्त्री वृक्षपद्मादिद्वन्द्वे पुंसि तु गोपतौ ॥६२ १॥  
 षण्डाली स्त्री सरागाया तैलमाने सरस्यपि ।  
 षष्टिहायन-श-दोऽय गजे स्याद्द्वे स्त्रिया पुन ॥६२ २॥  
 समाहारद्विगौ षष्टिहायनी भगव-पुन ।  
 बहुव्रीहौ हि तत्रापि स्त्रियां ङीप् षष्टिहायनी ॥६२ ३॥  
 वयस्येवात्र ङीबुक्त शालादौ षष्टिहायना ।  
 षष्ठ तु पूरणे षण्णां त्रि षष्ठी तु स्त्रियां तिथौ ॥६२ ४॥  
 स्कान्धा षष्ठविभक्तौ च पावत्याश्च प्रकीर्त्तिता ।  
 षाडवो गीतिभेदेऽम्लमधुरोमिश्रिते रसे ॥६२ ५॥  
 षाडवस्त्वम्लमधुररसयुक्ते त्रिषु स्मृत ।  
 षाण्मासी सप्तमे मासि कत्तव्ये श्राद्ध इष्यते ॥६२ ६॥  
 षण्मासीयोगिनि त्वेष वा-यवत्परिकीर्त्तित ।  
 षाष्टिक व्रतभेदे षष्ठकालांशे प्रवर्त्तने ॥६२ ॥  
 मेघवत्तु क्रतुमति षष्ठाहभववस्तुनि ।  
 पिङ्गो वेश्यापतौ पुंसि वेश्याचार्येऽपि कीर्त्तित ॥६२ ८॥  
 पलमाने षोडशिका न नाथाऽस्त्री पलद्वये ।  
 षड्भूमश्च द्रे जले रश्मौ तन्तौ स्यामङ्गलेऽपि च ॥६२ ९॥

## स

सो विष्णावीश्वरे सा तु लक्ष्म्या गौर्यामपीष्यते ।  
 सयद्युद्धेऽग्निचित्याया द्वादशस्विष्टकासु च ॥६२१॥  
 सयद्वरो नृपे पुसि क्लीब सयद्वर रणे ।  
 अथ सयद्वरस्त्रि स्यादनूपेऽप्यभयप्रदे ॥६२११॥  
 सयाव समिश्रणे च भक्ष्यभदेऽस्य लक्षणम् ।  
 समिता वम्लदुग्धार्द्रा पक्वा खण्डे घृतोत्तरे ॥६२१२॥  
 सयावोऽय युतश्चूर्णे खण्डैलामरिचाद्रकै ।  
 सरम्भ पुनराटोपे क्रोधेऽपि परिकीर्त्तित ॥६२१३॥  
 सरोधस्तु क्षये पुसि तथा सरोधने मत ।  
 सलयस्तु पुमान्स्वापे तथैकीभाव इष्यते ॥६२१४॥  
 सवत्सरोऽब्दभेदे चाऽदमात्रेऽपि कीर्त्तित ।  
 क्लीब सवनन याच्यासभक्त्योश्च वशीकृतौ ॥६२१५॥  
 सवत्तस्त्वृषिभेदे स्याद्वत्सरे च जगत्क्षये ।  
 सवत्तनाया सवृत्तावपि सवत्र पुस्ययम् ॥६२१६॥  
 सवत्तको हलिहले तथैव वडवानले ।  
 सवर्त्तिका नवदले नलि-यावेष्टितेऽपि च ॥६२१७॥  
 पुमान् सवसथ प्रोक्तो ग्रामे सवसनेऽपि च ।  
 सवालश्च द्रकिरणे गजपुच्छस्य मूलत ॥६२१८॥  
 चतुर्धा च विभक्तस्य द्वितीयांशे प्रकीर्त्तित ।  
 सवास सहवासे च राजधान्यां तथा पुमान् ॥६२१९॥  
 स्त्रिया तु मुखशालायां न तु ना सहवासने ।  
 सवासन कर्मशाला न तु ना सहवासने ॥६२२॥  
 सविचिस्तु स्त्रियां ज्ञाने सवादेऽपि प्रकीर्त्तिता ।  
 सविद्युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥६२२१॥  
 सभाषणे क्रियाकारे ज्ञानतोषणयोरपि ।  
 सवृत क्ली सवरणे वर्णधर्मान्तरेऽपि च ॥६२२२॥

स्या महाप्रलये तद्व-संहारी त्वघशालिका ।  
 सहित त्रिषु सश्लिष्ट सहिता तु स्त्रियामियम् ॥६२३॥  
 शास्त्रग्र था-तरे वेदभागेऽपि क्वचिदि यते ।  
 अतीव सन्निकर्षे च वर्णाना क्ली तु सामनि ॥६२३८॥  
 स्वादिष्ठावर्गगीते स्यात्षष्ठे च नवमेऽपि च ।  
 सहति प्रलयाकषसमाप्तिषु भवोऽत्रयाम् ॥६२३९॥  
 सक्थ्युरा शकटाङ्गणे च कस्मिंश्चि-स्यान्नपुसकम् ।  
 सखा सहायसुहृदोस्त्रि स्त्रीत्वेऽत्र सखीति च ॥६२४॥  
 भाषाप्रयोगे रूप स्याद्भूधौ तु स्यात्सखा पुमान् ।  
 सगर सविषे त्रि क्ली योमिन् ना तु नृपा-तरे ॥६४१॥  
 सङ्करो गिनचटत्कारे समाज यवपुञ्जिते ।  
 सङ्कीर्णे च त्रिषु स्त्री तु क-याभदे नृदूषिते ॥६२४२॥  
 विवाहायोग्यक यानामेकत्र परिकीर्त्तिता ।  
 नवदूषितक-याया सङ्कारी पुनरु-यते ॥६२४३॥  
 पुमा-सङ्कसुक श्राद्धाज्जना सङ्कीर्णे तु स त्रिषु ।  
 तथाऽपवादशीले च यक्ता-यक्तऽपि चारणे ॥६२४४॥  
 द्वयो सङ्कुचितो हसेऽथाल्पीभूते त्रिषु स्मृत ।  
 सङ्क्रमस् वस्त्रियां दुर्गसञ्चरेऽप्येकमाश्रवम् ॥६२४५॥  
 उज्जित्वान्याश्रयप्राप्तौ तथैव प्र-ययेऽपि च ।  
 सङ्क्षयमस्त्री रणे स्त्री तु सङ्क्षया स्याद्गणने तथा ॥६२४६॥  
 एकत्वादौ विचारे च तथैव परिकीर्त्तिता ।  
 सङ्को युद्धे सङ्गमेऽथ लवणे सै-धवे नपि ॥६२४॥  
 सङ्गतो दिवसस्य स्या-चतुर्भागे द्वितीयके ।  
 पञ्चरात्रपय पानव्रतेऽथ मिलिते त्रिषु ॥६२४८॥  
 सङ्गमो मेलके नस्त्री सङ्गमस्तु व्रता-तरे ।  
 पञ्चरात्र पय पानात्मके पुसि प्रकीर्त्तिता ॥६२४९॥  
 सङ्करो ना प्रतिज्ञायां क्रियाकारेऽपि चापदि ।  
 युद्धे विषे च क्लीव तु सङ्गर स्या-छमीफले ॥६२५॥

सङ्ग्रहस्तु महोद्योगे स्वीकारे च समुद्भूये ।  
 स्त्रीसङ्ग्रहेऽपि सङ्केपे पुष्टिङ्ग परिकीर्तित ॥६२५१॥  
 सङ्ग्रहो मुष्टिमात्रेऽपि मुष्टौ च फलकादिन ।  
 सङ्गवादी द्वयोर्मर्त्ये यौगिके तु यथायथम् ॥६२५२॥  
 सङ्घातस्तु मत पुंसि समूहे हननेऽस्थनि ।  
 कायजातिविशेषे च तथैव नरकातरे ॥६२५३॥  
 सङ्घातिकारणा वेशा स्त्रीलिङ्ग परिकीर्तिता ।  
 त्रिस्तु सङ्घातयितरि सहर्त्यपि चेष्ट्यते ॥६२५४॥  
 सज स्यात्त्रिषु सङ्गद्ध सतो जातेऽपि कीर्तितम् ।  
 सजनस्तु पुमान्साधौ कुलीने भेद्यवद्भवेत् ॥६२५५॥  
 स्त्रियां तु सज्जना हस्तिकपनायामथ स्मृतम् ।  
 नपुसक सजन तु तद्भट्ट चोपरक्षणे ॥६२५६॥  
 सञ्चार सङ्क्रमे सङ्गे चारे सस्थाचरेऽपि य ।  
 गत्वा गत्वा पर जिज्ञासने तत्र प्रकीर्तित ॥६२५७॥  
 त्रिषु सञ्चारितर्यत्र सञ्चारक इति स्मृत ।  
 सञ्चारिका तु भूपस्य कथाया द्रविणादिषु ॥६२५८॥  
 नियुक्तायां महाकार्ये चास्यां दूत्या तथा स्त्रियाम् ।  
 सञ्जयो धृतराष्ट्रस्य सचिवे पुंसि कीर्तित ॥६२५९॥  
 क्लीब तु सामभेदे स्यादिद्र नरः कचि स्थिते ।  
 विश्वाधनानीयारभ्य तथा ह्रीनमस्त्रातरे ॥६२६०॥  
 सज्ञाऽभिधाने सङ्केते हस्ताद्यैरथस्रचने ।  
 सूर्यभार्यान्तरे बुद्धौ चेतनायां च तत्र तु ॥६२६१॥  
 उपांशु यच्च क्रियते स्वेष्वनीकेषु विग्रहे ।  
 सटा जटायां स्त्रीवेऽथ नना सिंहस्य केसरे ॥६२६२॥  
 सङ्करे तु भटीविग्रसम्भवे स्यात्सटो द्वयो ।  
 सत्साधौ विद्यमाने च ग्रन्थस्तेऽभ्यर्हिते तथा ॥६२६३॥  
 सत्ये बुधे शोभने च भेद्यवत्परिकीर्तित ।  
 सती पतिव्रतोमाश्रीतुवरीभेषजेषु च ॥६२६४॥

सत्परब्रह्मनक्षत्रजलेषु स्यान्नपुसकम् ।  
 उक्तं शब्देऽपि सच्छब्दस्तस्य लिङ्गं न निश्चितम् ॥६२६५॥  
 सत्तमं स्यात्पूयतमे श्रेष्ठे त्रिष्पतिशोभने ।  
 सत्त्र वनाच्छादनयो सदादाने नपुसकम् ॥६२६६॥  
 द्वादशाहादयज्ञेषु तथैव परिकीर्तितम् ।  
 सत्तव स्वभावसत्तायां द्रव्यऽतः करणं बले ॥६२६७॥  
 पराक्रमे सारयगुणे यवसायाऽऽमभावयो ।  
 माहात्म्ये च मतं क्लीबं पारुषे त्वस्त्रियामिदम् ॥६२६८॥  
 पिशाचादौ तथा प्राणं सत्तव जंतुषु चोच्यते ।  
 सत्यं क्लीबं शपथं तथ्ये त्रिं तु तद्वति कीर्तितम् ॥६२६९॥  
 सत्तया तु सत्यभामारयकृष्णपत्न्या प्रकीर्तिता ।  
 अथ सयवती स्त्री स्याद्देव्यासस्य मातरि ॥६२७०॥  
 ब्राह्मयारयेऽपि तृणस्तम्बे सययुक्ते तु भगवतः ।  
 सत्यङ्गारं पुमांसयाकृतावपि करापणे ॥६२७१॥  
 सदनं तु गृहे तोये सीदयर्थे च कीर्तितम् ।  
 सदो यज्ञमहावेदे हविर्धानद्वयस्य हि ॥६२७२॥  
 पञ्चाङ्गेषु मतं क्लीबं गोष्ठ्यां तु स्त्री नपुसकम् ।  
 द्यावापृथिव्योस्तु क्लीबे द्विवचः सदसी इति ॥६२७३॥  
 सदस्यस्त्रिषु सम्ये च स्याद्यज्ञविधिदर्शिनि ।  
 सदागतिं पुमांस्ये वायौ चापि प्रकीर्तितं ॥६२७४॥  
 सदाफलो नालिकेरे पुमांसचोदुम्बरत्रये ।  
 सत्तव गेहे जले क्लीबं रोदस्यो सत्तनी इति ॥६२७५॥  
 सद्यः पाको मतं स्वप्ने निशाऽत्ययसमुद्भवे ।  
 सध्रिं स्यान्नपि सयोगे ना त्वग्नावनहुष्यपि ॥६२७६॥  
 सनतस्तु सनोतौ च पुमांस्ते च द्वयोर्मतः ।  
 सनातनो ना विष्णौ च विरिञ्चे त्रिस्तु शाश्वते ॥६२७७॥  
 सनामिस्तु सपिण्डे च सोदर्ये च द्वयोर्मतः ।  
 सनिर्नदीतटे दाने नृस्त्रियो पथियाश्च यो ॥६२७८॥

स ततिस्त्वववाये स्यापरिपर्येऽपि पुत्रयो ।  
 स तानस्तु कुले कपटृष्वभेद तथैव च ॥६२७९॥  
 परम्परायां चापत्ये पुंलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 सन्दशो लोहकारोपकरणा तर इष्यते ॥६२८॥  
 सन्दशनेऽभिचारात्मक्याहक वन्तरेऽपि च ।  
 स दष्टो यमकस्य त्रिर्भेद स दशनस्य च ॥६२८१॥  
 कर्मभूतेऽथ सन्दष्ट पुंसि समिश्ररूपके ।  
 गायकानां क ठदोषविशेषे परिकीर्तित ॥६२८२॥  
 स धा वधौ प्रतिज्ञाया स ध्यास धानकर्मणो ।  
 स धानमधिचाप स्याद्वाणस्यारोपणे तथा ॥६२८३॥  
 काञ्चकादेरभिषवे काञ्चिके श्लेषणेऽप्यथ ।  
 स धानी रूप्यशालायां स्त्री वार्त्ताव्य तरेऽपि च ॥६२८४॥  
 गिरिप्रयारये त्रिषु तु सधिसाधन इष्यते ।  
 सधिस्तु रभ्रे नाट्याङ्गे श्लेषे मङ्गसुरङ्गयो ॥६२८५॥  
 अत्यस्तोमेऽतिरात्रस्य वर्णानां योजनेऽपि च ।  
 सधियकालदुग्धा गौवृषाक्रांताऽपि गौर्मता ॥६२८६॥  
 द्विकालदोह्या स वेककाल या गौश्च दुह्यते ।  
 सधिला तु सुरुङ्गायां नदीमन्त्रियोरपि ॥६२८७॥  
 सन्नम पेऽप्रसन्न त्रिष्वनुदात्तविशीर्णयो ।  
 गते तथेष्यते क्ली तु सन सत्तौ प्रकीर्तितम् ॥६२८८॥  
 सन्नाहो युद्धयोग्येभे सन्नद्धये तु स त्रिषु ।  
 सप्तकस्तु पुमासङ्गे सप्ताना क्ली तु सप्तकम् ॥६२८९॥  
 मृगयाक्षादिषु स्त्री तु सप्तकीष्कश्चिदामनि ।  
 सप्तम त्रिषु सप्तानां पूरणे सप्तमी पुन ॥६२९०॥  
 स्यासप्तमविभक्तौ स्त्री दुर्गादव्यास्तिथावपि ।  
 सप्तर्षिरशौ ना सप्तषयश्चित्रशिखण्डिषु ॥६२९१॥  
 सप्तला नवमायां च सातलागुञ्जयो स्त्रियाम् ।  
 सभ्य सामाजिके साधौ सभासाधौ तथा त्रिषु ॥६२९२॥

ना त्वग्निभेदे यागस्थे पूव आहवनीयत ।  
 त्रि समङ्गो मङ्गयुते प्राणिद्यते तु पुस्ययम ॥६२९३॥  
 समङ्गा तु नमस्कारीस्तम्बे स्त्री परिकीर्त्तिता ।  
 समङ्गस क्ली याये त्रि रम्यस्तेऽप्युचितेऽपि च ॥६२९४॥  
 अथ ब्रीह्यादिधानुष्कस्थितिभेदेषु प चसु ।  
 एकस्मि स्या समपद योगार्थे तु यथायथम् ॥६२९५॥  
 समयोऽस्त्री क्रियाकारे भाषानिर्देशसम्पदि ।  
 सङ्कताचारसिद्धातकालेषु शपथऽप च ॥६२९६॥  
 सङ्गमे त्वेष समय पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 समथस्तु समानार्थे सम्बद्धार्ये हितेऽपि च ॥६२९७॥  
 न्याय्य शक्ते तथा भेद्यलिङ्गोऽय परिकीर्त्तित ।  
 समथन स्थापनायामाक्षिप्तस्य पुनभवेत् ॥६२९८॥  
 स्यात्सम्प्रधारणायां च समर्थीकरणेऽपि च ।  
 समर्याद समीपेऽपि मर्यादासहिते त्रिषु ॥६२९९॥  
 समवर्त्ती यमे पुसि योगार्थे तु यथायथम् ।  
 समाघातो वधे युद्ध योगार्थे तु यथायथम् ॥६३०॥  
 समाधिस्तु पुमाध्याने नीवाके च समथने ।  
 प्राणिद्यते प्रतिज्ञायां कायालङ्कारणातरे ॥६३१॥  
 तुल्यत्वे भेद्यवत्तु स्यात्समानाधिसमाविष्टे ।  
 समानस्तु प्रमान्वायुभेदे देहांतरस्थिते ॥६३२॥  
 त्रिस्तु साध्वेकतु येषु मानेन सहितेऽपि च ।  
 समापन समाप्तौ न तु ना घातेऽवसायने ॥६३३॥  
 समारम्भ सम्यगारम्भणे चाचार दृष्यते ।  
 समाहारस्तु सक्षेपेऽप्येकत्र करणे च ना ॥६३४॥  
 समानाहारकादौ तु लिङ्गाद्य स्याद्यथायथम् ।  
 समाहित मते सम्यगाहिते वायवत्तथा ॥६३५॥  
 समाधिस्थे परिहृते प्रतिज्ञातेऽपि कीर्त्तितम् ।  
 समाङ्गयो रणे प्राणिद्यूते नाम्न्यथ यौगिके ॥६३६॥



समिति परिषस्थाने सङ्गे ससद्युधि स्त्रियाम् ।  
 समिधस्तु समूहेऽग्नौ युद्धगोधूमपिष्टयो ॥६३॥  
 समीकस्तु समुद्रेऽपि मिथुनेऽपि पुमान्मत ।  
 समीरण फणिर्जे च वायावाहरणे च ना ॥६३॥ ८॥  
 समुद्भयस्तूष्णतौ च विरोधेऽपि पुमान्मत ।  
 समूहे स्या समुदय समरे च समुद्रमे ॥६३॥ ९॥  
 समुद्र सम्पुटे पुंस स्यामुद्रसहिते त्रिषु ।  
 स्यात्समुद्ररण क्लीब वान्ताऽतेऽप्युन्नयेऽपि च ॥६३॥ १॥  
 समुद्रस्तु पुमान्धौ छन्दस्युत्कृतिसङ्गके ।  
 आकाशे च तथा सरयाविशेषेऽपि त्रयोदश ॥६३॥ ११॥  
 तेषां ये शतसरयाता क्रमादशगुणोत्तराः ।  
 त्रिस्तु मुद्राऽवितेऽथ क्ली समुद्र देहलक्षणे ॥६३॥ १२॥  
 समुद्रनवनीत तु च द्रे स्यादमृतेऽपि च ।  
 समुद्रान्ता तु दुःस्पर्शे कार्पासीस्पृक्कयोरपि ॥६३॥ १३॥  
 समुन्नद्धो गर्विते च पण्डितम्म यके त्रिषु ।  
 समुन्नय समुत्क्षेपे तथा समुदये मत ॥६३॥ १४॥  
 समूह पुञ्जिते भुग्ने सद्योजातेऽनुपप्लुते ।  
 समूहन तु क्लीब स्यात्सहतीकरणे तथा ॥६३॥ १५॥  
 शपस्य योजने मौर्ष्या स्त्रिया तु स्यात्समूहनी ।  
 सम्माजयामवा यत्तसमूहार्थे समूहना ॥६३॥ १६॥  
 सम्पद्भूतौ गुणोर्कर्षे तथा स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।  
 सम्पुटस्तु समुद्रे च म ब्राक्षरग्रथना तरे ॥६३॥ १७॥  
 कलिकाया कुरवके पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 सम्प्रयोगस्तु सुरते संस्तवेऽप्यभिधीयते ॥६३॥ १८॥  
 सम्प्रेषणी द्वादशाहश्राद्धे स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।  
 क्ली सम्यक प्रेषण तत्रयुक्तौ सम्प्रेषणा न ना ॥६३॥ १९॥  
 सम्बाधस्तु भगे स्त्रीणा मेढ्रे कारागृहेऽपि ना ।  
 स्यात्सङ्कटे तु सम्बाधो भेद्यवत्परिकीर्त्तितः ॥६३॥ २०॥

सम्भव कारणोत्पत्त्यो सङ्कते सङ्गमेऽपि च ।  
 मात्पर्ये मापयत्यर्थे तौ चाथा सद्भिरीरितौ ॥६३२१॥  
 अकर्मको मातिधातु ग्रस्थादीना घटादिषु ।  
 प्रवत्तनेऽन्तभावेऽसौ सम्भूत इति सूत्रग ॥६३२२॥  
 सकर्मको मापयति स्थायाद्याधारवस्तु ना ।  
 ग्रहणेऽन्तर्भावनायामाढकादे प्रवत्तने ॥६३२३॥  
 स चाय सम्भवत्यादिसूत्रे सूत्रकृतादित ।  
 तत्र ह्याकृष्यते कर्म तद्वरयादिसूत्रत ॥६३२४॥  
 असम्भवो हेममयजतोरेषामसम्भवे ।  
 इत्यादिषु प्रयोगेषु भूयिष्ठेषु कृतात्मभि ॥६३२५॥  
 अथ सम्भवशब्दस्य चित्तनीयो विचक्षणै ।  
 सम्भावनाऽऽसादने च सम्माने च न ना मता ॥६३२६॥  
 पात्रस्थातर्मापने च तत्र युक्तौ च कीर्त्तिता ।  
 सम्भेदो मिश्रणे चापि भेदेऽपि च पुमान्त ॥६३२७॥  
 सम्भोगो ना रते भोगे हस्तिहस्ते तथास्य च ।  
 तृतीयेऽंशेऽङ्गुलेरूर्ध्वं विभक्तस्य च सप्तधा ॥६३२८॥  
 सम्भ्रमोऽत्यादरे यग्रत्वे सवेगे च साध्वसे ।  
 स्यात्सम्मति स्त्री वाञ्छायामनुज्ञापूजयोरपि ॥६३२९॥  
 सम्मर्दो मदने पुसि तथा युद्धे प्रकीर्त्तित ।  
 सम्मशस्तु पुमास्तर्के तथा सम्मर्शने मत ॥६३३॥  
 सम्माजनी तु शोधयां स्त्रीलङ्गे परिकीर्त्तिता ।  
 सम्माजना सम्मृष्टौ सशोधनायामपीष्यते ॥६३३१॥  
 सम्राट् तु पुसि विष्ण्वर्कद्वृताशद्रेषु राज्ञि च ।  
 येनेष्ट राजक्षयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ॥६३३२॥  
 शास्तिरश्चाज्ञया राज्ञस्तत्र सम्राट् पुन स्त्रियाम् ।  
 षड्विंशत्यक्षरेऽतस्या छन्दोभेदे प्रकीर्त्तिता ॥६३३३॥  
 सरो वायौ पुमान्क्ली तु सर क्षीरे प्रकीर्त्तितम् ।  
 निषादशुनकीजे द्वे त्रिस्थिरप्रतियोगिनि ॥६३३४॥

सरकोऽङ्गी मणौ शीथुपाने चषकशीथुनो ।  
 मेघवत्सरक साधुसत्तर्षेण प्रकीर्त्तित ॥६३३५॥  
 सरघा तु शुनीमेदे देवानां परिकीर्त्तिता ।  
 मधुनिर्माणशीले च स्त्रिया स्यामक्षिका तरे ॥६३३६॥  
 सरटी नीलिकालोद्दे द्वयोस्तु कृकलासके ।  
 सरणिस्तु स्त्रियाम्मार्गे श्रेणौ च परिकीर्त्तिता ॥६३३ ॥  
 सरण्डस्तृणसङ्घाते कृमिमेदे तु स द्वयो ।  
 सरण्युर्नाऽनिले मेघे सूर्यपत्न्यां स्त्रियामियम् ॥६३३८॥  
 सरधि स्त्री सिरापङ्क्तिस्तङ्घाताऽभवसु ना रवौ ।  
 सरल पूतिकाष्ठारयद्रुमे पुसि प्रकीर्त्तित ॥६३३९॥  
 सरलस्त्रिर्विदग्धे च ऋजौ च प्रियवादिनि ।  
 सरस्तु सलिले क्लीब तटाके सरसी नना ॥६३४ ॥  
 महासरसु सरसी दाक्षिणाया प्रयु जते ।  
 क्लीब सरस्वदाकाशे सरस्माक्षाऽम्बुधौ नदे ॥६३४१॥  
 सरस्वती नदीमात्रे बाग्देयां च नदीभिदि ।  
 गङ्गायां गवि मेदिनां स्त्रीरत्ने च वचस्यपि ॥६३४२॥  
 तथा वृणलतास्तम्बे मत्स्याक्षीनाम्नि कीर्त्तिता ।  
 ब्राह्मीति विश्रतारयेऽथ सरस्वान रसिकेऽपि च ॥६३४३॥  
 सरोयुक्ते तथा मेघलिङ्गोऽय परिकीर्त्तित ।  
 सरिभद्या तथा छदोमेदे द्वासप्ततिस्वरे ॥६३४४॥  
 सरीसृपस्तु सर्पे द्वे तथैरोदरसर्पिषु ।  
 सर्गोऽध्याये स्वभावे च निर्माणे च समुज्जने ॥६३४५॥  
 उत्साहे निश्चये चापि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 सजक त्वतिबाले स्याद्दग्धि [सष्टरि मेघवत्] ॥६३४६॥  
 सजूर्वनस्पतौ विद्युत्यपि स्त्री वणिजि द्वयो ।  
 सर्पदष्ट्री वृश्चिकालयोषध्यां योगे यथायथम् ॥६३४ ॥  
 सर्पराजो वासुकौ ना द्व तु राजिलभोगिनाम् ।  
 त्रयोदशानामेकत्र सर्पराज प्रकीर्त्तित ॥६३४८॥

स्यात्सपलोचना रास्नासङ्गके भेषजे स्त्रियाम् ।  
 सपिजले घृते चैव क्लीबलिङ्ग प्रकीर्तितम् ॥६३४९॥  
 सर्वगन्ध तु तक्कोलागरुकपूरसयुता ।  
 एलालग्नवक्पत्रनागकेसरसिल्हका ॥६३५०॥  
 श्रद्धिसङ्गकभैषज्यभेदे सवजनप्रिया ।  
 सर्वज्ञो ना शिवे बुद्धे त्रि तु स्यात्सर्ववेदिनि ॥६३५१॥  
 अथ ना सर्वतोभद्रो गृहविच्छेदका तरे ।  
 निम्बवृक्षे च विषमका यालङ्कारभेदके ॥६३५२॥  
 स्त्रियां तु सवतोभद्रा काश्मर्याभिरयपादपे ।  
 यत्तु सर्वप्रकारेण भद्रं तत्र त्रिषु स्मृतम् ॥६३५३॥  
 सर्वतोमुखमप्सु क्लीं ना ब्रह्मक्रतुभदयो ।  
 सवभक्षा वजाया स्याद्यौगिके तु यथायथम् ॥६३५४॥  
 स्त्री सवमङ्गला शैलतनयायां च यौगिके ।  
 सर्वसम्भाह इयुक्त सन्नद्धौ सर्ववर्मिणाम् ॥६३५५॥  
 सर्वात्मनाभ्यय शब्द पुलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 सर्वौघ सर्वसम्भाहे राज्ञा पुंसि प्रकीर्तित ॥६३५६॥  
 मधुमेदे तु सर्वौघ यौगिके तु यथायथम् ।  
 सर्षपस्वोषधीभेदे तु दमारये पुमान्त ॥६३५७॥  
 सषपी फलिनीवृक्षे स्त्रियां याभ्य तरेऽपि च ।  
 सलो भृङ्गिरिटे पुंसि क्लीं तु पत्राङ्गभेषजे ॥६३५८॥  
 सलज्ज सत्रपे त्रि क्लीं स्तम्भे दमनकाह्वये ।  
 सलम्बस्त्वृषिभेदे ना तत्तुवाये पुनर्द्वयो ॥६३५९॥  
 सलिलं तु जले छन्दोज्ज्वले प्रकृतिनामानि ।  
 यत्र चत्वार्यशीतिश्च वर्णा स्युर्वाततोऽधिका ॥६३६०॥  
 सवा स्त्री क्षत्रियाभेदे देशभेदे नृ भूमि ते ।  
 सवस्तु स्रुतौ स्रुत्यायां सुतौ यागे च वर्त्तने ॥६३६१॥  
 सवन कालभेदेऽपि स्यात्प्रातः सवनादिषु ।  
 यज्ञस्य सोमाभिषवे स्नाने काण्डे नर्पुसकम् ॥६३६२॥

यागे तु पुंसि सवनो वनेन सहिते त्रिषु ।  
 सवर्णो ब्राह्मणाजाते क्षत्रियाया विवाहत् ॥६३६३॥  
 त्रिस्तु यवर्णमात्रे च मर्ये चाप्येकवर्णके ।  
 सय वामे दक्षिणे त्रि सोतयसवितययो ॥६३६४॥  
 तथा प्रेरयितये च मृतके वनले पुमान् ।  
 सस्य धाये गुणे धायस्तम्बे वृक्षादिन फले ॥६३६५॥  
 सस्यक सस्यसम्पन्नव्रीहिसस्यादिकेषु च ।  
 तथैव गुणसम्पन्ने भेद्यलिङ्गमथैष ना ॥६३६६॥  
 स्यान्मारिकेलसस्याममणौ खड्गे च सस्यक ।  
 स्त्रीपुसयो सहचरी पीतक्षिण्ड्यारयक्षाटके ॥६३६७॥  
 अथो सहचरश्चैष सहचारिणि वा यवत् ।  
 सहजोऽस्त्री स्वभावे त्र सहोत्पन्नसगर्भ्ययो ॥६३६८॥  
 सहदेवा स्त्रियां सवे दण्डोपल इति श्रुते ।  
 युधिष्ठिरकनिष्ठे तु नायोगार्थे यथायथम् ॥६३६९॥  
 सहो जले बले च क्ली हेमते तु पुमानयम् ।  
 मार्गशीर्षे तु मासि स्यापुनपुसकयोरयम् ॥६३७०॥  
 सहसानो मयूरे द्वे यजमाने तु स त्रिषु ।  
 सहसानुर्मयूरे च सर्पे चापि द्वयोर्मत ॥६३७१॥  
 सहस्रमस्त्री बहुनि शताना दशकेऽपि च ।  
 सहस्रपत्र कमले क्लीव स्याद्यौगिके त्रिषु ॥६३७२॥  
 सहस्रवीर्या स्त्रीलिङ्गे स्याद्दूर्वाश्वेतदूवयो ।  
 तथोष्णकण्टकायारयशतावर्या प्रकीर्त्तिता ॥६३७३॥  
 सहस्रवेधी पुस्यम्लवेतसे क्ली तु द्विजुनि ।  
 सहा तु पुष्पस्तम्बेषु त्रिषु स्त्री तरणौ तथा ॥६३७४॥  
 नीलक्षिण्ड्या पीतक्षिण्ड्यामित्यप्यतिबलाह्वये ।  
 बलासङ्गे च मैषयस्तम्बयोरोषधावपि ॥६३७५॥  
 मुद्गपर्ण्यभिधानायां भेद्यलिङ्ग तु सोहरि ।  
 सहायस्तु द्वयो सरयौ सेवके तु त्रिषु स्मृत ॥६३७६॥

सहारस्तु पुमायुद्वेऽधकारेऽपि प्रकीर्तित ।  
 चिद्रूपे स्या सहृदयो हृदयेन युते । त्रिषु ॥६३७॥  
 सहोक्ति स्यात्स्थलङ्कारभेदेऽपि सहभाषणे ।  
 सहोरस्तु पुमाविष्णौ पवतेऽपि प्रकीर्तित ॥६३८॥  
 सह्य पर्वतभेदे ना पश्चिमाणवपाश्वगे ।  
 सोढये त्रिषु सह्य स्यादारोग्ये तु नपुसकम् ॥६३७९॥  
 सा लक्ष्म्यां सवनाम्नश्च प्रथमैकस्त्रिया तद ।  
 सांयात्रिक प्रभाते क्ली पुमापोतवणिज्ययम् ॥६३८॥  
 सांवसरो वायवत्तु त्रिलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 सवत्सरभवादौ च विज्ञेय फलपवणो ॥६३८१॥  
 विद्याज्ज्यौतिषिके चैव कृष्णशालौ पुन पुमान् ।  
 स्त्री तु सावत्सरी श्राद्धे कत्त ये वत्सरात्यये ॥६३८२॥  
 स्यासावत्सरक वषदेयर्णादिषु वायवत् ।  
 सांवसरिकव योतिविज्ञ तु स्मर्यते नरि ॥६३८३॥  
 अनिश्चिते साशयिकस्तथा शङ्कावति त्रिषु ।  
 साय ज्या ययुते नैकादशाहश्राद्धमिद्यपि ॥६३८४॥  
 सात सुखे क्ली क्षीणे त्रि साती स्यर्थेऽत्र कीर्तिता ।  
 तीव्रायां वेदनायां स्त्री सातिर्दानावसानयो ॥६३८५॥  
 सावतो बलदेवे ना द्वे वपत्ये च सवत ।  
 स्याक्षत्रपूर्ववैश्याजे व्रात्याच हरिपूजके ॥६३८६॥  
 साविक सन्ननिष्ठत्ते त्रिष्वथो साविकी स्त्रियाम् ।  
 नाथ्यस्थकैशिकीत्यादिवृत्तीनां क्वचिदिष्यते ॥६३८७॥  
 सात्मा ना प्रकृतावात्मसहिते तु त्रिषु स्मृत ।  
 अत्यन्ताभ्यस्तताहेतो प्रकृतित्व गतेऽपि च ॥६३८८॥  
 सादी स्रुते तथैवायमश्वारोहे पुमान्त ।  
 साधन क्ली धने शेषे सिद्धावनुगतौ गतौ ॥६३८९॥  
 मारणे मृतसंस्कारेऽप्युपायेऽप्यर्थदापने ।  
 सेनाङ्गे यातनायाश्च न तु ना साधना मता ॥६३९॥

निवत्तनाया मन्त्रादेश्चाऽभीष्टफलादीकृतौ ।  
 साधारणं तु सामान्ये त्रिषु साधारणीति च ॥६३९१॥  
 साधारणा च स्त्रीत्वे स्यादथ साधारणी स्त्रियाम् ।  
 क्वाटबन्धमोक्षाथकुञ्चिकाया प्रकीर्तिता ॥६३९२॥  
 साधिष्ठ स्यात्साधुतमे तथा भृशतरे त्रिषु ।  
 साधीयास्यात्साधुतरे तथा भृशतरे त्रिषु ॥६३९३॥  
 साधुर्याकृतशब्दे त्रि सज्जनोचित चारुषु ।  
 धर्मशीले सयते च ना तु बाधुषिके मत ॥६३९४॥  
 पतिव्रतायां तु स्त्री वे साध्वीति परिकीर्तिता ।  
 ना तु बार्धुषिके कैश्चित्पठितस्तदसद्यत ॥६३९५॥  
 स्यादौपाधिकशब्दत्वादस्य लिङ्ग विशेषणम् ।  
 साध्यस्त्रि साधनीये ना गणदेवातरेऽशुषु ॥६३९६॥  
 सानसिस्तु ऋणे पुंसि सुवर्णेऽपि नखेऽपि च ।  
 सात्व तु सात्वने क्लीब वाक्ये तु मधुरे त्रिषु ॥६३९७॥  
 सामजो हस्तिनि द्वे स्यात्त्रि तु सामसमुद्भवे ।  
 साम प्रगीतमन्त्रेषु साधुयपि तथा मतम् ॥६३९८॥  
 नात नपुंसक प्रोक्त सान्त्वसामप्रमेदयो ।  
 सामिधेनी तु समिदाधानचि च समिध्यपि ॥६३९९॥  
 त्रि सामुद्रोऽधिसम्बन्धियथ क्ली देहलक्षणे ।  
 साम्परायस्तु सग्रामे विपदुत्तरकालयो ॥६४०॥  
 स्यात्साम्परायिक युद्धे रथे स्यात्साम्परायिक ।  
 सायकस्तु शरे खड्गे वज्रे ना त्रिस्तु मातरि ॥६४१॥  
 सार स्थिरांशे सरणे तरोर्मज्जि धने बले ।  
 व्योम्नि रेतसि ना त्रिस्तूकृष्ट याव्ये च सुन्दरे ॥६४२॥  
 सारी तु भ्रुकुटावेषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्तिता ।  
 सारङ्गश्चातके भृङ्ग कृष्णसारे गजे द्वयो ॥६४३॥  
 पुमांस्तु शबले वर्णे सारङ्गस्त्रिषु तद्वति ।  
 स्त्रीवे तु सारङ्गीत्येतद्रूपं सवत्र कीर्तितम् ॥६४४॥

सारणस्तु शरद्वायौ पुमाश्च वरुणात्मजे ।  
 सारण सारणा चेति नना स्यात्सारिकर्मणि ॥६४ ५॥  
 सारणी तु स्त्रियामेषा ग्रथ पद्यात्मके मता ।  
 सारमेयस्तु शुनके मूषिकाया तथा द्वयो ॥६४ ६॥  
 सारस पुष्करखगे द्व ने दौ क्ली तु वारिजे ।  
 मेखलाया सारसनमुरस्त्राणे तथा नपि ॥६४ ७॥  
 सारस्पती बैवदण्डे ना त्रि सत्रमखातरे ।  
 सरस्वत्याश्च सम्बन्धियय त्रिषु प्रकीर्तित ॥६४ ८॥  
 सारिका काण्डवीणार्या सारकस्त्वभिधेयवत् ।  
 सत्तयपि तथैवायमुक्त सारयितयपि ॥६४ ९॥  
 सायस्त्वथवति त्रि स्यात्प्राणिसङ्घातरे तु ना ।  
 सावभौमश्चक्रवर्त्तियपि चोत्तरदिग्गजे ॥६४१ ॥  
 सावभौमस्तु विदिते वायलिङ्ग प्रकीर्तित ।  
 सालोऽश्विया स्यात्प्राकारे नाऽश्वकणतरौ तरौ ॥६४११॥  
 गतौ च मत्स्यभदे तु द्वयो साल प्रकीर्तित ।  
 सालावृक शृगालेऽपि वानरे च वृके द्वयो ॥६४१२॥  
 साल्वास्तु मध्यदेशीयकारकुत्सीयनीवृति ।  
 प्रायनीवृद्विशेषे च नृभूमि परिकीर्तित ॥६४१३॥  
 तयो राज्ञो पुमान्साल्वस्तदपत्येषु सद्वयो ।  
 सावनोऽद्विशेषे स्यात्षष्टिर्त्रिंशत्वासरे ॥६४१४॥  
 त्रिषु त्ववनयुक्ते च सवनस्य च योगिनि ।  
 सावित्र्यनामिकाङ्गु या तथा तत्सवितुःक्रचि ॥६४१५॥  
 विश्वामित्रेण दृष्टाया त्रि स्यात्सवितृयोगिनि ।  
 साहस त्वस्त्रियां दण्डशदपर्यायके दमे ॥६४१६॥  
 अतर्कितप्रवृत्तौ तु बलात्कारे नपुंसकम् ।  
 साहस स्यात्त्रिषु वेतकृतकार्ये प्रकीर्तितम् ॥६४१ ॥  
 साहस तु सहस्राणा समूहे स्यान्नपुंसकम् ।  
 सहस्रेण तु निवृत्ते सहस्रवति च त्रिषु ॥६४१८॥



साहस्रस्तु चतुष्टु स्यात्पुस्येकाहक्रतुष्वयम् ।  
 सिंहो द्वयोमृगद्वेऽथ वेङ्कटादौ पुमान्त ॥६४१९॥  
 सिंही तु वाशावार्त्ताकीकण्टकारीष्विय स्त्रियाम् ।  
 सिंहो द्वयो किशोर स्यात्पुमानेष वनस्पतौ ॥६४२ ॥  
 स्यात्सिंहकेसर पुसि वकुलेऽस्त्री सटे हरे ।  
 सिंहपुच्छी माषपर्णीपृश्निपर्ण्यो स्त्रियां मता ॥६४२१॥  
 क्लीब सिंहमल लोहे नीलिकारयेऽथ यौगिके ।  
 स्यात्सिंहविक्रमोऽश्वे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६४२२॥  
 सिंहास्यस्त्वटरूपे ना योगार्थे तु यथायथम् ।  
 सिंहिका राक्षसीभेदे राहोर्मातरि च स्त्रियाम् ॥६४२३॥  
 नतजानौ चाविवाहकयाभेदे प्रकीर्त्तिता ।  
 सिकता भूमि देशे सिकतिले वालुकास्वपि ॥६४२४॥  
 सिकथोऽस्त्रियां मधूलिष्ट पुलाकेऽन्नस्य पुस्ययम् ।  
 सित शौक्ये जीरके च पुलिङ्ग उशनस्यपि ॥६४२५॥  
 अथ प्राप्तावसाने सशौक्ये बुद्धेऽपि च त्रिषु ।  
 शर्करायां पुन स्त्रीत्वे सितेति परिकीर्त्तिता ॥६४२६॥  
 सितकुञ्जर इद्रे ना योगार्थे तु यथायथम् ।  
 सितच्छदो द्वयोर्हंसे योगार्थे तु यथायथम् ॥६४२ ॥  
 सितापाङ्गो मयूरे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ।  
 सिताभ्र पुास कपूरे क्लीब त्वभ्रे सिते मतम् ॥६४२८॥  
 सितायुधस्वेथालारये मत्स्यभदे द्वयोर्मत ।  
 सितासितस्तु योगार्थे बलभद्र वसौ पुमान् ॥६४२९॥  
 सिद्धस्तु सनकादौ ना देवजात्यन्तरे द्वयो ।  
 निष्पन्ने तु त्रिषु क्ली तु सिद्धौ ग यादिकेष्वपि ॥६४३ ॥  
 सिद्धो ना वृक्षभेदे स्यादय सागुजने त्रिषु ।  
 ना पारदे सिद्धरसो रससिद्धे तु स त्रिषु ॥६४३१॥  
 सिद्धार्थ सषपे बुद्धे नाऽर्थेन तु युते त्रिषु ।  
 सिद्धि स्त्री गतिसराद्ध्योर्ऋद्ध्युद्धयोषधिद्वये ॥६४३२॥

सिध्मलौषधिभेदे स्त्री स्यान्मत्स्यविक्रतावपि ।  
 अथाऽभिधेयवत्सिध्मवति सिध्मल इष्यते ॥६४३३॥  
 सिनमन्ने शरीरे च क्ली बिज्जारयद्रुमे तु ना ।  
 सिनीवाली दृष्टचद्रामावास्यापार्वती तथा ॥६४३४॥  
 सिधुस्तु नद्यां स्त्री ना तु समुद्रेऽपि नदातरे ।  
 अशीत्यक्षरके छ दोभदे च कृतसङ्गके ॥६४३५॥  
 गजाना दानतोये च कटनेत्रसमुद्भवे ।  
 नीधुद्भदे तु पुभूमिनि सिधव परिकीर्त्तिता ॥६४३६॥  
 सैधवे लवणे क्लीब सिधु स्याद्द्वे तु हस्तिनि ।  
 सिमस्तु क्षत्र सर्वार्थे सर्वनाम त्रिषु स्मृत ॥६४३॥  
 ग्रामगोचरभूमौ तु सिमो ना सवनामन ।  
 क्षत्रस्य मर्यादायां च द्वयोस्त्वश्वे तसम स्मृत ॥६४३८॥  
 सिमा स्त्रियो महानाम्नीसङ्गसामातरे स्मृता ।  
 सिलिध्रो वृक्षभेदे ना स्याच्छत्राके तु न स्त्रियाम् ॥६४३९॥  
 मत्स्यभेद सिलिध्रो द्व स्त्री तु गण्डपदीमृदा ।  
 सिलिध्रवृक्षप्रसवकदलीपुष्पयोस्तु नप ॥६४४॥  
 सीता तु रामभार्याया पृथिव्या हलपद्धतौ ।  
 सस्ये हरितसस्ये च सस्यभूमावपि स्त्रियाम् ॥६४४१॥  
 सुमेरुशिरस प्राग्दिग्गतगङ्गातरेऽपि च ।  
 सीत्य तु धा ये क्लीब स्यात्कृष्टभूमितले त्वपि ॥६४४२॥  
 सीतायामपि साधौ च [त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित] ।  
 सीद्गुण्डो द्व विप्रपराजकीजे ना स्नुहीतरी ॥६४४३॥  
 सीम स्त्रीपुंसयोरश्वे पुमास्तु परिकीर्त्तित ।  
 क्षेत्रस्य मर्यादायाश्च ग्रामगोचरभूमयपि ॥६४४४॥  
 सीमा टापि क्षितौ कूलेऽवधौ क्षेत्रयवस्थयोः ।  
 मभन्तापि च सीमेयमेष्वेवार्थेषु कीर्त्तिता ॥६४४५॥  
 स्यात् सीमिकं तु वल्मीके शाखायां क्ली तरोरपि ।  
 स्त्रीपुंसयोस्तु सलिलक्रिमौ सीमिक इष्यते ॥६४४६॥

सीरो हलाकयो पुसि सीरी तु स्त्री लताङ्गुरे ।  
 लाङ्गलिक्या च नद्यां तु सीरा स्त्री वे प्रकीर्तिता ॥६४४ ॥  
 सीव युपस्थाध सूत्र सूच्यां स्यूतौ तु सीवनम् ।  
 सुकदस्तु पलाण्डौ ना त्रि तु शोभनकन्दके ॥६४४८॥  
 सुकृत सत्कृतौ पुण्ये त्रिस्तु सुष्ठुकृते मतम् ।  
 स्त्री सुकेश्यप्सरोभेदे त्रि तु शोभनमूधजे ॥६४४९॥  
 सुख शर्मणि लग्नाचतुथराशौ च शस्तख ।  
 स्याच्छोभनखयुक्ते च त्रि सुखस्य च साधने ॥६४५ ॥  
 शम्भोस्तु नवशक्तीना स्यादेकत्र सुखा स्त्रियाम् ।  
 सुखोदयस्तु ना मद्यभेदे माध्वीकसङ्गके ॥६४५१॥  
 अपक्ववेशुरसै सिद्धे योगार्थे तु यथायथम् ।  
 सुगत पुसि बुद्धेऽथ त्रि शोभनगते भवेत् ॥६४५२॥  
 सुग्रीवो रामामत्रे स्याकपिभेदे पुमानयम् ।  
 वास्तुदेवविशेषे च कोष्ठश्रेणौ हि पश्चिमे ॥६४५३॥  
 आरभ्य दक्षिणाकोष्ठात्तृतीये तत्र य स्थित ।  
 ग्रीवायां शोभनायां स्त्री बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ॥६४५४॥  
 सुचरित्रा मता स्त्रीत्वे कुस्तुम्बुर्व्यां च योगिके ।  
 सुत सोमरसे भूपे लग्नाद्राशौ च पञ्चमे ॥६४५५॥  
 पुत्रयोस्तु द्वयो स्त्री तु शाकवल्ल्यन्तरे सुता ।  
 उपोदकारये त्रिषु तु प्रसूतेऽभिषुतेऽपि च ॥६४५६॥  
 सुदशन शङ्खणस्य पुत्र ऐक्ष्वाकभृश्रुजि ।  
 विष्णुचक्र तु पुसि स्या क्लीबेऽपि च सुदशन ॥६४५ ॥  
 अथाऽमरावयामेत क्लीबमेव सुदर्शनम् ।  
 सुदशना तु दध्यालीनाम्नि वलीभिदि स्मृता ॥६४५८॥  
 गृध्राख्यपक्षिभेदे तु द्वयारक्त सुदशन ।  
 सुधाऽमृते तथा स्तुष्ट्यामपि सौहित्यमूवयो ॥६४५९॥  
 गङ्गेष्टिकायां कृड्यादिलेपद्रव्यान्तरे स्त्रियाम् ।  
 सुनारस्तु शुनीस्तन्ये सर्पाण्डे च पुमान्मत ॥६४६ ॥

सुनाल रक्तकुसुदे बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ।  
 सुनिषण्ण शाकभेदे स्वस्तिकादिपदश्रुते ॥६४६१॥  
 सुन्दो दत्ता तरे दारुलेखके च पुमान्मत ।  
 सुपर्णो गरुडे पुसि किरणे च प्रकीर्त्तित ॥६४६२॥  
 अश्वे गरुडवचापि पक्षिजात्यतरे द्वयो ।  
 सुपर्णी तु स्त्रियामेषा विनताया प्रकीर्त्तिता ॥६४६३॥  
 सुपाश्वो गदभाण्डारयपादपेऽपि पुमान्मत ।  
 मेरोरुत्तरविष्कम्भपवतेऽपि तथा भवेत् ॥६४६४॥  
 सुप्त तु त्रिषु निद्राणे प्रशस्तजटकेऽपि च ।  
 खञ्जरीने पुन कृष्णवक्षसि द्वे स्त्रिया पुन ॥६४६५॥  
 सुप्ता जटाया शस्ताया क्ली तु स्वापे प्रकीर्त्तितम् ।  
 सुप्रतीको यौगिके च पुमास्त्वीशानदिग्गजे ॥६४६६॥  
 सुब्रह्मण्यस्तु ना स्कन्द ऋत्विग्भेदे तु नृस्त्रियो ।  
 सुब्रह्म या तु निगदनाम्नि स्याद्यजुरतरे ॥६४६७॥  
 सुभिक्षा धातकीवृक्षे त्रिस्त्वन्नाढ्य प्रकीर्त्तिता ।  
 सुमनास्तु स्त्रिया ज्ञेया मालत्या कुसुमे पुन ॥६४६८॥  
 स्त्रीभूम्नि स्यु सुमनसस्त्रि तु स्याच्छुभचेतसि ।  
 पण्डिते च द्वयोस्तु स्याद्देवे क्ली तु शुभे हृदि ॥६४६९॥  
 [गृहोच्चभूस्थस्थूणाया सुमेधा स्यात्स्त्रियामियम्] ।  
 सुयामुनो वत्सराजप्रासादेऽभ्रातरेऽच्युते ॥६४७०॥  
 सुर सुरी द्वयोर्देवे सुरा मद्य जलेऽपि च ।  
 स्त्रिया सुरतताली स्याद्दूत्या चैव शिरस्रजि ॥६४७१॥  
 सुरभि कलमाले च गन्धे च घ्राणतपणे ।  
 त्रि तु तद्वति चारौ च श्रेष्ठे च स्यात्स्त्रिया पुन ॥६४७२॥  
 देवधेनौ ना तु बह्वौ वसते चम्पकेऽपि च ।  
 कर्पित्थे राजजम्बवा च पुल्लिङ्ग सुरभिच्छदः ॥६४७३॥  
 सुरवल्लभ उक्तो ना पुष्पागे यौगिके तु स ।  
 सुरसा तु महाजम्बूनाम्नि जम्बवतरे स्मृता ॥६४७४॥

योगार्थे वस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम् ।  
 सुराष्ट्र पीतमृद्ग ना सुराष्ट्रास्तु नृभूमनि ॥६४ ५॥  
 पश्चिमा ध्यतिके देशभद्यस्त्री तु सुराष्ट्रके ।  
 सुराष्ट्रजाहकीसज्ञे स्त्री साराष्ट्रमृदतरे ॥६४ ६॥  
 नपुसक सुरूप च शामलीफल इ यते ।  
 सुरूपा मलिकामेदे वैश्यनाम्नि स्त्रियामथ ॥६४ ॥  
 सुलभ पाकयज्ञाग्नावयत्नाऽप्ये तु स त्रिषु ।  
 स्त्रिया सुलवणाधायै गवीधुरिति विश्रुते ॥६४ ८॥  
 सुलोह चारकूटेऽपि शस्तलोहेऽपि कीर्त्तितम् ।  
 सुवर्चला प्रभारयाया सूर्यपया प्रकीर्त्तिता ॥६४ ९॥  
 तथा क्षुमाह्वये धाये शाकभदेऽपि च स्त्रियाम् ।  
 सुवर्णा मखभिद्यस्त्री पुमांस्तु स्वर्णकषयो ॥६४ ८ ॥  
 सुवहा सल्लकीगोधापदीशेफालिकासु च ।  
 एलापण्यां च रास्नायां वीणायां च स्त्रियां मता ॥६४ ८१॥  
 सुविदत्र कुटुम्बे क्ली घनलाङ्गलयोरपि ।  
 सुविदत्र पुनस्त्रि स्याच्छुद्धज्ञानसुविद्ययो ॥६४ ८२॥  
 सुव्रता सुखसन्दौहसुरभौ त्रि तु सव्रते ।  
 सुषमा परमायां स्त्री शोभायां त्रिस्तु सुदरे ॥६४ ८३॥  
 सुषवी कारवया स्त्री तथा कृष्णे च जीरके ।  
 क्लीब तु सुषिर छिद्रे वशादौ वाद्यभिद्यपि ॥६४ ८४॥  
 स्याद्विद्रुमलताया तु सुषिरा स्त्री नटे तु ना ।  
 सुषियुक्ते तु सुषिरो मेघव परिकीर्त्तित ॥६४ ८५॥  
 सुषेणस्तु पुमा विष्णौ करमर्दद्रुमेऽपि च ।  
 सुग्रीववैद्य क्लीब तु करमर्दफलादिके ॥६४ ८६॥  
 कृष्णत्रिवृलतायां तु सुषेणा स्त्री प्रकीर्त्तिता ।  
 सुस्तर शयने पुंसि तथा माने प्रकीर्त्तित ॥६४ ८७॥  
 सुहितस्तु मतस्तृप्ते तथा सुष्ठुहिते त्रिषु ।  
 सुहृमत्रिणि पुंसि त्रिमित्रे क्ली शोभने हृदि ॥६४ ८८॥

सुखा नृभूग्नि स्युर्देशमदे सववचो नृपे ।  
 वाच्यवसूक्ष्ममयलपे क्लीब वध्यात्म इष्यते ॥६४८९॥  
 सूक्ष्मा नवाना शक्तीना विणोरेकत्र कीर्त्तिता ।  
 सूचक पिशुने हस्तभ्रमझाद्यैश्च बोधके ॥६४९॥  
 द्वे तु श्वक्रोष्ठकाकेषु सूचक परिकीर्त्तित ।  
 सूचना तु न ना वृष्टौ ग धने यर्थनेऽपि च ॥६४९१॥  
 सूचे सूचौ दमणे तु सूच सूचस्तु सूचने ।  
 सूचि स्यूति शलाकाया कवाटापागले स्त्रियाम ॥६४९॥  
 सूचीवद्द्वे तु वेद्याजे निपादात्सूचिरुच्यते ।  
 सूचीमुख तु क्लीब स्यादासने यस्य लक्षणम् ॥६४९३॥  
 ऊर्ध्वज्ञोर्जानुनोर्बाहूप्रसार्य करयोस्तलौ ।  
 सहत्य च स्थितिर्या स्यात्तत्सूचीमुखमासनम् ॥६४९४॥  
 सूत पारदसारथ्यो पुंसि तक्षणि तु द्वयो ।  
 तथा वन्दिनि विप्राया क्षत्रियाजात इष्यते ॥६४९५॥  
 त्रि प्रेरिते च जनिते क्ली सूतो प्रेरणेऽपि च ।  
 सूतक जमनि प्रोक्त नृनपो राहुपारदे ॥६४९६॥  
 स्त्रिया तु स्यात्प्रसूताया सूतका सूतिकापि च ।  
 सूत्रोऽस्त्री यज्ञसूत्रे च त तौ सङ्ग्रहवाच्यपि ॥६४९७॥  
 सूदो ना सूपकारेऽथ सूपे रूपे च नप्त्रियो ।  
 सूदा तु क्षरणे स्त्री स्यान्नतु ना क्षारणे मता ॥६४९८॥  
 सून तु पुष्पे क्लीब स्यात्प्रसूते पुष्पिते त्रिषु ।  
 सूना वधे वधस्थाने स्याच्च दण्डाऽर्पिताऽङ्कुशे ॥६४९९॥  
 अध सिराया जिह्वायां तथा दुहितरि स्मृता ।  
 सूनुद्वयोरपत्ये स्यादथाऽर्के चाऽनुजे पुमान् ॥६५॥  
 सूपो ना सूपकृत्यस्त्री मुद्राद्यैर्व्यञ्जने कृते ।  
 सूम प्रकीर्त्तितश्च द्वे पुल्लिङ्ग श्वयथावपि ॥६५॥  
 क्ली त्वत्तरिक्षे त्रिषु तु सदूमे सदुमेऽपि च ।  
 सूरः सूर्ये गभस्तौ च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥६५॥ २॥

सूरि पुमास्यादाचार्ये त्रि तु स्तोतरि पण्डिते ।  
 सूर्यो वाचाकयो पुसि मत्स्यजातौ द्वयोर्मत ॥६५ ३॥  
 सूर्य सूर्यी शुष्ककाष्ठलोहप्रतिमयोद्वयो  
 सूर्या वाचि श्वेतगिरिकर्ण्या सूर्यस्तु ना रवौ ॥६५ ४॥  
 सुको वके सृगाले द्व ना वज्रे नरके शरे ।  
 सृगालो दैत्यभेदे ना क्रौष्ट्रौ द्वे डमरे स्त्रियाम ॥६५ ५॥  
 सृणिस्तु वह्नौ वज्रे च पुलिङ्ग स्यात्तथाऽङ्गुशे ।  
 सृणीकस्तु त्रिषून्मत्ते ना त्वग्नावशनावपि ॥६५ ६॥  
 सृणीका तु स्त्रियामेषा लालाया परिकीर्त्तिता ।  
 सृतिस्तु मार्गे गमनेऽपि च स्त्री वे प्रकीर्त्तिता ॥६५ ७॥  
 सृत्वा प्रजापतौ वह्नौ पुसि द्व नीचजातिषु ।  
 सृचरी तु स्त्रियां वाचि जननीवैश्ययोरपि ॥६५ ८॥  
 सृदाकुर्द्वे खगेऽप्सु क्ली नाऽन्नौ गोत्रर्षिभिर्धपि ।  
 सृपा द्वयो शिशौ सर्पे यतिनि त्वेष भेद्यवत् ॥६५ ९॥  
 सृप्र सर्पिषि तले क्ली सृप्रश्च द्वे पुमा मत ।  
 सृप्रा तूज्यिनीपाश्ववाहिन्यां सरिति स्मृता ॥६५ १०॥  
 सृमरो मृगभेदे द्वे गवरे तु स्त्रियां मत ।  
 सृष्ट तु सर्जने क्लीव निश्चिते त्वभिधेयवत् ॥६५ ११॥  
 बहुनिर्मितयोर्मुक्तेऽपि सृष्ट परिकीर्त्तितम् ।  
 सृष्टि स्त्रियां स्वभावे च यागेऽप्युत्पादनेऽपि च ॥६५ १२॥  
 सेशब्द सेवने स्त्री स्यात्सेवके वाच्यलिङ्गक ।  
 सेक्ता पुसि धवे त्रिस्तु सेचके परिकीर्त्तित ॥६५ १३॥  
 सेचन नौसेकपात्रे सिक्तावपि नपुंसकम् ।  
 सेतुरायतने वारिव धे ना वरुणद्रुमे ॥६५ १४॥  
 सेनस्त्रिभिनयुक्ते स्यात्सेना चम्बा स्त्रियां मता ।  
 सेनानीस्तु पुमास्कन्दे त्रि तु सेनापतौ स्मृत ॥६५ १५॥  
 सेव स्यूतौ पुमान् क्ली भजने परिकीर्त्तित ।  
 सेवको ना प्रसेवारये स्यूते सेवितरि त्रिषु ॥६५ १६॥

सेवना सुवयत्यर्थे न ना क्ली स्यूतिसेवयो ।  
 सेव्य तु सेवनीये त्रिर्वात येऽप्यथ न जले ॥६५१॥  
 उशीरे नि शरे दध्नि पत्राङ्गाङ्गयभेषजे ।  
 अधिजे लवणे ना तु मध्मासव इति श्रुते ॥६५१८॥  
 मद्यभेदे स्त्रिया तु स्यात्सेया नीवारघा यके ।  
 स्यात्स्त्री मतलिकाया द्वे त्वायोगया हि दस्युजे ॥६५१९॥  
 वदाकेऽप्यज्झटासङ्गस्तम्बेऽथ चटके द्वयो ।  
 त्रि सैकत सिकतिले सिकतापुलिने त्रिषु ॥६५२॥  
 सैनिक सैन्यरक्षेऽपि स्यात्सेनासमवायिनि ।  
 सैधवोऽग्नेऽश्मभेदे द्व मनुष्ये सिधुदेशजे ॥६५२१॥  
 क्ली वस्त्रजालराष्ट्रेषु पुमास्तु स्याज्जयद्रथे ।  
 सिधुसम्बधिनि पुनस्त्रिषु सैधव इष्यते ॥६५२॥  
 सैन्य क्लीर्ब च सेनाया त्रि सेनासमवायिनि ।  
 सैयश्चतुर्णामश्वानां कृष्णस्यैकत्र पुस्ययम् ॥६५२३॥  
 सैरास्तु मध्यदेशस्य नीहृद्भेदे नृभूमनि ।  
 सीरस्य तु सिरायाश्च सम्बधियभिधेयवत् ॥६५२४॥  
 सैरिकस्त्रि सीरयोगिवोद्गादौ स्वर्ग एष ना ।  
 सैरिध्री स्ववशाऽयालयस्याशिल्पकृति स्त्रियाम् ॥६५२५॥  
 सोता नाऽध्यापके त्रिस्तु जनके चाभिषोतरि ।  
 सोमो ब्रह्मणि पूष्णीन्दौ बह्वौ पुष्ये लतातरे ॥६५२६॥  
 गीर्णेऽमृतरसे शैत्ये सोम तु त्रिषु तद्वति ।  
 तथोमया च सहिते ऊमेन सहितेऽपि च ॥६५२७॥  
 नर्मदायां सोममवा स्त्रीयोगे तु यथायथम् ।  
 सोमयोनिद्वयोर्विप्रे सुरे योगे तु लोकवत् ॥६५२८॥  
 अथो नपुसक क्षीरे ज्ञेय सोमरसोद्भवम् ।  
 सोमवल्कस्तु धवलखदिरे कटफलेऽपि च ॥६५२९॥  
 सोमवल्ली स्त्रियां ब्राह्मण्यां गुह्य्यामप्यवल्लुजे ।  
 सौगधिक तु क्ली पक्षे कल्हारेऽध्यामसङ्गके ॥६५३॥



गन्धद्रये गन्धकारयधातौ तु स्यादय पुमान् ।  
 सौदामनी मता विद्युद्विशेषेऽपि च विद्यति ॥६५३१॥  
 सौघस्तु न स्त्री सुधया गेहे शुक्लीकृते मत ।  
 क्लीब तु रजते सौघ सुधासम्बन्धिनि त्रिषु ॥६५३२॥  
 सौप्तिकस्तु प्रपातारयशत्रुनिग्रहकर्मणि ।  
 सौमिको दीक्षणीयेष्टौ त्रि तु सोमक्रतूद्भवे ॥६५३३॥  
 सौम्यस्त्रि सुन्दरे सोमदेवते ना तु वत्सरे ।  
 बुधग्रहे सोमयागेऽर्त्तनौ पञ्चदशेऽस्य च ॥६५३४॥  
 यूप सप्तदशारविर्वाजपयस्य य श्रुत ।  
 सौम्या निशि स्त्रिया सौम्य क्लीब कृतयुगेऽपि च ॥६५३५॥  
 तुरायणारयतपसोद्वितयेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।  
 सौरतो मृदुवायौ ना त्रि स्यात्सुरतयोगिनि ॥६५३६॥  
 सौरमेयी तु सुरभौ सौरभेयस्तु ना वृषे ।  
 सौरभ्यमुक्त सौग ध्ये क्लीब च गुणगीरवे ॥६५३७॥  
 मनोज्ञत्वेऽपि सौरभ्यस्तु मनोज्ञे विधेयवत ।  
 सौराष्ट्र कांस्यलोहस्थ सौराष्ट्री त्वाहकी मृदि ॥६५३८॥  
 सौवीरो गोपघोष्ठाया सौवीर बदरीफले ।  
 स्रोतोऽञ्जने काञ्जिकेऽथ नीषुद्भेदे नृभूमनि ॥६५३९॥  
 सौष्ठव तु प्रशस्तत्वेऽवष्टम्भेऽपि नपुंसकम् ।  
 स्कन्दस्तु कार्तिकेयेऽपि नदीतीरेऽपि पारते ॥६५४०॥  
 स्कन्दने ब्रह्मणि शिवे नृपे देहे तथा पुमान् ।  
 उत्तरस्थ पुन स्कन्दो भवेत्स्कन्देन कर्त्तरि ॥६५४१॥  
 स्कन्दन पातवैफ यविरैकगतिशोषणे ।  
 स्कन्दोलस्तु पुमाञ्शीतगुणे शीते पुनस्त्रिषु ॥६५४२॥  
 स्कन्धोऽंशे भूपतौ वृक्षप्रहाविटपमूलके ।  
 चये समुदये रूपवेदनादिकपञ्चके ॥६५४३॥  
 सैन्ययूहे ग्रन्थकाण्डे काये पिण्डे मुनावपि ।  
 आर्याभेदे स्कन्धकारये सम्यराये मरुत्पथे ॥६५४४॥

रायाभिषेकसम्भाराङ्गभूतकलशादिके ।  
 धूवहस्कंधसाम्येऽपि स्या नागातरसविदो ॥६५४५॥  
 भद्रादा च बके तु द्व स्क धा स्त्री वल्लिशाखयो ।  
 स्कंधकस्तु भगेस्कंधेऽप्यार्याभेदे क्वचि मत ॥६५४६॥  
 अथ स्कंधफलो नारिकेले वि वेऽप्युदुम्बरे ।  
 स्कंधः सान्त मत स्कंधे शिखरेऽपि तरोर्मत ॥६५४७॥  
 स्कंधोपनेय स्याद्राज्ञा संधिभेदेऽपि यौगिके ।  
 स्कन शुष्के लम्बमाने पतितेऽप्युनते क्वचित् ॥६५४८॥  
 स्वदन पाटने स्थैर्ये क्लेशोत्पादनहिंसयो ।  
 विद्रावणे विदारेऽपि स्वदनाऽपि क्वचि मता ॥६५४९॥  
 स्वलस्तु स्वलनेऽप्याह तस्यार्थं सायण खलम ।  
 स्वलन गद्गदने स्यादस्थैर्यभ्रशयोरपि ॥६५५॥  
 बाधायामपराधेऽपि विनिपाते परामवे ।  
 स्वलित त्वस्थिरे मत्ते निगृहीते च गद्गदे ॥६५५१॥  
 अनुबणे प्रमत्तेऽपि सम्भ्रातभ्रातयोस्त्रिषु ।  
 स्वलित त्वपराधेऽपि नाशे वक्रगतावपि ॥६५५२॥  
 स्तनो न स्त्री कुचे चूचुके च पात्राङ्गभिधपि ।  
 स्तनन कासने शदमात्रे कुथनगर्जयो ॥६५५३॥  
 अथ स्तनभवो योगार्थेऽपि स्त्रीकरणात्तरे ।  
 स्तनधित्तु पुमामेधे तथा मेघस्य गर्जिते ॥६५५४॥  
 व्याधौ मृतो विद्युति च मुस्तके मेघवाचिवत् ।  
 स्तनातर तु स्तनयोर्मध्ये चापि नपुसकम् ॥६५५५॥  
 भाविवैधयचिह्नऽपि स्तनस्थे परिकीर्तितम् ।  
 स्तनित गर्जिते दुःखशदे चापकरच्चनौ ॥६५५६॥  
 स्तध स्थिरे जडेऽहङ्कारिणि मदे घने त्रिषु ।  
 स्तबके नस्त्रिया गुच्छे समूहे ग्रथका डके ॥६५५७॥  
 स्तय क्षीरे भवेत्क्लीब स्तय स्तनभवे त्रिषु ।  
 स्तधरोमा वराहे द्व यौगिके तु यथायथम् ॥६५५८॥

स्तम्भस्तृणे च विटपे सहतौ च पुमान्मत ।  
 पुमान्स्तम्भकरिर्विहौ वाच्यवस्तम्भकारिणि ॥६५५९॥  
 स्तम्भेरमो गजेऽप्यष्टसरयायां हस्तिवाचिवत् ।  
 स्तम्भज स्तम्भजाते त्रिरुशीरे तु नपुसकम् ॥६५६ ॥  
 स्तम्भस्तु भवेच्छागे तथा मेघे द्वयोर्मत ।  
 स्तम्भ उक्तो जडीभागे स्थूणायां प्रतिबधने ॥६५६१॥  
 स्तम्भकस्त्रि स्तम्भकृति पुमास्तु प्रमथातरे ।  
 कृतौ पुमास्तम्भकरस्तम्भकारिणि वाच्यवत् ॥६५६२॥  
 स्तम्भन स्तब्धताहेतौ त्रिर्ना कामशरातरे ।  
 विधातरे स्तम्भनी स्त्री क्ली स्तब्धकरणे मतम् ॥६५६३॥  
 स्तरस्वास्तरणे पाषाणाद्यशेऽपि पुमान्मत ।  
 स्तरण छादनेऽपि स्याद्वधेऽपि च नपुसकम् ॥६५६४॥  
 स्तरिधूमे पुमास्त्री तु तृणे स्यात्स्तरिवस्तरी ।  
 वध्याया च स्तरी तद्वत्स्त्रीमात्रेऽपि प्रकीर्त्तिता ॥६५६५॥  
 स्तिमित निश्चले क्लिनेऽप्यभिधेयवदिष्यते ।  
 स्ताम्बस्तु स्तोतरि मतो गर्जितर्यपि वाच्यवत् ॥६५६६॥  
 अस्त्री स्तवरको वस्त्रभेदे पुंसि वृत्तौ भवेत् ।  
 स्तिहितिस्त्री महीजस्थ फले स्यादङ्कुरेऽपि च ॥६५६ ॥  
 स्तीभि पुंसि समुद्रे च हृदये च प्रकीर्त्तित ।  
 स्तीर्णा प्रमथभेदेषु स्तीणस्त्रि स्यात्प्रसारिते ॥६५६८॥  
 सयुगोपायतनयो पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 स्तीर्निर्भसि चाध्वर्यौ तृणजातौ पयस्यपि ॥६५६९॥  
 शत्रौ तथैव रुधिरं पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 स्तूप समुच्छ्रये वायौ मूर्धमध्यगुडे पशो ॥६५ ॥  
 स्तनश्चोरे तथा चोरनाम्नि स्याद्वधवस्तुनि ।  
 स्तेयी चोरे पुमाद्वे तु स्वर्णकारेऽपि मूषिके ॥६५ १॥  
 स्तैय क्लीबे भवेच्चौर्ये स्तैयश्चारे पुमान्मत ।  
 स्तोम स्यादध्वमाने च दशधन्व तराङ्गये ॥६५७२॥

देयभेदे च पुलिङ्गस्तथा स्यात्स्तोत्रवृन्दयो ।  
 सरयाया यज्ञगस्तोत्रस्तोत्रियाणा क्रतावपि ॥६५७३॥  
 स्त्वेनस्तु चोरेऽप्यमृते पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।  
 स्त्री प्रियङ्गाह्वये वृक्षे वम्रीवनितयोरपि ॥६५ ४॥  
 लग्नाच सप्तमे राशौ लिङ्गछन्दोविशेषयो ।  
 स्त्रीकृत करणे स्त्रीणा वायवत्तु स्त्रिया कृत ॥६५७५॥  
 स्त्रीधर्मो मथुनेऽपि स्यादात्तवे योगिकेऽपि च ।  
 स्त्रीसि स्तनौ शोणित च स्त्रीनभ पयसोर्मता ॥६५७६॥  
 स्त्रीपुसयोस्त्वय स्त्रीप्तिरजे सम्परिकीर्त्तिता ।  
 स्त्रीप्रियोऽशोकवृक्षे चाम्रवृक्षे च पुमान्त ॥६५ ॥  
 तयोस्तु प्रसवे क्लीब योगार्थे तु यथायथम् ।  
 स्त्रीवास पुसि वल्मीके स्त्रीणा वासे तथा पुमान् ॥६५ ८॥  
 स्त्रीस्वभावस्तु योगार्थे तथैव स्यान्नपुसके ।  
 स्थपति सौविदलेऽपि बृहस्पतिसवेष्टिनि ॥६५७९॥  
 तक्षण्यधिपतौ शिल्प्यतरे जीमकुबेरयो ।  
 स्थलजा यष्टिमधुके वाच्यवत्त स्थलोद्भवे ॥६५८ ॥  
 स्थली ननोन्नतभ्रुवि स्थला कृत्रिममृण्मये ।  
 स्त्रियां क्षेत्रादिनिम्नस्थसलिलस्य निवारणे ॥६५८१॥  
 स्थलेरुहा गृहकुमार्या दग्धाया च तथप्यते ।  
 स्त्रिया स्थमि फले चैव कुष्ठीमांसे प्रकीर्त्तिता ॥६५८२॥  
 द्वयो स्थविस्तु नवाये कुष्ठिनि चभिधेयवत् ।  
 जङ्गमेऽपि तथैव स्यात्पुमांसस्वर्ग इ यते ॥६५८३॥  
 स्थाणुर्ना कुरुदेशे च गन्धद्रयातरे शिवे ।  
 नागरक्षोरुद्रमित्सु प्रजापत्यतरेऽपि च ॥६५८४॥  
 श्वेतोपदीकावल्मीके क्ली तु स्यादासनातरे ।  
 अथ कीलोद्भिदोरस्त्री वाच्यवत्त स्थिरे मत ॥६५८५॥  
 स्थान क्लीब नरेऽप्यये ग्राहुर्गोहावकाशयो ।  
 सम्बन्धभेदे जतूनां स्यान्निवृत्तिप्रसङ्गयो ॥६५८६॥

अपकर्षे च सादृश्ये क्लीब तु स्थितिकर्मणि ।  
 स्थान शब्देऽपि पुंसि स्यात्तथैव ग्रमथा तरे ॥६५८७॥  
 स्थानक वालवालेऽपि सिंहादीना क्रमाह्वये ।  
 लङ्घन कर्तु कामानां स्यादवस्था तरेऽपि च ॥६५८८॥  
 स्थानीय तु महाग्रामे स्थातयेऽपि पुरेऽपि च ।  
 अथ स्थानेऽयय कारणार्थे युक्ताथ एव च ॥६५८९॥  
 स्थापना स्थापययर्थे नना तसाधने त्रिषु ।  
 स्थापनी तु स्त्रियां पाठानाम्नि वल्ग्या प्रकीर्त्तिता ॥६५९०॥  
 स्थाप्य त्रिस्स्थापनीये निक्षेपे ना नपि ह्रीबेरे ।  
 स्थाया भुवि स्त्रियां स्थाय स्थाने स्थातरि तु त्रिषु ॥६५९१॥  
 स्थायुकस्तु त्रिषु स्थासनौ स्याद्ग्रामाधिकृतेऽपि च ।  
 स्थाल भोजनपात्रे क्ली स्थायुखायां स्त्रिया मता ॥६५९२॥  
 स्थालस्तु ना महादेवे स्थितिकर्मणि च स्मृत ।  
 स्थालीबिबस्तण्डुले ना त्रि तु स्थालीबिलार्हके ॥६५९३॥  
 स्थासक पुंसि चर्चिक्ये बुद्बुदेऽपि प्रकीर्त्तित ।  
 तथा नक्षत्रमालारये करिणा भूषणान्तरे ॥६५९४॥  
 स्थित स्थितौ मत क्लीब सप्रतिज्ञे पुन स्थित ।  
 तथागतेर्निवृत्ते च त्रिषु स्यादूर्ध्वता गते ॥६५९५॥  
 अवस्थायां यवस्थाया स्थिति स्त्री तिष्ठते कृतौ ।  
 स्थिर प्रोक्त शनौ पुंसि निश्चले तु त्रिषु स्मृत ॥६५९६॥  
 सालपर्णीभेषजे तु भूमौ च स्यात्स्थिरा स्त्रियाम् ।  
 स्थिरजिह्वस्तु मत्स्ये द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६५९७॥  
 स्थिरदण्डो द्वयो सर्पे ना वराहाकृतौ हरौ ।  
 मयूरे द्वे स्थिरमदो योगार्थे तु यथायथम् ॥६५९८॥  
 स्थिरायु शालमलौ पुंसि योगार्थे तु यथायथम् ।  
 स्थूल नपुंसक दृष्ये स्थुगे गुल्फे पुमान्त ॥६५९९॥  
 स्थूणा तु गेहस्तम्भेऽपि तथा वातादिषु त्रिषु ।  
 लोहप्रतिकृतौ तत्रधारिण्यामपि च स्त्रियाम् ॥६६०॥

स्थूर तु पीपरे त्रि स्यात्स्थूरा तु स्यात्स्त्रियामियम् ।  
 पश्चाद्भागे च जङ्घाया गोधूमादतुपेषु च ॥६६ १॥  
 स्थूल क्ली दध्न्यथ त्रि स्याज्जडे बृहति पीपरे ।  
 स्थूलनासो वराहे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६६ २॥  
 स्थूलाङ्गस्तु द्वयोर्मत्स्ये शालिभदे पुन पुमान् ।  
 स्थूला चयस्त्वसौ कल्ये नागाना मध्यमे गते ॥६६ ३॥  
 स्थय क्लीब च स्थात य सद्य च परिकीर्तित ।  
 विवादपदनिर्णेत्यपि स्थयोजमधेयवत् ॥६६ ४॥  
 स्नातकस्तु गृहस्थऽपि समावृत्ते तथा पुमान् ।  
 स्नान स्यादाप्लवे क्लीब स्नानीयेऽपि प्रकीर्तितम् ॥६६ ५॥  
 स्नाव कदल्या घूर्णाया स्नायु यप्यस्त्रिया मत ।  
 नप् शाकटायन आह स्म हषनदी च पुस्यष्टम् ॥६६ ६॥  
 स्निग्धो मतस्नेहने त्रि ससौहादवयस्ययो ।  
 पुमास्तु गुग्गुलो मत्रिजने च स्नेहने तु नप् ॥६६ ७॥  
 स्नुषा तु पुत्रपत्न्या च स्नुह्या चैव स्त्रिया मता ।  
 स्नेहो ना प्रेम्णि सौहार्दे तलाज्यादौ जले तु नप् ॥६६ ८॥  
 स्नेहवान्स्नेहयुक्ते त्रि स्त्री तु स्याद्भषजातरे ।  
 स्नेहपूर क्षमार्या स्यात्स्नेहस्यापि च पूरणे ॥६६ ९॥  
 स्नेहा नात पुमाश्च द्वे सरयौ रोगातरेऽपि च ।  
 स्नेही स्नेहवति त्रि स्यात्तैलकारे द्वयोर्मत् ॥६६ १०॥  
 स्नेहु पित्ते तथा रोगविशेषे सान्निपातिके ।  
 स्पन्दन चलने किञ्चित्तिमिशाख्यद्वये तु ना ॥६६ ११॥  
 स्पर्शो ना स्पर्शने तद्वदुपतापप्रदानयो ।  
 जारे चकादिमान्तेषु वर्णेषु द्वे तु किङ्करे ॥६६ १२॥  
 स्पशस्तु स्रष्टरि तथोपतत्पर्यभिधेयवत् ।  
 स्पशन तु नपि स्पृष्टो दाने च पवने तु ना ॥६६ १३॥  
 स्पशस्तु सयुगे चारे चापि पुँल्लिङ्ग इष्यते ।  
 योष्येण यजमानस्य पत्न्या सनहने स्पशा ॥६६ १४॥

सृष्ट्यायाम् पुन क्लीबे स्यादहसु तृणेषु च ।  
 स्फार तु मौ र्या चापस्य सहस्फुरण इष्यते ॥६६१५॥  
 स्फार त्रिषु प्रभूते स्यालान्छने स्यानपुसकम् ।  
 स्फिगुगुदे ना स्त्री वेषा शरीरावयवातरे ॥६६१६॥  
 स्फीत वृद्धे प्रभूते च वायवत्परिकीर्तितम् ।  
 स्फुट विकसिते याप्ते शुक्तविस्पष्टयोरपि ॥६६१॥  
 स्फुटन स्याद्विकसने भङ्गेऽपि च नपुसकम् ।  
 स्फोटिका पश्चिमदे स्त्री विस्फोटे तु तद्वयोभवेत् ॥६६१८॥  
 सरध्वजो वाद्यभेदे मेद्रे चापि तथा पुमान् ।  
 सरध्वजा तु योत्स्न्या स्याद्भग तु क्ली सरध्वजम् ॥६६१९॥  
 वस तेऽपि तथा चन्द्र पुसि सरसखो मत ।  
 सारस्तु सरणे पुसि सरसम्बन्धिनि त्रिषु ॥६६२॥  
 सारिणी तु स्त्रियां ब्राह्म्यां नना स्यासारकर्मणि ।  
 स्मितस्तु त्रिषु फु ले स्यास्मितवत्यप्यथ स्मितम् ॥६६२१॥  
 अदृष्टदन्तहासे क्ली विकासे कुमुदस्य च ।  
 स्मृति स्त्री धर्मशास्त्रे स्यादुत्कण्ठाचिन्तयोरपि ॥६६२२॥  
 स्य स्यात्तदर्थे प्रथमैक वे त्र पुसि शूपके ।  
 स्यन्दन स्रवणे चा तु स्यन्दनस्तु पुमात्रथे ॥६६२३॥  
 स्यन्दनी तु स्त्रियामेषा ग्रहभ्रम उदीरिता ।  
 स्यात्स्यन्दिनी स्त्री लालायां गोभेदे च क्षरस्तने ॥६६२४॥  
 स्यमीको वृक्षव मीकनृपगोत्रातरेषु ना ।  
 काले मेघे स्यमिकवस्यमीका नीलिका मता ॥६६२५॥  
 स्याल पनीभ्रातरि ना स्याली पन्या स्वसर्गसौ ।  
 वैजयन्त्या तु निमूल पन्या अनुजयोर्द्वयो ॥६६२६॥  
 स्यालकस्वनुजे पत्या स्यालिकाऽस्या यवीयसी ।  
 स्यूतस्तु प्रसवे पुसि स्यूतमूते त्रिषु स्मृतम् ॥६६२॥  
 स्यूता तु मेखलायां च तथा रश्मौ स्त्रियां मता ।  
 स्यूमोऽप्सु द्वे पुमांस्तौ रश्मौ चन्द्रे च मङ्गले ॥६६२८॥

अथाभिधेयवद्दीर्घे स्युमोज्य परिकीर्तित ।  
 स्योन सुखे क्ली त्रिस्तत्साधनेथाऽर्केऽकदीधितौ ॥६६ ९॥  
 समुद्रे त तुसताने त तुवायस्य चापि ना ।  
 स्रज्या तु मालाकारेऽपि मत्स्यघाते तथा त्रिषु ॥६६३ ॥  
 स्रया तु पदसङ्घाते पुलिङ्ग परिकीर्तित ।  
 स्रवा रज्जौ त तुपदसङ्घात स्त्री प्रजापतौ ॥६६३१॥  
 स्रवण तु सुतौ क्लीब स्रवण कतकद्रुमे ।  
 स्रवती तु स्त्रिया नद्या स्रवत्तु स्रावके त्रिषु ॥६६३२॥  
 स्रष्टा तु स्राष्टकन्मात्रे तर्ना हारावरिश्रयो ।  
 स्रावक स्रावणाया वा स्रवणस्य च कत्तरि ॥६६३३॥  
 वा यवत्स्रावक त्वेतमरिच क्लीबमिष्यते ।  
 स्रुक स्रुवे शोषणे गयाम् [स्त्रीलिङ्ग पारकीर्त्तिता] ॥६६३४॥  
 स्रतस्त्रिषु युते स्त्री तु हिङ्गुपया स्रता मता ।  
 स्रुव आचरणारये स्याद्यज्ञपात्रातरे पुमान् ॥६६३५॥  
 अथ स्रुवा स्यात्सलक्यां मूर्वायामपि च स्त्रियाम् ।  
 स्रोत प्रवाहे सरितां जलेऽपि स्यान्नपुसकम् ॥६६३६॥  
 स्रोतस्विनी स्त्रिया नद्या स्रोतस्वति पुनस्त्रिषु ।  
 स्रोतस्यश्चोरशिवयो स्रोतोयोगिनि तु त्रिषु ॥६६३७॥  
 जलस्य निर्गमद्वार इन्द्रियेऽपि तथा मतम् ।  
 स्व धने स्व पुमाज्ञातौ त्रि त्वात्मात्मीययोरयम् ॥६६३८॥  
 स्वक्षस्तु त्रिषु यस्याक्षशदाथ शोभनोऽक्षि वा ।  
 तत्र तत्रापि च स्वर्थे स्वक्षा पूर्वेष्वपरत्र तु ॥६६३९॥  
 स्वक्षी स्याच्छोभने त्वक्षे परवल्लिङ्गतेष्यते ।  
 स्वगुप्ता कपिकच्छवा च गुरुमे लज्जालुनामनि ॥६६४ ॥  
 स्वगृह पक्षिमेदे द्वे यौगिके तु यथायथम् ।  
 स्वजस्तु शोभने छागे द्वयोरौरसपुत्रयो ॥६६४१॥  
 प्राणिजात्यतरे त्रिस्तु स्वशदार्थसमुद्भवे ।  
 प्रशस्ताज्जार्थयुक्ते च स्यात्प्रशस्ते त्वजे त्रिषु ॥६६४२॥



आस्वादने च स्वदन शोभनेऽप्यदने मतम् ।  
 स्वधितिस्तु पुमावज्जे कुठारेऽपि प्रकीर्तित ॥६६४३॥  
 स्वन पुनबहुव्रीहौ सुजग्धे रुचिते त्रिषु ।  
 शोभनवादिसयुक्ते वने तस्यानपुसकम् ॥६६४४॥  
 स्वप्न सुप्तस्य विज्ञाने स्वापे चापि पुमामत ।  
 स्वभूब्रह्मणि विष्णौ च पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥६६४५॥  
 स्वयवर पुमानुक्त स्वयवरणकर्मणि ।  
 पतिवरायां तु स्त्रीत्वे कीर्तितैषा स्वयवरा ॥६६४६॥  
 स्वयम्भूस्तु विरिञ्चे ना क्ली स्वयम्भुविहायसि ।  
 स्वर षडजाद्युदात्ताद्योरवर्णे कण्ठजस्वने ॥६६४७॥  
 अरे च शोभने पुसि त्रि तु स्याच्छोभनारके ।  
 अतिशीघ्रेऽप्यथो सामस्वे यज्ञादिषु षट्सु नप ॥६६४८॥  
 स्वरस तु दिने तद्वद्देहे च क्लीबमिष्यते ।  
 स्वराडैश्वर्यवद्देहे स्वस्य राज्ञि त्रि ना हरौ ॥६६४९॥  
 चतुस्त्रिंशत्स्वरेऽतस्था छन्दोभेदे स्त्रियां स्वराट् ।  
 स्वरित स्वरभदेऽनुदात्तोदात्तद्वयात्मके ॥६६५०॥  
 अथ तस्वरयुक्ते च स्वगतेऽप्यभिधेयवत् ।  
 स्वरुवज्ज तथा यूपशकलेऽपि पुमामत ॥६६५१॥  
 स्वर्णस्तु स्याद्रक्तनालिकेरे स्वर्णं तु हेमनि ।  
 स्ववासिनी चिरण्यां च नववध्यामपि स्त्रियाम् ॥६६५२॥  
 स्वसरो आतरि क्ली तु स्वसर दिवसे गृहे ।  
 स्वसुशब्द स्त्रियामुक्तो भगिन्यामङ्गुलावपि ॥६६५३॥  
 स्वस्तिरस्ति स्तुतौ स्वस्य विश्विसृष्टणसञ्चये ।  
 स्वस्तिकस्तु पुमान् गेहवास्तुविषयसनातरे ॥६६५४॥  
 त्रिकोणसङ्गके चापि स्त्रीणां स्याद्भूषणान्तरे ।  
 सुनिषण्णाह्वये शाकस्तम्बे पङ्कसमुद्भवे ॥६६५५॥  
 द्वयोस्तु स्वस्तिकश्चाषनाग्नि पक्ष्यन्तरे मत ।  
 उल्लूलौ स्यात्स्वस्त्ययन क्षेमेण गमनेऽपि च ॥६६५६॥

स्वादुर्मधरनाम्नि स्याद्रसे त्रिस्तु तदविते ।  
 त्रये मृष्टे मनोज्ञं च क्लीं तु स्वादुजले मतम् ॥६६५॥  
 अथ स्याद्वी स्त्रियामेषा द्राक्षाया परिकीर्त्तिता ।  
 स्वादुकण्टक उक्तो गोक्षुरे कोऽया त्रिकङ्कते ॥६६५८॥  
 स्वादुगन्धा मता स्त्रीत्वे मधुशिग्रौ च यौगिके ।  
 स्त्री तु स्वादुरसा द्राक्षाकाकोलीमदिरासु च ॥६६५९॥  
 स्वादौ तु स्याद्रसे पुंसि बहुग्रीहौ तु भेद्यवत् ।  
 स्वाध्यायस्तु भवेद्वदे वेदस्य च जपे तथा ॥६६६॥  
 स्वामी पुमान्स्कन्ददेवे त्रिषु नाथ प्रकीर्त्तित ।  
 स्वामिन्यनृपवश्याया नाख्योक्तौ च नृपस्त्रियाम् ॥६६६१॥  
 स्वाहाऽऽनेग्यां च वाचि स्त्री हविर्दाने तदययम् ।  
 स्वेद स्वेदजले स्त्रित्तिक्रियास्वेदनयोरपि ॥६६६२॥  
 स्वेदनी कटुभाण्डे स्त्री स्त्रित्तौ क्लीं स्वेदन मतम् ।  
 स्वेदना तु नना स्वेदययर्थे परिकीर्त्तिता ॥६६६३॥  
 स्वैरस्तु मन्दे स्वच्छ देऽप्यभिधेयवदिष्यते ।  
 स्वैरी स्वतन्त्रे बन्धक्या पुन स्यात्स्वैरिणी स्त्रियाम् ॥६६६४॥

ह

ह पादपूर्त्तिसम्बुद्धिनियोगक्षेपनिग्रहे ।  
 निन्दाया च प्रसिद्धौ चायय सक्रोधवारणे ॥६६६५॥  
 अथ पुंसि शिवे शू ये त्रयोऽस्मिन् स्वर्गेऽप्सुधारणे ।  
 च त्रेऽपि पापहरणे त्रि तु स्याद्रक्तशुष्कयो ॥६६६६॥  
 तथोत्तरपदस्थोऽय घातके त्याजकेऽपि च ।  
 हा स्त्री वीणासुरतयोर्ह ब्रह्मण्यायुषे मुदि ॥६६६७॥  
 रत्न योतिषि चाह्वाने भवेद्वीणाध्वनावपि ।  
 हसयय मत क्रोधे विनयामत्रणेऽपि च ॥६६६८॥  
 हस सितच्छदे द्वे स्या महिषेऽप्यश्वभिद्यपि ।  
 पुमांस्तु विष्णौ परमात्मनि सूर्ये शिवे सारे ॥६६६९॥

स्याभिलोभनृपे देहवायुभेदे गिरौ गुरौ ।  
 गतिभेदे मन्त्रभेदे मत्सरे ध्रुवहे ध्रुषे ॥६६ ॥  
 छदोभिदोस्तालभद हकारे रजतेऽपि च ।  
 त्रिस्तु श्रेष्ठऽग्रे शुद्धे ज्वेते हस प्रकीर्तित ॥६६ १॥  
 हसक पादकटके तालभेदे तथा पुमान् ।  
 लघुगुरुलघुर्यत्र स तालो हसक स्मृत ॥६६ २॥  
 कषमाने हसपद स्वरभक्त्यतरे पुन ।  
 हसपदा स्त्रियां हसपदी छन्दोब्रुभेदयो ॥६६ ३॥  
 हसपादी हसपद्यां क्ली तसदूरेऽपि पारदे ।  
 हसमालाकृष्णपक्षहस छन्दोभिदोरपि ॥६६ ४॥  
 हसवास्त्रि सहसेऽथ स्त्रिया हसवती मता ।  
 हसपद्यां वीरसेनघाति-यां चक्रग-तरे ॥६६ ५॥  
 दुष्य तभार्याभेदे च स्वर्णभूमिपुरा-तरे ।  
 हसाङ्घ्रि पुसि सिदूरे हसाङ्घ्री स्त्री द्रुमा-तरे ॥६६ ६॥  
 हक्क पुसि गजाह्वाने हक्कोल्लकमिदि स्त्रियाम् ।  
 हञ्जिका तु स्त्रिया चेद्या तथा कञ्ज्यामपीष्यते ॥६६ ॥  
 वेश्याहरिद्राञ्जनकेशीषु हड्डविलासिनी ।  
 हठ पाण्ड्यां बलाकारे वारिपर्णीतृणेऽपि च ॥६६ ७८॥  
 हडिर्ना काष्ठनिगडे नीचजातिककिङ्करे ।  
 हत गते गतवति विषाणे मारिते त्रिषु ॥६६ ९॥  
 हतस्तु पुसि मार्गे स्याक्लीब तु गतिर्हिसयो ।  
 स्त्री तु कृत्सितकयाया गुणनादौ हतस्त्रिषु ॥६६ ८॥  
 हतको दुर्मगे नीचे कातरे चापि वायवत् ।  
 हतौजा ज्वरभदे ना हतसवे पुनस्त्रिषु ॥६६ ८१॥  
 हनु-र्याधावायुधे ना हिंस्रे पुनरय त्रिषु ।  
 हथः ग्रहारेऽपि वधे स्याभिराशे तु वायवत् ॥६६ ८२॥  
 हनुर्ममि च मृयौ च महारु-यायुधे पुमान् ।  
 -याधिभेषजभिद्वेश्यास्वेषा स्त्रीत्वे हनु क्वचित् ॥६६ ८३॥

हनुर्वैदेहशनकीजे गण्डोर्वाशके द्वयो ।  
 भलांशे गण्डसदृशे क्लीब शतपथे हनु ॥६६८४॥  
 हनुष पुसि कोपे स्याद्राक्षसे तु द्वयोर्मत ।  
 हत हषत्पराशोकामत्रणेष्वयम मतम् ॥६६८५॥  
 हन्तकारस्तु भिक्षासु षोडशस्यपि योदिता ।  
 ग्रासमात्रौदन भिक्षा तत्र हतकृतावपि ॥६६८६॥  
 हयो गतौ घनूराशावि द्वे चद्राश्वभिधपि ।  
 कामशास्त्रीयपुंभेदे चतुलघुगणेऽप्यथ ॥६६८७॥  
 हयी द्व चमरेऽप्यश्वेऽश्वगन्धाया स्त्रिया मता ।  
 स्त्रीत्वे हया क्वचिवदृष्टा हय प्राजितरि त्रिषु ॥६६८८॥  
 हयगन्धा हयगन्धाऽप्यश्वगन्धाजमोदया ।  
 हयगन्ध पुन क्लीब कृष्णसौवचले मतम् ॥६६८९॥  
 हयग्रीवोऽतारोऽपि विष्णोर्दैत्येऽपि तद्धते ।  
 हयग्रीवा पुन स्त्रीत्वे दुर्गायां परिकीर्त्तिता ॥६६९०॥  
 हयन हायने कर्णोरथेऽपि गमने स्मृतम् ।  
 हयप्रियाऽश्वगन्धा स्याद्यव तु च हयप्रिय ॥६६९१॥  
 हयवाहन इत्येष स्याद्रैवतकुबेरयो ।  
 हयग्रीवे हयशिरा क्ली तु स्यादायुधातरे ॥६६९२॥  
 हयारि करवीरे ना महिषे तु द्वयोर्मता ।  
 हरोऽनौ भाजके शम्भौ हारके त्रिद्विगर्दभे ॥६६९३॥  
 हरको भाजके दीर्घासौ ना त्रि शठचौरयो ।  
 हरण करणारये चेष्टान्तरे नाट्यविश्रुते ॥६६९४॥  
 दृढदुष्करचित्रेषु योधानामपि कर्मसु ।  
 अश्वानां देयभेदे च क्वचिद्देशे हि दीयते ॥६६९५॥  
 योग्याशनादिक तेषां शरीरपरिपुष्टये ।  
 पञ्चाह्वीजनिषेकस्य तथा हरतिकर्मणि ॥६६९६॥  
 यौतकोष्णाम्बुशुक्रेषु सुवर्णेऽपि नपुसकम् ।  
 गणितज्ञश्रुते सरयाताडनेऽपि भुजे तथा ॥६६९७॥

चम्पकप्रसव चाथ चम्पके हरणः पुमान् ।  
 हरस्य शेखरे नखी गङ्गाया हरशेखरा ॥६६९८॥  
 हर क्रोधे जले लोके योतिषि वलति स्रजि ।  
 ग्रहण सातमग्ने क्ली सामभिः सु च पञ्चसु ॥६६९९॥  
 अग्निसामविशेषेषु सात क्ली पञ्चसु स्मृत ।  
 हराहरस्तु निश्वासे मरणाञ्चसरोत्थिते ॥६ ॥  
 योग्याचारेऽपि च तथा दानवौ तु हराहरौ ।  
 हरिरर्काग्निवाते दुयमेद्रभगग्निषु ॥६ १॥  
 सिंहाराशौ भक्त हरौ सुपर्णे ब्रह्मशुक्रयो ।  
 गिरिभिर्द्वर्षभिच्छन्दोभेदेषु हरयो जना ॥६ २॥  
 बौद्धसरयाविशेषेऽथ हरी स्त्री कपिमातरि ।  
 अशौ शकहये मुद्रे रुक्मे रुक्मामवणके ॥६७ ३॥  
 श्वतवर्णे हरिद्वर्णे कपिले त्रि तु तैयुते ।  
 शूद्रानिषादजे चश्वकपिमेकशुकादिषु ॥६ ४॥  
 मयूरे कोकिले हस भृगालेऽपि प्रकीर्त्तित ।  
 सिंहेऽश्वभेदे हरितपीतवर्णे हरिर्द्वयो ॥६७ ५॥  
 हरिकेश पाण्डुकेशे त्रिर्ना सवितरीश्वरे ।  
 क्वचिच्छिवस्य प्रमथे य क्षेत्रोद्याननायक ॥६ ६॥  
 हरिचन्दनमस्त्री स्याद्दवाना पादपातरे ।  
 चन्दने ताम्रवर्णे च पीतचन्दनसञ्जवे ॥६ ॥  
 क्लीब तु कुङ्कुमे पद्मकेसरेऽपि प्रियाङ्गके ।  
 चन्द्रातपेऽपि च प्रोक्त हरिचन्दनमिन्द ॥६७ ८॥  
 हरिणो द्वे ताम्रमृगे हसेऽपि नकुलेऽथ ना ।  
 शिवे विष्णौ प्रमथभिर्नागभिर्द्वीपभिस्त्वपि ॥६ ९॥  
 मञ्जिष्ठायां पीतयूथीस्वर्णप्रतिमयोरपि ।  
 चारुनार्यन्तरेऽत्यष्टवृत्तभेदे हरिण्यसौ ॥६७१ ॥  
 हरिण पाण्डुरे वर्णे पुमांस्तद्वति तु त्रिषु ।  
 स्वरभक्त्यन्तरे देववनितायक्षिणीभिदो ॥६ ११॥

हरिणाक्षी गन्धवस्तुभिन्नार्योर्ना निशाकरे ।  
 हरिणिस्तु स्त्रियां मृयौ कल्याया च प्रकीर्त्तिता ॥६१२॥  
 हरिमरकते सूर्ये सूर्याश्वे हरितेऽपि च ।  
 पिङ्गे वर्णे तद्वति तु वायव स्यान्नन तृण ॥६१३॥  
 स्त्री तु नद्यङ्गुलीदिक्षु हरिदेवा प्रकीर्त्तिता ।  
 हरितो मुद्गराभिभदयो पालाशवणके ॥६१४॥  
 अथवमत्रभेदेऽथ हारद्रानीलद्वयो ।  
 पिङ्गद्राक्षाविशेषेऽपि स्वरभक्त्यतरेऽपि च ॥६१५॥  
 हरित क्ली सुवर्णेऽपि शाके स्थाणयकेऽपि च ।  
 त्रि तु तद्वणयुक्त स्त्री हरिता हरणीति च ॥६१६॥  
 द्वे तु सिंहेऽथ हरिता हरे स्याद्भावकर्मणो ।  
 अस्त्री हरितक शाके तृण तु क्लीबमिष्यते ॥६१७॥  
 केचिपेदुहरीतक्या अर्थे हरितकीं स्त्रियाम् ।  
 हरिताल धातुभेदे दूर्वाया हरिताल्यसौ ॥६१८॥  
 भाद्रशुक्लतृतीयायामपि खड्गदले स्त्रियाम् ।  
 वायौ च व्योमरेखाया हरिताली क्वचिन्मता ॥६१९॥  
 हरिताश्म मरकते तुत्येऽपि च नपुंसकम् ।  
 हरिद्रस्तु कलाप्यतेवासिनि प्रथमे पुमान् ॥६२॥  
 तथा दारुहरिद्रायां वृक्षमात्रेऽपि कीर्त्तित ।  
 हरिद्रवस्तु सोमेऽपि नागकेसरचूर्णके ॥६२१॥  
 हरिद्रा का चनी प्रोक्ता हरिद्रो हरिचन्दनः ।  
 हरिनामा तु मुद्रे ना क्लीबे स्याद्विष्णुनामनि ॥६२२॥  
 हरिनेत्र उलूके द्वे क्लीबे पद्मे त्रि तु यौगिके ।  
 अथ मूढोन्मत्तयोस्तु वायवत्स्याद्धरिप्रियः ॥६२३॥  
 हरिप्रिय कदम्बेऽपि बधूककरवीरयो ।  
 विष्णुकन्दे तथा शङ्खे शिवे स्त्री तु हरिप्रिया ॥६२४॥  
 लक्ष्म्या सुरायामेकादश्यां तुलस्या तथा क्षितौ ।  
 हरिप्रिय क्ली मूले वीरणस्य हरिचन्दने ॥६२५॥

हरिम थ पीतमुद्गग्निमथ चणके पुमान् ।  
 हरिमथज ह्येष ना धाये चणकाह्वये ॥६ २६॥  
 पठितोऽमरसिंहेन वैजयत्यां त्वपाठि स ।  
 कृष्णमुद्ग्रेऽथ स त्रि स्याद्धरिमथसमुद्भवे ॥६ २ ॥  
 हरिरोमा विरिञ्चेऽपि तथा शक्र पुमामत ।  
 हरिलोचन ह्येष उल्लके ककटे द्वयो ॥६ २८॥  
 जयाया च तुलस्यां च लक्ष्म्या च हरिवलभा ।  
 हरिवाहन इद्रेऽपि सूर्येऽपि गरुडेऽपि च ॥६ २९॥  
 त्रि स्वर्णस्थ हरिशयो यातेऽग्रे यजुषि स्त्रियाम् ।  
 हरिश्ची पिङ्गशोभेऽपि सोमाश्वादिमति त्रिषु ॥६ ३ ॥  
 इद्रे हरिहय स्कन्दगणशरविषु क्वचित् ।  
 गरुडेऽपि वृषे शम्भोदक्षे हरिहरात्मक ॥६ ३१॥  
 क्लीब हरिहरक्षेत्रे मत हरिहरामकम् ।  
 हरिहेतिस्तु चक्रेऽपि तथैवे द्रायुधे द्वयो ॥६ ३२॥  
 हरेणुर्भेषजे कौ तीसङ्ग स्त्री परिकीर्त्तिता ।  
 कलायधान्यभेदे तु रङ्गटीसङ्गके पुमान् ॥६ ७३३॥  
 हर्ता नेतरि चोरे च ऋदता बान्धव मत ।  
 हर्म्य प्रासादपृष्ठेऽपि गृहभेदे गृहेऽपि च ॥६ ३४॥  
 हर्यश्चो ना कुबेरे द्वे सिंहे त्रि कपिलाक्षके ।  
 हर्यश्चस्तु भवे पूवराजभेदे पुरन्दरे ॥६ ३५॥  
 हर्षयित्तु सुवर्णे क्ली हर्षयितुस्त्वय त्रिषु ।  
 प्रियवदे तथा रङ्गोपजीविन्यनुवत्तके ॥६ ३६॥  
 हर्षुल शिपिमृगयोर्द्वे पुंसि तु बुधग्रहे ।  
 भेद्यलिङ्गो हासशीले हर्षशीले च कामिनि ॥६ ३ ॥  
 हलिज शाकवृक्षेऽपि कदम्बे केतकीद्रुमे ।  
 हलिज प्रसवे तेषा नपुसकमुदीरितम् ॥६ ३८॥  
 हली तु बलभद्रे ना हलनयभिधेयवत् ।  
 शक्रपुष्पाह्वयस्तम्बे हलिनीति स्त्रिया मता ॥६ ३९॥

हलिप्रिया सुरायां स्त्री कदम्बना हलिप्रिय ।  
 हवस्तु यज्ञ आशायामाह्वाने वह्निहोमयो ॥६४॥  
 हवनी मुचि ना त्वग्नौ होमे क्लीब हवन मतम् ।  
 हविघृते जले हये सा त क्लीब प्रकीर्तितम् ॥६४१॥  
 हविष्यस्त्रिहवि साधौ तिले पुास प्रकीर्तित ।  
 अग्नावाहवनीयाग्नौ देवाग्नौ ह यवाहन ॥६७४२॥  
 हसत्यङ्गारशकटो त्रिस्तु हासिविकासिनो ।  
 हसित दृष्टद ते क्ली हासे स्याद्वासमात्रके ॥६४३॥  
 अथो हसितवत्येतत्फुलेऽग्रहासते त्रिषु ।  
 हस्तोऽस्त्री किष्कुमानेऽपि पाणा घ्राण च दतिन ॥६४४॥  
 हस्त नि घातके क्ली तु सनिपाते बलाहितौ ।  
 केशार्थात् पर केशसमूहेऽपि च दृश्यते ॥६४५॥  
 हस्तावाप शरादाने यधनार्थेऽपि पाणिना ।  
 आवापे धान्यबीजादे पुलिङ्ग परिकीर्तित ॥६४६॥  
 हस्तिरुणो रोचकारयकम्बले हस्तिन श्रुतौ ।  
 निवारणार्थे शस्त्रस्य भटाना फलकातरे ॥६४७॥  
 हस्तिचारो गजत्रासहतौ शरभसनिभे ।  
 शस्त्रभदऽपि योधाना तथा चारेऽपि हस्तिनाम ॥६४८॥  
 हस्ती द्वयोर्गजे भृङ्गे हस्तिनी तु स्त्रियां मता ।  
 कामशास्त्रप्रसिद्धे स्त्रीवशेषे हस्तिनापुरे ॥६४९॥  
 पुमान्हस्तिनस्त्र पुयां द्वारकूटस्थ यौगिके ।  
 हस्तिमल्लो गणेशेऽप्यैरावतेऽपि पुमा मत ॥६५०॥  
 हाटकौ हमनि मत क्लीबपुलिङ्गयोरयम् ।  
 हाटक क्ली कुत्तभदे स्यात्त्रिकण्टकसस्थितौ ॥६५१॥  
 हान्त्रो द्वे राक्षसे क्लीब हान्त्र स्यान्मरणे रणे ।  
 हायन शालिभिच्छिन्नोर्ना न स्त्री वत्सरेऽर्चिषि ॥६७५२॥  
 हारो मुक्तावलौ देवालयकक्ष्यासु तु स्त्रियाम् ।  
 हारा हारी तु नाम्नेव दुष्टा कन्या प्रकीर्तिता ॥६७५३॥



अथ च त्रिषु सागर्णे हिमस्यमुदीरितम् ।  
 हिरण्य मानभदे न धने स्पर्णे कपदके ॥ ७ ॥  
 अक्षये चाप्यकुप्ये च रेतस्यपि नपुसक्रम ।  
 हिरण्यकशिपु पुास प्रह्लादपितरि स्मृत ॥ ९ ॥  
 हिरण्यचित्रितकुथ पुन स्यापुनपुसक्रम ।  
 हिरण्यकशिपुर्थेऽपि तथैव प्रकीर्तितम् ॥ ६ ॥  
 हिरण्यबाहु शोणारयनदे त्वषमलोत्तने ।  
 हिर यवर्णा नद्या च श्रिया योगे यथायथम् ॥ ६ १ ॥  
 हीनस्त्रिरुने गर्भे च ना तु केसरपादपे ।  
 हीर शिवे ना द्व सर्पासहया क्ली तु हीरके ॥ ६ ७ २ ॥  
 हुहुको ना हुहुक्के द्व मत्तदात्यूहपक्षिणि ।  
 हृच्छयो म मथऽपि स्यात्कुक्ष्यग्नौ च तथा पुमान् ॥ ६ ३ ॥  
 हृणि स्त्रिया क्रुधि प्रोक्ता हृणिस्तु वलति त्रिषु ।  
 हृत् क्लीब चैव चित्त स्याद्वक्षस्यपि तथा मतम् ॥ ६ ४ ॥  
 हृदय तूरसि स्वाते वृकेऽपि परिकीर्तितम् ।  
 हृद्यस्तु ना वशीकारम त्रे स्याद्वदिके ह्रुमे ॥ ६ ५ ॥  
 कपित्थारये तत्फले तु क्ली दधत्यनुलेपनम् ।  
 मधुमद्ये च मध्नीकसङ्गे त्रिषु तु हृद्भवे ॥ ६ ७ ६ ॥  
 हृत्प्रिये हृद्विते हृज्जे चारौ हृद्या त्विय स्त्रियाम् ।  
 मन शिलाया छाग्यामप्यद्विसङ्गौषधातरे ॥ ६ ७ ॥  
 हृद्यग धः पुमानेष सूक्ष्मजीरक इष्यते ।  
 हृल्लेखस्तु पुमाञ्ज्ञेय औत्कण्ठ्य हृद्वुजातरे ॥ ६ ८ ॥  
 हृल्लेखा तु स्त्रिया मात्रभेदे तान्त्रिकविश्रुते ।  
 हृषि स्त्री दीप्तिपुष्टयोर्ना हृषतौ हृष्यतावपि ॥ ६ ९ ॥  
 द्रयोर्धात्वोरथालीकवादिभ्येष हृषिस्त्रिषु ।  
 हृषितस्तु सरोमाञ्चे विक्षिते च मनोहरे ॥ ६ ८ ॥  
 हृष्टे प्रतिहते स्त धे रोमादावपि च त्रिषु ।  
 हृष्ट हर्षे त्रिस्तु रम्ये विक्षिते हृषवत्यपि ॥ ६ ८ १ ॥

सरोमाञ्चे प्रतिहते स्तब्धे मेढऽपि रोम्णि च ।  
 हठा हलाऽनादरे द्वे हेठस्तु क्रधि पुस्यग्रम् ॥६७८॥  
 हति शस्त्रे द्वयोर्नाग्नि गाले चार्काविषि स्मृत ।  
 हतु प्रयोजके कत्त स्वतन्त्रस्य तथा पुमान् ॥६७८३॥  
 उपत्तौ कारणे वाद निमित्ते बीजरूपणि ।  
 हेमा पुमा स्याद्धमते हम कली कनके जले ॥६ ८४॥  
 हम कुब्ज पुन कलीबे द्वीपभेदेऽम्बुधीकृत ।  
 खाते भारतवर्षस्य प्रदशे सगरै स्थिते ॥६ ८५॥  
 हेमपुष्पी पीतयूथ्या ना तु स्याच्चम्पकद्रुमे ।  
 हेमलो ना शिलाभेदे द्वयोस्तु कृकलासके ॥६ ८६॥  
 हेमलस्तु त्रिषु स्वर्णकृयेष परिकीर्तित ।  
 हेरम्बस्तु द्वयोरेष महिषे कीर्तितोऽथ ना ॥६ ८७॥  
 प्रमथाना प्रभेदे च हेरम्बो विघ्ननायके ।  
 हेरुको बुद्धभेदे च महाकालाह्वये गणे ॥६ ८८॥  
 हला विलासप्रस्तावावज्ञासु स्त्री प्रकीर्तिता ।  
 हलि पुमास्या मात्तण्डे तथोक्त उपगूहने ॥६ ८९॥  
 अथ हैमवती गङ्गापाव योश्च स्त्रिया मता ।  
 स्वर्णक्षीरीहरीतक्यो शुक्ले चैव वचा तरे ॥६ ९०॥  
 कली तु हैमवत वर्षे भारते भेद्यवपुन ।  
 हिमवद्भिदि सम्बन्धिमात्रे हैमवत मतम् ॥६ ९१॥  
 होता तु हावके त्रि स्याद्वत्विग्भदे पुमानयम् ।  
 होत्र कली भवने होत्रा वाचि यज्ञेऽथ नार्च्यजि ॥६७९२॥  
 होच स्याद्यजमानेऽपि समुद्रेऽपि नपुसकम् ।  
 होम हव्येऽग्निहोत्रस्य शालाया च नपुसकम् ॥६ ९३॥  
 होरा लग्ने च लग्नार्धेऽहोरात्रेऽपि स्त्रिया मता ।  
 हदो मेषे द्वयोरुक्त पुस्यगाधजलाशये ॥६ ९४॥  
 हस्रोऽल्पे वामने चैकमात्रगर्णे यमे तु ना ।  
 हादिनी तु स्त्रियां वज्र तथा तडिति कीर्तिता ॥६ ९५॥

ह्रीकस्त्रिह्लाकगल्ल जाशीलेऽथ नकुले द्वयो ।  
 ह्रीकुल जागति त्रि स्याद्वनमार्जाररुके द्वयो ॥६७९६॥  
 ह्रीरुल जावति त्रि स्याद्वद्वयोस्तु वक इष्यते ॥६७९६७॥

## उपसहार

निरमायि महोद्योगैष्ठुद्रितश्च बहुयय ।  
 वाङ्मयाण्यनामा श्रीमि विद्यापराभिध ॥१॥  
 शब्दब्रह्मोद्भव शब्दब्रह्मण्येव समर्पित ।  
 निघण्डुसम्राट् शब्दार्थमार्मिहैरवलोक्यताम् ॥२॥  
 अमरहलायुधपुरुषोत्तमयादवहमकेशवादिकृतम् ।  
 श्रीमङ्गलविश्वमेदिनीधव तरिनरहरिप्रथितम् ॥३॥  
 भगवद्वास्कोपक्रममपि शर्मण्यावसानमिमम् ।  
 अभिधानमहाणवाधि विलोब्ध दृष्ट्वाऽऽकराबहुश ॥४॥  
 पद्यैर्दधा घूर्णिभिरलङ्कृता छात्रकुलत्तयै ।  
 आयोजनेन महता घटिता श्रीविश्वविद्येयम् ॥५॥  
 अभिधानकृतमैदम्पर्यम्प्रायो न बुध्यते ।  
 हेमचन्द्रो दोषमेत यथासाध्यमशोधयत् ॥

# शब्दानुक्रमशिका



# शब्दानुक्रमणिका

४ ५

श १ ६ ११ १ ३ ६३  
 श १ २ १ ५ ३१३२ ३२२५  
 ५ २ ६ २ ६६ ६१३ ६२६१  
 ६३६६ ६ ३  
 शक २ ५२२६  
 शमत २  
 शुभती ३  
 स ६५४३  
 सद्वातार ३३५  
 सत्तधि २२१३  
 हस् ५ ६  
 क ५  
 कथ्यक ४१६  
 कनिष्ठ ६  
 कनिष्ठक ६  
 ककश २ २  
 कल ३ ११  
 क क  
 क का  
 काय ५ ५६  
 कालबु धा ६२ ६  
 कालभय  
 कुप्य ६ ६६  
 कुल  
 कुला  
 कुशलकम १५२६  
 कपार  
 कूपारा ६

अकवार ६  
 अकवारा ६  
 अकृत १  
 अकृतोद्वाह ५  
 अकोश ५३ ३  
 अक्त ११  
 अक्ता ११  
 अक्ति  
 अक्तु ११  
 अविलष्टमरण ५६ २  
 अक्ष १२ १ २ ६१ २६६६  
 अक्षज १५  
 अक्षत १६  
 अक्षतयोनि १  
 अक्षता १  
 अक्षवेचन ६ ३  
 अक्षवेचिन ४ ५  
 अक्षद्वय १२  
 अक्षपत्तन ३ ६  
 अक्षमाला १  
 अक्षय १ १२१५ ६ ६६  
 अक्षयगुण १६  
 अक्षयस्वग १२१  
 अक्षया १  
 अक्षर १६ ३ २५ ५१२४ ५  
 अक्षरपञ्चकित २२  
 अक्षरसामान्य ३६ ६  
 अक्षराक्षयसाममङ्ग २  
 अक्षरा १६

अक्षवती २२  
 अक्षविवत्त १ ५२  
 अक्षसघात ३  
 अक्षायकील ६  
 अक्षादिचालन ३२ ३  
 अक्षि २३ १६५२ २६ ६२ २ ३  
 ४६१५  
 अक्षिगद २६  
 अक्षित २४  
 अक्षितारका ६१२  
 अक्षितारा २ २६  
 अक्षिमल २६ २ ३ ६५  
 अक्षिर्वा भव ६१  
 अक्षि भव ३ ६२  
 अक्षिद्वज १२५ ५ ६  
 अक्षिरोग २५  
 अक्षिरोगविशय ६ ६  
 अक्षिवद्य ५६६६  
 अक्षीव २४  
 अक्षु २५  
 अक्षो १ ४१  
 अक्षण २५  
 अक्षणा २५  
 अक्षिहित २५  
 अक्षात २६  
 अखिल २६ ५४६१  
 अग २  
 अगति २६७७  
 अगतिभम २  
 अगम २  
 अगद ३१ ५१  
 अगस्ति २६  
 अगस्त्य २ २६ १ १३६  
 १ ६२ २ २ ३३७ ४३ ७ ५

६५ ५६६ ६६४ ५२१ ५७६  
 अगस्त्यद्व ४ २७  
 अगस्त्यपावप ६ ६२  
 अगस्त्यमनि ६१ ६ २ २५६६  
 अगस्त्यार्थि ४६२ ४२  
 अगह्य १६  
 अगाढ ३  
 अगाध ३ ३१ ५ ५ ३  
 अगाधजलाशय ६ ६  
 अगारकदेश ३३३६  
 अगुद ३१ ३२ १२४ १६३ २२५६  
 २ ६ ३ ४७ ६ ४ २  
 ६२६ ५१ ५५ ५ २६ २६  
 अगुरुवृक्ष ५३२४  
 अगुर्बी ३२  
 अगौकस्त ३२  
 अग्यर्थकाष्ठ ६६५  
 अगनामरुद्यज ४६१  
 अगनायी ३३  
 अनि ३३ ५ ५ ७ १११ १२ ६१  
 २१ २ ३१ ५१ ६३ २ २६  
 ५१३ ६ ३ ६७२ ४५ १ ६११  
 ४४ १ ६१ ११३५ ६ १२२१ २७  
 १३ ६ १ ६ २१६२ २२२५ ४१  
 ५ ६ २३१ ३२ ३ ७३ ६२ २४ २  
 १ ६११ २५ ५ ६६ २६ ६१५  
 १६५ ६ २७६७ २ ३ २६३४  
 ३ ७६ ३१७५ ३२२६ २ ४ ५६  
 ३३१३ २२७ २ ३४४६ ३५  
 ३६२३ ३ ६२ ३ ३२५४ ४ १६  
 ७ ४१६६ २२ २३ ५६ ४५२७  
 ४ ६ ५ ३६ ५६ ५२१२ १४ ३५  
 ३ ६४ ६ ५३६ ५४४७ ५१  
 ६१ ६ ५६२१ २७ २६ ५७६१ ६ १६

२ ६१ ५ ६२३४ ६ ६३ ६५ ६  
 ६६६३ ६ १४१ २  
 अनिकण ५५१७  
 अनिकाय ६२  
 अग्निकी १ ३४  
 अग्निकु ४ ५६५  
 अग्निगद्य ३  
 अग्निघटकार ६२ २  
 अग्निचिति ६२१  
 अग्निजिह्वाविशेष ११२५  
 अग्नि-बाला ३५ ३ ६ ३  
 अग्नित्रितय २५ ६  
 अग्निविगण ३  
 अनिधि ण्या तर ६१  
 अनिधव ३१  
 अग्निस य ३५ १३ १ ५  
 ६१६६ ६ २६  
 अग्निस-बहुन ५१६  
 अग्निस-थन ३५  
 अग्निस थास्यपादय २२३  
 अग्निस-थास ५२  
 अग्निसातु ५६१  
 अग्निसख ३६  
 अग्निसखी ३६  
 अग्नियोगिन ६४  
 अग्निविष्ठा १३ ५  
 अनिशिख ३६  
 अग्निशिखा ३ ३ ४ ६ ५  
 अग्निष्टोमाह्वययाग २३३२  
 अग्निष्ठ ३  
 अनिसमगद्यक ३  
 अग्निसामविशेष ६  
 अनिह्वय ३६  
 अग्निहोत्र ३ ३६ ५२२  
 अग्निहोत्रशाला ६ ६३

अग्निहोत्रहवणीनामधयमुगतर ६१५  
 अग्निहोत्रिन् ३६ ५३  
 अग्न्याधान ५२ २६  
 अग्न ४ ४२ ३४४६ ५३ ३५६३  
 ३ २ ५ १६ ६  
 अग्रग ३ २२ ६६ १  
 अग्रज १  
 अग्रज-मन ४१  
 अग्रत कृत ३ ५४  
 अग्रतस् ४२  
 अग्रतोय ३ ५५  
 अग्रनिहित ३४ ६  
 अग्रभासक ३५६  
 अग्रयात ६ ३  
 अग्रशिखा ४ ६१  
 अग्रहायणभास ५६ १  
 अग्राम्य  
 अग्रावस्थिति ३४ ६  
 अग्रकरण ३४५३  
 अग्नेविधि ३  
 अग्रविधिषू २ ४३  
 अघ १२ ३ ५६३२  
 अघनि क्रय ३ ६६  
 अघपान ५  
 अघशालिका ६२३  
 अघ्या १३१  
 अङ्क ५ २ ३३ ६  
 अङ्कगणित ५ ४२  
 अङ्कति ६  
 अङ्कन ५  
 अङ्कनीय ४६ १  
 अङ्कपालि ४  
 अङ्कवप ६  
 अङ्कस



અઙ્કુર ૪ ૧૧ ૨૬૪૬ ૩ ૬૫૬ | અઙ્કુરિકા ૫૬  
 અઙ્કુરિત ૫ ૬૧  
 અઙ્કુરિત ૬  
 અઙ્કુરશ ૪૫૬ ૬૫ ૧ ૪ ૬૫ ૬  
 અઙ્કુરશબ ધન ૩૨  
 અ કુશાગ્ર ૨  
 અઙ્કોટવક્ષ ૫ ૫  
 અઙ્કોલવક્ષ ૬૧૪૧  
 અઙ્કોલવલોષધ ૬ ૬૫  
 અઙ્ગ ૪૫ ૫ ૫૧ ૭૬૬ ૧ ૪ ૬  
 અઙ્ગજ ૫૨ ૫૩  
 અઙ્ગજા ૫૩  
 અઙ્ગજ ૪ ૭૨૨ ૨ ૬૫ ૨૧  
 અઙ્ગતિ ૫૩  
 અઙ્ગવ ૫૪  
 અઙ્ગવા ૫  
 અઙ્ગન ૫૫  
 અઙ્ગના ૫૫ ૫ ૨૨  
 અઙ્ગનાગ્રિય ૫૫  
 અઙ્ગભિન્ન ૧૩  
 અઙ્ગરાગ ૫૩૬  
 અઙ્ગવત ૫૧ ૬૧  
 અઙ્ગવિશ્વ ૫૬  
 અઙ્ગહાર ૫૬  
 અઙ્ગહીન ૧૩ ૨૧૨  
 અઙ્ગહૃતિ ૫૬  
 અઙ્ગસજાત ૫૩  
 અઙ્ગાર ૫૬ ૫૭  
 અઙ્ગારક ૫ ૫૬૭ ૧૧૬ ૧૩૬૨ ૪ ૩૩  
 ૬૨ ૪ ૫૩ ૬૩૬ ૬  
 અઙ્ગારવલરિ ૫  
 અઙ્ગારવલી ૫૬  
 અઙ્ગારશકટિ ૬૭૪૩  
 અઙ્ગારાપકર્ણી ૧૪ ૪

અઙ્ગારિકા ૫૬  
 અઙ્ગારિણી ૬  
 અઙ્ગારિત ૬  
 અઙ્ગારિતા ૬૧  
 અઙ્ગિન ૬૧  
 અઙ્ગિરસ્ ૬૨  
 અઙ્ગીકાર ૨૫૧ ૩૬ ૬૧૫  
 અઙ્ગીકૃત ૩૬૪  
 અઙ્ગીકૃતિ ૬૧૧ ૭ ૬ ૩૩  
 અઙ્ગુ ૬૩  
 અઙ્ગુલ ૬  
 અઙ્ગુલિ ૬૪ ૬૫ ૬ ૨ ૩ ૬૫૫  
 ૨૨૬ ૨૬૫૧ ૨ ૨૧૨ ૪૫ ૪  
 ૪૬૫૬ ૪ ૬૬ ૫૪ ૫ ૬૬૫૩  
 અઙ્ગ લિમુત્રા ૧૭૬૫ ૫૬૫૬  
 અઙ્ગુલિયોગિન ૬૬  
 અઙ્ગલિન ૧૨૨૧  
 અઙ્ગ ૧ ૬૭૧૪  
 અઙ્ગલીય ૬૬ ૭૧ ૨૫ ૪ ૨  
 અઙ્ગુ ૧૧૧ ૬ ૬૬  
 અઙ્ગાષ ૬૬  
 અઙ્ગુષી ૬૬  
 અઙ્ગુષ્ઠ ૬૪  
 અઙ્ગુષ્ઠમ યમામિતિ ૨૪૩૫  
 અઙ્ગુષ્ઠસરૂપશ ૧૧ ૧  
 અઙ્ગિ ૬૭ ૧૬૨૪ ૩૧૩૧  
 અઙ્ગિચિત્ત ૩૧૩૨  
 અઙ્ગિઘલિ ૩૧૩૫  
 અઙ્ગિયાસ ૩૧૩૨  
 અઙ્ગિરમાળ ૩૨૬૫  
 અઙ્ગલ ૬૭ ૨૫૬૩  
 અઙ્ગલા ૬૭  
 અઙ્ગ ૬ ૬૬  
 અઙ્ગબુદ્ધિ ૩ ૬૬

अ छमल

अछमडा ३५ ६

अच्छा ६६

अच्छुत ६६ ५ ६ ६४

अज २ ६५ ७

अजगघा २४६ ३ ३

अजगघास्त बक ३ २

अजगर ३६ १ ५ ५ ५ ६ ६१ ६

६ ६१५५

अजनित १

अजमन २

अजय २ १३

अजय १

अजपा १

अजपाल १

अजमेरुहवातर ३४६

अजमोवा २ ६६ ६ १३ २६५६

५ ५१६ ५२ १ ६१ ६६ ६

अजजर ५

अजभुङ्गी ५५

अजा २ ६३५४

अजाजी २२६

अजाजीव २२६६

अजित ७३ २ १

अजिता ३

अजिम ३

अजिर

अजिरा

अजिष्णु ५

अजिह्वा ६

अजीण ११ २

अज्ञातसस्तम्ब ६५२

अज्जर्ण ६६

अज्जति

अचन

अजन ५ ६ ६ १ १२६५ २६२

अजनकेशी ६६७

अञ्जनसन्निभ ३२

अञ्जनसम्बन्धिन ५ ६

अजनसाधन

अजना ६

अजनी

अञ्जलि ११६

अजलिकारिका १

अजलिमान १

अञ्जस २

अजि ३

अज ६ १३६ ३ ६६ ४१ १

अज्योगिन ५ ६

अज्ञान २६ १६३३ २३ ५

अज्ञानलिङ्गक २ १

अठकष ५२१ १ ५६ १ ५

६ २३

अट्ट १६६२ २ १३ ६ ५

अट्टालिका २ ११

अट्टन ५

अणावि ३६ ६

अणि ६

अणीचि

अणु ६ १३

अणुक ६

अण्ड ६ २३५५ २ ३ ६ ३६

अण्डकारकाण्य अपपिन् ३५

अण्डकोश ५६१३

अण्डज ६ ६१

अण्डजा ६१

अण्डभव ३५६२

अण्डीर ६१ ६२

अण्डीरा ६१  
 अण्डक ६२  
 अण्डोद्भव २ ५५  
 अण्वी ६  
 अतति ६३  
 अतर्कितप्रवृत्ति ६ १  
 अतल २  
 अतस ६३ ६  
 अतसी ६३ ३ १६ ६ २१३३ ३२६  
 ४७५२ ६६  
 अति ६४  
 अतिकुटिल १ २  
 अतिक्रम १ २ ५  
 अतिभरितु ३६१५  
 अतिअपण ५७ ६  
 अतिखर ३६१६  
 अतिगण्ड ६५  
 अतिघोष ४२६  
 अतिछन्न २१ ६  
 अतिजव २ ६  
 अतिथि ६६ ५१२ १ १  
 अतिथिद्विष ४४६६  
 अतिबु ४ १६४७  
 अतिघृष्ट ३३६३  
 अतिनिर्हारिन ५५१  
 अतिप्रमाणकाय ३२१  
 अतिप्रशस्त २३२७ २६ ५  
 अतिप्रशस्त्यक ६१ ६  
 अतिबल ६७  
 अतिबला ६७ ८६४ २२१६  
 अतिबलाह्वय ६३७५  
 अतिबलौषध ५५६२  
 अतिबालवधि ६३४६  
 अतिबालिश ३ ६  
 अतिभास्वर २ ५२

अतिमनोहरगन्ध ३१  
 अतिमद ३१  
 अतिमक्त ६७  
 अतिमक्तक १२६  
 अतिमक्तकृता ३५  
 अतिमक्ताख्यपुष्पगन्ध ३ १६ २  
 अतिगुवन ५१ ६  
 अतियोग ५ ६३३  
 अतिरक्त ४६ ७  
 अतिरात्रायस्तोम ६२ ६  
 अतिरेक ५ ६  
 अतिवत्तल ५५ ३  
 अतिविषा १५५२ ३३१ ५१  
 ५४ ६६  
 अतिविषौषध ३३  
 अतिवद्धि २६  
 अतिबल ६  
 अतिशब्द ६३६  
 अतिशय ४ ३७५ ५४ ५७ २  
 अतिशीघ्र ६६४  
 अतिशोभन ६२६६  
 अतिसर्जन ६  
 अतिसार ५२ ५  
 अतिसूक्ष्म १ २  
 अतीक्ष्ण १४२३  
 अतीत १२१३ १ ३५ ३ ५५ ४ २६  
 अतीतातवा ३ ११  
 अतीताथ ३ १  
 अतघातु ६३  
 अतु ६६  
 अनु १  
 अस्थ ताभ्यस्तताहुतु ६३  
 अस्थय १  
 अस्थम्लपर्णी ५ ६२  
 अस्थय १ ३६ ६४ ६

अयर्थ १ ३ १  
 अत्यवधुत ६१ ५  
 अयष्टवृत्तमव ६ १  
 अत्याकार १ १  
 अयाकृतिमत १ १  
 अयावर ६३२६  
 अत्याकृद् १ २  
 अयाहित १ २  
 अ- क्ताख्य अतुरणीत्यक्षरकृत्-वत् ३६१२  
 अयुष्ण २ ६५  
 अत्यह १ ३  
 अयूहा १ ३  
 अन्न १  
 अन्नप २६ २  
 अवर १  
 अथ १ ४  
 अथबणि १ ५  
 अथवन १ ६ ३६ २  
 अथवमन्त्रमव ६ १५  
 अव १ १  
 अवशिण ६३६४  
 अवनीय ५२६  
 अविति १ ६ ११२ २६२  
 अवृत् ६ ३६  
 अवृष्ट १ ५  
 अवष्टवन्तहास ६६२२  
 अवष्टि ११  
 अढा ११  
 अवमत १११ ३६३ ६३ ६४३ ५५१  
 ५६३  
 अघनि ११२  
 अग्रि २ ६ ११३ १ २२६ ३१२५  
 ३५२ ३५ ४  
 अग्रिकटक २५ १  
 अग्रिकष्टक ४४ १

अग्रिजा ११३  
 अग्रिपति १६ १  
 अग्रिप्रान्तपर्वत ३२६  
 अग्रिभेव २५६६ ३१६३  
 अघ पात २६६३  
 अघ पुष्पी ४ ६५  
 अघम ११ १ १६२ २१५ ३३६  
 ३५ २ १ ५१४६  
 अघमर्ण १ २  
 अघर ११  
 अघम १ ६ १५२२  
 अघवा २२  
 अघस २ १  
 अघ स्तिरा ६५  
 अघि ११५  
 अघिक १ ११५ १६ २६ २५ ३ २६ ५  
 अघिकरण ११५ ५२ २ ६  
 अघिकाङ्ग ११६  
 अघिकार १ ११५ २ २ २४४१  
 २ ६ ३२३१ ३ ३५ ३६१ ३ १  
 ४५६  
 अघिकारिन ३ ६६  
 अघिकार्थ  
 अघिकृत ११ १२३ १३१३  
 अघिकृति ११५  
 अघिक्षिप्त ११  
 अघिक्षप १ १  
 अघिक्षप्य ३ २  
 अघिगम ३ ६५  
 अघिपति ११ ६५  
 अघिमास ३ ४ २६  
 अघिरोहण ११६  
 अघिरोहणी ११६ ३ ३  
 अघिवास ११६ १२  
 अघिअयण १२

अधिभयणी १२  
 अधिष्ठातृ २  
 अधिष्ठान १२१ ५२  
 अधीत ५५७३  
 अधीतवेव ५ ५  
 अधीन ३६ १ ६५ ५२५६  
 अधीर १२२  
 अधष्ट ५६ ५  
 अधुष्या १२३  
 अधोमख ३ ६६  
 अधोवस्त्र ३१  
 अधोवद्विरोग ५३३  
 अध्यक्ष ११ १२३ ५१ ५६  
 अध्यण्डा १२  
 अध्ययन १२५  
 अध्यवसाय १२४ २३  
 अध्यात्मन ६ ६  
 अध्यात्ममव ५३  
 अध्यातु १२५  
 अध्यापक २६ ६ २ ६५२६  
 अध्यापन ६ १  
 अयाय १२५ १२५७ ३ ६२ ६३४५  
 अयारूढ १२६  
 अध्यासन १२१  
 अध्याहार ६  
 अयूढ १२६  
 अयूढा १२६  
 अध्वग ३ ६  
 अध्वन १२७ १ ५२ ३६१६ ४३  
 ४६ ५१३४ ५५६२ ६३३६  
 अध्वनि २३३६  
 अध्वनिर्गम २६ ६  
 अध्वमान ६५ २  
 अध्वर १२ १२ ६ ६ २ ६२ ६ ६६  
 ६२३१

अध्वरकम योग २३  
 अवरत्नतिन ५२५  
 अवरहतपश २  
 अध्वजु १  
 अध्व २३१ ३३१२ ५२५ ६२२५  
 ६५६६  
 अनघ १२ १२६  
 अनङ्ग १२६ १३  
 अनजन १३  
 अनङ्ग १३१ २३१ २ ६ ३  
 ६२ ६  
 अनङ्गही १३१  
 अनङ्गवाही १३१  
 अनत १३१ २ ५  
 अनतर १ ५  
 अनन्ता १३२  
 अनताण्यसपराज ६१२  
 अनयपुत्रविप्राशायविप्रज ६१३  
 अनयबध २२३  
 अनपालि १३५  
 अनपत्त ३  
 अनय १३५  
 अनय ११६६  
 अनर्थकवचस् ३६५  
 अनर्थकारित १३१५  
 अनल १३६ २ ६३ ३२३६ ३ ३  
 ५५४ ५६७१ ६३६५  
 अनलाधारपात्र २ ५  
 अनलिका ५४ ३  
 अनवगाढ ३  
 अनवधान २५  
 अनवधि ३२  
 अनवस्थित २ ७७  
 अनशन ३७६५

अनास् १३६  
 अनाकृति २६ ३  
 अनाजीवयति कृति २३  
 अनावर ३ ६ २ ५ ६ २  
 अनात (प्त ?) ३ २  
 अनाप्तसकृतिवेश्या ३ २  
 अनामिकाङ्गुलि ६ १५  
 अनाय (आनाय) २२ ६  
 अनार्य १३  
 अनालोपकरि २२१ २  
 अनासवरण २ ६  
 अनिघन १६१  
 अनिमिष १३  
 अनिमेषवत् १३७  
 अनिम्न ७१६  
 अनिरुद्ध १३ ५२  
 अनिरुद्धस्त्री ६  
 अनिरोध ५ ६६  
 अनिल ६ ७ १३ १६६६ २ ६  
 २५६५ ३ ५ ४ ४५ २ १ ४४ ६  
 ५२६ ६ ६११२ ६३३  
 अनिलरणद्वण १३  
 अनिलयाधि ४ ६  
 अनिशस्त ४ ४  
 अनिशित ६३  
 अनिष्ट ५ ५  
 अनीक १३६  
 अनीकस्थ १३६  
 अनीकिनी १  
 अनीति १३५  
 अनीशवादिन २ २  
 अनु १ १ २  
 अनुकम्पन ६३ ६२५  
 अनुकम्पा ४ ४६६ १ ६ ६ ६ ५६६  
 अनुकम्प्य २४१

अनुकष १ ३ ६  
 अनुकषण १ ३  
 अनुकल ३६६१ ३ २६  
 अनुक्रम १४१  
 अनुक्रोश १ ३ ५ ६११३  
 अनुग १ —४५ १  
 अनुगति ६३ ६  
 अनुगम १  
 अनुगमन १२  
 अनुगामिन १४४  
 अनुग्रह १६ ५  
 अनुचर १ ५ २५  
 अनुज ४३ २२ ४ ५ ६ ६५  
 अनुजीविन १४५  
 अनुबल ५६  
 अनुज्ञा १५३ ३ २ ६३२६  
 अनुज्ञात ५ ६  
 अनुज्ञापन ५४  
 अनुज्ञापित ५ ६  
 अनुतष १४६  
 अनुतष १४६  
 अनुताप २६४ १६१  
 अनुत्तर १ ६  
 अनुत्पाद्य  
 अनुवास्त १ ६२  
 अनुवास्ताख्यस्थर २६५  
 अनुवार ६१  
 अनुवृद्ध ५ ६  
 अनुवृष १ ६  
 अनुनय ३१ २ ६५ ५६ ५  
 अनुनयार्थ १३ १  
 अनुनाथन १५  
 अनुनासिक ४६ १  
 अनुपप्लत ६३१५  
 अनुपमा १५

अनुपलब्धि २६४  
 अनप्रश्न ६१५ २ ६  
 अनप्राप्त ३  
 अनवय १ ६ १५१ १५६  
 अ वधि १५२  
 अनबोधन ३६६  
 अनभव ५६५३  
 अनुभाव १५२  
 अनुमत ६६६ १२ ३  
 अनुमति १५३ १२ ३ ५  
 अनुमान ४ ३  
 अनुयोग ३२ ५  
 अनरक्त ६ १  
 अनराग १२२ ४६७६  
 अनुराधा ४ ६५  
 अनुरूप १५४ ३६६१  
 अनुरोधन ३ ३१  
 आलपनवात् ६ ६  
 अनलपनविद्यासमव ३१२३  
 अनुबध ६५५२  
 अनुबसर १५५  
 अनुवतक ६७३६  
 अनुवतन ४५५५  
 अनुवहन २ ६  
 अनवासन १५५  
 अनुशय १५६ ५४४३  
 अनुशोचन १  
 अनुषक्त ४५  
 अनुषङ्ग १५६  
 अनुष्टप् १५७  
 अनुष्टप्छवस ४६५६  
 अनुष्ठिति ३४५  
 अनूक १५७ ५  
 अनुधान १५

अनटा ४२  
 अनप १५६ ६ ६ ६२११  
 अनूर्ध्व ११  
 अनहसामग्र थ २१ २  
 अत १५६ ३७७  
 अनतचर्या १३  
 अनुता १६  
 अनकाथ २६२  
 अनङ्गमक १६  
 अनघा १६१  
 अनहस १६२ १३६  
 अत १६२ ३ १४ ३३ २ ४ ६६  
 अत करण ४६३ ६२६  
 अत कुक्षि १६ ५  
 अत पुर ५६ ६ ६१ ४  
 अत पुरप्रव्या ५  
 अत पुररक्षि ४६१४  
 अत पुराव्यक्ष ६ ५  
 अत प्रविष्ट १ ३  
 अत स्या १७४  
 अतक ४ ६  
 अस्तर १६६ ६ ३ ३४  
 अतरद्वीप २६२  
 अतरहित १३४  
 अतरात्मन १ ६५ ३६६४  
 अतराय १ २ २६  
 अतरिक्ष १७ १५३७ ४ ६ ६५ २  
 अतरीप १ २  
 अतरीपक २७६१  
 अन्तरेण १७३  
 अस्तगत १७३  
 अतगृह १६ ५  
 अस्तध्वनि २४५१  
 अस्तधि २ ५ २४४६ ५ ६  
 अस्तर्माव २६४३

अस्तवार्तित १ २  
 अ तशय्या १  
 अतस २३ ६  
 अ तावसायिन १  
 अ तावसायिनी १  
 अतिक ५१ १६२ २५३ ५ ६  
 १ १३ ३ १ ३३ ५ ५६ ६  
 अन्तिका १ ७६  
 अ तिकासन ३  
 अतिकोपगम २  
 अतिम २२ ३  
 अतिमावयव ४४  
 अ तेवासिन १ ६ ६ २  
 अ तेवासिनी १ ६  
 अतो त १  
 अय १ ६ १ ३३ २  
 अयम २६२  
 अययग ११६६  
 अत्य शमात्र ३५ ३  
 अत्र ३ ५ ५५६  
 अहु २ २१  
 अङ्ग १  
 अघ १६ १  
 अघक १ १  
 अघकार ५११ ६२ २४४  
 ५५ ४  
 अघकी १ २  
 अघकप १  
 अघतमस २३६ ५६६१  
 अघिका १ २  
 अघु १ ३  
 अघुकपावप ५२१२  
 अघ्र १ ३ ४  
 अघ्रपुरातर ३३१२  
 अघ्री १ ४

अघ्रीशबरज ३ १७  
 अम १३६ ५ ३३४ ६३ ६३  
 १२१६ २३ २२६ २३ ३ २४६६  
 २५ ६ २ ३१ २ ६ ३ २६५३  
 ३१४ ३२४१ ५६ ३३ ५ ३५६५  
 ३ ६२ ३६१६ ५ ६१ ५१२ ५२६  
 ६१ ५ ६१ ६ ६ ६१६ ६ ३४  
 अनपुलाक ६ २५  
 अघरस ६३  
 अघाढ ६४६  
 अघात्तु १ ५  
 अघाव १ ५  
 अघावा १ ६  
 अघावी १ ६  
 अय १ ६ ६ ३१५१ ५२  
 अयकु बक २३  
 अयत १ ६  
 अयजमन् ३१५  
 अयतद ३२ ५  
 अयथा १  
 अयथामाव ५३ ६  
 अयनियुक्ता २६ ६  
 अयपीडा १६१  
 अयपुस् ३४ ३  
 अयलोकयोगिन ३२ ३  
 अया १ ६  
 अयापवाविन २६ १  
 अयालयस्थशिपकु स्ववशस्त्री ६५२५  
 अयून ४६  
 अयोय ३६६  
 अवय १  
 अववाय १ ६२ ६  
 अवासन १  
 अवाहाय १  
 अम्बषण ४४५४



अप १ १ ६५३ १ १ १३  
 २६२६ ३२२ ३ १ २५ ५१११  
 ५२३ ६ ६ ६१ ६ १२ ६३५  
 ६५ ६ ६६२३ २ ६६

अप १६

अपकष ६५ ७

अपकार १६१

अपकृष्ट १६२

अपकृष्टाय १६

अपक्रम १६२

अपक्ष ५

अपक्षेसरसता धत ६२

अपगति १६२

अपक्षय १६५६

अपक्षिति १६३

अपटा १६४

अपटी १६

अपट ४१

अप-य ५३ १६ २१६ ५१३ ११

१ ५५ १ ६ २२२५ ३५६५ ४३

६२ ६५

अपत्यवाचिन ५१६

अपव्य ४६५

अपक्षान १६५

अपवेश १६६ ३१३१ ५७६

अपध्वस्त १६६

अपनयन २५१२

अपनीत ५४३४

अप्यति २२

अपक्षश १६७

अपक्षष्ट ५१६२

अपमान ५ ५

अपमधककाय १ १

अपर १६

अपरप्रतियोगिदिग्वेशकाल ३५६३

अपरप्रतियोगिन ३५६२

अप- १६

अपराजित १६६ २ २

अपराजिता १६६ १४५१

अपराद्ध २५

अपराध ६ ६१३ ४१ ३ ४६४ १ ६

६७५ ५ ४५ ५७५६ ५६३२ ६५५१

६५५२

अपराद्ध ३६४५

अपरि-छव २६

अपरिणामिन २१

अपर्णा २ २

अपलाप २ ३ ११ ३ २५

अपवग २ ३ ४ १३

अपवजन २ ४

अपवत्तन ५

अपवाव २ ४ १६१ २२२२ २६६३

अपवावशील ६२४

अपवाविन ३१ ३

अपवारण २१ ६

अपवारणा २ ५

अपवृत्ति ५ १

अपशद २ ६

अपशद १६ ३६४

अपष्ठ २

अपष्ठ २

अपसक्तु १ ३

अपसजन २

अपसप २

अपसपण २

अपसम्य २ ६

अपस्तान २१

अपहार ४१२

अपहृति २१२

अपहोतु ४२१

अपह्नुव २ ३ ११ ३ ६  
 अपाकृति ३३२ ६३१  
 अपागम २११  
 अपाङ्ग २१२  
 अपावान २१२  
 अपान २१३ २५४१ ६३  
 अपाप १२  
 अपामाकर ३२ २  
 अपामाग ४६४ १३६ २ १५ २ ७  
 ३४३६ १६ ६७  
 अपामार्गस्तम्ब ६ १२  
 अपामूल ३६६२  
 अपाय २१४  
 अपार ६ २१  
 अपालाप ४२२  
 अपावृत्त २१५  
 अपाश्रय २१५ १२६  
 अपाश्रित २१५  
 अपासन २१६  
 अपि २१  
 अपुष २१  
 अपुषा २१  
 अप्रुत १२६३  
 अप्रुप २१ ३५५ ४५  
 अप्रुपकारक ३  
 अप्रुपमेव ३५५२  
 अप्रुपान्तर ३२ १  
 अपेतसपक २ ६  
 अपेताश्रयक २१६  
 अपोगण्ड २१६  
 अपोदिका ३५४५  
 अप्नस २१६  
 अप्नु २२  
 अप्रतिरथ २२१  
 अप्रथम ३४३५

अप्रधान ३६३ ४ २१ १६ ७ ६१२  
 अप्रमुषित २२२  
 अप्रशस्त ४ १  
 अप्रहत १  
 अप्रहृष्ट २२२  
 अप्राप्त २२१४  
 अप्रिय ३ ५७५६  
 अप्वा २२२  
 अप्सरस ४ १  
 अप्सरोत्तर ४६५२  
 अप्सरोभिद ३ ११  
 अप्सरोमेव ३ ३ ३३ ६४४६  
 अन्न २२३ ७६३  
 अन्न्योषित २३१  
 अन्न ६६  
 अन्न २२४  
 अन्न २२४  
 अन्नलोण २२५  
 अन्न २२६  
 अन्न २२६  
 अन्न ३२५५  
 अन्न २२६-२ २२४६  
 अन्नाकिञ्चक १६७७  
 अन्नकोसर १२५४  
 अन्नस २२  
 अन्नादिबन्धक २६३५  
 अन्न २२  
 अन्नमव ६२१५  
 अन्नमात्र ६२१५  
 अन्नविशेष ६४१४  
 अन्न २२६  
 अन्ना २२६  
 अन्नि २२६ ३४४ ४२५ २४ १  
 २५ २ २२ ३ ३५६ ४१  
 ५१११ ६३११  
 अन्निजलवण ६५१

अधिजशवित २३१  
 अधिजा २३  
 अधिवदुर २३१  
 अधिफन ५ २६  
 अधिभव ६  
 अधिमण्डकी २३१  
 अधिलवण ३ १३ ५३३६  
 अधिसम्बन्धिन ६४  
 अन्नहृष्य २३१  
 अभक्त २३२  
 अभक्ष्य २३३  
 अभङ्ग २३३  
 अभय २३४ ३५  
 अभयप्रद ६२११  
 अभया २३४  
 अभाय ४ २३५ २ ५७ ४ २  
 अभि २३६  
 अभिकार २३७  
 अभिक्रम २३६ ३७  
 अभिक्रमण २३६  
 अभिप्राय २३  
 अभिक्षप २३  
 अभिक्ष्या २३६  
 अभिगत २७३  
 अभिगन्तु २६६ २ ३२  
 अभिगम २३६ २७३१  
 अभिगमन २३ ४  
 अभिगर २४१  
 अभिगत २ १  
 अभिप्रस्त २५  
 अभिग्रह २४२  
 अभिग्रहण २४२  
 अभिघवण २४३  
 अभिघात २४३ ७५ १  
 अभिघातिन् २४४

अभिघार २४५  
 अभिचक्षण २४५ ४६  
 अभिचरण २४६  
 अभिचारा मक्याहृक्क वतर ६२ १  
 अभिजन २४ ५ ५४  
 अभिजात २४ ४६  
 अभिजित् २४६  
 अभिजा ५४ ५  
 अभिजाता २५१  
 अभित परीसा ३१६३  
 अभितस २५३  
 अभिताप २५४  
 अभितोविकलण ५६  
 अभिघा २५४  
 अभिघान २५५ ६२६१  
 अभिघानी २५५  
 अभिघायकशाब्द ६१७६  
 अभिघयशय ५७५५  
 अभिनव २५६ ४६१ ३ ४३  
 अभिनवसुत्पात्त ५४३  
 अभिनिजिष्ठ ५ ६  
 अभिनिष्ठान २५६  
 अभिनीत २५७  
 अभिनय ६३५  
 अभियात २७५  
 अभिपत्त २५७  
 अभिप्राय ३४६ ६ १ २१ १ ३६६२  
 अभिप्ररण २३  
 अभिप्लव २५  
 अभिभव २३ २७६४ ३ ३  
 अभिभूत २२ ७  
 अभिसर २५६  
 अभिमव २५६  
 अभिसाल २६ ४ ६ १ ७१ २५ १  
 अभिसुख २७४ ३६

अभिमुखलति २५  
 अभियान २४  
 अभियुक्त २६ ३४५ ३ ६७  
 अभियोक्तु २६१ ६ ६  
 अभियोग २ २ ६२  
 अभिरूप २ ६ ६३  
 अभिलक्ष्य २ १  
 अभिलाष १४६ २३६ ४७ ६ १६२  
 ४१७२ ३२  
 अभिलाषिन् ५ ३६  
 अभिवादन १६ ५ ४२  
 अभिव्याप्ति ६६ ४४४३  
 अभिशप्त २६४  
 अभिशस्त २६ १६६६  
 अभिशस्ति २६४  
 अभिशप २३ ६४  
 अभिषङ्ग २६५  
 अभिषव २६६ ६  
 अभिषिक्त २६६ ३४५४  
 अभिषुत २६७ ६ ५६  
 अभिषोतु ६५२६  
 अभिष्यव २६  
 अभिष्वङ्ग ४७३२  
 अभिसन्धान २६  
 अभिसन्धि २६  
 अभिसारक २६६  
 अभिसारिका २६६ ४१६ ४  
 अभिहत ३७६  
 अभिहन्तु २  
 अभिहार २७  
 अभीक्षण २७२  
 अभील २ ३  
 अभीप्सितयोषितु ३ १  
 अभीषु २७३  
 अभीष्ट ३२ ७

अभुश ३  
 अभ्यग्न २ ४  
 अभ्यङ्ग ३७३३  
 अभ्यधिक १ २ २६  
 अभ्यनमान ५५  
 अभ्यन्तरण ५४६  
 अभ्यचन ५ २७  
 अभ्यर्हित ६२६३  
 अभ्यवहार ३६२६  
 अभ्यस्त ६६ ६२६४  
 अभ्यागम २ ५  
 अभ्याधान २ ५  
 अभ्याकृत २ ६  
 अभ्याश २ ६  
 अभ्यास २ ५६३  
 अभ्यवय ५५ ६  
 अभ्युद्गमन २७५  
 अभ्युपगम २ ६३१ २३ २६२५  
 अभ्युपाय ४४१३  
 अभ्योष २  
 अक्ष २ ३१ २५१२ २ ४२२६  
 अक्षक १३२ २ ५, १६६६ १ ६  
 २ १६ २६ ४ ५ २  
 अक्षमिनव ३१६  
 अक्षमातङ्ग ६२१  
 अक्षलश १ २६  
 अक्ष्मातर ६४  
 अक्षि २ ६  
 अक्ष्वा २  
 अक्षत २  
 अक्षति २ १ २  
 अक्षव ३६ ६  
 अक्षनि २ २  
 अक्षव ३ ६६  
 अक्षर २ ३

अमरकण्टक २ ३  
 अमरवाहिनी १३६  
 अमरा २ ४  
 अमरावती २ ५२३२ ६४५  
 अमरी २  
 अमष २६  
 अमर्षिन् २५  
 अमल २ ५  
 अमला २ ५  
 अमा २ ५ २६ १  
 अमाय २ ६ ३ ६  
 अमायावि ३६११  
 अमाभव २ ६  
 अमावास्या २ ६ ३ २  
 अमित्र ५ ३  
 अनुक्तात्मन ३२३  
 अनुत २ ६ ५ १३ ४ २३५  
 ३३ ६ ४६५ ४६ ५ ६३१३ ६४५६  
 ६५७४  
 अनुतरस ६५२  
 अनुता २ ६  
 अनुतामाम्नी १६ ६  
 अनुति २  
 अनुतोद्भव २६१  
 अमोघ २६१ ५३५७  
 अमोघा २६२  
 अम्बक २६२  
 अम्बर २६३ ४७७५  
 अम्बरीष २६४  
 अम्बष्ठ २६६ २ २६  
 अम्बष्ठा २६६ ६ ५५६६ ५६६  
 अम्बष्ठी २६६  
 अम्बा २६  
 अम्बिका २६२  
 अम्बु २ १३६ ४ ७ ६६६ १ ६

६ १६३७ २ २ २३ ५ २४ २  
 २५ ५ २ ७ ४ ७७ ४४७४ ४६४१  
 अम्बुक ३  
 अम्बुकुक्कुट २२७६  
 अम्बुज ३ १ २ १६ २४२६ २७२१ २६३  
 ६ ३२२६  
 अम्बुजबीजकोश ३४४१  
 अम्बुजा ३ २  
 अम्बुतुण ३  
 अम्बुद २ ५३ १ १ ३६ १ ६  
 २ ३५ ३२४६ ४ १६ ५२ ५ ५५२३  
 ६१४  
 अम्बुवोपल ११ ४  
 अम्बुधर ११३  
 अम्बुधि ४२ ७२६ २७७ २ २४  
 ३२ ६३४१  
 अम्बुनिधि ३१६६  
 अम्बुप्रणाली १४६  
 अम्बुप्रायदेशक १४६  
 अम्बुप्रिय ३ २  
 अम्बुबध ५२७  
 अम्बुवेतस २४४७ ३ ६ ५४१७  
 अम्बुसम्मल ६१२३  
 अम्बुहस्तिन् २६३२  
 अम्भस् ३ ३  
 अम्भसी ३ ४  
 अम्भोजपत्र १ ६४  
 अम्भोधि ४५६१  
 अम्भोधिलवण  
 अम्भोनिधि ६४२  
 अम्भोघ्न ५६२  
 अम्भय ५४२  
 अम्भ ३ ४ १ ५ २५ ४ ६ ६३  
 अम्भमधुर ५६१३  
 अम्भमधुररसमुक्त ६२ ६

अम्लमधुरोमिश्रितरस ६२ ५  
 अम्लरस २१४२  
 अम्लरसोपेत २५ ४  
 अम्लवतस २१४२ ४ ११ ५६६४ ६६ ६  
 अम्लान ३ ५ ३ ४६  
 अम्लानिमत् ३ ५  
 अम्लिका ३ ६ २४४  
 अम्ली ३ ४  
 अम्लोदगार ३ ६  
 अय ३ ६  
 अय कण्टकसछा ४३१६  
 अय सम्बन्धिन् ५५  
 अय सार ४६६१  
 अयति ३  
 अय नाप्य ६  
 अयन ३  
 अयस ३१ ५५ १२६ १४१  
 १५४ २१ २६ ६२६ ४५  
 ५७४५ ५ २ ६ ५  
 अयसम्बन्धिनी ५५४  
 अयस्कास्त ३१२ २१४४  
 अयस्कृत ११६५  
 अयाचित २ ७  
 अयि ३१  
 अयुक्तकरण १६१  
 अयुत ३११  
 अयुतद्वय ५  
 अये ३११  
 अयोध ३१२  
 अयोध ४४३२  
 अयोधन १५ ६  
 अयोध्या १६२१ २ ४  
 अयोबाण २६३२  
 अयोमय ३१२  
 अयोमयपत्राङ्ग २ ३३

अयोमल ११ ४६२६ ६ २  
 अयोविकार १४६४  
 अर ३१३  
 अरघट्ट २ ६  
 अरघट्टक ३२६६  
 अरघट्टक ५४६  
 अरक्षित ५  
 अरणि ३१ २२५  
 अरण्य १ १ १ ५ २४  
 अरण्यजतिल २२४५  
 अरण्यमक्षिका ३ ५३  
 अरण्यानी ५ ५  
 अरति ३१५  
 अरनि ३१६ ५ ६  
 अरनिमात्र २६६६  
 अरन्ध्र १६ २  
 अरर ३१ १  
 अररा ३१  
 अररी ३१  
 अरव ३१६  
 अरविम्ब ३१६ ४१  
 अरसम्बन्धिन् ५६  
 अराति ६५  
 अराल ३२  
 अरि ३२१ १५५ ३१५३ ५४३  
 अरिमात्र २५ ३  
 अरिष्ट ३२२  
 अरिष्टनमि ३२५  
 अरिष्टफल ३ १४  
 अरिष्टवृक्ष ३ १३  
 अरिष्टा ३२५  
 अरुचि ३३३  
 अरुणा ३२६  
 अरुघत ३२६  
 अरुघती १ ३२६

अवल ३३

अरुष ३३

अरुषी ३३१

अरुष्करतर ३३१ २३ १

अरुद्धपृष्ठ २४

अरुष ३३२

अरे ३३२

अरोचक ३३३

अरोचि ३३३

अरोघक ३२६

अरोहण ३३२

अक ३३३ ४२५ ५१३ २३ १ ५६ ६७

१७३४ २३३३ ६१ २६२५ २७

३२ ६५ ६६ २ ३१११ ३२५६

३ ७६ ३६१ ३१ १६ २२ ४१ ४

४२२६ ४४ ६१६ २ ३६ ४ ६

५१३ ५४६१ ५५४४ ५ ६ ६ ६६

६१ ३ ५ १२ ६३३२ ६४४ ६५

६६२६ ६७ १

अकवीधिति ६६२६

अकद्रुम १७५५ ५३७१

अकानामन ४१ ६

अकपत्र ५ १

अकपर्ण ३३४ ६३ ३४ ५५७६

अकप गामपुष्प ३३५

अकपणगुमफल ३३५

अकपणसज्ज ३३४

अकपुष्प ३३६

अकयोषित् २१ ६

अर्काचिस् ६७ ३

अर्काश्व ६१५१

अगल ३३६ १ १४ ३१७१

अगला ३३६

अर्घ ३३७ ३२२६

अर्घाहि ३३

अध्य ३३

अध्या ३३ २ ७ ३ १ ६१

अधन ३६ २ २ ३६१

अधनीय २ २

अर्घा ३३६

अचित् ५२५ २५

अचित् ३३६ १३ ४ २५ ५ ३६ ६

६३ ७१ ५१२ ६ ५२

अजक ३४

अजकास्तम्ब २४५६

अजयितु ३४

अजुन ३ ४१ ४२ ४३ १ ६१ १३६६

१५ ६ २२६ २७६ २ ५, ५३६६

५५५२ ५६

अजुनकामक १ २

अजनद्रुम ५५४६

अर्जुनवृक्ष ६५२

अजुनी ३४२ ५५

अणव ३४४ १ ५३ २४१४

अणस ३४३

अत्ति ३४४

अथ ३ ५ ३६१३

अथवापन ६३६

अथनिभाप ३ ६४

अथमय ४११३

अथवत ६ १

अथवाव ३४६

अथशासक २६४६

अर्थसङ्घात १६

अर्थिन् ३४७

अथयुत ६४३२

अर्थोत्थित ६७

अर्थोपजीविनिश्च २ ६७

अध्य ३ ७ ४

अर्ध ३४६

અવન ૩૪૯ ૫ ૫  
 અવિત ૩૫  
 અવિતિ ૩૫૧  
 અવ ૩૫૧ ૫૨ ૩ ૫૩  
 અઘકર ૩૫૫  
 અઘકણ ૧૫૯૬  
 અર્ધકુશલમાન ૩ ૩  
 અઘગજ્ઞા ૩૫૩  
 અઘચદ્ર ૩૫૩  
 અર્થચદ્રક ૩૫૨  
 અર્થચત્રા ૩૫૩  
 અઘજાત્તવી ૩૫૩  
 અર્ધપષ્પાસન ૩૨  
 અઘપારાવત ૩૫૪  
 અઘપ્રસ્થાનકમાન ૬૧૧  
 અઘમાત્રા ૨૫  
 અઘમાસ ૩ ૧  
 અઘમુહૂત ૨૯૧  
 અઘરાત્ર ૩ ૨  
 અર્ધસૂત્રી ૩૫૪  
 અર્ધહસ્તા ૩૫૫  
 અર્ધેન્દ્ર ૩૫૬  
 અપિત ૨૫  
 અપિષ ૩૫૬ ૫૭  
 અપિષી ૩૫  
 અબલ ૩૫  
 અર્ષ ૩૫ ૫૯  
 અર્ષક ૩૫૯ ૪ ૫ ૫૩૫૨  
 અય ૩૬  
 અયમન્ ૫૨૬૪  
 અર્ધા ૩૬  
 અર્ધાળી ૩૬  
 અર્ધી ૩૬  
 અવતી ૩૬૧  
 અવન્ ૩૬૨  
 અર્ધાચ ૩૭૫ ૫૨૧

અર્ધાસ ૩૬૨  
 અશાસન ૩૬૩  
 અર્ધાસાની ૩૬૩  
 અર્ધોઘન ૩૬૩  
 અર્ધોઘની ૩૬૪  
 અહ ૩૬ ૪૫  
 અર્હત ૩૬૫ ૨૨ ૯ ૩૪૭૪  
 અહલવિશાલ ૩  
 અર્હણ ૩૬૪  
 અર્હસ્ત ૩૬૫  
 અર્હા ૩૬  
 અલકા ૩૬૬ ૫૨૨૧ ૩૨  
 અલકાપુર ૫૨૨૨  
 અલકાપુરી ૫૨૨૫  
 અલક્ત ૧૬૩  
 અલક્તક ૨૯ ૩ ૪૫૬૬ ૪ ૪૪  
 અલક્તરાગ ૩૨૨૨  
 અલક્ત્રી ૧૧૯૬ ૨૩૨૯ ૨૯૭  
 અલક્ષાર ૩૬  
 અલક્ષારમિત્ર ૫૩૫૨  
 અલક્ષારમલ ૬૩  
 અલક્ષારસુવળ ૬  
 અલક્ષકૃતિ ૩૬ ૪ ૩  
 અલમ ૩૬૬-૬ ૧૫૨૬  
 અલમ્બસ ૩૬ ૨૧ ૩  
 અલમ્બુસા ૩૬૯  
 અલક ૩૬૯  
 અલર્કી ૩૭  
 અલસ ૩ ૧ ૫ ૩ ૧૫ ૨ ૨૨૯૧  
 ૧ ૧ ૪૨ ૬ ૩ ૬૧૩૭  
 અલસત્વ ૫ ૩  
 અલસા ૩ ૨  
 અલાત ૩ ૨ ૪  
 અલાલુ ૨ ૪ ૩૩૩  
 અલાલુફલ ૨૪૭૪



अलावली ३३३  
 अलि ३ ३ २४  
 अलिक ३६१३  
 अलिङ्ग ३ ३  
 अलिजर १६६६ २ ७ ४ ७ ४१ ३  
 अलिन् ३ ४  
 अलिनी ३७४ ६  
 अलिब ३ ३६१६ २  
 अलिपक ३७५  
 अलिप्रिय ३ ५  
 अलिमक ३७६ ७  
 अलीक ३ ७  
 अलीकवाविन् ६७  
 अलम ३७  
 अलोकगोचर २३५३  
 अप ६ १६६ १ ६ २३५२ २३ २  
 २४६ २५ ७ २६१ ३ ६ १६६  
 ५ ६ ६१ २ २ ६२ ६ ६५  
 अपक ३५ ६ १११ ३५५३  
 अपकपालक ५ ६  
 अपकालमव २ ७  
 अपकप १५१  
 अपकौशक १६ २  
 अपग्राम ३२२४  
 अपतम १ ३१  
 अल्पतमाङ्गुलि १ ३२ ३३  
 अपतुम्बी १३ ६  
 अल्पपुर १७६६  
 अपष्टुकुटि २ ५५  
 अपमूषिक २६१७  
 अल्पवपुर्जन्तु ३५७  
 अपीभूत ६२४५  
 अवकर ३ ७६  
 अवकरस्थान १६१२  
 अवका ३

अवकाश १६ ५५३६ ५७ २ ६५ ६  
 अवकीर्ण ३ १  
 अवकीर्णिव ३७  
 अवक्षणी ३ २  
 अवक्रम ३ १  
 अवखण्डन १६५ ३६२  
 अवखात ३ ३  
 अवगति ५६  
 अवगथ ३ ३  
 अवगाढ ३  
 अवगाथ ३ ३  
 अवगाह ३  
 अवगीत ३ ५  
 अवग्रह ३ ५  
 अवग्रहण ३ ६  
 अवघात ४१४  
 अवचूणन ३६६  
 अवचूणित १६६ ३  
 अवच्छव १ २६ ४३४५  
 अवज्ञा १ १ ३ ६ ६७ ६  
 अवज्ञान ३ १  
 अवट ३ ७ १ ६३  
 अवट ३ २ १४  
 अवतस ३  
 अवतरण ३ ६६ ४ ३  
 अवतार ३६ २ १२  
 अवतारण ३६ ६१  
 अवतारान्तर २५४२  
 अवति ४१६  
 अवतीर्ण ३ ६  
 अववात ३६१ ६२  
 अववान ३६२ २६५७  
 अववारक १ ३५  
 अववारण ३६३  
 अववारणामव ३६३

अवधारित १ ६  
 अवधाह ३६  
 अवद्य ३६४  
 अवधान ३६५  
 अवधापूरण ३३६१  
 अवधार ६१  
 अवधारण ६१५ २४४१ ६५ २ ६५ ३५२  
 ४५६  
 अवधाह ३६५  
 अवधि १६६ ३६५ ६२ ३ ६४४५  
 अवध्य ३६५  
 अव यावत् २३१  
 अव वत् ३६६  
 अवध्वस्त ३६६  
 अवन ३६  
 अवनयुक्त ६४१५  
 अवनि ३६ ६१  
 अवना ३६  
 अवन्ति ३६  
 अवन्तिका २११२  
 अवतिरा पुत्र ५६१  
 अवती ३६  
 अवपात ३६६  
 अवभूष २६५२  
 अवभ ६५  
 अवमदन २५६  
 अवमानना २३  
 अवमानित १५३२  
 अवयव ६ २ ३६६१ ३ ५  
 ४ ३ ५ ४६  
 अवयवभाजक ११ ७  
 अवर ४ १  
 अवरज १ ३१ ३६  
 अवरोध ४ २  
 अवरोधक ३२६

अवरोह ३ ६ ३६  
 अवरोह कपाङ्ग ५ ४  
 अवलग्न ४ १६६  
 अवलम्ब ६  
 अवलम्बित ४  
 अवलप ४ ५ १ १  
 अवलोकन २४५  
 अवलोकित ४ ५  
 अवलगुण ६५३  
 अवश्य ४ ६ ५  
 अवश्यमरण ४२३५  
 अवश्याय ६  
 अवष्ट-घ  
 अवष्ट न ६२७ ६५  
 अवस्त ४  
 अवस्त ६२  
 अवस्तर १६ ६ १२५ १६ ६, ३२  
 ३६१३ ३ १ ५३२६  
 अवसा १  
 अवसान १६२ ६६ १ २२१३ ३१४४  
 ६३ ५  
 अवसायन ६३ ३  
 अवसित ११ ५५ ५६२५  
 अवस्काव १२  
 अवस्कर १३  
 अवस्कार १  
 अवस्था ६५६६  
 अवस्थान २३ ६  
 अवस्थामात्र २६१३  
 अवहृत्तन १४  
 अवहृत्तित ६  
 अवहार ४१५ १६६४  
 अवहित ३६६ ५३६६  
 अवहृत्ता १६ ६  
 अवाकीर्ण ३ १

अवाची ४५६६  
 अवाय १६ ३१७२  
 अवातरविद्या ६ ३  
 अवार्ति ५  
 अवारित १३  
 वि ११६  
 अविश्रम १ ६ १३६१  
 अविद्ध णी १  
 विद्धभ्रति ४१  
 अविन १  
 अविनाशिन २१  
 अविनीत १६ १६५५  
 अविनीता १६  
 अविभक्त २३२  
 अवियु त ६८६  
 अविरोमजकम्पज ५६६  
 अविलम्बित १६  
 अविवाह्यकया ६ ५५  
 अविवाह्यकयामव ६४२७  
 अविष ४२  
 अविषम २३३  
 अविषा ४२  
 अविषी २  
 अविष्ठस २१  
 अविस्पष्टवाक्य ५१२  
 अवीक्षित १ ६  
 अवीरा २१  
 अवीय ३ ११  
 अवेल २२  
 अवेला २२  
 अव्य २३  
 अव्यक्त २३  
 अव्यक्तमधरध्वनि ११ २  
 अव्यक्तरागवर्ण ३२  
 अव्यय ३४२

आयथ ४२  
 आयथिया २५  
 आयथिष्य २५  
 आयय २६  
 आयति ४३ २  
 आयपन १  
 जशफयभक्ष्य २३३  
 अया २ ६३ ५ ६३ ५५ ४  
 अयानि ६ ६ ६५ ६  
 अशरयोगिन ६ ३  
 अशित ३६  
 अशितोक्षित ७६६  
 अशित्र ७२  
 अशिरस २६  
 अशीतिकपदक ३२ ६  
 अशीयक्षरक दोभव ६४३५  
 आश १३५ ३२ ३२ २ ५ ६१  
 अशोक ५५ ४२६३ १ ६ ११  
 १३५ २ ५ ३३३ ४६ ६  
 अशोकपावप १२६  
 अशोकप्रसव ६५  
 अशोकवृक्ष ४५१ ५५४३ ६५  
 अशोका ४३  
 अशोभन ६७७  
 अशन ३१  
 अश्मन ३२ ६११ २ ४१ ६ ५६  
 अश्मज ३१  
 अश्मजात ४३१  
 अश्मन्त ४३२  
 अश्मतक ३३ ६५ ५ ४१  
 अश्मतिका २२६२  
 अश्मन्ध २४  
 अश्मातर २ ११  
 अश्मात २ २  
 अश्वि ६ ४३३ २ १२ ३३ ६

अथ ४५६ ३ ३ ४६१  
 अशील १६६३  
 अथ ३३१ ३ ६ १ १३५  
 ६ १ २ १५ १६३ २२६५  
 २५ २ २ १२ ३१११ ६ ३३ ६  
 ६१२ ३ ३ ६३ ३६१५ १६१ २ ३  
 ५६६ १५ ५ ३६ ५२३ ३ ६  
 ५३११ ५ ६१ ५६ ६ ५ ६२ ६ २३  
 ६१५ ६ २२ ३ ६३ ६५२१  
 ६६ ६  
 अथकवक ३  
 अथकण ५६६१  
 अथकणत ६ ११  
 अथकर्णपुष्प ५६६  
 अथकातर ६  
 अथकीट २६३  
 अथकण्ठ ५१३२  
 अथगति ५३२  
 अथगतिमव ३ ६३  
 अथगच्छा ३ २ ६ ३३६३ ३ १  
 ५ २ ५ ५१ ४ ५२६६ ६६  
 ६६१  
 अथगघौषघ ३५ ६ १  
 अथगोष्ठ ५ ६  
 अथचमन २२३५  
 अथक्षारक १४४६  
 अथक्षर २५  
 अथतर ४३५ १६ ३६१६ ५६ ४  
 अथत्थ १ ३३५३ ३ ३६१  
 ६  
 अथ अन्नम ६  
 अथ धवक्ष १ १ ६१५  
 अथत्था ४३६  
 अथदेयमव ६६६५  
 अथघोरित २ १

अथनासिकारज्जु ५  
 अथपवामय ३३२६  
 अथभिव ६६६६  
 अथभूषा ५५६  
 अथभव ५२६ ६५२१ ६ ५  
 अथभाम ५  
 अथभार ११२  
 अथभार प्रत्य ११२१  
 अथभुञ्जी १३६३  
 अथभ तथ ५  
 अथयज्ज ३६  
 अथयुग्यत ६१३  
 अथरश्मि १३६६  
 अथ त न ३६  
 अथललन १२  
 अथवत ३  
 अथवध्य १२२६  
 अथवाहक ३  
 अथवुव ३  
 अथशावक १३ ३  
 अथसाधक २६  
 अथा ४३ ३ ३४ ६६६ ५२६६  
 अथाविपर्याण ३२२१  
 अथाविरश्मि ३६१  
 अथ विसनाह २२३५  
 अथारोह ६३ ६  
 अथारोहा ३  
 अथालक्ष्म ५२२  
 अथवावस्थानमव ३ १  
 अथिन् ३ २६ १ ३५ १ ५२ २  
 अथिनी ३५ ३ ५३५५  
 अथिनीश्रुताजात ४३६  
 अथीय ३  
 अथीया ३६  
 अथाढा ३६

अषाढायकालजवस्तु १ १  
 षष्ठा १ ३१३  
 षष्ठाकप ५२३६  
 अष्टमज्ञ ३४  
 अष्टमचलशब्द ६३  
 अष्टमी १ १ २२३  
 अष्टसप्त ६१६  
 अष्टस्वर छन्दस ३६११  
 अष्टहस्तर जुत्रिय २६६६  
 अष्टागु प्रप्राण २७  
 अष्टाङ्ग गलमान २६  
 अष्टावशगणातर ६१७  
 अष्टापद ४६६  
 अष्टापदी ४ ६  
 अष्टावयवक ४४२  
 अष्टी ४४  
 अष्टाध्वचमगति ६२२६  
 अष्टप्रति ६५  
 अष्टप्रयथ ४५६  
 अष्टपक्ष ४६  
 अष्टमत ३६३२  
 अष्टयत ४५१  
 अष्टत ४४  
 अष्टती ४४ ६५ ५५२  
 अष्टतीष्ठध्वती ३६५६  
 अष्टत्ता २३५  
 अष्टय १५६  
 अष्टत्त्व १२३३ १६७ २४६५ ६ २  
 अष्टस्वगामिन ६  
 अष्टवृह १ ६  
 अष्टवृश १ ६  
 अष्टन ४४ १६७६ ३७७२ ४६ ६  
 अष्टनद्रुम ३ ३  
 अष्टनपादय २२६  
 अष्टनप्रसव ३७७२ ३ ३१

असमपण्या यक्षद्वक्ष २  
 असम्य २३२  
 असम्बाध ५ ३  
 असहन ३४६३ ५३ २  
 अनाकय ६६ ३  
 असार ३ ६  
 असारार ५५ १  
 असारहस्तिन १५४१  
 असि ११ १  
 असिनीश ३ ८  
 असिनी ५ ११५६  
 असित ५  
 असिता १३३१  
 अस्तिघर १७१६  
 अस्तिधारा ३७६  
 अस्तिपुत्री ५  
 अस्तु ११ ३ ५  
 अस्तुप ३१५ २ ६  
 अस्तुजात २६ २  
 अस्तुर ३१६ ५२ २ १४ ३६ ३३६१  
 अस्तुरजाति ३३ ४  
 अस्तुरत्रिपुर ३४  
 अस्तुरा ४५४  
 अस्तुरातर २ ६ ३५  
 अस्तुरा ५२ ३३२ ५५ ६७ १२  
 अस्तुण ४५४ १३ ४ २५ ३  
 अस्तुधरा २३७१  
 अस्तोड ४४१  
 अस्तौम्याक्षि ११  
 अस्तुलन ४६६  
 अस्त ४५५  
 अस्तगमन २६६३  
 अस्तात्रि ४५५  
 अस्तु ४५५  
 अस्त ४५७ ३१७१

अस्त्रधम्नाम्तर ३१६  
 अस्थान ४५७  
 अस्थि ११ १३ २ ६६ ३ ३६  
 ६२५३  
 अस्थिविजितस्वेवजज तु ५६  
 अस्थिमत् ५  
 अस्थिर ६५५१  
 अस्थिसघातवीर्य ५  
 अस्थिसयुक्त् ४५  
 अस्थिसहनन ४५६  
 अस्थिसहार २ ३  
 अस्थिसन्नाह ५६  
 अस्थय ६५५  
 अस्निग्ध ३१६५  
 अस्प दनस्थिति ३ ६  
 अस्पष्ट ४२  
 अस्तुटवाक २२५ ६३२  
 अन्न ५६  
 अन्नप ३ १  
 अन्नपा ६  
 अन्नयोगिन ६३२  
 अन्वत ज्ञान ५४  
 अन्वाध्याय २६ ३  
 अहङ्कार १ १ २५६  
 अहङ्कारिन ६५५  
 अहत ६१  
 अहति ६२  
 अहन ४६ २ ३ ३५ ३६ ५ ६२६  
 ६ ६६१५  
 अहमस्मीत्युत्पन्नसामन ३ २  
 अहरावि २५ ३  
 अहत्तव्य ६  
 अहनिवतनीय ६३  
 अहल्या ४६२ ४६३  
 अहह ६३  
 ३

अहाय ४६  
 अहिंसा २ ६१  
 अहिंसित १६ ४६१  
 अहि १४ २ ६ २ ३ २५६२ १  
 ५ ३ ६ ४  
 अहिच्छन्न २१  
 अहिजित ४६५  
 अहिजित ६५  
 अहित ४६५ ५४२५  
 अहितुण्डिक २२६६  
 अहित्विष ४६६  
 अहिघातक ४६२  
 अहिभय ६  
 अहिभज ४६  
 अहिमव २ ६  
 अहीन ४६  
 अहीनक्रतुमव ६२२  
 अहीनाख्यक्रतु ३६२  
 अहीनाख्ययत्न ३६२  
 अहीरवर ६  
 अहो ६६  
 अहोरात्र ६ ६  
 अह्वला ६६  
 आ  
 आ ४ १  
 आ ४७  
 आकर्णित ६१ ५  
 आकष ४ २  
 आकषक ४ ४  
 आकर्षकुशल ४७४  
 आकर्षिका  
 आकर ४ १ १ ३६ १ १६ ५६२  
 आकलन ५  
 आकलना ४ ५  
 आकल्प ४ ६

आकपक ४७६

आकपन ७

आकाङ्क्षा

आकार ६ १२

आकालकी ६

आकाश १२ २६ ६१ १३५६ १

२ ६६ ३११२ ३५६ ५६

५ १ ६३११ १

आकाशगङ्गा १

आकाशसरस्वती २३१६

आकुल १३५३ ३२६६ ५ ७

आवत १२३

आकृति ४ १ ६१ ३६३५ ७६२

५१२३ ६२३२

आकृष्ट ५५५

आकृष्टि ४ २

आकव २

आकात ४

आक्रीड ४ ३

आक्रोश २४५ ६५ ५ ३ ५६३१

आक्षारित ४ ४

आक्षिक ४ ५

आक्षिप्त ४६

आक्षिप्तपुन स्थापना ६२६

आक्षय ४ ५ १३६३

आक्षपक ४ ६

आखनिक ४

आखनिकी ४ ७

आखु ४ ७ १५६ १६२ २५६२

आखुजाति ५२

आखुपर्णी २११२ ४४३३

आखोटशाखिन १३ २

आख्यात ४ ६

आख्यान ४ ६६ १ २

आख्यायिकाश ६१४७ ४

आगत ६१

आगति ५५३ ५ ५६६

आगतव्य ५

आगस्त ६ २१६३

आगस्त्य २

आगामिका ५५

आगामिवतमानाहयवतरात्रि ३ ३

आगार १६ २

आग्निमास ६१

आग्नीध्र ६१

आग्नीध्री ७६२

आग्नेय ४६२

आग्नेयी ४६ ६६६२

आघाट ४६

आघात ६५ २६६२

आघातकमन ३७ ६

आधारण ४६५

आधारणाव्ययज्ञपात्रातर ६६३५

आघ्रात ४६६

आङ् ६६

आचमन २३

आचारितीक्रिया ४६

आचमनी ४ ४२

आचाम ६ २ २

आचार ४६ २ ५ २७६१ ३६७२

४ ३६ ६२२१ ६६ ६३ ४

आचारनियोग ६१४

आचारा ४६

आचारातिश्रम १६ १

आचार्य ४६६ ६७७ १ ६१ १

४६ २ ६५ ३

आचार्ययोषित ४६६

आचार्या ४६६

आचार्यासन १ १२

आक्षित ५

आछरितक ५ २  
 आछावन ५ १ ६२६६  
 आछावनकमन् ३१  
 आजि ५ ५ २  
 आजीब ५ ३ २३  
 आजीवन ३३३  
 आय ५ ३ २ २ २३ ३ २५१  
 आययुत ६३  
 आयाम्न पेयसक्तु २  
 आनप्त ५२  
 आञ्जन ५ ६  
 आज्ञा ५ ५ २६६ ६ २ ५६६५  
 ६ ६  
 आज्ञागणिका ५ ६  
 आनापन्न ५६६५  
 आटोप ६२१३  
 आली ५ ६  
 आठम्बर ५  
 आठक ५ ३२५ ४ १२  
 आठकी ५ ५१२  
 आठकीमुत् ६५३  
 आठकीसन्नधाय ११२१  
 आठकीसन्नमुत् ३३ ३  
 आठकीसन्नमुत्ना ३२ १  
 आठय ६५२ ६५ २ ३ १  
 ४ १५  
 आठयगहस्थ ५६  
 आणि ५ ६  
 आतङ्क ५१  
 आतचन ५१ ४४४१  
 आतति ५११  
 आतप ६५१ १११६ २ २३ ६ ५  
 आतपन्न २१७६  
 आतपश्वि २३४५ ६  
 आतपाभाव २१ ६

आतपोर्मि २३ २  
 आतपण ५११ १२२  
 आतिष्य ५१२  
 आतुर ५५  
 आतोद्य ३ ५ ५३  
 आत्त ५६  
 आत्मगुप्ता १२ ६ ६६६ १ १५  
 २६ ६ ५६३२  
 आत्मज ५१२  
 आत्मज्ञ ३६२४ ५४२  
 आत्मयागिन् २ ६  
 आत्मनीन ५१५  
 आत्मनपव ६  
 आत्मन् १ ५१३ ६५२ ६६ ६ ३  
 १६ ३ २३२ ३१ २५ ५ २६५३  
 ३३६ ३ २ ३६१६ ६३  
 ५२ ५ २६ ६६३  
 आत्मभक्तिन् ५१  
 आत्मभाव ६२६  
 आत्मभू ५१६  
 आत्मनोयुग्म २ ५  
 आत्मयोनि ५१६  
 आत्मवत् ३  
 आत्मविकार  
 आत्मवीर ५१  
 आत्मसम्बन्ध २  
 आत्मसहित ६३  
 आत्महित ५१५  
 आत्मप्रिष्ठितशक्शोणित १२ २  
 आत्मशान्ति ५१  
 आत्मशानि ५१  
 आत्मीय ५१ २६५३ ४५६३ ६६३  
 आत्मीय ५१  
 आत्मीय ५२  
 आत्मीय १६ ७



आवश ५२२ २५६  
 आवान ५२२ १५ १६ ५ ३१ १  
 ५६  
 आवि ३६६६ ३ २  
 आविकारण २६५  
 आवि-य ५२३ १६३६ ५२१  
 आवि-ययोगिन ५२३  
 आवि-या ५२३  
 आविनायषम ३४ ३  
 आविम ३५६३ ३६  
 आविष्ट ५२  
 आवीनय ५२४  
 आवुत ५२५  
 आवेशक ५२५  
 आवेशित ५२४  
 आवेष्ट ५२५  
 आद्य ५२६  
 आद्यमहीपति २  
 आद्यमन्त्रियमव २६२  
 आद्यसत्त्वया ६  
 आद्यसुबविभक्ति ३६  
 आद्या ५२६  
 आद्योपलक्षस्थान ३६६२  
 आद्यान ५२  
 आधार १२ ११५ ५२७ ६ १ २ २१  
 आधि ५२ ३ २४ २५ ७ २  
 आधिक्य ४  
 आघय ५२६  
 आघ्मात् ५२६  
 आघ्यात्मिक ५३  
 आनक ५३ ६३३ ३ ६४ ३५६१  
 आनकडुबुभि ५३१  
 आनख ५३२  
 आन-व ५३२  
 आन-वन २६

आनविन ५३२  
 आनत्त ५३३  
 आनाय २२ ५  
 आनाह ५३३  
 आनाति ६३५  
 आनील ५३४  
 आनीली ५३४  
 आनुक-य ३७६३  
 आपगा २ ६१ ५२३४  
 आपगा-तर ६१  
 आपण १ २ ५४  
 आपणिक ५३५  
 आपत ५३६ ६२५  
 आपतन ५३६  
 आपत्ति ५३६  
 आपत्तिक ५३५ ५३६  
 आप-स्थल २७ ३  
 आपदिक ५३  
 आपवगत २५७  
 आपस ५३  
 आपस-वा ५३  
 आपाण्डितिवत् ३३  
 आपात ५३६  
 आपान ५  
 आपीड ५  
 आपीन ६  
 आप्त २६ ५४१ १२  
 आप्ति ५४१ ४५१६  
 आप्य ५४२  
 आप्यायन ५१  
 आप्रीत ५४२  
 आप्लव ६६ ५  
 आप्लत ५ ३  
 आप्ल ५४४  
 आप-घ ५४४

आभरण १४ २ ३  
 आभरणातर २ १५  
 आभिचारिककवतर ६१५३  
 आभिमख्य ६६ २३६ ३६३  
 आभीर २२४४  
 आभीरपत्नी २ ३४  
 आभील ५ ५  
 आभोग ५ ५ १२७ ६१  
 आभ्यतर ५४६  
 आभ ५  
 आभगधि ५५२  
 आभगधिन ५५२२  
 आभक्षण ५ ६ ६१ २ ६५ ५  
 ६६ ५  
 आभक्षणकर्मन ५५  
 आभक्षणा ५४  
 आभक्षित ५ ६ ५  
 आभक्षिता ५ ६  
 आभव ३६३६  
 आभलक १२ ६ ३  
 आभलकी १२ ३६ २ ६ ११६६ १६१  
 २२६२ २४३६ ५ २६ ५ २७ ३  
 २ ३ ७ ६ ५४ ६५ ५६२६  
 ६ ६६ ६१  
 आभिक्षा २ ६ ३१४७  
 आभिव ५५ ४३३३  
 आभिवी ५५१  
 आभोव ५५१  
 आभनाय ५२ ५२  
 आभ ५५ ११ ३ ६६ ४४ ६६  
 ६५७  
 आभतर १२ ५  
 आभप्रसव ६५  
 आभफल ३४  
 आभसेवन ३३४६

आभ्रातक २६४ १ ६ ३३ १  
 आभ्रातकफल ३३ १  
 आभ्र १५३  
 आय ५५३  
 आयत ५५५ ५६ २६५  
 आयत्त ३७२६ ५१६६  
 आयस्त ५१६  
 आयस्तन ५५६ ६५१  
 आयति ५५  
 आयत्ति ५५  
 आयस्त ५५  
 आयस्त ५५६  
 आयान ५५६  
 आयाम १४२ ५६ ३ १  
 आयस्त ५६१ १६११  
 आयी ५५४  
 आयुक्तक २६२३  
 आयुष ३१६ ५६२ २१६२ ५ २ ५६१३  
 ५ ६ ६ ६६६ २ ३  
 आयुषकोशक ३६  
 आयुषातर ६६६२  
 आयुषशमाश २६१२  
 आयुषाव ५६१  
 आयुष्मत ५६ २३२२  
 आयुस ५६३  
 आयोग ५६५  
 आयोगव ५६५ ६६ २३६  
 आयोगवी ५६६  
 आयोगवीवस्युज ६५१६  
 आयोजन २ २  
 आयोधन ५६  
 आर ५६ ६  
 आरकट ४ २१ ६२२ ६४ ६  
 आरकटलोह ३१  
 आरक्ष ५६६ ३६५६

आरग्वध १ १६ १५२ ४ ५ ६३  
 आरग्वध १ १५१  
 आरग्वध २ ५  
 आरग्वधवक्ष ६ ६  
 आरट्ट ५६६  
 आरट्टी ५  
 आरण्यकसामभव २२४  
 आरण्यसहिष १  
 आरम्भ १ ५ २३७ ५ १६३२  
 ३६१३ ६ ४  
 आरसन्न ३३४६  
 आरा ३१ ५६  
 आराप्रभाग ५ १  
 आरात् ५७२  
 आराधन ५ २  
 आराधना ५७२  
 आराम ५ ३ २५३  
 आराव ४ २  
 आरी ५६  
 आर ५ ४  
 आरकफल ५५५७  
 आरुण्यपानक ५  
 आरुढ २७६  
 आरोग्य ५३४१ ६३७६  
 आरोपण १२२  
 आरोपित ३  
 आरोह ११६ ५७४ ३१ ५  
 आरोहण १२२ २३६ ५७५ ७६  
 आरोहसाधन ५७६  
 आर्त्तव ५७६ ७६५ ६  
 आर्त्तवसमय ३५१  
 आर्त्ति ५७  
 आर्त्त ५७ ६३३ ५३६  
 आर्त्तक ५७ ६६५ ५६ ४ ६१२७  
 आग्रकाभोद्भिन्नतर ५२ ६

आर्त्त ५ ६ ४ ५  
 आर्त्तनिक्षत्रसम्भव ५  
 आय १ ६६ ४ ५ ४३६६  
 आयपुत्र ५ १  
 आययोगिन ५  
 आर्या ५ ६  
 आर्याच्छ-दोतर ३१२६  
 आर्यापय ५ १  
 आर्यामद ६५ ६  
 आर्यावत्त ३ २३  
 आषण ५ २  
 आलपन ५ २  
 आलप्ति ५ २  
 आलम्ब ५ ३  
 आलम्बन ४ ५ ३ ६२७ ५३ २  
 आलवाल ५२ ६५ १५६३ ३१ ५ ६५  
 आलस्य ५ ३ २२६६ ४४ २  
 आलस्यवत्त ३७१  
 आलान ५  
 आलाप ३१  
 आलि ५ ५  
 आलिङ्ग ५ ५  
 आलिङ्गन ६१३ ५ ३१६७  
 आलिङ्गनीयक ५ ६  
 आलिङ्गय ५ ६  
 आलिप्ति ५६  
 आलीढ ५ ६  
 आल ५  
 आल ५ ६  
 आलङ्ग्य २१२  
 आलप ५६  
 आलपन ५११  
 आलपनवस्तु ५६  
 आलपविषय ३६६१  
 आलोक ५६ २६७६

आलोचन १५३  
 आवय ५६१  
 आवपन ६७  
 आवप्य ५६६  
 आवरण ३३६३  
 आवण ४ ६  
 आवत्त ५६२  
 आवत्तन ५६३ ५६२  
 आवसना ५६२ ६३  
 आवलि ३  
 आवसण्य ५६  
 आवसथाग्नि ५६४  
 आवसित ५  
 आवाप ५६५  
 आवापक ५६६  
 आव हितवेवाद्य सजनविधि ६  
 आविक ५६६  
 आविद्य ५६  
 आविल ५६ १२ ३  
 आवुत ५६  
 आवृत्ति ५ ७  
 आवृत्ति ५६२ ६३ १६  
 आवेशन ५६६  
 आवेष्टक ६ ५५ २  
 आश ६  
 आशङ्का ६ १ ५  
 आशसित ६ ५  
 आशय ६ १  
 आशर ६ ३  
 आशा ६ ३  
 आशाबन्ध ६  
 आशित ६ ५  
 आशिन ६ ४  
 आशिर ६ ५  
 आशिस १५ ६ ६ २ ६

आशु ६ ६  
 आशम्प ६१४  
 आशगति ६१६३  
 आशुधाय ५ ६  
 आशशक्ति ६ ६  
 आशुसन्ननीह्यतर ३२ ३  
 आशुत ६१२  
 आशौचनि ६ ६  
 आश्चर्य १११ २१२१ ३ १३  
 आश्रम ६१ ६२५ ३२२  
 आश्रय २६६ ३२  
 आश्रयदान २६ २  
 आश्रयनाशक ६१  
 आश्रयाश ६१  
 आश्रव ६११  
 आश्राणा ६११  
 आशि ष्ट ३१२  
 आश्लव ५ ५ ६१२  
 आश्लवा ६१२  
 आश्वयज ६१५  
 आश्वयजी ६१३  
 आश्वत्थ ६१४  
 आश्विन ६१ १५  
 आश्विनी ६१६  
 आश्वी ६  
 आषाढक्षमाज ६१  
 आषाढा ६१  
 आषाढी ६१  
 आष्ट ६१  
 आस ६१  
 आस ६१६  
 आसक्त ६२  
 आसङ्ग ३१६५ ३२ ७  
 आसङ्गनकर्मन् ६२  
 आसति ६२

आसन ३५४ ६२१ २२ २३ २ २ २६ २  
 ३२ ३३६ २ ५५ ६ ६३  
 आसनपण्डित्यक्षुद्रयक्ष २  
 आसनभिद ३३६  
 आसनभव ३१४१  
 आसना ६२२ ३१  
 आसत्तर २६ ६५ ५  
 आसनी ६२२  
 आसव ६२३  
 आसवी ६२३ ३  
 आसन्न ७  
 आसन्नमरण  
 आसव ६२  
 आसावन ६३२६  
 आसार ६२५  
 आसारी ६२५  
 आसुयाव्यमद्यभव ६२  
 आसुतीबल ६२६  
 आस्काव २३ २  
 आस्कवन ६२६  
 आस्कविताव्यवगति २ १  
 आस्तरण ६२ २१ ६ ६५६  
 आस्तिक्य ६१५६  
 आस्तीणवस्तु ६२  
 आस्तीव्य ६२  
 आस्था ६२  
 आस्थान ४६६२  
 आस्थानी ६२  
 आस्पव ६२६  
 आस्फोट ६२६  
 आस्फोटना ६२६  
 आस्फोटनी ६२६, ५६६४  
 आस्फोट ६३  
 आस्फोता ६३ ५ ७१  
 आस्य ६३१ २४७१

आस्यप्रिया ६३२  
 आस्यशोधप्रव १ ३३  
 आस्या ६३१  
 आल ६३२  
 आलाव २६  
 आलावित  
 आस्वाव २ ६२  
 आस्वावन ५ ६५ ६५ ६६ ३  
 आस्वावित ५ ६ २  
 आह ६३३  
 आहत ६३३ ६  
 आहति ६३  
 आहरण ६३  
 आहृत्य ६३५  
 आहवनीयपूव ६२६३  
 आहवनीयाग्नि ५ १ ६ ४२  
 आहार ६३५ २६१  
 आहार्य ६३५  
 आहित ३ ११  
 आहितोक्त ६२३  
 आहुति ५ ५  
 आहो ६३६  
 आहिक ६३  
 आह्लावक २ ६६  
 आह्ला ६३  
 आह्ला २ ५ २ ५ ६२५  
 १६२ ६६६ ६ ४

३

३ ६३ ३६  
 इष्टु ६१६ ११४१ १३ ६ २४६४ ४४६१  
 ४६६ ६ ५६२  
 इष्टुकाण्ड ५६ ६३६  
 इष्टुगघा ६४ १३४४ ५४१४  
 इष्टुजातिभिद् ३४

५६१ २१२ ६६ ५ ६६ ६ २७  
६६ ६ १२६ ३१

इन्द्रकाया २ ५

इन्द्रकानन ३२६

इन्द्रकील ५३

इन्द्रकोश ६५

इन्द्रजाल १५ ६

इन्द्रजित ४ २

इन्द्रतनय ५६२१

इन्द्रववतनक्षत्र २३२६

इन्द्रधनुस ५२ ६

इन्द्रनील ५३७ ३२६

इन्द्रपुच्छ ३१३३

इन्द्रपुत्री २४१४

इन्द्रमह ६५६

इन्द्रयोगिन ६१६

इन्द्रवारुणी १ ७५ ४२१५ ५४

इन्द्रवृक्ष ६५६

इन्द्रवृद्धि ६६

इन्द्रसम्पत् ६६

इन्द्रसम्बन्धिन ६६

इन्द्रसुत ६१

इन्द्रसुता २२३६

इन्द्रा ६६

इन्द्राक्ष १४

इन्द्राणी ६६१

इन्द्रायुध ६६२ ६३ ६७३२

इन्द्रायुधा ६६२

इन्द्रारव १ ५६१४

इन्द्रिय १ २३ ४७२ ६६ ७७

१११ १६६५ १६ ७ २ १ ३१३

३७५ ५२ २ ६६३

इन्द्रियकीर्ण ५३४७

इन्द्रियनिग्रह २५ ७

इन्द्रियसमाहृति ३६ ६

इन्द्रोसव ६५६

इन्द्रोद्यान २ ६

इन्द्रोपगत ३१

इन्द्रधन ५ ६६५ २ ६

इन्द्रम ३ ६६ ४३

इन्द्रमघटना २ ३

इन्द्रमन्त्र ५५

इन्द्रमण्डा ११ २

इन्द्रो ११३२ ३५

इन्द्रम्य ६६५

इन्द्रम्या ६६५

इन्द्रयत्ता ३६६

इन्द्रा ६६६

इन्द्रावत् ६६

इन्द्रावती ६६७ ४६६४

इन्द्रिण ६६

इन्द्रा ६६६

इन्द्रलीस २२

इन्द्रवक ६७

इन्द्रवका ६

इन्द्रवल ६७१

इन्द्रवला ६७१

इन्द्रविर ६७२

इन्द्रविरा ६७२

इन्द्रवीका ६७३

इन्द्रु ६७२ ७४ ११६६

इन्द्रुच्छव ३१२१

इन्द्रुधि ३६६६

इन्द्रुसधान २५ ५

इन्द्रुष्ट ६ ५ ५ ७३

इन्द्रुष्टका ६१६

इन्द्रुष्टकान्तर ३५

इन्द्रुष्टगद्य ६७६

इन्द्रुष्टि ६७७

इष्टिखात ११ १  
 इष्टिगामिन २ ३६  
 इष्टिवक्षिणा १  
 इष्टव ६  
 इष्टव ५ १  
 इष्टवा ६  
 इष्टवास ६

३

ई ६ ६  
 ईक्षण ६  
 ई  
 ईडा ६  
 ईति ६ १  
 ईप्सित  
 ईरिण ६ १  
 ईरा ६ २  
 ईरावल्लभ ६ ५  
 ईशान ६ ३ २  
 ईशानविगज ६४६६  
 ईशाना ६ ३  
 ईशानी ६ ३  
 ईशिली ६ ३ ६  
 ईश्वर ११५ २६ ३२१ २६ ६ ६२१  
 ६ ६  
 ईश्वरप्रिय ६ ५  
 ईश्वरस्थानभव ३ २  
 ईश्वरा ६ ४  
 ईश्वराभित ६२४  
 ईश्वरी ६  
 ईषिक ६ ५  
 ईषपाण्ड ३२६  
 ईषपाण्डमत ३२६  
 ईषत्प्रौढयोषित २६३७  
 ईषवर्ष ७६ १३ ५ २ ५ ५३ २

ईषलील ५३४  
 ईषभ्रानवस्तु २५६४  
 ईषा ६ ५  
 ईषिका ६  
 ईष्म ६ ७  
 ईर्णाल १५ ५  
 ईस ६  
 ईहा ६ २१  
 ईहामग ६ ५५६४

उ

उ ६ ६ ६  
 उक्त ६६  
 उक्ति २५४ २६ ६ ३ ५ १६ ५२  
 ५ ६६  
 उक्त्य ६६१  
 कान् ६६२ ४६६६ ५२३ ५३ ५ ५६ ५  
 उदाणी ६६२  
 उदा ६६३  
 उदा ६६४ ३३३५ ४४ ६ ६५६२  
 उदया ६६  
 उदय ६६५ ६६ २ २ ३१५३  
 उपसप्तस्त्रीसुत ६१  
 उपगधा ६६  
 उपा ६६  
 उपसप्तसुत ६१  
 उचित ६६ ६२६ ६३६  
 उचितव ६३६  
 उक्त्यकण २  
 उक्त्यटा ३ २२  
 उक्त्यण्ड ४१६  
 उक्त्यागीतसामन ६१३५  
 उक्त्य ६६६  
 उक्त्यल ७  
 उक्त्यललाटा ४२१६

उच्चराब्द २ २६  
 उच्चार ३ १६  
 उच्चारितराब्द ३ ५  
 उच्चिहट १  
 उच्चर्गाति ५५  
 उच्चै ध्रुवस १  
 उच्च स्वर ५  
 उच्छदित ५  
 उच्छिरस ३  
 उच्छिष्ट ५२४ १२१६ २३१३  
 उच्छीत ७ २  
 उच्छीय ७ ३  
 उच्छन ३  
 उच्छाय ५१६५  
 उच्छित ७ ४  
 उच्छवास ७ ४ २६१  
 उच्छद ७ ५  
 उज्जयिनी ५४  
 उज्जयिनीयावधनगर ३६६  
 उज्जयिनीपार्श्ववाहिसरित् ६५१  
 उज्जुम्मित ७ ५  
 उज्ज्वल ६ २३३६  
 उज्ज्वलरस ६१२  
 उज्ज्वल ७ ७  
 उज्जित १६६  
 उज्जित ७ ७  
 उज्ज ७ ७  
 उज्ज ७ २६२  
 उज्ज ७ ३ ४ ४६  
 उज्जीश ७ ६  
 उज्ज ६  
 उज्ज ७१  
 उजाहो ७१  
 उतकत्र ५२  
 उत्कट ११ १२ १५७ ५२ ६

उत्कटग ध्रुवस्तु २५५५  
 उत्कटवत ६३  
 उत्कटहृयक ७६  
 उत्कण्ठा १३ ४६३६ ६६२२  
 उत्कम्पित ७१२  
 उत्कर्ष ३ १  
 उत्कर्षाधान ६२२६  
 उत्कलिक ७१२  
 उत्कलिका ४ ६ १३  
 उत्कीर्ण ७१३ ४५  
 उत्कृतिच्छवस २५ २  
 उत्कृतिसप्तक छवस ६३११  
 उत्कृष्ट ७१४ १६ ६४ २  
 उत्कृष्टचतस ३६२३  
 उत्कोच ५५१ २१ ६ ४ ३२ ५२ ६  
 उत्कोश १४  
 उत्क्षिप्त ६  
 उत्क्षपण ७१  
 उत्क्षप्त २ २१  
 उत्खाति ६५  
 उत्तस १५  
 उत्तप्त १५  
 उत्तम १५ ७१६१ १६६  
 उत्तम ५ ३  
 उत्तमफल ३५३२  
 उत्तमर्ण ३७ ४  
 उत्तमवहन ३ १४  
 उत्तमस्त्री २ ३६६  
 उत्तमा १६  
 उत्तमायस ४६३२  
 उत्तर १ १ ७३५ ३१५३  
 उत्तरकाल ६४  
 उत्तरदिग्गज ६४१  
 उत्तरफलानी ३ ६  
 उत्तरवादिन् २६१



उत्तराङ्ग १  
 उत्तरायण ६३ ५२२  
 उत्तराषाढा ३ ६  
 उत्तरासङ्ग १ ६६  
 उत्तरीय २ ६२२  
 उत्तान १६ २  
 उत्तानपावण २ ३  
 उत्ताल २  
 भुत्तुङ्ग ६३  
 तत्रास २  
 उत्त्रासक १ ६६  
 उत्थान २१  
 उत्थापनका २३६  
 उत्थापित ४  
 उत्थित १ २२  
 उत्पत्तन २३  
 उत्पत्तनकमन २  
 उत्पत्ति २३ २२१६ २ २२ ३६६३  
 ६३२१ ६  
 उत्पत्तिक्षेत्र ५३५  
 उत्पत्तिस्थान ४ १  
 उत्पन्न २२६१  
 उत्पल २३ ११ ६ १ ६१ ६२  
 उत्पली २  
 उत्पाटनक्रिया ६६  
 उत्पात २ ६६ ५ १५६  
 उत्पातातर २ ३  
 उत्पात २५  
 उत्पावन ३६६६ ६५१२  
 उत्पान १६  
 उत्पावनीय २२२३  
 उत्पिब २५  
 उत्पीडा  
 उत्प्रका २५  
 उत्फुल ५ २६ २३१६

उत्स २६ ३  
 उत्सङ्ग ६ २ १६३  
 उत्सग २  
 उत्सगनिषध २ ५  
 उत्सजन २६  
 उत्सजनविधि ६  
 उत्सव २६ १२१४ १६१२ ६  
 ३२१ २ ५६  
 उत्सवकालिकवस्त्रभायाविबलावग्रहण ३५६१  
 उत्सवकालिकवस्त्राद्यावान ३५५६  
 उत्सावना ३  
 उत्साह १२ ३ ६३ ६३ ६  
 उत्साहना ३१  
 उत्साहा ३१  
 उत्सुष्ट ३२  
 उत्सेक २६  
 उत्सेध ३३ २६ ६  
 उत्स ३  
 उत्सक ३५  
 उत्सक ५ ३६ १५३६  
 उत्सकसाध ३  
 उत्सकाह ३  
 उत्सक्या ३ ३२३५ २५५ ६३  
 उत्सक्रम ३५  
 उत्सन्ध ३  
 उत्सन्न ७३६  
 उत्सत ५३ १  
 उत्सया २५ १  
 उत्सपान १५१ ३ ७६  
 उत्सय ३ ६५  
 उत्सयन १  
 उत्सयनीय २  
 उत्सयाचल १६६  
 उत्सयात्रि  
 उत्सर ७ ३ १ २ १३६ १५ १

उदरथि ४३  
 उदरसपित ६३ ३  
 उदरावत्त ६  
 उदक ४४  
 उदचिस ५  
 उदशिविकार १५  
 उदास ५  
 दात्तभिन्न १४  
 उदात्तादि ६६४  
 उदान ७ ६  
 उदार २५६ ३ ५१  
 उदारा ७  
 उदारी ४  
 दास्थित ७ ६  
 बाहुरण २६६२  
 उदित ५ -५४  
 उदीची ३५  
 उदीय १ ३५ ५  
 उदीयनीवृक्ष १३५ ३२ २  
 कुम्बर ५१ ५२ १२५३ ६५ ७  
 उकुम्बरतरु ३५२  
 उवम्बरद्रुम २२१२ ६२७५  
 उकुम्बरफल ५ ६  
 उवृक्षल ७५३  
 उवृक्ष ५३  
 उवगत ७५ ३६६५  
 उवगतघन ७५  
 उवगता ५४  
 उवगताचिस ७४५  
 उवगति ४१  
 उवगम २१ ३६ ६७  
 उवगात् ७५५ ६२३१  
 उवगीथ ५५  
 उवप्राहित ७५६  
 उव ५७

उद्वन ७५  
 उद्वान ५  
 उद्वृष्टपाल ६२  
 उद्वसुर ६३  
 उद्वाम ६३  
 उद्वाल ६  
 उद्वत १६  
 उद्वनन ६५  
 उद्वननकमन ५६  
 उद्वननी ७६५  
 उद्वरण ६६  
 उद्वष ६  
 उद्वान ३३ ६ २१  
 उद्वार ७६६ ६  
 उद्वत ६  
 उद्वति ७६  
 उद्वध ७६६  
 उद्वबद्ध ७  
 उद्वट ११ १२  
 उद्विज्ज २  
 उद्वित १ ६५ ५  
 उद्विव ७७१  
 उद्विद्रुव २ ७१  
 उद्वय ५ ६  
 उद्वान ७७२ ४ ३४ ५६ १  
 उद्वानपाल ६५६  
 उद्वयोग ३१६२  
 उद्वोत ५६  
 उद्व ७७३  
 उद्वी ७७३  
 उद्वतन ७३  
 उद्वतनपट २३४६  
 उद्वतनाशुक २३४६  
 उद्वान्त ७ ५  
 उद्वान्ति २१ ४

उद्भासना ७ ५  
 उद्वाह ७६  
 उद्वाहन ७  
 उद्वाहनी ७  
 उद्वाहसाधक २  
 उद्गत २ ६३  
 उद्बुद्धिहनुव्यापार  
 उद्भग  
 उद्भजन  
 उद्भ  
 उद्भत ६४५ ६५  
 उद्भतम ६५ १  
 उद्भतरद्व २५ ६  
 उद्भतानत २५ ६ ३ २६  
 उद्भति ३३ १ ६३ ६  
 उद्भय ६३१  
 उद्भिद्व ६  
 उद्भतु ७६  
 उद्भजन ३ ६१  
 उद्भत ७ १३१५ १६ ५ ५२  
 ६५ ६ ६ २३  
 उद्भद्व १  
 उद्भवनारी ३३ ६  
 उद्भाष ७ १  
 उद्भाव ३ ३  
 उद्भावरोग ६१७  
 उद्भाववत्  
 उद्भाग २  
 उद्भिषित २  
 उद्मीलन ३  
 उद्मीलित ३  
 उद्भष ७ २ ३  
 उद्भ ४  
 उद्भकण्ठ ७  
 उद्भकरण ३१ ५

उपकार ५ १६  
 उपकारक ६  
 उपकारवित १५२६  
 उपकारिका ६  
 उपकार्या ७  
 उपकुञ्ज २  
 उपकुञ्चिका  
 उपकुर्वण  
 उपकृति ७ ५  
 पक्रवन ६१  
 उपक्रम ५ १ ६३१  
 उपगतोवक ३२  
 उपगम ६  
 पगहन ६ ६  
 उपग्रह ६  
 उपग्रहण ३६५१  
 उपग्राह्य ६१  
 उपघय २६३६  
 उपचर्या ६१  
 उपचार ७६२  
 पक्षित ७६२  
 उपक्षिप्ता ६३ ५५  
 उपछवन ६१  
 उपजाप ४ ४७  
 उपजिह्विका ६  
 उपतप्त ६६१३  
 उपताप १५ ६५ २५६३ २६ ६  
 ६६१२  
 उपवश ६५  
 उपविश १३४६  
 उपदेश ५५२ २ ५ ५ ५ ३६ २  
 उपग्रव ६६  
 उपग्रत २  
 उपद्रुति ६६  
 उपघा ६

उपधान ६ १ ४ १ ५ १ ३  
 उपधानक्रिया ६  
 उपधि ६६ २५  
 उपधपित  
 उपनय २६ ६  
 उपनाह १  
 उपनिधि २ २६४  
 उपनिबधना ३  
 उपनिषत् ४ २७६२ ३ ५६ ५६५५  
 उपनयस्त १६  
 उपपत्ति २२७१  
 उपपत्ति ४५७१  
 उपप्लव ५  
 उपबह ३  
 उपमद ५४४४  
 उपमा ६१५ ५२ ४  
 उपमातु २ २  
 उपमान ५  
 उपयमन ६  
 उपयात ७६७  
 उपयक्त २६ ५  
 उपर ६ ७  
 उपरक्षण ६२५६  
 उपरक्त ७ ६  
 उपरध्या २६  
 उपरा ६  
 उपराग ५ ६ १ ४१ १६ ५ ७  
 ३१६३ ३३६४  
 उपरि ३ ६७  
 उपरिस्थ ७४१  
 उपरूपक २६१२  
 उपल १  
 उपलब्धि १ १६ ७ ५४५  
 उपला ११  
 उपलावि ४ ६

उपलिङ्ग ११  
 उपवन ५ ३  
 उपवतन १२  
 उपवसय १२  
 उपवास १२ २३  
 उपशाय १३  
 उपष्टम्भ ७६  
 उपष्टम्भनसाधन ६  
 उपसग्रहण १६  
 उपसत्ति १७  
 उपसम्पन्न १ ३६३  
 उपसग १६  
 उपसजन २  
 उपसर्ग २१  
 उपसूय ४११४  
 उपसूयक ३१७  
 उपसष्टि २  
 उपस्कर ३६ ७ ५६  
 उपस्थ २२ १६२ २४ ३६२५ ६१ १  
 उपस्थालव्य ३६७  
 उपस्पर्श २३  
 उपस्पर्शन २३  
 उपहार ३ ५  
 उपह्वर २४  
 उपोषा २६  
 उपोषाचारण २२२६  
 उपाकृत २  
 उपादेय ७६१  
 उपाधि ३१३४  
 उपाध्याय २६ २४६३  
 उपाध्याया २  
 उपाध्यायानी २७  
 उपाध्यायी २७  
 उपानह ३२६५ ३ ६  
 उपान्त २६५६

उपाय ५ २ १६३१ २ ६३ २ ५  
 ३ २ २१ २ १ ५ २ ६३६  
 उपायतन ६५६६  
 उपायन ३ १६ ५३  
 उपायिन ५  
 उपालम्भ ३१ ३२ ५ ३६६  
 उपासना ३  
 उपासनाङ्ग २  
 उपास्ति १ ६२ ६१ ६  
 उपाहित ३  
 उपेक्षणावि ३३६४  
 उपेक्ष ५२३ ३१  
 उपोढ ३१  
 उपोवका ३२  
 उपलकेश २३  
 उभयतल २५३  
 उभयाय २६२  
 उभ्र ३३  
 उभ ३३  
 उभर ११  
 उभा ३४ १ ४ २६ २ ३६ ३६१  
 ६१ ३ ६ ५३३ ५६२२ ६२६  
 उभातिथि २ ६५  
 उभाक्षयधान्यभव ६४  
 उभासहित ६५२७  
 उभग ४३ २ ४३२१  
 उभगान्तर २३५६  
 उभ्र ४  
 उभ्ररी ३६  
 उभ्र सम्बन्धिन ६ १  
 उभ्रस्थल ६६६  
 उभ्रस ३४ १६३६ ६ ५  
 उभ्रक्षाण ६  
 उभ्रस्थ ३५  
 उभ्री ३६  
 ३५

उभ्र ३६ ५३ ३  
 उभ्रक्रम ३  
 उभ्रगाय ३  
 उभ्रतर ५१ ६  
 उभ्रव ५१ ५  
 उभ्रतम ५१  
 उभ्रोभवाविक ३५  
 उभ्ररा ३  
 उभ्ररी ३  
 उभ्रवि ३६ ४ १२  
 उभ्रवी ३६ ३ २५६५  
 उभ्रप ३६  
 उभ्रक ४१ १२ ३ १६१६ २६ ३ २ ५१  
 ३ ३३ ५ ३५ ६ ५५६५ ६ २३  
 २  
 उभ्रकमिव ६६  
 उभ्रखल ५३ ४१ ३२  
 उभ्रखला २  
 उभ्रखली २  
 उभ्रल ६६५६  
 उभ्रका २ २  
 उभ्र ३ ११  
 उभ्रमक ३ २  
 उभ्रमकाश ५  
 उभ्रम्भन ६६  
 उभ्रलाघ ४५  
 उभ्रलिखित १३ ५  
 उभ्रलाक्षयस्तम्भभव ६  
 उभ्रलखनीय ६  
 उभ्रलय ४६  
 उभ्रलोच २ ६ ५६  
 उभ्रलोल ४६  
 उभ्रशनस् २ २५  
 उभ्रशिक ७  
 उभ्रशीर २३५ ३६ ४७ १२ २ १६७७

२२५३ २६ २ १२ २ ६३ २६६६  
 ५३ ५५५२ ६५१ ६  
 उशीरज ६ २  
 उषव ५  
 उषस ३२७ ३१ २ ६३ ५  
 १६ १ ४ ३ ५६२२  
 उषा ४६  
 उषापति १३  
 उषित ४११ ५१  
 उष्ट्र ५२ १६२ २६६१ ४१६१ ४२६३  
 ४६५६ ५३१ ५ २१ १  
 उष्ट्रक २ २  
 उष्ट्रपत्नी १११  
 उष्ट्रपुच्छी ५६ ३  
 उष्ट्रिका ५१  
 उष्ट्री ५२  
 उष्ण ५२ १६३५ २ २३ २४६ २६५६  
 उष्णक ५४  
 उष्णगण ५६ २४३ २६१६  
 उष्णगुणवत् २ ३  
 उष्णवीय ५३  
 उष्णाम्बु ६६६  
 उष्णिका ५  
 उष्णीष ३३ ५ ५६ २  
 उष्मक ५५  
 उष्मन २४४६  
 उस्म ५५  
 उस्मा ५५  
  
 ऊ  
 ऊ ५६  
 ऊक ५ ५६  
 ऊका ५६  
 ऊकी ५६  
 ऊठ ७५३ ३१

ऊत ६६२  
 ऊधस १ ३ ६  
 ऊधस्य ६१  
 ऊधोभवाविक ६१  
 ऊन ३ ६६ ६ २  
 ऊवध्य २  
 ऊम ६१  
 ऊम ६२  
 ऊमसहित ६५२  
 ऊर य ६२  
 ऊररी ३६  
 ऊरी ३६  
 ऊररी ३६  
 ऊरु ६२  
 ऊरुज ६२  
 ऊरुज्ज्वासाधि २२६५  
 ऊरुमव ६२  
 ऊज ६३  
 ऊज ६३  
 ऊजस्वती ६४  
 ऊजस्वल ६४  
 ऊज ६५  
 ऊजनाभि ४  
 ऊर्णा ६४  
 ऊर्णायु ६६  
 ऊदर ६  
 ऊर्ध्व १ ६  
 ऊर्ध्वकमन ७३  
 ऊर्ध्वगमन २३  
 ऊर्ध्वङ्गमन ७३६  
 ऊ वज ६३६  
 ऊर्ध्वतागत ६५६५  
 ऊर्ध्वसीत ७१४  
 ऊर्ध्वमूल ६  
 ऊर्ध्वरूपक ६६

कष्यवहन ६  
 कष्यविस्तृतबो पाणि नुमान ३६ १  
 कर्षाद्धिप्रवृत्तादि ६  
 कर्षाद्धिप्रवृत्तपुरोशक १६  
 कर्षाद्धिप्रवृत्तजट ५  
 कर्मि ५१ ५३५३ ५५३६  
 कर्मिका ६६ १  
 कवश्यपयक ६ २  
 कव ५२१४  
 कवजलवण ३२३  
 कवण २  
 कवणा ३  
 कवर ६६ १ ४ ६ ५१६२  
 कवलवण ३ ६  
 कषा  
 कषमन् ५  
 कषमन् २ १५  
 कह २ ३ ५  
 कहशान्य २६  
 कहा ७५

कृ

कृ ६  
 कृ ६  
 कृ ७ २ २ ३६५ ५ ५६६  
 ४६६६ ५३५५  
 कृकागधा  
 कृकार ६  
 कृकासाम ३१२  
 कृकरा  
 कृजीक  
 कृजीककृषम  
 कृजीव १ १७७  
 कृजु ३ १ २ ६ ३१ ३२  
 ६३

कृजुगामिन ६  
 कृजुजसान २  
 कृण ६ १२६५ १ ३५ ६३६  
 कृणयुद्धि १५ २ ५३४६  
 कृत ३  
 कृतु २ ६  
 कृतुजात ५  
 कृतुमती ५१ ३५२६  
 कृत्विग्मव ६४६  
 कृविज २ १ ६१ ५५ ६ ६१  
 १ २ ३६५  
 कृद ११ ५  
 कृद्धि ५  
 कृद्धिवद्धिपोषधिद्वय ६ ३२  
 कृद्धिसकभषयमव ६३५१  
 कृद्धिपोषध ५६ ६  
 कृम ६  
 कृमय  
 कृमयजित्  
 कृषम ६ ३६  
 कृषमजल ६१  
 कृषमयोगिन ५ २  
 कृषमा ६१  
 कृषमाकृषमजल २६  
 कृषमपोषध ६  
 कृषि ६२ २ ६ ६१  
 कृषिमव २ ६ ३ ६  
 ६१ ५ ६ ६२१६ ६३५६,  
 ६ १  
 कृषिसुष्टा ६३  
 कृष्यतर ६ ६  
 कृष्यप्रोक्ता ६  
 कृष्य ६  
 कृ ६५

ल

लकार ६५

लकार ६६

ए

ए ६

एक ६

एकक २६५६

एककुण्डल ६६

एकप्रय ३ ६५

एकचक्रवर् ३ १६

एकधारि ३ २

एकता ३६६६

एकतान ६ ३

एकतु ५ ६३ ३

एकत्वकरण ६३ ४

एकबावि ६२४

एकविस्त ६ ६

एकदेश ४ ६ ३६ २

एकदश ६

एकपव ६ १

एकपदी ६ १

एकमात्रवण ६ ६५

एकमात्रस्वर १

एकमार्गक ६ ६

एकयष्टि २ ६३

एकवणकमय ६३६४

एककिल १५६

एकाक्ष ६ २

एकाक्षीला ६ २

एकाग्र ६ ३५६

एकाङ्ग ६ ३

एकावश ६ ४

एकावशाह्वाह्मिव ६३ ४

एकावशी ६ ४ २ ७ ६७२५

एकायन ६ ५

एकायनगत ६ ६

एवाथ २५५२

एकावयव ६ ३

एकाग्रयानपूर्वाय श्रयप्राप्ति ६२४६

एका ६ ६

एकाह्नुभव १ ६

एकाहाड्यह्नु ३६२

एकीभाव ६२१४

एककेभरथ यशवप चपदगबल ३१२

एडका ६

एडमक ६

एणीकरण ६ ६

एणीकृत ६

एत ६ ६१

एतश ६१

एतशा ६११

एता ६१

एत्थ लाड्यमस्यमव ६ २६

एधतु ६११

एधित ६१२ ३ २ ५५ ५

एधितु ६१२

एनस् ६१३

एनी ६ ६

एरण्ड ३ २१२५ ३ ६ ५२ १६१

५ ६७ ६ ६

एलक ६१३

एलबालक ३ २

एला १४ ३ २४३ ३२ ७ २६२१२२

३ १२ ३४ ३ ३ ५५

एलापर्णी ६४ १

एलाबालक ५३५६

एलाबालकाड्यमवज २६ ५

एलावती १६१

एलितु ६१३



एव ६१४  
 एवम् ६१५  
 एवण ६१६ १  
 एवणा ६१६ १  
 एवणिका २६३२  
 एवणी ६१६  
 एव्य कालीनकल ४४

ऐ

ए ६१  
 ऐक्य ३ ६५  
 ऐक्य १६१६  
 ऐक्याक २३२५  
 ऐक्याकनृप ४५  
 ऐक्याकममज ६४५  
 ऐतिह्य १३ १  
 ऐत्रि ६१  
 ऐत्री ६१६  
 ऐस ६२  
 ऐसी ६२  
 ऐरण्ड ५१४१  
 ऐरावत ६२१ ६ ५  
 ऐरावतसुत ३४४  
 ऐरावती ६२३  
 ऐलवालक ५५  
 ऐशानीविश २  
 ऐश्वर ६२  
 ऐश्वय १५ ३ ५ ४२६ २६१ ३६३१  
 ५ ५ ५३  
 ऐश्वयवजूव ६६४६  
 ऐहिकवस्तु २६६१

ओ

ओ ६२५  
 ओम ६३१

३५ क

ओकार ३६३१  
 ओकत ६२५  
 ओघ ६२६  
 ओजस ६२ २  
 ओज सम्बन्धिन ६३६  
 ओजोमखकायगणम ३ ३१  
 ओ ६२  
 ओङ्गपुष्प २२५५ ३३३  
 ओङ्गा ६२६  
 ओतु ६२६ ३ ३३ ५६२२  
 ओवन १३६ ४२ ६३५ ६३ २६५  
 २ ६ ३ ३२ ३६३ १ ११३  
 ओवनी ६३  
 ओलक ६३२  
 ओलिका ६३३  
 ओल ६३३  
 ओष ६३  
 ओषधि १६ ५ २२ २  
 ओषधियेषणी १ ६६  
 ओषधिमव ३ ३६ ३१ ६ ६३५  
 ओषधीभिद २२ २  
 ओष्ठ ११४ ६३४  
 ओष्ठी ६३  
 ओष्ठघस्वर ६६

औ

औ ६३५  
 औचिय ६३६  
 औजस ६३६  
 औत्कण्ठ्य ६  
 औत्थिताशानिक ६१४५  
 औसुक्क ४५६५ ६३६ ४ ५६  
 औदारदेवी ३४५१  
 औदाय ३ ५१  
 औमुम्बर ६३

औदुम्बरायण ६३  
 औपम्य ५ ६१ १२  
 औपरिक ६५६  
 औपरिष्ठक ६३६  
 औपासनाग्नि

## क

कस ११ ६ १२३३ ३४  
 कससोवर ६६२  
 कसामाय ३३६१  
 कसोत्पल ५ २ ५  
 क ६४३ ४५  
 ककु स्थसुत ६१  
 ककुव ६ ५ ४६  
 ककुदिन ६४७  
 ककुभत ६४  
 ककुभती ६४  
 ककुभिन् ६४६  
 ककुवत ६४६  
 ककुवती ६४६  
 ककुम ६५  
 ककुम ६५६ ६५२ ३७४  
 ककुमद्रुम ३४१  
 कककोल १५६ ३ ४ ३ १ ४३६७  
 कककोलक १५६५ २  
 कककोलिन ४३३३  
 कककोलागुरुकपरसयुतलावि ६३५  
 कककोलिकौवधि २ ४  
 ककखट ६५२  
 ककखटिन ६५२  
 कक ६५३  
 कका ४१ ६५३ ५ २  
 ककाधोभाग ३३  
 कक्या ६५४  
 कक्याजीविन् २ २६

कक्यातर ६१ ४  
 कक्यापाल ६५६  
 कक्यावक्षक ६५६  
 कङ्क ६५ २६६ ४६३१  
 कङ्कट ६५  
 कङ्कण ६५ ६६  
 कङ्कणिन ६५६  
 कङ्कणीका ६५६  
 कङ्कत ३ ३३  
 कङ्कतिन ६६  
 कङ्कत्रोटिमस्य २२५१  
 कङ्कपक्षिन १३५४ ३१६  
 कङ्कपत्र ६६१  
 कङ्कमख ६६१  
 कङ्कर ६६२  
 कङ्कविहङ्गम १३२५  
 कङ्ककुखग ३७  
 कङ्कलितर २६  
 कङ्गु ४ ६६२ २१३७  
 कङ्गुघाय ३३६६ ५ ६  
 कङ्गुष्ठ २६१६  
 कङ्गुसस्य ३ ४  
 कञ्ज ४५६ १३२ ६६३ ६ ५५  
 कचपोता ६६  
 कचा ६६४  
 कचाकु ६६५  
 कचवर ६६५  
 कचिवत ६६६  
 कछ ६५३ ६६  
 कछज्जी ६६६  
 कछप १ ६६ १ १५१६ २ ३  
 २२५७ ३६६५ ३६६१  
 कछपी ६६ २७४४  
 कछरा ६६६  
 कछी ५४ ६

कछर ६  
 कछ ६ ५  
 कञ ६  
 कजल ६ १ २ ३  
 कज्जला ६ २  
 कज्जली ६ १  
 कञ्चुक ६ ३ २६५३ ५१ ५३३१  
 कञ्चकसयत ६  
 कञ्चुकिन ६ ४  
 कञ्ज ६ ५  
 कञ्जन ६ ६  
 कञ्जर ६ ६  
 कञ्जार ६  
 कञ्जी ६ ६  
 कट ६ १६६ २६४६  
 कटक ६ ६ ५१ ४  
 कटकातर ३२ २  
 कटखावक ६ ३  
 कटप्र ६ ३  
 कटमङ्ग ६ ४  
 कटभी ६ ५  
 कटम्ब ६ ५  
 कटम्भर ६ ५  
 कटम्भरा ६ ६  
 कटह ६  
 कटाक्ष ५११  
 कटाह ६ २५  
 कटि ६ ६ २२ २५ २ ६५ २६५५  
 ३ ६ ६१ १  
 कटिका ६  
 कटिल ६ ६  
 कटिसूत्र ४ ६१२  
 कटिस्थान ५ ५  
 कटी ६ ६ ६  
 कट ६ ६

कटक २ ३ ६६२  
 कटकाव ६६३  
 कटका ३२५ ६६२  
 कटप्राथि ६६३  
 कटतिक्त ६६  
 कटतिवितका ६६  
 कटतुम्बी ६६ ३  
 कटत्रय २५  
 कटफला ११ ५  
 कटरस २  
 कटरोहिणी ३ ६६ ६२ २ ४६ २३ ५  
 २४४५ ६  
 कट कट ६६५  
 कटफल १ ५५ ५६ २५५ ३३ ३  
 ६५२६  
 कटफलफल ३३ ६  
 कटफलवृक्ष ६१६६  
 कटवङ्ग ६६५  
 कठ ६६६  
 कठसम्बन्धिन् १२५५  
 कठार ६६६  
 कठिम्भर ६६ १ १३ ३ १ ६१६६  
 कठिन ६५२६ १६३५ २ १६ २२ ६  
 ३६ २६ २ ३  
 कठिमत्व १ २  
 कठिना ६६  
 कठिनी ६६ १ १  
 कठिलक ६६  
 कठोर ३ १६  
 कटङ्गक ३ १  
 कटङ्गर ३६ २  
 कटङ्ग ६६६  
 कटम्ब १  
 कटार १ १  
 कटारक १ ६१

कडारवृषभ ३ ३२

कण १ २

कणजीरण ३४

कणप १

कणा १३३ १ ३ ३३५२ ३

कणिक १ ६

कणिका १ ५ ६

कणिवान ६ ५६

कणिश ११६

कणिशपूलक ११६४

कणीचि १

कणीची १

कणर १

कणरा १

कणर १

कण्टक ६ १ ६ ३१४४ ६६

कण्टकब्रम १ १

कण्टकमुख १ १

कण्टकसंस्थिति ६ ५१

कण्टका १ १

कण्टकाचित १ १

कण्टकारिका १६

कण्टकारी १४ ६ १६३६ २६७६

३६३२ ५ १ ५७६ ६४२

कण्टकिगुम १६ ६

कण्टकिद्रुम १ १

कण्टकिन १ ११ १३

कण्टकिफल १ ११ ३१४४

कण्टकिस्तम्ब ६४

कण्टिका १ १२

कण्ट १ १३ १ ७२

कण्टगडक ५६ २

कण्टजस्थम ६६४७

कण्टरुग्मिद् २४ १

कण्टरोग ५१७४

कण्टजन्मिनी ३७६

कण्टा यण्डिनिम् १५

कण्टाला १ १३

कण्टीर ५

कण्डार १ १

कण्डिका १ २

कण्डर १ १५

कण्डरा १ १५

कण्ड १ ५ ५५

कण्डान १ १६

कण्डप्रयोजक १ १६

कण्डल १ १६

कण्डोल ३३३३

कण्य १ १

कत १ १

कतक १ १ २५१५ ४२ ४७३

कतकद्र ६ २ ४६

कतकद्रुम २ २ ६६३२

कतका यद्रम ४ १६

कतकफल २५ ७ १५

कतकवृष २५

कत्तुण १ १ ३ ४

कथन १५१३

कथक १ २१ ३२ ६ ३ ५

कथन १ २ २६५६ २

कथम १ १६

कथा ४ ६ १ २ ३७ ५ ५१२२

कथानक ६ ६१ ६

कथातर ३२६२ ६७

कथाप्रकारार्थ १ १६

कथाप्रसङ्ग १ २ २१

कथित ७५

कथर १ २१

कथन १ २२

कवम्ब १ २२ २३ २ ३२ ३ ३१

५५ ६५ ६ २४ ३ १

कवम्बक १ २३ २२६१

कवम्बकेसर ३३ २

कवम्बद्रु ३ ३ ६६ ६

कवम्बप्रसव ६ ३

कवम्बी १ २३

कवर १ २

कवराह वयश्वेतखविर ५ ६

कवय १३ ५

कवल १ २ २५ ५ २

कवला १ २ २५

कवली १ २५ २६ २ ६ २६५६ ४४६१

६५२ ६१३ ५६ ६ ६ ६

कवलीपुष्प ६

कवलीमिद ३६६

कवलीमिद ३३ ६

कवलीमात्र ५ १

कवाचिवर्ध २२६

कववत १२६

कग्र १ २

कहूर १ २

कनक ४४६ १ २६ ३ २

२१ ६ ६

कनकप्रभा १ ३१

कनकफल २१६५

कनका १ ३

कनकाध्यक्ष ६२

कनकाल १ २

कनकावलि ११ ६

कनिष्ठ १ ३१ ३२ ३३ १

कनिष्ठक १ ३३

कनिष्ठपत्नी २६

कनिष्ठा १ ३२

कनिष्ठिका १ ३३

कनीन १ ३

कनीनक १ ३ ३५

कनीनिका १ ३ ३५

कनीनिका १ ३५ ३६ ३ ६

कनीयस् १ ३६ ३

कनीयस १ ३७

कनु १ ३

काथ १ ३

कायारी १ ३६

कव १ ३६ १६

कवमव ३ २६

कवर १ २५६१ ३ ६५

कवरा १ ४

कवराल १ १

कवप १ ३ ३ ६५

कवल १ १

कवली १ ४२ ३ ३

कडुक १ १ ६६ ५ २

कडुकावानवण्ड २१ २

कडुभाण्ड ६६६३

कडू १ ३

कबोट १

कघर १ ४५

कघि १ ५

कन्यका १ २३

कन्यकान्तर ३११

कया १ ६ १ ५१ २ २१ ५ ३

कपट १ १५ ६ २२ ५ ५६५

कपि न् १ ४

कपटिनी १

कपव १ ६ ३६५३ ६६१ ५ ६

कपवक २१५२ ३ ३५ ६ ६

कर्पिन् १ ५१

कपाट ५३३६

कपाटाकुरक १५

कपाटोद्घाटयन्नक १३६३

कपाल १ ४१ ५१ ५३ १ ३ ५ ५६  
२ ३३ ३६३ ४२७ ६ ६

कपालक १ ५४

कपालसिन्ध १ ५३

कपालाश १ ५

कपालिका १ ५४

कपालिन् १ ५

कपालिनी १ ५५

कपाली १ ५१

कपि ४६ १ ५६५ १३ ५ १ ४  
१ ४५ २४ ३७१ ६ २२

३१५ ५१७६ ५३ ६ ५६ ३ ६ ४

कपिक ४ २३ ५३ ६ ५५३५ ५६१  
१ ६ २१ ५ ६६४

किञ्जल १ ५ ११६ २२६ ५ ६७

कपिञ्जलसप्तकपक्षिभद २१२

कपिञ्जला १ ५

कपि ५ १ ५ ६ २ १११ १६६५  
३५२२ ४ ६६ ४१ ६ ४ ४ ६४७३

कपिथक २५ ३

कपिथ्याख्यग्रम ६ ७६

कपिपाल ६६१

कपिपिप्पली १ ५६

कपिप्रिय १ ६

कपिप्रिया १ ६

कपिभद ३ ३२ ६ ५३

कपिमातृ ६ ३

कपिमात्रक २५

कपिरथ १ ६१

कपिल ३२ १ ६१ ६ ४

कपिलधारा १ ६२

कपिलवण १ १

कपिलवणमुत ६ ४

कपिला १ ६२ २६१६

कपिाक्ष १ ६

कपिलाक्षक ६७३५

कपिलागो ३ ३३

कपिश १ ६ ६

कपिशवण ६१५१

कपिशा १ ६

कपिशी १ ६

कपिशोष १ ६६

कपिधष्ठ १ ७१

कपी १ ५

कपीज्य १ १

कपीतन १

कपीद्र १ ७१

कपीवत् १ ७२

कपीवती १ २

कपीरवर २ ६२

कपीष्ट १ २

कपुच्छल १ ३

कपुत्सल १ ७३

कपुत् १ ७३

कपोत १ ४ ११७३ ७२

कपोतक १ ७५

कपोतकी १ ६

कपोतपाक १ ७६

कपोतवर्णी १ ७७

कपोता १३३१

कपोताख्यविहङ्गम ३ ७१

कपोताङ्गि १ ७७

कपोताञ्जन १ ७६

कपोताथ १ ५

कपोतिका १ ७५

कपोतौघ १२ २

कपोल १ ७ १ २६

कपोली १ ७

कप्यन्तर २५

कक १ ७ २ १६ ६१ ४  
 कफघ्नी १  
 कफल २२  
 कफमधन १ ६  
 कफविरोधिन १ ६  
 कफहुरि १  
 कफाशय ३४४१  
 कफिन् १  
 कफिनी १  
 कफल १ १  
 कफोणि १३ १५१५  
 कब-घ १ १ ४४  
 कबि धन १ ४  
 कबर १ ५  
 कबरी १  
 कम १ ६  
 कमठ १ १६२ ३१६१  
 कमठी २६  
 कमण्डल १ ११ ३ १ २ १५  
 कमन १ ६ १२६  
 कमनीय १ ६  
 कसर १ ६  
 कमल ३ १ १ ६ ६२ १२२ १ १  
 ६६ २२४ २ ६२ ३ ३१ ३ ६२  
 ४६६६ ५ २६ ६१६६ ६३७२  
 कमलगम १ ६  
 कमल छव १ ६४  
 कमला ३ २ १ ६२ १६ ३  
 कमलासन १ ६५  
 कमली १ ६३  
 कमि ११ १  
 कमुण्ड १२५१  
 कम्य १ ६५ २ ६४ २६६२ ३१६  
 कम्यित २७२२ २ २५ २६ ५ ३  
 कम्यिल ४ ६

कम्यिलवृक्ष २ ६६  
 कम्प्र १ ६५  
 कम्बल १ ६६ १ १ १६६४ ६५  
 कम्बली १ ६  
 कम्बि १ ६  
 कम्बु १ ६ ५ २२  
 कम्बू १ ६६  
 कम्बोज ११  
 कम्बोजवाजिन १२६२  
 कन्न ११ १  
 कन्ना ११ १  
 कर ११ १ २१ १ ५६ ३ ४५  
 करक १ ११ ३ ३२६२  
 करका ६३२ ११ ४ २६२२ १ १  
 करङ्कु ११ ३ ४२  
 कर छवा ११ ५  
 करज ११ ६  
 करञ्ज ११ ६ २५ २ ५ ६  
 ५६  
 करञ्जक ११  
 करञ्जव्रभि व् २३  
 करञ्जमव ५ ४ २६  
 करञ्जाख्यतरु ११ ६  
 करञ्जिका ११  
 करट ११  
 करटा ११ ६  
 करण १११ १२६ १५२६ १६३३  
 ३१ ४६२४ ६ १  
 करणाख्यचे ११२ ६६६४  
 करणान्तर २५ ३ १  
 करण्ड १११२ ५ ३  
 करण्डी १११३ ३४ २  
 करताली ११ ४  
 करपन्न १११३ १६२२ ५२ ५  
 करपन्नक ३६६

करपत्री २२६६  
 करपण १११४  
 करपलव १११  
 करपात्र १११३  
 करपाल १११५  
 करपाली १११५  
 करम ५२ ६ ३ १११६ ७ २६३  
 करमवलम्ब १११  
 करभा ५१  
 करभी १११  
 करमया ६५  
 करमद १११ ३ ६  
 करमवद्रुम १५४६ ६४ ६  
 करमवकल १५४ ३२३७  
 करमवकलादि ६४ ६  
 करमवी १११  
 करम्ब १११६ ३  
 करम्भ १११६  
 करम्भी १११६  
 करयोगिन १३ ३  
 करवाल ४५  
 करवीर ११२ ५५५२ ५६१६ ६ ४  
 ६६६३ ६७२४  
 करवीरप्रसव ६ ४  
 करवीरा ११२१  
 करवीरी ११२ ५४ ६  
 करशाखा ६५  
 करहाठ ११२२ ५५  
 कराघ ६५  
 करान्तर २ ३  
 करापण ६२ १  
 कराल ६३ ११२३  
 करालिक ११२६  
 करालिका ११२६  
 कराली ११२५

करास्फाल २४३  
 करिकेतु १ २६  
 करिणी ६६ १ ६४ १ २६ ३३२३  
 ३ २५ १६६ ११६ ५३६१  
 करिणीचण्डागोत्रव ३ ६  
 करिवष्टा २५ १  
 करिदुकपूषप्रवेश ३ ३  
 करिम ११२६  
 करिनिगड १  
 करिमिप्पली १ १६ २  
 करिपोत ११ ७  
 करिमवणातर ६१६  
 करिमण्डनातर ६१२१  
 करिस्तान्गुलि ११५  
 करीर ११२ २ २१६६  
 करीरकोश ५ ५  
 करीरकोष ३ १६  
 करीरद्र १६ ३  
 करीरी ११२७  
 करीष १६४६  
 करीषानि ११ १ १२३२ २१  
 करण ११२६  
 करणवृक्ष ३ ७१ ४ ६  
 करणा ६३६ ११२ २२१६  
 करणाख्यफलद्रुम ४२७३  
 करणागमख्यपावप २१ ७  
 करुषा ११३  
 करुशा ११३  
 करुषक ११३१  
 करेण ६६६ ११३२ २ ३६ ६ ४२५  
 करोट ११३३  
 करोटी ११३३ ३४  
 कर्क ११३४ ३५  
 ककट ५७४ ११३५ ३६ २२५ २४५१  
 ३ ७६ ६७२



कर्कटशृङ्गी ११३ २ ६ २६ ६ ११  
६१२२

ककटाह्ना ११३

ककटिकातर ५५

कर्क १ ३६ ११३६ २१६५

ककटीभव ७३ २ १३

ककध ११३

ककर ११३६

कर्करी ५ ६ ५२ ११ ३ १ ३  
२६१६

ककव ११

कर्कश ११ १ २२३६

ककशाफल ११ २

ककशाङ्ग १ ५

ककशी ११४१

कर्कट ११ ३

कर्कोट ११४४

कर्कोटक ११४४

कर्कोटकी ११ ५

ककूरक ५६६५

कण ११४५ १२६४ १३ ६ ५२२ ५६ ६

कर्णचाप १३२५

कणजलौका ५ ३१

कणधार २ ३ २६६

कणपायव ६६३

कणपाली ११ ६

कणपूर ३ १५ ११४६ ६१३ ५

कणपूरण ११

कणपूरणा ११

कणभक्षण ३

कणभूषणमिद २४३

कणमल २५११ ३ ६३

कणमान्

कणमूल २१५५ २५१२

कर्णरश्म ६

कणरुजा ३५ २

कणलताग्र ३३ ६

कणवलय १७६६

कणविमेषा ३५२

कणवष्ट १ २

कणशङ्कुली १ ६ ५६ २

कर्णाघ ११

कर्णमय १६६३

कर्णलिङ्गुरण ११ ६

कर्णाङ्गार ११

कर्णिका ६५ ११ ६ ४१६

कर्णिकार १ ११५१ ६ ६

कर्णिकारक १

कर्णिकारवृ ११३२ १ २६

कर्णी ११५१

कर्णोरथ ३ १ ६६६१

कतन ११५२ ५३ ५३ ४

कतना ११५३

कतनी ११५२ १५

कतनीय १५३३

कतरी ११५३ १७२२

कतय १३१५

कतुल ६६

कतु ११२६ ५ १२६ ५४२ ५६ २

कतुप्रयोजक ६ ३

कल्लिस्ततसाविक ११६३

कवट ११५५

कवन ११५५

कवनी ११५५

कवस ११५६ ३ ५ ३२२

कवसमव ३२१

कपट ३२५

कपर ११५६

कपरी ११५

कपर ६५३ २ १६६ ३ ४२४६  
 ४५१ ५६६७ ५६४ ६ ५६ ६ २  
 ६७६  
 कपरक ५ २६  
 कपरमीषितक ४४१२  
 कबुदार ११५  
 कवर ६ ६ ११५ १३ ३१६५  
 कबरा ११५६  
 कर्मिकामि न तित पकरण ११५२  
 कसन १११ ६३ १ ४ १६३१ २ २  
 ३२ ६ ५ २ ५ १ ६ ६४  
 कमकर ११६१ २ २  
 कमकपर ६  
 कमकारिन १३१२  
 कमण्य १४२३  
 कमण्या ११६२  
 कमफल ११६४  
 कमरङ्ग ११६४ ६५ ३३ २ ४७ १  
 कमरङ्ग ३६६६  
 कमरङ्गफल ३ ६६  
 कमविधि ३७ ५  
 कमविपाक ११६४ २६१२  
 कमशाला ६२२  
 कमहानि ३११३  
 कर्महीन ३११  
 कमन्तरनिर्माणविज्ञान ६ ६५  
 कर्मरि ११६५  
 कर्मिन ११६५  
 कयपाङ्ग २६ ६  
 कव ११६६ २२४३  
 कवट १६६६  
 कवर ११६  
 कवरी ११६  
 कर्शन ११६  
 कष ११६ १६३ ३ १ ६ ६७ ६४

कषक ११६६  
 कषण ११६ १५७५  
 कषणी ११  
 कषद्विगणीमानक ६ ६  
 कषफठ ११६६  
 कषमान ३३२ ६६७३  
 कषक्षिमान १३  
 कषिन ११  
 कषू ११ १  
 कषामान ६ ६  
 कल ११ १ २ १२  
 कलक १२६३  
 कलकण्ठ ११ ३  
 ककल ११ ३  
 कलववाण ११  
 कलङ्क ११  
 कलञ्ज ११ ५  
 कलत्र ६ ६६६ ११ ५ १६२६  
 कलघात ११ ६ १३  
 कलछबनि १ ४२ ११ ६  
 कलना ११ ७  
 कलस ११ ७ १३  
 कलमी ११७७  
 कलम ११  
 कलमशालि ११६२  
 कलमाल ६४ २  
 कलम्ब ११७  
 कलम्बो ११७६ ५ ३  
 कलरव ११७६  
 कल बाशाब्बलयातलतात्तर २६३  
 कलम्बयाख्यजलशाक ५ १६  
 कलल ११  
 कलविङ्क ११ १ ६ १२७५ १३२ ३५६  
 कलविङ्की ६ ६  
 कलश ११ १ १३६ ३२२६ ३६१६

कलशि ११ २ ३  
 कलशी ११ १ २  
 कलशीमख २५६  
 कलशीसम्भव १३२  
 कलशोबक ११ ३  
 कलसी ५३२  
 कलसूक्ष्मशब्द १२  
 कलस्वन २५ ६  
 कलहस ११ ५ १२६१ ६६३  
 कलह ११ ६ ५२६६  
 कलहप्रिय ११ ६  
 कला ११ २२ ६ ४ ६१  
 कलाङ्कुर ११ ६  
 कलाधिक ११ ६  
 कलाचिका ११ ६  
 कालघर ११६  
 कालानुविन् ११६  
 कलाप ११६१  
 कलापक ११६२  
 कलापवत् ११६३  
 कलापिन् ११६३ ६ २  
 कलापिनी ११६३  
 कलापूण ११६  
 कलाय ११६५ ३५५१ ४३४ ५१३६  
 कलायधायमव ६ ३३  
 कलाया ११६५  
 कलालाप ११६५ ५२  
 कलि ११६६  
 कलिका ३३६ ६३१  
 कलिकार ११६  
 कलिकारी ११६७  
 कलिङ्ग ११६  
 कलिङ्गा ११६६  
 कलित १२  
 कलिद १२

कलिदी १२ १  
 कलिप्रिय १२ १  
 कलियुग १५ ६ २३ १ २ ५६ ३५३  
 कलिल १२ २  
 कलष ५६ १२ ३  
 कलषी १२ ३  
 कलवर १२ १  
 कलवरा १२ ५  
 कलोवित १६१  
 कक १२ ५ ६ ४६६६  
 ककजाति ६ ६  
 ककहीन  
 कक्य ५६ १२ ५२३६  
 कपन ६ १२ ६ ५३ ५  
 कपना १२ ६  
 कल्पवृक्षमव ६२ ६  
 कपात १६५६ ३ ६  
 कयापाल (कयापाल) ६२६  
 कमव १२१  
 कन्माव १२११ १२  
 कय १२१३ ३ ६६ ५२५३  
 कयाण १२१४ ३ ५ १ ६ ७१  
 कयाणक १२१६  
 कयाणवृद्धि २६२१  
 कयाणा १२१६  
 कयाणिका १२१६  
 कयाणिनी १२१७  
 कयाणी ५५ १२१५ १६ १  
 कलोल ६ १२१  
 कवक ५२१  
 कवध ६५ १२१ २६१ ३ ४१  
 ३६४२ ३४ ५१४६ ५३३१  
 कवचाम्बित २५६२  
 कवठ १२१६  
 कवटी १२१६

कवयितु २ १  
 कवाट ३१ ३ १२ ४ १  
 कवाटबन्धमोक्षायकुञ्जिका ६३६२  
 कवाटापागल ६४६२  
 कवार १२२  
 कवि ६५ १२२ ५ ६  
 कयवाहन १२२१  
 कशा १२२२ ६ ३६  
 कशाह १२२६  
 कशिपु १२२३  
 कशिप्वथ ६  
 कशक १२२३ १ १ ३१५  
 कशक १२२४  
 कशर्वाख्यवारिगमक १५५  
 कश्मल १२७५  
 कश्मीरज १२२५  
 कश्मीरविश्वत २३ ६  
 कश्मीरस भव १२२५  
 कश्य १२२६  
 कश्यप १२२६ ४३६  
 कवतिष्ठत १२३१  
 कषाकु १२२७  
 कषाय १२२७ ५६  
 कषायरस २४ ६  
 कषायाखयरस २ ३  
 कषायी १२३  
 कषि १२३१  
 कषीक १२३२  
 कषीका १२३२  
 कषु १२३२  
 कष्ट ५४५ १२३३ २ ३२ २६६  
 कष्टविशिलष्ट ५४३  
 कसनशीलक १२३५  
 कस्तूरी २५६ ४१३६ ४५१ ५ २६  
 ५६६५ ६ ३३

कस्तूरिका ५६१  
 कस्तूरिकामव २६२  
 कस्तूरिकामृग ३५४  
 कस्तुर्यण्ड ६६५  
 कस्वर १२३५  
 कल्लार ६ ६५३  
 कल्लाख्यपक्षिन ३ १  
 काय १२३५ २४७ ६३६  
 कास्यकार १२६८  
 कास्यलोह ६५५ ६३ ६५३  
 कास्यारथ ६क ४५३  
 कास्यत्रोहरोप्यपात्र ३२५  
 कास्यस्थाली २४३  
 काक २२२ ३२६ ६ ११ ६ १२३६  
 ३ ५५ १५५१ १६६२ २१३१  
 २६६२ २७५६ २ ४ ३२११ ३३५  
 ५ ३ २२ ४ ६४५ ४ २  
 ३ ५ ३१ ५१६ ५५ ६५ ६ ६१  
 काकजघा १२३७ ४६ ४ ६३ ४६२३  
 काकजङ्घाधि २ ६२  
 काकजम्बू ३७५  
 काकणी १२३  
 काकतिष्ठक १४  
 काकतुण्ड १२४  
 काकतुण्डी १२ ४२ २४२१  
 काकनासा ३ १२४ ६ ६ ५५  
 काकनीळ ५१३५  
 काकपक्ष १ ३ ६  
 काकपील १२४१ २  
 काकभाण्डी १२६२  
 काकमाची १२ ७ ५३२५  
 काकक १२४३  
 काकल १२  
 काकली १२ ४

काकशत्रु ४१  
 काकशीर्ष १२ ५  
 काकसंहति १२३  
 काका १३३५  
 काकाङ्गवली १२४१  
 काकाङ्गी सप्तकलतातर २३ ५  
 काकाण्ड १२ ६  
 काकी २६ १२ ६  
 कासी १२५  
 काकेवु १२४१  
 काकोवर १२  
 काकोबुम्बरिका ३ ६ ४२५२ ५३२५  
 काकोबुम्बरिकातर ३ ६  
 काकोबुम्बरी २२ ३  
 काकोल १२ ४६ १६६१ २६१६  
 काकोली १२ ६ ६ ४६२ ५ ६२ ६६५६  
 काकोलीवृषभ २२  
 काङ्गमा २ ३  
 काच १२५ ६ २  
 काचकलश ६ २ ३२१६  
 काचपात्र ६ २  
 काचमणि ५६७  
 काचमालिका १२५१  
 काचर १ १४  
 काचलज १२५१  
 काचिक १२५१  
 काचिघ १२५२  
 काचूक १२५२  
 काञ्चन २ ६३६ १२५२ ५३  
 १ ६६ २ २२ २ ३ ३६५६  
 काञ्चनग्र १ २  
 काञ्चनार १ २६ ११५ १२५३  
 काञ्चनी १२५३ ६ २२  
 काञ्चिवासन ६२६  
 काञ्ची ६५४ ११६१ १२५४ १३३

१ ५ ४६५६ ६ ५ १६  
 काञ्चिक २६ ६३ १ ६ १६३१  
 ६ ४१५ ६१५ ५५ ६ ६ ६  
 ६२ ६५३६  
 काञ्चिकाष्टमिषव ६२ ४  
 काठ १२५५  
 काठिय २ १६ ४४ ५  
 काण ६ २ १२५५  
 काणक ६ १२५६  
 काणक १२५६  
 काण्ड ३३ ५२ ३ ६३६२  
 काण्डग्र ३१२५  
 काण्डक ४२ ६  
 काण्डपट १६  
 काण्डर्षि ३२  
 काण्डवत १२५६  
 काण्डवीणा ६४ ६  
 काण्डीर १२५६  
 काण्डीरी १२५६  
 कातर १२६ १३४ ६६ १  
 कायायन ६ १ १२६ ५ ६  
 कायायनी ३६४७  
 कात्यायनीदेवी १३६३  
 कावम्ब ११ ५ १२६१ ६६३  
 कावम्बर १२६२  
 कावम्बरी १२६२  
 कादम्बिनी १२६३  
 काविसातवण ६६१२  
 काव्रवयप्रभव ११४४  
 कानक १२६३  
 कानन १२६ १६४ ३ २  
 कानीन १२६ ६५  
 कात १२६५ ६६ १४५६ ४६५१ ५२  
 कान्ता १२६५ २५ १  
 कान्तार १२६ ६ २३ ४

कातारक १२६  
 कास्तारिका १२६६  
 कान्ति ३ १२६६ २६६ २ ३१  
 ३६३१ ४ २ ७१ ४ ६ ५ ६  
 कात्तिव १२  
 कात्तिवा १२७  
 कात्तिवायक १२७  
 कापटिक १२७१  
 कापथ १२७२  
 कापीत १२ २  
 काम ५२ ५१२ १६ ६ ४ ११६६  
 १२ १६१२ १ ५३ ३५१ ७  
 ७६ ४३६६ ४६५१ ११ ५ ३७  
 ५२ ५४२ ६१६  
 कामकट १२  
 कामगण १२७७  
 कामप्रिय ६४४  
 कामचार १२ ५  
 कामचारकृति २१७  
 कामचाराम्यनुमान ५  
 कामचारिन १२ ५ ७६  
 कामक्षिता ४१ ६  
 कामतिथि २५२  
 कामद १२७६  
 कामदा १२७६  
 कामदातृ १२७६  
 कामदेव ६७६ ४ ५५ २  
 कामधनु १२७६  
 कामध्वज १२ ७  
 कामपद १२७  
 कामपाल १२७  
 कामपुत्री २५ १  
 कामपूरक १२७६  
 कामपूर्ति १२७६  
 कामप्र १२७६

कामप्रव १२७६  
 कामप्रवेदन ६६६  
 कामवाण १२ ५  
 काममार्ग ६४  
 कामयितव्य १२६३  
 कामयित यक १ ६  
 कामरूप १२  
 कामरूपिन १२ १  
 कामल १२ २ ३  
 कामला १२ २  
 कामयत १२ ३  
 कामवती १२ ४  
 कामवायु ५ २  
 कामबद्धि १२  
 कामशर १२ ५  
 कामशरातर ६५६३  
 कामशास्त्रीयपञ्च ६६  
 कामतल १२ ५  
 कामसाध १२६३  
 कामहण १२६१  
 कामाक्षकुश १२ ६  
 कामाङ्ग १२ ६  
 कामाघ १२ ७  
 कामाधा १२  
 कामायध १२ ७  
 कामि १२  
 कामिकात १२  
 कामिन् ४ १ ६ १२ ३ ६ १ ३६  
 ६७३७  
 कामिनी १२ ६ ६ ४१६६ ४ ३६  
 कामिला २ २६  
 कामुक १ ६ १२ २ ६ ६ १७५२  
 ३६६७ ४ ६ ४१५४ ४४२४ ४६ २  
 कामुकस्त्री २३५५  
 कामुकाङ्गना २५३१

कामोत्सव १२९१  
 काम्पिय ११ १ १२९१ ४६१३ ५  
 काम्बोज १२९२  
 काम्बोजी १२९२  
 काम्य १२ ३ ९३  
 काम्यवान् ३ १५  
 काय १ १ १११ १२ ९३ ९  
 ४४४५ ६२३५ ६५  
 कायघटन ५९५२  
 कायमध्य ५ ६२  
 काययोगिन ५९५२  
 कायशाय ५ १९  
 कायशोधन ३ ६  
 कायस्थ १२९  
 कायस्था १२९५  
 कायानिलात्तर ३ ५७  
 कायिक १२९६  
 कायिका १२९५  
 कार १२९६ ५ ३  
 कारक ११५ ६४ १२९ १३ १४  
 कारकुत्सीयनीबुद् ६ १३  
 कारण १११ १२ ९ २९५ ३६११  
 ५९२ ६३२१ ६  
 कारण १२९ ९९  
 कारणाय ६५ ९  
 कारणविहङ्गम २३९६  
 कारणवपसिन् ३ १  
 कारघनी १२९९  
 कारवली ६  
 कारवी १३ १  
 कारवेल ९९ १ १५  
 कारवेलफल ९९  
 कारवेल्लात्तर ३ ४  
 कारस्कर १३ १  
 कारा १३ २ ३

कारागार १९१२  
 कारागृह ४५३ ६३२  
 कारालिक १३ ३  
 कारि १३ ९  
 कारिका १३  
 कारित १३ ६  
 कारिता १३ ५  
 कारिव १३ ६  
 कारिन १३ ३  
 कार १३ ६ १ ५ ९  
 कारकमन् ६ ६४  
 कारज १३ ९  
 कारुजात १३ ९  
 कारुष्णिका २२ २ ६६  
 कारुण्य १५६  
 कारोत्तर १३ ९  
 काकरय १ २  
 कास्तवीय ३  
 कास्त्य १ ५ १३६३ २ ४१ ३ ६४  
 ३२ ३५२ ५६ ५५ ९  
 कास्त्यपाठ ३२  
 कार्तिक ६३ १३११ ३ ९  
 कार्तिकी १३१  
 कार्तिकेय ४३२३ ५९११ ६५४  
 काय १३११  
 कार्पासवासस ३ ११  
 कार्पासिका २ १ ६ ७  
 कार्पासिकाफल १६२  
 कार्पासी १५ ६ २ ६ २ ९ ३ ९  
 ३ २ ४२२१ ९ ५ ५ ६३१३  
 कामण १३१२  
 कार्मिक १३१३  
 कामुक १२ ६ १३१ १६१४ १ २  
 काय ३४५ १३१५ ३ ६  
 कायपुट १३१५

कायबीज २४१  
 कार्यावययव छत्तु २५  
 कार्षापिण १३१६  
 कार्षिक १३१६ ३१ ६ ३ ५६  
 कार्षित १३११  
 काष्ण १३१६  
 काष्ण्य १३१ ६१३१ ५  
 काष्ण्यगण ३ ३२  
 काष्ण्यगुणवत ३ ३२  
 काष्ण्यवत ६१५  
 काल १२ ६२ २ ७ २ ३ ५३६  
 १३१ २ १ ४ २ २५ २२५७  
 ६ २५ १ २६ २ ६२ २६३६  
 ३ ५६ ३३ ५ ६ ३६६ ४ २४  
 ६ ३ ३ ४६ ५२३५  
 ५४२ २६ ५६ २ ६ ६ ६११२  
 ६२६६ ६६२५  
 कालक १३१ १६  
 कालकण्ठ १३२  
 कालकण्ठखग २६२२  
 कालका १३२१  
 कालक्रियामान २४३५  
 कालकुण्ड १३२१  
 कालक १३२२  
 कालकटक ६७  
 कालक्षप ४५६३  
 कालखण्ड १३४१  
 कालञ्जर १३२३  
 कालञ्जरा १३२३  
 कालञ्जरी १३२३  
 कालधर्म १३२४  
 कालपथ्याख्यतुलसी ४३ २  
 कालमित १३१६  
 कालपुच्छ १३२४  
 कालपुष्पक ११६५

कालपृष्ठ १३२५  
 कालभद ६३६२  
 कालमाल ११२  
 कालमेघ १३२५ ६६२५  
 कालमेषी १३२६  
 कालरान्ति २५ १  
 काललोह २ २४  
 कालविषय ३५६३  
 कालशाय ६६६ १३२ १६६३ २५७५  
 कालसम्बन्धिन १३ २  
 कालसार १३२  
 कालस्काय १३२  
 काला १३२६  
 कालानसाय १३३  
 कालानुसायधातु ६१३  
 कालायस १३१ २४५  
 कालायसाङ्ग्यलोह ३२ ५  
 कालिका १३३ ३१ ३२  
 कालिकी १३३६  
 कालिङ्ग ११४ १३३  
 कालिङ्गवली २१२६  
 कालिङ्गसश्वली ५५६४  
 कालिंदी १३३७  
 कालिंदीभवन ३ ११  
 काली १३३  
 कालीयक १२ ३३६  
 कालय १३ १४२ ५ ५  
 कालयक २२६६  
 कालोल १२४६  
 कायाख्यवजातर ३ ३६  
 कायुक १३४३  
 कावेरी ३५३ १३४३  
 काव्य १३४४  
 काव्यकृत १२२१  
 काव्यजातिविशेष ६२५३



काव्यवृत्ति ४ २२  
 काव्यालङ्कारणातर ६३ १  
 काव्यालङ्कारमव ६  
 काश ६३६ ४१ १३ ३५६३ ६ ५ ३५  
 काशमव ११ १  
 काशा १३  
 काशाह्वयतण १३ ५  
 काशि १३ ५  
 काशिराज २  
 काशी १३ ५ २२ ६ ५ ६६  
 काशीचट्टपूजक १  
 काशीश ६२४  
 काश्मरी ५२ ३ ५४१६  
 काश्मर्याभिलषपावप ६३५३  
 काश्मीर १३ ६  
 काश्मीरी १३ ६  
 काश्यप १३  
 काश्यपी १३  
 काविक ४ १  
 काष्ठ १२३१ २६३१ ५ २५  
 काष्ठकुहाल २ ६  
 काष्ठखण्ड १ २  
 काष्ठनिगड ६६७६  
 काष्ठा १३४६  
 काष्ठाम्बुवाहिनी २ ६  
 काष्मयपावप १५५ १६२५  
 काष्मर्यवृक्ष ६१६६  
 कास १६६१ ६२  
 कासक १३५२  
 कासन ६५५३  
 कासमर्ष ३३७२ ६१७  
 कासयितु १३५२  
 कासर ४६११  
 कासिका १३५१  
 कासितु १३५२  
 ३६ क

कासीस ६२  
 कासू १३५२  
 कासनामायुध ५ १  
 काहल २ ४६  
 काहू १३५३  
 किकीविवि १३५५  
 किखि १३५५  
 किखीरक १ ५  
 किङ्कुर १३५६ ६६१२  
 किङ्किणी १३५६ १६६  
 किङ्कुर १३५  
 किङ्किरात १३५ ३ १  
 किङ्क १३५६ २१ ३  
 किङ्का १३५  
 किङ् १२ ६ ४२ ६  
 किङ्गल १३५६  
 किण १३६ १ ६  
 किणिही १३६ ५२ १  
 किण्व १३६१ ३३४३  
 कितव १३६२ १५ २२ १ २ २  
 ६१३३  
 किसर १३६५ १६२ ५ ५३  
 किन्नरी १३६३  
 किन्नरीमिब २ ३  
 किम १३६३  
 किमु १३६  
 किम्पाक १३६४  
 किम्पुल १३६५ ५ ५३  
 किम्पुलश्वर २ ५  
 किम्मव १३५  
 किरण ६१ ५५ ७ १३६६ १५ ४  
 ३१ ६ ३३ ५ ६ ३५ १६३  
 ४२ ५ ६ ५२१२ ५५३६ ५६२६  
 ६ ६२  
 किरति १३६

किराट १३६६  
 किरात १३६ ६१३३  
 किरातीनिष्ठधसुत ६१ ७  
 किरातीशबरमुत ३  
 किरि१३६ २ २६  
 किरिट ५७  
 किरिटवत १३६६  
 किरिटिन १३६६  
 किर्मी १३६६  
 किर्मीर १३  
 किल १३ १  
 किलकिल १३७१  
 किलकिला १३ १  
 किलास १३ २  
 किलासी १३ २  
 किलिज ६  
 किलिजक ५  
 किविष १२१ १३७२ १ ६  
 किविषी १३ २  
 किशाह १३५४  
 किशक १ २६ १३५ ३२१३ १७  
 किशकप्रसव ३२१  
 किशुककोरक ५६  
 किशोर १३७३ ६ २६ ६४२  
 किशोरक २६५  
 किष्किध १३७  
 कि किष्ठा १३ ४  
 किष्कु १३७४  
 किष्कुपवन १३ ६  
 किष्कुमान ६  
 किसलय ३२२२  
 कीकट १३७६  
 कीकस १३७७ १४ १६३६  
 कीषक १३७  
 कीट १५४२ २२ ३४६१ ५ ३

कीटक १३ ६  
 कीटकुमि ३४६१  
 काटमात्र २३६  
 कीटातर २६६  
 कीगाश ११६२ १३ ६ २५ ३३ १  
 कीर १३ १ ३ ६ १ ६ ६१  
 कीरक १३ २  
 कीरेष्ट १३ २  
 कीण १३ ३  
 कीत्तयति १३ ३  
 कीत्ति २ ६२ ५१७ ३ १३ ३  
 १ ६ ५१२  
 कीन ६ ३१६ १३ ४ ३५ ६ ६ ६६  
 ६५ ५  
 कीगल १३ ४  
 कीश १३ ५  
 कु १३ ५  
 कुकुवर १३ ६ १ ६४  
 कुकल १३ ६  
 कुकुल २६  
 कुक्कुट १२५६ १३ १५२२ २१५४  
 २२७६ २४२६ २५६४ ३४ ३६१३  
 ६ १६६ ४६ ५६ ४६ ४ ५  
 ५७६४ ६ ५ ६ २३ ६११६ ४४  
 कुक्कुटाक्ष १३ ६  
 कुक्कुटी १३ ७ २ ५  
 कुक्कुटीकब २६  
 कुक्कुम १३ ७  
 कुक्कुर १३ १५२६ १६२३ ७५ २६१४  
 ३२ २ ३४७६ ३६१६ ३६६७ ११५  
 ४६६५ ५ ५ ५३१४ ५६ २ ६१६३  
 कुक्कुर १३ ६  
 कुक्कुरलाङ्गूल ३ १६  
 कुक्कुरस्त्री २४७५  
 कुक्कुराख्यवृक्ष ११२

कुक्कुट १६२  
 कुक्षि १३६ १६५६ १ ६ २२ ६  
 ६११२  
 कुक्षित्यजतु १ ६  
 कुक्ष्यग्नि ६ ३  
 कुगति १५ ५  
 कुगच्छ २६ १  
 कुङ्कुमरे ११ १२२५ १३ ६ १  
 १५ २ ३२ २२२६ २ २३ ३३५  
 ६ १ ३५२ ३ ३ १ ५६  
 ३६५३ २ ६३३ १ ५ ६  
 ५११६ २५ ५२ ३ ५३६६ ५६६६  
 ६१३६ ६  
 कुच ५६५ ६५५३  
 कुचवन १३६  
 कुचर १३६१  
 कुचेल १३६१  
 कुचेल १३६२  
 कुज १३६२ ६३  
 कुजा १३६३  
 कुञ्ज २५ १  
 कुञ्जक १३६  
 कुञ्जिका १३६३  
 कुचित १३६५ १४ ३  
 कुञ्चित १३६  
 कुञ्ज १३६५ ६६ ५३१  
 कुञ्जर ५ ३६  
 कुञ्जरवर ३२३  
 कुञ्जरा १३६६  
 कुञ्जराराति १३६  
 कुञ्जलरि १३६  
 कुञ्जिका १३६  
 कुट १३६ १६६  
 कुटज ६५६ १३६ ५ ५ १  
 कु जसक्तवसभव ५ ६

कुक्ष १३६६ १  
 कुट्य १ १  
 कुट्टर १ १  
 कु १ २  
 कु १ २  
 कुटल ५६ १३६५ १ ३ १६६  
 २२६१ २३१ ६६१ ६५ ५५ १  
 ५६ ५  
 कुटिला १ ३  
 कुटिलागार १६६  
 कुटिलिका १४  
 कुटी १ १ १३६ १ ३ २३  
 ५२६  
 कुटीर १ ६ ३२२४  
 कुटीरक १ ११  
 कुटीपिण्ड ५१३३  
 कुटङ्ग ५  
 कुटम्ब १ ६ १ ६ ५२३ ६४ २  
 कुटम्बयापुत २५  
 कुटम्बयापुति २३  
 कुटम्बिनी ६६४  
 कुट्टा १ ११  
 कुट्टनी १ ११ ५ ५  
 कुट्टि १ १  
 कुट्टिनी ३ २ ६४५ १३६  
 कुट्टिम १ ११ २ १२  
 कुठ १ १३  
 कुठार ५५६६ ६६ ३  
 कुठारि ३१६  
 कुठार १ १२  
 कु १ १२ ३  
 कुड १४१३  
 कुडक १ १  
 कुडव  
 कुडवचतुष्क ३ ४३

कुडवचतुष्कमित ३७ ३  
 कुडी १ १४  
 कुडवसज्ञकमानभव १४  
 कुडङ्ग १४१५  
 कुडव १ १५  
 कुडम्बिन १४१६  
 कुडमल १४१६ १६ १५६५ ६६ २  
 कुडय १४१६ ४ ६ ४ ६ ६७ ५  
 कुडधादिलपद्म यातर ६४६  
 कुणप १ २ ५  
 कुणपी १ २  
 कुणाल १४२१  
 कुणि १ २२  
 कुण्ठ १४२३  
 कुण्ठमति ३५७३  
 कुण्ड १४२३ ३३  
 कुण्डकीट १४२५  
 कुण्डल १४२ ३७४६ १ ६  
 कुण्डलिन् १४२६ २७  
 कुण्डवती १४२७ २  
 कुण्डा १ २४  
 कुण्डी १४२ २  
 कुतनु १४२६  
 कुतप १४२६  
 कुतल १४३२  
 कुतली १४३२  
 कुतुल १४३२ १६१२  
 कुत्राण १४३३  
 कुत्सक २१  
 कुसा १ ६ १३६३ ५ १४११ ३३  
 २६२६ ६३  
 कुस्मित ११ ३६२ ६६२ ६५ १२५७  
 १४२ ३५ १५३६ १७६७ २१५६  
 ३२७१ ४७७५ ४६५७ ५२५६  
 कुस्मितकया ६६

कुस्मितजीवन ११ ६  
 कुस्मितपथ १२ २  
 कुस्मितवलक १ ६२  
 कर्मिताङ्गक १ २६  
 कुसितास्य १ ५३  
 कुथ १२२३ १ ३६ ५१२३  
 कुथा १ ३६ ३७२  
 कुवावय २६३२  
 कुदाल ७३५ १७३६ १ ३ १६५  
 कुध ६६ १४३  
 कुनटी १ ३ १६६६ ३ ५२  
 कुनालिका १ ३  
 कुत १ ३६  
 कुतधारिन ५६६६  
 कुतभव ६ ५१  
 कुन्तल १ ४ ४१ १५६६  
 कुतला १  
 कुतली १ ४२  
 कुन्ताव्यशस्त्र ३  
 कुतायध ५ ४  
 कुन्ति १४४२ ४३  
 कुती १ ३६ ४३ ३५५६  
 कुतीपति ३२५  
 कुथन ६५५३  
 कुब १४४४  
 कुवर १४४५ १ ४  
 कुवरकण १ १५  
 कुबवृक्ष ४३३  
 कुकुम १४४६  
 कुकुकी ५१ ६  
 कुयु १४४६  
 कुपित ५५६  
 कुपुष्प ४३ २  
 कुफाकु १४४७ १५  
 कुबर १४२६ ४७ २५४६ २७६ ३ १६

४३१ ६४१ ६१ ५२१ ५ ५२

५५ ६ ६५ ६६६२ ६ ३५

कुबरपुर ३६६

कुज १ १५१२ १ २२ ३ ६६

कुञ्जतावशावविवाहकया २६ ३

कुञ्जपुष्पक २ २

कुञ्जवृक्ष ५३२

कुत्र १४४ ६

कुम्भी १

कुम्भीय २३३

कुमार १४४६ ५ २

कुमारी १ ४६ १ ५१ २ ५ ३ २

कुमाग १५ ५

कुमार्याख्यपु पस्तम्ब २३६४

कुमख १ ५३

कुमु १ ५३

कुमव १ ५४ १५ १ ६५ २

३

कुमुदत १ ५५

कुमुवमूल ६ ३६

कुमुवविकास ६६२२

कुमुवस्तम्ब १४५६

कुमुवा १ ५५

कुमुवाकर २६ ३

कुमुदती १ ५६

कुमुल १ ५६

कुमोव १४५३

कुम्बा १ ५

कुम्भ २ ११ १ १ ५ ६ ५५१२

कुम्भकणतनय २६ ६

कुम्भकार १ ६१ ३६५३

कुम्भकारचक्र २५ ५

कुम्भकारी १४६१

कुम्भज २

कुम्भबासो ३६१ १ ४६६६

कुम्भयोनि १ ६२

कुम्भवत १ ६३

कुम्भसम्भव २५

कुम्भा १ ६

कुम्भानिकुम्भाद्यभिधौषधगुम्भक २६

कुम्भाशित १६१५

कुम्भिक १ ६२

कुम्भिकाग्रुम ३ ६

कुम्भिनरक १५६

कुम्भिनी १ ६३

कुम्भिन १ ६४

कुम्भी १ ५६

कुम्भीक १ ६

कुम्भीनस १ ६५

कुम्भीनसी १ ६५

कुम्भीर १ ३ १४६६ २ ५१

कुम्भील १ ६६

कुरङ्ग १ ६ ४४५

कुरङ्गक १४६

कुरङ्गिका १ ६

कुरङ्गी १ ६

कुरण ११६

कुरण्ट ५

कुरण्टक १४६६

कुरण्ट १ ६६

कुरर १ १ ३२ २

कुररी १४७

कुरव १३

कुरवक ४२५ १ ४ २ ५४ १ ६

५३६६ ६३१

कुरता १ १

कुरीर १ १ ३

कुरजाङ्गल ६१६

कुरण्ट १ ३

कुरचामसुत ४ ३

कुशदेश ६१ ४  
 कुशवक १४  
 कुशम १४ १  
 कुशली १४ ५  
 कुशलोलक १ ५  
 कुशविद १ ६६ १४ ६  
 कुशविदमणि १ ६  
 कुर्वाण १४  
 कुल १५ २ ६५ ६ ३ १६ ७ २२१  
 २६६१ ६४६ ६२ ६  
 कुलक १ १  
 कुलक्षय १ ८१  
 कुलक्षया १४ १  
 कुलज २४ ४६५२  
 कुलटा २५१६ २ ६५ ३२३५ ३ २४  
 ४ २१  
 कुलटाथ ३ ७  
 कुलथ १ १ ६३ २ २६  
 कुलत्थक ११५५५  
 कुलथधाय १ २  
 कुलथसन्धाय ३ १६  
 कुलथिका १४ २  
 कुलनाश १ ६१  
 कुलपवत ३ ६  
 कुलपालक २ ६६  
 कुलशालान्तर ६१६  
 कुलसत्तम १४ ५  
 कुलस्त्री १ ६ २२६ ४५६५  
 कुलहीन ७  
 कुला १४ ६  
 कुलागरम १४  
 कुलाय १४ ३ १ ३ २२ ६ ३ २  
 कुलाल १२ १४ २ ४ ४११  
 कुलालक १४६१  
 कुलालवण्ड १

कुलपाकस्थान ३२२२  
 कुलली १  
 कुलयाख्यमय १७ २  
 कुलिक १ १  
 कुलिश १ १ ६ ६  
 कुली १ ६  
 कुलीन २ ४ १४ ६ १६१ २२६  
 ६२५५  
 कुलीनय १६१  
 कुलीर ११३५  
 कुलीय १ ६ ४१६७  
 कुय १  
 कुया ११ १ १२३ १ ६ ६७१२  
 कुव १७६१  
 कुवल्य ६५२ ७२३ १ ६१  
 कुवली १ ६२  
 कुवनीवक्ष ३ २  
 कुवनीयुक्षप्रसव ३ २१  
 कुवाव १३६१  
 कुविद १५ ३ २३७६ ६ ५१  
 कुविदतत्रक ३५  
 कुवेल १ ६२  
 कुया १ ३६ ६३ ६५ ३२२ ३५ ४  
 ३ ३ ४४२७ ४५५ ५६५१  
 कुशतुगान्तर २ ५६  
 कुशद्वीप ५६६  
 कुशद्वीपक्षत्रिय ३५ ४  
 कुशद्वीपमघ ३४६७  
 कुशपत्नी १४५६  
 कुशपुत्र ६६  
 कुशल १४६५ १५३१ २५६ ७ २ ६३  
 ३६६ ४ ६  
 कुशस्थल १४६६  
 कुशस्थलपुर १६१  
 कुशस्थली १४६६

कुशा १ ६४  
 कुशाश्रित १६१  
 कुशिक १ ६  
 कुशिकात्मज १६१६  
 कुशी १४६  
 कुशीलव १ ६ २११  
 कुशशय १ ६६ ३३३  
 कुषाकु १५  
 कुषित १५  
 कुष्ठ ६२३ १५ १ ३ ३१ १ ५ ६६  
 कुष्ठनामौषध ५५  
 कुष्ठसिद्ध ३३२  
 कुष्ठमवस्थातर ११६  
 कुष्ठमषज ३५ २ १ ५३१३  
 कुष्ठमषज्य ३२३  
 कु वजातर ११४  
 कुष्ठरोगमद ६३  
 कुष्ठव्याध्यतर ३४ ६  
 कुष्ठाख्यमषज ३३  
 कुष्ठिन ६५ ३  
 कुष्ठिमास ६ २  
 कुष्ठौषध ३ ६ २  
 कुसीब १५ २  
 कुसीबायी १५ ३  
 कुसुम ५ ६ १५ ३ ३५१२ ३ ६ ६४६  
 कुसुमस्तम्भातर २५  
 कुसुमातर २१ ५  
 कुसुम ३६ १५ ४ ३१३६ ३ १ ३  
 ६ ६ २५ ५२ १ २ ३  
 कुसुमाञ्जन १६२१  
 कुसुम्भी १५ १  
 कुसूल १ ३ ११३ १६ ५ ३ ६२  
 २  
 कुसति १५ ५  
 कुस्तुम्बुरी ६१ १ ५१ ५४१ ६ ५५

कुस्तुम्बुरीसमाधाय ४६५  
 कुस्तुम्बुर २१७६ २ ४३ ३  
 कुहक १ २१ ५५१६ ६२२५  
 कुहकजीवित ३  
 कुहन १५ ५ ६ ६  
 कुहनचर्या २६१५  
 कुहना १५ ६  
 कूच १५ ७  
 कच्चिका १५ ७  
 कची १५  
 कट १५ २६ १  
 कटपूरित ३५५  
 कटयत्न १  
 कटशाली ७ ५  
 कटागार ५१ १  
 कप १ ३ २२६ ६ ३ ७२६ १३ ६  
 १५१ ६ १६६६ ३ ५५  
 कपक २१५१  
 कपगत २२  
 कपनमि २५२  
 कपमुखबधन ३ ५५  
 कूपसा १५११  
 कपी १५१  
 कप्य १५११  
 कप्यलवण ७१ १६  
 कप्याख्यलवणा तर ३२  
 कच १५१२ ६ २  
 कच्चिका १५१४ २ ६३  
 कपर ३१६ १५१५  
 कूपसि २१६७  
 काम ६६ १२२६ १५१६ १६२  
 २२ २३ १ ३ १ ३३६२ ५५  
 कामकर्पर १  
 कामराज ३१ २  
 कामशीष २२६६

कर्मजिघ्रि ६६  
 कर्मी १५१६  
 कमश २ ६  
 कल १५१ २४६ ५६ १ ६ ५  
 कलक १५१  
 कलङ्कुषा १५१  
 कलहयान्तर ३२५  
 कवर ६ १५११  
 कष्माण्ड १५१ ३ ४ ३३ २  
 ३५२२ ३२ ४३ ४ ५६ २  
 कष्माण्डक ११४  
 कष्माण्डप्रसव १६  
 कष्माण्डवली ५ ११  
 कष्माण्डी १५१६  
 कष्मन १५२  
 कुक १५२१  
 कुकर १५२१  
 कुकलास २४६५ २६६ ५ ५६ ६  
 कुकलासक १२ १ ५ ५ ६३३७ ६७ ६  
 कुकवाकु १५२२  
 कुकादिका ३  
 कुछ १ १२३३ १५२२ २४२१ ३६१७  
 कुछादि २३ २  
 कुणक १५२३  
 कुणयितु १५२३  
 कुणिका १५२४  
 कुत १५२४ १५२६  
 कुतकाय ६४१  
 कुतप्न १३  
 कुतम १५२६  
 कुतवीह २६६४  
 कुतनिबन्धनशब्द २६७४  
 कुतपीड ३३६५  
 कुतप्रसव ३ ३५  
 कुतयुग ६५३५

कुतराग ४६३  
 कुतराजमूयष्टि ६३३२  
 कुतवेधन १५२  
 कुतसाप यनारी १२६  
 कुतान्त १५२६ २६  
 कुताभिवक २६  
 कुति १३ ५ १५२६ ३३ ५१५५ ५५६२  
 ५ १ ६५६२  
 कुतिनिवृत्त १५३  
 कुतिन १५३१ ५४१३  
 कुतोद्वाहविप्र ६३  
 कुतोद्वाहद्विज ३७५६  
 कुत्त १५३१  
 कुत्तिका ३४६ ३ ५६  
 कुत्तिकाकालजातक ३ ५५  
 कुत्तिकायुक्तपीणमासी १३१  
 कुत्तिकाद्यक्ष ३४६७  
 कुत्प ६२६ १५२३ ३३  
 कुत्पसाधु १५३३  
 कुत्पा १५३३  
 कुत्तिम १५३४ ३५ ६२३  
 कुत्तिमपुत्रिका ३४३२  
 कुत्तिममण्य ६५ १  
 कुत्स्त २६ १५३६ ६७ ३ ६  
 कुत्बर १५३६  
 कुत्तत्र १५३७  
 कुत्तर १५३  
 कुत्प १५३६  
 कुत्पण ६ २ १३१५ १४५३ १५६६ १ १  
 २३ २६५२ ४१२६ ४२ ६ ४ ७४  
 कुत्पा १४३ १५४ ३३६४ ४१६  
 कुत्पाण ११२ १५४१ १ २  
 कुत्पाणी ११५३ १५४  
 कुत्पी १५४  
 कुत्पीड १५४१



कृपीपति २७  
 कृमि १३ १४२ १५३६ २  
 ३ ३५ ३३ ६  
 कृमिघ्न ५४ ५  
 कृमिजायतर १ २  
 कृमिनीड १६ १  
 कृमिपवत १५१  
 कृमिप्रभव ३ २  
 कृमिमव ५ २६३ ६३३  
 कृषि १५ ३  
 कृषा ३५६ १५ ४ २३२२ ३२५  
 ५६१७  
 कृषक ११७ १५  
 कृषि १५६ १५ ५  
 कृषिक १५ ६  
 कृषिरगत ४ ५  
 कृषिमणि १५ ५  
 कृषोवल ११६६, १३ १ १६ १६२  
 १५४४ २३२२  
 कृष्ट १५४६  
 कृष्टभूमितल ६४४२  
 कृष्टि १५ ७  
 कृष्ण ५१ ४५ १२११ १५४ १६६६  
 ३ ३१ ३ ६६ ३ ५५ ४२५ ६  
 ७६ ५२१६ ५५४३ ६६, ५६२७  
 कृष्णकर्मन् ६  
 कृष्णकाक ६१  
 कृष्णकुठरक ११२  
 कृष्णखड्ग २ ६५  
 कृष्णचतुरश्रायतम ६५२३  
 कृष्णश्रवायतम ६५२३  
 कृष्णजीर ४५ ३ ५ ३ ५६६४  
 कृष्णजीरक १३ ६ ३५७ ७५  
 ७६ ६४ ४  
 कृष्णतात ५२१६

कृष्णत्रिवृत २१२२  
 कृष्णत्रिवृता १३२६  
 कृष्णत्रिवृलता ६ ७  
 कृष्णघत्तर ६ ६  
 कृष्णघमल १ १  
 कृष्णनवाम्बुव १३३  
 कृष्णपक्ष ४५ ३ ५४  
 कृष्णपक्षहस ६६  
 कृष्णपनी १ ५६ ४ २५ ६  
 कृष्णपाडर १२११  
 कृष्णभार्यातर १३३  
 कृष्णमरिच ५१  
 कृष्णमस्तक ३ ३  
 कृष्णमवृग ३ १३ ६ ५ ६ २७  
 कृष्णमघ १३२५  
 कृष्णरक्तवण २ ३१  
 कृष्णलाबीज ५३४  
 कृष्णलावली २ २५  
 कृष्णवक्षस् ६४६५  
 कृष्णवचा २६६  
 कृष्णवल्गु १५५४  
 कृष्णवण १५५४ ६१४  
 कृष्णवर्णावित ६१ ६  
 कृष्णवृत्त १५५५  
 कृष्णवन्ता १५५५  
 कृष्णशालि ३ ६ ६३ २  
 कृष्णशिम्बि १२ ६ ५३६५  
 कृष्णशिरोरुह ३ ३५  
 कृष्णसम्बन्धित् १३१६  
 कृष्णसप १५५६ ५१ ६  
 कृष्णसार १३२ २६ १ ६४ ३  
 कृष्णसारथि २६३१  
 कृष्णसारमुग ४५२  
 कृष्णसारा १५५६  
 कृष्णसौवचल ६६ ६

कृष्णा १५५१  
 कृष्णानज १ ३६  
 कृष्णाजक २६६  
 कृष्या ५५  
 कृसर १५५  
 कृसरा १५५  
 के १५५  
 केकरनत्र २३५२  
 केकराख्यवीक्षित २३५१  
 केकिच १ ६ १५  
 केकिन् ३ ३  
 केतकी २६५१ ४४ ६१ ३  
 केतकीद्रुम ६ ३  
 केतकीफल २४६६  
 केतकीद्रुमप्रसव ६ ३  
 केतन १५५६  
 केतु १५६ ५३ ३ ६ १६ ६१ १  
 केतुग्रह २ ३ ३६२१ ६ २  
 केतुत्रयसमन्वित  
 केतुमत १५६१  
 केतुमती १५६१  
 केतुमाला १५६१  
 केतुप्रवत १५६  
 केवर १५६२  
 केवार १५६३ १६ २ ३ १२ ६५ ३२४  
 ४६६७  
 केनार १५६४  
 केनिपात १५४२  
 केयर ५४  
 केरल १५६४ ६५  
 केरली १५६५  
 केलिकलह ५५२१  
 केलिकिल १५६६  
 केलिवन २५  
 केलिसन्धिव २ ६

केवल ६ १५६७ ६ १ २ ३१५१  
 ५३ २ ३ ६१ ३  
 केश ५२ ६६३ ५ १३६६ १ ४ १५६६  
 ७३ २११ ५३५ ५५ ५५७१ ६ ६  
 केशक-गपक १५६६  
 केशपङ्कवित ५२६३  
 केशपाशि ३३१७  
 केशपाशी १५६६  
 केशबधम ५६३६  
 केशमाजमक ६६  
 केशर १५ ५६१५  
 केशव ११ १३१ ५१५ १५ १६६  
 ३ ३२ ४५२ ६१ ५४३५ ५५ ६  
 ५६ ६१ ३  
 केशवत १५७२  
 केशवप्रिय १५ १  
 केशवानुजा १५७१  
 केशवायध १५७२  
 केशवि-यासमिव २३१६  
 केशवि-यासमव १ ५  
 केशवृद्धक १५ २  
 केशसमूह ६७ ५  
 केशिनी १५ ३  
 केशिन १५७ २  
 केशी १५ ३  
 केसर १३५६ १५ ४ ३४४  
 केसरपावप ६ २  
 केसरमालाख्यज्ञा ४६ ५  
 केसरवत् १५७  
 केसरा १५ ६  
 केसरिन् १५७७  
 कटभ १५७  
 कटभसूचन ३३७  
 कटभ्री १५७  
 काढ्य १५७

कोशी १६ २  
 कोशोद्भूत ३ १३  
 कोषकार ३१५  
 कोष्ठ १२३२ १६ ५  
 कोष्ठश्रणि ६ ५३  
 कोष्ठागार ६ २  
 कोसल १६ ६  
 कोसला १६ ६  
 कोहपावप ३  
 कोहल १६ १६ ६  
 कोहली १६  
 कोकटिक १६१  
 कौकुय १६१ ५ ४३  
 कौकुट १६११  
 कौटिल्य ४ ५२ ५५१  
 कौणप १६११  
 कौतुक १४३२ १६१२  
 कौतूहल १४१६  
 कौती १६१३  
 कौन्तीसप्तमवज ६ ३३  
 कौपीन १६१३ ३ २  
 कौमुद १६१  
 कौमुदी १६१४  
 कौम्भ १६१५  
 कौर्त्त नयाख्यकुलटासुत १६१६  
 कौलटय १६१५  
 कौलटेर १६१५  
 कौलीन १६१७  
 कौलयक १६१  
 कौश १६१  
 कौशल २६४२  
 कौशिक १६१६ २  
 कौशिकी १६२  
 कौशयप्रकृति १६ १  
 कौसला १६२१

कौसुम्भ १६२१  
 कौस्तभ २ १  
 कत (प्रयय)  
 कतवतु (प्रत्यय) ३ १५  
 ककच १ २ १११३ १६२२ ५२ ५  
 ककचछद २२३१  
 ककर १६२२ २३  
 ककु २ ६१५ १६२३ ५१५५ ६ ६६  
 ६५ ३  
 ककुभद ५६ ६ ४ १ ४ ६३५  
 ककुभत ६२  
 ककुन १६२  
 ककुवित १६२  
 ककुम १६२४ ३२ ७ ३६१३  
 ककुमण १६२५ ३ ६१ २३  
 ककुमनिम्न ३७१२  
 ककुमसप्तकमषिकजातिभद  
 ककुमुक १६२६ ३५३५ ५६१५  
 ककुमुकफल ३५३५  
 ककुमकभव ४ ४२  
 ककुमेलक १ १३ १६२७ २६३६  
 ४ ३५  
 ककुयविक्रयम् ३११६  
 ककुयविक्रयिक ५ २  
 ककुयाव १६२  
 ककुत ४६६ १६  
 ककुति १६२५ ५३६  
 ककुमि १६२ ३४१५ ५  
 ककुमिञ्ज १६२६  
 ककुमिज १६३  
 ककुमिर १६३  
 ककुमिरा १६३१  
 ककुय १६३२  
 ककुया २१६ ११६३ १२१ ६६ १३ ४  
 १६२३ ३१ ३६४२

क्रियाकार १६३३ ३६४१ ६२२२ ५ ६६  
 क्रियानिवसक १२६  
 क्रियाभ्यावत्ति ५३२६  
 क्रियायोग ६६  
 क्रियारोह २ ५  
 क्रियासाध्यफलाप्ति २ ३  
 क्रीडक २५ २  
 क्रीडन ३ २५ २  
 क्रीडनक १ ३  
 क्रीडनशीलक ६ ६  
 क्रीडा १६३३ १ २ १६ ६ २५  
 २६६६ १ ४६५ ६  
 क्रीडागडक १  
 क्रीडाम्बयम्बक ६१२१  
 क्रीडाशील १५६६  
 क्रीडोद्यान ३  
 क्रीताद्यय ३२६  
 कञ्च् १६ २  
 कञ्च १६४२  
 कङ्क १५३२ १६३५ ४४४१  
 कङ्क २३६ ३६६ ५ ६६ ६७७४ ६ २  
 कङ्कवन १६३  
 कङ्कवरी १६३  
 कण्ट १६३  
 कूर ६५ ११ २ १६३५ ३६ १ ६२  
 २ ६ ३ २२ ३२७१ ३३५ १२  
 ६११ ६१  
 कूरदुश १६३  
 कुरा १६३६  
 कुराचारिन २६ ५  
 कणि १६३७  
 कोठ २२ १६३ ३६ २३५  
 कोठा १६३६  
 कोठी १६३  
 कोघ ३११ १५ ५ १६७५ २२६

२३१ ३६ ६ ५ ७ ५ ५१ ५ ६  
 ६२१३ ६६६ ६६  
 कोघन १६३६ ६  
 कोघवशक्या २६ २  
 कोश १६  
 कोशचतुर ५६  
 कोशन १६  
 कोष्ट १ ६ १६३ १ ५ ६  
 ५६ ३ ६५ ५ ६७५६  
 कोष्टकवरी ११३  
 कोष्ट १६ ६ ६१  
 कोष्टी १६  
 कोच्च १६४१ २  
 कोच्चवृत्तीपवर्षातिर ३३६३  
 कोच्चवृत्तीपवश्य २ २  
 कोच्चवृत्तीपसरिवमिव ३ ११  
 कोच्चवावन १६ ३  
 कलम ६६  
 किलस ५ ७ ६५६६  
 किलसा २१३५  
 किलसाकि ३३५५  
 किलसाकिमत ३३५५  
 कलीतक १६ ३  
 कलीतकी १६४४  
 कलीब १६ ५६२३  
 कलव १६ ५ २५ ६  
 कलवन ३२३६  
 कलतु १६४५  
 कलश ५६१ ६११ १६४६ ३ १५ ३७ ३  
 कलशक १६ ६  
 कलशाविक ६ ६  
 कलशित ५५६ ३६  
 कलशित १६ ६  
 कलशोत्पावन ६५४६  
 कलष्ट १६४६



क्रिया १६ १  
 क्षीण १६६२ २६५२ ६३ ५  
 क्षीब १२ १२५  
 क्षीर ६१२ ६१ १६ १ २६६ ३२२६  
 ३३ २६६ १५ ५ ६३३  
 ६५२६ ६५५  
 क्षीरकाको १ ३१ ५ ६२ ५५  
 क्षीरविकार ६ ६ २५ ६  
 क्षीरबिहृति १५  
 क्षीरविहारी २५२ ३२  
 क्षीरविवायुयमवज १६ १  
 क्षीरशुक् १ १६ २  
 क्षीर बि २६६  
 क्षीराधिज १६ ३  
 क्षीराश १६  
 क्षीराशिन् २६६५  
 क्षीरिक १६७  
 क्षीरिका १६  
 क्षीरिकाद्रुन ६  
 क्षीरिकापावप १ १  
 क्षीरिकौषधि २६६४  
 क्षीरिणी ११  
 क्षीरिन् ३१ ६  
 क्षीरीशद्रु ६  
 क्षुण १६ ५  
 क्षण ३६३५ ३ ४६  
 क्षुत १ ३ ६  
 क्षुत १६६१ १६६२  
 क्षुत्र ११४५ १६ ६ १ ६३ २२५ २  
 क्षुत्रक १६  
 क्षुत्रकारवेली १३ १  
 क्षुत्रग्राम ३१ २ ३११६  
 क्षुत्रघटा २ १४  
 क्षुत्रघण्टिका ६५६  
 क्षत्रघण्टी २ २१

क्षत्रजनुविशेष १  
 क्षत्रतात २ १  
 क्षुद्रतिल २ ५  
 क्षुद्रधाय १६ २३३  
 क्षुद्रीवृत ५२  
 क्षुद्रपी ३३६२  
 क्षत्रफल ३ ६१  
 क्षत्रमग २२२१  
 क्षुद्ररोग ३ ३  
 क्षत्रवल्पन्तर २  
 क्षत्रवातिङ्गनातर २६५  
 क्षत्रविद्विष् १ ६  
 क्षुद्रशिन्ध ६ ४३  
 क्षुद्रस्थावरजाति २ ६  
 क्षुद्रा १६  
 क्षत्रागार १४ ६  
 क्षुद्राश्वय ५ ३३  
 क्षुप २१६  
 क्षुप्र १६ ६  
 क्षुमा १६ ६  
 क्षमाधाय २ २  
 क्षमासप्तधाय ३ १  
 क्षुमाह्वयधाय ६  
 क्षर १६  
 क्षरक १६  
 क्षुरक २ ५  
 क्षुरप्र १६ १ १ ६२  
 क्षुरप्रव ३५२  
 क्षुरिका २ ३६  
 क्षुल १ ६३  
 क्षालक १६ १  
 क्षत्र ३२ १११ १५६३ १६ ५ २  
 ६५ २३६३ ३२ १ ४६६ ५ ५  
 ५६ ६ ५  
 क्षत्रगहन ५१६३

क्षत्रज १६ ३ २२६  
 क्षत्रपाली १ ६  
 क्षत्रपान १६  
 क्षत्रमर्यादा ६  
 क्षत्रवित १६ ३  
 क्षत्रादिनिम्नस्थसल्लिनिवा ण ६५ १  
 क्षत्रिक १६ ३  
 क्षत्रिम १६ ३  
 क्षत्रिया १६  
 क्षत्रोद्याननायक ६ ६  
 क्षय १६ ६  
 क्षय ६३३ १६ ६ २६ २ ३ ६६६५  
 क्षयण ६ ६१६ १६  
 क्षयणी १६  
 क्षयणीय १६  
 क्ष तव्य १६  
 क्षप्य २३५४  
 क्षम १६ ६  
 क्षमपूर्वकगमन ६६५६  
 क्षमा १६  
 क्षोणी १६ ६ ६  
 क्षोद १६६ ४ ६  
 क्षोम १६ ५ १७ १  
 क्षोमणीय १६६१  
 क्षोभ्य १६६१  
 क्षोत्र १६६१  
 क्षोम १६६२ २६६३  
 क्षोमसज्जगृहा तर  
 क्षौरकमन् ५ ५१  
 क्षौरशाला ५ ५२  
 क्षमा १२१५ १६६३ ४ २७  
 क्षमादि ४ २  
 क्षमासलकी ३ ५३  
 क्षेड १६६३ ६४ ५ ६६  
 क्षेड १६६४

## ख

ख २ १३२ १६६५ १ २  
 ३ ५३ ३ १ ३६१६ ५ ५  
 खकणीनी १६६६  
 खग ५ १ १ १६४२ ६ १  
 १ २ २२ ३ २५५ २ ५६ २  
 ३ २६ ३ ३१२५ ३३४ ४२६३  
 ३१४ ६ ५ ६१ ५३ १ ५ ६१ ५  
 ६५ ६  
 खगच्छद ३१२१  
 खगवन्न १६६  
 खगासन १६६  
 खगास्य १६६  
 खगत्र १६६६  
 खचर १६६६  
 खचिता १ ३ ५  
 खज १ १ २  
 खजक १ २  
 खजकी १ ३  
 खजा १ ३  
 खजाक १७ ४  
 खजाका १७ २६  
 खजिका १ ३  
 खञ्ज १५६ १ ५ १ ३  
 खञ्जन १३२ १५२२ १ ६ २३६४ ४  
 खञ्जनपत्तिन १  
 खञ्जनी १ ६  
 खञ्जरीट १ ६ ४४ २ ६४६५  
 खञ्जरीटी १७  
 खञ्जा १७ ५  
 खञ्जी १७ ५  
 खट १ ७  
 खटक १७  
 खटखाटक १ १

अिका ६५२ १ ६ ६ ५६

अटी १ ११

अट्टाश ५६

अट्टिक १ ११

अट्टवा १ १२ २२ २ ३२

अट्टवाङ्ग १ १३ ६ २ ५

अट्टवाङ्गी १ १३

अट्टवाङ्गधा १२ ३६

अट्ट १ १

अट्टक १ १

अट्टिका १ १

अट्टी १ १५

अट्ट १ १५

अट्ट १६ १३ ३ १५ १ १ १६

२२६ २३ ६ २६६३ २ ६१६३

२ १२ १३ ३ २२ ३१६१ ३ ६६

३६२२ २६ ११६ ४ २ ५२ ५३६६

५ ५६६६ ६ ५ ५ ६१६

६३६ ६ १

अट्टकोश ३१ ५ ६३

अट्टगकोष ११ ६ १ १

अट्टगवल ६ १६

अट्टगघन १ १

अट्टगनसक १ १

अट्टगपिधानक १५६६ ३५६२

अट्टगकल १ १

अट्टगमात्र २ ५

अट्टगमृग १ २६ ५३ ६

अट्टग विमुष्टि २३ ६

अट्टगाघार १६१६

अट्टगारीट १ १

अट्टगिक १ १६

अट्टगिन १३ ३ १ १६

अट्टगका ३२६३

अट्ट १ २ २१ २६ ३२ ३ ६

५ ६

अट्टक १ २२

अट्टकधारा १ २२

अट्टकन १ १ २६३२ ३६ २६५ ५११६

अट्टकना १ २३

अट्टकपरश १ २४

अट्टकपश १ २५

अट्टकल १ २६

अट्टकलयण २ ३२

अट्टकवत १ २६

अट्टकधत्त १ २७

अट्टकध १ २६

अट्टकमलक १ २५

अट्टिक १ २

अट्टिका १ २

अट्टित १६५२ १ २१ २६ ४३३

अट्टिता १ २

अट्टिनी १ ३

अट्टालामरिचात्रकवर्ण ६२१३

अट्टमल १ ३

अट्टति १ ३१

अट्टिर ३२१ १५३६ १ ३१ ३ २ ५

३३ १ ३५३ ४४ ३ ४६६१ ५ २

अट्टिरका १ ३२

अट्टिरुम १ ६ २५ २

अट्टिरसार ६२

अट्टिरा १ ३३

अट्टिरी १ ३३ २ २

अट्टोत १ ३ २ ५३ २१३३ ४ ३

अट्टोताक्षि १ ३५

अट्टनक १ ३५

अट्टनकक्षत्रियाजाल ६६

अट्टनन १ ६

अट्टनि १ ३६ १ १६

अट्टनितव्य १ १



खनित्र ३६३ १७३७  
 खनित्रक १२३२ ५ ४  
 खनित्री १७३ ५४ ३  
 खपर १७३  
 खपुर १७३  
 खर १ ४ ४ ५१ २ ३ ५ २१  
 खरकटी १७४५  
 खरकवाणखग २४४६  
 खरगह १७७६  
 खरछव १७ ६ ४  
 खरछवा १  
 खरवूषण १७४  
 खरपत्र १  
 खरपत्रा १ ६  
 खरमुख १७४६  
 खरस्पश ११ २  
 खरा १ ५  
 खराङ्ग १ ५  
 खरालिक १ ५  
 खराशवाणपाजमोवाभव ६६  
 खरी १  
 खब १ ५१ ५२  
 खजति १७५२  
 खजन १ ५३  
 खजनी १ ५३  
 खजिका ४६२१  
 खर्जु १ ५  
 खजुर १७५४  
 खजू १७५५ ४  
 खर्जुघन १७५५  
 खर्जूर १७५६ ५७ ३१६५  
 खजूरपावप ३२५  
 खर्जूरप्रसव ३१६५  
 खर्जूरफल ३२५१  
 खर्जरभव ३३३७

खर्जरवृक्ष ४३ ६  
 खजरी १ ५६  
 खर्जरीब्रम ३ ३  
 खपर १७५  
 खपरी १ ५  
 खबर १ ५६  
 खम १७५६  
 खव १७६ ५ ४  
 खविका १७६  
 खल १ ५ ६१ २ २२ ३ ६६ ३६१६  
 ४४ ६ ७ ५  
 खलकुल १ ६३  
 खलति १ ६ ६ ३  
 खलतिक १ ६  
 खलवद १ ६६ ६  
 खला १ ६२  
 खलि १ ६५  
 खलिनी १७६६  
 खली १७६५  
 खलीकार २६ ३  
 खलीन १२२१ १ ६६ ६ ३ ५  
 खल १ ६७  
 खया १७६  
 खल १ ६६  
 खलक १ ७  
 खलिका १७  
 खलिट १७६४  
 खली १७७ १  
 खव १७ २  
 खवा १ ६४ ७ ३ ३३  
 खशाय १ २  
 खष १ ७३  
 खषी १ ७३  
 खण्य १ ७४  
 खस १७७४

जसा १ ७५  
 जस्फटिक १ ५  
 ज्ञा १६६६  
 ज्ञा १ ६  
 ज्ञाण्डव १ ६  
 ज्ञाण्डिक १  
 ज्ञात १ ७६ १ २  
 ज्ञातक १ २६  
 ज्ञाता १ ६  
 ज्ञाताधिकम ३५६२  
 ज्ञातिका १  
 ज्ञातेतर २६  
 ज्ञान १७  
 ज्ञाव १ १  
 ज्ञावक ६ २ १ २  
 ज्ञावन १ २  
 ज्ञाविररस १६२१  
 ज्ञाघ १ ३  
 ज्ञाघमव ३५५  
 ज्ञाघातर ३५ ६  
 ज्ञाल १७ ३  
 ज्ञानक १ ४  
 ज्ञानिका १  
 ज्ञारिक १  
 ज्ञारिका १ ५  
 ज्ञाषय ४५१७  
 जिह्वार १ ५  
 जिह्वार १ ६  
 जिह्वारा १ ६  
 जिह्विर १  
 जिह्व १  
 जिल ३ १  
 जिलसत्र १७६  
 जिलोवमव १ ६  
 जिल्य १ ६

जुण्डक १ ६  
 जुुर १ ६१  
 जुरक १७६२  
 जुरप्र १ ६२  
 जुरी १ ६१  
 जुरल १ ६३  
 जुरवर १ ६३ ६४ ६६  
 जुरचरा १ ६५  
 जुरघरी १ ६५  
 जुरट १ ६६ ६ ६  
 जुरटक १ ६ ६६  
 जुरटकाखमसस्त्रवारण ३  
 जुरटिन १ ६६  
 जुरट्टिनाल ५  
 जुरव ४६३ ६३ १ २६६३  
 ५  
 जुरवा १  
 जुरवि १  
 जुरय १ १ ३१६६  
 जुरल १ १ २  
 जुरलगति ६६३  
 जुरलन १ २  
 जुरलमा १ २  
 जुरलनी १ २  
 जुरला १ १  
 जुरलि १ २  
 जुरोट १ ३  
 जुरोटी १ ३  
 जुरोड १ ५ १ ३  
 जुरोल १  
 जुरोलक १  
 जुरोलिका १ ५  
 जुरोक १ ५  
 जुरयात १६१५ ३६६ ३ ३ ५७ १  
 जुरयाति २४७ १ ६ २७६

## ग

ग १

गगन १ १ २ ३ २२

गङ्गा २३५

गङ्गा २२ ३ २५३ २ ५ २

३ १ ५ २६ ५५११ ६३ २

६६६ ६ ६

गङ्गाद्वारात्रि ३ ६२

गङ्गापुत्र १

गच्छ १ ६

गज ५३ १ ५६ ६ ११२६ ३२

१३६६ १ ६३ १ १ ६१ २५६५

२६ ३६ ६ २६२ ५ २६ ५६ ६

५ ३ ६२ २ ६४ ३ ६५६ ६ ४६

गजकु भाध प्रवेश ५६६

गजगण्ड ६ ११

गजगर्जित ५

गजच्छाया १ १२

गजवर ३३

गजता १ १४

गजतोत्र ५६४२

गजव १ १

गजव्रासहेतु ६ ४

गजवत १ १

गजवतव्यातर ३६५१

गजवतवधन ३६५

गजवतमूल ३७२१

गजवानजल ४१३५

गजवानतीय ६४३६

गजद्वह १३५

गजपद्मधरञ्जु २५३५

गजपद्माङ्क १६

गजपिप्पली १ १ ५१३७

गजपुच्छमूलांश ६२१

गजपुत्रपावमलाध प्रवेश ३६३६ ६३

गजप्रिया १ १५

गजबन्धनी ५ २

गजबिन्दु ३१

गजमक्षया य रुह ३३

गजमञ्जन २६६

गमद १ ३

गायायित ६ ६

गजवलभा १ १५

गजवरा २१५५

गजस्क ध ६२१ १ १६ ३१

गजा १ ११

गजानन १ २५

गजातर २६१५

गजान्न ५ २६

गजान्नपि ३४ ३

गजायुध भाषितक्षत्रज-तविशेष १

गजारि १ १६

गजारोह ५ ६६

गजालिक ३ ५

गजाशन १ १

गजाहव १ १

गजाङ्गय १ १

गजङ्गा १ १

गजङ्गान ६६

गजी १ ११

गञ्ज १ १६

गञ्जाकिनी १ २

गङ्ग १ २

गङ्ग १४४ १ २१ २२

गङ्गल १४४

गङ्गली २६६४

गङ्गर १ २२

गण १ २३ ४६४६

गणक १६५ १ २४ २५ ३३ २

गणवेवातर ६३६६

गणन १ २३ ६२ ६

गणनाकल १ २

गणस्य २६११

गणाधिपति १ २५

गणिका १ २५ ५६ ६

गणिकारी ५२ ३ ५ ६

गणितातर २५३१

गणिस्यराज ३ ६३

गणक १ २६

गणश १ १४ ६६२ ५६११ ६ ३१

५

गण्ड १ १ २६ २१ २

गण्डक १ १६ १ २६ ५३ ५

गण्डकमग १७१६

गण्डकी १ ३ ५६६६

गण्डक्या यसरित २६३३

गण्डदूर्वा ११६५

गण्डपदीमुक् ६ ४

गण्डशाल १ ३

गण्डसदृश ६६

गण्डस्थाधराणि ३ १

गण्डीर १ ३१

गण्डीरी १ ३२

गण्डपद ५१५

गण्डपदी ६ ६१

गण्डधा १ ३३

गण्डोष्वाशक ६६

गण्डोल १ ३४

गत ३५ ६ २ ५ २ ६ ३ १५

५५ १ ६२ ६६ ६

गतनास ५३६२

गतवत ६६ ६

गताङ्ग ५ ४

गताद्यथ ३६ ५

गताभ २१

गतासन २१६

गति ३ ६ ६५ ४ ६ ५६

६ ६ ५६ ३६ १ ३५ ३७ ३

२१५ २२५५ २३१३ २ ६ २६६

२ १६ ३१ ६१ ६१ १ १

१ ४ २२ ६ ५ ६३ ५५४४

५ ५ ६३ ६ ६४१२ ३२

६५ २ ६६३

गतिनिवस्त ६५६५

गतिव्यत २ १

गतिहीन २

गतिहेतु २२५६

गयादिक ६ ३

गवर ६५ ६५११

गव १ ३६ ६१ १

गवयिल १ ३६

गवा १ ३६

गवातर ३३ २

गवित १

गवगव ६५५१

गवगवन ६५५

गवगवस्वर १

गवा १

गन्त १ ४१

गतु ३ ७ ६ ५ १ १ ५ ७१ ५६६३

गन्मी १ १ ६ ३

गन्ध १ २ २ १६ २४ ४ ४१३५

गन्धक २ १ २ ३३६५ ३५ ३ ४६६

५१

गन्धकाख्यघातु ६५३१

गन्धकीट ३५

गन्धकुटी २६६६ ४३१

गन्धतुण २ २

गन्धव्य २३६१

गघब्रव्यातर ३४ ६ ६५ ४  
 गघन १ ३ ३ १५ ६ ६१  
 गघना १ ३  
 गघफली १ ४४  
 गघमिद ३५१३  
 गघमावन १ ५  
 गघमाजिर ५ ३२  
 गघमायाद्यपाह्ति ५६५  
 गघमग ३५ ६  
 गघयुत १ ४  
 गघव ६६ १ ६ ३ ३ ३ ५७५३  
 गघवनगर ५५१६  
 गघर्वाधिपमव २४ ६  
 गघवत १ ६७२  
 गन्धवती १  
 गन्धवस्तु ४६ ६  
 गन्धवस्तुमिव ६ १२  
 गन्धवहा १ ४६  
 गन्धवाह १ ४६  
 गघोली १ ५ ३६४ ५ ६  
 गमस्ति १ ५ ३६७ ६५ २  
 गमीर १ ५१  
 गमीरा १ ५१  
 गम २ ६ १ ५२ ४६ ६  
 गमथ १ ५२  
 गमन २ १६६ २१४७ ३७ ३  
 ४५६ ६२ ५६७५ ६५ ६६६१  
 गम्भारी १ ५५ ५५४  
 गम्भीर ६ १ ५३ ५४  
 गम्भीरशब्द १ ६  
 गम्भीरा १ ५४  
 गम्य ५  
 गय १ ५५  
 गया १ ५५ ३३४६  
 गर १ ५६ २४५५

गरठ १ ५  
 गरलातर २  
 गरा १ ५६  
 गरिम ३६ ६  
 गरी १ ५६ १ ५  
 गव ६६६ १२ ५ १६६६ १  
 ५ ६ २ ३२ ५ १६ ४३१२  
 ४६ १ ५२ ६ ५ १ ५६ ६  
 ६४६२ ६ २६ ३१  
 गवडमितासुर ३४  
 गवडवज २ १३  
 गवडा १ ५६  
 गवडाप्रज २७३३  
 गवत १ ५६ ३ ७  
 गवमत् १ ६  
 गवरी १ ६ ३४ ४ ३५ ७  
 गज १ ६१ ६५५३  
 गजवध ३१६  
 गजम १ ६२  
 गजमा १ ६२  
 गर्जा १ ६१  
 गर्जित १ ६३ ६५५६  
 गर्जित ६५६६  
 गर्ता ३ ७ ६६ १५१ १ ३६ ६६  
 १ ६३ १६१६ २३२  
 गर्तिनि २ २५  
 गव १ ६४  
 गवम १ ६५ ६६ २१३३ ३ ७२ ४६५६  
 ४७६ ४ ५३७४ ५ १ ६६६३  
 गवभाण्ड १ ४१ २ ७३ ३  
 गवभाण्डाख्यपावप ६४६४  
 गर्वभी १ ६६  
 गर्भ १ ६७ २७२६  
 गभस्त्रीसत्कारकमन् ३३६५  
 गर्भाधानाख्यसत्कृति ३७५५

गर्भाविस्थांतर ११  
 गर्भाशय ३ २२४ २  
 गर्भिणी ५३ ४ ५  
 गर्भिणी-छात्र २ २६  
 गर्भिणी-छात्रिण २ ३  
 गर्भिणीस्पृहा ६१५६  
 गर्भत १ ६  
 गर्भव १  
 गर्भदायित्वतुणधायान्तर १  
 गर्भुवी १  
 गर्भ ४ ५ १ २६ १ ४१३५ ५५१  
 गर्वर १ १  
 गर्वरी १ २  
 गर्वित ६३१  
 गर्हण २२६  
 गर्हणीय ११  
 गर्हा २१ ७६ १ १६ ५३२ ५३३  
 गर्हित २ १ २ ३ ५ ५३६१  
 गर्ह्य २६ ३६ २२ ३ ६ २  
 गर्ह्यजन्मन् ५३६  
 गर्ह्यवसिक २६१६  
 गर्ल १ १३ १ २ २६ ६  
 गर्लकम्ब २६  
 गर्लतिका ५१  
 गर्लती १ ३  
 गर्लस्तनी १ ७३  
 गर्लहस्त ३५२  
 गर्वक ३ २  
 गर्वल १  
 गर्वाक्ष १ २२ ५२६  
 गर्वाक्षसद २२ ७  
 गर्वाक्षी १ ५  
 गर्वाक्षनी १ ७५  
 गर्वाक्षि २६६४  
 गर्वाक्षिक ३२३

गर्वादिनी १६ ४  
 गर्वीषु १६ १६ २३३४  
 गर्वीषधाय ६  
 गर्वीषका १ ६  
 गर्वीष्याद्यधाय ३६२६  
 गर्वेष्ट २२१२  
 गर्वेष्टुका १ ३६ ६  
 गर्य १  
 गर्व्या १  
 गर्व्यति १६५६ ६  
 गर्व्युयाख्याद्यमान १  
 गर्हन १२ २ ३३ १ ६१ २२ ३  
 ५ २ २५ ५१६३ ५ २  
 गर्हना १ ५ १  
 गर्ह्ण १३६५ १ ६  
 गर्घात १  
 गर्ङ्ग १  
 गर्ङ्गय १ १  
 गर्ङ्गष्टिका ६ ६  
 गर्ढ १ ६  
 गर्ढमणि १ २  
 गर्ण्डिव १ २  
 गर्ण्डीव १ २  
 गर्तव्य १६३३  
 गर्तु १ ३  
 गर्त १६३३  
 गर्त्र १  
 गर्त्रविन्यासप्रद ६२१  
 गर्त्रसकोचिन १  
 गर्त्रक ३२६६ ३३११  
 गर्था १ ५  
 गर्थातर २ ५  
 गर्थाप्रमेद २ ५१  
 गर्न २ १ १ ६ १६ २ ३ ३३  
 गर्नी १ ६

गाधव १  
 गाधवी १  
 गाधार १  
 गाधिक १  
 गाभीय १२ २  
 गायककण्ठजगण ६१६४  
 गायककोषविशेष ६२ २  
 गायत्रसज्जिसामन ५६  
 गायत्रह्रस्वसामन २ २  
 गायत्री १ ६६ ५६५ ५ ३१  
 गायत्रीतत्त्व १ ३१  
 गायत्र्यादिकच्छवस ३१३१  
 गायन १ ४६ १६३५ ५१२  
 गारित्र १ ६१  
 गारु ६२  
 गार्भिण १ ६३  
 गाह्वय १ ६४ ३ ६६  
 गाह्वय्याग्नि १६२६ ३२२६  
 गाल १ ६४ ६५  
 गालन १ ६४  
 गालव १ ६५  
 गालितमुष्ककपश ३५  
 गीतिधमविशेष ६१ ६  
 गीतिभद ३ ३  
 गीतिभद २ ४४ ३ ६२ ५  
 गिरि २ १३२३ १ ६६ ६७ २५६२  
 २ ६ २ ३ ३२३६ ३४६४ ३ ३  
 ५१७५ ५५ ३ ५ ५२५ ६ १२ २१  
 ६६  
 गिरिक ६ ६  
 गिरिकर्णिका ५५१  
 गिरिकर्णी २ ६३ १३६ १ ४४ ५  
 ३६६  
 गिरिज १ ६ ४१६१ ६२  
 गिरिजा २ २ १२१५ १ ६ ३ ६२

४ ६६  
 गिरिण १ ६६  
 गिरितट ३  
 गिरिप्रिया १ ६६  
 गिरिप्रियाह्यवार्ताभ्यन्तर ६२ ५  
 गिरिप्रियतिष्ठयातद ब्रधातिष्णि ना तर २६५  
 गिरिप्लव २ ६  
 गिरिभिद ३ ३२ ६ २  
 गिरि टङ्ग ३ ३ ५  
 गिरिसरिद्धाह ६१२  
 गिरिसार १६  
 गिरिसारजलौका २२७६  
 गिरीश १६ १  
 गियतर ३५१  
 गीत १६ २ २६५  
 गीतसती १ ५  
 गीता १६ २  
 गीति १ ६ १६ ३ ३  
 गीतिधम २४१६  
 गीतिभद ३  
 गीतिस्वरातर ३  
 गीर ३६६६  
 गीर्णि १ ६  
 गीष्पति २२६  
 गीष्पतिभार्या २ २  
 गुगल ५३ ४ ६६ १२ ३ १ ३६  
 १६१६ २२ २४४३ २६६ २ ४  
 ३२१३ ४ ३४४५ ४३४ ४ २  
 ५ ६६ ५६ ३ ६१७२ ६६  
 गच्छ १६ ३ ६५५७  
 गुच्छा १६ ४  
 गुञ्ज १६ ५  
 गुञ्जन १६ ५  
 गुञ्जा १ ७ १२४१ १६ ५ २१५  
 ४६ ३ ४६६ ५ ७१ ६ ७ ६२६२

गञ्जिका २१४२  
 गदिका १६१  
 गुड १६६३ १६ ५ ६५ ३ ५ ६  
 ५ ६ ५६५  
 गडकुत् १ २  
 गङ्गवन् २५५३  
 गङ्गु  
 गुडफलद्रुम ३३  
 गु शकरा ६६  
 गुडा १६ ६  
 गङ्गाकशा ३६ ६  
 गङ्गायाड्यलाजसक्तु २ ६  
 ग चि ५ ६२  
 ग वी १३३ २ ६ ६५ १४२ १६ ६  
 २१६३ २३ ७३ २४४४ २  
 २ २३ २६ ४६ ६ ५ १५  
 ५ ६६ ५ ६ ६५३  
 गुण १६ २३ २ ३ ५ ६ १  
 ६३६५  
 गुणक ३५५१  
 गुणगौदव ६५३  
 गुणन २ ५ ५ १ ५११६  
 गुणनावि ६६  
 गुणनिका १६ ६  
 गुणप्रतियोगिन २७२२  
 गुणभव ३३३  
 गुणवर्जित २३५  
 गुणवादिन ५३ ५  
 गुणसम्पन्न ६३६६  
 गुणसामाय १६ ६  
 गुणित ६३ ३३ २  
 गुणिन ३६६१  
 गुणोक्तव ६३१  
 गण्डक १६१  
 गुण ३२३

गव २१३ १६२१ ३२ ३२ ५ ५ ३६  
 ६६१६  
 गववात २  
 गुद्रा १६१  
 गप्त १६११ ५३६१  
 गति १ १६१२ ५  
 गम्फ १६१२  
 फन १६१२  
 गुम्फित १६  
 गुड ६ ५ ६ ६ १६१३ १६ २  
 ३६ ५२६ ५६६६ ६६  
 गङ्गुल २ ६३  
 गङ्गुलवासिशिष्य ३ ६३  
 गववण १  
 गर्वी १६१ १६  
 गल १६१६  
 गुला १६१६  
 गलिका १६ ६ ६६३  
 गुली १६१  
 ग फ २ १ २६ ६५६६  
 गुल्म १६१ २२६५  
 गुन्मक ३३४  
 गुन्मा १६१  
 गम्बिनी  
 गवाक १२५  
 गवाकाविपन्नमलस्थव न ३१ १  
 गुहा १ ६ १६१६ ३ ६ ६ ५२  
 गुहाशाय १६२  
 गङ्गा १३ १ १६२ २१ ३६ १ ६  
 ६१  
 ह्यक २ ६  
 ह्यावर ६६६  
 गुह्याव ६१  
 गठ ६ १६२१  
 गठपदासन ३२



गूढभाषण १  
 गर् १६२१  
 गृ जन १६२२ २३ ६ १  
 गस १६२३  
 गघ १६२  
 गघ्न १६६६ १६२ २५६६ २६ १  
 ३ २ ६ १ ५६ ६  
 गघ्ननख्याख्यलता ५ ५  
 गघ्नख्यपक्षिमव ६ ५६  
 गघ्ननखी ६ ५६  
 गघ्नि १६२५  
 गह ६ १३६ १ २४ ३ १६२६  
 २५ २६ ५६ ३ १ ३६६३ ६५  
 ५६२ ५२ ३ ३१ ६ ५३ २ ५६ ५  
 ६१ १ ६२ २ ६६५३ ६ ३  
 गहकपोतक ३२६१  
 गहकुमारी ६५ २  
 गहगोघा ३ ३ ४३  
 गहगोधिका २३२६ ३३  
 गहगोलिका २ १६  
 गह छविस्त २१६  
 गहवाय २३६५ ५१७  
 गहवायप्रभव ३ ६  
 गहद्वार ५६ १  
 गहद्वारोष्वाय २६  
 गहधूम २ २६  
 गहपति १६२६ ३१  
 गहपाश ५६ ५  
 गहपुव १६२  
 गहबधु २११५ ६  
 गहमितिस्थनागवत् २५ ५  
 गहभव ६ ३४  
 गहमणि १६२  
 गहमात्र  
 गहविण्ठ वकान्तर ६३५२

गृहशानक १६  
 गृहसम्बन्धिन ५६ ६  
 गृहस्थ १६२६ ३१ ३५७३ ६६ ५  
 गृहस्थान ३५६६  
 गृहस्थित १६२६  
 गृहागत ६६  
 गृहाङ्ग ३ ६५  
 गृहाङ्गारपाशवस्थदाय ३ ६  
 गृहाविमुख ३ २  
 गृहा तद्वारि ३६२  
 गृहाराम ३ १२  
 गृहाभितपक्षिन २१६५  
 गृहाभितमृग २१६५  
 गृहिणी १६३  
 गृहिन १६३१ २  
 गृहोवक १६३१  
 गृहो वमस्थस्थणा ६४  
 गृह्य १६३२  
 गृह्या १६३३  
 गथ ५ ५  
 गय १६३३  
 गण १६३४  
 गण १६३५  
 गह ५५६ १२६ १५५६ १६६५ २१  
 २ ६२ १ ५१४६ ५ ६६  
 ५६६२ ६२३२ ५ ६५ ६ ६६ ६  
 गह छविस् ३ ६२  
 गहवाय ४६  
 गहपक्षि २१ ६  
 गहप्रकोष्ठक ६५५  
 गहबहिर्द्वार २५१६  
 गहभूषण १६२  
 गहभव २ ६  
 गेहध्यामसूत्र २ ६५ २ ६६  
 गहस्तम्भ ६६

गेहावयव ३३४  
 गेहकवेश ५९६२  
 गरिक १३ १९३५ २६ २ ९९  
 ६ ५९  
 गरिकादि २  
 गरेय १९३६  
 गो ३३ ६ ५ ४६ ६९ १९३६ २ ९६  
 २ ३९ २९९६ ३३ ९१ ४२  
 ९९ ५ ९२ ६१२  
 ६३ २  
 गोकण्टक १९३९  
 गोकरीष धन ३९ ३  
 गोकण १९  
 गोकर्णी १९ १  
 गोकलन २२ ५  
 गोकलीक १९ २  
 गोक्षर ६ १ ११ १६ १९३९  
 २५२९ ५ ५ ६६५  
 गोक्षरक ६४१ २५  
 गोक्षराभिद्यस्तम्ब ६१ ६  
 गोखुर १९ १  
 गोगण १  
 गोप्रथि १९ ३  
 गोधर ५४९  
 गोजिह्वा १४ १ १९ ३  
 गोजिह्विका १९  
 गोडम्ब १९  
 गोणी ५९१४  
 गोण्ड १९ ५  
 गोतम १९४६  
 गोतमी १९४६  
 गोत्र १९ ४ २२६२ ३ १३  
 गोत्रकुवृष्यतर ३५ ६  
 गोत्रविभिद् ६५ ९  
 गोत्रावमद २६

गोत्रा १९  
 गोत्रा तर ६६२५  
 गोव १९ ९  
 गोवा १९४९  
 गोवात १९ ९  
 गोवारण १९५  
 गोवावरी १९ ९ ६६ ५  
 गोवह १९५१  
 गोघा १९५ ३ ९ १  
 गोघ पदी ६ १  
 गोघम १ ५ १९१३ ५१ ४ २५ ४५१३  
 ६१ ५  
 गोघमघा य १९६२  
 गोघमपिष्ट ६३  
 गोघमादितुष ६६ १  
 गोतद १९५२  
 गोनास १९५३  
 गोनासा १९५३  
 गोनिपा १९५६  
 गोप १९५ ३३३९ ३३ ९ ५१ ९  
 गोपगीत ३२९२  
 गोपघोष्ठा ५६३५  
 गोपति १९५५ ६२ १  
 गोपाल १९५ १९५ १९५६  
 गोपालपुत्रिका ३३  
 गोपित्त  
 गोपी १९५५ ४ ६  
 गोपीथ १९५६  
 गोपुच्छ १९५ ६  
 गोपुर १९५ ३६६  
 गोपुरक्षत्र ३ १  
 गोपुरातर ३५२१  
 गोप्य १९२ २३९  
 गोमव ६६२  
 गोमत् १९५ ७

गोमत १६५६  
 गोमती १६५  
 गोमय ३२२ ५ १२  
 गोमायु ५६ ५३६  
 गोमख १६६  
 गोमत्र ६  
 गोमत्रोद्भववणक ३३६६  
 गोमेवक १६६१  
 गोमेवकमणि ३३ ६  
 गोपद्ध १६ २  
 गोरक्ष १६६१  
 गोरक्षजम्ब १६६२  
 गोरक्षा १६६२  
 गोरक्षकु १६६३  
 गोरस २ १३२ १६६३ ५ ६  
 ६ ६६  
 गोस्त १६६  
 गोरोचना ३३२१  
 गोल १६ ५ १६६५ ६७ ३३३६  
 गोलक १६६४  
 गोला ६ ६ १६६६  
 गोलाङ्गल १६५ ६ ३ ३ २५६  
 गोलिका १६६५  
 गोलोमी १६६  
 गोवदना १६६  
 गोवदनी १६६  
 गोविद १६६६ ५६५ ६१ १  
 गोत्रज २ ६  
 गोशिरोवेश ३ ५७  
 गोशीष १६६६  
 गोष्ठ १६ ३ ५ ६  
 गोष्ठाधिप १६५  
 गोष्ठी ६२ १६ २ ३ २ ३१  
 ३६५२ १५ ६२ ३  
 गोप्यव १६७१

गोस घ १६ २  
 गोसग १६ २  
 गोस १६ १  
 गोसास्ना १ ६६  
 गोस्तन १६ ३ २१ १ ५२ ३  
 गोस्तनी ५३२ १६ ३  
 गोस्वामिन् १६५  
 गोहित १  
 गौडविकृतिमव ३ ६  
 गौतम १६ ४ ५ ५ ३५  
 गौतमबद्ध ५६  
 गौतमभार्या ६२  
 गौतमर्षि  
 गौतमी १६ ५  
 गोधनपति ३६६  
 गौर १६ ६ २५  
 गौरकदली ४६५२  
 गौरव २ २ ३ ६ ३६ ६ ३६५  
 गौरवी ५६ ३  
 गौरसषप १ १६ ३ ६५  
 गौरसिद्धाय ४६१५  
 गौरी १ ६ १६ २ ६ २२३६  
 ४३ ४ ३२ ६ ६२१  
 गौरीतिथि २ ६  
 गौरीसखी २२३६  
 ग्रथित १६  
 ग्रथ १६ ३५३४ ५१६१  
 ग्रथकाण्ड ६५४४  
 ग्रथकाण्डक ६५५  
 ग्रथगु फ ५ ६१  
 ग्रन्थना १६  
 ग्रन्थमव २६४६ ३४५६  
 ग्रन्थवर्जित २६७६  
 ग्रन्थातर ३ ६  
 ग्रन्थावच्छमिद् १२५

प्रथि १६ १  
 प्रथिक १६ २  
 प्रथिव्यान्तर ३२१  
 प्रथिपण १३ ६ २१ ६ ६ ६१  
 प्रथिन् १६ ३  
 प्रथिमत् १६  
 प्रथिल १६ ३  
 प्रस्त १६  
 प्रह ५५ १६६ १ ६ १ ५ १६ ५  
 ३३३१  
 प्रहप्रस्तार्क ३१ १  
 प्रहप्रस्तेषु ३१७१  
 प्रहण ४ ६ ५२२ ६ १६  
 ४ ६६६६  
 प्रहणी १६  
 प्रहभ्रम ६६२४  
 प्रहराज १६  
 प्रहा तर ३६४३ ६ ६६  
 प्राम ३५६ १२ १ ३ १ ६६ १६ ६  
 ६ २२ ६२१  
 प्रामक ३६  
 प्रामगोचरम ६४४४  
 प्रामगोचरममि ६४३  
 प्रामजाल २५६६  
 प्रामजालिन २ ३  
 प्रामणी १६ ६६  
 प्रामणीकुल १६६  
 प्रामधान १ ६६  
 प्रामनिवेश ३१ ३  
 प्रामपति ३११५  
 प्रामपनी ३११५  
 प्रामप्रम ३११५  
 प्राममवगुरिका १६६१  
 प्रामयद्ध १६६१  
 प्रामाप्रिकृत ६५६२

प्रामाघ ३२४२  
 प्रामीण १६६२ ६३  
 प्रामीणा १६६२  
 प्रामोवमत १६६२  
 प्राम्य १६६३  
 प्राम्यधम २३६  
 प्राम्यमुगावि ३२३१  
 प्राम्या १६६३  
 प्राबन् २ ६ १६६  
 प्राबभव २ १ ३२५१  
 प्रासमानौदन ६६ ६  
 प्रासीकृत २ ६  
 प्राह २६२ १६६४ २५६२ ३६६  
 प्राहक १६६५  
 प्राहसन्नकयावत २ ५१  
 प्राहाक्ययावोभव २३ ५  
 प्राहि १६६५  
 प्राहित ५६  
 प्रीवा १ ४५ ३६१६  
 प्रम ५२ ५ २ २३  
 प्रीष्मकाल २६५६  
 प्रीष्मालय ५१५४  
 प्रीष्माश ६११२  
 लह ३१ ५

घ

घ १६६६ ६ ६  
 घट ४६४ ११२ ३४ १४१३ ५ १६६  
 ३२१६  
 घटक १ २  
 घटजमन २ २  
 घटन २ २ २ ३ ६२३५  
 घटना २ २ ३  
 घटयित २  
 घटवत २ ६

घटा २ ३  
 घटाबिच्छिन्न २ ११  
 घटिक २ ४  
 घटिका २ १  
 घटिकालवण ६६६  
 घा न् २ ५६  
 घटीघारा ५५६३  
 घटीयन्त्र २ ६  
 घो कश्च २  
 घट्ट १६१ ६२५६  
 घट्टबीविन २  
 घट्टन २ ६  
 घट्टना २ ६  
 घट्टिता २ १  
 घण्ट २ १  
 घण्टक २ ११  
 घण्टा १६६ ४१ ५  
 घण्टाक २ ११  
 घण्टाजाल ६५६  
 घण्टाताड २ १२  
 घण्टापञ्चकित २ १३  
 घण्टापथ ६२२  
 घण्टारव २ १२  
 घण्टारवा २ १३  
 घण्टाली २ १३  
 घण्टावाचनमा २ ५  
 घण्टास्वन २ १४  
 घण्टिका १३५६ २ १४  
 घण्टी ३२६४  
 घण्ट २ १५  
 घन १६५६ २ १६ ४ २५१५ २७३  
 २ ३३४२ ६५५  
 घनद्रव १७६५  
 घनपिङ्गलवण ३ ३२  
 घनरस २ १६

घनाघन २ २  
 घना ला ११३  
 घनोपल २ ११ ७  
 घघर २ २  
 घघरा २ २२  
 घघराख १६६  
 घघरिका २ २३  
 घघरी २ २१  
 घम २ २३  
 घर्माथरश्मिमन्त्र ६११  
 घवण २ २ ३ ४२४५  
 घस्मर १ १  
 घन्न २ २ ३६७  
 घा १६६  
 घाण्टिक २ ६७  
 घात २७ १२६ २ २५ ६३ ३  
 ६ ५  
 घातक २ २ ५ १६ २१ ६६६  
 ६ ४५ ५६  
 घातुक ५६६१  
 घास ४ २  
 घासबस्थल ५६२३  
 घासहारिन् २३६६  
 घासि २ २५  
 घुडिक २ २६  
 घ रिका २५३१  
 घघर ४१३७ ४  
 घक १ ६७ २ २ ४३ १ १६  
 घूर्णा ६६ ६  
 घृणा २ २७ २३११  
 घृणि २ २  
 घृत २ ५ ५ ३ २ २ ५२६१ ६३४६  
 ६ ४१  
 घृतघृण ३५ ३  
 घृतपूपाधि ३३५६

घतप्रकृति २ ६५  
 घतयुक्त २ २  
 घतवत २ २  
 घतवती २ २  
 घतसेक २४५  
 घताची २ २६  
 घुष्टि २ २६  
 घोङ्क २२ २  
 घोटक ३ ६ ५४३ ५२६ ५३  
 ५ ५  
 घोटकगति ३  
 घोटकगम्य ३१ २  
 घोटकृशा ३ २  
 घोटकौघ ५२ १  
 घो गलदेशसमद्भवरोनावत २ १  
 घोडभव ३  
 घोडरोनावतान्तर ६ ६६  
 घोडिका ४६१  
 घोण २ ३  
 घोणा २ ३  
 घोण्टा २ ३१  
 घोर १६३६ २ ३२ ३६४ ११  
 घोरवशन ५३६४  
 घोरवाशित २ ४  
 घोल २ ३३  
 घोष २ ३ २४१६  
 घोषक २ ४१ ३६५  
 घोषयित २ ३६  
 घोषयक्त २ ३६  
 घोषवत २ ३६  
 घोषवती २ ३६  
 घोषसुम १६६४  
 घोषा २ ३५  
 घ्राण १ ६ २ ३६ २  
 घ्राणतपणगध ६४७२

घ्राणा २ ३६  
 घ्रात २ ३६

ढ

ड २ ३

च

च २ ३  
 चक २ ३  
 चकोर २ ३६ ६११  
 चकोराख्यखग २ ७६  
 चकोरा यपक्षिन २५  
 चक्र १५ ३ २ २ २१ २ २६  
 ५ ६ ३२  
 चक्रक ५१३६  
 चक्रधर २ ३  
 चक्रप्रात ३ ५५  
 चक्रमव १ ५५ १ १६ ६ ३  
 चक्रमर्वक ५ ६  
 चक्रयायित २  
 चक्रवत २ ४  
 चक्रवर्तिन् २ ६ १  
 चक्रवर्तिनी २ ४४  
 चक्रवर्ति यारयकस्थावरास्तर २२१२  
 चक्रवाक १२ ६ १५ ३ २ ६४३ ४५  
 चक्रवाकखग २ २  
 चक्रवा २ ५  
 चक्रवाड २ ५  
 चक्रसप्तशीलधा वन्तर ३३  
 चक्राङ्क २ ४६  
 चक्राङ्गी २ ४६  
 चक्राङ्ग २ ४६  
 चक्राङ्गी २ ६  
 चक्रवात ५२ ६ ६६  
 चक्राट २ ४

चक्रिन् ६ ४ २ ४  
 चक्रोक्त ५१ ४  
 चक्रोपात्त ३३ ५  
 चक्रोष्टसप्तककव ५ ६  
 चक्रुरादीत्रिय २६६३  
 चक्षुर्हीन १ १  
 चक्रुर २ ५  
 चक्रकमण २ ५१  
 चक्षुष्य २ ४  
 चक्षुष्या २ ४६  
 चक्रकम २ ५१  
 चक्रकमा २ ५१  
 चक्र २ ५२  
 चक्रक २ ५२ ५३  
 चक्रचल १२२ २ ५३ २११५ २३६  
 ३१ ६ ३२६६  
 चक्रचला २ ५३  
 चक्रचा २ ५४  
 चक्रच्यु २५५  
 चक्रचमय ११  
 चक्रक १ ५७ ११ १ १६२ २२६६  
 ५ ६ ६५२  
 चक्रन २ ६  
 चक्रक ६ ५ ४६५४ ६७२६  
 चक्रकाङ्क्षयधाय ६ २६  
 चक्र ५६२५  
 चक्रवर्षण ६२५  
 चक्रा ४६७  
 चक्राल १ ६ ३ ३ ५  
 चक्राशयारिपारिविक २५ २  
 चक्रिका २५६६ ३३२१  
 चक्रो १६  
 चक्रोपति ६  
 चक्रोश २ ३  
 चक्रोषध २७१२

चतुर २ ५५  
 चतुरङ्ग २ ५७  
 चतुरङ्गि २ ६३  
 चतुरा २ ५५ ५६  
 चतुराढक २  
 चतुरेकाहक्रु ६ १६  
 चतुगुण ६ २६  
 चतुथ २ ५  
 चतुथक ५ ७  
 चतुथवण ६११३  
 चतुर्थी २ ५  
 चतुवश २ ५६  
 चतुवशी २ ५६ ४ ३१  
 चतुर्मासापवास ३१६४  
 चतुलघगण ६६  
 चतुवक्त्र ५ १  
 चतुवग २ ६  
 चतुविशतिरात्र ६२२६  
 चतुहस्त ५ १  
 चतुहस्तप्रमाण ६२ २७  
 चतहस्तप्रमाणक २ ६  
 चतुहस्तमान २ ५  
 चतुष्क २ ६  
 चत पत ६३६  
 चतुष्यथ ५ २ ६४ ३ १२ ५३६३  
 ६१२ ६२३३  
 चतुष्यव २६३ ४ ६६  
 चतुष्यदी २ ६२  
 चतुष्पात २ ६३  
 चतुष्पष्टि २ ६३  
 चतु सध २ ६  
 चतु सामस्तोत्र ३५ ४  
 चतुस्तम २ ६  
 चतुर २ ६५  
 चतुरावनि ३६ ६

अचरी २ ६५  
 अचाल २ ६६  
 अचन १६६६ २ ६ ३ ६५ ३१६३  
 ३३ ३ २५ ४५६६  
 ५१२६ ५६६४ ६ ३३ ७२ ६७६४  
 अचममव ६ ६  
 अचना २ ६६  
 अचनाधि १ २  
 अचनाधि ४  
 अचनी २ ६६  
 अचिर २ ६  
 अचिल २ ६  
 अच १ २ ३ ३३ ५१३ ६ ६ ७  
 ६१ ११६१ १३ १५५४ १६ ५  
 १ ३३ १६ ६ २ ३ ६७ ६  
 २१२६ २२४४ २३२१ ३३ १ ४ ५  
 ६१६२ २४६ ६ २५ ७-६५ २७२  
 ५ २ ५२ २६५२ ३ ५६ ७२ ३१ ५  
 ३२६ ४ ४१ ६ ४३६३ ४५३२  
 ४६ ६ ५१ ५२१ ५३ ५४६१  
 ६ ५५ ६ ५ ७ ६ ६६ ६१ ६ ६१  
 ६२ ६ ६३१३ ६५ ११ ६६१  
 २ २ ६६  
 अचक्र २ १  
 अचक्रला तर ५४  
 अचक्रात ६५ २ २  
 अचक्रिण ६२१  
 अचक्री २ २  
 अचक्रमाग २ ७३  
 अचक्रमाग २ ३ ४  
 अचक्रमागख्यनदी २ ५  
 अचक्रमागी २ ४  
 अचक्रमाली ४४६  
 अचक्रमत् १६  
 अचक्रलजा ६५४

अचक्रवश्यनृपातर २ ७४  
 अचक्रबिम्ब २३५३  
 अचक्रसुत ५१२१  
 अचक्रहास २ ४ २४१२  
 अचक्रा २  
 अचक्रातप २ ५ २३ ५ ६७  
 अचक्रायस १२६  
 अचक्राश्वभिद् ६६  
 अचक्राश्वमव ५२६  
 अचक्रिका १५ १६१४ २ ५  
 अचक्रिप्रिय २ ६  
 अचक्रि १ ६  
 अचक्रोवय २ ६  
 अचल २ ४ ६  
 अचला २  
 अचल २ ७६ २४ ३५ ३७६६  
 अचल २ ६  
 अचक २  
 अचर २ १ ६६  
 अचरमुग १३२४  
 अचस २ १ २ ३५ ५  
 अचसी २ २  
 अचमू २ ३ ३११४ ३ ३६ ३५१५  
 अचमूकी १५१ ३६७५  
 अचम्प २ ३  
 अचम्पक १ २६ १२५३ २६ ६ ३  
 ३४२ ४६५३ ५ ६ ३ ६६६८  
 अचम्पकतव ६ ५  
 अचम्पकत्र १ ६ १२६६  
 अचम्पकत्रम ६ ५५ ६७ ६  
 अचम्पकप्रसव ६६६  
 अचम्पकलज ६५  
 अचम्पा २ ३  
 अचम्पानगरी ४३  
 अचम्पापुरी ३५१४



अय २ २११ ५ ५६ ६५४३  
 अयन २११  
 अयनांतर ३४६१  
 अर २ ४ ३६३३  
 अरक ६३१  
 अरण १६२५ ३२६  
 अरणयासमव ३६ ४  
 अरणबघन ३२६  
 अरणस्खलन ७५६  
 अरणायघ १३  
 अरम ३२३१  
 अराचर २२ १  
 अरित २ ५ ६  
 अरी २ ५  
 अष २ ६  
 अचरी २ ७  
 अचरीक २  
 अर्धा २  
 अर्मा २  
 अर्च ३ १ ६६ २ ६१ २१ ६ २५५३  
 ४६१ ५११४५५  
 अर्मकवा २ ६  
 अर्मकार २ ६  
 अमकारी २ ६  
 अर्मकोश ११२५ २३६  
 अमखण्ड २६ ६  
 अमण्वती २ ६  
 अमपण्यालतामव ५६५७  
 अमपाणि ३ १  
 अमपान १ ६६  
 अमपुट २२६६  
 अर्मपुटक २६ ७  
 अर्मप्रभविनी ५६  
 अमरोगान्तर ४२७६  
 अमवत २ ६२

अमविकार ६१  
 अमवतपेटा २४ १  
 अर्मिन २ ६१  
 अवण २ ६२  
 अवणा २ ६२  
 अवणि २ ६३  
 अवितताम्बूलरस २२  
 अवल १५५ २ ५ ६३ ३ २ ६२६  
 अवलबल ५५६६  
 अवलन २ ६ ६४ ६५ ५१ ५३५  
 ५६३४ ६६११  
 अवलना २ ६५  
 अवल्ली २ ६५  
 अवलावल २ ६३  
 अविक २ ६६  
 अव्य १५२१ १ ३२ २ ६६ २६  
 अव्यगणज ३४५  
 अया २ ६६  
 अव्यक १४६ १४४ २ ६६ ६३३५  
 आक्षुषमनुपुत्र ३४६६  
 आक्षिक २ ६७  
 आङ्गुरिका ३ ६  
 आङ्गुरी २६ १६७ २१४ २५  
 आञ्जय ६४५  
 आठ २ ६७  
 आट २ ६ ६६  
 आटकार २ ६६ २१ २ ४१  
 आटबट ५४१  
 आणक्य ६  
 आण्डाल १७७  
 आण्डालिकौषधि ३७२२  
 आतक २ १ १६६ १७६६ २६४४  
 २ १२ ४२६१ ५२६ ६४ ३  
 आतकपक्षिन् २६२२  
 आतुर २१

चातुरक २१ २  
 चातुरी २१  
 चाविप्रभक्तिक २६६  
 चाब्रभाग २१ ३  
 चाब्रभागा २१ ३  
 चाब्रभागी २१ ३  
 चाब्रभसाधनि २३२४  
 चात्री २१ ४  
 चाप ५ ६१६७ १५५६ ६३  
 २ ६६१ ५ ६४  
 चापकरध्वनि ६५५६  
 चापकार २ ६  
 चापकोर् २  
 चापग्रहण २  
 चापमव १३१४  
 चापमात्र १३१४ १५ ६  
 चापय २ ६  
 चापाकृति ६३  
 चापात्र ६७६ १५ ६  
 चासर २ १ २१ ५ ६ ३६ ६  
 चासरदण्ड ३ ४५  
 चासरपुष्प २१ ६  
 चासीकर २१ ६  
 चास्पय २१ ७  
 चार २१ ४१७५ ५३२७ ६२५  
 ६५ २ ६६१४  
 चारक २१ ६  
 चारटी ४२५  
 चारण २१ ६१ २ ५१२६ ६२४४  
 चारि २११  
 चारित्र ४६ ५५७३  
 चारी २१११  
 चाव १५१२ २१११ ६३ २५६५ ३५६१  
 ४ ६ ६३६४ ६४७२ ६७७  
 चाव नारी ५

चावनायतर ६७१  
 चावनाल २११३  
 चाचिक्थ २ ६५६४  
 चाचिकवशन ३ १  
 चालन २११३ १४  
 चालना २११  
 चालनी २११३  
 चावनामपदयतर ६६५६  
 चावविहङ्ग ३५५  
 चावालयविहङ्ग ३५११  
 चावाङ्गयवग १३५५  
 चिकित्सक ५  
 चिकित्सा ६१ १६३१ १६१ ५६३  
 चिकित्साक्रमसव १२  
 चिकीर्षा ६ १  
 चिकुर २११ १६  
 चिक्कण २ ३६ २११६ ७५  
 चिकर ५६  
 चिकोडाव्यप्राणिमव  
 चिकोडावु २५३६  
 चिञ्चा २ ४ २५  
 चिञ्चाटक १६४३  
 चिञ्चाव्याख्यवृक्ष २४४  
 चिञ्चोदिकाख्याम्बुतण ३  
 चित् २११७  
 चित २११  
 चिता २११  
 चिताङ्ग २१५  
 चिति २११ १  
 चितेघन १७१३  
 चित्त १२ २११६ २४७६ ४१६ ४३६१  
 ६ ५५३३  
 चित्तराग ४१२२  
 चित्तस्थिरधारण २ ६  
 चित्तावसाव ५५ १

चिय २११७ २  
 चित्या २११ २  
 चित्र १ ५ ११५ २१२ २४ ५१२३  
 ६२३  
 चित्रक १३६ २१२५ २६ २६१६ २ ६  
 ३३१३ ३५ ५२३६ ५३११ ६ १६  
 चित्रकण्ठ ३५४  
 चित्रकर ४६२२ ५१२  
 चित्रकाख्यौषधि ३३  
 चित्रकार ४ ७  
 चित्रकामिका २ ६२  
 चित्रकोल २६६५  
 चित्रगच्छक १  
 चित्रगप्त १२६५ २१२  
 चित्रपक्ष २१२  
 चित्रपर्णी २१२  
 चित्रप्रतिकृति २१ ६  
 चित्रफ याख्यम-त्यमव ३  
 चित्रभानु २१२ ४ २  
 चित्ररथ २१२६  
 चित्ररथी ५६ ६  
 चित्रल २१२६  
 चित्रलमग १ २६  
 चित्रला २१२६  
 चित्रवण ५ ४३  
 चित्रवणवृष ५ ३  
 चित्रशरीर २१३  
 चित्रशाला २२ १  
 चित्रशिखण्डिन् ६२६१  
 चित्रा २११२ २२  
 चित्राङ्ग २१३  
 चित्राङ्गद्वीपिन ३३३६  
 चित्रारव ३ ६४  
 चित्रदूट ३६  
 चित्रप ६३७

चित्तन ५६२  
 चित्ता २ ५६३ ६६२२  
 चिपिट २१३१ ३५ २  
 चिरजीविन ५६४ २१३१ २६६२ ५७ ४  
 चिरण्टी २१३२ ६६५२  
 चिरतन ३ ५६  
 चिरमहिन २१३३  
 चिरानयात ६६६  
 चिलमीलिका २१३३  
 चिलिचिम २१३४  
 चिल २१३५  
 चिली २१३५  
 चिल्ल ५ १ १५५ ६ १ २  
 २१३६ २ ४ ३१३२ ३६२६ २ २  
 ४ ६६ १ १३३ ५ ७३ ४६१  
 चीडा ४ ६६  
 चीन २१३६  
 चीनकधाय ५ ६६  
 चीनसागर ३३७  
 चीन २१३६  
 चीर २१  
 चीरिका ६६७ ११२  
 चीरी २१४१  
 चीणपण २१४१  
 चीर्णाविताख्यफलदीरघ ६६  
 चीर्याख्यकी २३४६  
 चीवर २ ६५  
 चुक २१४२ ४३ २६१  
 चुका २१४४  
 चुक्रिका २६ ३ ४  
 चुकी २१ ४  
 चुछबरी ६६  
 चुम्बक ४ ४ २१४४  
 चुम्बन २६१  
 चुम्बनपर २१४४

चलक २१४६  
 चञ्च २१४५  
 चलकी २१४६  
 चुल प २१  
 चुल पा २१४७  
 चल २१  
 चुली १२ ७६ २६५ ४३२ ६७ २१४  
 चलीबिल ३ ७१  
 चलीर २६३  
 चव २१ ६  
 चुचुक २ ६ ३३५२ ३ ५२ ५५६३  
 ५६७ ६५५३  
 च काममात्रक ६ १५  
 चुडा १५ ३ २१५ ३३२६ ५ ६  
 ६१ ६ ३ १५  
 चडाकरण २१ १  
 चडामणि २१५  
 चडाथ १५६६  
 चुडाला २१५१  
 चुत ३ ५ १३ २ ५२ ५६७  
 चुतक २१५१  
 चुतवृक्ष १२ ६  
 चुण २२५ २१५२ ३५६२  
 चुणन १६६  
 चुणलपिन् १ २५  
 चुर्णि २१५३  
 चणित ३६६  
 चर्णी २१५२  
 चुलि २१५३  
 चुलिक २१५४  
 चुलिका २१५४  
 चुलिकी २१५४  
 चव २१५५  
 चवण २१५५  
 चषा २१५५

चटी ६६ ७  
 चत् २१५६  
 चतन २१५६  
 चतना २१५६ ५ २ ६२६१  
 चतस् ६ २ ६६ ५ २  
 चल २१५  
 चष्टा ५ १६३२ २१५ ३६६२  
 चेष्टास्तर ६६६  
 चष्टित २१५  
 चय २१५  
 चत्र १२ ५ २१५६ ५२  
 चत्रपूर्णा ११५५  
 चत्रमास १  
 चत्ररथ २१६२  
 चत्री २१६  
 चछ २१६३  
 चोक्ष २१६३  
 चोच २१६  
 चोचाख्यौषधि ५ ६  
 चोटिकाद्वय ४५४१  
 चोड २१६४  
 चोवना २१६५  
 चोवनी २१६५  
 चोवनीय २१६६  
 चोछ २१६६  
 चोर २६४४ ४ २ ३ ६५७१ ७४  
 ६६३ ६ ३४  
 चोरपुष्पीस्तम्भ १५७३  
 चोल २१६ ६ ३ ५६  
 चोलक ६ ३  
 चोलकी २१६६  
 चोलि ५२६  
 चौर ४ ११७ १ ६६ १ ५ ४  
 २ ७ ६ २३५ २६१५ २ ३  
 ४२६ ४ ५२ ४७१६ ६५७१ ६६६४

चौरपुष्पी ५ २५  
 चौरिक २१  
 चौरिका २१  
 चौय १६१ २ ४१५ ६५ २  
 चौर्या कि ६ ५  
 चौल २१ १  
 चौलगुड १५६१  
 चवन २१ १ २१७२  
 च्युत ६६३५  
 च्युतग्रह २१ २  
 च्युतावान २१ २  
 च्युति २१ ३  
 च्यप २१ २  
 चोतति २१ २

छ

छ २१७३  
 छगण २१७  
 छगन २१  
 छगल २१७५ ३२३ ४ ३  
 छगला-याक्यमण ५५ ६  
 छगली २१७५  
 छटा ३३२  
 छत्र ३३ १७५ १ १६४७ २१ ६  
 ३६ ५२३  
 छत्रधार २१६  
 छत्रभङ्ग २१७७  
 छत्रान्तालम्बिवासस् २३ २  
 छत्रा ३  
 छत्राक २१७७ ५२१ ६४३६  
 छत्राकी २१७७  
 छत्वर २१७  
 छद् २१७६  
 छवन २१  
 छविस् २१

छयान २१ १ ५  
 छयाविप्र ६५  
 छदना ६  
 छद सम्बन्धित २१  
 छदस् १ ६ २१ १ २ २२ ३६११  
 ५५ ३  
 छदोत्तर ६ ३४ २ ३५२१  
 छदोमिद ६ ६६ १ ७४  
 छदोमव २२ २२६३ ६ ६६५ ३  
 ६ २  
 छदोविशेष २ ३६ ३ ६ ६५७५  
 छद वस्तविशेष ३६६६  
 छल ३६६ ५ २११७ ३ ४ ६२  
 छवन ३६ २१ ३ ५ ५  
 छवना २१  
 छवनी २१ ४  
 छल २१ ५ ४४ ४  
 छलयक्त १ ४  
 छली २१ ५  
 छवि २१ ६  
 छा २१ ३  
 छाग २ २ १ १५७ २१ ७ ३२६१  
 ३ ६ ५११७ ३ ५३ ५ ६५६१  
 छागण २१  
 छागयोषित २१४७  
 छागलकपावप ६१६  
 छागी १ ७३ २१२६ ६७७७  
 छात्र २१ ७ ६  
 छात्रवधवार १२७१  
 छात्राविषय ३३१  
 छात्रालय ५१२  
 छावन २१ ३ २४५ ५२ ४ ६५६४  
 छावित २१ ३ ३५३४ ३६२ ६२२३  
 छावित २१  
 छाद्योगकीर्तितमस्तुपुर १६६

छाद्योग्यमधकृत ३ २५

छाया २१ ६ ४५ ३

छायाकर २१६

छिगुर २१ ६

छित २१६१

छित्तिकृति २१६६

छिन्न ६ ५२

छिवर २१६१

छिविर २१६२

छिवुर २१६२

छिन्न १६६५ २१६३ ३ ६ २४  
६ ४

छिन्नमान २५६

छिन्नयवत् ६१११

छिन्नविधान २ ६

छिन्नित २१६३

छिन्न १५३१ २१६ ४ ६ ५१४५

छिन्नपुच्छपशु ५ ६

छिन्नवस्त्र २१४

छिन्ना २१६३

छिल्लिकौषधि ६६

छरिका १५ १ १७ २३ ६ ३१२१  
६ ३ ५ १

छरिकाफल ३१५४

छरित २१६४

छप २१६

छक २१६५

छत्त २१६१ ४ ६४

छेव १२ १ ११ २५६३ ४ ६  
५६६२

छदक २१६२

छवन ११५२ १२ ६ २१६१ ६५ ४६१६

५१३६ ५ ६३

छवनग्रन्थ १३५१

छवना २१६६

छवयतिकृति २१६६

ज

ज २१६७

जकुट २१६६

जगत २१६६ ३६६ ५

जगती २१६६

जगन्नाथ ६२१६

जगन्नाथक्षेत्र ३ ४६ ४

जगल २२ १

जधि २

जघन २२ २

जघनस्थ २२ ३

जघनफला २२ ३

जघन्य २२ ३

जघन्यज २२ ४

जङ्गल ६४३ २५२१ ३१६२ ६५ ३

जङ्गल २२ ५

जङ्गल २२ ५

जङ्गल २२५६ ५३३

जङ्गलपञ्चाङ्गाग ६६ १

जङ्गलपिण्ड ३३ १

जङ्गलमन् ५ ६

जङ्गलसमाङ्ग ३ ३

जटा १ ५६ २२ ६ २४ ७ ४३३३  
६२६२

जटाय २२

जटावत २२ ६

जटिन् २२ ७

जटिल २२ ६

जटिला २२

जटी २२ ६

जठर ३ ६ ६ २२ ६ ४२६३

जठररेखा ५१ ७

जठराग्नि ५५६३

जठरावयव ३ ४६

जङ ६ १६४६ २२१ ५ ६५५  
 ६६ २  
 जङकन्या ३३  
 जङा २२१  
 जङात्मन् २२५३  
 जङाभिप्रायक २२५  
 जङीभाव ६५६१  
 जतु १३११  
 जतुका २२१२  
 जतुका २२११ ५२६२  
 जतुकाह्ला ५३५१  
 जतुकुल्ली २२२  
 जतुकुत्सवल्ली ४६२  
 जतुफला २२१२  
 जङ २२१३  
 जन १ ४ १३५६ १५४७ १६६ २२  
 १३ १६ ३६२५ ४६ ६ ५१६ ६१  
 ६७ २  
 जनक २२१५ २४ २ १७ ५ ५६ ६५२६  
 जनकय २२१५  
 जनता २२१३  
 जनन २२१३ १६ ३७२७ ३६  
 जननी २१६ ६ ५ ४६ ६६ २ ३ २६२१  
 ३ ३४ ५६३६ ६५  
 जनपव १ ६ २२१६  
 जनप्रिय ४६  
 जनमारी ४१६६  
 जनमजयपनी १३४  
 जनयित्री २२१  
 जनस्थान ३१७  
 जनातर ६ ६  
 जनार्दन २१६७  
 जनि २२१७ ६१  
 जनि ३ १६ ६४६६  
 जनितव्य २२२२

जमित २२२३  
 जनित्य २२१  
 जनित २२१  
 जनित्री २२१  
 जनिमन २२१६  
 जनी २२१६ २५५१  
 जतु ६ ५६ २१ ४ २२२ २५ ६७  
 ३६११ ३६६२ ४ २ ४१६६ ६२६६  
 जतुफल ७५१  
 जतुरथ २२२१  
 जतुसम्बन्धमव ६५ ६  
 जवङ्ग २६२३  
 जमकारण ३६६२  
 जमव २२१५ १  
 जमन १५ २१६७ २२१६ १७ २२ ६२  
 २ ६ ३६६ ६३ ६२२६ ६४६६  
 जन्मपर्वन् ५ २  
 जन्म २४७  
 जन्मातर १२  
 जय २२२२ २  
 जया २२२४  
 जय २२२५  
 जय २२२६  
 जयकृत २२६६  
 जपा २२२६  
 जपाकुसुम २२२६  
 जपापुष्प २२२६  
 जप्र २२२७  
 जम्बाल २२२७  
 जम्बीर १ ५३ २२२ २५ ३ ४७२  
 ४ ५ २७ ५२३६ ४२  
 जम्बीरतव २२३२  
 जम्बीरप्रसव २२३६  
 जम्बीरफल १ ५३  
 जम्बीरवृक्ष २२३६

जम्ब २२२ २६

जम्बुक ६ २ २२२६ ३ १४ ४ ७४  
४६ ५ ३२ ५६७२

जम्बुकातर ३

जम्बुपादप ५ ५

जम्ब २२२६ ३ २ ६२

जम्बक २२३

जम्बुकवम्ब ३ ५

जम्बू पादप ४ ६६

जम्बूटवक्ष २२२६

जम्बूद्वीप १ ५

जम्बुभिद ६६ ५

जम्बूल २२३१

जम्बुविटप २२३१

जम्बुतर ६४

जम्ब २२३१

जम्बल २२३३ ५

ज मल्लु २२२

जम्भा २२३२

जय २ २२३ ५३६६

जयव्रथ ६५२२

जयन २२३५ २३२

जयत २२३४ ३५

जयती २२३६ ४३५५

जयशील २२ ६ २३२

जयहस्तिन् ११२

जया २२३६ ६ २६

जयिन् २२ ४

जरठ २२३६

जरत २२

जरा १६ ७१ ४ ४

जराप्रस्त २२४३

जराट ३३ २

जरानिष्ठा ३२३६

जरायु २ २२४

जराशीक य ३२२

जराशीक यवत ३२२

जराश्लयचमन ३ ५

जकथ २२४१

जरोति क्षत २६

जजर २२ १

जजरी २२४३

जण २२ ३

जण २२४४

जत २२

जतिल २२ ५

जल २ १ ५ २ ३१६ ३ ५३३

३ ६२ १ ११ ११५ १२५

१३ २ १ ६३ १५६ १६५ ६

१ ५६७ २ ६ २२ ५ ६ २

३१६६ ३२५६ ३३१४ २ ३४६३

३५५५ ३६ ४ २२ ५ ४२ ६१

४४ २ ६२६५ ५ ७७३ ५ २४

५२१५ ५३३५ ५ ६६ ५ १ ५ २

१२ २ ५६३ ६ २ ६१ ३

६२ ६६५ ५ ६३ ६६ ६४७१

६५१ ६६ ६६ ६ ४१-८

जलकपि ५२ ६ ६

जलकरजू २२ ६

जलकाक ४१४

जलकुञ्जक ३ ७६

जलकपी २२

जलखगातर ३४१३

जलखातक ३ ६

जलगाम ३१ ६

जलगाम २२४७

जलधवर २२४ ५

जलध २२

जलजन्तु ३ ६३ ६ ६६

जलतापिक २२४



जलद १ ६६ २२ ६ २ १३ ४४ १  
 जलदध्वनि ३१ २  
 जलदा २२४६  
 जलदावलि ६१  
 जलदुग ५ २  
 जलद्रोणी ३ ५ ५  
 जलधान १ ५२  
 जलनिगम ५५१५  
 जलनिगमद्वार ६६३  
 जलनिर्याण ५३ ४  
 जलधरपानी ५५६७  
 जलपाक्षित १ ६५  
 जलपात्र ६  
 जलपूर ३  
 जलप्रिय २२ ६  
 जलबिम्ब २३५५  
 जलबिंब २२५  
 जलरञ्जकपत्र ६६  
 जलवण्ड २२५  
 जललता २२४६  
 जलवायस ३३२  
 जलविद्यालक ५२ १  
 जलवतस २६१  
 जलशक्ति ५ ५३  
 जलस मव २२  
 जलसूचि २२५१  
 जलस्थान ६ २ ७६  
 जलस्रुति ५६३६  
 जलस्रोतस् ६२६  
 जलञ्जल २२५२  
 जलाटन २२५२  
 जलाटनी २२५२  
 जलात्मन् २२५३  
 जलाधार २२५३  
 जलाधारविशव २३६४

जलाधारातर ७२६ २ १३  
 जलाप्लव ५ ६  
 जलावगाहभाग २ ६२  
 जलावट ५१३५  
 जलावत् २ २२  
 जलावत्तपयोरेण २२५  
 जलाशय १ २ २२५३ ३३६ ३५  
 जलाशयमिद २ ६१  
 जलाशयप्रात २३६३  
 जलाशय ४५७  
 जलश २२५  
 जलोच्छवास ३१६२ ५४१४  
 जलोवर ५१११  
 जलोवगम ७१  
 जलोद्भव २४ ७  
 जलोद्भवशाकलतातर २६३७  
 जलोका ६ ६६२ ६२५ ११६१ २२५१  
 ५२ ४६ ५ ५  
 जलोकाभिद् ३ १२  
 जलपक १ ३६  
 जल १ ५६ २१६ २२५५ २३१३ ४५ ४  
 ५६७ ५६३  
 जलन ५१ २२५५ २३१६  
 जल २२५५ ३३३  
 जलाग्रज २ ५  
 जलिन २२५६ ५६६  
 जलिवानिन् ६१६  
 जलसुरि २२५  
 जलक २२५  
 जलनु २२५  
 जल २१६  
 जलगूति २२५  
 जलघनी २२५६  
 जलङ्ग २२६  
 जलङ्गली २२६

जात २२ २१६ २२६१ ३ ३५ ३६

४ ६१ ५ ६१

जातवश २५६२

जातपन्न ३१२३

जातरूप २२६१

जाति ४ १ २२६२ ५ ६१

जातिकोश १६

जातिफल १६ ३ ५६ २

जातिभेद ३१ ४

जातीफल २२६२ ३

३ २ ४ ३६

जातु २२६

जाय २२६

जानकी ३३ १ ५६१

जानपद २२१६

जान १५१५ २२६५

जानकपरकास्थि

जापक १३ १ २२६६

जाबाल २२६६

जामातु २२६७ ५ ६६ ५ ४

जामि २२६

जाम्बवत १ १ २२६६

जाम्बवती २२६६

जायति २२१

जायाजनक ६१६

जायानजीविन् २२७

जायु २२७

जार २२ १ ६६१२

जारवगव २२७३ ७४

जारी २२ २

जाल १ २ २२ ४ ६ २ ६५२२

जालक १ ४ २२७६

जालपाव २२ ६

जालवत् २२ १

जालिक २ २२

जालिका २२

जानि २२ १

जालिनीफल २२६

जालिन् २२ १

जाली २२ ६

जालोपजीविन २२

जाम २२ २ २ ३ ५६३२

जाहक २२ २

जाहव २२ ३

जाल्वी २२ ३

जि २२ ४

जिगलु २२ ४

जिगीषा २२ ५

जिघासु २२ ५

जिह्वी २२ ६

जिज्ञासा १ ६

जित २२

जिति २२३

जितेन्द्रिय ५२६ ५४३४

जिया २२

जियर २२ ६६

जिवरी २२ ६

जिन १२ ३ २२ ६ २३६२ ५२१६

५४३३ ५५ २ ५६६६

जिनपत्रा २२११

जिनहीन ३

जिनातर ६

जिप्र २२६

जिप्री २२६

जिष्णु २२६

जिह्वा २२६१

जिह्वाग २२६२

जिह्वा २२६२ २६ ६ ३१४५ ४६६५

४ ३६ ४६२६ ५२५५ ६५

जिह्वाप २२६३

જિહ્વામલ ૩૫૧  
 જિહ્વાલ ૨૨૬૩  
 જીમૂત ૨૨૬ ૨૬૬૫  
 જીર ૨૨૬ ૨૬૫૬ ૪ ૬૬  
 જીરક ૬૨૨ ૧ ૩ ૨૨૩૬ ૨૬૫૨  
 ૫૨૪૪ ૬ ૨૫  
 જીરકજીવક ૩૩૭  
 જીળ ૬ ૨ ૨૨ ૬ ૨ ૫૫  
 જીળક ૨૨૪૩  
 જીર્ણત્વ ૨૩૨૬  
 જીળમાય ૫૫ ૭  
 જીળવસ્ત્ર ૩ ૬૧  
 જીલ ૨૨૬૬  
 જીવજીવકપક્ષિન ૫૫૩  
 જીવ ૫૧૩ ૨૨૬ ૨૩ ૬ ૩ ૨ ૬  
 ૧ ૫૨૫૩ ૬૫  
 જીવક ૨૨૬  
 જીવકદ્રુમ ૧૩૨ ૩ ૫૬  
 જીવકપાવપ ૨૬૬૧  
 જીવકાશ્લયમયજ ૪૧૫ ૬૧૨૩  
 જીવછત્તુ ૨૩ ૨  
 જીવહાતુ ૨૩ ૨  
 જીવથ ૨૩ ૧  
 જીવઘ ૨૩ ૨  
 જીવધનામિહયગોમહિષ્યાવિવસ્તુ ૩૨૬  
 જીવન્ ૨૩ ૧  
 જીવન ૨૩ ૩  
 જીવના ૨૩  
 જીવની ૨૩ ૩  
 જીવનીયા ૨૩ ૪  
 જીવનોવઘ ૨૩ ૬  
 જીવત ૨૩ ૫  
 જીવતિકા ૧૪૬  
 જીવત્સી ૨૨૬૭ ૨૩ ૪ ૬ ૪ ૬૭ ૪૬૧૨  
 ૫૬૨૨

જીવ-નીતજ્ઞકશાક ૫ ૬  
 જીવ-યા યલતાતર ૩  
 જીવ-યાઘ્યશાક ૪૧૫૧  
 જીવબોધન ૨૩  
 જીવબોધની ૨૩  
 જીવલ ૨૩  
 જીવલા ૨૩  
 જીવશાક ૩૬૬ ૪  
 જીવા ૨૨૬  
 જીવાતુ ૨૩ ૬ ૩ ૨૩ ૫ ૪૩  
 જીવામન ૨૬ ૫૬૫૨ ૫૩  
 જીવાસનશાક ૨૩ ૬  
 જીવિ ૨૨૬૫  
 જીવિકા ૫ ૩ ૨૩ ૩ ૫૧૩૩  
 જીવિત ૪૫૧ ૫૬૩ ૨૩૧ ૫ ૬૧  
 જીવિતકાલ ૫૬૪  
 જીવિત-ય ૨૩ ૫  
 જીવિત ૨૩ ૬  
 જીવિતશ ૨૩૧૧  
 જુગુપ્સા ૨ ૨૭ ૨૩૧૧  
 જુક્ષિત ૨૩૧૨  
 જુર ૨૩૧૩  
 જઘ્ઠ ૨૩૧૩  
 જુહ્વરાણ ૨૩૧૪  
 જુહ્ઠ ૨૩૧૫  
 જૂ ૨૩૧૫  
 જઠ ૨૩૧૬  
 જૂળ ૨૩૧  
 જૂર્ણ ૨૩૧૭  
 જૂર્ણિ ૨૩૧  
 જુ મળ ૨૩૧૬ ૫૪ ૧  
 જુ મિત ૨૩૧૬  
 જતુ ૨૧૬ ૨૨૩૫  
 જઞ્ઞ ૨૩૨  
 જનવીવર ૫૬૧૫

जनतीय २ ३  
 जनतीयक्षरातर ३३ ५  
 जनोपासक ६१६५  
 जवातक २३२१  
 जोङ्गक ३१ ६ ५ ३६ ६  
 जोताल २३२२  
 जोताला २३२३  
 जोष २३२३ २  
 ज २३२  
 ज्ञात ११ १२ ३६६५ ५४१६  
 ज्ञाति १ १ २३२५ ३ २६ ३ ६२  
 ५६३ ६६३ ६ ५  
 ज्ञातु २११ २३२ २६ ३ ५  
 ३ ६६ ५ १२ ३  
 ज्ञान २३६५१ २६ ५ ५ ६ ३  
 १५६ २११ १६ २६ ३ ६१ ६२  
 ३६ ५ १ ३६३१ १२३  
 ४३५६ ५५ ५३६ ५ २ १२ १३  
 ५६५३ ५६ ६२२१ २२  
 ज्ञानकाय ५६६१  
 ज्ञानभद २ २  
 ज्ञानयुक्त २३२५  
 ज्ञानवृद्ध ६३  
 ज्ञानात्मन २६३५  
 ज्ञानिन २३२५  
 ज्ञापन ३६ ६ ३  
 ज्ञायमान ४१२३  
 ज्याटङ्कार ५ ६२  
 ज्यानि २३२६  
 ज्यायस २३२  
 ज्यायसी ४२  
 ज्याशब् २३२६  
 -यष्ठ २३२७  
 यष्ठभगिनी १७६  
 यष्ठभ्रातृ ३६६२  
 ३६

ज्येष्ठमास ६१  
 यष्ठस्वस्तु ६६ २६ ३६६ १  
 यष्ठा ६ ६६ २३२ २६  
 ज्यष्ठ २३३  
 ज्यष्ठी २३३  
 योसिस ६ ३ २३३१ २५ ५ २६  
 २ ३५ ३२६ ६६६६  
 ज्योतिर्विद् ५ ११  
 योतिर्विज्ञ ६३ ३  
 योतिष २३३ ६१ २  
 -योतिषाम्पति २३३३  
 -योतिषिक ५१५४  
 योतिष्मत् २३३३  
 योतिष्मती ६ ४ ६ २३ ७ ३३  
 २५ ३ २  
 ज्योतिष्मत्पोषधि १३  
 -योतिससम्बन्धिन् २३३५  
 योस्ना २३३५  
 योस्नावत २३३६  
 ज्योत्स्नी ६६१६  
 ज्योतिषिक ६३ २  
 योत्स्न २३३६  
 योत्स्नी २३३६  
 ज्वर २१ २३१ ३ ६  
 ज्वर न २३३  
 -ज्वरभद ६६ १  
 ज्वलपौदष २५ ६  
 ज्वलन २३३ २२ ६१३ ६६६६,  
 ६  
 ज्वलना २३३  
 -ज्वलित २३३ २६५५  
 ज्वलिन ६१२२  
 -ज्वला ३३६ २ २७ ६२ २५५६  
 ज्वालामिद् ६ ३

झ

झ २३३६  
 झञ्झावात ३ ६  
 झ २३  
 झटित् २३४  
 झण्टीश २३३६  
 झर २३  
 झरण २३४  
 झरा २३४  
 झरी २३  
 झझर २३४१  
 झला २३४२  
 झलरी २३४२  
 झलिका २३ ३  
 झव २३ ३ ३ ४६ ४  
 झवा २३  
 झवातर १२६  
 झा ४३ ३  
 झाटाकृति ११  
 झाण्ट २३४४  
 झावुक ३३२  
 झिञ्जरिष्ट ५५ ४  
 झिण्टी २३४५  
 झिलिका २३४५  
 झिली २१४१ २३४६  
 झियाप्यकीटक ४१

ञ

ञ २३ ६

ट

ट २३४  
 टङ्क १३४६ १ २२६५ २३४ ६२  
 ६ ५७  
 टङ्कण २३४ ३१५६ ४२५ ४६२१  
 ४६३१

टङ्कणक्षार २३५१ ५ २

टङ्कन ६६  
 टङ्कार २३५  
 ट्टर २३ १  
 ट्टरी २३५  
 टागर २३५१  
 टार २३५२  
 टिट्टिम ६२ ५ ६ २  
 टीका ५२२  
 ण्टक १२  
 ण्टकपादप ( ण्टकपाप ) २१२६  
 ढण्टग्र ६६५  
 ण्टग्रम २ ५  
 ण्टवसा ६ ६२  
 ण्टक २३५२  
 ण्टवसा ३६६ १२२ ६१३

ठ

ठ २३५३

ड

ड २३५४  
 डमर ६५ ५  
 डा २३५  
 डाकिनी ६ २३५ ४६  
 डाकिनीमिव ५ ६५  
 डिङ्गर २३५४  
 डिङ्गम ३१  
 डिम्ब ६ १ २३५५ ६५  
 डिम्बिका १ २५ २३५५  
 डिम्भ २३५५  
 डोडीसप्तकशाक ५ ६

ढ

ढ २३५६  
 ढक्का २३५६

ण

ण २३५

ण्यतसमह्याय ६३१६

त

त २३५

तक्कोल १५६६ ३६१ ५ ६

तक्कोलक १६ ३

तक्क ३२३ २६ ६३ ६६२ ६५ १ २

११४३ २४ ३ २ ३१५६ ५ ३

तक्कशाक १ १

तक्क २३५६ २ ४

तक्कन २३५६ २५५६ ६४ ६४६५

६५

तक्कितु २३५६

तगर १३६५ १४ ३ २३६१ २ ६

३३ ३ ५ ६६ ६ ३

तगरपादी १४ ३

तगर प्रसव २ ६

तगरमल ४६५६

तगरवृक्ष १ ६ २२६१

तगराख्यपु पगु-म २ ६

तङ्क २३६२

तङ्क (आरुण) धोटक ५

तट २३६२ ५ ५६

तटतिघातु २३६३

तटाक १५१ ६३

तटाककार ४

तटि २३६३

तटी २३६२

तडाग २३६

तडित १६६६ २ ५३ ६ ५ २२

५ ३ ३६ ६ ६५

तडिवमव ५ ३

तण्डक २३६४

तण्डल १६ २३६५ ५६ ६५६३

तण्डलकण १ ६६ ११३

तण्डला २३६६

तण्डलायाख्यामयज १६६२

तण्डलावयव १ २

तण्डलीय २३६६ २

तण्डलोदक २३६

तण्डवीण २३६

तण्ड २३६

तत २३६ ३२२३ ५५१६

तत्पर ३२

तत्परिमाण २ १

तत्त १

तत्सवनानुप्रथमकवचन ६३

तत्त २ २३६६

तत्तवधि ३१ ६

तथागत ६ ५

तथ्य ६२६६

तवय २ ५

तवय ६६२३

तद्धिहीन २ ५

तनय ६ ११६३ २२१६ ३ २६

तनु ३३ ३ ११ १२६३ १५

२३ १

तनव्राण ५१ ६

तनुपश्चावश ३५ ३

तनुचह ६२२

तनुस २३६२

तनुकृत ५

तनूनपात २३ ३

तनुकह २३ ३

तनु १६ २१३६ २३ ३ ३ ६२ ६

६४६ ६६२

तनुपटसथात ६६३१

तनुवाय २३७६ ६३५६

ततवायक ४६ ६  
 तन्नुवायव्रण्य १५४३  
 तनुवायपरिच्छद २३  
 तन्नुवायोपकरणातर २४  
 तनुसतान ३ १५ ६६३  
 तन्न ७२१ २३  
 तन्नक २३  
 तन्नधारिणी ६६  
 तन्निका २३  
 तन्नी २३ ६  
 तन्नीस्वर २६ ४  
 तन्ना ५  
 तन्नित ४४ १  
 तन्मात्र १६६६  
 तप २३  
 तपन २३ १  
 तपनीय २३ २  
 तपस् २ २६ ३६३१ २३ २  
 तपस २३  
 तपस्य २३  
 तपस्या २३  
 तपस्विन २३ ५  
 तपस्विनी २३ ५  
 तपोधन २३ ६  
 तपोधना २३ ६  
 तप्त १५ २४१६ ३५  
 तप्तव्य २३ २  
 तप्तु ७१५ २३ ६  
 तप्तु १ ५३ २३ ३६ ५ ७  
 ५६३३  
 तप्तसा २३  
 तप्ता ११७५  
 तप्ता १४१३  
 तप्ता १३२ १ ६३ २१७६ २३ ६  
 तप्ता २४२१

तमालपत्र २३ ६  
 तमिल २३६  
 तमिला २३६  
 तमी २५६२  
 तमोपह २३६२  
 तमोनत २३६१  
 तमोनव २३६१  
 तमोमात्र २३६  
 तमोमोहप्रथि ४ ६  
 तमोयुक्त २ २२  
 तर २३६२  
 तर ४ ५ ५६३१  
 तरङ्ग १ ३६३ ५६ २  
 तरङ्गिणी २३६३ ५२ ६  
 तरण २३५ ६२ ३ २ २१ ३२७  
 तरणि २३६३ ६३  
 तरण्ड २३६५  
 तरत् २३६६  
 तरन्न २३६६  
 तरत्त २३६  
 तरल २३६ २७३  
 तरला २३६  
 तरवारि २३६६ ४५५३  
 तरस् २३६६  
 तरस्विन २४  
 तरि १ १५ २४  
 तरी २३६३ ३ ५६  
 तरीत् २३६७ २४३ २६३६  
 तरीष २४ १  
 तद २६ २ ५५ ६३ ४३४ ६ १२  
 ६४११  
 तदगिर्याविकल्पमद ४२ ४  
 तदछव २६ ५ ३१६६  
 तदण २४ २  
 तदण १ ३४ २४ २ २६२६ ४२४२

तापि २ २  
 तापिच्छ १२४ २३ ६ २ २१  
 तापिष्ण २३ ६  
 तापी २४२१  
 ताप्य २३६६  
 तामरस २४२२  
 तामलकी ५५ ६ ६६  
 तामस २ २२  
 तामसी २ २३  
 ताम्बूल २४२३ ५५३  
 ताम्बूलाधिकवेष्टन ५५३  
 ताम्बूलिन २४२  
 ताम्र ३२७ ३३ ५२ ६३ १ ३ ६  
 १२६३ २ २२ २५ ३२२६ १३  
 ५१३ ६२६ ४६३३ ५१ ५२३  
 ५६३३ ६१  
 ताम्रकलश १३५६  
 ताम्रकुम्भ ३५ ३६१६  
 ताम्रघट ११  
 ताम्रघटी ३४ ४  
 ताम्रघट २४२६  
 ताम्रवशक २७  
 ताम्रमव ४६३३  
 ताम्रमूला ४२२१  
 ताम्रमग ६ ६  
 ताम्रवणचवन ६७ ७  
 ताम्रवत २ २६  
 ताम्रसज्जलोह ४५१४  
 ताम्रसार १६६६ ३३  
 ताम्रा २ २५  
 ताम्रादिफलक ३७६६  
 तार २४२७ ६ ३  
 तारक ३२७७ ७६ ४ ३  
 तारका २४२६ ४३४६  
 तारकासार २ ३४ ५

तारण २ २ ३१  
 तारणी २ ३१  
 तारयित २ ३ २६३६ ३२  
 तारशव ३६३१  
 तारा २३३१ २ २७ ३१  
 तारावेवी १३  
 तारामयाध्यत ६ ६  
 तारिका २४३  
 तारुण्य ४५६  
 तारुण्य २४३२ २५ ५ ६६ २६११ ५ १  
 तारुण्यजननी ५४३२  
 तारुण्यशालक ६१३  
 ताण २४३७  
 ताल २ ३५ ६६ २६१ ६ ६५  
 तालक २ ३ ३३२२  
 तालकाण्ड ३३  
 तालद्रु २ ४५  
 तालपर्णी १ ६६  
 तालपत्री २ ३६  
 तालपलव ३ १६  
 तालसज्जतफल २७  
 तालमव ६६ १ २  
 तालमूली २६ ५ ४४३३ ३  
 तालवृक्ष ३ ५  
 तालाख्यद्रुम २४  
 तालाङ्कुर ५ ५  
 तालावितुण्ड २५५४  
 तालित २४  
 ताली २४३६  
 तालीद्रम ३ २ ५ ६२  
 तालीपाषप २४१५ २६ ६  
 तालीवृक्ष ३१२३  
 तालीश २ ४  
 तालीशपत्र २४४  
 ताल ११२



तालव्यभाग ३  
 तावत २ १  
 ताविष २४ २  
 ताविषी २४४२  
 तिव २ ३  
 तिक्तकनामविलिजाति ३ ६६  
 तिक्तकोशातकी १६ ५ ५  
 तिक्ततुम्बी ३२  
 तिक्तपवन् २ ४  
 तिक्तशाक २ ४५ ५  
 तिक्ता २ ४५  
 तिक्तावि ६५  
 तिक्तालाबू ६ २ ६ ६  
 तिग्म २ ६  
 तिङ्ग २ ६  
 तिङ्गित ६  
 तिङ्गिभक्त्याद्यत्रितय ३६ १  
 तित्त २११३ ३ ६६ ३२४६  
 तित्तिर २४४६ ५१  
 तित्तिरि ६ ५  
 तित्तिरिपलिन ३५  
 तिथि ६२  
 तिथिभिद् २२३६  
 तिथ्यथ ५१२  
 तिनिश ६ ६ ६  
 तिनिशवृक्ष ३ ५४  
 तिनिशाख्यद्रुम ६६११  
 तित्तिडी २६२६ ६ ६६  
 तित्तिडीक ३ ६ २४४  
 तित्तिडीका ३ ६ २  
 तित्तिडीकाफल ६ ६६  
 तित्तिणीफल ३३  
 तित्तिनीक ४ १  
 तित्तिण २४४  
 तित्तिणी २४४  
 तित्तिणीक १ ६

तिडुक १३२  
 तिडुकीवक्ष २ ५  
 तिषावित्तिकभव ३ ६६  
 तिमिर १ १ २ ४  
 तिमिरा २ ६  
 तिरस २४४६  
 तिरस्करण २ ५  
 तिरस्करणी २ ५  
 तिरस्कार ६२६ २४५१ २६ ५ ३१६४  
 तिरस्कृति ५  
 तिरीढ २ ५१  
 तिरीढी २ ५२  
 तिरोधान २  
 तिरोभत २ ६  
 तियग्गामिन् २ ५३  
 तिय छङ्ग ६  
 तिर्यच् २ ५२ ५ २  
 तियगथ २४ ६  
 तिल ६६४ १ ३ १ ६२ २१५४ २२  
 ६ ५ ६ २  
 तिलक २१२ ११ २ ६ २१२६  
 २३ ६ २ ५३ २ ५ ३४११ १५  
 ५ ५  
 तिलकद्रुम १६  
 तिलक क ३३  
 तिलकाख्यद्रुम १५  
 तिलकाख्यवृक्ष ६१७१  
 तिलकालकसनाकशुद्रतिल २४५  
 तिलचूण ३ ५३ ३२१  
 तिलपिठजक २५  
 तिलपुष्प ६  
 तिलपुष्पक ६ २  
 तिलमण्ड १ ५  
 तिलसाधु २ ५६  
 तिलस्नह २५ ६

तिलहित २ ५६  
 तिलिस २ ५५  
 तिय २४५६  
 तिष्ठतिष्ठति ६५६६  
 तिष्य २४५६  
 तिष्यश्रुता ३५३३  
 तिष्यनभक्षयुक्तकाल ३५३१  
 तिष्यपत्नी ५६५  
 तिष्ययक्तकालभव ३५३१  
 तिष्यसिद्ध्याविनामविश्रुत ३५३१  
 तिष्या २४५  
 तीक्ष्ण २ ५ ६ ३ ६ ४५६ ५६१  
 तीक्ष्णतेजस २ ६  
 तीक्ष्णमाङ्गी ५१३६  
 तीक्ष्णा २ ५६  
 तीक्ष्णाग्र ६ १६  
 तीक्ष्णाजक १६ ६  
 तीर १५१ २३६२ २ ६ २५३६ २६२६  
 ४२३३ ६  
 तीरनीत २४६१  
 तीरयुग ३२ ६  
 तीरित २४६१  
 तीरिन् २ ६  
 तीरीकृत २४६१  
 तीवर २४६  
 तीव ३६ १६ २ १६५६ २४६२ २ १२  
 ३३६ ४३११  
 तीर्थभव ३५ ५ ३६६  
 तीर्थराज ३ ३  
 तीक्ष्ण ११ २४६५  
 तीक्ष्णवेदना १२६६ ६३ ५  
 तीक्षा २ ६४  
 तु २४६५  
 तुगासीरी ४६५ ५६ ५२४६ ५६६३  
 तुम २४६६

तुङ्ग ६ ११२३ २ ६  
 तुङ्गा २ ६७  
 तुङ्गी १ ४ २ ६  
 तुङ्गाश २ ६  
 तुछ २ ११ ६ ४२५ ६५५ ५४  
 तुच्छधाय ३ ६  
 तुच्छ २ ६६  
 तुजा २ ६६  
 तुवति २  
 तु २  
 तु करी २७ १  
 तुष्ठी २ १  
 तुतोतिधातु २ ७  
 तुथ १४ २४ २ ६७२  
 तुथनीलिनी ४४ ३  
 तुथा २४ २  
 तुथा जन १६६ ५ ६  
 तुव १३६  
 तुम २४ २  
 तुमक ६६६  
 तुमवाय ६५ ३  
 तुमुल २ ७३  
 तुम्ब २४७४  
 तुम्बा २४७४  
 तुम्बी २४७४  
 तुम्बरी २४७५  
 तुम्बु २४ ५  
 तुरगी २ ६  
 तुरङ्ग ४३४ २३५२ २६ ३ ४३६२ ५४  
 तुरङ्गक १६२५  
 तुरङ्गम ६१ १५७७ २४७६ ५३७१  
 तुरङ्गरश्मि १  
 तुरङ्गादिसमाह ३६१५ १६  
 तुरङ्गोपजीविन् २ ६  
 तुरसम २४७७

तुरायणाख्यतपोभव ६५३६  
 तुरि २४  
 तुवष्क २ ६ ३३४२  
 तुवष्कनिर्यासि १ ६३ १२ ६  
 तुवष्काख्यनिर्यासि ३३ ३ ५३ ६  
 तुव कापत्यकवेश २ ६  
 तुयभाग ३२६१  
 तुयराशि ३ २६  
 तुयश ६ १२३६  
 तुलसी १ ४६ ३ १ ३५२६ ३६ १  
 ५७३ ६ १ ६ २५ २६  
 तुलसीव्रत ५६  
 तुलस भिब १६ २  
 तुलसीसप्तकमुगधि ६१६६  
 तुलसीस्त ब ५५६६ ६६  
 तुला २  
 तुलाको २ १  
 तुलाधार २ १  
 तुलापुष्प २ २  
 तुलारज्ज ६  
 तुलाराशि २ १ २ ६५ ५ १ ३  
 तुलासूत्र ३६१ १ ६ १  
 तुय १६६ ३ २ ३६ ६  
 तुयब ६३ २  
 तुयवणमात्र ६३६४  
 तुयाथ ३६६३ ३७६६  
 तुवर २ ३  
 तुवरिका १२ ५  
 तुवरी ५ २ ३ ४ ६  
 तुवरीधान्य ५१ ६  
 तुवरीमषज ६२६  
 तुष २४  
 तुषचवटी २४  
 तुषपावक २६ ३  
 तुषबलि ४४३२

तुषानल १३ ६  
 तुषार २७ ५ ३ ३  
 तुषारकिरण १६७३  
 तुष्ट २ ६  
 तुष्टि २ ६ ६३ २५१ ६ ६  
 तुस्त २  
 तुहिन १६ ६ ६ ६  
 तक २  
 त्रण ११६१ २  
 त्रणी २  
 त्रणीर ३ ४२१  
 त्रय २ ६  
 त्रर २ ६  
 त्ररा २ ६  
 त्रण २ ६  
 त्रर्णाथ २  
 त्रर्णास्तरणक २ १  
 त्रय ५ २ ६१  
 त्रल १५ ५ २ ६१ ३३२७ ३२  
 त्रलक २ ६  
 त्रलनाला ५१३४  
 त्रलपु ५ २ ६२  
 त्रलाबि सूक्ष्माश ३ ७  
 त्रलि २ ६२  
 त्रलिका ६ ३ १५ १ २ ६३ ६४  
 त्रलितपट २  
 त्रली १३६४  
 त्रवर २४  
 त्रव २ ६३  
 त्रषा २ ६३  
 तण ३ १ ६५३ १४४५ २२६ २४६४  
 ३ ६ ६५५६ ६५ ६६१५ ६ १३ १  
 तृणगवसस्य ७ १  
 तृणगोषा २ ६५  
 तृणजाति ६५६६

तुणजायतर ३५४१  
 तुणता २४६५  
 तणत्त्व २४६५  
 तुणव्रम २४३६  
 तुणपुज ४६६५  
 तुणपूल १ ५ २५ ३  
 तणमिद्ध १ ६  
 तुणममि २ ६  
 तणमेव २४१ ३५ २  
 तुणराज २ ३५ ६६  
 तणलतास्तम्ब ६३४३  
 तुणशाय २४६६  
 तुणसघात ६३३  
 तुणसम्बन्धिन २ ३  
 तुणस्तम्ब ३३३१  
 तुणानि १६६२ ५ १५  
 तुणाविपूल ३ १  
 तणाविपूलक ३ २  
 तुणातर ३ १३ ६१ २  
 तुणोका १३  
 तुतीय २४६  
 तुतीयकृतिका २६५४  
 ततीययुग २ ५३  
 तुतीया २२३ २ ६  
 तुतीयातिथि २४६  
 तुतीयाचिक ५६६  
 तुतीयाविभक्ति २४६७  
 तुप्त २४६ ६ ६४  
 तुप्ति ३६ ५६५ २४ ६६ २५  
 ३२ ६ १  
 तुफल २५  
 तुफला २५ १  
 तुष २५ १  
 तुष १३१  
 तुषा २५ २

तुणा १ ६५२  
 तेज १ ५६६ ३६५६ ४२६१ ६२६  
 ५१२ ५ ६  
 तेजन २५ ३ ५६२ ६ ३१  
 तेजना २५ ५  
 तेजनी २५ ३  
 तेजस २४ २ २५ ५ २ ५ ३४६१  
 तेजित ५५६ ६ ३  
 तेमन २५ ६  
 तेर २५  
 तेवन २५ ७  
 तेशव २५ २  
 तजस ४६२६  
 ततिल २५  
 तल २५ ६ ३ २६ ६५१  
 तलकार ६६१  
 तलपर्णी २६ १३ ३ २५१  
 तलमान ६२ २  
 तलयज ३१५४  
 तलाव्यावि ६६  
 तलिक २ ६७  
 तलीन २ ५६  
 तवमास ३६ ४  
 तोक १६४ २५१  
 तोकम २५११  
 तोकम २५११  
 तोक २५१२  
 तोक २५१३ १४ ३६६६ ५६६६  
 तोत्तु २५१३  
 तोवक २५१३  
 तोवन २५१४  
 तोमर ५४ २  
 तोय ७३६ ३ १५४१ १६५६ २२२२  
 २४ ६, २५ ३१४७ ३ १५ ४ ५  
 ६२७२

तोयव २५१४  
 तोयघर २५१५  
 तोयपिप्पली ३३ ४ ५ ११ ५६  
 तोयप्रसादन २५१५  
 तोरण ५५६ २५१६  
 तोषण २५१ ६२२२  
 तोषणा २५१  
 तोषणी २५१  
 तौयत्रिक २६१३ ६  
 त्यक्त ३२ २ २५ २६ ३ २२ ५ ३  
 त्यक्तसङ्ग २६ ५  
 त्याग २ ३ ४ २ २५१ २६२३  
 ५१२१ ५५१४ ६५१२  
 त्यागिन २२५ २५१  
 त्याजक ६६६  
 त्रापा २५१६  
 त्रपु २३२ २४६ २५१६ ५ २३  
 त्रपुधिकार २५२५  
 त्रपुष ३  
 त्रपुस २५१६  
 त्रपुस २१ ४ २४३५  
 त्रयी २५२  
 त्रयोदशतन्त्रीकवीणाभव २५२१  
 त्रयोदशाङ्गलमित्तमान ३५६  
 त्रयोदशी २२३ २५२ ४३२६  
 त्रयोदशीशशिकला ३ ७  
 त्रस २२ १ २५२१  
 त्रसर २५२२  
 त्रसरेणु २५२३  
 त्रसी २५२१  
 त्राक २५२  
 त्राण ६५ २५२ ३१३१ ३२५२ ६८  
 ३३ ७ ५२ ४२३ ६१३ ५७ २  
 त्रात ३२५३  
 त्रात ४ २ २५२५ ३२५६

त्रापुष २५२५  
 त्रायमाण २५२६  
 त्रायमाणा २५२ ३ ४२  
 त्रायमाणाख्यभवज ५३  
 त्रायमाणौषधि ३ २  
 त्रास २५२६  
 त्रिक २५२  
 त्रिककुत् २५२  
 त्रिकष्टक २५२६  
 त्रिका २५२  
 त्रिकट २५२६  
 त्रिकूटाख्यपर्वत २५२  
 त्रिकेतु २५३  
 त्रिगघ २५३ ४१  
 त्रिगत २५३१ ४ १  
 त्रिगुण २५ ४  
 त्रिगुणरज्ज्वावि २५ ३  
 त्रिगुणामन ३५६६  
 त्रितय २५२  
 त्रिवाहितव्यासख्यय ३ ५२  
 त्रिविध २५३२  
 त्रिविधा २५३२  
 त्रिघामन २५३३  
 त्रिनिबह २५२  
 त्रिपक्षिन २५३  
 त्रिपद २५३५ ३६१४  
 त्रिपदी २५३५  
 त्रिपर्णी ५ ३  
 त्रिपुटा २५३६  
 त्रिपुटी २५३६  
 त्रिपुर २५३७  
 त्रिपुरा २५३  
 त्रिपुरी २५३  
 त्रिफला २५३६  
 त्रिमात्रकवण ३ ६३

त्रिमार्ग २५३  
 त्रियामा २६६६  
 त्रिरात्रघायरागित्थ ६ ६५  
 त्रिरेख २५३६  
 त्रिषग २५३६  
 त्रिषणक २५४  
 त्रिवलीक २५ १  
 त्रिविक्रम २५४२  
 त्रिविष्टप ५६  
 त्रिवृत् ३२६ २५ २  
 त्रिवृत्ता २५४२ ५ ६६  
 त्रिवृत्तासप्तलतामव २५४२  
 त्रिवृत्तसप्तली २५५२  
 त्रिवृत्तयक्त २५ ३  
 त्रिवृद्धत् २५४३  
 त्रिवृद्धल्लि १४६  
 त्रिवृद्धली २५३६  
 त्रिवृत् २५२  
 त्रिवृत् २५२  
 त्रिशङ्कु २५  
 त्रिशङ्करजनक ३५६६  
 त्रिशतधमसत्जनरविरश्मि ६१ १  
 त्रिशिख २५४५  
 त्रिशिरस् २५४६  
 त्रिश २५४५  
 त्रिश्लोकी २ ५  
 त्रिष्टपछवत् २५ ६  
 त्रि सन्धधिन २५५  
 त्रि बाविकप्रगाथ २५५  
 त्रिष्टम २५४७  
 त्रिष्टमा २५४  
 त्रिसुगध २५४  
 त्रिस्तोतस २५४  
 त्रिदि २५ ४६२२  
 त्रिता २५४६

त्रैतायग ३३ ६३  
 त्रैलोक्य ३६६  
 त्रैष्टम २५ ६  
 त्रौ २५५  
 त्रयशाय २५ ६  
 त्रयङ्कुट २५५१  
 त्रयङ्ग २५५१  
 त्रयभा २५५२  
 त्रयधि २५५२  
 व २५५२  
 वक २५५३  
 वक्पत्र २५५३ ५१ २  
 वक्पत्रमधज ४ ३६  
 वक्पत्री २५५३ ३५ ५  
 वक्सार २५५ ५६ १  
 वक्सार २५५४  
 वक्षितु २५५  
 वगावि २  
 वग्विहीन ३ २२  
 वच २ ६१ २३ ३ २५५३ ३४४४  
 ५ ६ ५१ ६  
 वचा २५५५  
 त्वरा ५ ७६५ २ ६ २५१६ ५५  
 ६६ ५  
 त्वरागमन २३१५  
 त्वराहीन १  
 त्वरित २ २ ३१३ २४६ २५५५  
 त्वष्ट २५५६ ४६  
 त्वष्टववताक २५५  
 त्वष्टपत्नी ४६२  
 त्वष्ट सन्धधिमत्त २५२७  
 त्वष्टपय २५५  
 त्वष्ट २५५ ५४६१  
 त्वष्ट्री २५५७  
 त्विष्ट २५५६ २ ६

सर्व २ १ २ ३५

थ

थ २५६

द

व २५६३

वशा २५६१ २६१ ६ १

वशाक २५ ६

वशान २५६१

वशभीद-सरिम ३५

वशित २५६२

वशी २५६१

वष्ट्रा ६

वष्टापाशवस्थवत् २२३१

वट्टिन ५ २५६२ ३ ६

वक्ष ५ ५४ ६ ३ १२१३ १६ ३

२ ५२ ५५ २१६३ २५६ ३ ६६

३५६१ ६ ३१

वक्षकया २५६५

वक्षमातु ३६

वक्षसम्बन्धिन २६१६

वक्षा २५६५

वक्षावि ३६२

वक्षापय २६२

वक्षाम्य २५६६

वक्षिण २१ २५६६ ३ २६

वक्षिणविगज ५३२३

वक्षिणध्रुव ५२ १

वक्षिणस्थ २५६६

वक्षिणा २५६

वक्षिणाग्नि ६ ६६

वक्षिणापथवर्तिन् ६ ३

वक्षिणाधि ६४४

वक्षिणावतशङ्ख ५३४

वक्षिणाशरत्त २५६६

वक्षिणोद्भूत २५६६

वक्ष ६ ५२६ ६३ ५१ २१५२

२३३६ २५ २६५५ ३६२६ २

वक्षकाक २

वक्ष्या ६५ २

वक्ष्योवन २३ ६

वक्ष १ १२५ २५ ३१ १

६१ ३३५ ११ ५५२ ६ ३

१२ ५२ ५ ५

वक्षक २५ २

वक्ष न ५६६५

वक्षयाम २५

वक्षयितु २५ ३ ५६६

वक्षरूप ५ ६

वक्षविनिगय २ ६२

वक्षराश्वपयिकवम ६४१६

वक्षहीनज ३१ ६

वक्षकारायुधातर २६६५

वक्षार २५

वक्ष्यापिताडकुशा ६ ६६

वक्ष्याहृत २५ ५

वक्ष्याहृतक २ ३३

वक्षिक २५ ६

वक्षिका २५७६

वक्षिकाससकवाद्यातर २२ २

वक्षिन २५ ६

वक्षोपलतिभतसत्त्व ६३६६

वक्ष ७३२ १३ ३ २५७ २६ १

६ ६३

वक्षुनाशिनी २५

वक्षि १६१ ६३ २५ ६ ३२२६ ४ ६३

४१ ६१६ ६५ ६६ २

वक्षिथ १ ५

वक्षिपाम्य २५

वक्षिमव (अघनवक्षि) ३१२४

वधिमण्ड ४२ ५  
 वधिमण्डक २ ६  
 वधिमन्यनगरी ११ ३ १ ६  
 वधिमन्थनी ११ २ १ ६  
 वधिमुख २५  
 वधिमुखी २५ १  
 वधिवारि २ ६  
 वधिसन्तु १११६  
 वधिस्तह १ २  
 वध्य १२६२  
 वध्यालीनामव-लीमिव ६ ५  
 वध्यालीनामव-लयन्तर ६१६६  
 वध्या-यायलता ६१५  
 वध्यपसिक्ता-य ३५  
 वनु ६६  
 वनुज ६६ २६२  
 वत १३६५ १७ २ २२७४ २५६३ २६ ६  
 २ ५६ २६ ६४६ २  
 वन्तकाष्ठ २५ ३  
 वतकतमव  
 वतछव ६३  
 वन्तवावन १ ३३ २५ २ ६  
 वन्तमण्डन ६ ६  
 वतमल १ ५४ ३५१  
 वतमासक ५६७३  
 वतवक्त्र ४६६३  
 वतविकारक २६२६  
 वतशठ २५ ३  
 वन्तशठा २५ ४  
 वतशोधन २५ ३  
 वतावल १३३७  
 वतिक २५ ५  
 वतिका २५ ५  
 वन्तिकौषधि २६ ६  
 वति ध्याज ६७४४

वति वतबीजस्तम्ब ६१२३  
 वतिन २५ ५  
 वतिपादव-धन ६१२  
 वतिपादर ज ३२ ६  
 वन्ती २५ २ ५  
 ववर ११२३ २५ ६  
 ववशक २५ ६  
 वव २५  
 वम २५ ७  
 वमथ २५  
 वमन २५ २६  
 वमनक १२६६ २२१४ २६२४ २ २ ७२  
 ४२  
 वमनकाङ्क्षयस्तम्ब ६३५६  
 वमयत २५ ६  
 वमयती २५ ६ ५ १  
 वमयित्थ २५ ६  
 वमित २६२६  
 वमुनसु २५६  
 वन्पती ३४६३  
 वम्भ १२ ५४३ १५ ६ १ ६ २२ ६  
 २ २ ४६  
 वम्भध्या १५ ६  
 वम्भशीलम्ब १५ ६  
 वय ११ २  
 वया १५ २ २७  
 वयित २३११ ५१  
 वर २५६  
 वरण २५६१  
 वरत् २५६२  
 वरथ २५६३  
 वरा २५६१  
 वरि १६३५७६ २६५२ २६७६  
 वरि २६७१  
 वरी २५६१



वदर २५६  
 वदरीक २५६५  
 वदर २ ५३ २५६५ ४ ५६ १ २ ३  
 वदुरा २५६६  
 वप २६ ५ १ ५१ २५६ ६१६  
 वपक २५६  
 वपण ५२२ ११३४ ३६ २५६ २६ ३  
 ३३६ १ ४४११  
 वपणा २५६  
 वपयितु २५६  
 वम १ ३ ६३ १५१३ २ ६६  
 वमण ६४६२  
 वममुष्टि ५५  
 वर्माङ्गलीय ३२२६  
 वव २५६६  
 ववर २५६६  
 ववरी २५६६  
 ववि २६  
 वर्वी ११ ६ १ १ २३६ २६  
 वर्वाकर २६ १ ३ २  
 वर्वाकरसन्निभ ३५२  
 वर्वाकराख्यसन्निभ ५१ ५  
 वर्वाकरा तर १५५६  
 वर्वाकरोरग ३ ६१  
 वश २ ६ २६ १ ६२  
 वशाक २६ २  
 वशान ५६ २ ६३ २६ ३ २६६६  
 ३२६६ ४ ६ ५५६४  
 वशाना २६  
 वशानाथ २६ ४  
 वशानी २६ ४  
 वशानीय ४ ५५  
 वशयितु २६ २  
 वल २६ ५ ६  
 वलव २६ ६

वातर २६ ६  
 वलाढक १११२ २६  
 वलामल २६  
 वलम २६  
 वव २६ ६  
 वशध बतराह्याध्वमान ६५ २  
 वशान २६ ६ ५१ १  
 वशान छद २६१  
 वशनोच्छिष्ट २६१  
 वशापुर २६११  
 वशानी २६११  
 वशानीतिथि ३५५५  
 वशानीस्थ २६१२  
 वशमलावि ३२३६  
 वशसख्या ३ ७  
 वशसख्यामित ३  
 वशासाहस्य ३११  
 वशाहस्तप्रमाणक २६५६  
 वशा २६१२  
 वशाभव २६५६  
 वशावेम ३५६५  
 वशायोगिन २६३५  
 वशाहकायश्वाह ६३  
 वशर २६१  
 वस्म २६१५  
 वस्य २६१५ ३४४६  
 वला ३  
 वहन ३६ ५ २६१६  
 वहर २६१७  
 वाक २६१  
 वाक् २६१६  
 वाक्कायणी २६२ ३५ २ ६ ४ २५  
 ६२  
 वाक्किणाय २६२१  
 वाक्किणायपुरातर १२५

बाकी २६१६  
 बाक्य २१  
 बाबिम ११ ३ २५६५ २६२१ ३ ६  
 ५५ ७  
 बाबिमकुंजक ३ ३  
 बाबिमवृक्षक ४६ १  
 बाबिमी २६२२  
 बातु ४ २३ २ २५१ ६३ २६१  
 २६२५ २७ २ १ ४ ६ ४ १६  
 ५६ ५ १  
 बात्पूह ११ ४ १३२ २६२२ ३ ६  
 ६ ३३  
 बात्र ४३  
 बात्रमष्टि ५ ३  
 बात्व २६२३  
 बान ६ ४६२ ६ ७२ २६ २४६६  
 २५१ ६३ ६ २६२३ २ ३४४ ४  
 २ ३ २६६ ३६४ ३ ४५६  
 ४ १ ४४ ५१५५ ५५१५ ६२  
 ६३ ५ ६६१३ ६७६३  
 बान—यज्ञादिविधिबस्त २५६  
 बानव २६२ ६ १  
 बानवीमव ३५३६  
 बानशील २ ६  
 बानशीष्ण ७  
 बानु २६२५  
 बात २६२६  
 बाति २६२  
 बातियक्त २६२६  
 बान्ती २६२  
 बाभिक १६१  
 बाय २६२७  
 बायभाज २६२६  
 बायाव २६२६ ३६७२  
 बारक २६२६

बारव २६३  
 बारवाख्य ६ ६१  
 बारवजलपात्र २ २  
 वारा १६ २ २ १३  
 वाह २६३१  
 वाक २६३१  
 वाकण २६३२  
 वाकणयद्ध २  
 वाकपात्रविशेष २  
 वाक्पुत्री ५६६  
 वाक्फला २६३३  
 वाक्लखक ६ ६२  
 वाक्हरित्र १२ १३ ६ २६३३ २६६६  
 ३२ १ ५ १ ६ २१  
 वाक्विकपुत्तल ३ ३३  
 वाक्वी १३४२ २६३३ ३  
 वाभ्यमुनि ३ १६  
 वाव २६३  
 वावान्ति २६३४  
 वाश २ १ २६३४ ३५ २ २५  
 वाशरथि  
 वाशा २६३  
 वाशिन २६३  
 वात ३४ १३५६ २६३५ ३१५३ ७३ ६६  
 ३ २ ३७ ३ १  
 वासक १ २  
 वासिकापुत्र २६३६  
 वासी २६३६ ३५ ७-६४ ५६५  
 वासीपुत्र २६३  
 वासेर २६३६  
 वासेरक २६३७  
 वाह ५ ६३४ २६१  
 विक ११  
 विकरिन् २६३७  
 विगज ७६

विदेशकालविषय ३ ५१

विघ्न २६३

विघ्नमय २५२१

विगुविषय ३५६३

विति २६३६

वितिज २ १२

वितिभ ३ ३

विधिषु २६४

विधि ७ २६

विधिषपति २६४१

विन ६६ ६

विनकर २५५६ २

विनचारिन् २६ ३

विनमृति २७११

विनयोगिन २ ११

विनसम्बद्ध २ १४

वि ीप ६६५

विलीपपुत्र ६१

विवस २ २३ २ २५ ४ ३ ६५ ६३६

६६५ ५३६३ ६ ६६५३

विवसद्वितीयचतुर्भाग ६२

विव ६६६ २६४२ २ ३ ३२ ६५ ६६

५५ ५ ५ ३४

विवाकर ६ ४१ ७

विवाकीर्ति २६४२

विवाचर २६ ३

विवाभीत २६ ३

विद्योकस् २६ ४

विद्योक्त २६ ४

विध्य १५६६ २६४५

विद्यगायन १ ४६

विध्यतुला २ ६५

विध्यवष्टि ५४४

विध्यलक २६ ६

विशु ६ ३ ६ ११ ६५ १३४६

१६३ २५६५ ६३ २६६२ २७

२६२६ २६७६ ५ १ ६७१४

विष्ट २६

विष्टसम्बन्धिन २ १

विष्टि २६ ६

विष्टिसम्बन्धिन २ १

विष्टया २६ ६

वीक्षणोयष्टि ६५३३

वीक्षा २६ ६

वीक्षित १ ६६ ६७५६

वीक्ष्यभव ३४२

वीविधि २६५

वीधिति ६३ २ २ २६५१ ४६५

वीन १६२२ १ २६५१ ४६१

वीनता २ १४

वीनवादिन ११४

वीना २६५१

वीनार २ ३ ६

वीप १६२ २६५२ ३६६१ ६ ११

वीपक २६५२ ३३६ ६ १६

वीपन ६६५ २३३ २६५

वीपता २६५

वीपनी २६५४

वीपनीय २६५६

वीपयस्थ २६५

वीपयितु २६५३

वीपवर्ति २६१३

वीपाधार १६ ५ ४२ १

वीपित ६५१ ३६२६

वीपितु २६५३

वीप्त ६ १५ २६५५ ३६२६ ४

२ २ ३५ ५ २२

वीप्तजिह्वाह्वयकोष्ठभव ६ १

वीप्ता २६५५

वीप्ति ४४६ ६२ २१ ६ ६ ६७ २३३१

२५५६ २६५४ २ ३३ ३६ ६ ५

१ १६४ ६ ६ ४ ३२

१ ५ ५३ ५५ ६२ ६ ६

वीप्तिमत ६१

वीप्तिसाधन २६५४

वीप्य २६५६

वीप्यक २६५६

वीघ ६६ २६५ ५ ७२ ६६२६

वीघकला २२ ६

वीघकिमि ३

वीघता ५५७

वीघतृष्णा ६ ३

वीघद्वय १ ६

वीघनाव २६५

वीघनिद्रा २६५

वीघपन्न २६५६

वीघपत्नी २६५६

वीघपाव २६६

वीघरोमन् २६६

वीघवस्तु ५५५

वीघवण्टि ४५४

वीर्षा वग २६६१

वीर्षायुष २६६ २६६१

वीर्षासि ६६६४

वीर्षिका ५३१६

वीण २६६२

वीणी २६६२

वु ५ ४४ २६५ १६४६ १ ७ २४६६

२६६३ ३१ ६ ३५४१ ३ ६१ ४ १६

वु खवान ३३६३

वु खघार्य २६ ४

वु खभावन ६

वु खराष्ट्र ६५५६

वु खसाधन २६६३

वु खस्परा २६७६

वु खामाववत २ ६६

वु शील ६६५

वु स्परा ६३१३

वुकल १६६२ २६६३

वुघ २६६ ३१४ ३६४२

वुघतालीय २६६५

वुघफन २६६५

वुघसिद्धौवन ३२ ४

वुघात्रक २६६५

वुघाशिन २६६५

वुग्धिका १६ ४१५ ५५

वुग्धिकौषधि ३१४

वुग्धी २६६४

वुच्छक २६६६

वुवुमि २६६६

वुर २६६७

वुरध्व ५७५२

वुरत ५२४

वुरवगाह १ ५४

वुराग्रह १७ ६

वुराघष ६६५

वुरालभा १३३

वुरालभाषयस्तम्भान्तर ५ २

वुराश २६६

वुरासव २६६ १६१४

वुरित ४ १५४ २६६६

वुरोवर २६६६

वुग ६६ २ ६५३ २६७

वुगत २६६६ ७ ७

वुगति २६६६ १ ५ ५६

वुगवेश ११७५

वुगध २६७१ ३५४१ ४५

वुगन्धवत् ३५४१

वुगम २६७ ७२ २७१

वुगमाग १२६७

कुर्गसम्भर ६२४५

कुर्गस्थान ६६६

कुर्गा १ ५५ ११२६ १३२३ ६ १६६६

१ ६५ १६ ६ ६६ ५ २ २३ २६

४५४१ ४ ५२ १ ६१ ५

५३१ ५६१५ ६४ ४६ ५ ७

५६४१ ५१ ६६६

कुर्गबिबी १५ १

कुर्गबिबीतिथि ६२६१

कुर्गकृपातर ३४ ६

कुर्गस्वरूप ३४६

कुर्जन १ ६२

कुर्जर १६१५

कुर्जाति २६ २

कुर्दश २६ ३

कुर्दशा २६ ३

कुर्दुक्त ११ ६

कुर्धर २६७४

कुर्न १४३

कुर्नामन ३६२

कुर्नालिका १ ३

कुर्नाली १४३

कुर्बल ६७

कुर्बुद्धि ४६१४

कुर्भग ६६ १

कुर्मुख ४४१७

कुर्मधस् १ ४

कुर्योधनमातुल ५ ६

कुर् म २६ ५

कुर्वण २६७५

कुर्बह ३६२

कुर्वाक्य ३२६

कुर्वार २६ ६

कुर्विध २६

कुर्विनीत २ ७७

कुलि २६

कुर्गमन ५ ६ ६ ३

कुर्गुल ३ १३

कुर्गुत २६ ३२७१

कुर्गुष्ट ५ ६६

कुर्गुष्टकन्या ६ ५३

कुर्गुष्टगज ५ ४

कुर्गुष्टषष्टित २६१७

कुर्गुष्टवर्ण २६७६

कुर्गुष्टवाताविक २ २२

कुर्गुष्टाश २६६

कुर्गुष्टोमित २ ६

कुर्गुष्टवश १ ७ ७६ २६ २

कुर्गुष्टाप २६६ २६ ५

कुर्गुष्टा २६७३

कुर्गुष्टतभार्याविम्व ६६ ६

कुर्गुष्ट २६

कुर्गुष्टवश २६७६

कुर्गुष्टवर्षा २६ ६

कुर्गुष्ट २३४२ २ ६६ २६२१ ३४२७-

३१ ६५

कुर्गुष्ट २ २६

कुर्गुष्ट १६५३ २६ ३३१२ ४६४ ५३ ३

कुर्गुष्टकमन २६ १

कुर्गुष्टभाव २६ १

कुर्गुष्टी २६ ३२५ ४७४५ ६२५६,

६ ७१

कुर्गुष्ट २६ १

कुर्गुष्ट ५७२ ३१५१ ५३

कुर्गुष्टोत्तवनिआवक ६१६४

कुर्गुष्टशिन् २६ १

कुर्गुष्टमाग ३ ६२

कुर्गुष्टायवत्तम् ३७६३

कुर्गुष्टेमिन् २६ १

कुर्गुष्ट २६७६

वृषण २६४ ४६

वृषणीय २६ ३

वृषिक २६ २

वृषिका २६ २

वृष्य २६ ३ ६५९९

वृष्या ३ १३३ २ १९४१ २४६

९४ २९५ ३९ ६ ९ १५६

६ ६ ६ ४ २ ५ १ ५ ३

६ ६३७३ ६ १

वृष्याचिततटीम ३२३३

वृष्यामव ५६

वृष्यास्त २ २

वृष २६

वृष्यापार ६

वृष ३ ५

वृषम ३ ६३

वृष ११ २ २६ ५५३९ ७३ ५ ३२

वृष्यनामधि ६५१

वृषवला २६ ६

वृषवलाह्वयतुणवृम २ ३६

वृषवृष्करचित्रयोधकमन ६६९५

वृषवध ५

वृषवसाह २९९८

वृषवसिध ६२३५

वृषा २६ ५

वृषि २२९६ २६ ६ ३ ५६ ४२ ६

वृष २६ ७

वृष २५९

वृषि २५९

वृष १९३७ २६

वृषा २६

वृषीक २६ ९

वृष्य ५५३५

वृष्यर्ष ३२३१

वृष्या २६ ९

वृषत २६९

वृषपुत्री ११

वृषवृत्ती २६९

वृषट २६९१

वृषटचक्राभावास्या ६ ३४

वृषटवन्त ६ ३

वृषटात २६९२

वृषि २६ १ ९

वृषिशाव २६९२

वृषि हीन ११

वृष्यमव ६५ ३

वृष ३६ १३ २ ५२३ १६९

२६ ४९३ २९ ९६ ३५३६ ३९

९ ५ ६ ५२२३ ५ ५ १ ५५

९ ५६ ९ ५ ४ ६ ६ ६ ६ ९

वृषक्या २ १ २

वृषकवच २ ३

वृषकात २६

वृषकमू २ ५

वृषजायन्तर ६ ३

वृषसक्षन् २५५६

वृषताचनसूय २ ३१ ३ ४४

वृषताव १ ४ २२९४ २६९५ ५६४

वृषतावक १ २२

वृषताववली १ ५६

वृषतावाह्वयल्तातर ५६४

वृषता वा ९५

वृषव २६९५

वृषवाध २६३१ ३२९७ ३३६९ ३५३

३ ४२२६ ४१ ३ ५ २६ ७५ ५९४१

वृषवाक ६५९

वृषवाध्वम ३३७५ ३३ १

वृषवाली ११३६

वृषवालीलता १ २३

वृषवृष्णि २६९६

देवद्वय १२ ७  
 देवधाय २६६  
 देव धायक २६६७  
 देवघप २६६  
 देवघन ६ ३  
 देवन २६६ ६६  
 देवनदी ५ ६  
 देवना २६६६  
 देवनारी ६६  
 देवपत्नी २ ४  
 देवपावपातर ६  
 देवमित्र २  
 देवमणि २ १  
 देवमाली ५ ६  
 देवमातृ १  
 देवमात्र २ १३  
 देवमारिष ३ ४६६ ५४४  
 देवमूयतर ३२ ६  
 देवमूर्धावि ३६६१  
 देवमूर्धुपासनबमन २४  
 देवयानक २ ३  
 देवयु २ २  
 देवयोयतर ३३५६ ४ २६ २  
 देवर ५ १ २१६ २ ७ २ ५ ४६५६  
 ६१६१  
 देवरथ २ ३  
 देवरत्नजा २६ ६  
 देवल २ ३ ५१३२  
 देवलक ४ ५६  
 देवलोक १६६५  
 देववधू २  
 देववनितामित्र ६७११  
 देववर्धकि ५४ ६  
 देववलम्बवृक्ष ३४४१  
 देववलम्बवृक्षप्रसव ३४४१

देवविमान ५५ ५  
 देववृक्ष २ ४  
 देव गुनीभव ६३३६  
 देवसिध २ ५  
 देवसेना २ ५  
 देवान्नि २ ६ २  
 देवाजीव २ ३  
 देवाङ्गानुपालय ३  
 देवातर ३५ ७  
 देवान्न २  
 देवाम्ना ६६  
 देवार्ह २ ६  
 देवालय ५५६ २१५  
 देवालयकक्ष्या ६ ५६  
 देवी ६ २६६३  
 देवीमित्र २ ३  
 देवयतर २२३६  
 देवोचित २ ६  
 देश २२१६ २५३१ ३ ५२ ३४३  
 ३६ २६ ५४६ ५६६५  
 देशव घन ३२३  
 देशमित्र ६ ७६  
 देशमूपति २५६३  
 देशमव २५६६ २६११ ३ ३  
 ३ २ ६३६१ ६४६६  
 देशमवरराज ३ ७  
 देशयोगिन २ १६  
 देशरूप २७ ७  
 देशविषय ३५६२  
 देशहीन २६ २  
 देशिन् २  
 देशिनी २  
 देशण २ ६  
 देशणु २ १  
 देश ५१ १२६५ १६६६ २ ६ ३३३६

६ ३४२४४३ ४ २३ २६ ५३६३  
 ६५४१  
 वेह्यानुविशण ४६५  
 वेह्युट ७५  
 वेह्यमदन २ १  
 वेह्यमान ३३३६  
 वेह्ययात्रा २७११  
 वेह्यलक्षण ६३१२ ६४  
 वेह्यली ५१ १ ३१  
 वेह्यवायु ५  
 वेह्यवायुभव ६६  
 वेह्यवृत्त ३५ १  
 वेह्यामिलातर २६ ३  
 वेह्यातरस्थितवायुभव ६३ २  
 वेह्य ४५३ २ ५ २ १२ ३ ४३ २  
 ४ ५५  
 वेत्यजननी २६३६  
 वेत्यवेव २ १३  
 वेत्यप्रभव ३ ४५  
 वेत्यमिव ३४१६  
 वेत्यमव २ २ ३ २४४ २६३१ ६६  
 २ ४ ३ ३ ४४ ६५ ५  
 वेत्यराज २३३६  
 वेत्यवधकि १६१  
 वेत्या २ १२  
 वेयातर ३२३६ ३ ४ ६४६२  
 वेत्यान्न ६६६  
 वेत्यारि २ १३  
 वेन २ १४  
 वेनिकी २ ११  
 वेय ११२६ २ १ ४१६  
 वेय्यावितवाच २ ६६  
 वेय्य ५६ ५  
 वेव १३५ १५२६ २६४७ २ १५ २६६६  
 ३६ ७

वेवज १ २ २३२५ २ १६  
 वेवजा २ १६  
 वेवत १५२४ २६६ २ १५  
 वेवभीति १ ६  
 वेवविव २ १६  
 वेवविवाहविवाहिता २ १५  
 वेववक्षभव १ ६  
 वेवी २ १५  
 वेविक २ १६  
 वेवष्ट २ १  
 वेवघ २ १  
 वेवघ्री २ १६  
 वेवघक २ १६  
 वेवरक २७२  
 वेवरिका २ २  
 वेवल २ २  
 वेवलक २७२१  
 वेवला २ २१  
 वेवलित २ २२  
 वेवष १ ५२४ २१६३ २७२२ ३६ ३  
 ४६७४ ५२५६ ५७  
 वेवज्ञ २ २३  
 वेवष वेवघक २७२३  
 वेवषसम्बद्ध २ २५  
 वेवषा २७२३  
 वेवषाकर २७२४  
 वेवषाख्यान ३१६  
 वेवषिक २७२५  
 वेवषकवृत्त्व ३४७६  
 वेवषोत्पाद १५१  
 वेवस् १३ ४  
 वेवहृव ४ ५६  
 वेवहृवलक्षण २७२५  
 वेवहृमिनी ६१५६  
 वेवहनकार २७१६



वोह्यात्र २ ५ ३२७६  
 वोहल २ २६  
 वोहलनामन २ २६  
 वोबुभी २७२  
 वोवीण २७२  
 वोष्मत् २ २  
 वोह्लि २ ७  
 वोह्लिपुत्रादि २ ७  
 वोह्लव २ २६  
 वषट्कारिक २७६  
 वावापुथिवी १ ३ ४ २२१ २ ७६  
 ३ ५ ३३ ५ ५३६ ४  
 वावामनि २  
 वु २ ३  
 वुति १ २३६ ४१ २६६ २ ३१ ३ ३  
 वुभव २६४५  
 वुन्न २ ३१  
 वुवन २ ३२  
 वुत ३ ६ ७२ १५ ६ २३२ २६६६  
 ३ ६ ३१ ६ ३६५ ५ ५  
 वुतकन्वल ३२ ३  
 वुतकर २६६६  
 वुतकार २१७  
 वुतकुत् १३६२  
 वुतकीडा २२  
 वुतपाशक २  
 वुतभव १२ २ ४ ३ ६  
 वुतयुद्धाविष्म ४१५  
 वुतशलाका १३ २६६७  
 वुतशारि ५६४३  
 वुताङ्गमिव २ ७१  
 वुतोपकरण ५ २  
 वुत २३४३ २७३३  
 वुतकाथ २७३४  
 वुतति २७३१

वुतन २ ३  
 वुतना २ ३३ ३  
 वुत २७३५  
 वुतिल २७३५  
 वुव २ ३६ ६ ४६५  
 वुवण २७३६  
 वुवत २ ३  
 वुवन्ती २ ३  
 वुवधारा १ ६४  
 वुवभाजन २  
 वुवततति २ १  
 वुवा २ ३  
 वुविण २ ३ ५२१५  
 वुविणागम २३११  
 वुविणावि ६२५  
 वुव्य ११५ २२६५ २३ ६ २ ३६ ६२६  
 वुव्य २६ ६ १७  
 वुव ६ ५ २६ २  
 वुवा १५५२ ३३५५ १५७ ४६६१  
 ६६५ ५६  
 वुवाभव १६ ३  
 वुवाङ्ग २७४  
 वुवाक २ ३७-४१  
 वुवाकप्रसव २ २  
 वुवण २७४२  
 वुवायित २७ १  
 वु ३१२५ ५ २  
 वुवण २ ३ ४४२४  
 वुण २ ३ ५६ १  
 वुणा २७ ४  
 वुणी २७४४  
 वुत २३६४ २ ६ २ ४४  
 वुतोवितवचन २६७२  
 वुभव २५६५ ३ २ ६६ ३  
 वुन २२२ ४३ २७४५ ६५, २ ४५ ३३३६

६ ३४२४ ३ ४ २३ २६ ५३६३  
 ६५४१  
 वेहघातुविशेष ४६५  
 वेहपुट ७५  
 वेहमदन २ १  
 वेहमान ३३३६  
 वेहपान्ना २ ११  
 वेहलक्षण ६३१२ ६४  
 वेहली ५१ १ ३१  
 वेहवायु ५७  
 वेहवायुभव ६६  
 वेहवकृत ३५ १  
 वेहानिलातर २६ ३  
 वेहातरस्थितवायुभव ६३ २  
 वय ४५३ २ ५ २ १२ ३ ४३ ७२  
 ४७५५  
 वयजननी २६३६  
 वयवेव २ १३  
 वयप्रभव ३ ४५  
 वयमिव ३४१६  
 वयमव २ २ ३ २४४ २६३१ ६६  
 २ ४ ३ ३ ४४ ६५ ५  
 वयराज २३३६  
 वयवधकि १६१  
 वया २ १२  
 वयातर ३२३६ ३ ४ ६४६२  
 वयाज ६६६  
 वयारि २ १३  
 वैन २७१४  
 वनिकी २ ११  
 वय ११२६ २ १ ४१६  
 वयावितवाच २ ६६  
 वय्य ५६ ७५  
 वय १३५ १५२६ २६ २ १५ २६६६  
 ३६ ७

वयज १ २ २३२५ २ १६  
 वयजा २ १६  
 वयत १५२ २६६ २ १५  
 वयभी १ ६  
 वयविद् २ १६  
 वयवियार्हविवाहिता २ १५  
 वयवक्षभव १ ६  
 वैवी २ १५  
 वयिक २ १६  
 वष्ट २ १  
 वोग्धु २ १  
 वोग्ध्री २ १६  
 वोग्धक २ १६  
 वोरक २ २  
 वोरिका २ २  
 वोल २७२  
 वोलक २७२१  
 वोला २ २१  
 वोलित २७२२  
 वोष १ ५२४ २१६३ २७२२ ६ ३  
 ४६७४ ५२५६ ५  
 वोषज २ २३  
 वोष बोधक २७२३  
 वोषसम्बद्ध २७२५  
 वोषा २ २३  
 वोषाकर २७२४  
 वोषाक्यान ३१६७  
 वोषिक २७२५  
 वोषकयुक्त ३४७६  
 वोषोत्पाद १५१  
 वोस् १३ ४  
 वोहव ४ ५६  
 वोहवक्षण २७२५  
 वोहविनी ६१५६  
 वोहनकार २७१

बोहपात्र २ ५ ३२७६

बोहल २ २६

बोहलनामन २ २६

बौद्धभी २ २७

बौर्गीण २ २

बौष्यत २ २

बौहिन २ ७७

बौहिनपुत्रादि २ ७

बौहव २ २६

ब्रह्मग्रिक २ ६

ब्राह्मपुत्रिणी १ ३ २२१ २ ६  
३ ५ ३३ ५ ४५३६ ४७

ब्राह्ममि २ ७

ब्र २ ३

ब्रुति १ २३६ ४१ २६६ २ ३१ ३ ३

ब्रुमव २६ ५

ब्रम्न २ ३१

ब्रुवन २ ३२

ब्रुत ३ ६ ७२ १५ ६, २३२ २६६६,  
३ ६ ३१ ६ ३६५४ ५७५

ब्रुतकम्बल ३२ ३

ब्रुतकार २६६६

ब्रुतकार २१७

ब्रुतकृत् १३६२

ब्रुतक्रीडा २२

ब्रुतपाशक २

ब्रुतभव १२ २ ४ ३ ६

ब्रुतयुद्धाविबिम्ब ४१५

ब्रुतशलाका १३ २६६

ब्रुतशारि ५६४३

ब्रुताङ्गमिद् २ ७१

ब्रुतोपकरण ५ २

ब्रुत २३४३ २७३३

ब्रुतकाथ २ ३४

ब्रुतति २७३१

ब्रुतन २ ३४

ब्रुतना २ ३३ ३४

ब्रुत २ ३५

ब्रुमिल २ ३५

ब्रुव २ ३६ ७६ ६५

ब्रुवण २ ३६

ब्रुवत २७३

ब्रुवती २ ३

ब्रुवधारा १ ६

ब्रुवभाजन २ ४

ब्रुवसतति २ १

ब्रुवा २ ३

ब्रुविण २ ३ ५२१५

ब्रुविणागम २३११

ब्रुविणादि ६२५

ब्रुव्य ११५ २२६५ २३ ६ २ ३६ ६२६

ब्रुव्य २६ ६ १

ब्रुव्य ६ ५ २६ २

ब्रुव्या १५५२ ३३५५ १५ ६६१  
६६५ ५६

ब्रुव्याभव १६ ३

ब्रुव्या २

ब्रुव्या २ ३ १

ब्रुव्याप्रसव २ २

ब्रुव्या २७४२

ब्रुव्यापित २ ४१

ब्रु ३१२५ ५ २

ब्रुव्या २ ४३ ४४२

ब्रुव्या २ ४३ ५६ १

ब्रुव्या २७ ४

ब्रुव्या २७४४

ब्रुत २३६४ २४ ६ २ ४४

ब्रुतोदितवचन २६७२

ब्रुमव २५६५ ३ २ ६६७३

ब्रुम २२२ ४३ २७४५ ६५ २ ४५ ३३३६

६५ ५२१३

द्रुमकपूर २ ६१

द्रुममव ३४२

द्रुमस्कंध १२५

द्रुमाङ्ग ११५

द्रुमातर २६५५ ६ ६६ ६

द्रुमामय २ ४६

द्रुमावन २ ४६

द्रुमूल ३ ५

द्रुमोपल ११५१ ३२६

द्रुविकार २

द्रुहिण २ ४३

द्रोण १३६ १४६२ २ २ २

द्रोणकाक १२ ४ ६

द्रोणचतुर्गुणमान ६११

द्रोणपुत्र ५६ ६

द्रोणपुष्पी २ ५ २ ६ ३ ६

द्रोणयुग्मकपरिमाण ६११६

द्रोणा २७

द्रोणाख्यकाष्ठपात्रक ३३

द्रोणाख्यमानक ११ १

द्रोणाह्वयमान १६६६

द्रोणिप्लव २३६

द्रोणी ११२ २

द्रोतु २ १

द्रोह २ ६ २७५

द्रोहाट २ ५१

द्रौपदी १५५१ ५६५५

द्रुष्ट ११ ६ २७५१ ३५२२

द्रुय ५

द्रास्थ ६ ६६ २५७७ २६ २

द्रावश २ ५३

द्रावशाहकृतक ३७५५

द्रावशाहव्याह ६३१६

द्रावशाहावियक ६२६७

द्रावशाहोपवासामन्त्र ३१६१

द्रावशी ३६ ६

द्रावशष्टिका ६२१

द्राप २ ५३

द्रापराख्ययुग ६२

द्रार १६५ २ ५ २६

द्रार २ ५ ३ २३ ३६५६ ६६ ५३२७

द्रारकवाटद्वयबन्धन ३३६

द्रारिकापुरी ५ ३

द्रारकट ६ ५

द्रारपटल ३३

द्रारपाल ३६५६ ६१ ५६५

द्रारपाश्वस्तम्भ ५६ ५

द्रारपिण्डी ३ ६४ ७४५

द्रारममि १

द्रारयन्त्र २ ३

द्रारयन्त्रणतालक ३५६७

द्रारयोषित् ५६२

द्रारवती २५

द्राराध स्थितवाह ६ ६१

द्रासन्ततिस्वर छाद्योमव ६३४४

द्रिक २ ५४

द्रिकालबोद्धा ६२

द्रिक्रीतादिक २ ५५

द्रिखण्डाख्यप्रावरणांतर ५ २

द्रिज ४४ २ ५५ ५५ ४ ६ २ ६१

द्रिजग्रह ३६ २ ३

द्रिजन्मवीप्ति २१ ६ २७५६

द्रिजपोत २ ५

द्रिजप्रतिग्रह ३६४२

द्रिजराज २ ५

द्रिजस्त्री ४६६६

द्रिजा २७५६

द्रिजाति २ ५

द्रिजिह्व २७५

द्वितय २ ५५  
 द्वितीय २७५६  
 द्वितीयपावगीति ५६६  
 द्वितीयभार्या २ ५६  
 द्वितीयक्ष २७६  
 द्वितीययुग २५ ६  
 द्वितीयाविभक्ति २ ५६  
 द्वितीया २ ५६ ३६४६  
 द्वित्र २  
 द्विधाकृत ५३६  
 द्विधाकृतमवगादि ३ ३  
 द्विधाभाव २५६१  
 द्विपद ३६१  
 द्विपात २ ६  
 द्विपूरण २ ५६  
 द्विरावृत्त्याकणित ३६४१  
 द्विव्याहृता  
 द्विव ४ २  
 द्विव २ ६  
 द्विषत् ३१५१ ६१३  
 द्विष्ट ३६५  
 द्विसंख्या २३  
 द्वीप १ २ २३६ २ ६१ ६  
 द्वीपभिव २२२ ६ ६  
 द्वीपभव २४३४ ३ ७ ६ ५  
 द्वीपवत २ ६१  
 द्वीपवती २ ६१  
 द्वीपसम्बन्धिवस्तु २ ६३  
 द्वीपि २ ६२  
 द्वीपिचमच्छन्न २ ६२  
 द्वीपिनख ५ ६५  
 द्वीपिन २७६१  
 द्वीपिनामशाव लास्तर ४ ५७  
 द्वीप्यभिधव्याघ्र ४४६२

द्वीपिपुच्छ ५७६  
 द्वीपिविकार २७६३  
 द्वय १५६ २७५ ३७१  
 द्वयभाज १४६  
 द्वय २७६२

ध

ध २ ६  
 धकार ३७  
 धट २ ६५  
 धटी २ ६५  
 धत्त २ ६५  
 धत्तूर १७ ५५ ६३ २ ६६ ४ २५  
 ५ ५६ ५६१ १६  
 धत्त २ ६६  
 धन ३४५ ६६४ २ १२३५ १ ५५  
 १६ २३२१ ३२ २४१ २७३१ ३४  
 ६ ६ ६६ २ ६ ३ २६ ३१ ५  
 ३५ ३७ १ ६७ ३६३२ ६६ ४ १  
 ५१ ५६ ७ ४४ ३ ४५५१ ६ १  
 ५ ५ २४ ६१ ५१ ६  
 ५२२ ५४२ ४ ५५७१ ३ ५ ६१  
 ६१ २ ६ ६३ ६३ ६ ६४ २ २  
 ६६३ ६ ६  
 धन जय २७६  
 धनव २७६ ३१४ ५१६ ५ २६  
 धनधारण २७६६  
 धननिमित्त २ २  
 धनपति २  
 धनप्रब २ ६  
 धनवत २७७ ५२२  
 धनहृर २ ७१  
 धनहरी २ १  
 धनाधिकृत २७७२  
 धनाधिप ६६

घनाढ्यक्ष २७७२  
 घनिक २७ २  
 घनिका २ ३  
 घनिन् २ २७३  
 घनिष्ठ २ ७  
 घनिष्ठा २ ४ ५२१६ २  
 घनु अणी २ १  
 घनु २ ७४ ४५  
 घनका २ ६  
 घनुग्रह २  
 घनगुण ६ २  
 घन र्मा २ ५ ५१  
 घनबण्ड २  
 घनुधर ३ ५  
 घनुलता २  
 घनुबल्ली २७७  
 घनुष्कर २ ६  
 घनष्कोटि ३४४ ५ ७ २  
 घनुस् २५१ २७७६  
 घनु २ ५  
 घनुराशि ३ २७ ४ ६६ ७  
 घनेश २७ १  
 घनशितुविमान ३५१५  
 घनोपत्ति ५५३ ७  
 घनोपक्रम ३४३  
 घय २ २  
 घया २७ ३  
 घम्याक २ ५  
 घम्बग्रहीतु २ ७  
 घम्बन् २७ ३  
 घम्बतरि २२७ २७ ४  
 घम्बिन् २ ४ ३६ ६  
 घमन २७ ५  
 घमनी २ ५ २६१४  
 घम्मिल्ल ४५१

घर २ ६  
 घरण २  
 घरणि ४३२३  
 घरणी २  
 घरणीकव ५ २५  
 घरा २  
 घराघर २ ६  
 घणसि २ ६  
 घस्तु २ ६ ३६५५  
 घम २ १६३ ५१४ २ २ ३५  
 २२१३ २३ १ २ २५ ५ २४ ३६  
 २६ ३ २ ६४ ६ ३१६ ३ १  
 ३६३१ ४ १६ ४६३५ ४ ५६ ५  
 ६१७६  
 घमकामाण ३५३६  
 घमचरितु २ १५  
 घमचिता २५  
 घमण २७६३  
 घमपनी ३५ ५६३  
 घमपाल २७६३  
 घमपालक २ ६३  
 घमपुत्र २३  
 घमराज २७६ ३५६६  
 घमवासर ३५६४  
 घमशास्त्र ६६२२  
 घमशास्त्रपाठक २ १५  
 घमशील ३ ३ ६३६४  
 घवण २ ६४ ६५ २ ३ ३१६  
 घवणी २ ६५  
 घव १२६५ १६७६ २२६७ २६४ २७६५  
 ३११४ ३७७१ ३६५५ ४६५ ५ ५  
 ६५१३  
 घवतु २ २  
 घवन २७६५  
 घवल २७६६  
 घवलज्विर ६५२६

धवलगो ३४१७  
 धवलवास्त २६६३  
 धवला २ ६६  
 धा २७६४  
 धाक २ ६  
 धाणक २ ६  
 धाणका २७६  
 धातकी १३६६ ५२४१ ३  
 धातकीवृक्ष ६ ६  
 धातु २ ६६  
 धातुक ६ ५  
 धातुमब ६ १  
 धातुबाबरत १२६६  
 धातु २ १ ३१४१ ५६  
 धात्री १३५ २६ ५ २ १६ २ २  
 ३३ ४६ ६  
 धान २ ३  
 धाना २  
 धानुष्क २ ४  
 धानष्कस्थितिमब ६२२५  
 धाय १६ ५ २११६ २ ३ ३ ६४  
 ६३६५ ६४४२  
 धायकाण्ड २६३५  
 धायवच २ ४  
 धायपवन १११६  
 धायमब ३ ६  
 धायमवन १४  
 धायवीजाद्यावाप ६७४६  
 धान्यसप्राहक ३५७२  
 धायसूक्ष्माप ६११३  
 धायस्तम्ब १६ ३ ६३६५  
 धायाक २ ३ ३ ५ २७ ५६६३  
 धान्याविषयक ६ ५६  
 धायातर ३५ ५  
 धायोक्षपण २६४५

धाम २ ५  
 धामन् २ ६ ४ ३६  
 धामागव २  
 धार २ ११  
 धारक २ ६४ ६ ४३ ३  
 धारण २ २ ३ ३६ ३६४६  
 ४ ४३ ६६६६ ६ ६३  
 धारणा २ ६  
 धारणावती  
 धारणी २  
 धारा ४३३ २ १ ६१  
 धाराङ्कुर २ ११  
 धाराङ्ग २ १२  
 धाराट २ १२  
 धाराघर १६६ २ १३  
 धारित ६ ६३  
 धारोष्णकुम्भ २  
 धासराष्ट्र २ १३  
 धार्मिक २ २ २ १५  
 धाष्ट २ ६४  
 धावन २ १६ १ ५५ ४  
 धावना २ १  
 धावनी २ १६  
 धिक २ १  
 धिक्कृत १६६ ३ ११  
 धिगय ६३६ २ १  
 धिषण २ १ ५२५  
 धिषणा २ १  
 धिष्य २ १६  
 धिष्या २ २  
 धी १३४४ १६२३ १ ६ २६ ३  
 २  
 धीता २ २१  
 धीति २ २१  
 धीमत २ २२ ३ ५ ४१६

धीर २५ २ २२ ५४१  
 धीरा २ २३  
 धीवन् २ २३  
 धीवर २६३५ ३ २ २  
 धीवरी २ २४  
 धीवरीब्राह्मणात्मज २ ६४  
 धीसच्चिव १ ६  
 धत्त २ २५  
 धुन २ २६  
 धुनी २ २६ ६  
 धुधमार २ २६  
 धर २ २  
 धरधर २ २  
 धुरधरप्रम २ ६६  
 धरधरप्रमफल २ ६६  
 धधूर १ २६ १२५३ १३६२ २ ३२  
 ४३४६  
 धधरप्रमफल १३६२  
 धुस्तार ११  
 ध २ २  
 धक २ २६  
 धूका २ २६  
 धूत २ २६  
 धनक ३ ५४  
 धूनन २ ३ २ २  
 धूमि १ २३  
 धपन १५५  
 धपित  
 धम १ ३ २ ४२२३ ६५६५  
 धूमकेतन २ ३  
 धूमकेतु १८ ५ ६ २१ २ ३  
 धूमल २ ३१  
 धनाभास ३ ३  
 धूम्याट ११६७  
 धूम्याटविहग ११६६

धक्रपु छद्यायमवज ५६ ३  
 धत्त १६६३ १ ३ ५ २१४४ ६२ २२  
 २ ६५ २ ३२ १ २ ४६ ७ ५५६  
 ५ २ ६१३  
 धत्तक २ ४  
 धूवह २ २  
 धवहवृष ६६  
 धवहस्क धसा य ६५४५  
 लि १६१ २१५२ ३२३३  
 धलिगु छक ३२३४  
 धलीकवम्ब २ ३३  
 धसर २ ३  
 सरी १३३५ २ ३  
 धतरा २ ३५  
 धतराष्ट्रयोगिन २ १  
 धतरा द्रुसच्चिव ६२५६  
 धतराष्ट्रापय २ १  
 धतराष्ट्री २ ३५  
 धृति ५१४ २ ३६ ४ ३  
 धृतिमत २ २२  
 धत्वन २ ३  
 धत्तवरी २ ३  
 धृष्ट ५४  
 धृष्टि २ ३७  
 धृष्ट २ ३  
 धनु २ १६ २ ३ ३१४६ ४ १६  
 धनुका २ ३६  
 धनमव २ ७३  
 धनुसङ्घ २ ४  
 धनुक २ ४  
 धय २ ३६ ३६३२  
 धवत २७६४  
 धोत २ ४  
 धोरण २ ४१  
 धौतकौशय ३१२६



धौताञ्जल २ १६  
 धौताञ्जनी २५५१  
 धौताशुकद्वय ३६  
 ध्यान ३२ ६ ६३ १  
 ध्यानयोग ५३  
 ध्यानहीन १२५  
 ध्यानिन् ५६६  
 ध्याम २ ४२  
 ध्यामकौषध ३५६६  
 ध्यामसन्नकगधद्रय ६५३१  
 ध्यामस्तम्ब ३४४३  
 ध्याजि २ २  
 ध्रुव २ २ ३  
 ध्रुवा २ ४  
 धस २६  
 ध्वज ३३ १५५६ ६ २  
 ३  
 ध्वजिन् २ ५  
 ध्वजिनी २ ५  
 ध्वनदम्बुव ५३  
 ध्वनि १ १३ १६६३ २६१ ४ ५६  
 ५५ ३ ५ ४४  
 ध्वनिताला २ ६  
 ध्वस्त २ ६  
 ध्वाङ्क्ष २ ५३२  
 ध्वाङ्क्षतिघातु २  
 ध्वाङ्क्षा २ ४  
 ध्वाङ्क्षि २  
 ध्वाङ्क्षी २ ४  
 ध्वान ४ १  
 ध्वात २३ २६३  
 ध्वातरात्रि २३६

न

न २ ४

नकुल ४६६ १५ १६१६ २ ६  
 ३३२६ ३ ३३६ ४६४४ ६ ५२ ३  
 ६ ६ ६६  
 नकुलग्रामव १२२२  
 नकुलसम्बन्धिन २६ २  
 नकुली २ ५  
 नकबार २ ५  
 नक्तञ्जर २ ५१  
 नक्त १४६३ २ ५१ ३ ६ ५३  
 नक्षत्र १ ६१ १६ २ ६५,  
 २३३१ २ २ २६ २६१५ ३५३१  
 ३६२ ४ ४ ६ ५१६३ ६२६५  
 नक्षत्रनमि २ ५२  
 नक्षत्रम लाक्षनकरिमणान्तर २ ५२ ६५६  
 नक्षत्रावलि २ ५३  
 नख ११ ६ १२ ६ २ ५४ ३४३६ ६३६  
 नखबताविकस्याङ्क ३५१३  
 नखर २ ५  
 नखराघातमव ५ २  
 नखरायध २ ५  
 नखस्याङ्क ३५१३  
 नखी २ ५४  
 नखौषध ६११  
 नग ६ १ ६६ २ ६ २ ५५  
 नगमण २ ५५  
 नगर १२१ २६ ३ ३ ५ ६ ५२६  
 नगराविबहिष्कृति २६६२  
 नगरान्तर ३५२३  
 नगरोद्भव २६१  
 नगान्तर ६१७  
 नगौकम् २ ५६  
 नग्न १२४३ २६३ २ ५६  
 नग्नक १६६३ २ ५७ २६७६  
 नग्निका २ ५७  
 नका २ ५७

नञाथक ४

नट १६३५ २२ २ ३ २ ५

३६५ ६ ४६२१ २३ ६१३३ ६४ ५

नटभार्या १३ ४

नटी १६ २ ५ ६२

नट(ल) ३५६४ ५५५२

नटसन्नकस्तम्ब ३५६३

नटस्तम्ब २ ५

नत २ ५६

नतजानु ६४२

नताखण्डप्रव्य २३६१

नति २ २ ३ २३ ५ ४३

नव २ ६१ २ ६ ५६१६ ६३४१

नवनु २ ६१

नवसम्बन्धिन २६१

नवान्तर २३ १ ६४३५

नवी २२२ ३७ ६ १५१ १६६३

१ ६ २३४ ६३ २४६३ २ ३

२ २६६ २६६६ ३१४ ६, ३२६

३४६ ३ ४२३३ ५५ ४६४

४७१ ६६ ५ २१ ५१४ ५२२१

५ १६ ६ ३६ ६६, ६१३५ ६२

६३४४ ६ ३५ ७ ६६३२ ३ ६ १४

१

नवीकात २ ६१

नवीकाता २ ६२

नवीजानुनवृक्ष ३ १३

नवीतट २३३ ६२७

नवीतीर ६५

नवीमव २ ६२

नवीमिव ५ २४२ ३२६२ ६ ३६

६१६६ ६३४२

नवीमव ५१ २३ २५३२ ४ २६६

३ ३७ ३५२३ ३ ४६७४ ६ ६

नवीमात्र ६६७ ६३४२

नवीवक्त्र ३४ ५

नवीवग ३ ७

नवीष्ण २ ६३

नवीसम्बन्धिन २६

नट २ ६३

नटतर २४२१ ३४५ ४६२ ७५

नद्यादिजलबुहण ३५४

नद्यादितट २ ६

नद्यादिप्रवाह २ १

ननावु २ ३

नन २ ६४

नव २

नवक २ ६५

नवतिघातु २ २

नवथु २ ६

नवन २ ६६

नवनकमनु २ १

नवना २ ६६

नवत २ ६

नवती २ ६

नवययथ २ ६७

नवयन्त २ ६६

नवयती २ ६६

नवयितु २ ६ ६६

नवा २ ७

नवाभात्यातर ४६७७

नवि २ ७१

नविनु २ २

नविनी २ ३

नविषधन २ ७४

नवीश्वर २ ७२

नन्दावत २ ७५

नन्दावतगुल्म २३६१

नन्दावतपुष्प २३६१

नपात २ ७६

नर्पसक ६५७६  
 नप्तव ४६ ४  
 नप्तु २  
 नभश्चर २ ७  
 नभस् २ ५५ ५ ६५६६ ७६  
 नभस २ ६  
 नभाक २  
 नभाका २  
 नभत २  
 नभतिघातु २ ३  
 नभन २ ६  
 नभस २ १  
 नभस्कार २ २  
 नभस्कारी २ २  
 नभस्कारीस्तम्ब ६२६४  
 नभस्कृत २ ५६  
 नभस्य २ २  
 नभस्या २ २  
 नभि २ ३  
 नमुचि २ ४  
 नम्र ३ २६३ ३६३५  
 नय २ ४ ५ ३ २६ ३ ५१  
 नयन २६२ ६ २६ ६  
 नयनलोभन् ३ ४  
 नयहीन २ ४६  
 नर २२२ २ २६ ५ ३४२ १५  
 ५ १  
 नरक १५६ १६११ २३ २६७  
 १ २ ६ २६३ ५२ २ ६५ ५  
 नरकभव २३ १ ६२३६  
 नरकयोगिन २६३  
 नरकातर १२१ ३१७६ ६२५३  
 नरकासुर ३५६६ ४ ३३ ६१ ५२२१  
 नरकोलीतिविश्वतबदरीभव ११ १  
 नरयोगिन् २६२

नरश्रष्ट ३ ३६  
 नरसहचारिन २६३२  
 नरसिंह १६४  
 नराकारयोचित ६१  
 नराङ्ग २  
 नरेन्द्र २  
 नरेन्द्रपत्नी २  
 नस्तक २  
 नस्तकी २ ६ ६६ ६ ५२ ४  
 नस्तन ५ ६ ४ ६६ १  
 नर्त्तनप्रिय २ ६  
 नर्तितु २६१३  
 नमठ २ ६  
 नमव २ ६  
 नमवा २ ६ ६५२  
 नमवाख्यनवीमिव ४ ६  
 नमवानवी ६५५  
 नमन् १६१२ ३३ २ ३६ ३ ६३७ २  
 नमर २ ६१  
 नमरा २ ६१  
 नल २ ६२  
 नलव २ ६३  
 नलनिर्माण २ ५४  
 नलपितु ५५५  
 नलघातु ३४६  
 नलिका २ ६३  
 नलिन २ ६३  
 नलिनी २ ६३ ३१४२  
 नलियावर्तित ६२१  
 नलोत्पात ३  
 न-यपराख्यानटी २ ५६  
 नव २ ६४  
 नवबल ६२१  
 नववृषितकया ६२४३  
 नवनीत २५ ६ २ ६५ ३ २६ ३३ २

नवपल्लव ३ १६  
 नवप्रसूतगवी २ ३  
 नवम २ ६५  
 नवमराशि २ ६१  
 नवमसामन ६२३६  
 नवमाहृत ३५२  
 नवमाला २ ६६  
 नवमालिका २ ६६  
 नवमाली ३ ५२ ६२६२  
 नवमी २ ६५  
 नवमीतिथि ५२२  
 नववध ६६५२  
 नववस्त्र २३  
 नवसूतगवीभवकुम्भ ३३ ६  
 नवहस्तप्रमाण २६३६  
 नवा २ ६४  
 नवीछव ३  
 नवोढा ५ २२  
 नवोढाकाति २२२३  
 नय २ २ ६  
 नयत्प्रजयोषित् ३ ५  
 नश्वर २ ६६ ३६३५  
 नष्ट २ ६ ४४५६  
 नष्टबीज २६१२  
 नष्टा २ ६  
 नख २ ६  
 नवृष २ ६  
 नाक २ ६६  
 नाक २६  
 नाकुल २६ २  
 नाकुली २६  
 नाक्षत्रवसर ५ ६  
 नाग २६ ३ ३५१४ ४६२  
 नागकयातर ३४  
 नागकेसर १ २६ १२५३ १३ १५७५

२६ २६ ३ ६ ४ २५  
 नागकेसरचणक ६ २१  
 नागकेसराल्लयपादप ३  
 नागजननी १ २  
 नागवत २६ ६ ५६ ३  
 नागवतक १ १  
 नागवती ७६४ २६ ३ ६ ३६६  
 नागपाश २६  
 नागपुरी ४ ५३  
 नागपुरोहित ६ ३४  
 नागपुष्प २६ ६ ४६६२  
 नागबला ३२५  
 नागबलाल्लयगोष्ठमधाय १६६२  
 नागबलासक्तमवज २३  
 नागमिद्व ३ ६६ ६५ ४ ६७ ६  
 नागमवण २६ ६  
 नागभव २ ३५ ६ ५६४४  
 नागमध्यमगत ६६ ३  
 नागमर्दिनी ४२ ६  
 नागमुनिमिव ३३२२  
 नागयष्टि २ ६  
 नागर १७६६ २१६५ २६१ ३ ५१  
 ५४१ ५ ५७  
 नागरङ्ग १ ६२ १३७ १६५१ ६१  
 २१६६ २६१  
 नागरङ्गक ४५ ५  
 नागरङ्गफल ६२१  
 नागरव २६ ६  
 नागराज २ १४  
 नागराजातर ३१३७  
 नागरीषध ६१ २  
 नागलोक ३२५४  
 नागवल्ली २४२४ २६ ३  
 नागवल्लीवल २४२४  
 नागवारिक २६११

नागविशेष ३ ४३ ४३  
 नागाञ्जनमसुन्दरी २७ ६  
 नागातर ३५२ ६५४५  
 नागी २६ ५  
 नागोवरी २६१२  
 नाटक २६१२ ४ ६२ ६  
 नाटकाङ्ग २१५५  
 नाटकाङ्गक ३११३  
 नाटयितव्य २६१४  
 नाटयितु २६१३  
 नाटिका २६१२  
 नाट्य २६१३  
 नाट्यगोचरवाद्यबावकसामग्रीविन्यास ३६७  
 नाट्यनादीपाठक २ ७२  
 नाट्यविभूतच द्वातर ६६६४  
 नाट्यस्थकशिक्ष्याविवृत्तिभवे ६३ ७  
 नाट्यभाङ्ग ३६ ६ ६२ ५  
 नाट्यारम्भाधनातर २६२१  
 नाट्योन्मिन्नगुण २६६३  
 नाडि २६१५  
 नाडिका २  
 नाडी २६१४ ३ ५ ४ ३६  
 नाडीतरङ्ग २६१६  
 नाडीव्रण १ ३ २६१  
 नाथ ११ ६४५ २६१६ १ ४१७४  
 ६६६१  
 नाथा २६१  
 नाथात २६१७  
 नाव २६१  
 नावय २६१ ४४७३  
 नावेयी २६१  
 नाना २६२  
 नादि २६२१  
 नादीवृक्ष ६६ १२१ ६६ १४२२  
 ४७ २२३४ २३७१ २४७२ ६ २७४५

नायित १७७ ३ १६ ६ २ ६ २६४२  
 २६२२ ५२६  
 नायितभाष्यक १५४३  
 नायितशास्त्र १६  
 नाभि १६४५ २२ ७ २६२३ ३६३  
 नामन् २५५ २६२५ ४ १ ५ ६२२१  
 ६३ ६  
 नाय २६२६  
 नायक १६६ २६२ ४६५१ ६ ४६  
 नायकप्रिय ३३६२  
 नायिका २६२७  
 नायी २६२६  
 नार २६२  
 नारक २६३  
 नारकीट २६३  
 नारङ्ग ६२१ २६३१  
 नारङ्ग २६३१  
 नारङ्गपावप ६१३  
 नारङ्गफल ६२१  
 नारव ११ ६ ६ १२ १ ३३५  
 नाराच ६१६ २५ ६ २ ६१  
 नाराची ६१६ २६३२  
 नारायण २६३२ ६ ७  
 नारायणावतारभव २६३३  
 नारायणी २६३३  
 नाराशस २६३४  
 नारिकरज्जुम २२६  
 नारिकेल २६२१ ३१५ ४ ६६ ५३५१  
 ६५ ७  
 नारिकेलफल २२४६  
 नारिकेलसस्याभमणि ६३६७  
 नारिकेलालि १७५७  
 नारिकली ४ ४७  
 नारिमवाद्यपावप १ १२  
 नारिसङ्गम ४४ ७



५५ ३६६६ ५४५३  
 नियकचङ्ग ३१२  
 नित्यशङ्कित २६५६  
 नित्यशङ्कित २६५६  
 नित्यहोम ३  
 नित्याथ २६४२  
 निवशन ६ २६ ६  
 निवाध ५५ २ २ २६५६  
 निबान २ २४६३ २६५  
 निविधिका २६५  
 निवेश २६५६  
 निवेशन २६५६  
 निव्रा २ २३ ४४ २  
 निव्राण ६४६५  
 निव्राल २६६ ६१ ५ ५ ५६  
 निव्राशील २६६१  
 निव्राहीन ६  
 निघन २६६१  
 निघा २६६२  
 निघान २६ ६२  
 निधि ६६ १७३६ ६ २६४३  
 निधिभिद्  
 निधिभव २ १ ३ ३२ ३१३  
 निघुवन २६६२  
 निमाव ३१ २  
 निदक ३३ ४  
 निवन ३६६  
 निन्वा २ ४ ४ ५ १ ३३ १६ ६ २३११  
 २ १७ २६६३ ६६६५  
 निवाकर ४ ६  
 निमित्त १६७ ३६६ १४३५  
 निपत्रा २५२६  
 निपात २६६३ ५४३३  
 निपुण ६ २५१ १४६५ ३ ७  
 निम २६६४

निमत ५ ३ ५५२१  
 निम लणोपनत यग्रव्य ४१५  
 निमित्त १६६ २६६४ ५ ६६ ६७  
 निमित्तन ५ ६  
 निमिष २६६५  
 निमिषविर्जित १३  
 निमीलन २६६५  
 निमेष २६६५  
 निम्न १ ५  
 निम्नगतु २६६६  
 निम्नगा २६६६  
 निम्ब ३२२ १५ २१४१ ३३ ३ ४७६२  
 ५ १ ६ ६  
 निम्ब ३२६  
 निम्बपावप १२४३  
 निम्बवृक्ष २१ ३ ६३५२  
 नियति २६६६ ५४२  
 नियन्त्रण २६६७  
 नियतु २६६  
 नियम २६५ २६६६ ६ ५ ६१  
 नियमकतु २६६६  
 नियमन ३६१ ५३६  
 नियामक २६६ ६  
 नियत २६६६  
 नियोग ६ ६ ६ ६१ २ ६६ ५३ १  
 ६६६५  
 नियोय ३६५७  
 निरङ्गल ३३५३  
 निरञ्जना २६  
 निरय २ ६  
 निरयातर २६७४  
 निरयकवाच २२३  
 निरसन २१६ २६ १ ३१६६ ६ ४५६२  
 निरस्त २६ २ ३ ६२ ३६५२  
 निराकृत २६७२

निराकृति २६७३  
 निरामय २६ ३  
 निराश ६६ २  
 निराश्रय २ ५  
 निरीक्षित ४ ५  
 निरुक्त २६७४  
 निरुधा २६ ६  
 निरूपण २६ ६  
 निरुह २६ ७  
 निरोध २६ ५५७२  
 निद्र २६  
 निष्कृति २६  
 निष्कृतियोगिन् ३ ५  
 निगताक्ष ३ १  
 निगताब्ज २६ १  
 निगन्तु ३ ३  
 निगम २६ ३ १३ १ २  
 निगमित ३ ११  
 निगुष्ठी २६७ ५२६१  
 निर्ग्रन्थ २६७६  
 निर्ग्रन्थक २६  
 निष्कल २२ ५ ५४ २  
 निष्कप ७१  
 निष्करा २६  
 निष्कर २३४  
 निष्क ५२ ६  
 निर्णय १५६ २६७  
 निर्णयक ४६२५  
 निवट २६ १  
 निवय २६ १  
 निवर २६ २  
 निर्वेश १६१ २६ २  
 निर्वर्ण ६ ३७  
 निनर २६ ३  
 निर्वाण १६ ५ ६४

निबल १६४४  
 निबुद्धि २२१ २ ४६१४  
 निभस्तन २६ ३  
 निभय २७३ १६  
 निर्भाग्य ४१  
 निमति २ १  
 निमद २४  
 निमदगज ५  
 निमल ६ १२ २ ५ २१ ३ २६ ४  
 ५४५६ ५५ ५  
 निमलघोल ४१३४  
 निमलीकृत ६२३  
 निर्माण ५७१ २६ ३६३ ६३४५  
 निर्मापित १३ ६  
 निर्माय २६ ४ ५  
 निर्मित १५२ ६५१२  
 निर्मिति २ २ २६  
 निर्मुक्त २६ ५  
 निमुष्कहय ६६  
 निर्माक ६७३ २६ ६  
 निर्माक्षक ४५ २  
 निर्याण २६ ६  
 निर्यातिन २६ ७  
 निर्यातिना २६ ७  
 निर्याम २६  
 निर्यास १२२ २७३६ २६ ४६५  
 निर्युह २६ ४१२६  
 निर्युहनामन् २६ ६  
 निलज्ज २६ ६  
 निलज्जा २६ ६  
 निलप २६६  
 निर्लोभनुप ६६७  
 निर्लोभन् ७  
 निबहण ३ १५  
 निर्वाण २६६



निर्वाणज्वाल ५  
 निर्वाणानि ५  
 निर्वाह ३ ५ २६६१ ३१ ३  
 निर्वापणा २६६२  
 निर्वापण २ ५  
 निर्वासना २६६२  
 निर्वाक-प ३ १  
 निर्वामाण २३२  
 निर्वाध २  
 निर्वाधभोगिविशव ३५१५  
 निर्वाधसपभब ६ ६२  
 निर्वाध १६४  
 निर्वात ३१५  
 निर्वात २६६ ६३  
 निर्वाह २६६३ ५२५३  
 निर्वाह २६६  
 निर्वाध २४ २६६४  
 निर्वाधन २६६४  
 निर्वाधि ३ ६६  
 निर्वाधन २६६५  
 निर्वाह ५५२  
 निर्वाह २६६५  
 निर्वाह ३ २६६५ ३ २  
 निर्वाधन २६६५  
 निर्वाध २६६६  
 निर्वाध २६६६  
 निर्वाध २६६६  
 निर्वाध ६३६१  
 निर्वाध २६६७  
 निर्वाह ४६१ १२६३ २६४३ २६६  
 निर्वाह २६६  
 निर्वाध ३३३६  
 निर्वाध १३ ५ ५३३  
 निर्वाह ११६ १५५ १६६ ६  
 निर्वाह १६५५

निर्वाह ३४५ २६६६ ६५ ६  
 निर्वाह २६ २  
 निर्वाधन ३६१  
 निर्वाह ३१६३ ५  
 निर्वाध ६५१  
 निर्वाध ५४  
 निर्वाधन २६६६  
 निर्वाह ४२५ ६६ २ २६ २४६  
 २६६६ ३१४ ४६२ ५२१ ५४५  
 ६७६  
 निर्वाह ६ १२  
 निर्वाध ३ १  
 निर्वाध ३  
 निर्वाह ५६२५  
 निर्वाध ५५५५ ६२ ६  
 निर्वाध २५ ५  
 निर्वाह ४६ ३ १  
 निर्वाध ५६३  
 निर्वाध २ २४  
 निर्वाध ३ २  
 निर्वाध ६१४  
 निर्वाह २४६  
 निर्वाह ११ ६५४ २३ ७ ३१४६ ६५३५  
 निर्वाध १२ ५२ ६२ ४१ ५४७  
 १३६३ १६६६ २३ २६४  
 ६ ३ १ २ ५३ २ ६३४६  
 निर्वाध ६ १५ ६ २ ४३ ६५६६ ६६  
 निर्वाध ३ २  
 निर्वाध ४११ ५ ६६ २६ ३ ४५  
 ५ ४२ ६५११  
 निर्वाध ११६ ५ ६ ३ ३  
 निर्वाध ५ ६  
 निर्वाध ३ ४  
 निर्वाध ३२६६  
 निर्वाध २४ ३ ४

निषङ्गधि ३ ५  
 निषदधर ३ ५  
 निषद्वरी ३ ६  
 निषध ३ ६  
 निषधयोगिन ३ ५  
 निषद्याद्यसरस्थित ३ ५  
 निषाव ३  
 निषावविप्राज ४ ४६  
 निषावशनकीज ६३३४  
 निषावीकत्रियोद्भव ५६४२  
 निषध ४ १ ६ २६६ २ ५७ २६  
 ३ ३ १ ४ ३ १५ ३ ६१  
 ५ ४६  
 निषधक ५३२  
 निष्क ३ ६१ ४ २  
 निष्कला ३ ११  
 निष्काम ३६३२  
 निष्कालङ्कार ४ २५  
 निष्कासित ३ ११  
 निष्कुट १४ १ ३ १२  
 निष्कुटी ३ १२  
 निष्कुटधमविर २१  
 निष्कृति १६३ १६३१  
 निष्कोश ३ १३  
 निष्क्रय ३ १३ ४१२६  
 निष्ठध ३ १४  
 निष्ठधा ३ १४  
 निष्ठा ३ १४  
 निष्ठीवन २६७१  
 निष्ठर २६ १३५३ ७६ ३ १६ ४६  
 ५ ५५  
 निष्ठरमाधिन २६ १  
 निष्ठरा ३ १६  
 निष्ठरोक्त ३१६५  
 निष्ठभूत २६७२

निष्पट १६४  
 निष्पत्ति ३ १५ ३७६ ३ १  
 निष्पत्तिक्षत्र ११६६  
 निष्पन्न ६ ३  
 निष्पाव ६३२ ३ १७ ३२२५ ६ ४५  
 निष्पावाद्यधाय ६३२  
 निष्पावसन्नकधाय ५१६  
 निष्पणषशिलापट्ट २६६  
 निष्प्रभ ५३६१ ५ २२  
 निष्प्रयोजन ५ ५५  
 निष्फल २६ ५  
 निष्फलभाषण ३ ६  
 निष्फलोद्योग ५ ६१  
 नि सङ्ग ६७  
 नि सार १ २ ५३४१  
 निस ३ १  
 निसग ३ १  
 निसा ३ १६  
 निसष्टा ३ १६  
 निस्तरण ३ २  
 निस्तल ३ २  
 निस्तार ३ २ २१  
 निस्तुषित ३ २२  
 निस्त्रिश ३ २२  
 निस्त्वर ३ ६७  
 नि स्नहपिण्डक ३३४  
 नि स्नात ४६ ३ २४  
 नि स्नायणकमन ३ २४  
 नि स्व २६७६  
 नि स्वन २३५ २३४७  
 निस्सङ्गा ३ २३  
 निस्सरण ३ ३ २३  
 निहत ३ २५  
 निहमन २६५  
 निहतु २६५१

निहित ३ ६४ ३७ ५

निह्वय ३ २५

नीक ३ २६

नीका ३ २६

नीकाश ३ २

नीच ११ २ ६ ६५ १६ १ १ ६

६२ २२ ४ २६ ३ २ २६ ३ २

६२ ६ ३२९१ ३५६ ४६५ ५ ६३

५६ ६१३७ ६६ १

नीचजाति ६५

नीचजातिकिक्रूर ६६ ६

नीचस्वरयुक्त ३ २५

नीच स्वर ३ २

नीच स्वरवत् ३ २

नीड १५६२ ३ २

नीत ३ २६

नीति २ ३ २६ ३

नीतिक्रियाकृ ३ ४६

नीथ ३ ३

नीथा ३ ३

नीप १ २२ ३ ३१ ३ ५३ ४ ६६

नीपक ३ ३ ३ ७२ ३ ५४

नीपद्रुम २२ ६

नीपप्रसव ३ २

नीपान्तर २ ३३

नीर ५६३ २२४५

नीरज २ ६१ ३ ३१

नीरति ३१५

नीरव ३२

नीराजितहय ५३२६

नीरज् १२१३ २६ ३

नीरीग ५

नील ३ ३२

नीलक ३ ३४

नीलकण्ठ १ ३ ३ ३४

नीलकण्ठखग ६ ३३

नीलकपिथ २३ ६

नीलकमल ३४६२

नीलकेशी ३ ३५

नीलगिरिकर्णी ४३२

नीलग ३ ३५

नीलग्रीव ३ ३६

नीलक्षिणी ११५ २६३६ ३ ५६ ५२

६३ ५

नीलपूर्वा ६ १५

नीलपथ १ ४४

नीलपवध्रपवक्त्रव्याधि ५ ५

नीलमधिका २ ६२

नीलरन २

नीललोहितनिम्बक २३२२

नीलवज्र १५५

नीलवस्त्र २१७५ ६१३

नीलवासस ३ ३६

नीलवृषोसर्ग ६२ १

नीलशिरोधर ३ ३६

नीलरीष ३ ३

नीलशफाली २६

नीला ३ ३३

नीलाञ्जसा ३ ३

नीलाम्बर ३ ३

नीलाशोकद्रुम ३ ३१

नीलिका १ ३ १६७६ १६६२ ३ ३

३३६ ६६२५

नीलिकाण्यलोह ६ २२

नीलीकाल ३६५

नीलिकौषधि २ २१

नीलिस्तु ३ ३४

नीलिनी ३ ३ ४१५४ ४६१३

नीली १३४ २४७२ २४ ३ ३३ ३५

३६ ४३ ६२७ ६१७

नी-यावि ५१२  
 नी-योषधि ६३४ ४ ६  
 नीवर ३ ४  
 नीवल ३ ४  
 नीवाक ३७ ६३ १  
 नीवार ४२६  
 नीवारधाय ६५१६  
 नीवारसनाकधायमव ६३३  
 नीवि ३ ४२  
 नीवी ३ ४१  
 नीवृत ५२  
 नीवृद्ध ५१ ३६ २२६ २५ ६ ६४३६  
 नीवृद्धिष ३ ६२  
 नीव ३ ४२  
 नीहार ४ ६ ३ ३  
 नूतन ११ ३ ४३ १६  
 नूतना २६  
 नूतनवस्त्र ६३३  
 नूधत् ३ ४४  
 नून ३ ४५  
 नूपुर २४ १ ६ २६  
 नु २१ ३ ४५  
 नृणातिभिर् ३२७६  
 नत्त २४१७ २६१३ ३  
 नृत्तवशान ३ ७६  
 नृत्तस्थान ५३३ ४६१६  
 नृत्य ४ ६ ५ ७  
 नृत्यमव २ १६  
 नृवृषितकन्यामव ६२४२  
 नृप ६५२ २५७ २६६३ ४ ३१ ४ १५  
 ३ ६२११ ६५४१ ६६२५  
 नृपच्छत्र ३ ४६  
 नृपति २ २२५ ३३१ ४३२६  
 नृपतिप्रमाधिष्ठित २ १५  
 नृपतिमहिषी २६६४

नृपनाश २१  
 नृपभाग १२६६  
 नृपभागधय ३ ३  
 नृपयज्ञ ३ ४६  
 नृपयोषित २ ३ ५३  
 नृपलक्ष्मण ३ ६  
 नृपवश्यनृपस्त्री ६६६१  
 नृप वरनिर्यातन ३६६२  
 नृपाङ्ग ३ ६  
 नृपा मज ३ ४७  
 नृपा मजा ३  
 नृपात्यय ६ ३  
 नृपातर २ २६ २ ६ ३ ३ ३२  
 ३ २६ ३ ६२ ३ ५३ ६२ १  
 नृपाह ३ ४  
 नृपोत्तम ६६३  
 नृभ ३ ४  
 नृभव ३४ ३  
 नृमर्शन ३ ५२  
 नृशत १६३६  
 नृत् ३ ४  
 नृत् २६२६ २७ ३ ४६ ६७३४  
 नृत् २३ २५ ३५ २६ २ ३ ५ ५५३४  
 नृत्तच्छत्र ५१३७  
 नृत्तपिण्ड ५४ ५  
 नृत्तमध्य २४२  
 नृत्तक्षिप्त् ३५१२  
 नृत्तकान्तिर २४४  
 नृत्तरोग ३३२ ३५१६  
 नृत्तरोगातर  
 नृत्तात २१२  
 नृव ३ ५  
 नृप ३ ५१  
 नृपय्य ३ ५१ ५६७५  
 नृपाल ३ ५२ ५३

१ ३३५ ३ ६२ ५१४६  
 ५२६ ६४ ६ ५३ ५ २६ ६२ ५५२३  
 २४ २६ ३३ ५ ६१५२  
 पक्षिनीड १४१५ ३  
 पक्षिपक्ष १ ५६ २१ ६ ३  
 पक्षिपञ्जर ५६ २  
 पक्षिपोत ३ ७  
 पक्षिबन्धन २३  
 पक्षिमिद्व ६१६  
 पक्षिमव ३३५३ ३४३ ६६१ १  
 पक्षिमान १ ६६ ३१११ ५५ ४  
 ५ ६१  
 पक्षिराज ६६७  
 पक्षिवाचक ५६  
 पक्षिलस्वामिन् ६  
 पक्षिशाल १४३  
 पक्षिशिवा २ ५  
 पक्षमन् ३ ७४ ४६५७  
 पक्ष्य १६३२ ५१२  
 पक्ष्यन्तर ३३२१ ६१५ ६ ५६  
 पक्ष्यादिकपक्ष ३११२  
 पक्ष् ११५५ २२२ २५ ३ ५  
 ५३ ५ ५६२१  
 पक्ष्गघिजल २२१  
 पक्ष्ज ४२३ ३१३७  
 पक्ष्जस्त ३ ५  
 पक्ष्क १२२४  
 पक्ष्कार ११५५ ५६ ३ ६  
 पक्ष्कित ५ ५ ३ ७६ ३१३६ ३३ ६  
 २६ ४३ ४ ४६६ ४ २१ ५५३६ ४५  
 ६१७  
 पक्ष्कितसधात ६३३६  
 पक्ष्गु १ ३ ४  
 पक्ष्तिघातु ३ ७६  
 पक्ष्ज ३ ७

पक्ष्ज ३ ३२३६ ५ ४१  
 पक्ष्मपच ३  
 पक्ष्मपचा ३  
 पक्ष्ज ३ ७६  
 पक्षलिम ३ ६  
 पक्ष् ३  
 पक्ष्छी ३  
 पक्ष्चक ३ ६  
 पक्ष्चगुत ३ १  
 पक्ष्चता ३ १  
 पक्ष्चव ३ १  
 पक्ष्चवशी २ ५ ३ २ ३२१  
 पक्ष्चवशीतिथि ३५५५  
 पक्ष्चपूरण ३ ४  
 पक्ष्चभारत ३ ६५  
 पक्ष्चभाव ३ १  
 पक्ष्चमत ३६१  
 पक्ष्चम ३ २  
 पक्ष्चमपरम्पराख्यपुत्रापत्य ३२२२  
 पक्ष्चममवन ३४२६  
 पक्ष्चमविमर्षित ३ ३  
 पक्ष्चमस्वर ५२ ७  
 पक्ष्चमी ३ ३  
 पक्ष्चमीतिथि ३५५५  
 पक्ष्चम्यथ ३६ १ ३ ५१  
 पक्ष्चारनिप्रमाण ३४६७  
 पक्ष्चराल ४ २  
 पक्ष्चरालपय पानवत ६२४  
 पक्ष्चवषण ३ ६  
 पक्ष्चसामिद्व ६६६६  
 पक्ष्चसुगंध ३ ४  
 पक्ष्चाक्षरपाव २  
 पक्ष्चाङ्ग २२५ ३ ५  
 पक्ष्चाङ्गपत्त ३ ५  
 पक्ष्चाङ्गसहति ३ ६

पञ्चाङ्गसमाहति ३ ५

पञ्चाङ्गी ३ ५

पञ्चाङ्ग ३ ६

पञ्चाङ्गलिमित ३ ६

पञ्चानन ३ ६

पञ्चाल ३

पञ्चालिका ३

पञ्चाली ३

पञ्चाशद्विंशत्यस ३६६

पञ्चास्य ३२ २ ५६

पञ्चिका ३ ६

पञ्जर ३ ६३ ५३

पट ३ ६

पटगृह ५ ३

पटगृह ५६ ५

पटञ्जर ३ ६१

पटभट्ट ३ ६

पटल २१ ३ ६२

पटली ३ ६३

पटवास १ ६ ४२५१ ४७७३

पटवेश्मन् १ ६ ५२३

पटह ५३ ६ १२१ ३ ६३

पटि ३ ६४

पटितु ३२ २

पटी ३ ६

पटीर ३ ६५

पट २५६५ ३ ६६ ६

पटरस ४ ४१

पटरसान्वित ४ १

पटल ३ ६६

पटोल ६६६ ११४२ २४४३ ३ ६६ ४६५५

पटोलक ११४१

पटोलमूल ४६५ ५३ ५५

पटोलवल्ली १ १

पटोलशाखा १३३५

पटोली २२७६ २३३६ ३ ६ ३१

पट्ट ३१

पट्टन ३१ २

पट्टबाध ३१ ३

पट्टबन्धनकतु ३१ ४

पट्टशाटक ३१६१

पट्टसूत्र ४६ १

पट्टिकालोभ १६२६

पट्टी ३ ६

पठन ३२४

पठि ३१ ४

पण ३१ ५ ५१ ४ ५७५६

पणतिघातु ३१ ७

पणतुलीयास २ ६

पणव ३१

पणि ३१ ७

पणिक ३१

पण्ड १६ ६२

पण्डक ५१ १ ६ १२६

पण्डा ३१ ६

पण्डित २ १५३१ २७२३ २ २२

३१ ६ ३६२ ६ ३ ६६ ४ २

६५ ५२ ६ ५३६५ ५६५६

६४६६ ६५ ३

पण्डितम्मयक ६३१

पण्य ३६ ४४६ ५४

पण्ययोवा ३ ३१

पण्यवीथी ५

पण्यस्त्री ३ ३६

पतङ्ग ३१११

पतङ्गिका ३४३

पतङ्गलिमूलभव २६५

पतत्र २३ ३ ३११२

पतवग्रह २ ७ ३६४१

पतन १६ ३११३ २ ३२५२

पतनकसु ३११२  
 पतनोत्सुक ३३५  
 पतयाल ३२५५  
 पताका २१३६ २ ४४ ३११३ ५६६१  
 पताकिन ३११४  
 पताकिनी ३११४  
 पति २ ६५ ३११४ ३  
 पतिघातक ३११  
 पतिष्नी ३११  
 पतिजनक ६१६  
 पतित ३११ ३२ ६ ६५४  
 पतितुमेष्ट पतितुमिष्ठ ३३  
 पततिघातु ३११  
 पतिमुक्ता ३ २३  
 पतिवरा ५१ ६६ ६  
 पतिव्रता ६२६४ ६३६५  
 पतुमेष्ट-पतमिष्ठ ३३४  
 पतेर ३११  
 पत्तन ३११६ ३४ ५  
 पति ३१२  
 पतिसप्तकलक्य ३१२२  
 पत्तरसप्तकशाकस्तम्ब ४१३३  
 पत्तु ३२६  
 पत्नी २२१७ ३११५ ७१ ५१४  
 पत्नीकनिष्ठस्वसु ३१२५  
 पत्नीकनीयसी ६७५  
 पत्नीघ्रातु ६६२६  
 पत्नीयधीयसी ६६२७  
 पत्नीस्वसु ५६६४ ६६२६  
 पत्न्यनज ६६२  
 पत्र ६६४ २२५ २५३ ४७ ३१२१  
 ४३ ४ ६४ ५५६२  
 पत्रक १६६१ २३ ६ ३१२२  
 पत्रकाहुला ३ ७  
 पत्रसङ्कार ३४७७

पत्रपरश ५ ६३  
 पत्रपाश्या ३  
 पत्रपुट ३४ ३ ४२६६  
 पत्रमात्र ३२२३  
 पत्रल ३१२३  
 पत्रलता ४३  
 पत्रला ३१२३  
 पत्रवाह ४२६६  
 पत्रसुवर २४४५  
 पत्राङ्ग ३१२४ ४६ ६  
 पत्राङ्गमवज ६३५  
 पत्राङ्गाङ्गमवज ६५१  
 पत्राङ्गजन १६६६ ४ ७  
 पत्रिसज ६१५  
 पत्रिणी ३१२५  
 पत्रिन ३१२५  
 पत्रोण ३१२६  
 पत्तल ३१२७  
 पथिक १ ४१ ३१२ ४५५६ ५२३३ ३५  
 पथिन ६३ १२७ ३ ३ ५११ १ ५२  
 ३१४३ ४६४ ५ ५ ६ ६२७  
 पथ्य ३१३१ ६७६६  
 पथ्या १३३ २ ६६२ ४२५ ३१२६  
 ४ ६६ ५ ७१ ५६२  
 पद् ५४४  
 पद् ३१३१  
 पदक ३१३३  
 पद्म ३१३४  
 पद्म ३१३४  
 पद्मयवत् २५३५  
 पदम ३१२  
 पद्मभञ्जनशास्त्र २६ ४  
 पद्मधात ६६३१  
 पद्मसाधु ३१४२  
 पद्मजि ३१३४

पवाति ३१३५ ३२६६  
 पवातिसङ्ग ३२६५  
 पवातिस्र बधिन् ३२६६  
 पवाध्यतु ३१३३  
 पवार ३१३६  
 पवाथमात्र ३६६३  
 पवार्थानतिवृत्ति ५३१  
 पवालिक २ २६  
 पवालिव ३१३६  
 पविक ३१२१ ३५  
 पवृत्ति ३१३६  
 पवृमवणभिद् १  
 पव २ २२६ ६ ७५ १ ६ १४७२  
 २ २२ २ ६३ ३१३ ५ २ ५३३६  
 ६५३ ६७२३  
 पवक ३१२ ३६ ५६६  
 पवकव १ १७ ५६ १  
 पवकाष्ठ ३१३६  
 पवकिञ्जक ३ ७  
 पवकेसर ६  
 पवकोरक ४४५६  
 पवचारिणी ३१३६  
 पवनालिका ३१३६  
 पवबीज ५ १६  
 पवबीजकोष ३ ३५  
 पवमात्र ३४ ६  
 पवराग ६ ६ ६६  
 पवमरागमणि ४६३  
 पवलाम्छन ३१४  
 पवलाम्छना ३१४  
 पववत् ३१४१ ३ ६६  
 पवववन ३४१२  
 पवशिफाकव ११२२  
 पवस्तम्ब २ ६४  
 पवा ३१३

पवाङ्कुर ४४५६  
 पवालया ४ ३२  
 पवासन १ ६५ ३१ १ ३२ ४  
 पव तासनाधिक ६२१  
 पव्यिन् ३१ १  
 पव्यिनी २६३ ३१ २  
 पव २ ६२ २१ २ ३१ २४३ ३१ ५  
 पवभाग ३१३२ ३२६१  
 पवमात्र ६  
 पवा ३१४३  
 पवात्मकप्रत्य ६४ ६  
 पव ३१४३  
 पवन् ३१४४  
 पवत ६ २ १ ११ २२ ३ ३१ ४४५  
 पवसकष्टक १ ६  
 पवसा ३१ ५  
 पव ३१४५  
 पवग ३१४६  
 पपी ३१४६  
 पय पानात्मकज्ञानान्तर ६२४६  
 पयत् ३१४ ३५ ६ ६५६६ ६  
 पय साव ३१४  
 पयस्या ३१ ७  
 पयस्वती ३१४  
 पयस्विनी ३१४६  
 पयस्विन् ३१४  
 पयोगम ३१४६  
 पयोधर २२६४ ३१५ ३७ ३ १६,  
 ५३१  
 पयोधि ३ ६४  
 पयोमत् ३१५  
 पयोयोगिन् ३२ ४  
 पयोहित ३१४  
 पय ३१५१ ५६  
 पयकुल ३१५३



परकृति ६४ ६१५ २ ६४

परछवानुवर्तिन् २५६६

परजात ३१५४

परजिज्ञासन ६२५

परञ्ज ३१५४

परम १

परदोषकप्रवक्तपुरव ३२६२

परदोषोक्तिपर २६ १

परनिवाकर ५४१

परपक्षातिक्रमन २६ १

परपुष्ट ३१५५

परपुष्टा ३१५५

परप्रतियोगिन ५१

परब्रह्मण ६२६५

परमर्तु ३१५५

परमार्थ ४ ६१

परमृत् ३१५५

परमृत ७३

परमृता १२६२

परमगति ३ १५

परमप्रीति ४६३६

परमरस ३१५६

परमशोभा ६४ ३

परमाणु २१

परमात्मन ४२३ ५१३ २३६६ २६४५

३१५१ ३ ६ ४३११ ४५ ६ ५३ १

५ ३३ ६६६६

परमार्थ १६६६

परमात्मात्मवेह ३४३४

परमेस्वर ३१५६

परमेष्ठिन् ३१५७ ४ ३५ ४४५६ ६

परमेष्ठिमुख १२६४

पर परा ६२६ ३१५ ३७१७ ६२

परवत् २६

परवर्द्धित ३१६६

परश २३४ ३१५६ ४

परशभिद ३१६

परशुराम ३६ ६ ४ ४ ५

परश्वध २ ४३ ३१५६

परस्मपद ६

परस्त्रीतनय ३२ ५

परा ३१६

पराक ३१६१

पराक्रम २७३ ३१६२ ६२६

पराग ३१६३ ३२७ ३ ६२ ३५१ २४

पराञ्जन ६ १

परामन ३६ ६

परामव ६५ २६५ ३१६४

परायण ३१६४

पराथ १

पराधसख्याद्विगुणसख्या ३१५२

परावार्तिकलसमाहृति ३२६३ ६४

परावस्था २६१३

पराशर ३१६५ ५६ २

परासन ३१६६

पराहत ५६७

परि ३१६६

परिकल्प ३१६

परिकर ३१६

परिकलश ४६३ ५२४

परिक्षप ५६५

परिक्षप्तु २६२

परिष्ठा १ ४ १ १ २३२१ ३१६६

३५६ ६१ ६

परिगत ३१७

परिग्रह ३१७

परिघ २३२१ ३१७१ ५ २१

परिघात ३१ १

परिघोष ३१७२

परिधय २६३ ३६३ ५४४६

परिचर्या ३१६३  
 परिचारक ३१ ३  
 परिचारिका ३१ ४  
 परिचित २६  
 परिच्छद ३१ ४ ६ ४६२ ४३५२  
 परिच्छद २४४१ ३ ५५ ३१ ३५  
 ५६ ५१६५  
 परिजन ३१ ५ ६  
 परिज्ञान ३ १  
 परिबन् ३१ ५  
 परिणत ३ ६६  
 परिणति ३२३६  
 परिणाह ३१ ६  
 परिणतु ५ १  
 परिताप ३१ ६  
 परियक्त ३६६  
 परियक्तमय ५२ ६  
 परिभाग ३६६ २६ ३१ २  
 परिवेदन २६६६  
 परिधान १६६ ३१७  
 परिधाय ३१ ७  
 परिधि ३१ ३१  
 परिपाटी ५६ १६२४ ३१५  
 परिपूर्ण ५ ५  
 परिप्रश्न १  
 परिप्लवा ३१ ६  
 परिवर्धन ३१७६  
 परिवह ३१ ६  
 परिभव २४५१ ५३ २  
 परिभाषण ३१  
 परिभवतोऽङ्गित ६  
 परिमल ३१  
 परिमाणात्तर ३२६१  
 परिवत्सर ३१ १  
 परिवर्जन २

परिवर्जना ३१ २  
 परिवस ३१ २  
 परिवार २६६१ ३१ ३  
 परिवारवत ३१ ३  
 परिवारिन् ३१ ३  
 परिवारिनी ३१ ४  
 परिव्राप ३१ ४  
 परिवार ३१६ ३१ ५  
 परिविस्ति ३१ ६  
 परिविज्ञा २६  
 परिवदन ३१ ६  
 परिवेश ३१  
 परिवेष ३१  
 परिवेषण ३१ ७-  
 परिवर्ति ३१  
 परिव्राज ५ ५२६  
 परिशिष्ट १  
 परिगुष्क ३१  
 परिवस्थान ६३  
 परिसङ्ख्यान ४  
 परितर ३१ ६  
 परित्त ३१६  
 परिश्रुता ३१६  
 परिश्रोतस ५३ ५  
 परित्प ३१६  
 परिहास ३६४२ ५११  
 परिहृत ६३ ६  
 परीक्षण ४२ ५  
 परीर ३१६१  
 परीरण ३१६१  
 परीरम्भ  
 परीवस ३६४४  
 परीवाप ३१  
 परीवार ३१६२  
 परीवाह ३१६२

परीष्टि ३१६३  
 पदल ३१६  
 पदला ३१६४  
 पदव ३१६५ ४ ४२ ६ ६३  
 पदवत्त्व ३२६  
 पदवाकरवाच ३ १६  
 पदवोक्ति ६३  
 पदस ३१६४  
 पद्व ३१६५  
 पद्वन्न १ ५६  
 पदेत ३१६६  
 पदघित ३१६६  
 पदोत्तापित ५ ६७  
 पकट ३१६७  
 पकटी ११६३ ३१६ ३  
 पकय ६ ३१६  
 पण ३१२१ ६६ ३२५७  
 पणगृह ७  
 पणबूजरस ३२ ३  
 पणसि ३१६६  
 पणसिरा ३२ ३  
 पणहीन २ २  
 पणजीविन् ३ ६४  
 पप (पल) ३२  
 पर्यट २४४३ ३२ १ ५ ७२ १  
 पर्यटमषज ४६६  
 पपटी ३२ १  
 पर्यर २ ७६  
 पपरीक ३२ २  
 पपरीण ३२ ३  
 पर्यङ्क १ १२ ३१६ ३२ ४ ३२२१  
 पर्यटन ३७ ५  
 पर्यनग ३२ ५  
 पर्यस्त २ ४५  
 पर्यवसित ३२ ५

पयस्त ३२ ६  
 पयस्ति ३२ ४  
 पयस्तिका ३२२१  
 पर्याणभाग ४६६  
 पर्याप्त १ ३२ ६  
 पर्याप्ति ३६ ३२  
 पर्याय ३२  
 पर्याहार ५ ६६ ५५२ ६२  
 पयुप्ति ३१ ५  
 पयु वित १४३५  
 पव ३२  
 पवत ६४ १४३ २ ५५ ३२ ६  
 ४ ३१ ४३६५ ५१ १ ६६ ५ ३  
 ६३७  
 पवतकटक २६५५  
 पर्वतजाति २४ ७  
 पवतभवाविक ३३ ३  
 पवतभव ६३७६  
 पवतातर ३ २  
 पवन ५६६ १ १७ ३२ ३ १ ६३ १  
 पवि ३२११  
 पर्युसमाख्यास्त्रि ४६६५  
 पर्युराम १७२५  
 पल ३ ६ ३२१२ ३ ४६  
 पलगण्ड ३२१२  
 पलङ्क ३२१४  
 पलङ्कषा ३२१३  
 पलजतुमणि २४ ६ ३२४  
 पलनुय ११६८  
 पलद्वय ६२ ६  
 पलमान ४ ६२ ६  
 पलल ३२१४ १५  
 पलली ३२१५  
 पलशत २४  
 पलसप्तति २७ ७

पलाख्योमानमव ५

पलाण्ड ३२१६ ३३२ ६ १ १  
६४

पलाण्डमव २६५६ ५ ७

पलायक २ ३७

पलायन १६२ २ ३६ २६

पलायित २ ६ ५४२३

पलाल ६६४ ११६५

पलालक्षोव ३२१५

पलाश ६३ १३५ ६६ ३२१७ १  
४ ४५ ५३

पलाशकलिकोवगम ६

पलाशकोरक ४६१

पलाशतरु ४६६४

पलाशव्रम ६६४

पलाशपत्र ३१६६

पलाशवक्ष ३१६६

पलाशिन ३२१६

पलाशिका ३२१

पलिघ ३२१६

पलित ३२२

पपङ्क ३२२१

पययन ३२२१

पलव ३२२२ ४ ३४ ५४२४

पलवाळकर ३ १५

पलवित ३२२३

पलि ३२२४

पल्ली १ २ ३२२४

पवल ५६७७ ५ १६

पवन ७४ १३ २ ५३ २ १२ २७१३

३ १ ३११ ३२२५ २ ४ २६

४२१६ ६६१३

पवनाख्यक्रिया ३५४१

पवनाख्यक्रियाकर्तु ३२२

पवमान ३२२६

पवसाधन ३२२५

पवि ३२२

पवितु ३३१४

पवित्र ३२३ ३२२ ३५३

पवीर ३२३

पश १ ६१ १५१२ १६२४ २ ६२

२२६६ २३ १ ३२३ ४ ५ ६

५३३६ ६१ २

पशुगात्राविभिदु ३५

पशपतिसम्बधन ३३१६

पशपिवण्ड २ ६

पशमधमध्याग ६५

पशवडक्षणी २ २

पशुवधनरजु ३ २६

पशुवृत्ति ५३३६

पशामृङ्ग ५५

पश्चात् १४१ ३२३१

पश्चात्ताप १ ६५६

पश्चात्तापिन ५ ६

पश्चात्प्रवेश ३

पश्चाद्भूग २२ २

पश्चिमकोष्ठस्थवास्तुवेवमव ६१४३

पश्चिमविश ३६

पश्चिमाशापति २२३

पश्य ३२३२

पश्यत ३२३२

पशवावि २ ५२

पशवाविशारीरस्थपवत् ३ ५

पशवाद्ययुद्ध ३ ६१

पष्ठहीन २ ७

पाशु ३२३३

पाशुचामर ३२३३

पाशालवण १५११

पाशावण ३३५ ३६७

पाशु ४६२५ ४७ २

पांसुक ३२३५  
 पांसुचामर ५१४४  
 पांसुज ३२३४  
 पांसुजात ३२३४  
 पांसुल ३२३५  
 पांसुला ३ ३२३५ ४ ७  
 पाक २४१ ३२३६ ३ ६१६२  
 पाकयज्ञाग्नि ६  
 पाकल ३२३७  
 पाकसाधन १ ४३  
 पाकस्थान १ ३ ४२६६  
 पाचन ३२३६ ४  
 पाचनी ३२३६  
 पाचयितु ३२३६  
 पाचल ३२४  
 पाचत् ३२४१  
 पाचञ्जय ३२४  
 पाटक ३२४१ ४२  
 पाटन ६५४६  
 पाटयितु ३२४२  
 पाटल ३२४३ ५ ३४  
 पाटलासप्तपुष्पवृक्ष ३२४५  
 पाटला १३६६ ३२४४  
 पाटलि २६१ २ ११ ३२४५  
 पाटलिब्रम् ३२४४  
 पाटलिपुरनिर्मातु ३४२  
 पाटली १५५५ ३२४६ ३ ५ ४५ २  
 ५२ ७  
 पाटित ३४ ५  
 पाटितकाष्ठ ३ ३  
 पाटीर ३२४३ ५ ५५  
 पाठ ६ १  
 पाठक ३२४ ५२५७  
 पाठनिश्चिति १६ ६  
 पाठा २६७ ४१७ ६ २ ३२४४ ४६६१

५ ७ १ ५६ ६ ६१  
 पाठाढ्यमषज ५५७६  
 पाठानामवली ६५६  
 पाठाम्यास ५५३  
 पाठीन ३२४ ६ ५ १७  
 पाणि ११ १ ३ ३२४ ५ ५६  
 ६ ४४  
 पाणिक ३२४  
 पाणिग्रह ३२४६  
 पाणिग्रहण ३२४६ ४ ६  
 पाणिनिमनिजननी २६१६  
 पाणिमन्त्रातर ३४ ३  
 पाण्डवपत्नी ३ ३  
 पाण्ड २२३६ ३२५  
 पाण्डकम्बल ३२५१  
 पाण्डकश ६ ६  
 पाण्डनाग ३४४  
 पाण्डर ३२५२  
 पाण्डरवण ६ ११  
 पाण्डुरवर्णित ६७११  
 पाण्डपवेशराजातर ३२५  
 पात ३११३ ३२५२ ५३ ४ ६३ ६५४२  
 पातक ३२५३  
 पातक्य ५ ६६  
 पातव्य ३२७ ३५ ६  
 पाताल २४ ६ ३२५४ ४६६ ५२७१  
 पातालगङ्गा ४ ५३  
 पातालमन्त्र ३६३६  
 पाताली ३२५४  
 पातिली ३२५५  
 पातुक ३२५५  
 पातु २५२५ ३ ६७ ३२५६ ५ ७४  
 पात्र १५६६ २७६७ ३२५६ ३६७६ ४२६६  
 पात्रद ३२५  
 पात्रदीर ३२५

पात्रप्रभव ३२५५  
 पात्राङ्गमिदं ६५५३  
 पात्रान्तिर्मापित ६३२  
 पात्री ३२५६  
 पाव ६७ २ ६५, २२३१ २३ ७  
 पावकटक ६६७२  
 पावप्रभ्यधर ३३ ६  
 पावप्रहण १६  
 पावसुयांश ६७  
 पावप २ २११४ २४ ३ ३२ ६ ५६  
 ५२१३  
 पावप मूलस्कधातर ३६ ७  
 पावपा ३२६३  
 पावपातर २११४  
 पावपीठ ३२६२  
 पावपीठगन्तु ३  
 पावपूरण ६३६ ६ ५२४४ ५३ १  
 पावपूर्ति ६६६५  
 पावरत्न ३२६३  
 पावशाखा ६५  
 पावाङ्गलीय ५६ ३  
 पावावत ३२६६  
 पावुका १२३६ ३२६३ ६  
 पावुकुत् २ ६  
 पावोपवशासन ३२  
 पावोष्णक ५३५  
 पान २ ६६ २ ३२१ ३ ६ ३२६६  
 ३३ २  
 पानकतु २ १  
 पानकमन् ३३६६ ६  
 पानपात्र ३२६६  
 पानपात्रान्तर १२३४  
 पानीय १६६१  
 पानीयवि(मि?)लय २३५  
 पाप ५ ४६ ६१३ १ १७ २२

११५६ ६३ ६ १२ २ ६ १३६१  
 २ ५, १ १२ १५ २२६१  
 २३ ७ २४६६ २६६६ २७७४  
 ३ ५ ३२५३ ३ ३ ६५ ४२४६ ५  
 ४५५६ १६ २ ५५७१ ३  
 ५ २६  
 पापश्रद्धि ३२७२  
 पापरत ६१३७  
 पापश्रद्ध १३ २  
 पापहरण ६६६६  
 पापाशय १२ ६  
 पापिष्ठ १४६५  
 पामर ६४  
 पामरमव १६ ५  
 पारक ३२७६  
 पारग ३२ ३  
 पारगमाव ३२ ३  
 पारण २४ ५ ३२७६  
 पारत ३२ १ ६ ६७ ६५४  
 पारतत्रय १६ ६  
 पारव ४३ १ ६४ २ ७ २६३ ७४  
 ३२ १ ४६५ ४ ३ ६४ ६१२  
 ६४३१ ६५ ६६ ६६७  
 पारवातु ३२ १  
 पारधनुक ५६६  
 पारम्पय ३ २  
 पारलौकिक ३२ ३  
 पारविर्जित २१४  
 पारशव ३ ३२ ४  
 पारसीकतैल ६ ५  
 पारहित ३३ २  
 पारा ३२ ६  
 पारापार ३२ ६  
 पारायण ३२ ७  
 पारायणी ३२ ६

पारावत १ ४ ११ ६ ६ ३२६ ६१

४६ ८ ११

पारावतप्रमफल ३२६१

पारावतनामपञ्चिन १ ३

पारावतपदी ३२६२

पारावतमिव ४६ ५

पारावती १ ५ ३२६२

पारावार ३२६३

पारि ३२६

पारिजात ३२६५

परिजातद्रुम २ ५

पारिब ३२६६

पारिपान ५६२५

पारिप्लव ३२६६

पारिमत्र ३२६७

पारिमत्राविनामन् ३२६५

पारियात्रसुत ६ ५६

पारिव्याध ३२६

पारिहाय ५६६

पारी ३२ ६

पारुष्य ३२६

पार्थिव ३२६६ ४६ ६

पार्थिवा ३३

पार्थिवी ३३ १

पापर ३३ १

पार्थ ३३ २

पावत ३३ ३

पावती ७४ १३३ २३४ ६३ ११२५

६३ १६२ २२ २ २५६५ २६२

६ २ ६६७ ७३ २६३३ ३१५७ ६४

३ २७ ३६३३ ६ ४२६६ ४३२

४६ ४ ४ ५३ ५ ७ ५११६

५३२२ ५ ३३ ६२ ५ ६७६५ ६

पाव ४७२ ६६६ १३६ २५६५ ३ ७

३३ ४

पाशवद्वार ३ १

पाशवनाथमा ५३१६

पाश्वर्ती ३३ ५

पाणि ३३ ६

पाठर्णा ६६

पाल ३३ ७

पालक ३३ ७ ५६६

पालङ्ग ३३ ६

पालकनयमित्ययकशाक ३ ५२

पालकनयमित्ययकशाक १४४६

पालन २१ ६ ५६६५

पालनकतु २ १

पालाशवणक ६ १

पालि ३३ ६

पालिव ३३१

पाति तावि ३५

पालिनी ६१४

पाली १३५ ३३ १

पालक ३३११

पालर ३३१२

पावक ५३ ३३३ ४१ ४ ६१२ १५४

५४ २१२ २२६ २३६१ २५३३

२७३ ३२५ ३३१३ १५ ६ ३४१६

३६६३ ४ ३१७ ४२६ ४३१२

५३४ ६ ६६

पावन ३३१४ ५४६५

पावयितु ३३१४

पाग ३३१५

पाशाक १४२ ५४ ४

पाशाकदम्बक २६६२

पाशमा ३३१५

पाशावि ६१११

पाशितु ३३१

पाशितु ३३१

पावण्य ५६२५

पाषाण ४३२ ११३६ १२५५ २ ६६

पाषाणशिल्पिन् ४ ३ ६ ५

पाषाणवारण २३४

पाषाणाद्यश ६५६

पिक ३ ६ ११ ३ ६ ६ १३५

३१५५

पिकभब ४११

पिङ्ग ३३१६ २२

पिङ्गद्राक्षाविशव ६ १५

पिङ्गबिबुका १३३१

पिङ्गल ३३२२

पिङ्गलकेश्याविक्रया २ ३३

पिङ्गलवण ३ ३२

पिङ्गलवणवत् ३ ३३

पिङ्गला १३६३ ३३२३

पिङ्गलाख्यपक्ष्यतर ६ ५६

पिङ्गलासजपक्षिन् ३५ ६

पिङ्गलाह्वय ३३२

पिङ्गवण ६ १३

पिङ्गवणवत् ६ १३

पिङ्गा १६ ६ ३३२१

पिङ्गाख्यवणभिव ४ ३६

पिङ्गी ३३२२

पिच २ ६१ ३३२

पिचुल ३३२

पिचट ३३२

पिच्छ ३३२६

पिच्छा ३३२

पिच्छल ३३३

पिच्छलस्फोट ५२

पिच्छलस्फोटिका ५२

पिच्छल ३३३१

पिच्छलिन् ३३३१

पिच्छ ३३३३

पिञ्जन ५५२६

४२ क

पिञ्जर ३३३१

पिञ्जा ३३३२

पिट ३३३३

पिटक १ २६ ३३३ ६४ ३५ ६

पिटकजाति २ २

पिटकातर ३ ६३

पिटाटिकाख्य छदिरवयव ३३३४

पिटितविस्तृत २१३१

पिठर ३ ६६ ३३३५

पिठरी ३३३५

पिण्ड १ ३४ १६ ५ ६५ ३३३६

६५४

पिण्डखजूर ४६ ५

पिण्डगोल १६६७

पिण्डन ५१३

पिण्डपुष्प ३३३

पिण्डफला ३३३

पिण्डभव ३५५२

पिण्डार ३३३६

पिण्डारक ३३३६

पिण्डारी ३

पिण्डारम्भन् ४४१३

पिण्ड ३३

पिण्डिक ३३

पिण्डिका ३३ १

पिण्डित ३३ २

पिण्डिल ३३४२

पिण्डी ३३३७

पिण्डीक ३३३६

पिण्डीतक ३३४३ ४१३

पिण्डीतकट्ट ४१३७

पिण्डीतगर ३३३

पिण्ड्याख्यस्थावर २३३४

पिण्या ६१ ३

पिण्याक १३६१ १ ६५ २४ २ ३३४३



पितामह ३३४४  
 पितामहाष्टपुत्रज ३५६३  
 पितामही ३३४५  
 पितु पितृ ३३४४  
 पितुरागतावि ३३४  
 पितृ २२२५ २३६ ३३४५ ३ ६४ ५ ५  
 पितृकानन १ ४  
 पितृके २ ६२  
 पितृवधत ३३४  
 पितृपावक १२२१  
 पितृपितामह ३६ ६  
 पितृप्रपा ३३ ६  
 पितृभव ३५१  
 पितृभोजना ६१६३  
 पितृमातृ ३३४५  
 पितृव्यस्त्री २  
 पितृव्यसु ६१६२  
 पितृसाध ३३४  
 पितृ १२७ २२७ ६६११  
 पितृकर ३३४  
 पितृल ५६ २६३१ २७३६ ३३४६  
 ६७-७४ ४७२१  
 पितृला ३३४  
 पितृय ३३४  
 पि-या ३३४७  
 पिस्तन ३३४  
 पिबार ३३४६  
 पिधान २१  
 पिनाक ३३४६  
 पिपतिवत ३३५  
 पिपासा १ २४ ७ २५ २  
 पिपीलक ३३ ६ ४  
 पिपीलकमिव ३५४५  
 पिप्पर ३३५१

पिप्पर ३३५१  
 पिप्पल ३५ ३२६१ ३३५१  
 पिप्पलक ३३५४  
 पि पि मल ६६३  
 पिप्पली ३ ६ ६ ६ १ ३ ६  
 १३ १५५१ ६६ १६ ३ २  
 २२ १ २३६६ १ ३३५२  
 ३ ४ ३६१२ १ २ ४३३५ ५६२  
 ५ १ ६१ ४  
 पिप्पलीमल १६ २ ६ ६ ६२  
 पिप्पलीरस २६३१  
 पिप्पलभव २४५  
 पिप्पल ३३५  
 पिप्पला ३३५५  
 पिप्पल ३३५५  
 पिशाङ्गकवण ३३२३  
 पिशाङ्गकवर्णवत ३३२३  
 पिशाङ्गवणयुक्त ३३२  
 पिशाङ्गाह्वयवण ३३२  
 पिशाच २१६७ २२ ४ ३३५६ ५७५३  
 पिशाचावि १६ ६ ४ २७ ५७५२ ६२६६  
 पिशाची २३१६  
 पिशित ३३५६  
 पिशिता ३३५६  
 पिशील ३३५७  
 पिशीली ३३५७  
 पिशुन १६३७ ३३५ ४६६३ ६४६  
 पिशुना ३३५६  
 पिष्टक २१५३ ३३५६  
 पिष्टकमिव २१  
 पिष्टतण्डल १७६५  
 पिष्टधानादिचूर्ण ३३४  
 पिष्टधनसाधन १  
 पिष्टमद्य २२ १  
 पिहित २१५

पीक ३३६  
 पीठ ६२१ १५१२ ३३६ ६२ २६  
 पीठक ३३६२  
 पीठमव ३३६३ ४२३  
 पीठिका ३३६२  
 पीठन ३३६३ ५ ५६  
 पीठा ३४ ५५ ५ ७ ३३६४  
 ६५ ४२३६ ५६५३  
 पीठित ३३६५  
 पीत ३६१ ३३६५ ४  
 पीतकावर ३३६  
 पीतघोषवली ४२६५  
 पीतघोषा ११ ५  
 पीतचवन १३२ ६ ३३६ ६६  
 पीतचवनस मक ६ ७  
 पीतचम्पक ३३६  
 पीतक्षिप्टी ६३ ५  
 पीतक्षिप्त्याख्यमाटक ६३६  
 पीततम्बला ३३६६  
 पीततुष ५ १२  
 पीतबाध ३३६६ ७१  
 पीतबुग्धा ३३  
 पीतधातु १६३५  
 पीतधात्वतर ६  
 पीतन ३३ १  
 पीतपुष्प ३३ २  
 पीतफल ३३ २  
 पीतमणि १६६१  
 पीतमस्तक ११६ १२५२ १३४३  
 पीतमावत ३३७३  
 पीतमुष्क ११ १  
 पीतमुद्ग २ ४६ २१३६ २२३४ ५२१३  
 ५६४५ ६४ ५ ६ २६  
 पीतयूषी ६ १ ६  
 पीतरक्त ३३७३

पीतरक्ताख्यमिश्रवणवत् ३३३२  
 पीतरक्ताख्यमिश्रवणवर्णातर ३३३१  
 पीतराग ३३ ४  
 पीतल ३३७४  
 पीतवत ३३ ६  
 पीतवण ३३ ४  
 पीतवक्ष ३३ ५  
 पीतशाल १३२  
 पीतशोणित ३३ ५  
 पीतसार ३३७६  
 पीतशालयुक्त ४  
 पीतसितासितवण ३१३  
 पीतसितासितवणवत् ३१३६  
 पीता ३३ ६  
 पीताङ्ग ३३ ७  
 पीताग्रि ३३  
 पीताम्बर ३३  
 पीतासुज ३३ ३  
 पीति ३२६६ ३३६ ६  
 पीतिन ३३ ६  
 पीतु ३३  
 पीतुवाव ३३ १  
 पीथ ३३ २  
 पीनस ३३ ३  
 पीनस्कथ ३३  
 पीयक ३३  
 पीयु ३३ ५ ६  
 पीयूष ६७ ३३ ६ ७३  
 पीला ३३  
 पील ३३  
 पीलक ३३ ६  
 पीलद्रुम ६१४  
 पीलपणो २ १६ ३३६  
 पीलफल ३३ ६  
 पीलबुज १११७

पीव ३३६  
 पीवन ३३६१  
 पीवर ३३६२ ६३ ६६ १ २  
 पीवरा ३३६३  
 पीवरी ३३६१  
 पीवा ३३६१  
 पुकमन् ३६  
 पुकृत ३६ १  
 पुगज ३४४  
 पुजाति ४३४  
 पुभाव ३६  
 पुभुजङ्गम ३  
 पुल्लङ्ग ३४४२  
 पुश्चल ६७ ३२३५ ३३६४  
 पुश्चली ४ १ ६२ २ ६ ६६३ ६५  
 ३३६४  
 पुश्चल ३३६५  
 पुसम्भयिन ३५६ ३६  
 पुसवन ३३६५ ६६ ३५६  
 पुस्तक ३३६६  
 पुस्तक ३३६  
 पुस्तकी ३३६७  
 पुस्त ३३६  
 पुस्तवसन ५२६३  
 पुस्तल ३३६  
 पुस्तव ३३६६  
 पुष्ठ २३५ ३३३ ३४ ३६  
 ४६ ५१ ६ ५३५  
 पुष्ठिन ३  
 पुष्ठन १७६ ४७१२  
 पुष्ठित ३४ १ ६३१५  
 पुष्ठित ३४ १  
 पुट ३४ १ ४१  
 पुटक १ ३ ३४ ३  
 पुटपीवा ३४ ४

पुटभव ३ ५  
 पुटभवननामन ३११६  
 पुटभवनसमक्षप्राम ३१ २  
 पुटिका ३४ ३  
 पुटित ३ ५  
 पुण्डरीक ३४ ६ १६ ६ ६  
 पुण्डरीकतर २ ६  
 पुण्डरीकप्रिया ३२१  
 पुण्डरीकमित्र १ ५  
 पुण्डरीकमुख ३ १२  
 पुण्डरीकमखी ३ १२  
 पुण्डरीका ३४११  
 पुण्डरीकाक्ष ३ १३  
 पुण्डरीकामिधान ३३२  
 पुण्डरीयक ३४१४  
 पुण्डिकाट्यकाह्लात ३  
 पुण्ड २१२ ३४१५ ३५ ३६  
 पुण्डक २ ५३ ३४१  
 पुण्डित-याय ३ १  
 पुण्डवसतरगातर ३ ४१  
 पुण्ड्रा ३४१७  
 पुण्य ११६३ २३५ ३४१ ६१  
 ६४६ ६५२६  
 पुण्यक ३ १६  
 पुण्यकीर्ति ३४२४  
 पुण्यकृत् ३४२  
 पुण्यलत्र २४६२  
 पुण्यकम २६७६  
 पुण्यगध ३४२  
 पुण्यजन ३४२१  
 पुण्यजल २४६२  
 पुण्यमारी १३४३  
 पुण्यफल ३ २१  
 पुण्यल ३४२२

पुण्यभूमि ३ २३  
 पुण्यवत ३ २३  
 पु यव याख्यपुरीनुपति ३ २२  
 पुण्यश्लोक ३ २४  
 पुत्तल ३४२  
 पुत्तलिका ३ ३१  
 पुत्र ५१४ २३३२ २५१ २ ६६ ५  
 ६६ ३ २५ २६ ३७२ ६६४२ ५२३४  
 ६ ५६  
 पुत्रक ३ २  
 पुत्रका ३४३२  
 पुत्रकारयसविषक्षेत्रजतु ३४२६  
 पुत्रजमन ५५६  
 पुत्रव ३ २६  
 पुत्रवा ३ २६  
 पुत्रवात्री ३४३ ५२६२  
 पुत्रपत्नी ५ २२ ६६  
 पुत्रपौत्रपारम्पय ६२ ६  
 पुत्रपौत्राविप चम ३१५  
 पुत्रपौत्राविषण्ठ ३१५६  
 पुत्रप्रिय ३४३  
 पुत्रमातु ३ २३  
 पुत्रवती ११२  
 पुत्रसतति ६  
 पुत्रहत ३ ३१  
 पुत्रापय ३२२२  
 पुत्रिका ३ ३१११ ३ ३१ ३२  
 पुत्री २५१ २ ६६, ४ ६४५६  
 पुत्रगल ३३ ३ २४ ३  
 पुनर ३ ३५  
 पुनरथ ३४  
 पुनरुद्धा ३ ३६  
 पुनजम ३ ३६  
 पुननवा ६६ ३५४ ३ ६६ ५  
 ६३ ५१५७ ६२ ५७२४

पुननवाजातिभद ३५५  
 पुनर्न १समाख्यौषधि ५१५६  
 पुननवौषधि २३  
 पुननूतन ३ ३६  
 पुनमव ३ ३६  
 पुनमू ४ ३ ३६  
 पुनमपति २६४१  
 पुनवसु ३ ३७ ६  
 पुनवसुजात ३४३  
 पुनवसुयक्तानहस ३४३  
 पुनस्सर ३ ३६  
 पुत्राग १५ ६ २ ६७ २६५१  
 २६ ३ ६ ३ ३५२६ ६ ४  
 पुत्रागपावप १२६२  
 पुत्रागवृक्ष १ ६४  
 पुत्रफुल ३४ १  
 पुनपय २५६३  
 पुमस् ३ २  
 पुर ३ ३  
 पुर १ १५ १६६५ १ ६७  
 १ ६ २६ ३११६ ३१ २ ३४ २  
 ३ ४६ १ ६५ ६  
 पुरञ्जन ३४४  
 पुरजनी ३४४  
 पुरजय ३  
 पुरतस ३ ४६  
 पुरजय २५३  
 पुरध्येता (असवध्म्यत ?) १  
 पुरवर ६५६ २२३ ३४४६ ५ ३२७  
 ५ ६ ५३६ ६ ३५  
 पुरवरा ३ ५  
 पुरवि ३ ५१  
 पुरि अ ३ ५२  
 पुरमव २५३  
 पुरमुख ३ २४

पुरश्चरण ३४५२  
 पुरश्छव २ ५२  
 पुरस् ३४५३  
 पुरसम्बन्धिन ३५६६  
 पुरस्कार ३४५३  
 पुरस्कृत ३४५४  
 पुरस्तात् ३ ३४५५  
 पुरा ३४५६ ५५  
 पुराण ३४५५ ५६ ५७ ३५६३ ३५६  
 पुराणग ३४५  
 पुराणी ३ ५  
 पुरातन ३६६  
 पुराण्यस २१  
 पुराराति ३ ६  
 पुराथ ३ ५५  
 पुरि ३४४५ ६  
 पुरी ३ २ ५ ६७५  
 पुरोव १२२५ ३ ६१ ३५४६  
 पुरोवयोगिन ३४५६  
 पुरोविन् ३४६१  
 पुरीवोत्सग ४४६३  
 पुरीवोत्सजिमायत ३ २  
 पुष ३ ६२  
 पुषट ३४६३  
 पुषवसत ३४६४  
 पुषभोजस् ३४६४  
 पुषरवञ्चशीमुत ५६२  
 पुषमार ३ ६५  
 पुषव ६२ ६११ ३४४२ ६५ ४ ३ ५३६३  
 ५५६१ ६२  
 पुषवगति ३४ १ २  
 पुषवव ३३६६  
 पुषवमेव ३ ५  
 पुषववध ३६ २  
 पुषवविकार ३६ १

पुषवव्यञ्जनयक्त २४ ६  
 पुषवयाध ३ २  
 पुषवसञ्ज ३६ २  
 पुषवाद्य ३ ३  
 पुषवातर ३ ३  
 पुषवी ३ ६५  
 पुषवोत्तम ३ २  
 पुषष्टत ३ ५  
 पुषहृत ३ ५  
 पुषहृता ३४ ६  
 पुरोग ३ ६ ३६५  
 पुरोगामिन् ३४ ६  
 पुरोर् ३२३ ३४  
 पुरोवासा २३१५ २४६६ ३  
 पुरोवासाप्रयत्न ३१  
 पुरोञ्जव ३४  
 पुरोञ्जवा ३  
 पुरोधस १ ५  
 पुरोभाग ३४ ६  
 पुरोहित १६१३ ३ ५१ ५३ ३४ ६  
 पुल ३४  
 पुलक ३ १ ६  
 पुलकिन् ३४ ४  
 पुलस्ति ३४  
 पुलस्थ ३ ५  
 पुलस्थवय ३६ ४  
 पुलह ३४ ५  
 पुला ३४  
 पुलाक ३४ ६  
 पुलिन २७ ६ ३४ ७ ५ २७  
 पुलिव ३४ ७  
 पुलिवा ३४ ६  
 पुलिवी ३४ ६  
 पुली ३४ १  
 पुलोमा ३४ ६

पु कस ३४६  
 पु कसीक्षत्रज ३ १७  
 पुल ३४६१  
 पु व ३४६१  
 पुष ३४६२  
 पुष्कर ३४६२  
 पुष्करखग ६  
 पुष्करद्वीप ३४६५  
 पुष्करद्वीपद्विज ३४६६  
 पुष्करद्वीपावि ३४६६  
 पुष्करपण ३५  
 पुष्करमल १३ ६ ५५४६  
 पुष्करलग्नयोगिन् ३५ १  
 पुष्करलग्न ३५ १ ४३ ६  
 पुष्कराक्ष ३५ १  
 पुष्कराख्यद्वीपात्रि ३४६६  
 पुष्करामिध ३५१३  
 पुष्करावती ३५ २  
 पुष्करावतक ३ ६७  
 पु कराह व ३५ २  
 पुष्करिणी १ ६ २२४ ३५  
 पुष्करिण्यन्तर २ ६१  
 पुष्करिन ३ ६६  
 पुष्कल ३५ ३ ६ ३ ५  
 पुष्कलक ३५ ६  
 पुष्ट ३५  
 पुष्टग्रीव ३५  
 पुष्टि १३ ५ ३५ ३२  
 पुष्टिवद्धन ३५११  
 पुष्टिवद्धनक ३५११  
 पुष्य १४५६ १५ ३ ३३ ३४१  
 ६१ ३५१२ ३ २७ ३६ ६ ६६  
 पुष्यक ३५१५ ४२६२  
 पुष्यकाल ३५१७  
 पुष्यकिञ्जक १५७

पुष्यकामिधविमान ३५१३  
 पुष्यकस्तु ३५१  
 पुष्यक्षारक २२ ४  
 पुष्यगुल्म १२४  
 पुष्यछब ३ ७  
 पुष्यज ३५१  
 पुष्यजा ३५१६  
 पुष्यजालक १६६५  
 पुष्यवत ३५१६  
 पुष्यवन्ती ३५२१  
 पुष्यवामन ३५२१  
 पुष्यधलि ३२ ६  
 पुष्यफल ३५२२  
 पुष्यमद्र ३५२३  
 पुष्यमद्रा ३५२३  
 पुष्यमद २ ६  
 पुष्यमाय ५६ ६  
 पुष्यरजस ३५२४  
 पुष्यरस २ ६३ ३५१ ४  
 पुष्यरेण ३१६३  
 पुष्यलिह ३ ३  
 पुष्यवत् ३५२  
 पुष्यवती ४१७ ३५२  
 पुष्यवन्तवत् ३५२५  
 पुष्यविशव ४५ २  
 पुष्यशर २ ४  
 पुष्यसार ३५२६  
 पुष्यसारा ३५२६  
 पुष्यसूत्र ३५१४  
 पुष्यस्तम्भ २३६४ ३७४  
 पुष्यस्तम्भमव १२ ५  
 पुष्यहास ३५२६  
 पुष्यहासा ३५२६  
 पुष्यहीना ३५२७

पुष्पाजन ३५१  
 पुष्पाढ्य ३५२७ २  
 पुष्पिका ३५१  
 पुष्पित ३५२६ ६४६६  
 पुष्पितलता १  
 पुष्पिता ३५२६  
 पुष्पितृ ३५१५  
 पुष्य ३५३  
 पुष्यजात २ ५  
 पुष्यनक्षत्रयुक्तपूणिमातिथि ३६ ५  
 पुष्यम २४५६  
 पुष्ययक्तकाल २४५  
 पुष्या ३५३३  
 पुस्त ३५३३  
 पुस्तक १६ ३५३  
 पुस्ता ३५३४  
 पुस्तिका ३५३४  
 पू ३ ३५३५  
 पूग १६३६ ३ ४ ३३२ ३ ६१  
 पूग कपूर कबजोल जातीफल लवङ्ग ३ ४  
 पूगकोश १ ४  
 पूगचूणक ४२२  
 पूगपट्ट १७३  
 पूगपादप ६२४  
 पूगफल ७ १ ३६ २ ५ ३१६  
 पूगबीडी २४२  
 पूगवक्ष १ ३ ६ १ ६१२५  
 पूगादिनवफल ३१६  
 पूगिन ३५३५  
 पूगी ३५३६  
 पूगीफल २४२  
 पूजक ४३६५  
 पूजन १ ५२  
 पूजनीय ३५३६ ३७  
 पूजनीयक ३६४३

पूजा १६३ ३३६ ६ ७६१ १६३२  
 २६५ ३१६ ६३२६  
 पूजाविधि ३३  
 पूजित ६ ५ ३ ५ ३५३६  
 पूजापहार ३ ४३  
 पूय १ ६ ३३११ ३५३ ३६६  
 ३६३३ ३६ ४ ५ २  
 पूयतम ६२६६  
 पूज्यपुरुष ३ ४  
 पूत ३ ६ ३५३ ३७ २ ६१ ३  
 पूतत्र ३५३  
 पूतधाय ३ ५६  
 पूतन ३५  
 पूतना २६ १३४४ ३५३६  
 पूतर ३५  
 पूति ३५३ १  
 पूतिक ३५ २  
 पूतिकरज ११६ ३५४२ ३६१  
 पूतिकणक ३५ २  
 पूतिकाय ३५४५  
 पूतिकाष्ठ ३५४३  
 पूतिकाष्ठाख्यद्रुम ६३३६  
 पूतिराघ ३५४३  
 पूतिताप्राप्त ६ ६३  
 पूतिपुष्पी ३५४४  
 पूतिफली ३५४४  
 पूतीक ३५४५  
 पूतीका ३५४५  
 पूत्कार ३५४६  
 पूत्कारी ३५४६  
 पूत्कृति ३५४६  
 पूत्यण्ड ३५४  
 पूत्यण्डा ३५४  
 पूय ३ १४२ २६ ३ ४२५  
 पूर ३२७६ ३५४ ५१

पूरक ३२  
 पूरकाद्यप्राणायाम ३५४६  
 पूरण २५२ ३ २ ३५५३  
 ३ ५  
 पूरणा ३५५३  
 पूरणाथ २ ६५  
 पूरणी ३५५३  
 पूरयितु ३५५१  
 पूरा ३५५  
 पूरिका ३५५२  
 पूरित ३५५६  
 पूरितक ३ ६  
 पूरित ३५५१  
 पूरी ३५५  
 पूण ३५५५ ३ ५  
 पूणक ३५५  
 पूणकू ३५५  
 पूणकोश ३५५  
 पूणवायाकया ३४३३  
 पूर्णपात्र ३५५६ ५१४४  
 पूणपात्रक ५१४४  
 पूणभाजन ३५६  
 पूर्णसुखादि ३५५  
 पूर्णा ३५५५  
 पूर्णनिक ३५६१  
 पूर्णिका ३५५  
 पूर्णिमा १५३ २१ ४ २६७ ३ ३  
 ३३४ ३५५७ ३६ ३ ४३३७ ४६७६  
 पूर्णिमातिथि ३५५५  
 पूर्णिमातर ६१६  
 पूत ३५६२  
 पूति ३४४३ ३५५५ ३७६२  
 पूतिकमन ३५५३  
 पूतिसाधन ३५५  
 पूत्रारि १६५

पूभव ३४२३ ३५ २  
 पूव १२६ ३५६२ ३७५  
 पूवज २ २३२  
 पूवजभार्या ५ २१  
 पूवत्र २  
 पूवविगुह २  
 पूवविजस ३५६४  
 पूवविशु ६१६  
 पूवनूप २  
 पूवप्रतियोगिन १६  
 पूवभाद्रपदा ३४६  
 पूवराजातर ४१  
 पूवराजमव ३ ३२ ६ ३५  
 पूर्वा ३५६२  
 पूर्वार्वाकप्रतियोगिन् ३१५१  
 पूवद्यत ३५६  
 पूलोकापणवणु १ ५  
 पूष ३५६  
 पूजन ६५२६  
 पूजा ३५६  
 पूवका ४३ १  
 पूव ३५६५  
 पूच्छा ६१ ६१५  
 पूतना ३५६५ ६६  
 पूय ३५६६  
 पूयकार ५ ५४  
 पूयकृत १६२  
 पूयजन ३५६  
 पूयभाव १  
 पूय भत १  
 पूयगुप्त ५४ २  
 पूथा १ ३६ ३५६६  
 पूथिवी १ ३ १६५ २२  
 १ ३५६ ७१ ४ ३२ ६४४१  
 पूथिवीपति ३५६



पुथिवीपालसभावयित्री ३६६  
 पुथिवीविकार ३३  
 पुथिवीविवित ३२६६  
 पुथु ३५६६ ४१ ५१२४  
 पुथुक २१३१ ३५ २  
 पुथुचित ३५ २  
 पुथुचित ३५७२  
 पुथुछद ३५ ३  
 पुथुरोमन् ३५  
 पुथुल ५४४३ १ ५  
 पुथुहस्त ३५ ४  
 पुथ्वी १ ४ १ ४४ ३५ ५  
 पुथ्वीका ३५ ६  
 पुवाकु ३५ ६  
 पुमिन १ १ २ ३५ ७  
 पुमिनका १४६  
 पुमिनपर्णी ३ ६३ ११ २ १६१६  
 २ १६ ४ ५२ ६४२१  
 पुमिनपर्णीलता २१२२  
 पुषत २५ ३५  
 पुषत ३५ १  
 पुषती १३ २  
 पुषवराक २२६३  
 पुषवराक्यपुषपायिब ४४ ५  
 पुषातक ३५ ३  
 पुष्ठ ३५ ३  
 पुष्ठवराधर २५२  
 पुष्ठभृङ्गिन् ३५ ४  
 पुष्ठहायन ३५ ५  
 पुष्ठाल्य ६ ६  
 पुषक ३५ ५  
 पुषिका ३५ ६  
 पुषक २३६२ ३५ ६ ७  
 पुषा ३५ ४१  
 पुषिका ५७ ३

पुषिकावृक्ष ३५ ६  
 पुषिन ३५  
 पुषा ३५ ७  
 पुष्व ३५  
 पुष्वी ३५  
 पुष्य ३५  
 पुष्या ३५ ६  
 पुष्य ३५६  
 पुष्य ३३ ३५६  
 पुषाल ३५६१  
 पुषाल् ३५६१  
 पुषी १६ ३५६२ ६१ २  
 पुषीकोश ६  
 पुषणी ३ ३४२ ६ ५६  
 पुष्य ६१३७  
 पुष्य २३६  
 पुषिकीतनकसुरातर ६१६६  
 पुषण्ड ३५६३  
 पुषगल १३७६ २ ६२ ६३  
 पुषा ३५६४  
 पुषगल ३५६४  
 पुष ७ ३३ ३५६५ ६६ ५२३  
 पुषकीखग ६१४  
 पुषवणिज् ६३  
 पुषाक्यपुषाङ्ग ३४  
 पुषबाह् २६६  
 पुषाङ्ग ३४  
 पुष ३५६५  
 पुषा ३५६७  
 पुष ३६ ७ ४ ४३  
 पुषक ३४६२ ३६५५  
 पुषण ३६४६  
 पुषयित्नु ३५६  
 पुष्यवग १४१  
 पुषावोहिबतपुषावि २६७७

पौत्रान्तरवशाज् २ ७६  
 पौर ३४७ ३५६६  
 पौरुष ७२१ १७५६ ३४४२ ३६  
 ५ ३ ६२६  
 पौरुष्य ३६ १  
 पौरोघस ३६ २  
 पौरोहित ३६ २  
 पौर्णमास ३६ ३  
 पौर्णमासी १३२ ४३६ ६१३ ३ २  
 ३६ ३  
 पौलस्त्य ३६ ३  
 पौलोमी ६६१  
 पौष ३५३ ३६ ४  
 पौषी ३६ ५  
 पौष्णम ४ ७  
 पौत्न ३५६  
 पौत्स्य ३५६  
 प्र ३६ ५  
 प्रकर ३६ ६  
 प्रकरण ६ ३६  
 प्रकष ६ २ २ ४५६ ६३ १५ ६ २२ ५  
 ३६ ५  
 प्रकाण्ड २५७२ ३६ ७  
 प्रकाम १२ ३२ ७  
 प्रकार ६४ ६१५ १ ३५ ३२ ७ ३६  
 १ ४५ ५१२२ ५४२६ २  
 प्रकाश ११ ७३४ ६२ ३६ ६ ५३ ६  
 ५५३३  
 प्रकाशन ६४ १ ४३ २ ३४  
 प्रकाशयुज ३ ४६  
 प्रकीण ३६ ६  
 प्रकीर्णक ३६ ६  
 प्रकीर्णि ३६ ७  
 प्रकृत ३ ४२  
 प्रकृतानुवसन १५६

प्रकृति २ ३६१ ५ ५३ ६३  
 प्रकृतिकलान्तर ३५ ६  
 प्रकृतिवगत ६३  
 प्रकृतिनाम छबोऽन्तर ६३६  
 प्रकृयाख्यसाध्यतत्त्व ३६ ६  
 प्रकृष्ट १४ ३१५१  
 प्रकृष्टदोषावि ३६  
 प्रकृष्टसम्मक ३६ ४  
 प्रकृष्टघन ३६ ५  
 प्रकृष्टमतिकारिक ३६६६  
 प्रकृष्टमवाविक ३६६  
 प्रकृष्टसमाविक ३ २४  
 प्रकृष्टाश्व ३ १  
 प्रकृष्टासाह ३  
 प्रकोष्ठ ११ ६ ३२२२ ३६१२  
 प्रक्रम ३६१३  
 प्रक्रिया ३६१४ ५५ ६  
 प्रकार ३६१५  
 प्रक्षय ५६५ ४१६२ ४३५  
 प्रक्षेपण ४१६१  
 प्रखर ३६१६  
 प्रगमन ३७६५  
 प्रगम १२३ २ ३  
 प्रगाढ ३६१७  
 प्रगाढगात्रिकावय ३१६६  
 प्रगाथ २५५  
 प्रगीतमन्त्र ६३६  
 प्रग्रह २ ३ ३६१७ ४६५७ ५ ४५  
 प्रग्राह ३६१  
 प्रग्रीव ३६१६  
 प्रघट्टक ३६ ७  
 प्रघण ३६१६  
 प्रघणाह वयगहाङ्ग ३ ४  
 प्रघाण ३६२  
 प्रघण्ड ३६२

प्रचलाक ३६२१  
 प्रचलाकिन ३६२२  
 प्रचलासज्जनिद्रा ६१२  
 प्रचार ३६२२ ७२१  
 प्रचतस ३६२३ ४२६१ ५१११  
 प्रचेतोयोगिन ३ ५४  
 प्रचोबन ३६२४  
 प्रचोबना ३६२  
 प्रचोवनी ३६२३  
 प्रच्छवपट २६५३  
 प्रच्छन्न ३६२  
 प्रयुति २१ १  
 प्रजन ५५४४  
 प्रजनन १६ ३६२५ ३७३६  
 प्रजननाख्याङ्ग २२ ४  
 प्रजा ३६२५ ३ ३६  
 प्रजाकर ३६२६  
 प्रजागम ३६२६  
 प्रजाति ३६२५  
 प्रजापति २२२५ २५५६ २६१७ ३६२  
 ३ ५६ ३६ १ ४१ ३ ४ ५ ५६  
 ५२५६ ५६६ ६५ ६६३१  
 प्रजापतिभाव ३७५५  
 प्रजापतिमिद् २५६४  
 प्रजापतिसंविद्यन ३ ५६  
 प्रजापत्यन्तर ६५ ४  
 प्रजापत्यपत्य ३७५६  
 प्रजावत् ३६२  
 प्रजावती ३६२  
 प्रज्ञ ३६२  
 प्रज्ञा २३६ ४१ ४५१ १५६ ३६२  
 प्रज्ञान ३६२६  
 प्रज्वलित ३६२६  
 प्रणत ५६३१  
 प्रणय ७६६ ३६३ ३७२५ ५५१६ २१

प्रणयन ४६२४  
 प्रणयहिंसन २६  
 प्रणव २१ ६३१ २ ९६ ३ ३६३१  
 प्रणाव ३६३१  
 प्रणाम २ १  
 प्रणाव्य ३६३२  
 प्रणिधान ३६३२ ३३  
 प्रणिधि ३६३३ ६२३२  
 प्रणिहित ११ ३६३३  
 प्रणीत ७७७ ३६३४  
 प्रतत ३६३५  
 प्रतति ३६३५  
 प्रतल ३६३६  
 प्रताप ३६३६ ६४ ४५५१  
 प्रतापस ३६३  
 प्रतापिन ३६२  
 प्रतारक ३६३७  
 प्रतारिका २६२३ ३६३  
 प्रति ३६३  
 प्रतिकमन ३ ३३  
 प्रतिकाश ३६३६  
 प्रतिक्रियामात्र ३६६२  
 प्रतिकीलक २६  
 प्रतिकल २१ ३६६१ ३७२६ ५३१६  
 प्रतिकलत्व ५७७  
 प्रतिकृति ३ ४ ३६४ ५ ५१  
 प्रतिकृष्ट ३६४१  
 प्रतिक्षेप ४५६ २६७१  
 प्रतिगन्तु ३६५३  
 प्रतिगम ३४३६  
 प्रतिग्रह ३६४१  
 प्रतिग्राह ३६४२ ४३  
 प्रतिष ३६४४  
 प्रतिष्ठा ६२ २६६७ ३ ५ ६२२१  
 ५ ३ ६३ १

प्रतिज्ञात ३३ ६  
 प्रतिताली २४३७  
 प्रतिबान ३६३ ३६ ३  
 प्रतिबिम्बा ३६ ५  
 प्रतिनिधि ३६३ ४  
 प्रतिनत ३६५६  
 प्रतिपत २  
 प्रतिपत्ति ३६४५ ३७२३  
 प्रतिपत्तिथि ३ ७२ ३६  
 प्रतिपत्पञ्चवशीसन्धि ३२१  
 प्रतिपद्व ३६४६  
 प्रतिपन्न ३६४  
 प्रतिपादक ३६४  
 प्रतिपादना ३६  
 प्रतिपाय ३६६४  
 प्रतिपुस्तक ५२२  
 प्रतिबन्ध ३ ५ ५५ ३ ६  
 प्रतिबन्धन ६५६१  
 प्रतिबन्धसाधन ५५ ३  
 प्रतिबिम्ब २१ ६  
 प्रतिभ ३६ ६  
 प्रतिभय ३६५ ३६४७  
 प्रतिभा ३६४५ ३६ ६  
 प्रतिभास ३६४६  
 प्रतिभू १७  
 प्रतिभा ३३६ ३६४ ५ ४४४५  
 प्रतिमान ३६५१  
 प्रतियत्न ३६५१  
 प्रतियात ३६६४ ३६ २  
 प्रतियोगिन् ३१५१ ३६ ३  
 प्रतिरोध ३ ६  
 प्रतिवाक्य ७१  
 प्रतिवेश २२१४  
 प्रतिशिष्य ३६५२  
 प्रतिश्याय ३३ ३

प्रतिश्रय ३६५२  
 प्रतिषध ३  
 प्रतिष्कषा ३६५३ ५४  
 प्रतिष्ठा १६३२ २५६ ३६५  
 प्रतिसर ६५६ ३६५५  
 प्रतिसरा ३६५  
 प्रतिसृष्ट ३६५  
 प्रतिस्खलित ३६५  
 प्रतिस्पर्धिजन ३६७३  
 प्रतिस्पश ३६५  
 प्रतिहत २६ २ ३६५ ३७ ६ ६ १  
 २  
 प्रतिहृति २ ३ ३६४४  
 प्रतिहार ३६५६  
 प्रतिहारी ३६६  
 प्रतिहृति ३६५६  
 प्रतिहृत् ३६५६  
 प्रतीक ३६६१  
 प्रतीकार ३६४ ६२  
 प्रतीकारमात्रक २६  
 प्रतीकाश ३६६३  
 प्रतीक्य ३६६४  
 प्रतीची ३२३१ ३६ ५३३  
 प्रतीच्य ३६  
 प्रतीत ३६६  
 प्रतीप ५४६  
 प्रतीवाप ५१  
 प्रतीहार २६ २ ३६६५  
 प्रतीहारापराक्यहा स्थ २६ २  
 प्रतीहारी ३६६५  
 प्रतोव २ ३५ ३६६६  
 प्रतोवन ३६६६  
 प्रतोली ३६६ ४६ ५ ५ २१  
 प्रत्न ६३३ ३६६  
 प्रत्नाङ्गिरस ११६१

प्रयकक्षणी ३६६ ६६  
 प्रत्यक्ष ११ २३  
 प्रयच्च ३६  
 प्रयत्ननिवासिन ४५१२  
 प्रयय १६ २६ ५ ३६ १ ६२ ६  
 प्रययपूव ११ ३६११  
 प्रययातर ५  
 प्रययित ५ १ ३६६५  
 प्रययितव ५ १  
 प्रययिन् ३६ ३  
 प्रयवस्थान ३६ ३  
 प्रयाकार ३६  
 प्रयाकृति ३६  
 प्रयाख्यात ५६५  
 प्रयगबुद्धि ३६६६  
 प्रयायन ३६ ६  
 प्रयाय ११ २  
 प्रयालीढ ३६ ४  
 प्रयासा ५२ ५३६  
 प्रयासति १६  
 प्रयासरणकमन ३६ ५  
 प्रयासार ३६ ५  
 प्रयाहार ३६५३ ३६ ६  
 प्रयुदगमनीय ३६  
 प्रयूव ३६  
 प्रयूषित ३६  
 प्रयन ३६७६  
 प्रयना ३६७६  
 प्रयम १२ ६ ३ ६ ५३ ५५ ३६  
 ४१  
 प्रयमस्वर ५  
 प्रयमा ३६  
 प्रयमार्थ ३६ १ ३७५१  
 प्रयमोत्तमसम्यम ३४६६  
 प्रयित ५४११

प्रथितव ३६ २  
 प्रवाकु ३६ १  
 प्रवान ६६१२  
 प्रविष्टि ३६ ३  
 प्रीपन २  
 प्रदीप्त १५ २ २ ३६ २  
 प्रवेयाथ ६१  
 प्रवेश ५ ६ ३६ २ ६ ४ १  
 प्रवेशन ३६ ३  
 प्रवेशा तरस्थिति ३५५  
 प्रदोष ३ २ ३६ ३ ५ ५  
 पक्षराग ६३  
 प्रद्य न ३६  
 प्रद्युम्नपत्नी ६ ६  
 प्रद्यातन ३६ ५  
 प्रधन ३६ ५  
 प्रधान ४१ १६३ ३ ३ ४ ६२  
 ५२६ ६ ३६ ६ ३ २ ४ १  
 ६ ४ ६ ४ १३ ६ १५ ६१२१  
 प्रधानधातु ३ ५  
 प्रधानशब् २ ६२  
 प्रधानाङ्ग ३२५७  
 प्रधूपित ३६ ७  
 प्रधूपिता ३६  
 प्रपञ्च ३६  
 प्रपतन ३६ ६  
 प्रपव ३६  
 प्रपा २५६२ ६१७४  
 प्रपात ४ ३२५५ ३६ ६  
 प्रपाताख्यशत्रुनिग्रहकर्मन ६५३३  
 प्रपितामह ३६ ६  
 प्रपूरण ३५५  
 प्रपीण्डय ३४१४  
 प्रबध ३४५५  
 प्रबल ६

प्रबुद्ध ३६६  
 प्रबुद्धि ३६६१  
 प्रबोधन ३६६१  
 प्रबोधना ३६६  
 प्रभ जन ३६६१  
 प्रभव २२६३ ३६६२  
 प्रभा २ ३१ ३ ६ ३२ ६ ३६६३  
 ४ २  
 प्रभाकर ३३ ३६६३  
 प्रभाख्या सूर्यपत्नी २५२३ ६ ६  
 प्रभाकरसारथि ५ १  
 प्रभाग ५६ ५  
 प्रभात ५ १६ २ ३५६ ३६ ५  
 ६३  
 प्रभाव १२१ ५२ ५५ २५ ६ २ ६  
 ३६३६ ६ ३  
 प्रभात ३६६  
 प्रभासन ३६६  
 प्रभिन्न ३६६५  
 प्रभु ३६१ ४ २ ६ २ ४ २ ६५  
 २६१६२ ३ ६ ४६ ५ ५३  
 प्रभु ५१६ ६१२१  
 प्रभूत ३५ ३ ३६६५ ३ ५५ ६६१६ १७  
 प्रभृति ३६६६  
 प्रभस्त ६५५२  
 प्रभम १ २३ ३६६६ ६ २  
 प्रभयन ३६६  
 प्रभयप्रभव ६  
 प्रभयभिर् ६ ६  
 प्रभयमव ६५६  
 प्रभया ३६६६  
 प्रभयातर ३ ६५६२  
 प्रभयन ३७  
 प्रभव ३६६  
 प्रभवा ३६६  
 प्रमाण १४३५ २७३५ ३६६

प्रमाणना ३  
 प्रमाणभव ३६१  
 प्रमाणातर ३ ५  
 प्रमात ३६६  
 प्रमाथ ३  
 प्रमीत ३ १  
 प्रमीत १ ३ १  
 प्रमख ३ २  
 प्रयत ३ २  
 प्रयन ५६१ ३६३२  
 प्रयाग ३ ३  
 प्रयाण ३ ३  
 प्रयाम ३  
 प्रयोक्त ३ ५५६  
 प्रयोग ३ ५  
 प्रयोजक ३  
 प्रयोजन ३ ५ २ १३१५ १५३३  
 ३७ ६  
 प्ररीचन् ३ ६  
 प्ररीचरी ३ ६  
 प्रकृष्ट ३  
 प्रकृष्ट ३  
 प्ररोह ३  
 प्ररोहण ३  
 प्रलम्ब ३  
 प्रलम्बन ३  
 प्रलय ६१ ३७ ६ ६११ ६२३६  
 प्रोभिन् ३ १  
 प्रवक्तव्य ३ १२  
 प्रवक्त ३ १२  
 प्रवक्तृ ३ १  
 प्रवचन ३ ११  
 प्रवचनीय ३ १२  
 प्रवण ३ १२  
 प्रवर ३ १३ ४३१  
 प्रवर्ग्यात्म ३१३

प्रवतन ३१ २ ३ ५ ६२  
 प्रवतना ३६६६  
 प्रवह ३ १  
 प्रवहण ३ १  
 प्रवारण ३ १५  
 प्रवाल ३ १५ ५ २  
 प्रवास ६ १  
 प्रवासना ३ १६  
 प्रवासशील ३ ६  
 प्रवाह ३ १ १६ ५६३  
 प्रविवारण ३ १ ५ १  
 प्रवितारणा ३ १  
 प्रवीण २६ २ ५  
 प्रवीणाभिजन २४  
 प्रवृत्ति ३६४५ ३ १ १६ ५१३३  
 प्रवृद्ध ७ २६३ ३ २ ४  
 प्रवेणि ३ २  
 प्रवेणी ६५ ३ २  
 प्रवेश ५ ३ ६३ ५६७५  
 प्रवेशान ३६३२  
 प्रवेशित ३६३  
 प्रवेष्टु ३ २१  
 प्रव्रजिता ३ २२  
 प्रव्र या ३  
 प्रगता ६४ ४५६ ६ ६३६ २३२४  
 २४६६ ३२३२ ३ ४५३१ ६  
 प्रगस्ता १ ३२ ३६ ६१ ६ ६२६३  
 प्रगस्तकौशेय ३१  
 प्रगस्तक्षीमादि ३१  
 प्रगस्तजटक ६४६५  
 प्रगस्ततम् ६१  
 प्रगस्तव ६५  
 प्रगस्तकम् ४७६५  
 प्रगस्तरीमावस्त ६५  
 प्रगस्तवचन ३७११

प्रगस्ताज ६६४२  
 प्रगस्ताजाययु त ६६ २  
 प्रशा तानि १३३१  
 प्रशन १ ५ २१ ३१ ४६६ ६१  
 ५३३ ६६६ १ १६ २ ६४ ५३४  
 प्रशनाविवाचक ६ ३  
 प्रशनानुज्ञा २ ६५  
 पूरणी २६  
 प्रश्वण ३ ४  
 प्रष्ठ ३६५३ ३ २२  
 प्रसङ्ग ३ २ ६५ ६  
 प्रसत्ति ३ ३१  
 प्रसवन ३ २३  
 प्रसवरी ३ २३  
 प्रसन्न ५४३ ५ २  
 प्रसन्ना ३ २३  
 प्रसन्नीकरण ३ ३२  
 प्रसभ ३७२४  
 प्रसर ३६३ ३७२५ ५५१४  
 प्रसरण ३७२६  
 प्रसरणी ३ २५  
 प्रसपक ३ २६  
 प्रसप्नु ३७२  
 प्रसव २६ ३ ६२ १ ६ २६२१  
 २ ३२ ३ २७ ६६२  
 प्रसव्य ३ २६  
 प्रसहन ३ ३  
 प्रसहनी ३ ३  
 प्रसहासजवार्ताकी ३६ ६  
 प्रसाव १३ ३ ३ ३१  
 प्रसावन ३७३२  
 प्रसावना ३७३२  
 प्रसाधक ४११३  
 प्रसाधन ३७  
 प्रसाधना ३७३३

प्रसाधनी ३ ३३  
 प्रसारण २५६३  
 प्रसारणी ६ ६  
 प्रसारित ६५६  
 प्रसित ५१ ५  
 प्रसिद्ध ३ ३ ४ ६१  
 प्रसिद्धवाद्य २५६४  
 प्रसिद्धि २३५ ६६६५  
 प्रसू ३ ३४  
 प्रसूत ३ ३५ ३६ ६४५६ ६६  
 प्रसूता ३ ३५ ६४६  
 प्रसूति ३ ३६  
 प्रसून ३७३५  
 प्रसूनमाय ३५२१  
 प्रसृत ३ २  
 प्रसृता ३७३  
 प्रसृति ६२५ ३ २ ३  
 प्रसेक ३ ३६  
 प्रसेव ३ ३६  
 प्रसेवक ६५२ ३ ४  
 प्रसेवाद्य ६५१६  
 प्रसेविका १३ २  
 प्रसोमद्वयग-प-चमसामन ३ ६  
 प्रस्कल ३११  
 प्रस्तर २६६  
 प्रस्तरण ३ ४  
 प्रस्तार ३७४  
 प्रस्ताव ४ ६ ३२११ ३ ४१ ५ ४  
 ६७ ६  
 प्रस्तावक ३७४३  
 प्रस्तुत २ ४ ३७४२  
 प्रस्तुता ३ ४२  
 प्रस्तोत ३ ४२  
 प्रस्थ ३ ३  
 प्रस्थचतुर्भा ४  
 ४३ क

प्रस्थापन ४५६२  
 प्रस्फोटन ३  
 प्रस्फोटनक्रिया ६११  
 प्रस्फोटनक्रियासाधन ६११  
 प्रलवणममि १ २३  
 प्रलवणशील १ २२  
 प्रलाव ३ ४५  
 प्रलुति ३ ४४ ४५  
 प्रहत ३ ४६  
 प्रहर ४५६  
 प्रहरण ४५ २ २५ २६ ६ ३ ४६  
 प्रहषवत ३  
 प्रहसन ३ ३६ ३  
 प्रहस्त ३६  
 प्रहार ३१२ ५ ६३ ६६ २  
 प्रहास ३१२  
 प्रहित ३ ४  
 प्रहीण ४ ५  
 प्रहृष्ट ३  
 प्रहेलिका ४४  
 प्रह्व बतनय ५ ६१  
 प्रह्वीवपितु ६ ६६  
 प्रह्व ३ १२  
 प्राशु २४६ २  
 प्राकार ४१७ ३१७ ६३ ५ ५ ७ ६  
 ५६६१ ६४११  
 प्राकारगोपुर ३२१६  
 प्राकारमूलबध २ ४  
 प्राकारशिखर १ ६६  
 प्राकाश ३७ ६  
 प्राकाश २६२६  
 प्राग-म्य ३६ ६  
 प्राग्भव ३ ५  
 प्राग्भार ३ ५  
 प्राङ्गण ५५



प्राङ्मुख ३ ५  
 प्राच् ३ ५  
 प्राचिका ३ ५२ ६१५५  
 प्राची ३ ५५ ३५६२ ३ ५१  
 प्राचतस २५६ ३ ५४  
 प्राचीनबर्हिस् ३ ५३  
 प्राय ३ ५  
 प्राच्यनीवृक्षाज ६ १  
 प्राच्यनीवृक्षस्य ६ १३  
 प्राजन २५१३  
 प्राजापय ३ ५५  
 प्राजापयतीथ १२६  
 प्राजितु ६६  
 प्राजिपक्षिन् ३३ ६  
 प्राज्ञ ३ ५ ३६६  
 प्राज्ञा ३ ५  
 प्राज्ञी ३ ५  
 प्राय ३४६२ ३६६५ ३५ ५  
 प्राण १४२ २२ २३१ ३७५ ६२६६  
 प्राणक ३ ५६  
 प्राणय ३ ५६  
 प्राणव ३ ६  
 प्राणवा ३ ६  
 प्राणवातु ३ ६  
 प्राणधार ५१५  
 प्राणन ४ ६३ २३ ३ १  
 प्राणनाथ २३११ ३ ६१  
 प्राणनाथकघातु ३ ४  
 प्राणवत ५१ २३ १ २३१  
 प्राणवाय ४२२  
 प्राणायामातर ३५५२  
 प्राणिगमनोचन ३ २  
 प्राणिजात्यन्तर ६६४२  
 प्राणितु २२६६  
 प्राणिघत २२१६ ३ ६१ ६२६३ ६३ १ ६

प्राणिन् २१५६ २६  
 प्राणिमात्र २२२  
 प्राणिसङ्घातर ६ १  
 प्राण्यतर ६१५६  
 प्राति ३ ६२  
 प्रातिपदिक २६२५  
 प्रातिलोम्य ३१६१  
 प्रात सवन ३ ४  
 प्रात सवनायि ६३६२  
 प्रात सवनादिक २६ ५  
 प्रातुर्भायि २२२५  
 प्रावेश ३६ २ ३ ६२  
 प्राधाय ३ ३१६ ६१२१  
 प्राध्व ३ ६२  
 प्रात  
 प्रातर ३ ६३  
 प्रापण ५३६ १३ २ ३ २६  
 प्रापणीय ५ २  
 प्राप्त २१ ५३ ७ ३ ३६३३  
 ३ ६४  
 प्राप्तकूप ३ ६४  
 प्राप्तर्तु ५७७  
 प्राप्तसत्ताक ५ ३  
 प्राप्तसत्त्व ५३६  
 प्राप्तावसान ६ २६  
 प्राप्ति ५७२ १ ३ २६२६ ३२ ७  
 ३६४६ ३ ६५ ३६६ ६३ ४५४४ ४  
 ४ ६  
 प्राप्य ३६६७  
 प्राबय ३४  
 प्राभत ७६१ ६२ ३६ ३  
 प्राय ३७६५  
 प्रायय ३७ ४  
 प्रायश्चरण ३६२२  
 प्रायश्चित्त ३२३६ ३३१४ ३७६६

प्रार म

प्राथन ३६३३ ४५५५

प्रार्थना २६ ५६

प्राथित ३७६७

प्रादित ३ ६

प्रालम्ब ३ ६

प्रालम्बी ३ ६

प्रालय २४ ५

प्रावरण २१६ ३ ५६ ५६ ६

प्रावरणामकपट ३ ६

प्रावार ३१ ५

प्रावारभट्ट ३ २१

प्रावृ भवावि ३ ६६

प्रावृज्जालि १ २

प्रावृणनिश २ २३

प्रावृषायणी ३ ६६

प्रावृषण्य ३७६६

प्रास ३७

प्रावृष २ १ ४४ ५ ५३६

प्रावृ वनस्पति ५

प्रास्ताव ३६१६ ३ ३२७ १६२

प्रास्तावपुच्छ ६ ३४

प्रास्तायध १४३६

प्रियवद २१ ३ २ ३ ५ १ ३

५ १५ ६ ३६

प्रियवदा ३ ५

प्रिय ६ ५ १२६६ ३ ६६ ३ ६१ ७१

४१५५ ५ ३

प्रियक ३ ७२

प्रियकृष्ण ३६ १२६५ १ ४४ १६ ६

३७७४ ३ ४ ६ २ ५१

५२६६ ५५ ५

प्रियकृष्णक ६६२

प्रियकृष्ण ३६६५

प्रियकृष्णमहीवह १ ४६

प्रियकृष्णमहीवह ६५

प्रियवक्तु ३ ५ ६

प्रियवाक्य २ ६

प्रियवाच् ४१५६

प्रियवावक ३ ६

प्रियवाविका ३ ६

प्रियवाविन ६३

प्रियसुत ३ ७७

प्रिया ३ १

प्रियाङ्गक ६

प्रियाचार ३

प्रियापय ३७

प्रियालङ्ग २ ५ ६६

प्रियालफल २

प्रियालवृक्ष ३ ६१

प्रीणन ५११

प्रीत २ ६६ ३

प्रीति ३६ ५६ २३२३ ३७

प्रक्षि ३ ६

प्रक्ष २ २१ ३

प्रक्ष ३

प्रक्षोलन ३

प्रत ११ ३ १ ६ ५

प्रतवाहानि १६२

प्रतनवी ५६६६

प्रतभव ३५

प्रतालय ३ १

प्रतालावेश २ ३

प्रमन २ ३ ३ २ ५६ ४६१६

६६

प्रमवत ५ १

प्रमालङ्कार ५४४

प्रमक ११२

प्रमण १६ ६ ७ ३ २ ५ २ ६४६६

प्रमणा ३६२४

प्ररयितय ६३६५  
 प्ररित ३ ३५ ६ ६६  
 प्ररिधन ३ २  
 प्ररिवरी ३ २  
 प्रखण २१६५ ३ ३ ५१३३ ३  
 प्रखणीय ३ ३  
 प्रखित ३६५ ३  
 प्रख्य ३ ३  
 प्रख ३ ३  
 प्रोक्त ६  
 प्रोक्षण ३  
 प्रोक्षण्य ३ ४  
 प्रोक्षि यासावन २ १  
 प्रोक्षित ३ १ ५  
 प्रोत ३ ५  
 प्रोसाहन ३१  
 प्रोसाहनकत २ १  
 प्रोत्साहना २ १  
 प्रोथ ३ ६  
 प्रोद्यत ७२२  
 प्रोष्ठ ३ ६  
 प्रोष्ठीसप्तमस्यमव ५ ४  
 प्रोह ३  
 प्रोढ २२६  
 प्रलक्ष १ १ ६ २२ ६ ३१६  
 ३  
 प्रलक्षद्रव १ ४१  
 प्रलभापावप १  
 प्रलव ७ २३६५ ६६ ३ ४ ३  
 प्रलवक ३७६  
 प्रलवग ३७६  
 प्रलवङ्ग ३७६१  
 प्रलवङ्ग ३ ६  
 प्रलवङ्गम ३ ६  
 प्रलवन ३ ६१ ६३ ४ २३

प्लाविन ३ ६२  
 प्लीहन २३५५  
 प्लक्षि ३ ६२  
 प्लत ३ ६३  
 प्लतवत ३ ६३  
 प्लतीभाव ३ ६१  
 प्लषि ३ ३  
 प्लष्ट २५

५

फ ३ ६  
 फक्कक ३ ६५  
 फक्किका ३ ६५  
 फक्कित ३ ६५  
 फजिका ३६२२ ५१ ७  
 फटा ३ ६६  
 फण ३७६६  
 फणिज ६३  
 फणिजकमवज ६६  
 फणिराजक ३ ६४  
 फणिजक ४१६ २२४  
 फफरीक ३७६६  
 फल ३४५ १५ ३ २१६५ ३७२७-  
 ३६ ६ ४६५ ६ ४ २६ ५३१  
 ५६ ६२२ ६३ १ ६५ २  
 फलक १७६६ ३  
 फलकपाणि २ ६२  
 फलकाविमुष्टि ६२५२  
 फलकिका ३१ ५  
 फलकिन् ३ १  
 फलकी ३  
 फलत्रिक ५ १  
 फलनामविम्बमान ३ ६१  
 फलपाकविनाशिन ३ ३  
 फलपाकान्ता ३ २

कलबीज  
 कलमक्षिन् ३ ३  
 कलवली ५१६१  
 कलविकारादि ३ १  
 कलसर्मावत ३  
 कलसार ३५३६  
 कला ३ ६  
 कलाद्वय ५६७६  
 कलाध्यक्ष ३ २  
 कलायक्षत्रस ६६५  
 कलाध्यक्षप्रसव ३ २  
 कलाशान ३ ३  
 कलास्थि ३ ६३  
 कलिन् ३ ४  
 कलिनी १६१ ६ ३ २ ६६  
 ३ ४ ३२४ ५ ५५१३ ६१४  
 कलिनीप्रसव ३ २  
 कलनीवृक्ष ६३५  
 कली ३ ६६ ४३६२  
 कलदह ३ ५  
 कलदहा ३ ५  
 कलदय ३ ५  
 कलगु १४ ६ ३ ६ २६  
 कलगुन ३  
 कगुनी ३  
 कगुनीजात ३  
 कगुनीयक्तकाल ३  
 कगुनीयकपूर्णमा ३ १२  
 कगनीयुतमास ३ १२  
 काणि ३  
 काणित ३ ६  
 काल ३ ६ ३ ६१  
 कालाख्य-हृलाप्र १ ६४  
 कालास्थिखण्ड ३३  
 कागुन २३ ४ ३ १२

कागुनी ३ १२  
 कागनशाकलचतुदशसव २ २  
 कुकुस २३५५  
 कुल ६ २ ३ १३ ६७ ६६२१  
 ६  
 काकार ३ ६४  
 कान १३ २३६ २६ ३१५  
 कानिल ३ १३ २  
 कानव २२३ ३ १  
 ब  
 ब ३ १५  
 बक १६३४ २ १६ ४२२ ६ २३  
 ६५ ६ ६ ६६  
 बकप्र २४६२  
 बकप्रस ५२१ ५५६३  
 बकपक्षिन् २२  
 बकपुष्पत्रस ३ १६  
 बकल ४ १ २ ११ ६६२  
 बट ४ ६  
 बडवा ५३१६  
 बडिश ३ १  
 बठर ३ १८  
 बत ६६  
 बवर १६२५ ३ २१ ४६६१  
 बवरा ३ २  
 बवरी ११३ १ ६२ १६३६ २४५२  
 ३ २  
 बवरफल १५६६ ३ १ ६५३६  
 बड ५३२ ५६ २ ६३ ६ ५२६  
 ६  
 बडमुटि ३१ ५  
 बडशिखा ३ २२  
 बधि ३ २२  
 बधिर १ १  
 बबनी ३ २३

बबा ३ २३  
 बबिचौर ३३६  
 बबी ३ २३  
 बघ १५१ ६६ ५ ६६३ १६  
 २१ ६ २ ३ ३ ३ २  
 बघक ५२ ३ २५  
 बघकी ३ २ ३ ४६ ६६६  
 बघन २५५ ५३३ ३  
 १३ ३ २६ १ २५ ३ ६२ ३ २  
 २५ ५३६ ६ ६  
 बघनवश्मन १३ २  
 बघनाभाव २२३  
 बघनी ३ २६  
 बघसाधन ३ २५  
 बघस्तम्भ ५  
 बघ ३ २६ ६२ १  
 बघजीध ३ २  
 बघुयोगिन ३ ६२  
 बघुर २ ५६ ३ २  
 बघुक ३ २ ३ ६ २  
 ब कपुष्प ३ २  
 बधरा ३ ३१  
 बध्यगवी ५१६  
 ब ययोषित् २३२  
 बध्या ५१६  
 बघ २ ६ ३ ३२  
 बघवर्ण १ ५ ६३ २ ६  
 बघवर्णसयत २ ६  
 बघुवश्य ३८६२  
 बघुसन्धिघन ३ ६३  
 बरण्ड ३ ३  
 बरण्डक ३ ३५  
 बराटक ३ ३५  
 बपटी ३ ३६  
 बबर २३६७ ३ ३६

बबरा ३ ३  
 बबरी ३ ३६  
 बह ११६१ ३३२६ ३ ३  
 बहिचडा २६५६  
 बहिण ३ ३ ४१६  
 बहिन ५ ६ १  
 बहिबह ६ ३  
 बहिबहक ६  
 बहिमचक २ ६  
 बहिषपितकया ३३६२  
 बहिस ३ ३  
 बल ५५ ६३६ ६२ १६  
 २३६६ २ १ ६४ २५ ५ ६ २ ३१  
 ३ ६६ ३२४१ ३३३२ ३६ ३५६  
 ३७५ ३ ३६ २ ६१ ४१ ४ ३  
 ५ १ ५५३६ १ ५६ ४ ६ ५ ५३  
 ६११२६ ६ ६२६ ६३७ ६ २  
 बलकर ३ ५  
 बलज ३ ४१  
 बलदेव १३१ १२ ३ ३६ ३ ३५६६  
 ३ ४२ ६३ ६  
 बलभद्र ६६ ६४२६ ६ ३६  
 बलभद्रा ३ ४२  
 बलभुय १ ६  
 बलमुक्त ३ ४  
 बलवत २६ ५ ४६४  
 बलविस्तारविटप ३२२३  
 बलसञ्जन १६१  
 बलहीन २२४  
 बला ६३ १२१७ २ ११ ३ ४ ४३ ४  
 ५२६६ ५४३२  
 बलाका ४४७५  
 बलाकामिद्व ३ १७  
 बलास्कार १७७४ ३७२४ ६४१७ ६६७  
 बलावानाविक २४६६

बलासन्नौषधि ६३ ५  
 बलाहक १ ३ १६ ३ ३  
 बलाहिति ६ ४५  
 बलि ३ ३  
 बलिन् २ ३ ६  
 बलिपुष्ट ६ २ ३  
 बलिम २१६  
 बलिमज् १६२ ३ ४  
 बलिभोक्त ३ ४  
 बलिष्ठ २६४  
 बलीका ३ ६  
 बलीवद ६६२ १६३६ २३ ६ ३३६६  
 ५२३५ ५३ ३ ५६ ५  
 बलीवदस्काय ६ ६  
 बलर ३ ६  
 बलौषध ३५१२  
 बाय ३ ५ ३ ३  
 बाबज २३१७ २६ ६  
 बास्तिघपन १५५  
 बाहल ३ ५ ४१ २  
 बाहिगति ३ १  
 बाहिमव ३  
 बाहिमवि २६७  
 बाहिष्ठ ३ ५१  
 बाहिष्पवमानप्रथमच ३६४७  
 बाहु ६ ३ ५१ ६३ २ ६५१२  
 बाहुकवाशवावि ३४६५  
 बाहुकमन् ३ ६५  
 बाहुगीत ३  
 बाहुग्रामाधिकारिन् १६५  
 बाहुचीरकृताम्बर १ ३  
 बाहुच्छिन्न २२४३  
 बाहुस्व १ २३  
 बाहुवसम्बधिन् ३ ७  
 बाहुप्रज ३ ५३

बाहुप्रव ३ ६५ ५  
 बाहुफल ३ ५३  
 बाहुमुज् ३४६  
 बाहुमयक ३३  
 बाहुरूप ३ ५४  
 बाहुल ३ ५४  
 बाहुलसम्बधिन् ३ ६  
 बाहुला ३ ५५  
 बाहुलासुत ३  
 बाहुलकृत ३५३ ३ ५६  
 बाहुमुता ३ ५  
 बाहुस्तुत ३ ५  
 बाहुहूत ३ ५  
 बाह्वाशिन २ २५  
 बाह्वी ३ ५२  
 बाह्वाकत्रकरण २६ ५  
 बाह ३ ५  
 बाण ११ १२५ ६१ १६३ ३३  
 ३ ५ ३ १ ६ ५२६ ५६५  
 ६ ५ ६२  
 बाणकार १२५  
 बाणपुस्त ११५३  
 बाणारोपण ६२ ३  
 बाणालुर २६३  
 बावरायण ५  
 बाघ ३ ६१ १ ४२३६  
 बाघा ३ ६१ ६५५१  
 बाघव १ ६ ३ ६२  
 बाघव ३ ६२  
 बाघवी ३ ६२  
 बारकी ३ ६  
 बारणी ३ ६  
 बावर ३ ६५  
 बाहृत ३ ६६  
 बाल ३५६ १ ५ १६७१ २६२६ ३ ६  
 १ ४३४२ ३ ५ १ ६

बालक ३५ ६ ६ २६१ ३ ६ ४६ ६  
 ६ ६ ६  
 बालकुसुम १५६  
 बालक्रीडनक १६६६  
 बालतृण ५ ६  
 बालघतपानाथभाजन ३३ १  
 बालपुत्रयत ३  
 बालपेयघत ३३ २  
 बालवस ३ ७  
 बालवसावुग्ध ३५६  
 बाला ३ ६ २६३  
 बालायचषक ३३  
 बालिका ३ ६६  
 बालिपुत्र ५  
 बालिभार्या २४२  
 बालिश ४२ २३५५ २६ ६ ३ १  
 बालक ३ २  
 बालका ३ २  
 बालकाव्यविषातर ३४ ६  
 बालय ३ २  
 बालीष्ठा १११६  
 बालीषघ ५  
 बाल्याविवयस् ३ ६६  
 बाष्प ३ ६  
 बाष्पी ३ ४  
 बाहु ५ २ ३ १११४ २ ६ ३ ४  
 ७५ ४ १५ ४६४७ ५ १२ १६  
 बाहुक ३ ६  
 बाहुज ३ ७  
 बाहुजात ३ ७  
 बाहुक्षण ३ ६  
 बाहुवा ३ २ ३ ७  
 बाहुवासम्बन्धिन् ३ ७  
 बाहुवी ३  
 बाहुमल ६५३

बाहुल ३ ६  
 बाहुलय ३  
 बाहुय ३ ६५  
 बाह्य १ १६३३ ३  
 बाह्व ३ १  
 बाह्विक ३ १  
 बाह्वीक ३ २  
 बिाल २५४ ३ ६  
 बिदल ३ ३  
 बिबु ३  
 बिबु ३५ ३८ ४ ५  
 बिबुचित्रपश ३५  
 बिबुजालक ३१३६  
 बिबुवेव २३५  
 बिबुल ३ ६  
 बिभीतक ११६ ६६ ६६ १२ ५  
 २७१२  
 बिभीतकतव ३२ २  
 बिभीतकफल ३२ २  
 बिभीचन ४५  
 बिम्ब ३ ६ ४११६  
 बिम्बाण्यककलास १२ २  
 बिम्बिका ११६२ ३३६  
 बिम्बिसार २३४  
 बिम्बिसारक ३  
 बिम्बी २४ १  
 बिम्बीफल ४ ३४  
 बिम्बीलता ४६१  
 बिल २६ ४ ३ ६ ५६१६ ६ ५  
 बिलशाय ६६५ ३ ६  
 बिलशया ३ ६  
 बिब ११ ३ ३ ६१ ४ ६४ ४७३  
 ५५५६ ५६१६ ६१३३ ६१७ ६५४७  
 बिबाण्यद्रुम ६४३४  
 बिसखण्ड ३ ६२

बीज २१ ६ ३ ६२ ५१२

बीजकमन ६

बीजकोश ५ ६३ ६४

बीजनिक्षप ५ ५१

बीजपुष्प ३ ६३

बीजपूर २१ २ ५१

बीजपूरक ३५५२

बीजपूरप्रस ३५ ६

बीजप्ररोह

बीजरेचक १२६३

बीजाकृत ५३१५

बीजिन् ३ ६

बीय ३ ६

बीभत्स ३ ६५

बुक ३ ६५

बुका ३ ६५

बककण ३ ६६

बककणकमन् ३६६

बुद्ध ६ २२ ६ २ ६ ३ ६६ ३६१

२ ६ ५५ २ ५६६६ ६६

६१६ ६३५१ ६ २६ ३२ ५२

बद्धववतामव २ २

बद्धवेवातर २२३३

बुद्धमिद ३५

बद्धमव ३४६६ ६

बद्धाण्ड २१५

बुद्धातर ३५२६ ३

बुद्धि ६४ २११६ २३२६ २६६२ २ १

२ २१ ३४४३ ३६२ ६ ३ ६

३ ६६ १२ ३६३ ३

४६ ६ ५ २३ ६२६१

बुद्धिमत् २ ५५ ३ ६७ ६

बुद्धिसम्पत्ति ३ १३

बुद्धव १ २ ३ ६ ६५६४

बुध २६३ १ १५ ७ ३६६५ ३ ६६,

३६६५ ६ ६ ४ ५ ६ ५ २

५५२ ६२६

बुधग्रह ६ ३ ५ १२ ६५३४ ६७३

बधपानी ६४६ ६६, ५६ ३

बधा ३ ६६

बधान ३६

ब न ३६ १

ब-वारक ३६

बभुक्षित ६१

बुलि ३६ २

बुस ३६ २

बुसा ३६ ३

बुस्त ३६ ३

बुस्तिकाख्यशाकस्त-बा तर ४ ४

बु चक ३६

बुद्ध ६६१

बद्धतम २३२

बद्धतर २३२

बद्धव ५३ ५

बद्धवारक २१ ५

बुद्धसंज्ञात ५३ ५

बुद्धिसन्नकमवजातर ३६१२

बुद्ध ४२

बुद्ध-छव ३६ ५

बहुत् १६१५ ३६ ५ ३६ ५ ६६ २

बुद्धितिका ६५ २ ३

बुद्धी ३६ ६ २

हृती-छवत् ३ ६६

बुद्धी-छ दोमव ३१३

बुद्धीफल ३ ६६

बुद्धक ३६

बुद्धकथाप्रसिद्धनगरातर ४ ४

बुद्धकर्मोदकाख्यकारव-लातर ३

बुद्धतर ४२६

बुद्धसम्बन्धिन् ३ ६६



बह्वगण्ड ६५  
 बह्वे १ ३५ ६  
 बह्वह २६२  
 बह्वली २ ६  
 बह्व्रथ २१  
 बह्व्रला ३६ ६  
 बह्व्रति ६२ १ २६ १६१३ ६६ २१११  
 २६५ २ १ २२ ३२६६ ५६ ५  
 बकट ३६१  
 बकिक ३६१  
 बकुठ ५ ६  
 बजिक ३६११  
 बब ६  
 बोद्धु ३ ६६  
 बोध ५६५ ३६ ६ ३६१२  
 बोधक ३६  
 बोधकर ५  
 बोधन ३ ६ ३६१२  
 बोधनी ३६१२ ३६१२  
 बोधयितव्य ३६१३  
 बोधनीया ३६१२  
 बोधि ३६१३  
 बोधितस्वशक्यतर ३ २२  
 बो यतर ३५१  
 बोल ३३३६ ३६१ ६५६  
 बोद्ध ५ ११  
 बोद्धवविशय ६  
 बोद्धम आतर २  
 बोद्धतवविशय ६ ३  
 ब्रह्म ३६१५  
 ब्रह्म २१ ६ ५३ ५१६ १६६६  
 १६ ६ ६३५४ ६ २  
 ब्रह्मबोध ३६१६  
 ब्रह्मवर्ग ५१२४ ५३  
 ब्रह्मचारिणी ३६१७

ब्रह्मचारिव २५ ६  
 ब्रह्मचारिन् ३६१६ ५१२ ५  
 ब्रह्मचार्याविक्रमठ ६१  
 ब्रह्मण्य ३६१  
 ह्यतियि २ ५६  
 ब्रह्मव ३६१  
 ब्रह्मवण्डिन् ३६१  
 ब्रह्मवाच २ ६१ ३६१  
 ब्रह्मवाक्यम ३५६  
 ब्रह्मान ५३ ६११ ४३ १ ६६५  
 ११५ २१३१ २३१ २ ५६५  
 ६ २ १ ३१ ३३२२ ३६१  
 ७६ २२६ ४६ ७ १२ ५२५  
 ५ ५२ ५६५२ ५ ५५ ६५२६ १  
 ६६४५ ६  
 ब्रह्मपुत्र ३६२ ४६४४  
 ब्रह्मपुत्रनव ६३६  
 ब्रह्मबधु ३६२२  
 ब्रह्मबालका ३६२  
 ब्रह्मरीतिलोह १२५४ ३६२५  
 ब्रह्मरीतिसजलोह ३३२१  
 ब्रह्मसाधु ३६१  
 ब्रह्मसूत्र यज्ञोपनीत ३२२६  
 ब्रह्माण्ड ३ ६५  
 ब्रह्मी ३६२२  
 ब्राह्म ३६२३  
 ब्राह्मण ५५६ २ ६२ २ ५५ ३६२  
 ७५५ ५२ २  
 ब्राह्मणसत्रियाजात ६३६३  
 ब्राह्मणाधिपण २२६३  
 ब्राह्मणी ३६२५ ४ ७५  
 ब्राह्मणीकीटक ४६ ६  
 ब्राह्म य ३६२६  
 ब्राह्मी ३६२३ १३२ ४४ ४ ५ ६२  
 ५७ ५६४ ६१६१ ६५६ ६६२१

भयनिगति ३ २३  
 भयरक्षक २५६  
 भयहीन २३५  
 भयानक ३६५ ३६ १५ ६ ४२२  
 भय ३६ ६  
 भरण ३६४६ ४ ४  
 भरणी ३६५ ४५६६ ६  
 भरत ३६५ ५६  
 भरतयोधिन ४१  
 भरतानज ५ ३  
 भरद्वाज ३६५१ ६ ६  
 भव ३६५२  
 भवज ३६५२  
 भवजा ३६५३  
 भवजी ३६५३  
 भवट ३६५३  
 भग ३६५४  
 भगत् ३६५४  
 भजन ६  
 भर्तृ ५ १ ३६५२ ५५  
 भर्तृवारक ३६५५  
 भर्तृवारिका ३६५६  
 भर्तृहरि ६ २  
 भर्तृक २१  
 भर्तृन ३ २ २७६५ २ १७ २६ ५  
 भर्तृना ४ ५  
 भर्तृत ११ २ २५ २६  
 भर्तृक ३६५  
 भर्तृन् ३६५६  
 भर्तृ ३६५७  
 भर्तृक ३६५  
 भर्तृलाट ३६५६  
 भर्तृलाट ५६२३  
 भर्तृलाटक ३६ ३३१ २६१६ २७७५  
 ५२६१ ५५५२ ५६

भर्तृलाटकी ६६ ३६५ ६१५ ५२३६  
 भर्तृली ३६५  
 भर्तृलक ६ २६६ ३६५ ६  
 भव १४१२ ३३ ३६६ ५५२  
 भूवत ३६६१  
 भवती ३६६१  
 भवन २ ६ ३६६  
 भवन्ती ३६६३  
 भवानी १ १३ ३३ ३  
 भवित ३६६७ ६५  
 भविल ३६६५  
 भविष्यत् ३६६५  
 भव्य २५ ३ ३६६५ ६६  
 भ यतरु ३ ४६  
 भव्यतरुफल ३ ४६  
 भव्यत्र ११५  
 भव्यफल ११५४  
 भवण ३६६  
 भवत् ३६६  
 भस्मन् १६६३ २६ ४६१४ ५६३  
 भस्मक ३६६६  
 भस्ममूल ३६७  
 भस्मा २६ ६ २ ६१ ३६६  
 भस्माष्मापक २७ ६  
 भस्त्रिका ३४ ३  
 भाकट ३६७  
 भाक्त ३६७१  
 भाग १४१ १६ २६ ५ ३१६७ ३६३  
 ३६३ १ २ ५ ३ ५६ ५  
 भागधय ३६७२  
 भागधयी ३६७३  
 भागवत ३६७३  
 भागिनय १४६  
 भाग्य २७१५ ३६७१ ७२ ७४ ६  
 भाङ्गीन ३६३६

भाजक ६६६३ ६  
 भाजन १४ ५ ३२५६ ३६ ६ २३२  
 भाण्ड ५६५ ३६ ६  
 भाण्डागार १ १६  
 भाण्डी ३६ ७  
 भाद्रशुक्लतृतीया ६ १६  
 भानु ३२२ ३६  
 भापना १  
 भाम ३६ ६  
 भामा ३६ ६  
 भार २ २ ३६ ६ ५ ६६ ५५६२  
 भारग्राहिवाक्य ५३२  
 भारत २२३ ३६ १  
 भारतद्वीपान्तर ३ ३  
 भारती ७६ ६५ १२६२ १६३ २६२१  
 ३६ १  
 भारद्वाज ३६ २  
 भारद्वाजवि ५२१६  
 भारद्वाजी ३६ ३  
 भारभरण ५२३५  
 भारवाह ३६  
 भारवाहककमन १६ ५  
 भाराश्व ५ १  
 भारुण्ड ३६ ५  
 भागव ३६ ६ ६ ६६  
 भागवी ३६ ६  
 भागी २७५६ ३१३ ३ ३ ५ ५२६१  
 भाङ्गी ५६ ३६१ २५ ५१३ ५ ६६  
 भात्रं ३६  
 भाय ३६ ७  
 भार्या ६६६ ११७५ ३११५ ३६ ७  
 भार्याप्रजमन २२  
 भार्यादिक ३६  
 भार्यादि ३६ ६  
 भाल ३६६

भालाङ्क ३६६  
 भाव ७३४ ५७ ३६६२  
 भावक ३६६७  
 भावज्ञा ३६६५  
 भावन्ता ३६६६  
 भाववेदिन ३६६५  
 भावाट ३६६  
 भावित ५३  
 भावित ३६६  
 भाविन् ३ ५५ ३६६५  
 भावक ३६६  
 भाषण ३६६६ ६  
 भाषणी ३६६  
 भाषणीय ४  
 भाषा ३६६६  
 भाषानिर्देशसम्पत् ६२६६  
 भाषाभद ६२३  
 भाषित २६  
 भाष्य ३६६६  
 भास ३३६ १ ३६६३ ३६२ ४  
 भास १३ ४ १  
 भासत १  
 भासपक्षिन २  
 भासयन्त ४ २  
 भासयन्ती २  
 भासाख्यविहग ४१  
 भासित २६५५ ३६ २  
 भास्कर ४२६ ६ ३ १६ २२७१  
 २३ ६ २ ४ ३१४ ३६ ४ ३  
 ५ ६३ ६७६६  
 भास्करव्यक्तदिश ६  
 भास्वत् ४ ३  
 भास्वर २३६७  
 भिक्षाशील ५  
 भिक्षागणचतुष्टय ३५ ५

भिक्षापात्र १ ५ ५६  
 भिक्षाभाजन १ ७  
 भिक्षाभाण्ड १ ३  
 भिक्ष २ ४७ ४ ५ ६ २१  
 भिक्षुकी ३ २३ ३३२२ ५ ३ ४  
 भिक्षुवषधारिचर ४६  
 भिण्डाद्रुम १११  
 भिण्डपाल १६  
 भित्ति १४१६ ३ ४ ६  
 भित्तिका ४ ६  
 भित्तिमल ३ ५४  
 भित्तिशङ्क २६ ६  
 भि-याविलपक ३२१३  
 भिवक ४  
 भिवुर ४  
 भिवल्लिम  
 भिवल्लि २३  
 भित्र ४  
 भित्त १ ६ २२४२ २६६२ २ ३  
 ४ ६  
 भित्तुम्भ ४ ६  
 भित्ततण्डलावयव १ ६  
 भिल ४ १  
 भिवज २३२२  
 भीत १५३२ २६६२ ४ ११  
 भीति ४६ २३६२ २५६३ ३६५  
 ५ ४  
 भीम २२३५ ११ १४ ४२१६ ४७४  
 ५१ ६ ५५६ ६६ ३  
 भीमसेन ४३६६ ५२ २  
 भीमसेननिहतासुर ६ ६२  
 भीष्म १२२ १२४३ ६ ६ ४ १२  
 ५३६१  
 भीष्मवतस ४ १३  
 भीष्मभीषण १३६४

भीषण ५४५ ११२३ २६३२ ३ ४  
 १  
 भीषणा १४  
 भीष्म १ ६ १ ४ १५ ५६२  
 भीष्मपित ५६२६  
 भुक्त १ ५ १६ ४ २१६  
 भुक्ति ६ २२३१  
 भुग्न ३२ ५ ३१ ६३१५  
 भुज १ ५ ३ २१ ३ ५ ४ १५  
 ६६६७  
 भुजकक्ष १ २  
 भजग १४२६ ३ ६ ४ ५२  
 भजङ्ग १३३ २६ ४ १६ ५४६  
 भुजङ्गम ६ २२५  
 भुजति ४ १  
 भजा २ २३ ४ १६  
 भुजि ४ १७  
 भुजिष्य ४ १  
 भुरण्य ४ १६  
 भुरिक ४ १६  
 भुलिङ्ग ४ २१  
 भवन ४ २२ ५५ ५  
 भुव-य ४ २२  
 भुवस् ४ २३  
 भुवस्तल १४३२  
 भुवोऽश ३५  
 भ ६ ६ १३३ ७७ ४१ ६६६ ४६ ६६  
 ६५ १६ ६ ६३ १७६१ १ ४  
 १६४ २४१४ ४२ २७६१ २ ३७ ४४  
 ३२३५ ४ १६ २३ ४३४६ ४४६  
 ४६४१ ४७ ५ ५४ ५१६१ ५२२  
 ५ ६ ५६६२ ६५६१  
 भक ४ २४  
 भूकश ४ २४  
 भूकशी ४ २४

मखर १३६१ १६२  
 मज्झिम्बू ४ २५  
 मत २३६६ २५ २ ५ ५३  
 भूतकश १६६  
 भूतजात्यन्तर ३१६६  
 भूतपति १६५५  
 भूतप्रवश ५६६  
 भूतवृक्ष ४ २  
 भूता २६  
 भूतात्मन २६  
 भूताविग्रह ३ ६  
 भूताविकप्रह ३६  
 भूतान्तर ३ १  
 भूतावश ५६६  
 भूति ३६३१ ६२ ४ २६ १ ५ ५३  
 ६३१७  
 भूतिक ४ ३  
 भूतीक ३  
 भूतेष्टा ४ ३१  
 भूधर ४३१ २६ २ ६१३१  
 भूधानी ५ १  
 भूधानीफल ५६६  
 भूनिम्ब ६६ १३६ ३  
 भूप १६५४ ३२६६ ४ ५ ५ ६६ ५ ६  
 ५७७४ ५६६६ ६ ५५  
 भूपकथा ६२५  
 भूपति ६५ ३  
 भूपतित्याल १३  
 भूपवीनामपुष्पवली २ २  
 भूपाल ३५६६  
 भूपालसम्पत्कथातर ३६१३  
 भूमृत् ४ ३१  
 भूमन ४५१ ४ २१ ४१६६  
 भूमि १ २ ११६ १६३ २२६७  
 २३२६ २ २ ३५६ ५

३६५ ३ ५५ २३ ३२ ३ २  
 ३२६ ४५१ ६६ ५ ७ ६५६  
 भूमिकर्मादि १३३७  
 भूमिका ४ ३१  
 भूमिज १३६३ ४ ३३  
 भूमिजम्बू २६१६  
 भूमिजा ३३  
 भूमिघन ५५६१  
 भूमिप २ ७  
 भूमिलवण ३२३  
 भूमिपापक ३ ५  
 भूमिशाम्या १ ४  
 भूमिसम्बद्ध ३ ५६  
 भूमिसह १  
 भूमिस्तुण ४ ३४  
 भूम्याट ३ १  
 भूयस ३  
 भूयोधिकार ३ ५३  
 भूरि ४ ३५  
 भूरिफला ४ ३६  
 भूरुहबीज २ ४  
 भूज ३१२ ४ ६२ ६ ६  
 भूजवक्ष ४ १५ ६ ३२ ६१  
 भूणि ४ ३७  
 भलता ५१५  
 भूवावि २ ६६  
 भूषण ४५ ३६७ ५ १ ६६ ११६१  
 २ ६ २३५ २६ ६ ३१६  
 ३६ ६ ३६ ३१ ३६  
 भूषणा ४ ३  
 भूषणावि ३१३  
 भूषा १ १  
 भूषित ३७३  
 भूषितकन्या १५१  
 भूस्तुण ३

भृगु ३६ ६ ४ ३  
 भृङ्ग ३ ५ १३५ १ ४५ ३ ३  
 ४१ ६ ४१६ ४६५६ ६४ ३ ६७ ६  
 भृङ्गराज ११ ७ ४ ४२३२ ३  
 भृङ्गरिदि २ ६१  
 भृङ्ग ३६ १  
 भृङ्गार ४१  
 भृङ्गारी ४१ १  
 भृङ्गरिदि ६३५  
 भृङ्गकण्ठ ४ ४२  
 भक्त १३६७ ३ ५१  
 भृति ११६२ ३१ ६ ३६५ ४  
 ३ ५६४  
 भृतिकर २२६  
 भृत्य ११३३ ६१ १ २२२३ २६३४  
 ३५ ४ ४  
 भृया ४ ४४  
 भृमल ४ ४५  
 भृमि ४ ४५  
 भृश ६ २७२ ६ ६ २६ ५ ३६१  
 भृशतर ६३६३  
 भृशताप ३६३६  
 भृशालोल ४६  
 भृशाथ २६४२ ३१६१ ३ ५ ६  
 भृष्टधाय ४ ५  
 भृष्टि ४ ६  
 भक्त ७५ ६२ ३७६ १५ ३ १७७२ २२२७  
 २३६ २५६५ ३६ १ ३७१ ६१  
 ४ ४६ ४११ ४२२६ ४ २४ २७  
 ५१५ ६४ ५७४४ ६७ ४  
 भक्तभव ३३७  
 भक्ती ६ ६१  
 भेषु २६२६ ४  
 भव ४५ २४६५ ३४३५ ३६ ३७१७  
 ३ १ ४ ७ ६३२७

भवित ६  
 भन ४  
 भर ४ ४  
 भरी ५३ २६६६  
 भूरीनाव २३५१  
 भरीवाद्य २ १  
 भरण्ड ६  
 भरण्डा ४  
 भल २४ १ ६  
 भलक ५  
 भवज २ १ ३६ ६१ २२ २४  
 २ ३६ ४ ५  
 भवजमेवणी १ २  
 भवजमिद् ३४१ ६६ ३  
 भवजस्तम्ब ११ २  
 भवजस्तम्बातर ३२ १  
 भवजातर ३४१३ ६६ ६  
 भवजी ४ ५  
 भक्ष ४ ५६  
 भमी २५ ६  
 भरव ६६ १३२३  
 भरवी ४ ५१  
 भवज्य ६३७५  
 भोक्तव्य ४ ५७  
 भोक्तुकाम ६६  
 भोक्तु ४ १  
 भोग २१६७ २६६ ३ ६ ५१  
 ६३२  
 भोगयुक्त ५२  
 भोगवती ३५४७ ४ ५३  
 भोगवत् ४ ५२  
 भोगिदन्त ३७६६  
 भोगिन ४ ५३ ५४६५  
 भोगिनी ५३  
 भोगिमव २६ ६

भोग्यवस्तु ५५  
 भोज ५५  
 भोजतमया १ ६  
 भोजा ४२ ६ ५ ३५ २ ११ २ ६  
 २६४६ ४ ५२ ५६ ७ ६६ ५२६७  
 भोजनपात्र ६५६२  
 भोजनस्थान ३७४  
 भोजना ३१  
 भोजनीय ४ ५  
 भोजस्वस्तु ६५५  
 भोज्य १ ५ १ ६ १ १ २  
 भोल ४ ५ ५  
 भोस ४ ५६  
 भौत ४ ५६ ६  
 भौतिक ४ ६  
 भौती ४ ५६  
 भौम ५६ २ ४ ४ ६१ ५२२१  
 भौमव्यमातिथि ३४६  
 भौरिक ६२  
 छा ४ ६३ ५६१ ६५५  
 छा ४ ६३  
 छाक ४ ६४  
 छाग २ ६४ ४ ६३ ६५६६ २ ५५३  
 छागशील ४ ३  
 छागणा ४ ६६  
 छागणी ४ ६६  
 छागर ३ ६ ११७४ ६५ ४ ३ ६  
 १५ ६ ३ ६२  
 छागरक ६  
 छागर छाली ४ ६  
 छागरा ४ ६  
 छागरी ४ ६  
 छागरेष्ट ४ ६६  
 छागि ४ ६६  
 छाष्टयव २ ४ ५  
 ४४ क

छाष्टयवस्थलक्षणक २ ५  
 छाज  
 छातु २ १ ६६५३  
 छातपनी ३६२६  
 छातय १  
 छात्रपत्य १  
 छात ७१ ६५५  
 छाति ३६२ ७२ ५३ ५ ५ ५४  
 छातिमत ७२  
 छातियुक्त ४ २  
 छासक ४ ६४  
 छासर ४ ३  
 छासरी ४ ३  
 छासाक ४ ४  
 छाष्ट २६५  
 छाकु ६४ ३  
 छाकुटीमख ७४  
 छा २१३५  
 छाकु १३३  
 छाग ४ ५  
 छाग्य ३ ४  
 छाग्यस्यप्रशस्तरोगावत ६५

म

म ४ ६  
 मकर ३३ २३४३ ४ ४१३२ ५२३७  
 मकरध्वज ४ ६ ६  
 मकरद्व ४  
 मकरमख ६  
 मकरराशि ४४५४  
 मकराङ्ग ४  
 मकुर ४ १  
 मकुल २  
 मकुष्ठ २  
 मक्कण ४ ४

मक्षिका १ ३ १२३२ १६ ४१३  
 ४५ ३  
 मक्षिकाजातिभय २५६१  
 मक्षिकातर १२६६ ६३३६  
 मख ११६३ ४ ५ ६  
 मखद्विन् ४ ५  
 मखमिद ६४  
 मखान्तर ३६ ३  
 मगध ४ ५  
 मगधा ४ ६  
 मघ ४  
 मघवन् ४  
 मघा २६६३ ४ ७  
 मघी ४ ७  
 मङ्गल ४ ६  
 मङ्ग ६  
 मङ्ग ४ ६१  
 मङ्गयुत ६२६३  
 मङ्गल १ ४ ५११ ६३१ ६६ १२१५  
 १६१२ २५६ २६४६ ४ ६ ६२  
 ५६३ ६१ ६ ६२ ६ ६६२  
 मङ्गलग्रह २ १६ ४६ १२  
 मङ्गलवाद्यनिर्घोष ३७७६  
 मङ्गला ४ ६१  
 मङ्गलाधार ३३६  
 मङ्गलावित ६१ ६  
 मङ्गल ४ ६३  
 मङ्गला ४ ६६  
 मङ्गल ३ ४६  
 मङ्गल ३२२१  
 मङ्गली २ १ ४ ६ ५१५ ६  
 मङ्गल ३२६ १३२६ २६ ४६ १  
 ४ ४७ ५ ५५ ६७१  
 मङ्गलसप्तमवध २२ ६  
 मङ्गल ६१ ६

मङ्गुघोष १ १६  
 मङ्गुघोषा ६  
 मङ्गुनाश ६  
 मङ्गुनाशी ४ ६  
 मङ्गल ६६  
 मङ्गला ३३३४ १  
 मटची १ १  
 मठर १ १ २  
 मट्टक १ ३  
 मणि ६७७ २ ५२ ४१ ३ ४३ ५२१५  
 ६३३५  
 मणिक १६६५  
 मणिकर्णिका १ ६  
 मणिकार ५६२६  
 मणिच्छिद्रा ४१ ६  
 मणिवोष २५२६  
 मणिवोषप्रभव ३४ २  
 मणिबन्ध ४१ ३  
 मणिमरुह ५४२४  
 मणिमाला ४१ ७  
 मणिवेधक ४६७६  
 मणिसोपान ४१  
 मणीच ४१ ६  
 मण्ड ४११  
 मण्डन ३६५६ ४११ ११  
 मण्डप ३६५३ ४११२  
 मण्डयन्त ४११३  
 मण्डयन्ती ४११४  
 मण्डल २ ४ ४५ २३५३ ३ ६ ४११५,  
 ४५५४ ५२६७  
 मण्डलक ४११६  
 मण्डलसप्तसिर्पजातिप्रभव ३३ ३  
 मण्डलाग्र ४११६  
 मण्डलाक्षययोगिमेव २६७४  
 मण्डलिन् ४११४ १७



मण्डलितप्रभव ३३१६

मण्डलश्वर ६३३२

मण्डित ३२५

मण्डक ६ ४११ २१ ६ ५३३

मण्डकपण ४१२२

मण्डकपर्णी ३६४३ ४११६ २१

मण्डकपर्णस्थितुणस्तम्ब ३६ १

मण्डकभव ४५११

मण्डकी ११६

म ीवक ४१२२

मत ५ २६ ३ १२३ ६३ ५

मतङ्गज ३३ ३५ ५

मतलिका ६५१६

मति १ ३६२६ ५ १२ ५ ३६

मतेतर २

मकुण्ड ४१२

मत्त ११ १३६२ १४६५ १२५ ५४

६१४५ ६५५१

मत्तकरिन्

मत्तकुञ्जर १ ६३

मत्तगज ३६६५

मत्तवायूहपक्षि ६ ३

मत्तनाग ४१३६

मत्तयोषित् ५२ ४

मत्तवारण २१५ ५ ३ २५ ४१२६

मत्तम ६ ४ ७१

मय ४१२७ २

मत्सर ४१२ ६६

मत्सरा ४१३

मत्सरिन् ४१३

मत्स्य ६ १३७ ५१७ ६७१ १ ६६ ६

२२४ २३४३ २ २३ ३५ ४ ४१३१

४४ ४६६६, ५२१५ ५ ६ ६५६

६६ ३

मत्स्यग्रहणसाधन ७६४

मत्स्यघात ६६३

मत्स्यघातनजीविन् २ २

मत्स्यजाति ६५ ३

मत्स्यप्रभव ७६२ ३२ ६

मत्स्यबन्ध ५ ६ ६६ ५६ १

मत्स्यमिद् ३२४

मत्स्यभव ३ ६६ ३ २ ३१७ ५ १

६ १२ २६ ४

मत्स्यराज् ४१३२

मत्स्यविकृति ६४३३

मत्स्यसंहति ५६ १

मत्स्याक्ष १३३

मत्स्याकी १३२

मत्स्याक्षीनामतणलतास्तम्ब ६३ ३

मत्स्यातर ३३६१ ३५६४ ६१२२

मत्स्याक्याय्यतुणस्तम्बवाधिन् ३६२

मथन ३५३

मथित ४१३३

मव ३ ६३ १३५ १

मवकाल ४१३६

मवल १२६ ४१३७ ५३६५

मवनक ३ ६३

मवनकण्टक ४

मवनकाह्वयगघ्नव्य ३४ ७

मवनर ६४२ १ ५ २१ ३ २२

मवनद्रुम ११२२ २१३ ५२५६ ५३२२

५६ १ ६१६२

मवनपक्षिन् ६ ६

मवनफल २१४ ३ १

मवनमन्त्रि २२

मवनवक्त्र १ ६

मवनशालाका ४१३६

मवना ४१३६

मवनाख्यपावप १ १२

मवनाख्यमहीदह ३३४३

मवनाख्यवृक्ष ३ ५६  
 मवनी १३  
 मवमस्त ४१ १  
 मवमस्ताख्यधधुर २५३७  
 मवमती ४१४१  
 मवयिन १ २  
 मवल्लोभमानमसङ्घ ६१६  
 मवार १ २  
 मविरा ६१ ३ ६२ ६६५६  
 मवोकट १४३  
 मवोकटा १४३  
 मवगु २२६६ १४  
 मवगुरस्त्री ६१२२  
 मद्य १ ६ ३२ ३ १२२६ ५१ ४१३  
 ४२५ ६ ५२ ६ १ ६ ५७  
 मद्यप १२२६  
 मद्यमव ६२४  
 मद्यमात्र ६ ६  
 मद्यसंधान २६६ ६२४  
 मद्यान्तर २ ६६ २ १२  
 मद्र ४१४६  
 मद्रा १४७  
 मधु १६६१ १ ६१ ४३३५ ५६  
 मधुक ४१५२  
 मधुका ४१५३  
 मधुकुक्कुलि कासजमासुलङ्गातर ४१५६  
 मधुकौषध ४५५३  
 मधुचछत्र २१ ५५६६  
 मधुचव ४१५३  
 मधुद्र ४१५  
 मधुमिनिशीलमसि कान्तर ६३३६  
 मधुप ६१३४  
 मधुपर्णी १५३ ५४  
 मधुपुत्रादि ४३५६  
 मधुमव २१ ६३५७

मद्ययि १५२ ५६  
 मधर १५५ ६१ ६ १  
 म ररस ६६५७  
 मधरवाध ६३६७  
 मधररसावित ६६५७  
 मधरसा १५  
 मधरस्वन १५  
 मधुरस्वर ६  
 मधुरा ४४ ५  
 मधुरिक ४१५  
 मधुरिका ४१५६  
 म रिक्कोषधि २ ३५  
 मद्यवाच ४१५६  
 मद्यवत ४१६  
 म शकरा ३५५  
 मद्यशिपु ६६५६  
 मद्यसुवन १ ५६ ४१६  
 मद्यक ३७ १३ २ ४१ ६ ६१ ६२  
 ५३  
 मद्यि छष्ट ३३ ४ ६ २५  
 मद्यल ४१६१  
 मद्यूलक १६२  
 मद्युिका ४१६३  
 म य १६ ६ १६४६ ४१६३  
 मध्यगुह २१६७  
 मध्यवेशमीवृक्ष ६५२४  
 म यवेशानुजातिमव ३२ ६  
 म यवेशीयकारकु सोयनीवत ६४१३  
 म यवद्व ११७  
 म यमव ४१६  
 मध्यम ५ ६ १६६  
 मध्यमणि ३१३३  
 मध्यमपाण्डव ३४ ३ १२  
 मध्यमा ४१६७  
 मध्यमाङ्गुलि ११४६ ४१६७

म या १६६  
 म याथ १७३  
 म वासव ५१ १ ६ ६५१  
 म वासवसमाख्यमध्यभव ३५  
 म वीकलजमध्यपथ ६ ६  
 मन शिला ११२१ १३२६ १ ३ १६  
 ६३ ४ ५ ६  
 मनस् १२६ ३६३ ५१२ १ ६ १  
 १६ २२६  
 मनाक ४१६६  
 मनाका १६६  
 मना थ २५६१  
 मनाधि ५ ३  
 मनायी १  
 मनावी १  
 मनीषा १६ ५ ५ ५ १३  
 मनीषिन् २६ १ ५५ ५ ५ २  
 मनु १  
 मनु १२६ २२१३ ४२३  
 मनु म १४२ १ ६ ५६१ ११२६ १६५  
 २ ६ २३५ ३६  
 मनु मजाति २ ५  
 मनोजव १ १  
 मनोजवस २ १६  
 मनोजवा १ १  
 मनोज १२ १२६६ ३ १६ २५ ६५३  
 ६५३ ६६५  
 मनोजव ६५३  
 म ो थ १ २  
 मनोहर ६  
 मनोहरा १ २  
 मतु १ ३  
 मतु १  
 मत्र ३३ ३२२ ३६१६ १ ४  
 ७५ ४ ४ ४ ७१ ५ २

मत्रण ६  
 मत्रभव ६६  
 मत्रवादिन् २  
 मत्राक्षरप्रथना तर ६३१  
 मत्राद्यमी फलादीकृति ६३६१  
 मत्राद्य त्वश २ ६२  
 मत्रातर २६३  
 मत्रिजन ६६  
 मत्रिन १६२६ १ ६ ६  
 मथ १ ६  
 मथवण्ड १ ४ ३३३५ १ ५ २१  
 मथन ३१६ १ १ १ ६  
 मथनक्रिया ३६६  
 मथनवण्ड १ ६  
 मथर २ २२ २ १  
 मथरा ४१  
 मथान १ १ २ २५ १  
 मथानक ६६२  
 मथिन् १७६  
 मव १५३६ १६६ २ ६१  
 ६६ ५ ६३ ६५५ ६६६  
 मवग १  
 मवगामिन २२६२  
 मवजात १  
 मववण्डि १ ५  
 मवन १ १  
 मवर १ २  
 मवर्त्तसर्पि १ ३  
 मवधिसर्पिन १ ३  
 मसान १  
 मदाकिनी १ ४ ३  
 मदाक्ष १ ५  
 मदार ३२६५ ६ १ ६  
 मदारपावप १ २  
 मवारादि २७ ४

मविर ६२५ १६६ १ ६३ १  
 ५ ६४ ५३६३ ५६७  
 मविरा पत्यणा ३२६  
 मबुरा ४१  
 मवेद्विय ४१ ५  
 मत्र ४१ ६  
 मत्रा ४१ ६  
 मग्मय ५१६ २१६२ ३ ५ ३६ ४  
 ४१ ६ ४ ३२ ५ ६ ६ ३  
 मयु ४१६  
 मय ४१६१  
 मयठ ४१६२  
 मया १६१  
 मयी ४१६१  
 मयु ४१६२  
 मयूख १ ४१६३  
 मयूखा ४१६  
 मयूर २६ ३४३ ४६६ ६७ ५३६  
 ६४४ ११७६ ६३ १३२ १४२६  
 २ ७२ २३ १ २ ६ २६११ ३ ३४  
 ३६२२ १६४ ६६ ४२१३ ४ ६  
 ६ ५५ ४५३ ५ २६ ६ ५  
 ६ २ २३ ६३७१ ६४२ ६५६  
 ६ ५  
 मयूरक ४१६  
 मयूरबूड ४१६  
 मयूरविष्ठ ३ ३  
 मयूरविबला २६  
 मयूरशिखण्ड ३६२१  
 मयूरशिखीवध ४१६५  
 मयूरशिखीवधि ४१६  
 मयरी ४१६६  
 मर ४१६  
 मरक ४१६६  
 मरकत ६७१३ २

मरण १६२ १३२ १ ३ २७११ २६४  
 ३ २३ १ ४२ ४३६४ ४४५६ ६  
 ४५३६ ५५ ३ ६२३३ ६७५२  
 मरणलाञ्छन ३२३  
 मरणाह २३५  
 मरणावसरोचितनि श्वास ६७  
 मरत १६६  
 मरवक ३५२६  
 मराय २  
 मरायी २ २  
 मराल ४२ २ ३  
 मरिच ३१ ३ ६६२ १ ६ १५  
 ६ ३५६ ४२ ५ ४६२६ ५१  
 ६१ ५५ ६ ७ ५६४४ ६६३  
 मरीच ४२ ४ ५ ६१४६  
 मरीचि ४२ ५  
 मरीचिक ४२  
 मरीचिका २ ७  
 मरीचिगम ४२  
 मरीचिप ४२ ६  
 मर १२ ४ ४२१  
 मरु ४२१३  
 मरुज ४२१३-१५  
 मरुजा ४२१३  
 मरुडा ४२१६  
 मरुत ४२१  
 मरुत् ४१७ २४५६ ३२२६ ३६६१  
 ४२१६ ५२१४  
 मरुत ४२१६  
 मरुत्पथ ६५४३  
 मरुत्पथपथि ४२१६  
 मरुमत् ४२२  
 मरुत्पत् ४२२  
 मरुत्सख ४२२  
 मरुदेश २७ ४

मरुद्वय ४२२१  
 मरुद्वय ४२२१  
 मरुद्वय २२२  
 मरुद्वय ४२२२  
 मरुद्वय ४२२३  
 मरुद्वय ४२२१  
 मरुद्वय १ ४ २६ ३२५२ ३ ६६  
 ४२२४  
 मरुद्वयकामिधस्तम्ब २२२  
 मरुद्वयजनपद २६१४  
 मरुद्वयम्ब ४२२५  
 मरुद्वयम्ब ४२२५  
 मरुद्वयरित २२२  
 मरुद्वय ४२२६  
 मरुद्वय २२६  
 मरुद्वय ३७ ४२२  
 मरुद्वय ४२३१ ४  
 मरुद्वयकाङ्क्षधाय ५ ४  
 मरुद्वयकालक ६  
 मरुद्वयकालकीट २२  
 मरुद्वय १ २२६  
 मरुद्वय ४२३२  
 मरुद्वय ४२३२  
 मरुद्वय ४२३३  
 मरुद्वय २३  
 मरुद्वय ४२३५  
 मरुद्वय २ ३२१ २ ३५ ६ ३ ४५  
 ३२१२ ३४६२ ४ ३४ २३५ ४२  
 ५४७५ ६२५२  
 मरुद्वयजाति ३४६५  
 मरुद्वयजातिम्ब ३ ४ ३४६  
 मरुद्वयजातिम्ब ५६१ २६२२ ३६  
 मरुद्वयलोक ४१६ ४२३४  
 मरुद्वय ४२३६  
 मरुद्वय ४२३६

मरुद्वय ४२३६  
 मरुद्वय १ २२ ३३६३ ३७ ३ ४२३६ ५१  
 ५५३१ ६३३  
 मरुद्वय ४२३६  
 मरुद्वय ४२३६  
 मरुद्वय ४२३७  
 मरुद्वय ४२४  
 मरुद्वय ४२४  
 मरुद्वय ४२४१  
 मरुद्वय ४२४२  
 मरुद्वय २४२  
 मरुद्वय २ ६ २६५ ३६६ ४२४३  
 मरुद्वयवाहित ६२६६  
 मरुद्वय २४५  
 मरुद्वय ४२ ५  
 मरुद्वय २४६  
 मरुद्वय १६२१ ४२४६  
 मरुद्वय ४२४६  
 मरुद्वय ४२४६  
 मरुद्वय ४२५  
 मरुद्वय ४२५  
 मरुद्वयजाति २५  
 मरुद्वय ४२५१  
 मरुद्वय ४२५१  
 मरुद्वय २५२  
 मरुद्वय १२४७ ३५३६ ४२५२  
 मरुद्वयप्रमाणस्थान १३  
 मरुद्वय २१६६ ४२५३  
 मरुद्वय २ ६ ३३७६ ४२५४  
 मरुद्वय पवत १६  
 मरुद्वयानिल ५२  
 मरुद्वय ४२५५  
 मरुद्वय ४२५५  
 मरुद्वय ४२५५

मलहतु २४६  
 म हतु २५६  
 मलहारक २५६  
 मला २४  
 मलाका २५  
 मलिन १२२५ १६१ २ १५५  
 ५ ६१ ६२  
 मनिमुख ४२५६  
 मलिना २५  
 मालिनी २५  
 मलि च २६ ७६  
 मलिष्ठ ४२६१  
 मलिष्ठा २६१  
 मीक ४२६२  
 मीमस ४२५ ६२  
 म क ४२६३  
 म क ४२६१  
 मल ४२६ ६५  
 मलक ४२६  
 म लति ४२७  
 म लनाग ४२६६  
 म ब घातर ६६  
 मलदि २६  
 मल्ला २६  
 म लार ४२६६  
 मल्लारी ४२६६  
 मलि ४२६  
 मलिक ४२ १  
 मलिका १ ७५ २४६६ ४१४१ ४२६  
 २ ४४११ ५७४१  
 मलिकाकुडमल ६ १  
 मलिकाकुसुम ४२७३  
 मलिकाछावन ४३३  
 मलिकाश ४२७४  
 मलिकाशी ४२७५

मी कातर ४२५  
 मलिकामद २४६ ३ ६ ६४  
 मनी २६ ५५ ६ २ १६ ६ ६१ ३  
 मीपुष्प १ ७  
 मशु ४२ ५  
 मशक १५३ ४२६१-७५ ६  
 मशकहरी २७  
 मशकहारि या ययवनिकातर २ ६१  
 मषी ४२७६  
 मसन २७  
 मसार ४२७  
 मसि ४२ ६  
 मसिक ४२ ६  
 मसिका २ ६  
 मसी ४४ ७  
 मसुरी ४२ १  
 मसूर ६४ ४२  
 मसूरविदलाह्व ताजा यतर १३२६  
 मसरविदलाह्वलतामद ३५३  
 मसुरी ४२ १ ५५१  
 मसुरीसन्नकगव ४३६५  
 मसुण २११६ ४२ २ ६१ २  
 मसुणी ४२ २  
 मस्त ४२ ३  
 मस्तक ४२ ३ ४४२१ ५ ६ ६ ४७  
 मस्ति ४ ६  
 मस्तिष्क ४२ ४  
 मस्तु ४२ ५  
 मस्तुमिह १५१४  
 मस्तुल ४२ ६  
 महत् १११ ६६२ ७४७ ३६ ६४ २३ ४  
 ३४६२ ३ ३ ४२ ४६४६ ५१६५  
 ५५३  
 महती ३५७५ ४२ ६  
 महसरी ४२६

महव ५६२३  
 महद्विष १३२  
 महलोक २  
 महलोकान्तरलोक २२१  
 महर्षि ६२३१  
 महस २६ २ ७ ६१  
 महाकच्छ २६१  
 महाकवम्बाख्यब्रमातर २६५५  
 महाकव २६२  
 महाकाय ४२६२  
 महाकायनियुक्ता  
 महाकाल २ ४२६३ ५१५  
 महाकालफल १३६४ ४४६१ ५६३  
 महाकालाह्वयगण ६७  
 महाकिष्कु ३२४२  
 महाकोशातकी ५५७४  
 महाक्रम ३  
 महाग्राम ६५ ६  
 महाग्रीव २६३  
 महाघोष ४२६  
 महाघोषा ४२६  
 महाजम्ब ४३  
 महाज बुनामजम्बन्तर ६४ ४  
 महाजलसमूह ६२६  
 महाजाली ४२६५  
 महाज्योतिष्मती १ ३१ २  
 महामन् ७४७  
 महावृष्ट ४२६५  
 महाविवाकीर्त्य ४२६६  
 महावेव १३१७ २७ १ ३ ११ ३६३३  
 ३१२ २७ ४४६ ४ ७५ ६५६३  
 महाधन ४२६  
 महाधूत ५२ २  
 महानद ४२६  
 महानदी ४२६

महानमन् ४२६६  
 महानस ४२६६ ४६६५  
 महानाव ४३  
 महानाम्नीसप्तसामातर ६४३६  
 महानाम्नीसमाख्यगङ्गा ३४६  
 महानील ३  
 महापक्ष ३ १  
 महापल ४३ २  
 महापरा ३ २  
 महापलाल ३२१५  
 महापोटगल ३६ ६  
 महाप्रलय ६२३  
 महाफला ३ ४  
 महाबल ४३ ४५  
 महाबला ४३ ४  
 महाबुस ४३ ५  
 महाभय १७ १  
 महाभारत ३६ २  
 महाभीति १ २  
 महाभूत २ १  
 महाभ्राष्ट २६५  
 महामात्र ३६ ६ ३ ६  
 महामख ४३ ६  
 महामुनि ४३  
 महामूल्य ३ १  
 महासेवा ४६२४  
 महायव ३  
 महायसास् ५५  
 महारजत ३  
 महारजन १५ ४  
 महारण्य १२६  
 महारस ४३ ६  
 महारसा ४३ ६  
 महाराज ४३१  
 महाराजचूत १२ ७

महाराजा ४६ ६  
 महाराष्ट्र २५ ३  
 महारुज २३३ ६६ ३  
 महाघ ४३१  
 महाथ ३ ५२  
 महार्ह ३  
 महालय ४३११  
 महाविटपमूलकवृक्ष ६५ ३  
 महावीर ४३१२  
 महावीरजित ५५  
 महावेग ३१५  
 महाव्रत ३१५  
 महाशकुन ४३१६  
 महाशङ्ख ४३१  
 महाशङ्खपुष्प्योपध ५५ ६  
 महाशक ३१  
 महाशल्का ४३१  
 महाशाक ५ ६  
 महाशास्तु ३६  
 महाशिला ४३१  
 महाश्वेता ३२  
 महाश्वेतापति ३  
 महासरस् ६३ ३  
 महासर्प ४३२१  
 महासर्पसमाह्वयसामवराक ६२२  
 महासहा ३ ५ ४३२२  
 महासेन ३२१  
 महाहरिण १४६  
 महि ४३२३  
 महिन ४३२  
 महिला ११६६ ३२  
 महिष १ ४ १५६ १२ ३ १ ४ -७१  
 २२४ ५३ २७२२ ३ ६४ ३३१६  
 ४३२५ ४५४ ४६३ ६१२७, ६६६६  
 ६३ ६७

महिषीपाल ३३ ६  
 महिषीरक्षक ३३३६  
 महिष्ठ ३ ५१  
 मही २ ४३२६  
 महोजफल ६५६  
 महीपति ३२६  
 महीपतिमार्गवि ६१  
 महीपाल ३६२  
 महीमुद्योग्यवस्तु ३१६२  
 महीरुह ११४३  
 महीरुहातर २३४६  
 महर्ष २ ४३२ ५ १४  
 महर्षिवाक्यो २ १  
 महर्षवर १ २४ ३६५ ६३२  
 महर्षवरी ४३२  
 महोष्मा ४३२६  
 महोत्पात ५ ५  
 महोबधि २२५  
 महोदया ४३२६  
 महोदरी ४३३  
 महोदर्याङ्गमुस्तक २६१६ ५ ५६ ६७ ५१७३  
 महोद्योग ६२५१  
 महोरग ५ ५३  
 महोर्मि १२१७  
 महोषध ४३३१  
 मांस ४६२ ५५ २२ ५ ३ ५३ ३२१२  
 १४ ३३५६ ४३३३ ४६६ ४ ६७  
 मांसकीलरोग ३५७  
 मांसनिष्कषाथ ४६६१  
 मांसपिण्ड ४६१२  
 मांसपिण्डी ३५६२  
 मांसरहित ११ ५  
 मांसरोहिणी ५५७५  
 मांससूप ४ ६६  
 मांसाद १६२



मासाविम् ३२१६

मांसी १३३५ २२ २३ ५ २ ५

६३ ३३५६ ३५६२ ३ २२ ३३३

५ ५ ४७६३ ६२३ ६ ३६

मांस्पचनी ४४ ६

मांस्याख्यग घट्टन्य ५५१

मांस्याख्यमषज २२ ६

मा ३३१ ४३६३

माकब ४३३

माक्षिक १ २२ २ ४१ ३३

मागध ३ ४४ ५ ५

मागधी २ ६ ४३३५

मागधीवल्ली ४५ २

माघ ४३३

माघमास २३ ३

माघी ४३३

माघ्य ३३

माघल ४३३६

माठर ४३४

माठि ४३४

माठि ३४१

माणव ४३४१ २

माणवक ४३४२

माणविका ४३४३

माणिक्य ३४१

माणिक्या ४३४३

माणिकी ४४ ४

मातङ्ग ३ ५ ६

मातङ्गधवी ३ ३५

मातामह ३४४ ४५

मातामही ४३४४

माति ४३४५

मातुल १२३३ २७६६ ४३६२

मातुलफल २७६६

मातुलस्त्री ४३४७

मातुलाख्यग्रन्थ ४३ ६

मातुलानी २६३ ३

मातुलायाख्यधाय ३६३

मातुलाहि ३ ६

मातुली ४३४६

मातुलङ्ग १५ ४३४ २ ५ २५

मातुलङ्गान्तर ४३१

मातुलङ्गी १ ६ ३५ ३४

मातु ६६ २६२ ६ ६६ २२१६ १

२३२६ ३६११ ३७२३ ३६३६ ३ ६

६ ३६

मातुका ३५ ६

मातुमिब ६

मातुवयस्या २२२४

मातवाहनामजानु ३६ ४

मातवाहककीटक २२२४

मायथ ६३२१

मात्र ४३५१

मात्रा ३५२

मात्राद्योच्चार्यस्वर २६५७

मात्राय ३६३

मात्री ४३५

मात्स्य ४६ ६

माथ ३५१

माघव ४३५३ ५६

माघवमास ५ २१

माघवी १ ६ ४३५ ४ २ ५२

५३६

माधुक ४३५६

माधुर ३५

माध्यमिकवेध २५५६

माध्यमिकवाक २६६

माध्वीकमद्य १२

माध्वीकाख्यमद्यमद्य ५६५

माध्वीकसप्तकमद्यमद्य ६ ५१

मान १ ६ १ ५७ १६४१ २५७१  
 ३१३२ ३२१२ ४२ ३ ३४५ ५२  
 ५ ५३१ ६ ६४ ७  
 मानवण्ड २४  
 मानभव २२६५ २३४ ६ ६  
 मानव २ ६६ २ ६१ ४३६  
 मानवत् ४३६२  
 मानस ४३६१  
 मानसपीडा ५२  
 मानसहित ६३ ३  
 मानिनी ४३६२  
 मानिन् ३६६ ३६२  
 मानिक ५२६४ ५३ १  
 माय ३६५  
 मापययय ६३२१  
 मामक ४३६२  
 माया १५ ६ २११२ ४३६३ ५६३६  
 मायाबहुलक २३६५  
 मायिन् १५ ५  
 मार ४३६४  
 मारण १ २२ ६३६  
 मारि ४२ ४३६५  
 मारित ६६ ६  
 मारिष १ ४५ २१३५ ४३६६  
 मारिषा ४३६  
 मारिषाख्यशाकभव ७३२  
 मारी ४३६५  
 मारीच ४३६  
 मारीची ४३६  
 मारण्ड ४३६  
 मारत ५१६ २ ४ ३६६ ५६२६  
 माकण्डय २६६२  
 माकव ४ ४  
 माग ३ ६ १ १ ३७ २६४६ ३१३  
 ३६ ४३५३ ६ ७ ५१३४ ५२३३

६ ५५ ५ ५ ६ ६३३ ६५ ७  
 ६६  
 मागकत् ३१२  
 मागण ३१६३ ४३७१ ५ ६३  
 मागणा ४३७१  
 मागर ४३७२  
 मागशीष ३७ ३  
 मागशीषभास ६३७  
 मागशीषी ३७३  
 मार्ग ४३७  
 मार्गोपदेष्ट २७  
 माजन १७५२ ४३७४  
 माजना ३ ४  
 मार्जार ६२६ १४४६ २२ २ ६३ ४३ ५  
 ७ ४ ६ ५ २  
 मार्जारकर्णी २  
 मार्जारी ४३७५  
 मार्जारीय ४३७६  
 मार्जालीय ४३७  
 मार्जित ४३७  
 मार्जिता ४३७ ४६  
 मातण्ड ४३ ६७ ६  
 मातण्ड ४३७६  
 मादव ३७६६  
 माष्टि २ ४३७ ७४  
 माल ४३ १  
 मालक ४३ ३  
 मालकी ४३ ५  
 मालती २२६२ ३७७५ ४६ ६ ४ ७  
 ६४६  
 मालव ४३ ६  
 मालवजवीरुद्रुव ३४३  
 माला ४३ १  
 मालाकार ४३ ७ ६६३  
 मालावत् ४३ ७

मालिक ४३ ७  
 मालिका ४३ ४  
 मालिनी ३  
 माली ४३ १  
 माल ४३  
 मालघान ४३ ६  
 मालधानी ४३ ६  
 मालरप्रभव ११  
 माल्य २६ ५ ३ ६ ५१२  
 मायबामन ५३६६  
 मायवर्जित २६ ५  
 मायवानितिविख्यातपद्यत ३७४५  
 मायाकृताविद्या ६१२६  
 माष २ २ ३ ७६ ३ ४६ ३६ ४५६६  
 माषघाय १६  
 माषपर्णी १२६२ ४ ६ ४३२२ ६४२१  
 माषाशिन ४३६२  
 माष्य ४३६२  
 मास ४३६३  
 मास २२४१ २४२ ४३६३ ५१५४ ५  
 मासर ४३६३  
 मासराह वयमि आव ४६  
 मासभाद ३६  
 मासिक ४३६४  
 मासिवेय १३३६  
 माहान्य ३६५४ ६४ ३६३२ ४५५  
 ६२६  
 माहिर ३६५  
 माहिषशुक्ल १ ७४  
 माहूर ४३६५  
 माहूत्री ४३६६  
 मितम्पद्य १३७६  
 मित्र ४ २ ५१ ३४६६ ४३६७ ४४६३  
 ४५७ ५ ६२ ५ ६४  
 मित्रविम्ब ४३६  
 ४५

मित्रविदा ४३६  
 मिथस ४३६६  
 मिथुन २ ५१ ३५ ४४ ६३  
 मिथुनव ४४ ३  
 मिथुनिन् ४४ २  
 मिथ्याज्ञान ४ ६३  
 मिथ्यापवाद २३५१  
 मिथ्यामति २  
 मिद्ध ४४ २  
 मिलित ६२  
 मिशि ४ २  
 मिश्र १११६ ३१६५  
 मिश्रक ४४ ३  
 मिश्रण ४५५५ ७ ६३२  
 मिश्रयित ४४ ४  
 मिश्रवण १२२६  
 मिश्रित ६२२६  
 मिश्रितरस ६ २  
 मिश्रीकृत ५६७  
 मिश्र ४४ ४ ५  
 मिसि २१ ६ ४४ ५  
 मिहिर ४४ ६  
 मोढ ४४ ६  
 मोढा ४४  
 मोन १ २ ४१३१ ४४  
 मोनराशि ४१३१  
 मोना ४४  
 मोनातर २५५ ४ ५  
 मोनी ४४  
 मोमांस ५४  
 मोमासा ३६६६ ४४ ६ ५२४  
 मोर ४४ ६  
 मोलित ४४१  
 मुकुल १४१६  
 मुकुट ४५ ६

मुकुट १४४४ ४४१  
 मुकुट ११३ ४४११  
 मुकुल ४ १  
 मुकुलीभाव २६६५  
 मुक्त ४५ ६५१२  
 मुक्तक चकसप २६ ५  
 मुक्तवधना ४४११  
 मुक्तव्यापारमन्त्रिन ३२५६  
 मुक्ता ४४१२  
 मुक्ताफल ४४१२  
 मुक्तावलि ६७५३  
 मुक्ताशुद्धि २४२  
 मुक्तास्फोट ६ ६५  
 मुक्ति २ ४ १६ ६ ४४१३  
 मुल ६३१ २ १ ३६६ ४४१३ ४६५६  
 ५ १६ ५५३६ ५६६६  
 मुखप्रिय ६३२  
 मुखमण ४४१५ १६  
 मुखमण्डन ४४१५  
 मुखर ४४१  
 मुखरा ४४१७  
 मुखरोग ३ ३४  
 मुखलक्ष्मन् ३ ६  
 मुखशाला ६२२ २४  
 मुखशोभा ४४१  
 मुख्य ३६१ ३४ ६ २२६४ २३७७  
 ३३११ ३६ ६ ३६ ४ ४४१३ १  
 ६ ६  
 मुख्यमहीपति २६२४  
 मुख्याङ्ग ३४  
 मुख्यानुयायिन् १५१  
 मुग्ध ४४१६  
 मुषिर ४४१६  
 मुचुकुत्स ४४२  
 मुचुसिम्बा २६२१

मुञ्ज ६३६ १ ४६ ४६७ ३ ४५२  
 ५३१२ १३ ५६५१  
 मुण्ड ४ २१ २२  
 मण्डक ५ ५४  
 मण्डन ४४२३  
 ण्डा ४२१ २२  
 मण्डिकौषध ६१५  
 मण्डित ४२२ २३ ५३१५  
 मुण्डो ४४२१  
 मुण्डोरी ३६६ २३ ६ ३२१ ३ २२  
 मुण्डपाट्यमण ४४२३  
 मण्डकौषध ६१६६  
 मुव ४ ६ ३७ ५ २४ ६२३६ ६६६७  
 मन्दिर ४४२४  
 मुवग ३६७६ ४६२२ ६७ ३ १४ २२  
 मुवक ६६  
 मुवगपर्णी १४६ ५ २ ४ ७२  
 मुवगपण्यमिधानौषधि ६३७६  
 मुवगभावतिलाद्य ३ ३  
 मुव्गर ७५ २ १६ २७४३ ३१७२  
 ४४२४ ५५७७ ५ ७४  
 मुवगाविमिस्रनिव ससृप ३७४  
 मुवगाद्यकृतव्यञ्जन ६५ १  
 मुव्रशब्द ४४२६  
 मुव्रा ११ २ ४४२५ ४ ५४ ५६५६  
 मुव्राङ्क ४ १  
 मुव्रान्वित ६३१२  
 मुव्रित ४४१  
 मुनि ३६२ ६७६ ४४२७ ५२५६ ६५४४  
 मुनिप्रिय ४४२  
 मुनिभव २१७१ ७५ २२४५ २६  
 २५६४  
 मुनिमण ४४२८  
 मुनिवन ६१  
 मुनिसेवित ४४२६

मयन्तर १ १७ २५२ २६७७ २६  
 ३ ६३  
 मुमुक्ष ५२ ६  
 मुमुक्षान ४४२६  
 मुर ४३१  
 मुरज ३ ६५  
 मुरजाक्ष्यवाद्यान्तर ४४६६  
 मुरजावि ५३२  
 मुरजावध् ३४६३  
 मुरजध्वनि ५१  
 मुरला २ ६१  
 मुरली ३  
 मुरब ४ ३  
 मुरा १४ ७ २७१२ ४३१  
 मुमुर ४३२  
 मुषल ४४३२  
 मुषित ४४३३  
 मुष्क ६२ २४५ ४४३  
 मुष्काक ६  
 मुष्कारबुध ४५  
 मुष्कवत्पशु ६२  
 मुष्टि २ ५ ४४३५  
 मष्टिक ४४३६  
 मुष्टिका ४४३६  
 मुष्टिमात्र ६२५२  
 मुष्टिमान्द्य २६६५  
 मुष्टिमयतणादि २४१६  
 मुष्टिवृद्धपाक्ष्यरोगमव १४६६  
 मुसल ४१४ १६५३ ४४३  
 मुसली २४३६ ३२२४ ४४३७  
 मुसलीस्तम्ब ३६४  
 मुस्त १६ २ ११४ १६५२ २६ ३  
 ५ २५-२६  
 मुस्तक ६१६ १४७६ २ १६ २२४६  
 २५१४ २६१ ३३३५ ३४४४ ४४३

५१ २ ५३१३ ६५५५  
 मुस्ताकान्तर ६१६  
 मुस्ता १ २ २५१५, ४४३ -७१  
 मुहरि ४४३  
 मुहिर ४३६  
 मुहुषुष्ट ३ ५  
 मुहुलयन ३१  
 मुहुस्त १६४६ २ १ ४६७  
 मुक ११ २ ४४३६  
 मुर्छा ३ ६  
 मुह ४४१६-४१-४४ ५ ४१ ६७२३  
 मुहगम ३१ २  
 मुहा ४४४  
 मुत ४४ १  
 मुल ३ ४५  
 मुलण ४ ६ ६  
 मुलाशय ५२२  
 मुलित ३७ १  
 मुल ३५६ १ ६ १४१३-२३ १७५१  
 २६ ३५६७ ३ ६ ७१ ४३६१  
 ४४३६ ५३५२ ५७१ ६१३७  
 मुल्लन २६६४ ४४३  
 मुल्लना ४३  
 मुल्लि ४५  
 मुल्लिल  
 मुल्लित ४४ १  
 मुल्ल २ १ ४४४४ ४ ६४  
 मुल्लि ५  
 मुल्लित ४४  
 मुल्ल २१५ ३ ५२ ४५ ६  
 मुल्ल ६ ६  
 मुल्लस्थान्त ११  
 मुल्लानिधित ४४४५  
 मुल्लानिधित ४४४६  
 मुल्ल ६ ११६२ २५ ३ २६६३ २७ १

३३६ ४१६३ ५७ ३ ६ ११ ६४५६  
 ६६३६  
 मूर्ध्निशकभषज ४५ ६  
 मूर्धिका १५  
 मूल ५ ३ ६५ ३११ ४४  
 मूलक ३ ३ ३२४६ ४४४ ३६  
 मूलकान्तर ६ ७१  
 मूलकारण २ ३६१  
 न ब्रह्मापचय ३२ ३  
 मू २ ४४४६  
 मूय ३३ १ ३१ ६ ४ ४४ ४४५  
 ५२३ ५६४७  
 मूष ५२  
 मूषा ३ ६५ ५१  
 मूर्धिका ४१६ १२५१ ५२ १५ ६  
 १ ३५ २१६२ ३ ६ ४३५२ ४४५२  
 ४६ २ ५४ २ ५६ ६ ६५७१  
 मूर्धिकापर्णी २४३६ ३६६६ ४६३ ५६११  
 मूर्धिका १६४१ २६५१ ४४५२ ५३ ६४ ६  
 मुग ४१ १५५ १ २ ४६ २६५६  
 ३७६२ ४ १३ ४१६२ ४ ५४ ४ ५५  
 ४ २ ५११४ ६१५२ ६७३  
 मुगतुष्णा ४२ ५  
 मुगतुष्णाद्यतेजत् ४२  
 मुगनाभि ६१  
 मुगनत्रा ४४५५  
 मुगनन्धनी ५२५१  
 मुगभिद् ३५ १  
 मुगभव २३४६ ३ ६३ ३१५६ ३५ २  
 ३७७२ ४६५४ ५६११  
 मुगभव १२ ७ ४३७  
 मुगया ३२७२  
 मुगयाकावि ६२६  
 मुगयु ४४५६ ५७६६  
 मुगरिपु ४४५६

मगल घक २ ५१  
 मुगविशय ३११  
 मगय १ ६१  
 मुगशिरस ४४५  
 मगशीष ४४५४ ५  
 मगशीषक्ष ६  
 मुगशीषशिरस ६ १  
 मगाक्ष ४४५५  
 मुगातर ७५ १ ६२  
 मुगारि ४५  
 मुगास्थि ६१ २  
 मुगी ४ ५५  
 मुगीभव ६१५  
 मुगत्र ६४१६  
 मुडानी ५ ६ १३३ ५ ६६  
 मुणाल १५६५ १६ ३ ३३७४ ४४५६  
 मस्त्वाविशुचिभा ४ ६ ६  
 मुत १६५५ २ ६७ ३१६६ ३५६१ ३७ १  
 १ ४४५६ ५४ १ ५५ ३ ६२३४  
 मुतक ५६६१ ६३६५  
 मुतकचैत्य २१२  
 मुतखटवा १७१५  
 मुतचिति २१२  
 मुतभाय ५ ६  
 मुक्तभ्रातृपयासक २६४१  
 मुतसस्कार ६३६  
 मुतस्नाम २१  
 मुति १७४ २३५ ४३२ २६५ ३७ ३  
 ४२ ४५ ६५५५  
 मुतिकाधूर्ण ३४६१  
 मुतिकात्म स्नाम २६४७  
 मुत्पात्र ४२७  
 मुत्पुसल ३४३३  
 मुत्पु २ ७१ १३१७ १६ ८ २६८६  
 ३१ ६ ३७ ६-६५ ४ ७७ ४१६८

४२३६ ४४६ ४ ४ ५५६१ ५ ५  
 ६२३२ ६६ ३ ६ १२  
 मयुर्गधन ३५२६  
 मयुञ्जय २१६ ४४६  
 मयपुण्य ४६१  
 मयफल ४४६१  
 मयुसयमन ४४६२  
 मृता ४४६४  
 मृत्ना ४४६४  
 मृदङ्ग ५३ ४४६५  
 मृदङ्गातर ६  
 मृदङ्गारशकटी ३५१६  
 महु १११४ ३५६ ३ ३ ४२ ३ ४४६६  
 ६  
 मृदुकण्टक ६  
 मृदुवच् ४४६७  
 महुरोमन् ४४६  
 मृदुल ४४६  
 मृदुवात ४ ६६  
 मृदुवाय ६५३६  
 मृदुभृङ्गमुग ३६३  
 मृद ४४६४  
 मृदवावीविकपुसल ३४३३  
 मृक्षिति १ ३  
 मृध २ ६१  
 मृधाथवाक्य ६३४  
 मृष्ट ६६५७  
 मृष्टयव ५२७  
 मृष्टाशिल ४४६६  
 मृष्टरक ४४६६  
 मकल ४४६६ ७  
 मेकलात्रि २ ३  
 मेखला १६ ६ ४४ ४६५२ ६४ ७  
 ६६२  
 मखलावामन १२५४

मेघ ४५२ ६ ६३ ७१ १ ४५ १५४६  
 १६६६ १ ३६ २ १६ २ ६ २२४६  
 २५१ २६ ६ ६३ २ ६१ २६ ३  
 ३१ ६५ ३२ ६ ६ ३३४२ ३४६४  
 ३५६७ ३ ३ ३ ४२ ३ २  
 ४४ ६ २४ ७१ ४६३५ ४७ ४ १  
 ५ ५ ३६ ५ ५१ १ ६६ ७५ ५ ६  
 ५५ ५७ ६ ५ ५२ ६ ७६  
 ६३३ ६५५ ६६२५  
 मेघकामुक ११ २  
 मेघगञ्जित ६५५  
 मेघघोष ४४७२  
 मेघज ४७२  
 मेघजाल १३३४  
 मेघनाद ४ २  
 मेघनिर्घोष ४६ २  
 मेघपुण्य ४४ ३  
 मेघमाला १२६३  
 मेघवाहन  
 मेघसमव ४४७२  
 मेघात्यय ५ ६४  
 मेघानव ४४ ५  
 मेघानवा ४४ ५  
 मेघक ४४ ६ ७  
 मेढ १ ३ १२ १६ ७७ ६१  
 ४ ४६ ५१ ५२ ४६२ ५६६ ६६१६  
 ६७ २  
 मेढरोगातर ७६५  
 मेढागम ५२३  
 मेघि  
 मथिका ४४  
 मेधी ७ ५६६६  
 मेव २२  
 मेदक २२ १  
 मेवम ४४७६

मेवस् २ ५२ ६ ६ ३  
 मेवा २३ ४ ४१ ६ ५ ४४७६  
 मेवित ४१४  
 मेविनी ६३४२  
 मेवुरा ४४  
 मेघ ४ १  
 मेघा ४४  
 मेघातिथि ४४ १  
 मेघावती २२१३ ४४ २  
 मेघाविन् ४७ १ १ १६२३ ४ १  
 ५२५४ ५३६२ ५४२ ५६६  
 मेघ्य ३२२६ ४४७५ २ ३ ६१ १  
 मेघ्या २६ ४ ३  
 मेन ४४ ५  
 मेना ४४ ५  
 मेनाव ४४ ६  
 मेनि ४४ ६  
 मेवक ४४ ७  
 मेवक्षिण ३ ६  
 मेवपवत ३४७१  
 मेरुपुत्री ५६७३  
 मेरुमहीभूत ३५ ६  
 मेल ४४ ७  
 मेलक ६२४६  
 मेला ४४ ७  
 मेलानबा ३ ६५  
 मेव ६६ ६ ७ १३२७ ३५ ४४ ६  
 ७७ ४७६२ ४६२५ ५१ २ ५ ३  
 ६५६१ ६७६४  
 मेवक ४४  
 मेवकम्बल ६४  
 मेवल्लोमकृतकम्बल ६६  
 मेवभृङ्गी ४४ ६  
 मेवसम्बद्ध ६४  
 मेवादि ४७१२

मेवाविविषमराशि ३४६६  
 मेविका ४४  
 मेवी १ ४ ४७४१  
 मेव्य ६  
 मेष्ट ४४६  
 मेष्टनी ६१  
 मेहल १२ ६ २ ७ ४ ६१  
 मेहा ४४६  
 मेहिन ४ ६२  
 मत्र ४४६२ ६३  
 मत्रावरुणि ४६५  
 मत्री ४४६५  
 मत्रय ४ ६  
 मयिली ६६  
 मथुन १४७२ ४४६६ ६ ६५ ६  
 मथुनवत ४४६  
 मयनिक ४४६  
 मथनिका ४४६  
 मथुनिन ४ ६  
 मनाकपवत ६७६५  
 मोक ४४६६  
 मोकी ४४६६  
 मोक २ २ ३ ७ ३४५ ७३४ १५ २  
 २६४३ ६ २६६ ३ ४ ४५  
 ५४४७ ६ ७४ ६१७६  
 मोक्षकवृक्ष ४४३४  
 मोक्षण ४४१३  
 मोक्षमार्ग ४५४३  
 मोघ ३ ६  
 मोघ ४५ २  
 मोषक ४५ २  
 मोषल २६ ६ ४४६६  
 मोषा ३३२ ४५ १  
 मोषाद ४५ ३  
 मोबुम्बा २११२



मोण ४५ ३  
 मोणक २३५५  
 मोब ४१ १  
 मोबक ५  
 मोबयितु ५ ४  
 मोबितु ४५ ४  
 मोरद ४५ ५  
 मोरटा ४५ ६  
 मोरदाम्बु २ १६  
 मोषक २७४१  
 मोह ७१ १२२५ ४४ ३ ५ ७  
 मोहन २४१ ४६ ४४४ ५  
 मोहना ४५  
 मोहनी ४५  
 मोहबबचस् ६११५  
 मोक्षिक १६ ३ ३२ ४ ५ १ ६ ५२१६  
 मोक्षिकाकरमेव ३२ ४  
 मोठी (ठी) सक्षमव्यमव ४२४  
 मोठी ४५ ६  
 मोष य २६ ६  
 मोन २३२४  
 मोयनूपातर ४२६  
 मोर्वो १ ७७ १६ ७ ३ २२६ २३२६  
 २७४४ ४६१३  
 मोर्वोचापसहसुरण ६६१५  
 मोर्वोशरयोजन ६३१६  
 मौलि ४५ ६ ४७  
 मौष्टिक ४५१  
 अक्षितावि ११  
 म्लान ४५११ १२  
 म्लानवत् ४५११  
 म्लानि ४५११  
 म्लिष्ट ४५१२  
 म्लिष्टवर्ण २७२  
 म्लच्छ २३५ ४५१२ ४६ ६२७७

म्लच्छजातिमव ३ ३६  
 म्लच्छमोजस् ५१३  
 लच्छमुख ४५१  
 म्लच्छवाच् ४५१२  
 म्लच्छा ५१३  
 लच्छास्य ४५१४  
 म्लच्छास्या ४५१४

य

य ४५१५  
 यकृत ५७३३ ३ ३  
 यक्ष ३४२१ ४५ ६ १७ ५ ५३  
 यक्षकवम ४५१  
 यक्षधपाव्यनिर्यास ३२  
 यक्षराज् ४५१६  
 यक्षराज २ ७  
 यक्षराजविश्व ३५  
 यक्षराजोद्यान २१६२  
 यक्षिणी ३६ १ ४५१६  
 यक्षिणीमिव ६७११  
 यक्षिन् ४५१६  
 यक्षी ५१६  
 यक्षश १४४  
 यक्षमन् ४५२  
 यक्षममव २२३३  
 यजत ५२१  
 यजज्ञ ५२२ २३  
 यजन ६७६ २६५ ३१६३ ४५२३  
 यजनीय ५२१  
 यजमान २६१ २ ६ ४५२४ २५  
 ६३ १ ६ ६३  
 यजमानपत्नीसनहन ६६१  
 यजि ४५२५  
 यजुरत्तर ६४६  
 यजुस् ४५२५ २६ ६ ३

यत्न १२ ४६ ६ ४ ५३ ३ १६२३  
 २ २४ २६२३ २ ६२ २६३४ ३ ३  
 ३ ३ ३६१६ १६ ४२६ ४४ १  
 ५२७ ५४ ५ २४ ५२६१ ५५ ६  
 ५६६ ६ ४ ६२

यत्नकर्माहि ५२

यत्नकृत २६१५

यत्नगस्तोत्रस्तोत्रियसख्या ६५ ३

यत्नयागिन ५५

यत्नवान ६ ६

यत्नद्रव्य ५२१

यत्नपश्व युक्षण ३७ ४

यत्नपात्र २ १

यत्नपात्रांतर ३६३

यत्नभब ३४११

यत्नमहावेविपश्चाद्दश ६२ २

यत्नविधिर्वाशिन् ६२७

यत्नशष २ ७

यत्नसस्था २३७४

यत्नसाधन ३ ६४

यत्नसूत्र ६ ६

यत्नसोमाभिषव ६३६२

यत्नस्तोत्रविशेष ३२२६

यत्नानि ५५४६

यत्नानिभ थकाष्ठ ३१४

यत्नाङ्गाभि ३१७

यत्नाह ४५२७

यत्निय ४५२

यत्नियतवशाखा ३१

यत्नोत्सव ४५२६

यत्नोपकरण ४५२२

यत्नवद्विजन्मवीति २१ ६

यत्नवाक्यमव ३७ ४

यत्नवाक्यमवभाजन ३७

यत् ४५३२

यत् ५२

यति २ ३७ ४५२६

यतिन ६५ ६

यतिभव ६६

यत्न ५१ ४५ ३६३१

यत्नापेक्षा ६२

यथा ५३१

यथामुख ४५३२

यथष्ट ३२ ६

यवि ४५३३

यवु ४५३३

यवृत ५३४

यत्तव्य ५४२

यन्तु ४५३४ ६४

यन्त्र १५ ६ ४५३५

यन्त्रकटक २३६४

यन्त्रण ४५३६

यन्त्रणा ४५३५

यन्त्रवधन ४६१४

यन्त्रभव २६ ४

यन्त्रांतर ६१ ६

यम ३ १ ६ ३७ ४३ ५७ १३१७ २१

७६ १५२६ १६४६ २१२७ २५७२

७७ २६७६ २७६१ ६४ ४ ७६ ४५३६

५६ ७ ५७१ ५ ४६ ५६३६ ६३

६७ १ ६५

यमकभव ६२ १

यमज २६३१

यमतिथि २६११

यमववतनक्षत्र ३ ७

यमन ४५१५ २ ३६ ६४

यमयितव्य ४५४२

यमरथ ४५४

यमराज ३७६१

यमल ४५४१

यमली ५ १  
 यमसाधु ५ २  
 यमस्वसु ५ १  
 यमी ४५३६  
 यमुना १२ १ ५३६ १ ५ १  
 यमुनानदी १३३  
 यम्य ५ २  
 यम्या ५ २  
 ययी ५ ३  
 यय ४५  
 यय १६ ३२३ १ ४ २ ६६ ६  
 ३२२ ४३ ५ ४ ३ ६१ ६६६१  
 यवक्षार ३२३ ५ ६ ५ ४२  
 यवतिक्ता २६ १  
 यवनिका २ ६१  
 यवब्रुम २ १६  
 यवन ४५४५  
 यवनिका २४५  
 यवनष्ट ४५४७  
 यवपिष्ट १४ ७  
 यवफल ४५४  
 यवत्रीह्याविसुषहविष्य १  
 यवहित ५ ६  
 यवा ४५४५  
 यवागु ६११ ५ २३६ ५ ६६ ६१६२  
 यवानो २ ६५ २६५६ ३३४४ ३  
 यवास ६६६ २६ ५ ६ ४७  
 यवितु ५६७  
 यविष्ठ ५४  
 यवीयस ४५ ६  
 यवोत्पत्त्युचितक्षत्र ४५ ६  
 यव्य ४५४६  
 यव्या ४५५  
 यशब् ६७  
 यशोदा ५५१

यशोदेश २ १  
 यश २४४४ ४ ५५२ ५६४६  
 यष्टिक १६५७  
 यष्टिमद्य ५३  
 यष्टिमद्युक्त ४१६३ ६५  
 यष्टिमात्र २१  
 यष्टिसक्रायुधातर ६ ५  
 यष्ट २ ३ २६२५ ४५५५  
 यष्टयाख्यायुधातर २३६६  
 या ५१५  
 याग ४५५४ ६३६१ ६३  
 यागक्रियाकमभूत ६ ५  
 यागयोग्य ४५२७  
 यागवीधि ४७५६  
 यागस्थानिषव ६२६३  
 याचक २२ ३४ ४३७१  
 याचन ३ ६ ६५ ५१ ४  
 याचनकमनु ३ २ ५ ३  
 याचित ३५ ३ ६ ४५६ ५ ३  
 या आ १५ ३६ ५७ २६१ ३ १५  
 ३६३ ३ १ ५५५ ५ ३६ ६२१५  
 याजक ५५५ ५  
 याजकद्विज ३६  
 याजय ५५६  
 याजयितु ४५५५  
 याजिक ५५६  
 याज्ञवल्क्य ५२६३  
 याज्ञिकविधत्त ३१  
 याज्ञिकव्यातवार ३ ७६  
 याज्ञिकवह्निभर २ १६  
 यात ४५५  
 यातना १३ ४ ६३६  
 यातयाम ४५५  
 यातु ४५५६

यातुधान १२११ ६ ६  
 यातुमल २६७४  
 यातुमातृ २६  
 यातु ५१५ ५५६  
 यात्रा ५५१ ६  
 यात्रानिवृत्ति ६२१  
 यात्रिन् ४५५६  
 याव पति ५६  
 यावव ४५६१  
 यावसान्पति ४५६१  
 यावस् २ ५१  
 यावोत्तर ६ ७ ७६  
 यावोमव ३५  
 यान ५५ ४६४ २६ ७ ३ २४ ३१२१  
 ४५१५ ४५६२  
 यानपात्र ३५६६ ५ ५  
 यानमव २७२१  
 यानमुख २ २७  
 यापन ४५६  
 यापना ४५६२  
 यापनीय ४५६३  
 याप्य ४५६३ ४ २  
 यान ४५६४  
 यामक ४५६४  
 यामहीन २६  
 यामि ४५६५  
 यामुन ५६५  
 याम्य ४५६६  
 याम्या ४५६६  
 याम्याशा २५६७  
 याव ४५६६  
 यावक ३७७६ ४५६७  
 यावकजीवन ६७  
 यावकाव्ययव ३ ३६  
 यावकाव्ययवमुत्तुगाविपिष्ठक १४ ७

यावत ४५६  
 यावत ५६६  
 यावता ४५६६  
 यावतूलक ३४३१  
 यावनाल २३१ २६६७  
 यावनालाव्यधानक २३२३  
 यावशूकाव्यलवण ४५ ५  
 यावशकाव्ययवक्षारमिव ६४  
 यावस ४५  
 यवत ६६६ ५ ७६  
 युक्ताथ ६५ ६  
 युक्ति ५ १  
 युग ४५ १ ७२  
 युगकील ५ ५५  
 युगघर १५१२ ४५ ३  
 युगल ४५४१ ७  
 युगसप्तक २६३६  
 युगा ४५७२  
 युग्म २७५२ ४५७२  
 युग्य २७५१ ५३७५ ४५७५  
 युज् ४५७५  
 युञ्जान ४५७६  
 युत ४५७६  
 युतक ४५७  
 युतेतर ३११  
 युद्ध २५६ ५ २ ३ ६ ६७ २१७२  
 २२२२ ३५६५ ६ ३६ ४ ३७१  
 ४६ ६१ ४५७६ ४६३६ ४७२४  
 ५१६६, ५३६३ ५७४६, ६२१ २१  
 ४७ ५ ६३ ७ ३ ६३७७  
 ६४ १  
 युद्धकारिकायासासार ३७२५  
 युद्धमन २२  
 युद्धभू ४७४५  
 युद्धयन्त्रमव ६१२४

युद्धयोग्यम् ६२ ६  
 युद्धरथ ५११५  
 युद्धवादित्रनिर्घोष ५  
 युद्धवाद्यजनिर्घोष ३ ६३  
 युद्धस्थान ४६१६  
 युध ११ ६ २ ५१ ३१३ ३४६३  
 ४२६७ ५२६ ६३ ७  
 युधिष्ठिर २२३ २ ६४ ४५७६  
 युधिष्ठिरकनिष्ठ ६३६६  
 युष्म ४५  
 युयुत्सु ४५  
 युयुधान ४५  
 युवतम् ४५  
 युवति २ ५  
 युवती २४१२ ३३६१  
 युवन २४ २ २४१२ ३५६३ ४५४६  
 १ ५ ६५  
 युवपशु ५११  
 युवराज १४४६ ३६५५  
 युष्मद्वय २५५२  
 युका ३३१ ५३२६  
 यूकाण्ड ४ ७  
 युकावयशिर किमि ४१ ३  
 युयञ्ज ३ ७२  
 यूथाभ्यक्ष ३३  
 यूथिका २६७ १ २५ ४५ २  
 यूथी ४५ २ ५१७ ५३६७ ६ ७  
 युप ६ १  
 यूपद्वयान्तर ३  
 यूपशकल ६६५१  
 यूष ४५ ३  
 यूषा ४५ ३  
 यूक्त ४५७६  
 यूक्त्र ५४४ ४५ ४ ५२१२  
 यूग १६, २२१ ६ ७ १५७१ ३३७२  
 ३६६६ ४५१५ ४ ५५ ६

योगप ट १६ २  
 योगमिव २ ४३ ६ ६  
 योगमव ३४६५  
 योगवत् ४५ ६  
 योगविशेष ३१७२  
 योगसिद्धि ३६५५  
 योगात्तर ३७ ५५ ४  
 योगाङ्गमव २ ६  
 योगिषकमलक १३२३  
 योगिन् ४५ ५ ५४१३  
 योगिनी ४५ ६  
 योग्य ३६ ६६६ १५३१ १६५ २४६३  
 २ ३६ ३२५६ ३६६ ७६ ४५  
 योग्यता ४५३१  
 योग्या ४५  
 योग्याचार ६७ १  
 योग्य ४५ १ ६  
 योग्यनग १ ४ ४५६१  
 योजित ४४१  
 योद्ध ३६४३ ४५७६  
 योघ ३६३७ ४२६४  
 योघशस्त्रमव ६७४  
 योघशीवकाह्वयशिरस्त्राण ६ ६  
 योनि १२७ १६ २ २१७२ ३३६  
 ३६११ ३६ २ ३१ ६३ ४५६२ ५ ६  
 ६ ३  
 योनिरोमन् २२४४  
 योनिव्याधि ५ ६  
 योषित् १५२ २२ ११६६, १५ २६२६,  
 ३ ४५ ३६ ६ ४ १२ ३२४ ४५ २  
 ५१३६ ५२ ५३१ २७ ६१ ५४१३  
 ६ ५५ १४ ५७६४  
 योषिवन्तर ३१ २  
 योषिवातव ३५१२  
 यौतक ५७ ६३ ६६६  
 यौतकाविधन २६२

यौन ४५६

यौवन ४५६ ५ ६१

यौवनकण्ठक ३ ३५

यौवनलक्षण ४५६

र

रह ४५६५

रहत् ४५६५

रहस ४५६६

रहस्विन् २१६

रहि ४५६६

र ४५६

रक्त ५४ ४२२३ ४५६ ४६ १

२ ४६३ ६६६६

रक्तक ६

रक्तकण्ठ ४६ २

रक्तकब ४६

रक्तकमल ४३ ३

रक्तकहलार ४

रक्तकुम्भ १५ ४ २२ २ ६४६१

रक्तगरिक ४६ ७

रक्तप्रगिथ ४६ ५

रक्तप्रीव ४६ ५

रक्तघ्न ४६ ६

रक्तघ्नी ४६ ६

रक्तघ्नन १३६ २२ ४ ३१२४ ४६ ६

३४ ४६३३

रक्तचूड २४२६

रक्तच्छाया ४६३

रक्ततर ४६ ७

रक्ततुण ४५७

रक्तबन्ती ४६ ७

रक्तबुष्टि ४६

रक्तमालिकेर ६६५२

रक्तपथ १ १४ १४५४ २११३ ३ ६२

रक्तपा ४६

रक्तपातर ५६३३

रक्तपीत ३३७३

रक्तपीतद्वयालकवण

रक्तपुच्छी ४६ ६

रक्तपुननवा ३ ३६

रक्तपुष्प २२२६ ४६ ६

रक्तफला ४६१

रक्तफलावली ६३४

रक्तरेणु ४६१

रक्तलोध्र २४५१

रक्तवण १२२ ६ ६ ४ ६१३

रक्तवणयुत १२२६ ६१४

रक्तवणधत ६१३

रक्तवर्णा ४ १ ६ ५

रक्तवस्त्र ४६ ३

रक्तवृत्त २४२६

रक्तशिथुक ६ २

रक्तशीष ४६११

रक्तागुक् ४६१४

रक्ताक्ष ४६११

रक्ताङ्ग ४६१२

रक्ताङ्गा ६१२

रक्तापामार्ग १ ५६

रक्ताञ्ज १५ ४

रक्तामलक ४६६

रक्ताकणफल १६६४

रक्ताल ५ ३ ४६ ५१ २ ४

रक्तालक ५५४

रक्ताशय ४६५६

रक्ताशीकमुन ४६५१

रक्तिका १२४ ४६ १ ३

रक्तु ४७११

रक्तरण १११४ ५७६४

रक्तोत्पल ६२४६

रक्त ४६१३

रक्षक ३३११ ६१३  
 रक्षण ३६७ ५६ १६१२ २ ६६ २५२  
 ६ २६२ ३ ६ ३२ ४५३६  
 ४६११ १३ १४  
 रक्षणा ६१३  
 रक्षणाधि २६२  
 रक्षपुरी २१  
 रक्षस ६ १ ११५६ ६ १६३६ २५ ६  
 २ ५१ ३ ५ ५३ ६५  
 रक्षा ५६ २५६३ ४६१  
 रक्षाङ्गुलीयक २४३  
 रक्षापेक्षक ४६१४  
 रक्षिका ४६१६  
 रक्षित १६११ २५२४ ३५६२  
 रक्षितय ३५  
 रक्षितु २५२६  
 रक्षिन् ५६६  
 रक्षित्पान १६१  
 रक्षोष्ण ४६१५  
 रक्षोष्णी ६१५  
 रक्षोमिव ३ ५२ ६ ५  
 रक्षोहन्तु ४६१५  
 रक्ष्य २५२६  
 रघु ६१६  
 रङ्ग ६१  
 रङ्गटीसप्तककलायधायमव ६७३  
 रङ्गकु ४६१  
 रङ्ग ३ ६६ ३३२ ४६१६ २  
 रङ्गजीवक ४६२१  
 रङ्गबा ४६२१  
 रङ्गमभि ३ ५१  
 रङ्गमातु ४६२  
 रङ्गा ४६२  
 रङ्गाजीव ६५३ ४६२२  
 रङ्गावसारिन् ४६२१

रङ्गोपजीविन १६३ २३ ६७३६  
 रघन ४६२४  
 रघना ३२ ४६२  
 रघनाथ ६२४  
 रघ ६२५  
 रजक २३३ ६१ ४६२५  
 रजत ३ ११ ६ १ ५ ५६ २ ७  
 २ २ २५२५ २६७५ ४६२६ २  
 ४ ६ ५२२४ ५६४ ६११५ ६५  
 ६५३२ ६६ १  
 रजती ४६२  
 रजनि ३ ६  
 रजनी १ २ ४५४ १६ ६, २ १३ ३१  
 रजपुता ४६२  
 रजत् ५४५, १६६ ३६ ४६२५ २६  
 २५२३ ३१६२  
 रजस्वला ३५२५ ४६३  
 रजाञ्जन ११५७  
 रजि ४६३१ ३२  
 रजोगुण ६२५  
 रज्जु २५ २५५ ५ ४ ७७ १६  
 २१६२ २५३५ २७२ ३ ३५ ६३३  
 ५७ ५ ६३ ६६३१  
 रज्जुक ६६  
 रज्जुपाशातर ६  
 रज्जु ४६३३  
 रज्ज्वाधिप्रान्तविद्यस्तप्रथिमव ३३१६  
 रज्ज्वान ४६३४ ३५  
 रज्ज्वानत्रय ४६ ६  
 रज्ज्वाना ४६३५  
 रज्ज्वानी ४६३  
 रज्ज्वान ६३५  
 रज्ज्वाधि २५४३  
 रण १३६ २६५ ३१ ५३३ ६२६ ७२२  
 १ २२ ११६६ १६६७ १७३६ २ २५

२४५ ३६ ५ ३६४२ ६३६ ५४१५  
 ६२११ ४६ ६३ ६ ६७५२  
 रणक ६३६  
 रणगत १३६  
 रणरेणु ३ ५६  
 रणोद्यम १६ ५  
 रण्डा ६३  
 रत ४४ १ ४५ ४६३ ६३२  
 रतनारी ४६३  
 रतबन्ध ६६१ ११११ ३३६५  
 रतबन्धातर २ ४  
 रतद्विक ४६३६  
 रतद्विषक २६१६  
 रति १२ ६३६ ७४ ४७ ७६  
 रतु ६  
 रतोपमविकसत्कायरागावितोरम ३१ १  
 रत ३१२ ३५१४ ४१ ३ ४६४ ४१  
 रतनकङ्कण ३५१६  
 रतनगर्भा ४६४१  
 रतन्योतिस ६६६  
 रतनमेव ३४ ३  
 रतनवर ४६४२  
 रतनसत्तम ३४३  
 रतनाकर ४६४२  
 रथ ५ ६ २ ४३ ५ २४३३ २ ६२  
 ४६४३ ५७१४ ५ ३५ ६४ १ ६६२३  
 रथकार ४६४४  
 रथगति २ ४१  
 रथगुप्ति ५११४  
 रथवक्र १२१ ६४४  
 रथवक्रक १५७२  
 रथवक्र नामि २ ७४ ३३४१  
 रथवक्रमध्यस्थपिण्डिका २६२३  
 रथरेणु ५२३६  
 रथशीघ्रवहनसाधन ६१ ४

रथसमूह ६४५  
 रथसीराविदण्डक ६ ६  
 रथाङ्ग २ ४ ४६  
 रथाक्ष ४१६३  
 रथाविधान ४५१६  
 रथाघ स्थवार १४३  
 रथाश १३५६  
 रथिक ३१२५  
 रथी ४६४३  
 रथ्य ४६४६  
 रथ्या २ ६५ ३६६ ४६ ५ ५४ ३  
 रथ्यावाह १३५३  
 रथ १७५१ २ २ २५ १ ४६४६  
 रतिदेव ४६४  
 रधनस्थाली ३  
 रध १ ४ २१६३ २६३५ ३६ ६४  
 ३६ २ ४६४ ४ २६ ५ ५३ ६११  
 ६२ ५  
 रपठ ४६४  
 रभस ४६४६  
 रम् ४५६  
 रम ४६५१  
 रमठ ४६४६  
 रमण ४६५ ७११  
 रमणा ६५  
 रमणी ४६५  
 रमणीय २६३  
 रमति ६५१  
 रमा ४६५१  
 रम्म ४६५२  
 रम्भा १ २५ ४६५२ ५५४  
 रम्भास्त्रि ५५ ३ ५  
 रम्य ४२३ १ ६ ११ १ ३५ ३ ३ ३  
 ४६५३ ५ ६ ५१ ३ ६१ ७ ६७ १  
 रम्या ४६५३



रय २३६३  
 रयि ४६५४  
 रलाभकरप्रयाहार ४५६  
 रलक १ ६ ६५४  
 रवण ४६५५  
 रवि ११३ ६ ६ ३ ५ १६६७  
 ६६ १ ५ १६५५ २१ २ २३१  
 १ २५६ २६ ३२६ ३३ ५  
 ६ ३५६ ४ २ ३ ३  
 ५२६२ ५३ ५५२३ ६१ १२  
 ६३३६ ६५ ६ ३१ ६६  
 रविपारिपाश्विक ३३२३  
 रविपारिपाश्विकभब ३४  
 रविवाजिन् ३२  
 रवीन्द्र ३५२५  
 रव्यशब्दु शाली ३५३६  
 रशना ६ ६ ४६५६  
 रशिम ६ २ ३ ४२ ११ १ १३६६  
 १५६ १६३ २६५१ २ ३ ३२२  
 ३६१ ४५४५ ४६५७ ४ ३२ ६२ ६  
 ६६२  
 रस १४ २५ ४ २७६६ ४६५  
 ५१६६ ५३ ५  
 रसक ४६६१  
 रसकसर ४६६२  
 रसगघ ५५३२  
 रसज्ञ ४६६३ ७१  
 रसज्ञा ४६६३  
 रसन २२६२ ४६६४  
 रसना ४६६३ ६५  
 रसपाञ्चक १७ ३  
 रसवत ४६६५  
 रसवती ४६६५  
 रसबद्धाक्य १३४४

रसविद्ध २ ६  
 रसवेविन् ६६३  
 रससिद्ध ६४३१  
 रससिद्धि ४७१५  
 रससिद्धरभब ४ ६  
 रसहीन ४६ ३  
 रसा ४६६  
 रसाख्य ४६६५  
 रसाख्यधातु ६१३  
 रसाञ्जन २४३३ २ ३५१६  
 रसातल ५  
 रसायन २ ७ ४६६६  
 रसाल ४३३४ ६६ १  
 रसाला ४३७ ४६ ६४ ५६३१  
 रसावास १५  
 रसिक ६ १ ६३ ३  
 रसिका ४६ १  
 रसित ६७२  
 रसोत्तम ३१५६  
 रसोन ६६३ ४६ ३  
 रस्त ४६ ४  
 रहोभब ४६ ४  
 रहस ४४६, २ १२५ १ ७६ १६२  
 २१ २१ ३ ३ १ ४३६६ ४५६५  
 ६६ ५५३३  
 रहस्य १३ ६ २ ५१  
 रहस्यक २३६  
 रहस्या ४६७४  
 रा ४५६  
 राक ४६७५  
 राका ६५५ ४६ ५  
 राक्षस ४२६ ६ ६ ३ १३५६ १६११  
 २ ४ १७६४ २५६६ ३ ३ ५७  
 ३२१४ १ १६ ३४२१ ४ ५ ४५५६

६ १३ ७६ ४ २ ५ १ ६६ ५  
 ६७५२  
 राक्षसमिव २६ ४  
 राक्षसान्तर २५ ६  
 राक्षसी ४६७६  
 राक्षसीमिव ३५२१  
 राक्षसीमव ६४२३  
 राग १२७४ ६४ ५ ७६ १३ ६  
 ५६७२ ७३  
 रागचक्र ४६  
 रागब्रह्म १२२ १३ १ ४६२  
 रागब्रह्मधावन्तर ६७६१  
 रागमिद्व ३ ६  
 रागमव ६५२ ३ २  
 रागवत् ४६ १  
 रागरहित ५५४२  
 रागवस्तु ४५६  
 रागसूत्र ४६ १  
 रागिणी १६७६  
 रागिणीमव ६५१  
 रागिन् ४६ ४६ २  
 राघव ४६ २ ४ ४  
 राजक ४६६७  
 राजकया ४६ ४  
 राजकशब्द २६१  
 राजकुञ्जर २६११  
 राजकोशासकी १६ ४ ६३ ३७६  
 राजभिह्न ६४  
 राजजम्बू ४६ ५ ६४ ३  
 राजतप ४६ ६  
 राजधानी ६ ६२१६  
 राजधस्तूर ४ ७१  
 राजन् २७३२ ६१ २ ६६ ६२ ३६३६  
 ४ २ ५५ ४४५ ४६ ६ ५२  
 ५४३५ ६३३२

राजन २ २ ४६  
 राजनवन ६ ६  
 राजय १६५६ ४६  
 राजयबधु २२१४  
 राजयमात्र ४ ५५  
 राजपत्नी २  
 राजपलाण्डक ४६  
 राजपुत्र १६ ४६ ६ ६६६  
 राजपुत्री ३६५६ ४६ ६  
 राजबवर ४६६  
 राजबहिष्मू मि ६१ ६  
 राजभृङ्गाग्रध याट ३ ६  
 राजमव २४ ६ २५६२ २ ४५ ३ ४  
 राजमाघ ३ १७  
 राजयकमन १६५६ ३३ १  
 राजयोगोद्भव ३ ७  
 राजयोग्य ४६६५  
 राजयोग्यब्रह्म ३१७६  
 राजयोधित ३६  
 राजरक्षिन् १४  
 राजराज ४६६१  
 राजविमव १४७२ २२५  
 राजलकमन ६४५  
 राजवश्यनुपस्त्री २६६४  
 राजवृक्ष १३ १ ४६६१ ६२  
 राजवम्ब ४६६७  
 राजशासक ६३३३  
 राजशासन २५७  
 राजसमिधमव ६५४  
 राजसमा ४६६२  
 राजसर्प ४६६६  
 राजसर्वसम्पात् ६३५६  
 राजसी ४६६३  
 राजसुयाविक ३ ४६  
 राजहस ११ ५ २२७६ ४६६३

राजहूसी ४६६४  
 राजावन १ ७२ ४६६  
 राजावनप्रसव ३३५५  
 राजावनाख्यवक्ष ३३५४  
 राजान्तर २५४५ ३५  
 राजाह ३ ४७ ६६५  
 राजार्हा ४६६६  
 राजावास ६  
 राजि ६६६ ४ ६१  
 राजिका १५५१ १६६१ ३ ४ ६६  
 राजिकामण्ड २४६४  
 राजित २ १  
 राजित ४६६  
 राजिलाहि १६ ४  
 राजिलमोगिमव ६३४  
 राजिलाख्यतपप्रसव ३ ६  
 राजीव ४६६६ ४७  
 राजोपजीविन् ४६६६  
 राजी ४६ ७  
 राय ४ ५१ ४२  
 राज्यप्रसव २ ३५  
 राज् ४६ ३  
 राठा ४  
 रात ४७ १  
 राता ४७ १  
 राती ४७ १  
 रात्रक ४७ २  
 रात्रि ३४२ ५ १६५ ४७२३ ५६  
 ४४६६ ४५४२ ४६५३ ७७ ५३६३  
 ५४६४ ५ ६ ५२ ६१३६  
 रात्रिचर २ ५१  
 रात्रिचरमात्र ३ १  
 रात्रिचरी ४७ २  
 रात्रिचारिन् ४७ २  
 रात्रिज ४७ ३  
 ४६

रात्रिजागर ४७ ३  
 रात्रिजात ४ ३  
 रात्रिभव ४४५५  
 रात्रिमात्र २३६ ३ २  
 रात्रिमुख २ २३  
 रात्रिविषय ६१६  
 रात्र्यत ३ १  
 रात्र्यथ २७२  
 रात्र्यादिमयाम ३६ ३  
 राघ ५  
 राघन ४ ६  
 राघनब्रव्य ३२  
 राघना ४७  
 राघस ४७  
 राघा ४ ४ ६ ५५६६ ६६  
 राघी ४७ ५  
 राघरक ४ ७  
 राम १ ६१ ४७  
 रामक ४ ११  
 रामकपर २ ६  
 रामठ १५ ५  
 रामपुत्र १ ६३  
 रामभार्या ६४४१  
 रामभमिकनव २ ३  
 राममित ६४५३  
 रामस्वसु ५६२  
 रामा १२६५ ४ ६  
 रामानज ४ ११  
 रामिल ४ ११  
 रामेश्वरतीर्थक २७  
 राम्म ४७१२  
 रावण ३६ ३  
 रावणमित्रिन् ६ ६१  
 रावणानज ५४५२  
 राशि ४५४ ५ ५ ५ ५४ ३३३१ ७  
 १२ ५६

राशिभिर् ४  
 राशिमव २७७५  
 राशिस्थान ५  
 राश्यधोभावविभास २६४३  
 राश्यवय ४ १  
 राष्ट्र १२ २ ४ २६ ४६६२  
 ४७१३ ६५२२  
 रास ४७१४ १५  
 रासम १७४४  
 रासभाक्यपशमव  
 रासभागार १७४६  
 रासमी ५३१६  
 रासेरस ४७१५  
 रास्ना २१७ २६ ३ ५२ ३२१३  
 ३६४६ ४७१६ ४ ४७ ६४ १  
 रास्नासमकमयज ६३४६  
 राहु ५ ६ १ २ १ २५ १६ ५  
 २३ ३२५२ ३६४ ४१७६ ४२२४  
 ५४ ४४२२ ५५४६ ६४६६  
 राहुप्रस्त ७  
 राहुग्रह ४४२२  
 राहुमातृ ६४२३  
 रिक्त ४७१७ ६११५  
 रिक्ता ४७१  
 रिक्ति ४७६  
 रिक्ता ४७१  
 रिता ४७१  
 रिपु १२१७ २६१५ ४७१६  
 रिप्र ४७१६  
 रिष्ट ४७२  
 रिष्टि ४७२  
 री ४५६  
 रीज्या ४७२३  
 रीठाकरञ्ज ४ ६६  
 रीठा १ १६

रीति ६२ ७२१  
 रीतिक २३  
 रीतिका ४ २३  
 रीतिकुसुम ४ २३  
 रीतिधातु ७२३  
 रीतिपुष्प ३५१६  
 रु ४ २४  
 रुक्म १२१४ ४ २४ २५  
 रुक्माभयणकरुक्म ६ ३  
 रुक्मिणी ४ २५ ५ १  
 रुक्मिन २६  
 रुग्ण ४ २६  
 रुच ४७२  
 रुचक १२ २ ४ २७  
 रुचकगम ४३४  
 रुचि ४ ४७३२  
 रुचिकारिन् ४ २  
 रुचित ६६४४  
 रुचिपति ४७३४  
 रुचिफल ४७३४  
 रुचिमत् ४७३४  
 रुचिर ४७३६ ५४६६  
 रुचिरा ४७३५  
 रुचिष्य ४७३६  
 रुच्य ४७३ ३६  
 रुच्या ४७३  
 रुज् २१ ५४७ ७४ २३२६ २४१  
 ४७४ ५५ २  
 रुजा १६७५ ४७४  
 रुजाकर ४७४१  
 रुजास्तर ३१४५  
 रुजासह ४७४२  
 रुजि ४७४२  
 रुज्ज ४७४३  
 रुज्जिका ४७४५

वत ४६५५ ७२ ४५ ५३  
 वव ४७ ६  
 ववथ ४ ४६  
 ववित ४ २ १६३५ ४७  
 वव ३६५ ५६ ३  
 वव १६५३ ३ ५ ३६ ११ २१ ४  
 ४६६ ५२१४  
 ववतनय ४ ५२  
 ववनकात्र ५ ६  
 ववपनी ४ ५२  
 ववप्रिया ४ ५३  
 ववमिव ५७१ ६५ ४  
 ववभव ६ ६६  
 ववरा ७५१  
 ववराक्ष १४ ४३ ७  
 ववराणी ४७  
 वव्रान्तर १ ५१ ५५  
 ववधिर ५२ ४५६ ६३ ६३२ ४७५३  
 ४ ६७ ४६३४ ५५२२ ६१३६ ६५७  
 ववना ४७५४  
 ववन्न ४ ५४  
 वव ४७५५  
 ववथ ४ ५६  
 ववरात् ४७५६  
 ववराती ४ ५७  
 वव ४१६  
 ववोक्ति ६१  
 ववहन् ४७५७  
 ववह्वरी ४ ५  
 ववक्ष ४७५८  
 ववक्षणी ४७५९  
 ववक्षस्वर ४७६  
 ववक्षता १ १  
 ववक्षोक्ति ३७६४  
 वव ४७६१

ववमिन्न ३३२  
 ववमनस्यान १३६  
 ववरा २  
 वववित ३५२  
 वव २१६ २७ १ ३४१ २३ २ २५,  
 ३५६१ ३ ३६ ४७६२ ५१२१ ५६  
 ५ ७६ ६४६  
 ववकमिव २६१२  
 ववकमवमिन्न ५ ४७६४  
 ववकान्तर ३६ ७  
 ववकायतन ३ ४७  
 ववकाध ३५२  
 ववणीय ४७६५  
 वववत् ३३१  
 ववववनाविपञ्चक ६५४३  
 वव ६ १ ६५ २२६१ ४६२६ ४ ६४  
 ववकज २  
 ववशाला ६२ ४  
 वव १ ३  
 वेक ४७६५  
 वेखा ४५ २१ ७६६  
 वेचन १६ ६  
 वेचना ४ ६  
 वेचनी ४ ६७  
 वेचित ४७६  
 वे ४  
 वेणु ४६२६ ४ १७६ ५ ५६  
 वेणुका ४७ २ ५ ७ ५५७४ ५६२७  
 वेणकाव्योषध ५६२  
 वेतसु ६६ १२७३ २५ ५ २७६६ ३६  
 ३ ३६ ६२ ३६५४ ४१३५ ४६२६ ५  
 ४ ७३ ५२६ ५५६१ ५६ ६ ६१  
 ६४ २ ६७६ ६६  
 वेत्त ४७७३  
 वेपस ४ ७४

रेफ ५६ ७४ ५२३६ २  
 रेवत ६६६२  
 रेविहाण ४ ७५  
 रेवट ४ ६  
 रेवती २ ५२ ४  
 रेवतीम ३ ४२  
 रेवा २ ६ ४ ६  
 रवत ४  
 रमाव  
 रोक १  
 रोग २५ ५२ २२२ २ ५१ ७६५  
 १ ३६ ३२ ३ ३३६ ४७४ २  
 ५७५६ ६६ ६  
 रोगकर ४ ४१  
 रोगचिकित्सा ३७६६  
 रोगजपिप्पली १२५६  
 रोगमिव ३४६६ ६७५६  
 रोगमेव ३२५ ३५३६  
 रोगसह ४ ४२  
 रोगान्तर २४५३ ६११ ६६१  
 रोगिन् १ ५७७  
 रोचक ४७ २  
 रोचकाख्यकम्बल ६ ७  
 रोचन ७ ५  
 रोचना ४ ६५ ४४ ४ ३२ ४  
 ५ ७ ५७६  
 रोचनी १६४६ ७५ ७६ ४७ ४  
 रोड ४ ६  
 रोडा ४७ ७  
 रोदन १६२४ ४७४६ ४७ ७  
 रोदनी ७  
 रोदसु २२१ ४७  
 रोदसी २ २ २ १६ ३ ५६ ४६३२  
 ४७ ६२७५  
 रोघ २६७

रोघस २६५ २६५ ३२ ३ ३६ ६  
 ४७ ६  
 रोघसी ६  
 रोघ्र ४ ६ ५६३३  
 रोप ६  
 रोपण ४ ६ ६१  
 रोपणा ६१  
 रोमन् ४ ६ २  
 रोमपुट ३३३३  
 रोमश ७६२  
 रोमशा ४ ६२  
 रोमहृषण ४७६३  
 रोमाञ्च १ ६ ३४ ३ ४६२५  
 रोमाञ्चजनक ४ ६३ ४६२६  
 रोमाञ्चित ३४ ४  
 रोमावि ६७ १  
 रोमाली १३३५  
 रोलम्ब ११६  
 रोष ३३ २६२५ ६१६  
 रोषण १ ३ ४ ६४  
 रोषोक्ति ६ ६  
 रोहक ४ ६५  
 रोहणसाधन ४७६१  
 रोहणा ४ ६१  
 रोहन्त ४७६५ ६६  
 रोहन्ती ४७६५  
 रोहिणी ६ ६ ४ ६६ ४ १ ५ ११  
 रोहित ४७६  
 रोहित ३७ ३६६१  
 रोहिता ४७६  
 रोहितक ४६ ६  
 रोहितकद्रु ४ ३  
 रोहितकद्रुम ४५६६  
 रोहिताम्ब ४ २  
 रोहिद्रुम ५६

लब्ध ४ २६  
 लता १ ७ २५ १ २६ ३ ४७६५ ६६  
 ४ २७ ५१ ६१५१  
 लताकुश ६  
 लतागृह १३६५  
 लताकर ६४४  
 लताद्यकदेश १  
 लतान्तर ४५६ २३ ४ ६ ५६३६ ६१६६  
 ६५२६  
 लताबुद्धी ३७३  
 लतामव २५४२ ३ २३  
 लतामान ६१  
 लतामारिष ५ ६  
 लघ ५ १ ७ ३२ ५ ३७६ ४ २६  
 ५४३  
 लब्धवर्ण ४ २  
 लब्धव्य ४ २६  
 लम्प ४ २६  
 लम्पट ४ २६ ६१२४  
 लम्पाक ४ २६  
 लम्ब ४ ३  
 लम्बकण ४ ३  
 लम्बन ४ ३ ३१  
 लम्बनाड्यालङ्कार ४ ३६  
 लम्बमव २३५  
 लम्बमान ६५४  
 लम्बा ४ ३२  
 लम्बापट २३५  
 लम्बिन् ५७७६  
 लम्बोदर ४ ३३  
 लम् ४ ३३  
 लम्बुराज ४ ३४  
 लम् ४ ३४  
 लम्बिज्ज ४ ३५  
 लम् ४ ३५

ललन ४ ३  
 ललना ४ ३६  
 ललितिकासमा यमवर्ण ४ ३१  
 ललन्ती ३६  
 ललाट ३ १ ३ ३६६ ४ ६२  
 ललाटिका ४ ३७  
 ललाम ३  
 ललित ४  
 लव २४७ ३ ५ ४ ४  
 लवङ्ग २६४५ ४ ३६ ३६ ४ १  
 ६ ११ ६१६  
 लवङ्गक ३ ४  
 लवयवतय १ ४  
 लवण २२६ ७४ ६७ १ ५ १५११  
 १६६३ २ ६२ ४६६ ४ ४१ ५४ २  
 लवणाद्यरसान्तर ३ ६  
 लवणासुरमात १४६५  
 लवणी ४ ४२  
 लवन २६२३  
 लवली ३७६ ५४३  
 लवलीद्रुम ६  
 लवलीफल ३२६२  
 लवाणक ३  
 लगुन २६१ ३२२ ६६७ ६६ १७ ५  
 २६४५ २६२ ३३१ ४६५६ ७३  
 ५६ ४ ६ १७-१  
 लव ४ ४३  
 ललित ४ ४  
 ललित ६६  
 लस्तकग्रह ३७  
 ला ४ ४४  
 लाक्षणिक ३६७१  
 लाक्षा १७३२ २२१२ २७४६ ३२१४  
 १ ४६१४ २२ ४ ४४ ५ ७  
 लाभारवत ३२२३

लावक्ष ४ ५  
 लाक्षिक १६२ ४ ५  
 लाङ्गल १ १३ १५३७ ४६ १६५ ४ ६  
 ६ ६ २  
 लाङ्गलक ४ ४६  
 लाङ्गलकी ४६  
 लाङ्गलकूट ३ ६  
 लाङ्गलाप्र १५३  
 लाङ्गलिक ५  
 लाङ्गलिका ४६  
 लाङ्गलिकी ३ ५१ ६ ४  
 लाङ्गलिन ४ ५  
 लाङ्गलिनी ५१  
 लाङ्गली १३ ११६ ४७ ५  
 लाङ्गयाक्यौषध १६ १  
 लाङ्गुनी ५३  
 लाङ्गुल ५१  
 लाङ्गुल ३ ४ ५१  
 लाङ्गुलिन् ५२  
 लाङ्गुलिनी ४ ५३  
 लाज १६ २ ३१ ५३  
 लाञ्छन १३५६ ४ ५ ६६१६  
 लाञ्छनी ४ ५४  
 लाट ४ ५५  
 लातशब्द ४ ५५  
 लाव ४ ५६  
 लावा ४ ६  
 लाभ ५४१ ६२ ७३ ३ ६७ ३ ५  
 ५६५४  
 लाल ४ ६  
 लालक ४ ५  
 लालना ४ ५  
 लालसा ४ ५६  
 लाला ४ ६ ६५ ६६२४  
 लालाटिक ४ ६२

लालाटी ४ ६२  
 लालासिबण ४ ६३  
 लालासाव ६३  
 लालिका ४ ५  
 लाव ६  
 लावकपक्षिन् ४३१  
 लावणिक ४ ६५  
 लावणी ४ ६४  
 लावण्य ४५६ ५ ५३ ५१२  
 लावाक्यपक्षिन् ५ ७  
 लास ४ ६६  
 लासक ६ ५५३५ ५६ ३  
 लासकी ४ ६  
 लासिका २ ६ ६६  
 लास्य ३४६३ ४ ६  
 लास्या ६  
 लास्यातर ५५३५  
 लि ४ ६६  
 लिङ्गुच ४ ६६  
 लिङ्ग ७  
 लिङ्गा ४  
 लिङ्गन २१४ ४ ७  
 लिङ्गि ४ ७  
 लिङ्गित ४ १  
 लिङ्ग ७१७२  
 लिङ्ग २ १ ४ २ ५७४३ ६५ ५  
 लिङ्गक ४ ४  
 लिङ्गज ४ ७५  
 लिङ्गणा ४ ५  
 लिङ्गिका ४ ४  
 लिङ्गिन् ७६  
 लिङ्गिनी ६  
 लिङ्गा ४ ७६  
 लिङ्गोपगादि ११  
 लिपि ४ ६१



लिपिकर ४  
 लिपियास ४ ६२  
 लि ता ४ ७  
 लिप्तक्रिया ६६  
 लि सा २ २५ १ ३६५१  
 लिम्पाक  
 ली ४ ६  
 लीन ५४६५  
 लीला १६३३ १ १ ३६६२ ५ ६४  
 ५५३  
 लीलाखल ४  
 लीलावत् ४ १  
 लीलावती ४ १  
 लीलाविलास ४ ७६  
 ल लक २  
 ल लकृत् ४ २  
 ल लवन ४ ३  
 ल लन ११५२ ४ ३  
 ल लक २  
 ल लन २ २ ३  
 ल लक ४ ३  
 ल लिका ४ ४  
 ल ली  
 ल ४ ४  
 ल ल २ ४६ ४  
 ल ल १५३२ ४६१ ५ ६१६२  
 ल लक ४ ५  
 ल लिका ६  
 ल ल ४ ७  
 ल ल ६६ ४ ७  
 ल ता २६ ३ ४२२ ४ ६३ ५७११  
 ल ताकिमि २३७६  
 ल ताख्यधुमजन्मतर २२  
 ल ल ६  
 ल लक ४ ६

ल लालिकल ३२१५  
 ल लनि ६  
 ल लख ६  
 ल लक १ ७ ५१२  
 ल लकाख्यनरजाय तर १२६  
 ल लन २ ५ ४ ६२  
 ल लनस धन १५१  
 ल लनिक ६३  
 ल लनिका ११  
 ल लनी ४ ६४  
 ल लपत्र ६५  
 ल लहारक ४ ६३  
 ल ल ४ ६१  
 ल लय ३५३३ ३ ४५६३ ४ ६ ६  
 ल लयपत्र ६५  
 ल लयहार २६६१  
 ल ल ४ ६६  
 ल ल ५ ४ ७-६६  
 ल लन १६ ६ ४ ६  
 ल लहीन २६६  
 ल लय ३५३४ ४ ६  
 ल लयनारी  
 ल लयाविकमन् ३५३३  
 ल लय ४ ६  
 ल ललह ४ ६६  
 ल ललिहा ६६  
 ल ललिहान ४६  
 ल ललिहाना ४६  
 ल ल १ ४२ २५४ ४ ४ ४६ १  
 ५५३६  
 ल लक ४६२६  
 ल लह ४६ २  
 ल लहक ४ ६६  
 ल लहन ४६ २ ३  
 ल लही ४६ ४

लह्य ६ ५  
 लङ्ग ६ ५  
 लङ्गिन ४६ ५  
 ललिहान ६ ६  
 लोक २१६६ २२१ २ ३२  
 ६ ६ ६६६६  
 लोककस्त ४६  
 लोककात ६  
 लोककाता ६  
 लोककृत ६  
 लोकनाथ ४ ५ ६  
 लोकपाल ६ ६  
 लोकबध ६१  
 लोकभव २३ ३  
 लोकमात ४६१  
 लोकम्पुण ६११  
 लोकयात्रा ५ ५६  
 लोकयात्रिक २ २  
 लोकबाव १६१  
 लोकविसग ४६११  
 लोकसुख ४६११  
 लोकातर ३ ३  
 लोकश ६१२  
 लोकेश्वर ३१४  
 लोचक ६१२  
 लोचन ३३ ४६१५  
 लोचना ४६१६  
 लोचनी ४६१६  
 लोचिका ६१५  
 लोट ४६१  
 लोटना ४६१७  
 लोटाम्लवास्तुक ६१  
 लोणिका ४६१  
 लोत ४६१  
 लोघ ४६१६

लोघ  
 लोघतव १ ६५  
 लोघशाखिन् ३ ६१६ ५६३२  
 लोप ४ ६१६  
 लोपक ६२  
 लोपा ६२  
 लोपामद्रा ४६२ ५ ५  
 लोपत ६२  
 लोपत्री ६२  
 लोम १२ ४६२१  
 लोभन ६२१  
 लोभना ४६२१  
 लोभशील ३ १  
 लोभिन् १२६ १६२  
 लोभ्य ६२२  
 लोभन २३ ३ ६२२  
 लोभश ४ ६३ ६२३  
 लोभशपुच्छक १२२२  
 लोभशा ४६२३  
 लोभहृषण ६२५  
 लोल ६२६  
 लोला ६२६  
 लोली ४६२  
 लोलप ६२  
 लोलपा ६२  
 लोष्ट ६२६  
 लोह ३१ १ १२३ १ ६ १६  
 २ २ ६६ २४ ६२ ५१  
 ६२६५६ ४६२६ ६ ३  
 लोहक २३२  
 लोहकारोपकरणातर ६२  
 लोहकीलिन ५ २१  
 लोहक २ १  
 लोहग ३१२  
 लोहगव १३५६

लोहण ६३

लोहद्राविन ६३१

लोहपुष्ठ २२५२ ४६३१

लोहपुष्ठक ६५७

लोहप्रतिकृति ६६

लोहप्रतिभा ६५

लोहमिद्व ३३२५

लोहमव ३ ३६ ३३४६

लोहमिश्रण ४६३२

लोहमवगर २ १६ ३६१६

लोहल ४६३

लोहशलाका ३१७

लोहसङ्कर ६३२

लोहसम्मव ४६३

लोहायस ४६३३

लोहित ३२ ४६ ४६ ३ ३३

लोहितक ४६३

लोहितचवन ४६ १

लोहितत्व ४६४६

लोहितपुष्प ४६४२

लोहितपुष्पी ४६ १

लोहिता ४६३७

लोहिताक्ष ४६४२

लोहितानन ४६४४

लोहितिका ४६३६

लोहित्य ६४

लोहितिका ४६३६

लोहिनी ४ ६६ ४६३

लौल्य १२३६ ४६४५

लौह १६ ३१ ६४५

लौहकास्य ३५१६

लौहा ४६ ६

लौहित्य ४६४६

व

वश २२१६ ६ ६

वशक ४६५१

वशकीरी ५१६१

वशज ३ ६६ ६५२५

वशजा ४६५२

वशजाल ६५५

वशपत्र ४६५३

वशपत्रक ६५३

वशबीज ६५२

वशरोचना २ ६

वशवाद्य ३५५ ५६४२ ६२

वशवेदिन २

वशशलाका १६६

वशाडकुर ११२७

वशाविवाद्यमिद्व ६

वशावृत्ति ३४ २

वशि ४६५६

वशिक ४६५४ ५५

वशिका ४६५१ ५५

वश्या ४६५७

व ६४७ ४

वक ४६६४ ५२१३ ६५ ५

वकवृक्ष ५२२५

वकामिधवृक्ष ३३१

वकुल १५७५ १६ ५ ६४२१

वक्तव्य ४६५७

वक्त्र २५ ४४१३ १ ४६५० ५२५५

वक्त्रपूर्ति १ ३३

वक्तु ४६५ ७६ ५ १६

वक् २ ५६ ४१७७ ४६६ ६

वक्कोश ५१४१

वक्कण्ट ४६६१

वक्कगति ६५५२

वक्कपुष्प ४६६२

वक्रवष्टु ४६६२  
 वक्रवत् ४६६३  
 वक्रनक्र ४६६३  
 वक्रपुष्प ६६४  
 वक्रशया ६६  
 वक्रघोषित ५ ५  
 वक्रा ४६६१  
 वक्रि ४६६५  
 वक्रतर १  
 वक्षणा ६६६  
 वक्षस ३४ ६५ ४६६६ ५ ११  
 वक्षोमवातर ३ १  
 वगनु ६६  
 वङ्गा ६६  
 वङ्गि ४६६  
 वङ्गकु ४६६  
 वङ्गक ४६६  
 वङ्ग १६६१ १६ २५१६ २६  
 ३२ ६ ४४६६ ४६६६७  
 वङ्गसेनफलावि २६  
 वङ्गसेनवु २  
 वङ्गा ६७  
 वच ४६ १  
 वचवनु ४६ २  
 वचण्डा ४६ ३  
 वचणी ४६ ३  
 वचन ४ ६ ४६६ ७३ ५ ५१३३  
 ५२४७  
 वचनस्थित ६११  
 वचनीय ४६ ४  
 वचर ४६  
 वचल ४६ ५  
 वचस् २५५ ६३ २  
 वचा ३२६ ६६ ६ १३४६ १६६  
 २ ६६ २२ ३६ ६ २३ २४५६

३ ६ ६४ ४ ६२३ १  
 ५ ३ ६२  
 वचि ६ ५  
 वचुष्य ६ ६  
 वचोनाल ३ ३  
 वच १५ ३३४ ६२ १ ३४ ५  
 १६३ २३१ २ ६ ६६ २५६६  
 २६१५ ३ ५३ ५५ ३१५६ ३२२  
 ३५६६ ३१३ ६ ६ ६  
 ५ १ ५११ ५५६३ ५ ५१ ६४ १  
 ६५ ५ ६ ६६४३ ५१ ६ ६५  
 वचकण्टक ६ १  
 वचतुष्य ६ १  
 वचवत् ६ २  
 वचपुष्पा ६ २  
 वचवाराही ५३ ३  
 वचवस ४६ ३  
 वचशाल्य ६ ३  
 वचशया ६ ३  
 वचस्तम्भ २३६  
 वचहस्त ६ ४  
 वचहस्ता ४६  
 वचा ६ ६  
 वचाङ्ग ४६  
 वचाङ्गी ६ ४  
 वचिणी ४६ ६  
 वचिन् ४६ ६ ५ ६  
 वचक १३६२ २ ३३ ३६३ ६  
 ५५३  
 वचन १ २४  
 वचिमत ४६ ५४६३  
 वचिषता ६  
 वचपुष्प ४६  
 वचपुल ४६ ६  
 वचपुल ४६ ६

वट २ ३ ४ २ ४६६ ५ ३४  
 वटक ४६६२  
 वटप्रभ ३ ६१  
 वटपत्र ४६६३  
 वटपत्रा ६६  
 वटपत्री ४६६  
 वटम्ब ४६६५  
 वटर ४६६५  
 वटिका ४६६३  
 वटि ४६६६  
 वडवागिनि ६४१ ३ ६ ५२  
 वडवानल ३२५४ ५२ ६२१  
 वडवामख ५ १  
 वडि श १ ६५ ५  
 वडिशोसूत्रबद्धकाष्ठाविक २३६५  
 वणिककमन् ५ २  
 वणिकपथ २६४ ५ १  
 वणिकस्त्री ५ ७  
 वणिगाह ३१  
 वणिङ्मूलधन ३ ४१  
 वणिङ् ५३५ ३ १३६६ २६४६ ३ ४  
 ५६ ३१ ७ ३ ६ ५ २ ५२७  
 ५४३ ६३४  
 वणिग्या ३ ४१  
 वण्ट ५ ३  
 वण्टाल ५ ४  
 वण्ठ ५ ४  
 वण्ठर ५ ५  
 वण्ड ५ ६७  
 वण्डाल ५ ७  
 वतस ५  
 वत ५ ५७६१  
 वतू ५ ६  
 वत्स ३१४ ५ ६  
 वत्सक ५ १२

वत्सत्व ५२६६  
 वत्सवामन २६५  
 वत्सनाम ५ १२ १३  
 वत्समात १  
 वायथ ५२६  
 वत्सर १५५ २२ ५६३ ५ १३ ६१  
 ५१५१ ५६ २ ६२१६ ६ ५२  
 वत्सराजप्रासाद ६४  
 वत्सरातिर १५५  
 वत्सल ५ १ १५  
 वत्सला ५ १  
 वत्सावनी ५ १५  
 वत्सेश ७४१  
 वव ५ १६  
 ववन ५ १६ ५३  
 ववनावतिवासस २२  
 ववर ५५  
 ववान्य ४४६६ ५ १७  
 ववाल ५ १७  
 ववितक्यक ५२५६  
 वव ६ २१६ ५६ ५६ ७ ७७५ २६ १  
 ६२ ३१६१ ६६ २ ३३३३ ३६४४  
 ३ १६१ ४ ५ १ ६३  
 ६४६६ ६५६४ ६६ २  
 वघक ५ १६  
 वघत्र ५ २  
 वघस्थान ५६३७ ६४६६  
 वघा ५ १६  
 वघिक ५ २१  
 वघिर ३ ३  
 वघू २७७६ ५ २१  
 वघटी ५ २२  
 वघ्य ५ २३  
 वघ्या ५ २३  
 वघ्न ५ २३

वध्रि ५ २  
 वध्रिक ५ २  
 वध्रिका ५ २४  
 वध्री ५ २३  
 वन ६४ ६६ २ ६१२ ५३ २६ ६ ३४  
 ३ ६३ १६ ५ २ ५१  
 ५३ ६२६६  
 वनक ५ २५  
 वनकार्पासिका ५ २  
 वनकोव्रज १३  
 वनक्षत्र ५१६२  
 वनगज ५ ३३  
 वनजवन ५ २६  
 वनज ५ २६ ५५  
 वनजा ५ २  
 वनति ५ ३  
 वनतिक्त ५ २  
 वनतिक्ता ५ २  
 वनद्रुम २ ३ ५ २६  
 वनप्रिय ५ २६  
 वनमव २  
 वनमल्ली ६३  
 वनमान्न १२६  
 वनमाञ्जरिक ६७६६  
 वनमालिन् ४१६ ५ ३  
 वनमालिनी ५ ३  
 वनमद्ग १ २६ ५ ४  
 वनवह्नि २६ ६  
 वनवासिन् ५ ३१  
 वनवास्तव्य ५ ४१  
 वनवस्त ५ ३२  
 वनशूरण ५ २५ २६  
 वनशवन ५ ३२  
 वनसमूह ५ ५१  
 वनसहित ६३६३

वनस्थ ५ ३३  
 वनस्था ५ ३३  
 वनस्पति ५ ६ २ २६ ५ ३  
 ५ ६३४ ६ २  
 वनस्पतिमान्न ६  
 वनस्पत्यंतर ६३ ६६६६  
 वनहास ५ ३५  
 वनायु ५ ३६  
 वनाव्रक ५ २  
 वनि ५ ३६  
 वनिता ४६३१ ५ ३ ६५७  
 वनितु ५३ ७  
 वनिष्ठ ५ ३६  
 वनी ५ २५ ३६  
 वनीरज ५३१३  
 वनोत्ति ५ ३७  
 वनोद्भवा ५ ४  
 वनोद्भूत ५ ५१  
 वनौकत् ५ १  
 ववक ५ १  
 ववति ५ ५  
 ववथ ५ २  
 ववना ५ २  
 ववनी ५ ३  
 ववनीय ५ ४३  
 ववनीया ५ ४३  
 ववा १२ ६ ५ ४ ४ ५२ १ ५५६६  
 ववाकवृक्षा ५ ४  
 ववाव ५ ४  
 ववावृक्षा ५ ४१  
 ववि ५ ४५  
 वविन् १६६३ २ ५६ ५७ ५ ४५ ४६  
 ६ ६५  
 ववी ७६ ३६१ ५ ४६  
 ववीक ५ ४६

वन्ध ५  
 वन्धा ५ ४  
 वन्धजीवप्रसव ३ ३१  
 वन्धुजीवाख्यपुष्पग म ३ ३  
 वन्धक ३ २ ३१  
 वन्ध ३ २५  
 वन्ध ५  
 वन्ध्या ५ ४ ६५६५  
 वन्ध्याकर्कोटकीवली ३४२६  
 वन्ध १५५ ५ ५  
 वन्धमक्षिका २५६१  
 वन्धकार्पासी ३६ ३  
 वन्धमृगादि ३२३१  
 वन्धा ५ ४६  
 वन्धाख्यमुष्पग ४२३  
 वन्ध ५६५ ३ १५ २३ ५ ५१  
 वन्धशाला ६ ६५  
 वन्धनी ५ ५२  
 वन्धा ५ ५३  
 वन्धु २३७१ ४ ६२ ५ ५३  
 वन्धु २६ ६  
 वन्ध २५ ५ ५४  
 वन्धबीजकोशी ११५  
 वन्धि ५ ५६  
 वन्धति ५ ५६  
 वन्ध ५ ५७  
 वन्ध ५ ५७  
 वन्धता ५ ५६  
 वन्धनी ५ ५  
 वन्धि ५ ५६  
 वन्ध ४६४  
 वन्ध ५ ६ ५६ ६  
 वन्धी ७६४ ५ ६ ६५७४  
 वन्ध ४६४६  
 वन्ध ५ ६१

वन्ध ५ ६२ ६६  
 वन्ध्या ५ ६३  
 वन्धा ५ ६३  
 वन्ध ५ ६  
 वन्धुना ५ ६  
 वन्ध्या ५ ६५  
 वन्ध ५ ६६ ५१  
 वन्ध ५ ३७  
 वन्धकाष्ठका ५ ४  
 वन्धबन ५ ५  
 वन्ध ५ ५  
 वन्धा ५ ६  
 वन्धाख्यघाघमव ५ ६  
 वन्धी ३ ३ ५ ७६  
 वन्ध ५ ७ ५५ १  
 वन्धकारिन् ५१६५  
 वन्धद्रुविकृति ५३३१  
 वन्धा ५  
 वन्धीय ४२४२  
 वन्ध ५ ६  
 वन्धक २  
 वन्धनु ५  
 वन्धम ५१  
 वन्धित ५ १  
 वन्धिता ५ १  
 वन्धितिका ५ १  
 वन्धा ५ २३ २४ २ ५ ४५  
 वन्ध ५१ ५ ६  
 वन्ध ५ २ ३  
 वन्धा ५ ३  
 वन्ध्याख्यमीमृ ३४१६  
 वन्धीत ५ ४  
 वन्ध ५ ५  
 वन्ध ५ ५  
 वन्धा ५ ५  
 वन्धा ५ ५ ७७

वरयितु ५ ५ ५१  
 वरदक्षि १२६ ३४३ ५ ६  
 वरल ५ ६  
 वरलब्ध ५  
 वरला ५ ६  
 वरवर्णिनी ५  
 वरस्मिन् २२२३  
 वरस्त्री १ ६२ २२१  
 वरा ५ १  
 वराक ५ ६  
 वराङ्ग २५५३ ५ ६  
 वराङ्गना ५ ६२  
 वराङ्गा ५ ६१  
 वराङ्गी ५ ६२  
 वराट ५ ६३ ६ ६  
 वराटक १२ १ ६ ५ ६  
 वराटी ५ ६४  
 वराण ५ ६५  
 वराणक ५ ६६  
 वराणस ५ ६६  
 वराणीय ५ ६६  
 वरावप्राह्मण ६१ ६  
 वरारोहा ५ ६७  
 वरारोहाकटिस्थान ५ ५  
 वराल ५ ६६ ५१  
 वराला ५१  
 वरालि ५१  
 वराह २२ ६ २५६२ ३३ ४ ३ ५३  
 ३६४ ६६२ ६३ ५१ १ ५ ६५५  
 ६६ २  
 वराहक ५१  
 वराहनामन् ५१ ४  
 वराहमिहिर ५१ १  
 वराहाकृतिहिरि ६५६  
 वराहिका ५१

वराही ५ ३ ५१ ३  
 वराह ५१ ५  
 वरिम् ५१ ५  
 वरिव ५१ ६  
 वरिष ५१ ६ ७  
 वरिष्ठ २४६६ ५१  
 वरीत ५१  
 वरीयस् ५१ ६  
 वरीयसी ५१ ६  
 वर ५११  
 वरण २२ ६३ १ २ १५६६ २२२६  
 ५ २४४५ २६६६ २ १३ ३३१  
 ३ ५२ ३६२३ ३ १५ ४ ३  
 ४५६ ४ १ ६ ५१११ ५३१  
 ५ ६  
 वरणग्र ५१११  
 वरणग्रम २३ ६ ४६६ ६५१  
 वरणपाश ५११२  
 वरणपुत्र ३५ ४  
 वरणप्रघात ५११३  
 वरणफल २ ३३  
 वरणा ५ ५११२  
 वरणात्मज ३ ६६ ६४ ५  
 वरुण ५११  
 वरुणिन् ५११५  
 वरुणिनी ५११५  
 वरेण्य ५११५ १६ ४  
 वरेण्या ५११६  
 वरोह ५६  
 वकर ५११  
 वकराट ५११७  
 वर्ग १२५७ २६५ ५११ ५  
 वगणा ५११६  
 वर्गीकरण ५११६  
 वग्य ५१२



वक्षस ५१२  
 वक्षस्क ४१  
 वजन २३१२ ३१६६ ५१२१  
 वज्रनाथ १६  
 वज्रित २३१२  
 वण २ ३२४३ १ १४ १३५५ २३२२  
 ४२ २ ४६१६ ५१२२ २५  
 वणक ५१२५  
 वर्णकम्बल १ ३६  
 वणकौशयसूत्रक २५२२  
 वणगणांतर ४ ६  
 वणदोष ६  
 वणधर्म २ ३५  
 वणधमन्तिर ६२२२  
 वणन १२ ७  
 वणनी ५१२६  
 वणनीय ५१३  
 वणमद ३२६  
 वर्णमात्र २५६  
 वणप्रोजन ६२ ६  
 वणवत् ५१२६  
 वणविकार ३२  
 वणवि ोडक ५१२  
 वणसङ्करमद १ ५३  
 वर्णा ५१२४  
 वर्णटि ५१२७  
 वर्णातीवसन्निकर्ष ६२३  
 वर्णांतर ३२५१  
 वर्जिका ५१२५  
 वर्णिन् ५१२  
 वर्णिनी ५१२६  
 वर्णु ५१३  
 वर्ण्य ५१३  
 वस्तक ५१३१  
 वस्तका ५१३१

वस्तकी ५१३२  
 वस्तन ५१३२ ३४ ५५ १ ५५  
 ६३६१  
 वस्तवक ५१३५  
 वस्ति ३ ६ ५ २ १३  
 वस्तिका ५१३१  
 वस्तित ५१३१  
 वस्तिष्ण ५१३३  
 वस्त ३ २ ५१३६ ६ ६  
 वर्त्त १ ५१३  
 वरमन १६ ५१३ ५ ५१  
 वरमहोमाग्नि ३१२  
 वर्याकि २३५६  
 वर्यापिक ३२३४  
 वध ५१३  
 वधक ५१३६  
 वधकि १४ १  
 वर्धन ५१३६ ५५ ६  
 वर्धना ५१४१  
 वधनी ५१४  
 वधमान ५१ १ ४३  
 वधमानक ५१४३  
 वधपिक ५१ ४  
 वधपिन ५१४  
 वर्धित ५१४५  
 वर्धिष्ण ५१४  
 वध्न ५१४५  
 वर्ध्नी ५१४५  
 वर्मन् २५६१ २६ ६ ३२६१ ५१४६  
 वमवत् ५१४६  
 वर्म ५ ११  
 वर्या ५१ ७  
 ववर ५१४७  
 वर्वरी ५१४  
 वर्वरीक ५१५

धर्वरीका ५१ ६  
 धर्वी ५१५१  
 धव २६५ ६७ ५ १३ ५१ ५२  
 ५६ ६ ६ ६  
 धवक ५१५३ ५ ५६२७  
 धवकाव ५६१  
 धवकोश ५१५४  
 धवण ४ ६ २ २६ ५१५५ ५३४६  
 ५६२४  
 धवणि ५१५५  
 धववेयर्णावि ६३ ३  
 धवधर ५१५६  
 धवपवत ५१५६  
 धवमिद् ६ ३ ६७ २  
 धववर ६२ १  
 धववद्धि ५१५६  
 धर्वा २ ७ ५१ ६ ५२ ५३  
 धर्वाङ्ग ५१५  
 धर्वाङ्गी ५१५७  
 धर्वाभि ६ ६ ५१५ ५ ६२ ६४  
 धर्वा बी ५१५  
 धर्वाह् ५१६१  
 धर्वाङ्गा ५१६१  
 धर्वु ५१६४  
 धर्वुक ५१६४  
 धर्वुकाञ्च २ २  
 धर्वुकाम्बुव ४३  
 धर्वापञ्चय ५१५६  
 धर्वापिल ११ १  
 धर्मन् ५१६५  
 धर्म्या ५१६६  
 धल ५१६६ ६१७७  
 धलज ५१६  
 धलन ५६३ ५१  
 धलना ५१७१

धलभि ५१७१  
 धलमिद् ५१ २  
 धलमी २१५ ५१ १  
 धलय ६७ १ ६६ १ २ ३ ६६  
 ५१ ३ ५२६ ५३५२ ५ २२  
 धलयित ५१७४  
 धलाहक ५१ ५  
 धलाहका ५१७  
 धलि ५१ ७  
 धलित ५१७  
 धलित्रययुत २५४१  
 धलिर १६४२  
 धलिहित ३ ३  
 धलीक ३ ४२  
 धलीमुख ५१ ६  
 धलक ५१  
 धलक २५५३ २६ ५१ १ २  
 धलकमिद् ५१ २  
 धकल २१ १ ५, २५५५ ५१ १ २  
 ५५६ ५ ७४  
 धकला ५१ २  
 धगन ५१ ३  
 धगित ५१ ३  
 धगु २६४५ ५१ ३  
 धगुक ५१  
 धगुवाण ५ १  
 धमी ५१  
 धल्मीक १३ १४ १५ ५ १ ५  
 २६ ५१ ५ ५ ३३ ६४४६ ६६२५  
 धल ५१ ६  
 धलकी ५१ ६ ५५३६  
 धलम ३ १ ४६५५ ५१ ७  
 धलमा ५१  
 धलमी ५१ ७  
 धलरि ५१

बल्लरी ५१  
 बल्लव ५१ ६  
 बला ५१ ६  
 बलि २५५४ ३६३५ ६५४६  
 बल्लिज ५१६१  
 बल्लिवत् ५१६१  
 बल्ली ४ २७ ५१६ ६ ४२ ४४  
 बलीभिद् ६४५  
 बलर ५१६२ ६३  
 बलर ५१६  
 बलरक ५१६  
 बलरा ५१६५  
 बल ५१६५  
 बश २१ १ ५१६६  
 बशा ५१६६ ५२ ३  
 बशाङ्गति ५१६६  
 बशाङ्गम ५१६६  
 बशवर्त्तिनी ५१६६  
 बशा ५१६७  
 बशि ५२  
 बशिव ५५ ५२  
 बशिन् ५२  
 बशिली ५२  
 बशिर २४ ५२ १ २  
 बशीकृति ४४४७ ६२१५  
 बशीर ५२ २  
 बश्या ५२ ३  
 बश्यात्मन् ५२  
 बसति ४६४७ ५२ ६  
 बसन ५२ ४  
 बसनक्रिया २६६७  
 बसनाञ्चल ३ ६ ४५७  
 बसनात् २६१६  
 बसनान्तर ३१  
 बसन्त ४६ १२ ३ ५ ३५१७ ४१४

४३५३ ५२ ४ ५५३२ ६४ ३ ६६२  
 बसन्तजा ५२ ५  
 बसन्ततिलका २ ६  
 बसन्तवृत् २  
 बसन्तवृत्ती ५२ ७  
 बसन्तस्य ५२  
 बस्य ५२ ६  
 बसा ४ १६ ५ ६  
 बसावनी ५२१  
 बसारोह ५२१  
 बसाहीन ४१  
 बसि ५२११ १५  
 बसिर ५२ २  
 बसिरीष ५२१५  
 बसिठ १४६२ २ २ ३४३१ ५२११  
 बसिष्ठपुत्र ५ १३  
 बसिष्ठभार्या ३२६  
 बसीर ५२ २  
 बसु ५२१२ ६ ६  
 बसुक ५२१७ १  
 बसुवसाभिधवेव ५२२६  
 बसुवेव ५२१६ १६  
 बसुवेवसबद्ध ५२ ६  
 बसुवेव्या ५२२  
 बसुघ ५२२  
 बसुधा ६४५ १४६३ १ ३ १६७६  
 २ २ ३ ४७५ ५२२ २१  
 बसुधासुत ५२२१  
 बसुप्रभा ५२२२  
 बसुम ६१६१  
 बसुमङ्गलितपुष्पवृक्ष ६ ७५  
 बसुमिद् १२७ २७ ६ २ ४६  
 बसुमत ५२२२  
 बसुमती ५२२२  
 बसुयुक्त ५२२२

वसुरेतस् ५२२३  
 वसुल ५२२३  
 वसुधष्ठ ५२२४  
 वसुधण ५२२४  
 वसुसारा ५२२५  
 वसुक ५२२५  
 वसोर्धारा ५२२६  
 वस्ति ५२२ २  
 वस्तिपु ३ ५  
 वस्तिभव २६  
 वस्तु २७५२ ३१३२ ५२२६ ५५३  
 वस्तुक ५२२६  
 वस्त्र ५ १ १२२३ २१५ २६ ३  
 २६६ ३ ३३५ ६ ३२ ३ ५  
 ४ ५५ ४६ ६५ ५ ७३  
 ५२ ४ ११ २६ ३१ ५३६४ ६५२२  
 वस्त्रकुट्टिम ५२३  
 वस्त्रकोश ११३३  
 वस्त्रगण्ठी ५ ५१  
 वस्त्रधवर २ ६४  
 वस्त्रधवरी २ ६५  
 वस्त्रधवप्रभव ३३५२  
 वस्त्रनीवी ६६६  
 वस्त्रपुत्रिका ३  
 वस्त्रभङ्ग ७१  
 वस्त्रभव ६५६७  
 वस्त्रमात्र २  
 वस्त्रसङ्कोचरेखा ७  
 वस्त्रा ५२२६  
 वस्त्राञ्चल २६ ५३३६  
 वस्त्रगत् १३६  
 वस्त्री ५२१७  
 वस्त्रोक्तसारा ५२३१  
 वस्त्रोक्तसारा ५२३१  
 वहत ५२३३

वहति ५२३  
 वहती ५२३  
 वहतु ५२३५  
 वहन २५ ५ ५२३५ ५३ ३  
 वहत ५२३६  
 वहती ५२३६ ३७  
 वह्ना ५२३२  
 वह्निर २ ५ ५२३  
 वह्निस ५२३  
 वह्न्यक ५१ ६  
 वह्न्युता ३ ५  
 वह्न्याशिन ६ ६  
 वह्नि १३६ २११ ६ ५ ६१ १४२६  
 २२५ २३१४ ६१ २४५६ २५५६ ६  
 २ १६ ३ ५७६ ३२ २ ३७५३  
 ५२३ ५४६ ६४ ६४७३ ६५ ६  
 २६ ६ ६६  
 वह्नियम ३  
 वह्नियम ५२४  
 वह्नियर्मा ५२४  
 वह्निय्वाल् ३५  
 वह्निय्वाला ३५ ५२ १  
 वह्निवीपिका ५२४१  
 वह्निबीज ५२४२  
 वह्नियम २ १६  
 वह्नियम ३१४ ३३१३  
 वह्नियुज ५२ २  
 वह्नियुज ५२४३  
 वह्नियुजा ५२४३  
 वह्नियुज ५२४४  
 वाशभारिक ५२४६  
 वाशिक ५२४६  
 वाशी ५२४६  
 वा ४६४६ ५२४४  
 वाक ५२४७

बाका ५२४  
 बाकुची १२७  
 बाकश्रुतिवर्जित १२१४  
 बाकप्रपञ्च ५५१६  
 बाकप्रयोग ५७५  
 बाक्य ४ ६ ३१३२ ४६ ३७४  
 ५२४  
 बाक्यपूरण ६१४ ३ ५  
 बाक्यारम्भ ५६  
 बाक्योपक्रम ६५  
 बागर ५२४  
 बागलङ्कारण १ ६  
 बागलङ्कृति २६५३  
 बागासीदत्त ५२५  
 बागुर ५२५२  
 बागुरा ३२५४ ५५ ५२५१  
 बागुलि (बागुगुलि) ३ ६  
 बागीमा ५२५  
 बागीश्वर ५२५  
 बागीश्वरा ५२५१  
 बागीश्वरी ५२५११  
 बाग्वरिद्र ५२५३  
 बागुष्ट ५२५२  
 बाग्वेवता ५६४  
 बाग्वेवी ३१४ ५२५ ६३४२  
 बाग्विन् ३ ६६ ४६५ ७२ ५ १७  
 ५२५३  
 बाग्य ५२५३  
 बाग्यत ५२५६  
 बाग्वज्ज ४६  
 बाग्विकल १३५२  
 बाग्यत् ५२५४  
 बाग्वनय ५२५४  
 बाग्वनयी ५२५४  
 बाग्वनय ४४२७ ५२५६

बाघ ५२५६  
 बाघक ५२५  
 बाघनक ५२५  
 बाघस्पर्ति १६ १  
 बाघाल ६६  
 बाघाला ५ ५  
 बाघिक ५२५  
 बाघ् २ १ ६४६ ६६ ६६ १ ६४  
 २ ३ २२६२ २५५६ २ ५ २ १  
 ३ ५६ ३ ६ ४२ ४४ ६ ५१ ३  
 ५२ ५ ६१ ५ ६५ ४ ६६६२  
 ६ ६२  
 बाघ्य ४६५ ५२५६  
 बाज ५२६ ६१  
 बाजपय ५२६१  
 बाजवत ५२६४  
 बाजसति ५२६२  
 बाजसनय ५२६३  
 बाजि ५२६३  
 बाजिका ५ ५५  
 बाजिगतिमद ३४  
 बाजिताकनी १२२२  
 बाजिन् ५२६४ ६५  
 बाजिम ५२६५  
 बाजिनी ५२६६  
 बाजिशाला ४१  
 बाजितबन्धिन् ५२६५  
 बाजुका ६ २१ १ ४७२७ ६३२६  
 बाजुस्त ४१२३ ५२६६  
 बाढ ६ ५२६७  
 बाढी ५२६७  
 बाढय ५२७  
 बाढया ५२६६  
 बाढय ५२४६७ ७१  
 बाढबागि २३५४

वाङ्मय ५२७२  
 वाण ६ १ २ ५२ ३  
 वाणमव ६६१  
 वाणमल ५२७४  
 वाणा ५२ ४  
 वाणाङ्गमिद् १३६  
 वाणासुर ४६६  
 वाणि ३ ६ ५२ ५  
 वाणिज ५२७  
 वाणिजक २४ १  
 वाणिज्यक ३ १  
 वाणिनी ५२ ४  
 वाणी ३६ १ ५२ ५  
 वात १६१ २११ ५१३ १५२१ २१७२  
 २ ७ ३ ६७ ३२४ ३ २ ३ ४२  
 ६ ५२ ५४२६ ६ १

वातकेलि ५२  
 वातखडा ५२७६  
 वातग ५२  
 वातगामिन् ५२ ६  
 वातगम ५२  
 वातघातक ५२ १  
 वातघ्न ५२ १  
 वातघ्नी ५२ १  
 वातज ५२ २  
 वातजामय ३५  
 वातपुत्र ५२ २  
 वातप्रसी ५२ ३  
 वातप्रसीमुग २२५६  
 वातमज ५२ ४  
 वातमुग ५२ ३ ४ ६ ६  
 वातयायिन् ५२ ६  
 वातरायण ५२ ४  
 वातरगत ५२६  
 वातरूष ५२ ६

४७ क

वातरोगिन् ५२६३  
 वातवेग ५२ ६  
 वातव्य ६५१  
 वातव्याधि ५२  
 वातशूय २६६  
 वातशोणित ५२  
 वातसुत ५२ ७  
 वाधित ५४१६  
 वातहृडा ५२ ६  
 वाताह ५२ ६  
 वातावि २ ६६  
 वातापि ५२ ६  
 वाताभाव १५२  
 वातायन ५२६  
 वातायु ५३११  
 वातारि ५२६१  
 वातार्वाजितशाखा ३ १  
 वाति ५२६२ ६३  
 वातिक ३ ६६ ३२४६ ५२६३  
 वातिग ५२६५  
 वातिङ्गनातर २५  
 वातिङ्गिन्ननामन् ६७६१  
 वातुल १५५ ५२६६  
 वातुल १ २१ ४ ६ ५२ ६७  
 वाय ५२६  
 वास्या २४१४ ४२ २ ४२ ४ ४ ५२  
 ३ ६  
 वासक ५२६  
 वास्सीपुत्र ५२६  
 वास्त्य ५२६६  
 वास्यायनमुनि ५ ६५  
 वाव ५२६६ ५६६ ६७ ४  
 वावक ५२४६ ५५४  
 वादन ५३ ५५४  
 वादल ५३

आवत् ५३ १  
 आवहीन २६६१  
 आवाय ५३ १  
 आवाम ५२ ६  
 आविक ५३ १ २  
 आविल २५ ६ ५३ ३  
 आविलग्रहण ५६३  
 आविलनिर्घोष १२७  
 आविलभाण्ड २४  
 आवित् ५५३५  
 आविराज ५३ ४  
 आव्य २४६१ ३२४२ ४ २६ ५२७५  
 ५३ ३ ४  
 बाद्यवण्ड ७३  
 बाद्यनिर्घोष २४६१ ५३ ३  
 बाद्यभाण्ड ५३ ५  
 बाद्यभाष्यातर २५६६  
 बाद्यमव ५ ५ २ २३ २३४१ ४२ २४३६  
 ४६ २५६५ ६११ ६६१६  
 बाद्यमान ५३ ५  
 बाद्यलुङ्ग २ २२  
 बाद्यालक ३ ४  
 बाद्यातर ६४ २ ७  
 बाष्पीणस ५३ ५  
 बान ५२ ५ ५३ ६  
 बानक ५३ ७  
 बानप्रस्थ ६३७ ५ ३२ ५३  
 बानभुस्त १६५२  
 बानर १ ५६ १२ १ १४१२ ६७ १६६७  
 २ ७ ३३२६ ३५७१ ३७६१ ३६५  
 ६५२ ४ ५२ ५ ४१ ५३ ६ ५६ ७  
 ६४१२  
 बानरमव २४२  
 बानरी ५३ ६  
 बानस्पय ५३१

बानाय ५३११  
 बानीर ५३१२  
 बानीरक ५३१२  
 बानीरज ५३१३  
 बानय ५३१३  
 बा ताव ५३१  
 बाताम ६६ ६३१  
 बाति ५ ५६  
 बापना ५३१५  
 बापनी ५३१५  
 बापन ५३१  
 बापित ५३१५  
 बापी ५३१६  
 बाम २ ५३१६ २ ६३६  
 बामक ५३२  
 बामगति २३४६  
 बामदेव ५३२१  
 बामदेवी ५३२२  
 बामन १ २३४७ ३ २ ५१३४  
 ५३२२ ६७६५  
 बामनविग्रह २४३२  
 बामनाभिधकेशबावतार ५५  
 बामनभपत्नी ५४  
 बामप्रतियोगिन् २५६७  
 बामलोचना ५३२३  
 बामहस्त ५३१७  
 बामा ५२७ ५३१  
 बामी ५३१६  
 बायस ६ २ १२३६ १६२ २  
 ३१५५ ४५३६ ५३२४  
 बायसा ४ १२४६  
 बायसी ५३२५  
 बायु १ ६ ७ १६६ ६७ ६६ १ ४६  
 २१७२ २२ १ ५६ २३१ ६ ३१७५  
 ३२२५ २७ ३३६१ ३६ २ ४ ४५

२१ १६ ४३६६ ४५१५ १  
 ५१ ५ ५२१४ ३२४ ७-६२ ५५३२  
 ५६३२ ५७३ ५६ ३ ६ २ ६१  
 ६२ ६२३६ ४ ६३ ३ ६५७  
 ६ १६

वायुविम्वज ३५१६

वायुफल ५३२६

वायुभव ३ १ ६३ २

वायुमाल ३७१

वायुस्कंधान्तर २६६

वाय्वन्तर २२ १

वार ५३२६

वारक ५२ ५३२

वारकीर ५३२

वारङ्ग ५३२६

वारण ३६ ६७६ १ १ ३२ ६ ५३३  
 ६२२

वारणा ५३३

वारनारी १३७२

वारबाण ६७३ ५३३१

वाराणसी १३४५

वाराह ५३३२

वाराही ६६ ५३३२ ५५१४

वारि ४ ५६२ १ ७६ २ ६ २३ ३

४५५ ५ ५३ ५२६१ ५३३५ ५६

६ ३६ ७१

वारिकलशी ५३३५

वारिज ५३३६ ६४ ७

वारिह २२ ३३ २५६६ ३ ६५

वारिधानी ५३६

वारिधारा ७६

वारिधि २४४२ ७ ३२ ६ ४ ६

वारिपर्णीतुण ६६

वारिपिण्ड ५३३

वारिबध ६५१४

वारिमन्त्र २ ६५

वारिवाह २ १६ २ १ ६ २२४६

वारिस्त्रोतस् ३ १७

वारी ५३२

वाह ५३३

वाह कातर ३

वावण ५३३६

वावण छत्र ५४५

वावणी १२६२ ३१६ ५३३

वावुह ५३३६

वाव ५३४

वार्ता ४ १ २ ३ १६ ५३४१

वार्ताकी ५३ १ २ ६ २

वार्ताकु ५६६६

वार्ताकियन्तर ६२

वार्ताप्रभव ५५ ६

वार्ताहिर ३६५

वार्ताक ५३४३

वावूर ५३४

वावक ५३४५

वाधि २३६३

वाधुषिक २ ७३ ५३ ६ ६३६४

वाधुषिणत ५३ ६

वावदीर ५३४

वाधिक २५२६ ५३

वाल ५३५

वालक ५३५२

वालधि ५३५१

वालधाय ५३५४

वाल ५१५५

वालिका ५३५३

वाली ५३५१

वालक ५३५६

वालका ५३५६ ६४२४

वालकी ११३६



वा-मीकि १२२ ३७५ ४ ६५  
 वावीर ५३५  
 वाश ५३५६  
 वाशति ५३६  
 वाशयति ५३६  
 वाशा ५३५७ ५६ ६४२  
 वाशि ५३६  
 वाशित ५३५६  
 वाशिता ५३६१  
 वाशी ५३५ ५  
 वाशुर ५३६२  
 वाशुरा ५३६२  
 वाशयति ५३६  
 वाश्व ५३६२ ६३  
 वाश्व ५३६२  
 वाष्प ६३२ ७५  
 वाष्पिकासभवन १३  
 वाष्पिकीषधि २५५३  
 वाष्प्यौषध ३५७१  
 वासतेयी ५३६३  
 वासन ५३६४  
 वासना ६ २ ५३६५  
 वासनीय ५३६६  
 वासत ५३६६  
 वासती ६१ ६७ ५३६  
 वासयितव्यक ५३६६  
 वासयितु ५२१७  
 वासर ५३२ ६ ५६ ४  
 वासव ५५ ३४७५ ३७ २ ५३६  
 वासत् २६३ ६५ ३५६६  
 वासिक ५३६६  
 वासिका ५३६६  
 वासित ५३७  
 वासिता ५३७  
 वासुक ५३७१

वासुकि १३१ ६३४  
 वासुवेव ५३१ १ ६१ २५३३ ४ ३५  
 ५३ १ ६१ ३  
 वासुरा ५३७२  
 वाङ्मोदशा २८६३  
 वास्त य ३ ४  
 वास्तु ७२१ ५ ५४ ५३७२  
 वास्तुक २३३  
 वास्तुवेव ४ १  
 वास्तुवेवभव ३१३५  
 वास्तुवेवविशय ६ ५३  
 वास्तुवेवातर ४५२ ३१६  
 वास्तुभव ३५२३  
 वास्तुक १ ५२२६  
 वाह ५३७३ ४  
 वाहन २ १ ४५६२ ७४ ५१६  
 ५२३६ ५३ ५७६  
 वाहना ५३७६  
 वाहनी ५३७५  
 वाहस ५३  
 वाहिक ५३७६  
 वाहिका ५३७७  
 वाहिनी ३५६६ ५३७६  
 वाहु ४ १६  
 वाहुवा ३ ७  
 वाहुवातु ३ ७  
 वाहुय ५३  
 वाङ्मिकाय ३ २  
 वि ५३ १  
 विकङ्कत १६ ३ ६६५  
 विकङ्कततव १३५६  
 विकङ्कतकल ४ २५  
 विकङ्कताद्यनृषा ४१५३  
 विकस ५३ ३  
 विकटा ५३ ३

विकराल ५३ ३  
 विकसन ५३ ४  
 विकसना ५३  
 विकलाङ्ग २१६ ३५६३  
 विक-प १ ५ १ १२ २६३६  
 ३ ४ ५३३ ५२ ४ ५३ ५  
 विकसन ६६१  
 विकसित ३ ६१ ३५२६ ३ १३ ६६१  
 विकसुक ५३ ५  
 विकस्वर ५४ १  
 विकार ५३ ६  
 विकाराचित ५३  
 विकाश ५३ ६  
 विकाशन ३ ४  
 विकाशिन ६ ६  
 विकास ७ ३ ३५१२  
 विकासिन् ६ ४३  
 विकीर्णकरण ३७१  
 विकुल ५३  
 विकृत ११२३ ५३  
 विकृतगीति २ २  
 विकृतस्वर ५५२२  
 विकृताक्षक १२५५  
 विकृति १६१ ५३३१ ५ ६  
 विक्रम ३१६१ ६२ ३६६२ ५३६  
 विक्रय ३१ ६  
 विक्रयशाकादि ३१ ५  
 विक्रात २६२५  
 विकलव ५५३२  
 विविलन ५३६  
 विक्षिप्ततुणस-वय ६६५४  
 विक्षप ११ २ ५५५  
 विक्षयाति २३६, ३१६३  
 विगत ५३६१ ५५१६  
 विगतप्रह ५३६४

विगतधमक ५४२५  
 विगतप्रिय ५४४५  
 विगताप ५ ४४  
 विगता जन १३  
 विगति ५५४२  
 विगहित ५६३  
 विगह्य ३ ६६  
 विगीत २२२  
 विगढ ५३६१  
 विघ्न ५३६२  
 विघ्नह ५३६३  
 विघ्न १ २ १५  
 विघ्नातिन ५३६४  
 विघ्न १७ ५४३३ ५५२६ ५७६३  
 विघ्नकारित ५३६४  
 वि ननायक ६  
 विघ्नराज ३१६ ४ ३३  
 विचकिल ५३६५  
 विचक्षण ३ ६४ ५३६५  
 विचार १ ५ २६ ६ ५४११ ५६५  
 ६२४  
 विचारण ४४ ६ ५  
 विचारित ५४११ ३  
 विचिकित्सन ४ ६३  
 विचिकित्सा ५३६६  
 विचष्टित २३१६  
 विच्छित्ति ३६३५ ५३६६  
 विच्छिन्न ४ ४५ ७ ५३६  
 विच्छेद ४७२४ ५३६६  
 विजन २६ ४६७४ ५३ ६  
 विजमन ५३६  
 विजय  
 विजय २२३५ ५३६६  
 विजया ५  
 विजिगीषा २६६

विजिज्ञासा ५४  
 विजु भण ५४ १  
 विजु भित ५४ १  
 विज्ञ ३६ ४१ ३  
 विज्ञात ३१ ३६४  
 विज्ञान १ ५३ १ ५ २ २  
 विट ६७५ २६३१ ३२२३ ४ १६ ५४ २  
 विटकाता ५४ ३  
 विटङ्क ५४ ३  
 विटप ३२२३ ३६ ५४ ४ ६५५६  
 वि पति ५४ ४  
 विवशाव ५४६५  
 विटसारिका १४२  
 वि ५ ६७  
 विडङ्क २६२ १६२६ २३६६ ३३१३  
 ३६५ ६६ ५ ५४ ५ ५६७४  
 विडङ्काल्पयोग ४६६  
 विडम्ब ५४१५  
 विडम्बल ४५३ ५५३१  
 विडाल्पलवण २ ४२ ३२३  
 विडाल २ ५४ ३१११ ३३२६ ४३७५  
 ५ ५ ५ १ ५६७३  
 विडङ्क ५२६१  
 विटङ्का ५४ ६  
 विटत ३६३५  
 विटथ १  
 विटक ४६६ ७ ६ १३६४ २४ ३ ५२४४  
 ५४  
 विटवि ५६५  
 विटान ५  
 विटानक २४१२  
 विटुन ५४ ६  
 विटुनक ५४१  
 विट २७३ ३६ ६७ ३२५ ५३५२  
 ५४११

वित्तपाल ११३  
 वित्तसमुत्सग ५ ५  
 वित्ति ५४११  
 वित्तसवाव ५ ५  
 विवश ६५  
 विवगध ११६१ २५६ २ ४१ २६१  
 ६३४  
 विवगधा ५२ ४  
 विवण्ड ३३ ५४१२  
 विवत् ५४२४  
 विवथ ५४१३  
 विवल १४ ६ २६ ६  
 विवला २६  
 विवा ५४११  
 विवार ५४१४ ६५४६  
 विवारण ४ ४७ ५४१५  
 विवारणा ५४१५  
 विवारिका ५४१६  
 विवारित ३६६५ ४ ६  
 विवारी ४६६ ७ १६७२ ५४१४  
 ५६२  
 विवारीकाश ६४  
 विवारीकाव ५५६६  
 विवारीतकामवज ५६२६  
 विवित ५४१६ ६४११  
 विवुर ५४१७ २४  
 विवुल ५४१७  
 विवुर ४ ७  
 विवुषक ५१५ १७ १५६६ ३६४६ ५४१  
 विवह ५४१ १६  
 विवहराज ५७ ५  
 विव् ५४१२  
 विव ५४१६  
 विवपणी ३२४७  
 विवमान ६२६६

विद्या २२३ ५४२ ५६६  
 विद्याघर १ ६४ २ ७  
 विद्याघरात्तर ३५२  
 विद्याघरेश्वर २ ३  
 विद्यातर ६५६३  
 विद्यत ६२ १ ६४ १६ १ ५५,  
 २ ६३ २१३३ २२४६ २६५५ ३ ३७  
 ६ ३ ५ २२ ५५३६ ५ १६  
 ६१ ६३ ६५३१ ५५  
 विद्युवध ४ ६  
 विद्युद्विशेष ६५३१  
 विद्युत २१४ ५ २३  
 विद्युत २ ४४  
 विद्युतवध ६५ ६  
 विद्युत ५४२३ ६५  
 विद्युति ५ २३  
 विद्युत ३७१६ ६ ४ १२ ५४२४  
 विद्युतलता ६४ ५  
 विद्युत लीषधि २ ५६  
 विद्युतव ली १ ७७  
 विद्युत ३४ ६ १२२१ २ २२ ३१  
 १ ४१७४ ४६४ ५ २४४५ ५६६५  
 विद्युत् ४२६२  
 विद्युष्ट १५३२  
 विद्य ५४२६  
 विद्यमन ५४२५  
 विद्यवा ६२ ४६३७ ५४६३ ५६१  
 विद्या ५४२६  
 विद्यात ३६२ ५४२  
 विद्यात ४१ ५२७ ५ २ २ ५७६१  
 विधि १२ २५५१ ३१५ ६ ३६ ६  
 ५ ५ ५४२६ २७ २ ५६६५  
 विधिज्ञा ३ ६  
 विधिविषय ३६४३  
 विध २ २५५१ ५ २६

विद्यत ५ ३ ५६ ५  
 विद्यत ३१२ ५४३  
 विद्यत ५ ३१  
 विद्यता ५ ३२  
 विनय ५६  
 विनया ५४३२  
 विनयावित ५४३  
 विनयामल्लण ६६६  
 विनयधर १५१  
 विनायक ५४३३  
 विनायकतिथि २ ५  
 विनाथ १६६ ७३ २६२  
 विनाश १ ३१६४ ४ ५ ३३  
 विनिकीण ३६१  
 विनिग्रह ४६ ६१४ २ ६६ २ ६४  
 ५३ १  
 विनिपात ५ ३३ ६५५१  
 विनिमय ३१ २  
 विनिमोग ५३ २  
 विनीत १५ ५४३४  
 विनत ५४३५  
 विदु १६६५ ५४३६  
 विदुतन्त्र ५४  
 विदुरेखकपक्षिन् ५५२१  
 विध्यसमुद्रमतसरिवमिद ३५१६  
 विद्या ५४३  
 विज्ञ ५४३  
 वि-यस्त ५ १  
 वि-यास ५७ १  
 विपल ५४३  
 विपल्वी ५४३६  
 विपणि ६२२ ५ ४  
 विपत १३५ ५ ६ ६४  
 विपतन ४  
 विपति ५४४

विपद्गत ५४४१  
 विपन्न ५४४१  
 विपरीत १ ६४  
 विषय १६१ ३६ ५७५६  
 विषयस्त ५७५  
 विपाक ५४४१  
 विपाकिन् ५४४२  
 विपाकवत् ५४ २  
 विपिन १२६४ २३४३ ५४४२  
 विपुल ७५३ २ १ ४ २७ ५४४३  
 विप्र ३६ ४१ ११ ३६३ ६३  
 १ ३ १६२३ २ ३६ २२२७ ३ ३  
 ३६१५ १६ २४ ४ ७५ ४४६२ ४५४३  
 ६ ४६७२ ५ ६४ ५६५२ ६१ ७  
 ६५२  
 विप्रकृत २६४७  
 विप्रज्वीमुत २७५  
 विप्रतीसार ५४४३  
 विप्रपराजकीज ६४४३  
 विप्रप्रिय २५७६  
 विप्रभाषण ५४४४  
 विप्रलघ २६४ ४६  
 विप्रलम्भ ५४४४  
 विप्रलाप ५४४४  
 विप्रवश्याज २६२२  
 विप्राक्षत्रियजात ६४६५  
 विप्राचण्डालज ६१ ७  
 विप्रावैदेहज २२ ५  
 विप्राशूद्रसन्मव ६११६  
 विप्रिय ५४४५  
 विप्रय ३ ५  
 विप्रोडक्षत्रियासव २६६  
 विप्रोडक्षयाज २६६  
 विप्रोडशूद्रासुत ३२ ४  
 विप्रोडवल्लीसुत ३ ७

विप्रय बरठमुत ६१  
 विप्रय ५ २ ५५  
 विबध ४५  
 विमक्त ५ ६  
 विमक्तध्यपिज्ञादिप्रविण २६२  
 विमक्ति ५४ ६  
 विमजन ५ ३  
 विमज ६ २ ५४४७  
 विभाकर ५४४  
 विभाग ७३४ ५४४६  
 विभागहेतुमापार ५ ४  
 विभाजन ५४४  
 विभाजना ५४४  
 विभाव ५४४६  
 विभावती ५४४६  
 विभावना ५४५  
 विभावरी ५४५  
 विभावसु ५४५१  
 विभीतक १२ २४ ३  
 विभीतकतव २४ ५  
 विभीतकफल २४ ५  
 विभीतकमहीकृ २४७३  
 विभीषण ५४५२  
 विभु ५४५२  
 विभूति ४७४५ ५४५३  
 विभषण ४ ६४  
 विभ्रम ४५६ ५४५४  
 विमत्तव ५७१३  
 विमसापत्य ५७१३  
 विमत्रण २१४२  
 विमल २६ ४  
 विमला ५४५६  
 विमान ५४५६  
 विनीक्षाभिमुख्य ३१६  
 विन्म ३४६१

विन्वालयकृकलास ३६२१  
 विन्विषार २३  
 विन-धर १ ६४  
 विनय २६४२  
 विनयष्टिक ५४१२  
 विनय १६ ३१२ ४६३६  
 विनयोजन ४ ६  
 विनयोजित ४ ६६  
 विनजा ५४५  
 विनज्जम-स्यवधनय-त्र ३ १  
 विनतस्वाप ३६६  
 विनतिप्रा तवत ३२ ५  
 विनल २३ २ २ ११  
 विनलयवाग ३५ ६  
 विनला ३५ ६ ५४५  
 विनस १४ १  
 विनसाधयरस २ ४३  
 विनह ४ ५४ ७  
 विनहित १ २६  
 विनराग ५४५६  
 विनरागिन ४५ २  
 विनराज ५ ५६  
 विनरा सुत ७१  
 विनराम ५ ३  
 विनराव ७५५  
 विनरि-च ५ ४१ ५१६ ६ ५ ६  
 ३३ ४४५ ३६१ ५४६ ६ ६३  
 ५ ३५ ६२ ६६३३ ४ ६७२  
 विनरिञ्चि १ ६४ ५ ६  
 विनरु ५४४१ ५२२२  
 विनरुदिश ३४३५  
 विनरु ५४६१  
 विनरुपाङ्ग ५७४४  
 विनरेक ४ ६५ ६५४२  
 विनरोचन ५४६१

विनरोध २ ५ ३ ७१ ६३ ६  
 विनरोधिन् ५ ६२  
 विनरोधोवि २१६५ ५  
 विनर ३६५ ६३१ १  
 विनरगन ५४६२  
 विनरग १६ ६ ५४६३  
 विनरि-वत ५ ६३  
 वि-विनताख्यनुस्य २३६६  
 विनलास ४ २६ ३ ६१ ६ ६  
 विनलासवत् ४ २६  
 वि-नसश-व ५४६४  
 विनलासिन ५ ६५  
 विनलीन २७ ४ ५ २३ ६५  
 विनलठन ५६ ४  
 विनलखन ४६ ६ ४ ६ ६ ५६  
 विनलप ५४६६  
 विनलपन १४१६ २७३६ ४ ३६ ५१२२  
 २६ ५४६६  
 विनलपनी ५ ६  
 विनलपी ५४६६  
 विनल या ५४६७  
 विनलशाय १६३१  
 विनलोचन २३३२  
 विनलोप २३  
 विनलोम ५४६  
 विनलोमी ५४६  
 विनवसित ५४६६  
 विनवस ५ ६६ ५५६२  
 विनवर ३ १६६ २५६३ ३२५४ ४६४  
 ६११  
 विनवरणरलोक १३  
 विनवस ५४  
 विनवस ५४७  
 विनवसवत ५४  
 विनवसवती ५४

विवाह ४ ४ ५४५१  
 विवाहपद्धतिगत ६६ ४  
 विवादिन् २६४  
 विवास ५ ७  
 विवासन ३ १६  
 विवाह ७७६ ६ २२१४ ३२४६  
 विवाहभव २७१५ ३ ५६ ४६  
 विवाहसूत्र १६१२  
 विवाहायोग्यकयाभव ६२४३  
 विविक्त ५४ २  
 विवृता ५४ १  
 विवृताला ५४७४  
 विवृद्ध २३१६  
 विवेक ३१६६ ५ ४  
 विवट ५६३४  
 विश २७५६ ५  
 विशव ७ ६ २४२६ ५४७६ ६ ६  
 विशरण ३ १ १३ ६  
 विशाल्या ३७ १३३ ५४ ७  
 विशासन ५४  
 विशाख ३४६  
 विशाखा ४५  
 विशाखानक्षत्र ४ ४  
 विशाखासमय ४७ ४  
 विशाखिकासनदण्डभव १७३७  
 विशारद ५४  
 विशाल ११२३ ४२ ३ ५२४६  
 विशालत्व ३१ ६  
 विशाला ५४  
 विशालानामन् ६१६  
 विशालाल ५४ १  
 विशिख १३५४ ५४ २  
 विशिखा ५४ ३  
 विशिष्टपद ३ ६  
 विशीर्ण २३४१ ६२

विशीणकुसुमावि ३६ ६  
 विशुद्ध ६१३  
 विशुद्धलक्षण ५८ ३  
 विशुद्धल ६३  
 विशालिभ ५ ४  
 विशाय १६६ १६६६ ६ ४ ५४ ५  
 विशायक ५ ५  
 विशायत्व ५ २५  
 विशाययितु ५ ६  
 विशायर्त्त ६ ७६  
 विशाष्ट ५४ ६  
 विश्वध ५४ ६  
 विश्वम् ६१४  
 विश्रुत ७४  
 विश्रुत २१४ ५४३१  
 विश्रुतवाचि २१२  
 विश्रुतकमन् १३ ६ ५४ ६  
 विश्रुतगोप्ता ५४ ६  
 विश्रुतपत्तन् ५४६  
 विश्रुतभवज ११६२  
 विश्रुतमनस् ५७१३  
 विश्रुतम्भर ५४६  
 विश्रुतम्भरा ६३५ ५४६  
 विश्रुतकप ५४६१  
 विश्रुतकपा ५४६२  
 विश्रुतसित ५४२१  
 विश्रुतस्त ५४ ६  
 विश्रुतस्ता ५४६१  
 विश्रुता ५४  
 विश्रुतात्मन् ५४६३  
 विश्रुतामित्रदृष्टा ६४१५  
 विश्रुतामित्रसुत ६ ३  
 विश्रुतावसु ३६ ७ ५४६४  
 विश्रुतास ३ २५ ३६६६ ७१ ५४२१  
 विश्रुते ५४ ८

विश्वदेव ५४६४

विश्वदेवातर ३४१४ २

विष ६६ १६६३ १ ५७ २१६  
 २ ५ ३६२ ४ ६ ४१५ ५ ४६  
 ६६ ६२५

विषम २ १

विषघातिन ५४६५

विषहनी ५४६६

विषघर ५४६

विषमक्षक ५५ १

विषमव ६५ २६३ ४४३

विषमकाव्यालङ्कारमदक ६३५२

विषमलोचन ६ १

विषमोमतवशन १ २

विषय ४ ३४६ १२ ४ २ ३ ४ ३२  
 ४ १३ ५४६७

विषयभोग १६१२

विषयावित ५४३

विषयासक्त ५४६६

विषयिन् ५४६

विषविद्या २२६

विषवद्य २ ४ २ ४७ ६ ५२६३

विषा ३२६ ५४६६

विषाक्तेष २६३

विषाण ६१२१ ६६ ६

विषाणी ५५

विषाव ३११ ६३६७६ ५५ १ ६१ २

विषायिन ५५ १

विषारि ५४६६

विषवत ५५ २

विषवादि ३२१

विषजी ५५१३

विषौषध ६१२२

विष्कम्भ ५५ ३

विष्कम्भपवत ६४६४

विष्किर ५५ ४

विष्कुति ६

विष्प ६ ६ ५५ ५ ५ ३

विष्पम्भ ११३ ५५ ६

विष्पट ५५

विष्पि ५५

विष्ठा ४१३ १२ ६ २५६२ ३४६१

विष्णु ५ १५ १६ ६७ ६६ ७३ ७

१६६ ३२५ ४२३ ६ ५ २३ ६ ३१

३ ३ ६४६ १ १ १३२१ १४४५

६६, १५४ ७ १६६ २ २२५

६६ २४३२ २५२ २ ४ २ ३

४३ ५२ २६३२ ३१५७ ३२२ २

३३२२ ३४१३ ३ ४२ ६ ६ ७३ ४

३५ १ ३ ५४ ४ १६ ६ ४ १

६१३४ ४ ४ १५ ६

४३ ५ ५ ६ ६६ ५१ १४१ ५२१४

२४ ६२ ५३ १ ५४२६ ६ ६६१

५५ ५६५२ ५७ ५७३४ ६१

५ ३५ ५५ ५६६५ ६ ३ ६२१ ७

६३३६ ६४ ६ ६६४५ ६६ ६ १

६ ६

विष्णुक ६७२४

विष्णुकाता २ २६ २३२ ४७ ६

५५१

विष्णुगुप्त ५५१

विष्णुषोटक ३५१६

विष्णुचक्र ६४५७

विष्णुचाप ५६५५

विष्णुतिथि २ ५३

विष्णुदेव ५७३४

विष्णु नवशक्तिमव ६४६

विष्णुनामन ६७२२

विष्णुपत्र ५५११

विष्णुपदी ५५११



विष्णुभ ६१५६  
 विष्णुभक्त ५७३४  
 विष्णुभक्तद्विजातर ३४  
 विष्णुभयुक्तकालमात्र ६१५६  
 विष्णुभाव २३५  
 विष्णुयोगिन् ५ ३४  
 विष्णु लोक ५६  
 विष्णुदास १  
 विष्णुशक्तिभद २६७  
 विष्णुशक्त्यतर २३ ३  
 विष्णुशङ्ख ३२४  
 विष्णुस्वरूप  
 विष्णुहृतवत्य ६६६  
 विष्ण्वर्ण २५५६  
 विष्ण्वतार ४३४ ६६६  
 विष्ण्वतारान्तर २ ५  
 विष्ण्वायुध १५७२  
 विप्रध ५४३७  
 विष्ण्वक्त्र ५७१२ १३  
 विष्ण्वक्त्रप्रिया ५५१४  
 विष्ण्वक्त्रेनप्रियाप्रसन्न ३ २१  
 विष्ण्वक्त्रेनप्रियासन्नभवन ३ २१  
 विष्ण्वक्त्रना ५५१३  
 विष्ण्व ५५१२  
 विस ४४५६ ५ ३  
 विसकण्ठी ३ ४६  
 विसतन्तु २ ७६  
 विसर ५५१४  
 विसरण ३ २६  
 विसर्ग २५६ १७२४ ५५१५  
 विसर्जनीय ५५१५  
 विसृष्ट ४४१२  
 विसृत ५५१६  
 विसृति ३६७६  
 विस्तर ५५१६

विस्तार ५११ २ १ २ ७२ २६१६  
 ३६३५ ५३६३ ४ ५५ ४  
 १६ १७ ५ ७  
 विस्तारक ३ ६  
 विस्तारण ३६ ६  
 विस्तीर्ण ३५  
 विस्तृत ३६ २१३१ २३६ ३ ३  
 ३ ५६ ५ ३  
 विस्तृति ३६ ६ ५५१७ ६२३२  
 विस्पष्ट ३ ६७ ६६१  
 विस्फुलिङ्ग ५५१७  
 विस्फोट ३३३४ ५५१ ६६१  
 विस्मय ६३६ २३५ २६२५ ३२३२  
 ५ ५५१ ३५  
 विस्मित ३७४ ५५२ ६ १  
 विस्मापन ५५१६  
 विस्मृत १७३  
 विस्मर ५५२  
 विस्मयि ५५२  
 विस्मय ३५४४  
 विस्मय ५५२१  
 विस्मयघातिन ४५ ४  
 विस्मय २ ४ ३६३ ५५२१  
 विस्मा ५५२२  
 विस्वर ५५२२  
 विहग ६ २११५ २७६ ५१३२  
 ५५२३ २ २६  
 विहगास्तर १११३  
 विहङ्ग ५५२३  
 विहङ्गक ५५२४  
 विहङ्गम २३६६ ५५२४  
 विहङ्गमा ५५२५  
 विहङ्गाण्ड ६  
 विहङ्गाविपरीकोश ६  
 विहङ्गिका ५५२४ २५

विहण ५५२६  
 विहनन ५५२६  
 विह या ५५२  
 विहस्त ५५२  
 विहा ५५२  
 विहायस् २ ६१ २ ३२ ६  
 विहायस ५५२६  
 विहार ३११ ५५३  
 विहाराद्यवकाशक २६६६  
 विहित १२ ३६३  
 विहीन ५२५६  
 विहेठन ५५३१  
 विह्वल ५५३२  
 वीक ५५३२ ३३  
 वीका ५५३२  
 वीकाश ५५३३  
 वीक्ष ५५३  
 वीक्षण ५५३  
 वीक्षा २६ ३ ५५३४  
 वीक्षित २६६१  
 वीक्षिन् २६  
 वीक्ष्य ५५३५  
 वीक्ष्वा ५५३५  
 वीचि २ २ ५५३६  
 वीज ३१ ५  
 वीजन ५५३७ ५७४५  
 वीटक ५५३  
 वीकि ५५३  
 वीळ ५५३६  
 वीणा ६६ १३६३ २ ६ ५६ २ ४६  
 ३१ ४ ३६ ४६५६ ५२ ३ ५४६६  
 ५५३६ ४ ५६६३ ६४ १ ६६६  
 वीणागुण २३७६  
 वीणाङ्ग ३७३६  
 वीणातत्री २ २

वीणातत्रीताडन २ ६  
 वीणादण्ड ३ १६  
 वीणादिवाद्य २३६  
 वीणाध्वनि ६६६  
 वीणानिब घन १  
 वीणातर २ २१ २६ ३ ५  
 वीणामव ६ ४ २५२१ ३३५  
 वीणावाव ५५  
 वीणावावनसाधन १ ३३  
 वीतसक ५  
 वीतसनामपक्षिबधन २३  
 वीत ५३६१ ५५ १  
 वीततनु ५४१  
 वीतमति ५४४६  
 वीतभूति ५ ५  
 वीतधम ५४५५  
 वीतराग ५४५६ ५५४२  
 वीततक ५४  
 वीतशोक ५५ ३  
 वीतशोका ४३ ५५ ३  
 वीतहृष्य ५५ ३  
 वीति ५५४४  
 वीतिहोत्र ५५४  
 वीथी ६२३ १ ११ ५५ ५  
 वीघ्न ५५४५  
 वीप्सा १४१ १ ६ ३१६ ३६३ ५३१  
 वीमसनामरस ५३  
 वीर १ २७ ४३१३ ५५४६ ४६ ५ ६११६  
 वीरकीडा ५५५४  
 वीरजग ५५५५  
 वीरण ५५५१ ५३  
 वीरणमूल ६ २५  
 वीरतर ५५५१  
 वीरतक ५५५२  
 वीरघर ५५५३

वीरभद्र ५५५३  
 वीरभद्रनक १४  
 वीरयुक्त ५५५५  
 वीरललित ५५५४  
 वीरलोक ५५५५  
 वीरवत् ५५५५  
 वीरवती ५५५६  
 वीरवय ५५६  
 वीरवृक्ष ५५५६  
 वीरश्रृङ्ग ५५५१  
 वीरसेन ५५५७  
 वीरसेनधातिनी ६६७५  
 वीरहनु ५५५  
 वीरा ५५४ ५  
 वीरारि ५५५  
 वीरावास ५५५५  
 वीरागसन ५५५  
 वीरिणी ५५५६  
 वीरवत्तर २१ ५ ३४२७  
 वीरवृ ६५३ ३६३५ ३ ३४  
 वीरेन्द्र ५५६  
 वीरे द्वी ५५६ ६१  
 वीरोष्म ५५६ ६१  
 वीय ३६३१ ४६४७ ५५६१ ६५२७  
 वीयवत् ५५५५  
 वीर्या ५५६१  
 वीर्य ५४६६ ५५६२  
 वीश ५५६२  
 वृक ६ १३३३ १५ ३ ५ १५ ५२४  
 ५५६३ ६४ ६१७३ ६४१२ ६७७५ ६  
 वृकघण ५५६६  
 वृकल ५५६  
 वृकला ५५६७  
 वृकवाला ५५६  
 वृका ५५६६

वकी ५५६६  
 वकीवर ३५ ४ ५५६  
 ववण २१६३  
 वृक्ष ६ ६ ११२ १२३१ १३ ३  
 ६ १ १२ १ ६ २२ २ ६६  
 ६ ३ ५१ ३ १६ ६२ ६६ ३३१  
 ३ १५ ५ ३६ ५२४ ५ २४ ५५ ७  
 ६ २ २६ ६६२५  
 वक्षज २४ २  
 वृक्षनिर्घात ६१३६  
 वृक्षपत्र २१ ६ ३ ३  
 वृक्षपत्रादिषु ६२ १  
 वृक्षफल ३३५१  
 वृक्षमिद २२६७  
 वृक्षमवह ४ २ ६३ ३३५१ ६ ३४  
 ३५३३ ३ ५६ ६४३१ ३६  
 वृक्षमात्र १३ ३ २७४५ ६ २१  
 वृक्षमूल ३२६  
 वृक्षशाखा २५७१  
 वृक्षसूचि १ ६  
 वृक्षाय ६  
 वृक्षाक्षकुर १५६४  
 वृक्षाक्षि ४४४७  
 वृक्षावन ५५६६  
 वृक्षावनी ५५६६  
 वृक्षाविकल ६३६५  
 वृक्षाविसौरभ ३४६  
 वृक्षाम्लाक्षफल २४४७  
 वृक्षावास ५५७  
 वृक्षोद्य ५५७  
 वृक्षित ५५७१  
 वृत्त ५१२४ ५५७१ ७३  
 वृत्ति १ २ ५२६६ ५५७२ ६ ५ ६५६७  
 वृत्त २ ५ ५५७३  
 वृत्तक ५५७५

वृत्तघाप ६ २६  
 वृत्तपर्णी ५५ ६  
 वृत्तपु ५५  
 वृत्तफल ५५७  
 वृत्तभङ्ग ५५  
 वृत्तभव ४६ २ १६  
 वृत्तमलिका ५५ ६  
 वृत्तवियसन ३ ४  
 वृत्ता ५५  
 वृत्तात ५५ ६  
 वृत्ताघ ५५  
 वृत्ति १५ ३ ४ ६ ५५ ३  
 वृत्त ५५ ३  
 वृत्ताजात ५५  
 वृत्त २३१ २६१२ २ ७ ५१६ ५५ ५  
 वृत्तवारक ५५ ६  
 वृत्तघप ५५  
 वृत्तपति ३११६  
 वृत्तपनी ३११६  
 वृत्तवरया ६६  
 वृत्तश्वत् ५५  
 वृत्ता ३५२  
 वृत्तावस्कविन् ५५  
 वृद्धि ५ २५४ ३५ ६ ५५ ६  
 वृद्धिक्रिया ५१३६  
 वृद्धिजीविन् १५ २  
 वृद्धिनामोषध ३ ७१  
 वृद्धिमण ५६२ ३५१  
 वृद्धिमत् २२  
 वृद्धिसन्मण ६१ १  
 वृद्धिसाधन ५१  
 वृद्धपाणीविन् २२६६  
 वृद्धपोषध ४५ ७  
 वृध ५५६१  
 वृधसान ५५६१

वृधसान् ५५६२  
 वृत्त २ ५५६३ ६  
 वृत्ताक ६ ५५ ६  
 वृत्तात ५५६५  
 वृत्ती ५५६४  
 वृत्त १३६ १ २३ १६ २ १६ ६ २२ ४  
 ३५३५ ५११४ ५३६२ ५५६५ ६६ ६५७३  
 वृत्ता ५५६६ ६६  
 वृत्ताक ६५२  
 वृत्तारक ५५६  
 वृत्तारका ५५६  
 वृत्तारिका ५५६  
 वृत्तावन ५५६  
 वृत्तावनी ५५६६  
 वृत्तावनश्वर ५५६६  
 वृत्तावनश्वरी ५५६६  
 वृत्ता ५६  
 वृत्ता ५६  
 वृत्तिका ३ १ ५ २ ३ ३५  
 ५५१२ ५६ १  
 वृत्तिकापत्त १३३  
 वृत्तिकापुच्छस्थकण्टक ३६६  
 वृत्तिका ५६ २  
 वृत्तिकाकाल ५६ ४  
 वृत्तिकाकालि ५ ६६  
 वृत्तिकाकाली १११ १३४ ५६ ३  
 वृत्तिकायोषधि ६३४  
 वृत्तिकी ५६ २  
 वृत्त १३१ ५५ ४६६६ ५२३ २  
 ५५१२ ५६ ४ ५६२ ५३ ६५३  
 वृत्त ५६१२  
 वृत्तकमन् ५६१३  
 वृत्त २१३ ४ ३ ५६१३  
 वृत्तश्व ५६१४  
 वृत्तश्वसु ५६१४

वृषदशक ५ ५  
 वृषध्वज ५६१५  
 वृषध्वजा ५६१५  
 वृषपवन ५६१५  
 वषभ ६ ६४ ४६ १ २६ २ ६६  
 ४ ५२३३ ५६१६ १ १६ ५७४  
 ६१२६  
 वृषभध्वज ५६१६  
 वृषभा ५६१  
 वृषसी ५६१  
 वषभौषध ६१२६  
 वृषभौषधि ५  
 वृषल ३१४३ ५६१६  
 वृषलण्डी ५६२  
 वृषलालय १४१२  
 वृषवचत् ५६२  
 वृषस्यन्ती  
 वृषांत ६४५  
 वृषा ५६ ६ ११  
 वृषाकपायी ५६२२  
 वृषाकपि ५६२१ २२  
 वृषाक्राता ६२ ६  
 वृषाङ्ग ५६२३  
 वृषाणक ५६२३  
 वृषी ३२२१ ५६११  
 वृष्टि ३२२ ५१ ६ ५१ ५५ ५६२४  
 ६४६१  
 वृष्टिकृत ५१५३  
 वृष्टिबालु ५६२४  
 वृष्टिवायशुशत ३५३६  
 वृष्टिवाशत ३ ४४  
 वृष्टिरोध ३ ५  
 वृष्टिवहा २६  
 वृष्टिसनि ५६२३  
 वृष्टपम्बु ५१६६

वृणि ५६२५ २६ २  
 वृष्य ५६२ २६  
 व या ५६  
 वसी ५६११  
 वहतीसम्बन्धिन ३ ६६  
 वहसम्बन्धिन  
 वहोणी ४६१  
 वृहस्पति ६२ २५ ५ ६१  
 वक्रट ५६२६ ३  
 वग ५२५५ ५३६६ ३ २४ २५  
 ४५६५ ४६४६ ५२६ ५६३ ३  
 व यवत ५२५५  
 वगवत २२५६ ६१६ ५६३१ ३२  
 वगवती ५६३१  
 वगित ३ ३  
 वगिन् २४ ५६३२  
 वङ्कटपवत १५ १  
 वङ्कटाग्रि ६४१६  
 वजन ५६३३  
 वेटी ५६३  
 वेड ५६३५  
 वेडा ५६३५  
 वण ५६३५ ३  
 वेणा ५६३  
 वेणि ५६३६ ४  
 वेणिका ५६४१  
 वेणिवेधली ५३२६  
 वेणी ३७२ ५६३६  
 वेणु १ ६ ७ ११६५ १३१४ ७६  
 ४४६१ ४५४ ४६५२ ४६४६ ५२४  
 ७५ ५६४१ ५ ३  
 वेणुक २५१३ ५६४२ ६६  
 वेणुका ५६४२ ४३  
 वेणुकार ५६३७  
 वेणुकी ५६४२

वेणुकृत ५६६२  
 वेणुष्वाप १५६३  
 वेणुज ५६४  
 वेणुपत्रिका ५६ ४  
 वेणुपपट ३ ३  
 वेणुपात्रांतर २६३७  
 वेणुकल ५६६३  
 वेणुबीज ५६४४ ४५ ६२  
 वेणुमती ५६ ५  
 वेणुयव ५६४  
 वेणुयवी ५६ ५  
 वेणुवायक ५२४६  
 वेणुविकार ५६६५  
 वेणुसाध ५६६५  
 वेणुसार ३ ६५ ३२४७  
 वेण्वाविवल ३ ३  
 वेतम्ब ५६ ६  
 वेतण्डा ५६ ६  
 वेतन २६६४ ३६५ ५६ ४ ४३ ४४  
 ४४५ ५२३१ ५ २६ ५६ ६ ४  
 वेतनाजीविन ११६१  
 वेतस ३ २ ३२६ ३ ६ ६ ३  
 ४६ ६ ५३१२ ५ १ ५६ ५  
 ६ ३  
 वेतसयेटा ५६६  
 वेतस्वती ५६  
 वेताल ५६६६  
 वेतालमुञ्ज ५  
 वेताला ५६  
 वेताली ५६४  
 वेता ीय ५  
 वेत्तु ५६ ६  
 वेत्त २ १ ५ ४ ५६४६ ४६  
 वेत्तवती ५६४६  
 वेत्तवत् ५६५  
 ४ क

वेत्रिन ५६५  
 वेव ५५३ ६२ २६ ३ ११ ३६१६  
 ५१३ ५६५१ ६ ६ ६१ ६ ६६६  
 ववकत् ५६५२  
 वेवगम ५६५२  
 वेवगर्भा ५६५३  
 वेवघोष ३६१६  
 वेवजप ६६६  
 वेवन २६३ ५६५३  
 वेवना २  
 वेवपति ५६५  
 वेवपाठक ३१ ४  
 वेवमय ५ ५  
 वेवभाग ६२३  
 वववती ५६५५  
 वेववाक्य २१६५  
 वेवविह २ ६  
 वेवव्यासमात ६२७  
 ववशिरस ५६५५  
 वेवशिरोमुनिपती ३३६२  
 ववस ५६५६  
 वेवहीन २६६३  
 ववा ५६५१  
 ववाङ्ग ५६५६  
 वेवामन ५६५  
 वेवाय २२६३  
 ववि ५६५ ६  
 वेदिका ५६५६  
 वेदितव्य ५६६१  
 वेदित ३  
 वेदिन ५५६  
 वेदिनी ५६६  
 वेदी २१ ६ ५६५६  
 वेदीसमूह ३ ३  
 वेदीज्जलबद्धि ३१ ६



वखानससम्बधिन् ५६६

वचिन् २

वजयत् ५५३१

वजयतिक ३११

वजयती २४ ३११३ ५६६१ ६६३६

वडालवृत्ति २७५

वडय ५६६१

वण ५६६२

वैणव ५६६२ ६३ ६५

वणवी ५६६३

वणुक ५६६५ ६६

वतसिक ५ ६

वतरणी ५६६६

वतस ५६६

वताल ५६६६

वतालिक ५

वतालो ५६६६

वतालीय ५

वदम ५ २

वदनी ५ १

वदल ५ ३

वदिक ५ ४

वदिकवशीकारमन्त्र ६ ५

वदुष्य ५ ६४

वदेह ५ ५ ५ ५

ववहनाथ १

वदेहशानकीज ६६ ४

वदेही ५

वद्य १ २१ २३ २ २ २३ ३ ६

५

वद्यपनी ५

वद्या ५

वैद्यी ५७

वद्यवेय १६६४

वैद्यव्य २१७७

वद्य यलक्षणोपत ३११

वद्यान ५

वद्यात्री ५

वद्युत ५ ६

वद्यय ५ १

वनतेय १ ५ ६ ५ १

वनाशिक ५ ११

वय ३५६६

वफ य ६५ २

वध्नाज ५ १२

वधनय ५ १३

वधनस्य १ ३

वद्यश्व ५ १३

वद्याज ५ १

वर २ ५६२१

वरकमन् ५ २

वरवत ५ १

वरशद्धि २६

वराग्य ३ ६ २६ ५ ५६

वराज ५ १५

वरा ५ १५

वरानुद्य १

वरिण ५ १६

वरिन् २१६२ ५ १

वरुपाष्टकवर्गातिमसामन ३५३२

वरोचनि ५ १

वलक्य ५ ५६

ववस्वत ४५३६ ५ १

ववस्वतमनुष्ठुत ६ २

ववस्वती ५७१

ववाहिकप्रतिसरग्रन्थि ३

वशाता ५ १६

वशम्पायन ५ २

वैशास ५ २

वशाख ६ ४ ५ ५ २१



वशाखमास ३५३  
 वशाली ५ २२  
 वशिक ११ ५७२  
 वशविक ५ २५  
 वश्य ३६ ६२ २ ५५ ४ ३  
 वश्यजाति ३६  
 वश्या १ २५  
 वश्याज २६  
 वश्वण १४१३ ४५१ ५ २६  
 वश्वदेव १११ ५ २६ २  
 वश्वदवकनक्षत्र ३६  
 वश्वदेवानि १११  
 वश्वदेवी ५ २  
 वश्वानर ३३ २१ ४ ५ २६ ३  
 वश्वानरपुत्री ३४ ६  
 वश्वानरानल २४  
 वश्वानरी ५ २६  
 वश्वामित्री ५ ३१  
 वश्वयिकी ५ ३१  
 वश्वत ५७३२  
 वश्व ५७३३  
 वश्व ५७३४ ३  
 वश्वी ५७३५  
 वहायस ५ ३  
 वहायसी ५७३६  
 वोढा ५७ १  
 वोढी ५७४१  
 वोढू ५७४  
 वोढी ५७४  
 वोढव्य ५३  
 वोढ ५२३६ ५७४  
 वोढी ५ ४१  
 व्यक्त ५७४२  
 व्यक्तगंधा ५७४३  
 व्यक्ताव्यक्त ६२४४

व्यक्तित १ ५ ३  
 व्यक्तिकर ५  
 व्यग्र ५५२ ५ ४  
 व्यग्र ६३२६  
 व्यग्र ५  
 व्यग्र कथा ३ १६  
 व्यग्र य ५ ६२ ५६  
 व्यग्र १६  
 व्यजन ५५३ १ ४५  
 व्यग्रजक ३  
 य जकाभिनय २५६  
 यजजन १ २५ ६ ५७ ४६ ४७  
 य जनरस ५ ३  
 व्यजना ५७४७  
 व्यतिभय ५ ६  
 व्यतिरेक ५ ४६  
 व्यतिषक्त ५  
 व्यतीकार ५ २५  
 व्यतीपात ५ ५  
 व्यत्यस्त ५ ५  
 व्यथन १७५२ २५१४  
 व्यथा २६६३ ३३६४ ४  
 व्यथावत ५ ५१  
 व्यथि ५७५१  
 व्यथित २४ २  
 व्यथन ५६६४  
 व्यथनार्थ ६७ ६  
 व्यथ्य ५७५१  
 व्यथ्य ५७५२  
 व्यथर ५७५२  
 व्यथरा ५७५३  
 व्यथेश ५७५४  
 व्यथिचारिणी ३३६५  
 व्यथिचारिणी ३३६५  
 व्यथ १६३ २१४ ५७५४

व्यथ २६ १ ५७५५

व्यथन ६४६१

व्यलीक ५ ५६ ५

व्यव छद ५७५

व्यवसाय १६ ६ २२ ५ २४ १ ३१३१  
६२६

व्यवस्था ३ १ ३१ ६ २४३ ५६ २  
६२३२ ६ ५ ६५६६

व्यवस्थापन १२२

व्यवस्थिति २ २१

व्यवहार १२ २६६६ ३१ ६ ५ ५  
५ ५६

व्यवहारप्रयुक्त लक्ष्यभव २ ६६

व्यवहारस्थ ६ ६

व्यवहारानियोजित ३

व्यवहारिका ५ ५६

व्यवहित २६

व्यवय ५ ६

व्यसन १३५ २ ६ ५२ २६ २  
६३ ५४३३ ५ ६

व्यसनात्

व्यस्त ५ ६२

व्याकरण ५७६२ ५६६

व्याकुल २ ३ ३३३३ ५ ६२

व्याकुलश ६३६४

व्याख्यात ४६६

व्याख्यात ५१२६

व्याख्यात्री ६६

व्याख्यान ३ ११ २ ५ ५५ २

व्याधात ५ ६३

व्याघ्र ११६ २ २ २१२६ २४

२५६२ ३ ६ ३५ ७ ३६ १ ३६

४२२४ ६५ ५६ ६२ ५ ३२ ५ ६४

५६५६ ६ ५

व्याघ्रचर्मा छलरथ ५७१४

व्याघ्रनख ५७६५

व्याघ्रनखौषधि ११ ६

व्याघ्रपाद ५७६६

व्याघ्रपुच्छ ५ ६७

व्याघ्राटाव्यपक्षिभव ३६ २

या ग्राटाव्यविहङ्गम ३६५१

व्याघ्रादिश्वोपदमात् ५६६

व्याज १६६ २६६ ५ ६

५ ६

व्याज ५ ६

व्यादीर्घास्त्य ५ ६

व्याध २ २ ३३१ ५६ ५

५ ६६

व्याधालय ३२२

व्याधि ६२ ५ ६ १३५२ १

२३३ २६३२ २ १ २५ २ २३

२६ ३१६६ ७ ४६ २ ५ १६

५६३६ ५ ६६ ६५५५ ६६ २ ३

व्याधिघात ५

व्याधित २६

व्याधिभव ६ ५

व्याधिमाल ४५२

व्या यतर ६३५

व्यापक ६

व्यापनीय ५ २

व्यापार ३ १६ ५७ १

व्यापुत २५ ५ ४ २

व्यापति ५६५

व्याप्त २३६ ३१ ५ ६२ १ ६६१

व्याप्ति ६ ३१६७ ५६

व्याप्तु ५५३

व्याप्य ५ ७२

व्याप्त ५ ३

व्याप्तमान ३ ६१

व्याप्यत ५७७२

-यायाम् ५ ३  
 व्याल ५  
 पालप्राहिन् १६१६  
 पालदण्ड ५ ५  
 व्यालमृग ५ ५  
 व्यालम्ब ५ ६  
 यालायध ५ ६५  
 व्यावत्तक ५ ६  
 -यावत्तन ५१३२  
 -यावृत्ति ४ ५ ५  
 यावृत्तिकृत ५ ६  
 यास १२६ १५ ६ ३३१५ ३  
 ५ ५६६२ ६ २  
 -यासजनक ३१६५  
 -यासवाक्य ५३६३  
 यासशिष्य ५ २  
 व्याससुत ६ ६१  
 -याहति ५ ६३  
 मु-यान ५  
 -युत्पन्न ३ ६  
 व्युषित ५  
 युष्ट ५  
 व्युष्टि ५ ६  
 व्यूढ ५  
 यूह ५ १  
 यूहपाष्णि ३६ ५  
 व्यूहभव २५ १ ३१३  
 -योमचारिन् ५  
 योमन् १३ ६ २७ ६३ २६  
 १५ ६ १६ २ २५३२ ६ २६४५  
 २ ३२ ६७६ ६६, २६ ६ ३२५६  
 ३४६३ २३ ५५११ २६  
 ५६ ५ १ ४ ५६६२ ६ ७२  
 ६१४६ ६२ १ ६ २ ६६६६  
 भीमयान ५४५६

व्योमरेखा ६ १६

योष ६६२ ६५ १५६६ ५ ५

व १ ३

व्रणकारिन् ३३१

श

शसनीय ५ १

शसा ५७६६

शस्य ५ १

श ५ १

शक ५ २

शकट १२ १३६ ५६१ १ २१

२२६५ ३ ४२६६ ५१५१ ५ ५

शकटगम्य ३१ २

शकटाङ्ग ६२४

शकटाबिल ३

शकटोन्मय ५

शक-ध ५ ४

शफाल ५ ४ ५ ६ ३

शकलित १७२

शकली ५ ६

शकल ५ ६

शका ५ ३

शकुटा ५

शकुन २४६ ४ ३१ ५

शकुनयोगिन् ५ ६

शकुनि १ २१ २२६ ४ ५६ ५ ३

५ ६ ६१५५

शकुनियोगिन् ५ ६६

शकुनका २४६

शकु त ५ १

शकुन्ताख्यखग ४ १

शकुल ५ १

शकुला ५ ११

शकुलावली ५ ११

शतपत्र ५ २६  
 शतपत्रक ५ ५१  
 शतपथ ६६  
 शतपदी ५ ३१  
 शतपवन् ५ ३  
 शतपवविशब्धयात् २६३  
 शतपात ५ ३१  
 शतपुष्पा ५  
 शतपुष्पी ३५५ ४६ २  
 शतपुष्प्योषधि १३  
 शतमन्त्र ३ ३  
 शतमान ५ ३२  
 शतमुखी ५ ३३  
 शतमघन ५ ३३  
 शतयोगिन ५६१  
 शतवीर्या ५ ३  
 शतह्लावा ५ ३४  
 शताक्षरछावस् २३  
 शताङ्ग ५ ३५  
 शताङ्गि ५ ३१  
 शतान्न ५ ३५  
 शतावरी ६५२ ६४ २६३३ ३३६१  
 ६३ ६४ ३६७३ ३ ५ ५१ ६ ५२६१  
 ५६२२ २ ५ ३  
 शतावस्त ५ ३६  
 शतावर्त्ता ५ ३६  
 शतोन्मित ५ ३२  
 शत्रि ५ ३६  
 शत्रु २४४ ३२१ ४६५ १५ २२ ५  
 २३ २ २ ६ ३६७३ ३ ४ ४ ७१  
 ४५ ६ ४७१६ ५४६२ ५५ ४ ५६  
 ५७१ ५ २७ ३७ ६५  
 शत्रुघ्न ५ ३७  
 शत्रुसन्ध ३ ६७  
 शत्रुसह ५६२१

शत्रुहन्त ५ ३  
 शवन ५६२१  
 शवसम्बन्धिन ५६२२  
 शत्रि ५ ३  
 शत्रु ५६२२  
 शनि ४५१ १६३६ ३ २ ३६ १  
 ६६ ५७१ ६५६६  
 शनिमत्यमातिथि ३ ६४  
 शनयन ५६ १५६१ १६३७ ३ ३  
 ३६१ ५३६ ५६ ६१ ५  
 शन्तु ५६२२  
 शपथ २४२ ३१ ३६७१ १ ३  
 ५६३१ ६२६६ ६६  
 शपन ५ ३  
 शफ १ ६१ ५ ३६  
 शफर ५ ४  
 शफरी ३ ६ ५ ४१  
 शबर ५१४ ५ ४१ ४२  
 शबरचवन ५६३६  
 शबरभाषा ५६३२  
 शबरी ५ २  
 शबल ११६७ १२११ ५ ४३ ५६ ३  
 ६ १  
 शबलध ५६३४  
 शबलवण ६४ ४  
 शबलवर्णवत् ६४ ४  
 शबली ५ ४३  
 शब ६४४ १२४४ १ ६ २ ३ ४२७५  
 ४ १ ४६३६ ५ ४७ २४ ६२  
 ५२५५ ५३६२ ५ ४४ ६१७६ ६२६५  
 शवन ४ ५ ४६६५  
 शब्दशालक ४६५६  
 शब्दप्राप् ५ ४४  
 शब्दमाल ६५५३  
 शब्दयोगिन ५६३५

शब्दविद् ५६३५  
 शब्दशास्त्र ५ ६२  
 शब्दसाधन ३६१  
 शब्दस्पर्शादि २  
 शब्दित ५२६  
 शब्दोच्चारण ३ ५  
 शम् ५ ४५ ५६३  
 शमथ ५ ५  
 शमन ५ ६  
 शमयितय ५ ५६  
 शमल ५  
 शमवत ५६२५  
 शमित य ५ ५६  
 शमितु ५ ७  
 शमी ४ ६५ ४ ५२ १ ५ ५  
 शमीद्रुम २२३ ६ ६६  
 शमीफल ६२५  
 शमीफल/व्यसलिलौद्भूतव-यत्तर २  
 शमीयोगिन ५६३  
 शमीवृक्ष ३ ६१ ५२४  
 शमकीर्तनय ५ ३२  
 शम्ब ५ ५१  
 शम्बर ५ ५२  
 शम्बररण ५६३६  
 शम्बल ५३४  
 शम्बक ५ ६६ ५ ५३  
 शम्बका ५ ५३  
 शम्बली १ ११  
 शम्भु ४ ११ ५ १७ ५५ ६ ६६  
 ६६६३  
 शम्भुकामुक ३३४६ ४५७  
 शम्भुछटवाङ्ग ३२३५  
 शम्भुनवशमित ६ ६  
 शम्भुनवशमितभव ६४५१  
 शम्भु वृष ६७३१

शम्भुशक्ति २३२  
 शम्भुशाल ३३ ६  
 शम्भुशक्ति ६ ६  
 शम्भ्या ५ ५५  
 शम्भ ५ ५६  
 शम्भ ५ ५  
 शम्भ १२२३ ३६३ ५ ७६ ५ ५६ ५  
 ६२२३  
 शम्भनीय ५ ६१  
 शम्भनीयव ६ ६  
 शम्भसाध ५ ६२  
 शम्भानक ५ ५  
 शम्भाल ५३ ५ ५६  
 शम्भित ५ २  
 शम्भु ५ ६  
 शम्भुन ५ ६१  
 शम्भ्या २ १३ ३२ ५ ५ ६१  
 शम्भ्यातर २ ६२  
 शम्भ्यासन ६ २  
 शम्भ्योत्तरच्छत्र २१  
 शम्भ्योपकरण २ ६३  
 शम्भ ६ २६ ६ ६ ५ १६६ २१६१  
 २ ६ २६३ ३१२५ ३१ ३ ५६  
 ५ २ ५५५१ ५ ६२ ६३ ६ २  
 ३ ६२ ६४ १ ६५ ५  
 शम्भकोरक ३३  
 शम्भच्छस्य ५६  
 शम्भजीव ५ ६६  
 शम्भ ५ ६  
 शम्भ १ ३  
 शम्भदेशीय २५२४  
 शम्भ ४६२६ ५ ६४  
 शम्भद्यायु ५ ६२ ६४ ५  
 शम्भपर्णी ५ २  
 शम्भ ३२ ४४६ १६६७ २ ५६ ५ ६५  
 ५६५६

शरभसन्निभ ६  
 शरभा ५ ६६  
 शरभाख्यमहामुग ५१५१  
 शरभिद् ३ ५६  
 शरभव १  
 शरयत्नक २५ ४  
 शरधारि ५ ६६  
 शरव्य ५५६ १२६३ २६४४ ४ ६ १६  
 ५६६७  
 शरसङ्क्रम ५२ ५  
 शरस्तम्ब २५ ३  
 शराकणकषण ३५५६  
 शराङ्ग ३३६  
 शरावान ६ ६  
 शराभ्यास ३  
 शराव ५१४१  
 शराव-याङ्गयनबीभद् ४ ६  
 शरासन २४६५ २७ ५  
 शरास्य ५ ६६  
 शरीर ५ ४ १ १६ ५ २  
 १७ ४ २२ १ २३१ ७२ २७६६  
 ५ ५३ ५१६५ ५६६६ ६ ३  
 शरीरनाबीभद् ३३२५  
 शरीरावयव ५  
 शरीरावयवातर ६६१६  
 शरीरिन् ६१ २३५२  
 शव ५ ६  
 शकरी ११ ५ ६ ६ २६  
 शमन ५ ६६, ६ ५  
 शव ५ ६६  
 शवर ५ ७  
 शवरी ५ ७  
 शवाणी ५ ६६  
 शल ५ १  
 शलभ २५४ ३१११ ४१ १ ६ ५१

शलल ५ १  
 शलली ५ २  
 शलाका १३ ५ ७२ ४  
 शलाकामण्डन २५२२  
 शक १ ५२ ५१ १ ५ ३  
 शय १ १५२ ६६ ५ ४  
 ६ ६२  
 शयक ४६६५ ३ ५ ७६  
 शयकी ५ ७६  
 शयचिकित्सित ५६६६  
 शयवद्य ५६६६  
 शलकी ६६६ ३३ ६ ६४ १  
 शलकीवृक्ष ४४ ७  
 शव ६ १२ ४ १६२ ५५५१ ५  
 ६५  
 शवरय ६ १ ७६  
 शवरी ३४ ६  
 शश ४४६ ५ ७७  
 शशभवज ३ ५  
 शशलाञ्छन ३ ५ ४ २२  
 शशाङ्क २२६ ११६ १७ २ ६  
 ४५२१ ५ ५ ६१  
 शशिकला ६५६  
 शशिज ३२  
 शशिन ६५३  
 शशिसूय ३५२  
 शशशरीक ५ ७  
 शवसहा (ऊष्माण) ७५  
 शङ्कुली ६१५ ५ ७६  
 शण्य ५ ६ ५६२१  
 शस्त ५७ ५ ६४ ५२१५  
 शस्तक ६४५  
 शस्तणव ६४६६  
 शस्ततम २३२७  
 शस्तलोत्र ६४७६

शस्तवास्तस्थल २ ४

शास्तु ५

शास्त्र ३३६ ५६२ १६ ३ ४१ ३२ ५

३ ४६ ६ ६ ५ २ १ ६ ३

शास्त्रक ५ २

शास्त्रनिधारण ५

शास्त्र निवारणाथफलक ६ ४७

शास्त्रभद ६११

शास्त्रमुख २ १ ३२२ ३ ६

शास्त्री ४२ ६ ५ १

शास्त्रीछद २६ ६

शास्य ५५२१

शास्यशक १३५४

शास्याथचिरतचित्तगोमय ३२३३

शाक ६३२ ६ २ ५ २ ७

६ १६ १

शाककोष्ठा ५ ६

शाकक्षत्र ५ ६६

शाकट ५

शाकटायन ६६ ६

शाकटिक ७

शाकटिन ५ ६

शाकटीन ५ ६१

शाकनाल ११

शाकप्रभद ३२ ६

शकभिव ६१७

शाकभद २३६६ ३३ ६ ३४ २ ३ ४

५ ६४

शाकः री ५

शाकल ५ ६२ ६४

शाकयश्चति ५ ६४

शाकवयतर ६४५६

शाकवृक्ष ३५७३ ५ ७ ६ ३

शाकवृक्ष प्रसव ६७३

शाकस्तम्भ ६६५५

शाकस्तम्भातर २७४

शाका ५ ५

शाकाद्य ५

शाकाधि ३१६६

शाकाम्ल ५ ६२

शाकिन ५ ६५

शाकिनी २१ ५ ६५

शाकिनीभिद् ३ ३

शाकुन ५ ६६

शाकुनिक ५ ६६ ६

शाकुनिन् ५ ६६

शाकुनय ५ ६६ ५६

शाकुतल ५६

शाकलिक ५६ १

शाकोट्रम ३ १

शाक्कर ५६ १

शाक्क ५६ २

शाक्किक ५६ ३

शाक्य ५६ ३

शाक्य ५६ ४

शाक ५६ ४

शाकी ५६

शाख ५६ ६

शाखा १६३३ २ ७ ३ ४ २१ २

५६ ५ ७ ६ ३६ ६५ ६

शाखामग ५६

शाखायोगिन ५६ ६

शाखाशिका ५६

शाखासवृश ५६ ६

शाखिन ५६ ६

शाखोट १ ४६ ३३७२

शाखोटक ११ ५

शाखोटम ४ २

शाखय ५६ ६

शाखूर ५६१ ११

शाङ्करि ५६११  
 शाङ्करी ५६१  
 शाङ्ग ५६१२  
 शाङ्गिक ५६१२  
 शाढी ६६६  
 शाठ्य १५ ५ २६४७  
 शाब्ब ५६१३  
 शाण ५२४ ५६१४  
 शाणनत्र ३१ १  
 शाणफलक २६४४  
 शाणा ५६१  
 शाणी ५६१ १५  
 शाण्डिल ५६१  
 शाण्डिली ५६१६ ५६१  
 शाण्डिय ५६१६  
 शाण्डिल्यजात ५६१७  
 शात ५६१७ २४  
 शातकुम्भ ४३ ५६१  
 शातकौम्भ ५६१६  
 शातन ५६२  
 शातला ५ ५६  
 शात्रव ५६२  
 शाब ५६२१  
 शाबहरित ५६२३  
 शाबवल ५१६३ ५६२३  
 शान ५६२४  
 शानपाव ५६२५  
 शानी ५६२४  
 शात ३ १ ५६२५ २६ २  
 शातगज २६६१  
 शातमव ४ १५ ५६२ २६  
 शास्तनु ५६२६  
 शातमुनि २६६१  
 शान्तवीक्ष २६६१  
 शाता ५६२६

शातावि २६६१  
 शाति ५ ५४६ ५६२६ ३ ४१ ६  
 ६१५  
 शातिष्ठत ५६३६  
 शातिनाथामिधातर ५६३१  
 शातिसाधन ५ ४६  
 शाप २६५ ५६३१  
 शाबर ५६३२ ३३  
 शाबरक ५६३३  
 शाबरिका ५६३३  
 शाबरी ५६३२  
 शाबय ५६३  
 शाबया ५६३४  
 शाबस्त ५६३४  
 शाबस्ती ५६३४  
 शाव ५६३५  
 शाब्दिक ५६३५  
 शावी ५६३५  
 शामन ५६३६  
 शामित्र ५६३६ ३७  
 शामित्रकमन ५६३७  
 शामील ५६३  
 शामीली ५६३  
 शाम्बर ५६३६  
 शाम्बरी ४३६३ ५६३४  
 शाम्भज ५६४ ४१  
 शाम्भवी ५६४१  
 शाम्य ५६४१  
 शाम्यक ५६४२  
 शाम्यिका ५६४२  
 शार ५६४३  
 शारक ५६४४  
 शारव ५६४५ ४६ ४७  
 शारवक ५६४  
 शारवा ५६४



शारविका ५६४  
 शारदी ५६ ६  
 शारद्वनीपुत्र ५६ ६  
 शारयति ५६५  
 शारि ५६ ६  
 शारिका १२६२ ४६ १ ५ ५२५  
 ५६५१  
 शारिकासनविहङ्ग ६  
 शारिपुत्र ५६ ६  
 शारिफलक ६ २  
 शारिवा १३३ १ ६ ४ २ ५ २१  
 ६१४  
 शारी १ २ ५६ ३  
 शारीर ५६५२  
 शारीरक ५६५३  
 शाकर ५६५  
 शाङ्ग ५६५५  
 शाङ्गधविन २ ४६  
 शाङ्गवत ५६५  
 शाङ्गष्ठिका २६७  
 शाङ्गष्ठि ५६५  
 शाङ्गष्ठि ५६५  
 शाङ्गिन ५६५  
 शाङ्गधपय ६१२६  
 शाङ्गधवतारातर ६१२६  
 शार्दूल ४४५ ४६४ ५७६४ ५६५६  
 शार्दू ५६६  
 शार्दूर ५६६१  
 शाल ५६६१ ६३  
 शालग्राम ५६६४  
 शालग्रामी ५६६६  
 शालङ्कायन ५६६६  
 शालपर्णी ३ ५४१४  
 शालपुष्प ५६६

शालमञ्जिका ५६६  
 शालमीन १ ६२  
 शालसार ५६६  
 शाला ११६५ १३६६ ५६६२ ५  
 शालाक ५६६  
 शालाकिन ५६६६  
 शालाक्य ५६६६  
 शालाज ५६ ५  
 शालादि ६२ ४  
 शालाद्वय ५६  
 शालाद्वार्या ५६ १  
 शालामुख ५६७१  
 शालामुखीय ५६ १  
 शालामृग ५६७२  
 शालार ५६ २ ३  
 शालावत ५६ ६  
 शालावृक ५६ ३  
 शालि ४ ३ ६ ५६  
 शालिक ५६ ५  
 शालिका ५६ ५  
 शाभि १५६३ ५६  
 शालिचण ५६७  
 शालिजातिभिः ३४  
 शालिजायतर ३२५  
 शालिन् ५६७६  
 शालिनी ५६७  
 शालिपिष्ट ५६  
 शालिभिः २३ २ ६ ५२  
 शालिभः ३१११ ४ ५६ १ ६६ ३  
 शालिमत ५६७६  
 शालियोगिन ५६ ५  
 शालिबाह ५६  
 शालिहोत्र ५६७ ६  
 शाली ५६६४  
 शालीन ५६७६

शाल ५ १  
 शालकी १ ३६  
 शालक ४६४ ५१ ५६ २  
 शालर ५६ ३  
 शालय ५६ ३  
 शालयभवन ६ ६  
 शालमल ५६ ४  
 शालमलि १ १ ३५५३ ५ १ ५६ ५  
 ६ ६५६६  
 शालमलिक ५६  
 शालमलिद्वीपगिरिभिद् ५३२१  
 शालमलिद्वीपवश्य ३३६६  
 शालमलिनियसि २ ५६ ४  
 शालमलिबष्टक ३३२  
 शालमलित्थ ५६ ६  
 शालमली ५६ ६ ७  
 शालमलीफ ११३६ ६  
 शालमलीभूक १ २४  
 शालमीवन २६६१  
 शाव ५६ ६६  
 शावद्रप्रसव ५६६  
 शावा ५६ ६६  
 शाव ५६६१  
 शावक ४२६१  
 शाववत २६५५ ५६६२ ६२  
 शाववती ५६६२  
 शावकुलिक ५६६३  
 शास ५६६३  
 शासक ५६६३ ६४  
 शासन ५ ५ २६५६ ५७५ ५६६४ ६५  
 शासनी ५६६  
 शासित ५६६६  
 शास्तु ५६६६  
 शास्त्र ३४५ ६ ५ ५१ १६ २३७७

२४६३ २६ ३६२ ३६६ ३७११  
 ५ २ ५६६ ६१७४  
 शास्त्रप्रथातर ६२३  
 शास्त्रचक्षस ५६६  
 शास्त्रनव ५६६७  
 शास्त्रवत ५६६६  
 शास्त्रवाय ५६६  
 शास्त्रशिनि ५६६  
 शास्त्रातर ६१२ १२  
 शास्त्राय ५२४ ५६६  
 शास्त्रिन ५६६६  
 शाह ५६६६  
 शिशापा ३१ १५५६ ३३ ६ ५२१  
 शि ६  
 शिष्य १२५ १४३३ ६  
 शिष्यभद २५५१  
 शिष्या ६  
 शिक ६ २४  
 शिष ६ २  
 शिषक ५६६४  
 शिषा १६३१ ६ १  
 शिषाकर ६ २  
 शिषाभ्यास ६ १  
 शिषित ५४३१  
 शिषण्ड ६ ३  
 शिषण्डक ६ ४  
 शिषण्डकत् ६  
 शिषाकिक ६ ५ ६  
 शिषण्डिका ६६ ६  
 शिषण्डिन ६ ३ ६  
 शिषाकनी ६  
 शिषर २६ ६ ५ १६ ६ ६११  
 शिषरा ६ ११  
 शिषरिणी ६ १३  
 शिषरिन् ६ ११ १२

शिखा २१५ ६ ३ ६१  
 शिखाकव ६ १  
 शिखातच २ ५  
 शिखाधर ६ १  
 शिखामि ६ १  
 शिखामूल ६ २  
 शिखायोगिन ६१३  
 शिखावत ६ १६  
 शिखावती ६ १६  
 शिखावल ६ २  
 शिखावला ६ २  
 शिखिन ६ १६ २  
 शिखिपु छक ६ ३  
 शिग्र २ ५२ ६६३ ४५ २ ६ २५  
 शिग्रक ५ १  
 शिग्रुतल ३६११  
 शिङ्ग ६ २६  
 शिङ्गाण ६ २६ २  
 शिङ्गाणा ६ २७  
 शिङ्गित ६६  
 शिङ्गा ६ २  
 शिङ्गावत ६ २६  
 शिङ्गित २२६७ ६ २  
 शिङ्गित ६ २६  
 शिङ्गिनी ६ २६  
 शिङ्गिनीध्वनि २३५  
 शित ६ ३  
 शिति ६ ३१ ३३  
 शितिकण्ठ ६ ३२  
 शितिवचन ६ ३३  
 शितिपृष्ठ ६ ३४  
 शिपुट ६ ३४  
 शिथिल ६ ३५  
 शिथिली ६ ३५  
 शिपि ६ ३६

शिपिविष्ट ६ ३७  
 शिप्र ६ ३  
 शिप्रा ६ ३  
 शिफा ६ ३६  
 शिबि ६  
 शिबिका ६  
 शिबिर ६ १  
 शिमि ६ १  
 शि ४६ ६ ३  
 शिम्बल ६ ४३  
 शिम्बा ६ २  
 शिम्बि ६ ४४  
 शिम्बिक ६ ५  
 शिम्बिका ३ १ ६ ५  
 शिम्बी ६ ४१ ४२ ४ ५  
 शिम्बीघाय ५ ३  
 शिम्यु ६ ६  
 शिरकश ६ ५  
 शिरसम्बन्धिन ६ ५  
 शिरस १ ६ १६६ ४१ २ ३  
 ६ ६  
 शिरस्का ६  
 शिरस्त्र १ ६ ६  
 शिरस्त्रक ६ ४  
 शिरस्त्राण ६ ३ ६  
 शिरस्थ ६ ६  
 शिरस्नह २ ४ ६  
 शिरस्थ ६ ५  
 शिरलज ६ १  
 शिराक ६ ४  
 शिराला ६ २  
 शिरि ६ ५ ५१  
 शिरिणा ६ ५२  
 शिरिम्बिठ ६ ५२

शिरीष १ ११४ ३६४२ ७ ५४६६  
 ५५७७ ५ ५ ६ ५३ ६१  
 शिरीषक ६ ५३  
 शिरीषिका ६ ५३  
 शिरोऽवकाशन १२३६  
 शिरोऽस्थि ११५  
 शिरोभूषणात्तर २५४५  
 शिरोमणि २१५  
 शिरोमाला ३३६४  
 शिरोरक्षणवस्तु ६ ४६  
 शिरोरन ६ १  
 शिरोवजा ६ ५  
 शिरोवह १५ ३ ६ ५५  
 शिरोवहा ६ ५५  
 शिरोवेष्ट ५  
 शिरोव्याधि ६ ५  
 शिल ६ ५६  
 शिलज ६ ५५  
 शिलजा ६ ५५  
 शिलम्ब ६ ५१  
 शिला १२६ १६६ ३ २३३  
 ५४२२ ६ ५६  
 शिलाकुट्ट ६ ५७  
 शिलाकुसुम ६ ५ ६ ६३  
 शिलाज ६ ५  
 शिलाजतु ११३ ३ ३१ १ ६  
 १६३६ ६ ५७  
 शिलाटक ६ ५  
 शिलाघातु ६ ५६  
 शिलाभट्ट ६ ६  
 शिलावहा ६ ६  
 शिलासन ६ ६  
 शिलासम्बन्धिन् ६१३१  
 शिलि ६ ६१  
 शिली ६ ६१

शिलीध २१ ६  
 शिलीधक ५२१  
 शिलीमुख ६ ६२  
 शिलोच्चय २५६  
 शिलोच्छ ३  
 शिलोथ ६ ६३  
 शिलोव ६ ६३  
 शिप ११६३ १३ ४ ६ ६४  
 शिपाचार्या ६ ६५  
 शिपिन ६६६ १३ ४ ६७३  
 शिपिशाल ५६६  
 शिप्यतर ६५  
 शिव १६ १२६ २३४ ४ ५१६  
 ६ २ ३ ४ ६ ६५ ६ ३ १ ५१  
 ५५ ६ ११७३ ६ ६३ १२७ १३२  
 ७१ ४ १५६३ १ १६ २ ६ १ ३२  
 २२३५ २४५६ ६ २६३ २७ ६  
 २ ३२ ३ ३४ ३६ ६ ३१५७ ३२  
 ३३२२ ३४२ ३७ ४६ ६ ५ ५ ६६  
 ३५ ४२ ३ ५४ ३६३३ ५२ ६ ६  
 ४ ३ ५१ ६ ७६ ४२६७ ६३ ६७  
 ३१५ ४४७४ ४५२१ ६६ ४६ ६७  
 ४७४७ ४६ ७ १ ५ ६  
 ५२१४ २३ ५३१ २१ ५४६१ ५५४६  
 ५६ ६ १३ १५ १६ २३ २६ ५२ ५ २  
 ४२ ५५ ६६ ५६६२ ६ ३२ ३७  
 ६४ ६६ ६१६७ ६३५१ ६५४१ ४  
 ६६३ ६६ ६६ ६७ ६ २४ २  
 शिवकारिन् ६ ५  
 शिवङ्कर ६ ७५  
 शिवजटाजूट १ ४६  
 शिवतिथि २ ५६  
 शिवप्रतीहार २ २  
 शिवप्रमथ ६७ ६  
 शिवप्रिय १२४५ ६ ७५

शिवभक्त ५६४

शिवमल्ली ६ २ ३ ६५

शिवमलीवृक्ष ३३१

शिवमातु ३ ६६

शिवलिङ्ग ६ ६६

शिवस्तव २

शिवस्वरूप ३४६

शिवा ३ ११६ १३३५ १६३ १६

४३३३ ६ ४

शिवाद्यजम्बकान्तर ३

शिवानग ३६६६

शिविका ६ ६ ३३६२ ५ ५

शिबी ६ ४

शिशिम्बष्ठ ६ ६

शिशिर ६ ७६

शिशिरतु २३ ३ ५ २ ४६

शिशु १५१ २१६ १ १४५६ १ ६

२३५५ २५ ३२३६ ३५ २६५

३ २२६ ६६ ६ ५३५३ ५६६१

६ ७७ ६१ ६५ ६

शिशुक ६ ७

शिशव ६१३६

शिशप्रिय ६

शिशुमखण १ २६

शिशमार २१४६ २२५१ ५१ २ ६ ७

शिशुसम्बन्धित् ६१३६

शिशन २ ४५ ३६११ ४

शिशनमल ३५१७

शिशनमात्रक ५ ७

शिशिवान ६ ८

शिव्य १ ६ २१ ३२ ६ ४६६ ४५२५

५ ४४

शीकर २४ ५ २ ११ ६

शीघ्र ७५ २५३ ३१ ४१६ ६ २ ७

२५५५ २७४४ ४ ६ ६ २

शीघ्रग २२ ४

शीघ्राथ १६

शीत २२१ ११ ६ ६ २ ६५४२

६ ६४

शीतक ६ ३

शीतकुम्भ ६

शीतगण २४ ६ १ ५ ६५ २

शीतगणवत् ६ ५

शीतगणायतरावित ६ १

शीतपञ्च ६

शीतल ६ ५

शीतलता ६१३१

शीतला ६ ५

शीतलोषधि १

शीतवत ६ ६

शीतशिव ६ ६

शीथ ६ ४ ६

शीघ्र ३ ५ ६ ६६ ६३३५

शीघ्रपान ६३३५

शीर ६

शीरा ६

शीरी ६

शीणवृत्त १६ ४

शीर्णि ६

शीर्वा ६

शीषण्य ६ ६

शील १५७ ६ ६

शीलभवा ६१३२

शीवन ६ ६

शुक १३५ १ १४५ १५ ६ २३२१

२५३ ७ ६१ २६६५ ३ ३ ४ १

४६२५ ४६६२ ६३ ५२५३ ६ ६१

६१७२ ६ ४

शकनास ६ ६२

शुकपत्र ६ ६२

शुकसमूह ६१

शुक्ल ४६६ ६ ६३ ६६१७

शुक्ल २३१ ३४ ३ ६ ६५

शुक्लयावयमवज २ ५४

शुक्ल ११७२ १२ २ २ १३ ४ १ ६

२६ ३ ३३६६ ३६ ६ ४ ३

४ ७३ ६ ६ ६ ६६६७ ६ २

शुक्लप्रह २ ५३ ३६२

शुक्लमास २३३

शुक्लवर्धक ५६२

शुक्लवर्धप्रह २ १६

शुक्लवर्धसामन् ३१७

शुक्ल ३ ३४२ ३२५२ ६ ६६ ६१

शुक्लकाच ६१३२

शुक्लपक्ष ६ ६

शुक्लवचा ४ ६५

शुक्लवचातर ६ ६

शुक्लवत ३२५२

शुक्लवण ६१६४

शुक्लवणवित्त ६१६५

शुक्लवण ११३४

शुक्ल ६११३

शुक्ल ४१६ ६१३६ ३

शुक्ल ४५ २१६३ ४ २

शुक्लमास ६१

शुक्ल ६१ २

शुक्लतिघातु ६१ २

शुक्ल ७३ ६६२ ४३३१ ६१ २

शुक्ल १५६६ २६१ ४२६२ ४६७३

५४ ७ ६१ ६१२७

शुक्ल ६१ ३

शुक्ल ३४६३

शुक्लसाम्बन्धिन् ६१४५

शुक्ल ३६१ ३५ ३ ५४७२ ५६४५ ६१ ३

६२२६ ६६७१

शुक्लमान ६४ २

शुक्ल ६१३

शुक्ल ६१

शुक्ल ६५६

शुक्ल ३३ ५३ २ ६१

शुक्ल ३५३५

शुक्लसाधन ६१ १

शुक्ल ६१

शुक्ल १६६२ २१६६ ३६३ ४ ३

६१ ४ ५

शुक्ल ६४६

शुक्ल ६१ ५

शुक्ल ३२४ १२१५ १६ १६ ६ ३६६ ४

६१ ४१ ६ ४२ २ ७२ ४६४७

५६२५ ६१ ६ ६

शुक्ल ६४६६

शुक्ल ६७

शुक्ल ६१७६

शुक्ल ६४६६

शुक्ल ६१ ७

शुक्ल २६६४

शुक्ल १२१७

शुक्ल ३ ६

शुक्ल ६१ ७

शुक्ल ६१

शुक्ल १६१ ६१

शुक्ल ४३ २४२५

शुक्ल २४२५

शुक्ल ३१७३

शुक्ल ३७३३ ६१ ६

शुक्ल ६११

शुक्ल १११ ११

शुक्ल ३२५३ ५२१५ ५३ ६ ६५४

६६६६

शुक्ल ६५ ४

शष्कतण २५  
 शुष्कपण २५  
 शुष्काफल ४५ ३ ५३ ६३  
 शष्कमास १५ ५१६५  
 शष्कव्रण ६६३  
 शा कस्फटितमभाग ४  
 शाष्ण ६११२  
 शाष्म ६११२  
 शाष्पतिधातु ६११  
 शाक ६११३  
 शाककोटि ५६ २  
 शाकतण १ ३३  
 शाकर ६ २  
 शाकरमास ५१६५  
 शूकशिम्बी ६२ १ १ २२१ ६  
 ३ ६६ १ ६२ ४६२  
 शूद्र ६११३ १५  
 शूद्रकवरीसम्भव ३ १  
 शद्रज ३५२  
 शद्रमहिषीपुत्र ३४ ५  
 शूद्रा ६११४  
 शद्रानिषावज ६७ ४  
 शद्रामत्रयज २३४  
 शत्री ६११४  
 शून्य ६६ १६६५ २३५३ २४६ ३१४३  
 ४ १६ ५ ६११५ ६६६६  
 शायदेश ५  
 शायमल ४५  
 शर २ २५१ ३ ६६ ४२४१ ५ २  
 ५५५ ६११६  
 शरक्रिया ६१४६  
 शरपाल ६५६  
 शरभाव ६१४६  
 शू ७ १ ३७४४ ६११६  
 शयक ६६२३

शूपकण ६११  
 शयपवन ३ १७  
 शयसि ४५ ७  
 शाल १ १ ६११  
 शूलमाशक ६११६  
 शालयुक्त ६१२  
 शूलवत ६११६  
 शालिक ६११६  
 शालिन ६१२  
 शगाल १६४ २ ३२ ३६५२ ५५६५  
 ५ ६ ५ ५६ ६ ६ ६ १२ ६७ ५  
 शृगाली ५३१६ ५४१६  
 शृङ्गल ६१२  
 शृङ्गला ३२६३  
 शृङ्ग १ ४ ३६ ६ ५५ ६१२१  
 शृङ्गवर ६६३  
 शृङ्गाट २ ६२ ६१२३ २४  
 शृङ्गाटक २२५१ ५५५२  
 शृङ्गाटकाह वयकम्वायजलजस्तम्भ १६ २  
 शृङ्गाटफल ६१२४  
 शृङ्गार ४ १५ ६१२  
 शृङ्गाररस ६  
 शृङ्गारस्तम्भ २  
 शृङ्गारिन ६१२५  
 शृङ्गिमाष १६६१  
 शृङ्गिणी ६१२७  
 शृङ्गिन ६१२६  
 शृङ्गिवर ५७ ६१२७  
 शृङ्गी ६१२२ ५५४६  
 शृङ्गीकलकाङ्ग्यालङ्कारसुवण ६ ७  
 शृणोयथ ६१५६  
 शृतकीरवधि ३ ७  
 शोखर ३ ५ १५ २६ ५  
 शोफ ३ २६३५ ६३ ६  
 शोफस् २४ ५ ४ ७३

शाफाप्रचमहीन ६ ३  
 शाफालिका ३ ३ ६४ १  
 शाफाली २ ३  
 शमण्ड १२५२  
 शवा ६१२  
 शव १३१ ४१ ३१६६ ६१२  
 शवा ६१२६  
 शयिन ६१  
 शख ६१३  
 शङ्ख ७  
 शय २ ५ ६ २ ६१३१ ६५२७  
 शत्यगुणावित ६ २  
 शत्यधमवत् २४ ६  
 शल ११३ २ ६४ ६१२ १६४ ६  
 २७ ६ २ ३ २६ ३२ ६ ३५६  
 २१ ६६५ ५ ६ ६१३१  
 शलज २ ३३  
 शलतनया १ ५१ ६३५५  
 शलप्रभव २५६४  
 शलराजपुत्री ४५ ६  
 शलशिखर ६१२१  
 शैलशिलासिद्धि २७४६  
 शैलभूङ्ग २३४  
 शला ६१३२ ३३  
 शलाग २५३  
 शली ६१३२  
 शलव २ ५ ३३ ६१३३  
 शलय ५५ ५ ६ ५५ ६ ६३ ६१३४  
 शलयमरिच ३२२  
 शव ६ ६६  
 शवनामपुराण ६ ३  
 शवभव १ ५५  
 शवल ३ २२२७-४२ ५२ ३ ६  
 २ ४१  
 शैवलिनी ६१३५

शवागममण्डल ३ ४  
 शवाल ५४ ६  
 शशव ६१३५  
 शोक ६३६ ७१ २३ २ १४ ६१ ३  
 ६१३६ ६६ ५  
 शोकी ६१३६  
 शोचनीय ५ ६  
 शोचित ४  
 शोचित ६१३  
 शोच्य २३ ५  
 शोठ ६१३  
 शोण ६६४ ३ ६ ६१३  
 शोणकामिधतह २३५२ ६ ६१  
 शोणपुष्प ११ ४  
 शोणम्लान १४७४  
 शोणरव ६  
 शोणा ६१३६  
 शोणाभयनव ६७७१  
 शोणित १२ २ ४६२६ ४७५३ ५२  
 ६१३६ ६५७६  
 शोणित ६१३६  
 शोष नी ५१५७  
 शोषशतुस्तम्ब ३६ ५  
 शोषारिनामज्ञात ४३ ३  
 शोषन २५६३ २६२४ २ २ १६ ६१४१  
 शोषना ६१४  
 शोषनी ६१४१ ६३३१  
 शोषयत्यथ ६१४  
 शोषित ४३  
 शोषन २ ५२ २१११ ४१५५ ६ ६,  
 ६१४२ ६२६४  
 शोषनकावक ६४४  
 शोषनखयुक्त ६ ५  
 शोषनगत ६४५२  
 शोषनजलाग ६६४१



शोभनचादिसयुक्ताक्ष ६६

शोभनसधज ६ ६

शोभनहृद् ६४

शोभनाकार २ १

शोभनाक्ष ६६३६

शोभनाक्षि ६६३६

शोभनावन ६६ ३

शोभनार ६६

शोभनारक ६६

शोभा ६५ ६ १२६६ २१ ६ २५५६

४ ३२ ४ १ ५१२२ ५४५

शोभित ६१ २

शोष ५२६३ ६११२ ६

शोषक ६१४२

शोषण ३२५२ ६६ ५३ ६ ६११ ६५ २

६६३

शोषयित ६१४३

शोष्ट ३२५६ ६१ ३

शौक ६१४४

शौकनास ५ २

शौक्य ३४१ ६१ ३१ ६४२५

शौक्यगुणवत ३ ३२

शौण्ड ६१

शौण्डिक २ ४५

शौण्डी ६१४४

शौन्यादमिक ६१ ५

शौय २ ३६ ३६ ६१४६

श्रुति ३ ३६

श्रमशान २

श्रमश्रु १५१२

श्याम ६१४७

श्यामक ६१४६

श्यामकङ्कु ४१५३

श्यामखदिर १३२६

श्यामघोटक ५३४

श्यामपा ४२ १६ ६

श्यामभरिच ६१५१

श्यामल २ २ ६ ६१५

श्यामला ६१५

श्यामवण १ ६

श्यामवल्ली ६१५१

श्यामा १ ६ २ ५६ ६ ६१४

श्यामाक ४४२

श्यामाकधाय ६१४६

श्यामिका ६१ ६

श्यालक ५१ ६१६१

श्याव ६१५१

श्यन ५३६ ३१२५ ३३६ ३ २२ ४२४१

५६३२ ६१५२

श्यनसज्जतगजाति ६१५३

श्यनसज्जपक्षि ३ ५३

श्यनसज्जप्राणिजाति ६१५३

श्यना ६१५२

श्यनी ६१५२

श्य य ६१५५

श्योनाक ६ ५

श्योनाकपावप ३३ ५ ७

श्रद्धा ६१५६

श्रद्धाल ६१५६

श्रद्धावत ६१६३

श्रद्धाशील ६१५६

श्रपणा ६१५

श्रपणी ६१५

श्रपयत्यथ ६१५

श्रमण ५५७५ ६१५

श्रमणी ६१५

श्रव ५६१६

श्रवण ५७ २६६६ ५ ४४ ६१५६

श्रवणक्रिया ६१७६

श्रवणमल ३ ६५

અવળા ૬૧૬  
 અવળાશ્વકમન ૬૧ ૪  
 અવળામય ૩૬૩૧  
 અવળામયુકર્ણમા ૬૧૬૫  
 અવાચિલ  
 અવિષ્ઠ ૬૧૬૧  
 અવિષ્ઠા ૬૧૬૧  
 આળ ૬૧૬૨  
 આળા ૩૫ ૯ ૬૧૬૨  
 આઠ ૧૧ ૬૧૬૩  
 આઠમવ ૨૫૩  
 આઠાનિ ૬૨૪૪  
 આતિમત ૨૪૨  
 આવક ૬૧૬૪  
 આવળ ૨ ૭ ૬૧૬૬  
 આવળિકમાસ ૬૧૬૬  
 આવળી ૬૧૬૫  
 આવયિતુ ૬૧૬૪  
 આ ૨ ૯૩ ૨૯૩૩ ૩૧૪ ૩૩૩  
 ૫૫ ૪ ૧૪ ૪૯૨૬ ૫૩૧ ૫૬૨૨  
 ૫૫ ૫ ૧૩ ૬૧૬૭ ૬૨૬૪ ૬૭૭૧  
 આકઠ ૬૧૬  
 આગમ ૬૧૬  
 આગત ૬૧૬  
 આતિથિ ૩ ૩  
 આપતિ ૬૧ ૨  
 આપતિલાઝન ૬૧૭૨  
 આપળ ૬૧૬૯  
 આપળતલ ૩૫  
 આપર્ણી ૬૧૬૯  
 આપિષ્ઠ ૯૧૧  
 આપિષ્ઠનામનિર્યાસ ૬૧૭૩  
 આપિષ્ઠાશ્વનિર્યાસ ૩૩૪૪  
 આપુળ્ય ૬૧૭  
 આફરુ ૪૪૬ ૬૧૭

આફલાશ્વપાદપમથ ૩ ૯૧  
 આફલી ૬૧૭  
 આમત ૪ ૧૬ ૬૧ ૧  
 આશ ૫૩૨ ૬૧૭૨  
 આશ્વસાજુ ૬૧ ૩  
 આશાસ ૨૫ ૯ ૫૫ ૭ ૬૧ ૩  
 આશ્વ ૨૫૧  
 આશ્વનિર્યાસ ૫ ૩ ૫૬ ૧  
 આશ ટાલ્લનિર્યાસ ૩૨૭૪  
 આશ્વિતની ૨૯ ૭  
 આશ્વ ૬૧૭૪  
 અત ૫૧૪ ૬૧૭૪  
 અતકમન ૬૧૭૫  
 અતવિદ્યાધરાતર ૩ ૫  
 અતિ ૧૨૧૫ ૨૧ ૨ ૨ ૯૨ ૫૬૫૧  
 ૬૧૭૬  
 અતિર્જિત ૧૬૧  
 અૂષ ૬૧૭  
 અૂષા ૬૧૭૭  
 અણિ ૬૧૭ ૬૩૩  
 અયસ ૬૧ ૯  
 અયસી ૬૧૭૯  
 અઠ ૧૪ ૪૭૧ ૬ ૫ ૯૧ ૯ ૫  
 ૨૨૯૯ ૨૭૯૭ ૨૯ ૫ ૨૭ ૩૧૫૩  
 ૩૩૯૯ ૩ ૧૩ ૨૨ ૪૨૬૪ ૪૫ ૧  
 ૪ ૩૯ ૫૧૧૫ ૬૫ ૫૫૯૭ ૫૬  
 ૫ ૬૪ ૬ ૧ ૪૭ ૬૧ ૬૨૬૬  
 ૬૪ ૨ ૬૬૭૧  
 અઠગથી ૧૧૨ ૩ ૫૭  
 અઠનારી ૫ ૯૨ ૯૭  
 અઠમુત ૪૪૬૪  
 અઠય ૪  
 આગિ ૯૭૯ ૯ ૯૯ ૧૧૭૫ ૬૧ ૧  
 આગિપુરોમાગ ૨૨ ૫  
 આગિફલક ૯૭૯

श्रोणिस्थान ४४

श्रोणी ५ ५ ६

श्रोतुमिच्छा ६१ ६

श्रोतु ६१६४

श्रोत्र ११४५ ६१५६ ६ ६

श्रोत्रकाता ६१ १

श्रोत्रपूरण ११

श्रोत्रिय २१ ४६ २

श्लक्ष्ण ६१ २

श्लक्ष्णवस्त्र २

श्लोक ६१ २

श्लिष्टमिस्र ४६

श्लेष ३ ६ ६२ ५

श्लेषण ४ ६ ६२ ४

श्लेष्मकारिण ६१ ५

श्लेष्मघना ६१ ३

श्लेष्मघ्न १

श्लेष्मघ्नी ६१ ३

श्लेष्मन ५ २६ ६१ ४ ५

श्लेष्मल ६१ ५

श्लेष्महृत् ६१ ३

श्लेष्मातक ६४ १ १ ५ ६६ ६ ३

श्लेष्मादि २ १

श्लेष्मातक ५

श्लोक ३१ २ ४७६२ ६१ ५

श्लोकस्तन ५१२

श्लेष्मच्छा ६१ ६

श्लेष्मस्तान्तर ६१ ६

श्लेष्म ३ ६५६ २२६३ २३५६ २६५

३ ६६ ३६ २ ४२ ४ ४५१ ४ ४६

३५ ४६ ३ ५४६ ५५६४ ५६ ३

६१ ५ ६ ६१

श्लेष्मक्तु ६१

श्लेष्म ३३६ ४३४४ ६१

श्लेष्माक ६१

श्लेष्म २३५६

श्लेष्म ५ ५

श्लेष्म १३ ६ १६७१ २५६

श्लेष्म ६१ ६

श्लेष्म ६१ ६ ६५ १

श्लेष्म ६१ ६

श्लेष्म ६१६

श्लेष्म ६१६

श्लेष्म ६१६२

श्लेष्म ६१६१

श्लेष्म ६१६१

श्लेष्म ६१६२

श्लेष्म ६१६२

श्लेष्म ३५३७

श्लेष्म ६१६३

श्लेष्म २७६२ २१५

श्लेष्म ६१६३

श्लेष्म ६१६२

श्लेष्म १ ५१ ६२ ६१६४ ६६७१

श्लेष्मकरवीर ३६२

श्लेष्मकुश ३५३ ४६

श्लेष्मखिर १ २४ १२६२ ५ ७६

श्लेष्मगिरिकर्णी ६५

श्लेष्मगञ्जा १६

श्लेष्मचदन २५१

श्लेष्मटङ्गुण ६ ७२

श्लेष्मतिल २२६७

श्लेष्मूर्वा ५ ३४ ६३ ३

श्लेष्मपत्र १ ४४

श्लेष्मपिपीलक ३४३

श्लेष्मपुननवा ५६ २

श्लेष्मप्रावार ३२५१

श्लेष्मबिम्बुक ३५ १

श्लेष्मबिम्बुयुत ३५ २

श्लेष्मलवण ४ ३

श्वेतलोहितमिश्रवणभव ३२४४

श्वेतलोहितवणवत ३२४

श्वेतलोहितवर्णाख्या ३२

श्वेतवण २ ६६ ६ ६ ६१५२ ६ ४

श्वेतवणमुत २७६७ ६ ४

श्वेतवणवत ६१५२

श्वेतवणवधम २७६६

श्वेतवर्णावित ६ ६

श्वेतवली २५

श्वेतशालि ३५६६ ६११६

श्वेतसुरसा ६१६६

श्वेता ३ ५५ ६१६५

श्वेताख्यगियुत्तरवष ६ ६

श्वेताक ३६३ ३ ६

श्वेताख ४३१४

श्वेतोपल ५६

श्वेतोपदीकावनीक ६५ ५

ष

षटक ६१६७

षटकोण ६१६६

ष प चादधिकशतद्वयमष्टिमिततण्डलाद्य ३५६

ष पूरण ६२

ष सामन ६६४

षट्का ६१६

षट्भावीरुष २६३६

षट्कतिप्रसिद्धस्वावरा तर १२३७

षट्गण ६१६

षट्प्रथा ६२

षट्जावि ६६४

षट्जाविस्वर ३ २

षट्विंशतिबर्कोरोरग ४३ २

षट्विंशत्यक्षरञ्जलोमव ६३३३

षण्ड ६ ७४ १६५५ ३५ ४ ६२

षण्डाली ६२ २

षण्ड १३६१ १६ ४ ५१५६

षण्मासीयोगिन ६२

षष्टिन्विंशतवासराद्य ६४१

षष्टिहायन ६२ २

षष्टिहायना ६२ ४

षष्टिहायनी ६२ ३

षष्ठका ११ ६२ ७

षष्ठमास ६ ६

षष्ठराशि १ ६

षष्ठविभक्ति ६२ ५

षष्ठशरीरघातु ३ ४

षष्ठाहमवस्तु ६२

षष्ठी २ ६२ ४

षाडवी ६२ ५

षाण्मासी ६२ ६

षाण्डिक ६२

षिञ्ज ६५७ २ ६ ४ २१ ५४ २

६२

षोडशमिक्षा ६६ ६

षोडशाश ११ ७

षोडशाक्षर ३६५५

षोडशाहोपवास २४ ७

षोडशिका ६२ ६

षष्ठूम ६२ ६

स

सकरज ६११३

सकप १६२३ ४४ ६

सकीर्ण ३६ ६ ४४ ४ ६२४२ ४४

सकुलरण २४७३

सकत ६२२१ ६१ ६६ ६३२१

सक्षय २६७

सक्षय ३४ ६ ६२५१ ६३ ४

सख्या १ ६१ १६७२ ३१५२ ४ ६४

४६७३ ६२४६

सख्यात १२  
 सख्याताडन ६६६७  
 सख्यान ७५ ४ ६१  
 सख्या तर १ ६१  
 सख्यापूरण २ ५३  
 सख्याभद ३१३  
 सख्याविशेष ६३११  
 सख्याज्ञान  
 सख्यय ३१५२  
 सख्ययवस्तु ६  
 सख्यहवाच ६ ६  
 सग्राम २२१५ २४१३ ३ ६ ३५६५  
 ३६ ६ ४५ ६ ६  
 सघात १ ५६ २ २ १६ २३४५ ६२५३  
 सघातयित ६२५  
 सख्य ६२६ २६ ३६  
 सचालक २१ ६  
 सजा २३६ ५ २६२५ ३ ३३ ६२६१  
 सतोषणा ५७३  
 सबश ६६१ ६२  
 सबशनभव ६२ १  
 सधिवौर १ ३६ ५१२  
 सनहन २  
 सनाह १२१ २६ ६  
 सनिवश ६२३२ ३३  
 सयासिन ३६४३  
 सपराय २५६  
 सबद्ध ५२ ६  
 सभक्षित ५ ६६ ६२१५  
 सभावना २३६२  
 सभाव्य २६२६  
 सभावण ६२२२  
 सभ्रम २४४१ २ ६  
 समाजनी ४२३३ ५१४ ६३१६  
 समिधण ६२१२

समिधरूपक ६२ २  
 समयत १२ ६३६  
 समय ६२१  
 समयर ६२११  
 समयमन ३ २५  
 सभाव ६२१२  
 समय ३ ५ ६५६६ ६६१४  
 सयोग ६११२ ६२ ६  
 सयोगशील ४५ ६  
 सरघ १५३२  
 सरम्भ ५ ७ ४६ ६ ६२१३  
 सरोध ६२१  
 सरोधन ६२१  
 सलय ६२१४  
 सलाप १६  
 सबसर ४६३ २२ १ ३१ १ ५ ६  
 ५६४५ ६२१५  
 सबसरमिब ३१ १  
 सबसराययकत यथाद्ध ६३ २  
 सबसरमवावि ६३ १  
 सबदन २६४  
 सबनन ६२१५  
 सबरण ५१ ६ ५३५ ६२२२ २  
 सबत्त १५५४ १६४ ६२१६  
 सबत्तक ६२१  
 सबत्तना ६२१६  
 सबत्तिका ६२१७  
 सबसय १६ ६ ६२१  
 सबसन ६२१  
 सबाब ६२२१  
 सवाल ६२१  
 सबास ६२१६  
 सबासन ६२२  
 सबित २१५६ ६२२१ ६५४५  
 सबित ६२२१

सवृत १६२१ ६२२२  
 सवृतघमवत ६२२३  
 सवृति ५१ १ ६२१६  
 सवग ६३२६  
 सववन १६६५  
 सवेशन ६२२३  
 सवशना ६२२३  
 सवशनी ६२२  
 सव्यान ६२२  
 सशय १ २ २५ २ ५३  
 २६ २ ५३ ५ ६६ ५४ ७ ५ ७६  
 सशोधना ६३३१  
 सशोधन ६२६  
 सश्वय ५  
 सश्लिष्ट ६२३  
 सश्लव ४ ३३  
 सश्वत ६२२५  
 सश्वत ५ १६  
 ससव ६२२५  
 ससरण ६२२६  
 ससग १६  
 ससप ६२२  
 ससार २ ६२२  
 ससिद्धि ५ २ ६२२  
 ससृति ६२२  
 ससृप्ति ६२२  
 ससृष्ट ६२२६  
 सस्कार ३६५१ ३६६३ ६२२६  
 सस्कृत २५ ३ २ ६२३  
 सस्कृताग्नि ३६३४  
 सस्तर ६२३१  
 सस्तव ६३१  
 सस्तार ६२३१  
 सस्तवान ६२३१  
 सस्त्याय ६२३२

सस्या ६२३२  
 सस्याचर ६२५  
 सस्यान १२ ६२३३  
 सस्थित ६२३  
 सस्पश २३  
 सस्पशन ६२३  
 सहत २२ ३ ५ ६२३५  
 सहति ४ ११६१ ६५५६  
 सहतीकरण ६३१५  
 सहनन ६२३५  
 सहन्त ६२५४  
 सहरण ६२३६  
 सहण ६२३६  
 सहार ६२३६  
 सहारिन ६२३  
 सहित ६२३  
 सहिता ६२३  
 सहिताकृत ६६  
 सहति ६२३७  
 स ६२१  
 सकुटम्ब १४१६  
 सकुसुम ३५२४  
 सकत ४ १ ५४६२  
 सक्ति ५७६  
 सक्तु १११६ २ ४६ २४ २ ३ ३१  
 सक्थि ६२४  
 सक्थिचक्र १ ७  
 सक्रोधवारण ६६६५  
 सक्रीडगङ्गाजिज्ज ६ ६४  
 सखि २ ६ ६२४ ६३७६ ६६१  
 सखी ५ ५ १६६६ ६२४  
 सखीजन २ ६  
 सख्य ४४६५  
 सगर ६२४१  
 सगम्य ६३६

सगोत्र २३२५  
 सङ्क १ ४६ ६३२  
 सङ्कर १ १ १ ६२ २  
 सङ्कसुक ६२  
 सङ्कचित ६२४५  
 सङ्कतस्थान १५५६  
 सङ्कम २ ५१ ६२ ५ ५  
 सङ्कय ६२ ६  
 सङ्क २६५ २१ ६२४ ५ ६३  
 सङ्गमात्र १७  
 सङ्गत १२ २ ६२३५  
 सङ्गति ६६ ४५  
 सङ्गम ६४ ६२ २६६१ १ ६२४  
 ६६ ६३२१  
 सङ्गर ३ ४१ ६२५  
 सङ्गवर्जित ३ २३  
 सङ्गप्रह ६२५१ ५२  
 मङ्गहलोक ६७  
 सङ्गहीत ५  
 सङ्ग ६ २ ३१६ ३६ ६ ५ ६४  
 सङ्गवादिन ६२५२  
 सङ्गातिकारणा ६२५  
 सखि २ ६  
 सखूड ६ १६  
 सखिब्रवीषव्रय २६१५  
 सखोभा २१ ६  
 सखट १ ५१  
 सख १२१३ ६२५५  
 सखन ६२ ५ ३४२१ ६२५५ ६३६४  
 सखना १२ ६ ६२५६  
 सखजात ६२५५  
 सखचार ६२५  
 सखचारक ६२५  
 सखचारिका २६ ६२५  
 सखचारित ६२५

सखजय ६२५६  
 सखजात  
 सख ६२६३  
 सखा ६२६२  
 सखमोगण २ २२  
 सखी ३२१ ६२६  
 सखीन २५३६  
 सखुषहविष्य १  
 सखुषानामसामन ३ १  
 सखुष्ण ६२६  
 सख ६२६३  
 सखुत २ ६१  
 सखुति ६४ ६  
 सखम ६२६६  
 सखा ३६६३ ५६५ ६२६  
 सखातियोगिन् ४  
 सखि ६२  
 सख ६४ ६  
 सख ११ २६ ३ ६३६ २ ६१  
 २ ६२ २ ६२६ ६६  
 सखङ्कार ६२ १  
 सखमामा ३६ ६  
 सखमामा यकृष्णपत्नी ६२  
 सखयक्त ६२ १  
 सखवती ६२  
 सखयवत ६२६६  
 सखवाच ५ ६  
 सखा ६२  
 सखाकृति ६२७१  
 सखाद्यकमुक्मन ३ ६  
 सख ३६६ ६२६६  
 सख ६३५६  
 सखमखातर ६४  
 सखशाल ३६५३  
 सखाद्यकमुसबस् ६२२५

सत्राख्यकृत ३६२  
 सत्राख्ययज्ञ ३६२  
 सत्र ६ २५ ६४ ४५१ ५ ६२६  
 सत्रजातीय ३ ५६  
 सत्रवपय ६३ ६  
 सत्रनिवृत्त ६३ ७  
 सत्रवर २३१ २ ४  
 सत्रवरहित ३२१  
 सत्रकष ६२२६  
 सत्रसङ्गत २ ६२  
 सत्रवर्णक २५  
 सत्रवन ६२७२  
 सत्रवस् ६२२५ २  
 सत्रवस्य ६२७४  
 सत्रवस्याक्रमण ६२  
 सत्रवागति ६२  
 सत्रवाचार ३३१३  
 सत्रवाच ५६६२  
 सत्रवादान ६२६६  
 सत्रवाकल ६२ ५  
 सत्रवुम ६५ २  
 सत्रवूम ६५ २  
 सत्रवृश १५४ २३७ २६६४ ३ ५४ ५४१६  
 सत्रघ्न १६२६ २१ १ ६२७५  
 सत्रघ्न पाक ६२७६  
 सत्रघ्नोजात ६३१५  
 सत्रघ्नोष ६ १  
 सत्रघ्नत ६ ६  
 सत्रघ्नत ६४ ३  
 सत्रघ्नमसमूह २६४४  
 सत्रघ्न ६२७६  
 सत्रकवि ६ ३  
 सत्रत ६२७७  
 सत्रतकुमार ५  
 सत्रासन ५६६२ ६२७७

सत्राभि ६२  
 सत्रनि ६२७  
 सत्रनोति ६२  
 सत्रतत २६५५  
 सत्राति १४ ६ २ ११ ३ १३ ६२७६  
 सत्रातन २१ ५ ३१५ ३६२ ६२ ६  
 सत्रातप ५१ ६१ २३ २ २४२१ २ ३  
 सत्रातुष्ट ३ २३  
 सत्रातोष २ ३६  
 सत्राशन ६२ १  
 सत्राशनकममत ६२ २  
 सत्रावष्ट ६२ १ २  
 सत्रावेश ५२५  
 सत्रावेशहारक २६  
 सत्राधा २ ३  
 सत्राधान ६२ ३  
 सत्राधानकमन ६२ ३  
 सत्राधानी ६२  
 सत्राधि ४१ १ ६ ५५३५ ६२ ५  
 सत्राधिनी ६२ ६  
 सत्राधिला ६२ ७  
 सत्राधिसाधन ६२ ५  
 सत्राध्या ५ १ ७२ ५४२२ ५  
 ६२ ३  
 सत्राध्याराग ३२  
 सत्राघ्न ६२  
 सत्राकद्रुप्रसव ३३५५  
 सत्राकद्रुवृक्ष ३३५४  
 सत्राकद्र ६२५५  
 सत्राकद्रव्य ६२ ६  
 सत्राविशब्दावयव ३६७२  
 सत्राष्ट ६२ ६  
 सत्राभिपात ६७४५  
 सत्राक्ष १ ६४  
 सत्राक्ष ६२२३



सपिण्ड ६२७  
 सपुष्प ३५२६  
 सप्तसख्या २७  
 सप्तक ६२ ६  
 सप्तकी ६२६  
 सप्ततष्ट ३४६  
 सप्तवशारन ५ ७  
 सप्तधाविभक्ताङ्गुलितृतीयोर्ध्वांश ६३२  
 सप्तपण २ ४  
 सप्तपूरण ६२६  
 सप्तम ६२६  
 सप्तममासकतव्यध्याङ्ग ६२ ६  
 सप्तमराशि २४  
 सप्तमविभक्ति ६२६१  
 सप्तमसामभव ३३५३  
 सप्तमात ३६२३  
 सप्तमी ३६४६ ६२६  
 सप्तव्यय ३६७१ ३७४५१  
 सप्तावि ६२६१  
 सप्तला २ ६६ ६२६२  
 सप्तलाक्यपुष्पवली ५४५६  
 सप्तलानामह्यावर ४ ३६  
 सप्तलासन्नकपुष्पवलिभव ४३ ४  
 सप्तसख्या २७ ५२६४  
 सप्तसङ्ग ६२ ६  
 सप्तज ३६२  
 सप्ततिक्त ६५६५  
 सप्तरोह ३ ७  
 सफल २६१  
 सफेन ३ १३  
 सन्निधुशम्बर ३५ २  
 सभा १६७ ४६५१  
 सभासाध ६२६२  
 सभास्थानु १ ६३  
 सभ्य १६१ ६२७४ ६२

सम ४ २६ २८  
 समध ३५५६  
 समङ्ग ६२६३  
 समङ्गा ६२६४  
 समञ्जस २६ ४ ३ ६ ६२६४  
 समत्सर ६६१  
 समवेस २४ ६  
 समपद ६२६५  
 समपितामह  
 समप्रतिमा ३ ६  
 सममहीतल ५ २  
 समय ६ १३१७ ६२६६  
 समर ६३ ६  
 समरात्रिदिव ५५ २  
 समथ ६ २ १६५ ६ ४६ ६२६  
 समथक ५ २  
 समथन ६२६ ६३ १  
 समर्थीकरण ६२६६  
 समघन ५  
 समर्यावि ६२६६  
 समवर्तिन ६३  
 समस्तपाठ ३२  
 समस्तपाठपपाठ ३२  
 सभांश ३५१  
 समाकाल ५७७१  
 समाघात ६३  
 समाधि ३६३२ ४५७१ ६३ १  
 समाधिरूप ६३ ६  
 समान ६ ६२३६ ६३ २  
 समानजातीयशिपिसहति ६१७  
 समानाधिसमवित ६३ २  
 समानार्थ ६२६७  
 समानाहारकावि ६३ ५  
 समापन ३२६७ ६३ ३  
 समाप्त ४११ ६२३४

समाप्ति ४१ ६४ ६२३२ ३३ ६३ ३  
 समारम्भ ३ ६३ ३१६६ ६३ ४  
 समारम्भ १ २ २६  
 समालम्ब ५३६  
 समालम्ब ४ ७  
 समावृत्त ५४३ ६६ ५  
 समावृत्त ६ ४  
 समासभट्ट २७५२  
 समासशक्ति २१  
 समासाढावाक्य २५७२  
 समाहार ६३ ४  
 समाहित ३६३३ ४५ ६ ६३ ५  
 समाह्वति २ ४  
 समाह्वय ६३ ६  
 समिति ६३ ७  
 समिवाधानच ६३६६  
 समिवाधानसमिध ६३६६  
 समिध ६३ ७  
 समीक ६३  
 समीप १४२ २ ४ ५ २ ६ २४  
 ३ ५४ ४४४७ ६२६६  
 समीपग ७ ५  
 समीपगमन ६  
 समीपशायन १६  
 समीर ६४३  
 समीरण २६२५ ६३  
 समुच्चय १ ५ २१७ ४ ७१ २४६६  
 २५३ ५२४५  
 समुच्चय ६२५१ ६३ ६ ६५  
 समुच्चय २५१ ६३४५  
 समुत्थाप ६३१४  
 समुच्चय ६३ ६ १४ ६५४३  
 समुदाय ४७  
 समुदाय ६३१ १७  
 समुदाय ३४ २

समुदाय ६३ ६  
 समुदाय ६३१  
 समुदाय २५ २१ २ २६ ३ १ ४५  
 १४३ १५४२ २४६ २६ २ ६१  
 २६५२ ३ २ ४ ४२६१ ४५६  
 ५ ५६ ५१ ४ ५२४ ५३ ६३  
 ११ ६ ३५ ६५६ ६६३ ६ ६३  
 समुदाय २३  
 समुदायवनीत ६३१३  
 समुदाय ४२ ७  
 समुदाय ३५५४  
 समुदाय ६३१३  
 समुदाय ६३१  
 समुदाय ६३१४  
 समुदाय ६३१५  
 समुदाय ५ ५२ १ २३ १२ २ २ ४  
 २२६२ २६४६ ६ ३ ६३ ४५ २  
 ५ ५१ ५३२६ ५७ ६ ६४ ६२३२ ५३  
 ६३ ७ ६ ६५५७  
 समुदाय ६३१५  
 समुदाय ६३१६  
 समुदाय ६३१६  
 समुदाय ७६३ ५ ४३ ६  
 समुदाय ५५ ६ ६४३२  
 समुदाय ४ २  
 समुदाय ४ २६ ६१६७  
 समुदाय ५ ४ १ ५४५ ६३१७  
 समुदाय २५६ ६५४४  
 समुदाय ५७४  
 समुदाय ४७६६  
 समुदाय ५ १  
 समुदाय ६३१ १७  
 समुदाय ४७६६

सम्प्रयथ ६५  
 सम्प्रदाय ५५२  
 सम्प्रधारण १६३२  
 सम्प्रधारणा ६२६६  
 सम्प्रयुक्त २६२  
 सम्प्रयोग ६३१  
 सम्प्रवणा ६३१६  
 सम्प्रवणी ६३१६  
 सम्बद्धाथ ६२६  
 सम्बन्ध १ ५ १ ५७५  
 सम्बाध ६३२  
 सम्बुद्धि ६६६५  
 सम्बोधन ५२ ३१ ६६ ६३६ ६  
 ६२५ ३५ ५६ ५  
 सम्बोधनविभक्ति ५४६  
 सम्बोधनाथ ६४  
 सम्भवत ५ ३६  
 सम्भक्ति ५ ७ ५५७२ ४ ३  
 सम्भव ६३२१  
 सम्भाग ५५ ६३२  
 सम्भावना २१ ६ १ १ १६ १३६४  
 ५४११ ६३२६  
 सम्भाव्य १३७१  
 सम्भूत ६३२२  
 सम्भव ६३२७  
 सम्भ्रम ५२ ३११ १ १६, ४ ७१ ६३२६  
 सम्भ्रात ६५५२  
 सम्मति १ ६ ६३२६  
 सम्मव ६३३  
 सम्मगा ६३३  
 सम्मगान ६३३  
 सम्मान ६३२६  
 सम्मानना ६३३१  
 सम्माननी ६१४१ ६३३१  
 सम्मानयवपुञ्जित ६२४२

सम्मन्त्र २५३  
 सम्मुखि ६३३१  
 सम्यकप्रवण ६३१६  
 सम्यकस्थित ६२३  
 सम्यकस्थिति ६२३३  
 सम्यगुक्त ३६६६  
 सम्यगारम्भण ६३  
 सम्यगाहित ६३ ५  
 सम्यक्मनो ३ ६५  
 सन्नाज ६३३२  
 सम्बन्ध ५ ६  
 सरक ६३३५  
 सरधा १६७ ६३३६  
 सरट ६ १५२२ ३ ५४  
 सरटी ६३३  
 सरण ६ २  
 सरणि ६३३  
 सरण्य ६३३  
 सरण्यु ६३३  
 सरधि ६३३६  
 सरन्ती ५२३  
 सरयू ३४५६  
 सरल २५६७ ३५ ३ ६३३६  
 सरलानु ३३६४ ५२ ५  
 सरस् २२६ ६२ २ ६३३४४  
 सरस ४६७१  
 सरसी २ ६४ ३१४२  
 सरस्वत २ ६ ६३४१  
 सरस्वती १६ २३१६ ३२ ६ ३५ ६  
 ४७ ५ ५१४६ ५२५ ७५ ५३१  
 ५४२१ ५६५३ ५४ ५६३५ ६३४२  
 सरस्वतीवेणी ३ ६  
 सरस्वतीवीणा ६६  
 सरस्वतीसम्बन्धि ६४  
 सरागा ६२ २

सरिजल ६६३६  
 सरित् ७४ २२६ १४६ १६६ २३२६  
 ६३ २५६२ ४३४६, ५६३६ ६३४४  
 सरित्पति २ ७६  
 सरित्प्रवाह ६६३६  
 सरित्तर ३२७६ ३ ५६  
 सरित्त्रिव २ ६२  
 सरित्त्रिव २ ४२ ३५१६ ३६  
 सरोमुप २११५ ६३४५  
 सरोजशकुनि २६३  
 सरोजिनी ३५  
 सरोमेव ४६२ ३४१६  
 सरोमान्ध ३७४ ६ २  
 सरोयुक्त ६३४४  
 सरोवह २२७  
 सर्व ६३४५  
 सख २५७६ ४ ३६  
 सखक ६३४६  
 सखन ३ १ ६५११  
 सखरत १ ७२ ४ ५  
 सर्व ६३  
 सर्व ४२४ ७६२ ६७४ १४६६ १६४  
 २२६१ ६२ २५ ६ २६ ११४ ४ २७  
 ५ २६ ४ ३ ३१४६ ३५७७  
 ३६२२ ४ ५३ ४२२७ ४६ ६ ४  
 ५४४१ ६७ ५ ६ ६ ६ ६३४६ ७६  
 ६५ ६ ६ ६७७२  
 सपकञ्चुक २६ ६ ४६१४  
 सर्वगघालाशेषि २६ १  
 सर्वजातिप्रद ४११७  
 सपचात्यन्तर २६ १  
 सर्ववष्टा ६ ६  
 सपवष्टा ६३४७  
 सपप्रमेव २७६३  
 सर्वकज २६

सपम ६१२  
 सपमव ३३७३  
 सर्वमात्र १२४  
 सपराज ६३४  
 सपलोचना ६३४६  
 सपविवर ४२ ६  
 सर्पा ६४६  
 सर्पान्तर १२४  
 सर्पित् २५ ६३४६ ६५१  
 सवग ५४५३  
 सर्वगघ ६३५  
 सवजनप्रिया ६३५१  
 सवजस्तु २२६३  
 सर्वज ५६६५ ६३५१  
 सर्वतत् ५५१२  
 सवतोमत्र ६३५२  
 सवतोमत्रकाय ३४ ४  
 सर्वतोमत्रा ६३५३  
 सवतोमाव ३१६६  
 सवतोमुख ६३५४  
 सवप्रकारभद्र ६३५३  
 सर्वभक्ता ६३५  
 सवमङ्गला ६३५५  
 सर्ववर्तितभद्रि ६३५५  
 सववर्तिन् ६३५१  
 सर्वसन्नाह ६३५५  
 सर्वार्थसवनामन् ६४३७  
 सर्वो जलोक ५११६  
 सवो घ ६३५६  
 सर्वो १ २२ २३ २५४७ ३३२ ६३५७  
 ६४३२  
 सवपास्तार ४६६  
 सर्वो १७ ६ ६३५  
 सल ६३५५  
 सलकज ६३५६

सलम्ब ६३५६

सलिल १ ६ २ ३ ३३ ४

६४५ १६६ ७१ १ ५३ २३ ६ २७ ६

२ ६ ३४६१ ३६ २ ६५ ४१५

४ ६ ५ ५३ ६३४ ६

सलिलकिमि ६ ४६

सलिलप्रिय ३ २

सलिलबीचि १३

सलिलामिध ३६१२

सलील

सलीलहस्तिनी ६१ ३

सलकी १ ३ १७ ६६३६

सलकीभव ६ ५

सलकीवृक्ष ३७५२ ६२

सवा ६३६१

सव ६३६१

सवन २६६ ६३६२

सवनयोगिन् ६४१५

सवण ६३६३

सवलन ५१

सवात ५२६६

सवितव्य ६३६४

सवितु ६ ६

सवितुयोगिन् ६४१६

सविपत्ति ५३

सविघ्नम ४६ ३

सविलास ४ १

सविशतिशताङ्गुल ३४६

सविष ५७ ३ ६२ १

सविषक्षुब्धजन्तु ३४२६

सव्य ३७२६ ५३१६ ६३६

सशिखमुष्ण २५१२

सशफक ३४६५

सशैबल ६१३५

सशोणित ४६ ३

सशोणित ६४२६

ससमभ्युषित ३३१

ससु २६५

ससौहाव ६६

सस्य ३ ६७ ३ १ ६३६५ ६४४१

सस्यक ६३६६

सस्यममि ६४ १

सस्यसम्पन्न ६३६६

सहस ६६ ५

सहस्र ६३६

सहस्रारिन् ६३६

सहज ६३६

सहवेवा ६३६६

सहवेवाछपपाण्डव १६ ३

सहवेवाप्रज २ ४६

सहर्षमिणी ३६

सहभाषण ६३७

सहवात ६२१६

सहवासन ६२२

सहस्र ६३

सहसान ६३ १

सहसानु ६३ १

सहस्र ६३७२

सहस्रनिबृत्त ६ १

सहस्रपत्र ६३ २

सहस्रवत् ६ १

सहस्रवीर्या ६३ ३

सहस्रवधिन ६३

सहस्रसमह ६४१

सहस्रांशुतरङ्ग २६ ३

सहा १४५१ ४ ६३ ६३ ४

सहाय १ ५ ३ ७ ३६५३ ५ ५ ५

५ ४ ६५ ६२४ ६३ ६

सहाय १४१ २ ५

सहुरि ६३

सह्य ६३ ६ ६६ ४  
 सह्यवय ६३७  
 सहोक्ति ६३७  
 सहोत्पन्न ६३६  
 सहोर ६३७  
 साध्यगुण ६२६  
 साध्यतुष्ट्यन्तर ३२ ५ २  
 साध्यपुरुष ३४४२ ६  
 साध्यप्रधान ४४  
 साध्यवादिन् ३ ६६  
 सायाजिक ६३  
 सावत्सर ६३ १  
 सावत्सरक ६३ ३  
 सावत्सरिक ६३ ३  
 सावत्सरी ६३ २  
 साशयिक ६३ ४  
 सा ६३  
 साकय २५३ २१५६ ३ १ ३१६५  
 ३२ ७  
 साकब ४७४७  
 सागर ६१२  
 साक्षिक ६  
 साङ्गववपठ १५  
 साक्षिमह २४५२  
 साङ्ग ६३ ४  
 साङ्गवधि ३५ ३  
 साङ्गकि ३ २६  
 सात ६३ ५  
 सातपनष ५१ ५  
 सातला ६२६२  
 सातवाहन ५६६२  
 साति ६३ ५  
 साती ६३ ५  
 सात्मन् ६३  
 सात्त्वत ६३ ६

सात्त्विक ६३ ७  
 सात्त्विकी ६३  
 सावर ५२५ ३६६४  
 साविन ६३ ६  
 सावृण्य १४१ २४ २ ५ ३६  
 ४५३१ ६५  
 सावृण्यविषयिन ५  
 साधकतम १११  
 साधन ३५५ १११ १३६४ २१६६  
 ४ ६ ५ ६३ ६  
 साधना ५ ५ ६३६  
 साधनीय ६३६६  
 साधारण ६३६१  
 साधारणा ६३६२  
 साधारणी ६३६१  
 साधिष्ठ ६३६३  
 साधीयसी ५  
 साधीयस् ६३६३  
 साधु ७४ २ ७२ ७६ ३६४५ ७५  
 ५६२३ ६२५५ ६३६२ ६३६४ ६  
 ६४४३  
 साधुजन ६ ३१  
 साधतम ६३६३  
 साधुतर ६३६३  
 साधुयोषित्  
 साधुमर्तु ६३३५  
 साध्य १२६ ३ ७ ६३६६  
 साध्यस २५६ ६३२६  
 साध्वी ६३६५  
 सामसि ६३६७  
 सामु ५ ५४ ६१२  
 सामुप्रहासलोक २४६  
 समनुराग ४६ ३  
 साम्ब ६३६७ ६६  
 साम्बन १७६७ ६३६७

साम २ १७ ३३३६ ३ ५ ५१ ४  
 सामनिर्यास २ १६  
 सामि य ६२  
 सामिपातिकरोगविशेष ६६११  
 सामग २ १  
 सामज ६३६  
 सामततीयभक्ति ३६६  
 सामद्रष्टविशेष २ २  
 सामन् १ ६६२ ३ ६ ३५ ६२३  
 ६३६  
 सामप्रथमभक्ति ३ १  
 सामप्रभव ३६६ ६३६६  
 सामप्रस्तावभक्तिगातु ३ ४३  
 सामभिद् ३ ६१ ३ ५५  
 सामभव १६५ ५ २ ६ २२१ ४  
 २३३२ ५ २ ३६ ३५१३ ४२  
 ६२६  
 सामध्य ५ १२ ३१६२ ५ १३  
 सामविशेष ५१६  
 सामवव ६६२  
 सामवटप्रवण ३ ६५  
 सामव ओङ्कार ३ ६६  
 सामसमुद्भव ६३६  
 सामसूत्र २३७  
 सामस्तोत्र ६६१  
 सामाजिक ६२६२  
 सामातर ३१४७ ३५ ३६ ४ ६१  
 ५३ ७  
 सामाय २२६२ ६३६१  
 सामायगमन २३१५  
 सामान्यजनसेवन २१  
 सामान्यधाय ५ ६  
 सामान्यधाय ७२  
 सामारण्यक ३२३  
 सामिधनी ६३६६

सामीप्य २ ४७६ २६४२  
 सामग्र ६४  
 सामुद्रलवण ६ २४५ ४ ५ ५२ २  
 ६ २  
 साम्पराय ६  
 साम्य २ ६ ६६ ६६१  
 साम्ल ३ ४  
 सायक २३६६ ३ ६३ ५२ ५ ६४ १  
 सारक ६४ ६  
 सारङ्ग ६ ३  
 सारङ्गी ६ ४  
 सारथि १६५३ २५६६ २६६ ३ ४६  
 ३७३५ ५ ६ ६४६५  
 सारस १ ६२ १२ ६ ३ ६६ ३५ १  
 २ ६ ६६६ ४ ११ ५ २६  
 ६४ ७  
 सारसाक्ष्यपणिन् १६५२  
 सारसी ४ ११  
 सारस्वत ६४  
 सारिकमन ६४ ५  
 सारिका ११ ६ १३६ ४४१ ४६ ३  
 ६४ ६  
 सारयितु ६४ ६  
 सारसनसम ११६  
 सारिवा ३६४६ ५६४  
 सारिवालयमवण १६५५  
 सारी ६४ ३  
 सार्थ ६४१  
 सावभौम २ ४४ ४६६१ ६ १  
 सालनिर्यासिक ११७३  
 सालपर्णी २ ४४ ६५६  
 सालमन्त्री ३४२७  
 सालाबुक ६४१२  
 साव ६ १३  
 सावापय ६४१४

साल्मावयव ४ २१  
 सावधान १२७  
 सावन ६ १४  
 सावर ६  
 सावित्री ५६५ ६ १५  
 साष्टकशत ३ ६  
 साहस ६ १६  
 साहसिक ११ २  
 साहस्र ६ १  
 साहाय्य ६ १  
 साहित्य ५२५  
 सिंह ११७ १३६ १५७ १ १६  
 १६२ ३ ६ ४३ ४ ५६ ५५१२  
 ५ ६ ५६५६ ६१३३ ६ १६ ६  
 १७-३४ २  
 सिंहकेसर ६२६२ ६४२१  
 सिंहपुच्छी ६४२१  
 सिंहमल ६४२२  
 सिंहराशि ६ २  
 सिंहबिक्कम ६ २२  
 सिंहशत्रु ५ ६५  
 सिंहसङ्ग १५  
 सिंहकृति ५६ ४  
 सिंहाद्यवस्थातर ६५  
 सिंहाण ३२५६  
 सिंहास्य ६४२३  
 सिंहिका ६४२३  
 सिकता ३ २ ५३५३ ५६ ६४२४  
 सिकतापुलिन ६५२  
 सिकतावत ६ २  
 सिकतिल ६५२  
 सिकतिलवेश ६४२४  
 सिमत ३७ ५ ६३  
 सिन्ध ६५१४  
 सिन्ध ६४२५

सित ३६१ ६६ ३४ ६ ६१ १ ६४२५  
 सितकठि जर ३४  
 सितकाचर १ १  
 सितकुञ्जर ६ २  
 सितक्रोड २१३६  
 सितच्छव ६४२७ ६६६६  
 सितदूर्वा १६६ ४ ६१  
 सितपद्म ६१७  
 सितपिङ्गाभरण ५ ६६  
 सितवण ६ ६६  
 सितशफालिका ६१६६  
 सितसषप २५१३ २५४  
 सिता ५ ६७ ६ २६  
 सितापाङ्ग ६४२  
 सिताम्ब ६ २  
 सिताम्भोज ३४ ६  
 सितायुध ६४२६  
 सिताकक ३६६  
 सितावर ६ २१  
 सितोपल ३ ३६  
 सितोपलविशेष ६३२  
 सिद्ध ३७३४ ६४३ ३१  
 सिद्धरस ६४३१  
 सिद्धात १६ १५२६ २३७ ६२६६  
 सिद्धाथ ६४३२  
 सिद्धि ६२२ ६३ ६ ६४३ ३२  
 सिद्धमल ६४३३  
 सिद्धमला ६४३३  
 सिन ६ ३  
 सिनीवाली ६४३४  
 सिन्धुवार १३२ २६७  
 सिन्धुवारक २ ६१  
 सिन्धूर १ ४५६६ ४६१ ६६७४ ७६  
 सिन्धूरचूर्ण ६१२५  
 सिन्धूरपुष्पी ११ ५



सिध २ ६१ ३ १५ ४ ४२ ६ ३५  
 सिधदशज ६५२१  
 सिधलवण २५२६ २६१६ ६१३  
 सिधवार ६६१  
 सिम ६४३  
 सिमा ६४३६  
 सिरा १ ५ २ ५ ३ ६३३६  
 सिरासम्बधिन् ६५२  
 सिलिध्र ६ ३६  
 सिलिध्रबुधप्रसव ६ ४  
 सिंह ४२६  
 सिंहक १ ५६६ २५१ ३३३६  
 सिक्ककाख्यनिर्यास ३११  
 सिंहनिर्यास २ ६  
 सीता ४ ६६ ५६५५ ५ ६४४१ ३  
 सीतादेवी ४ ३३  
 सीतापितृ २२१५  
 सीय ६ ४२  
 सीवयथ ६२७२  
 सीदगुण्ड ६४ ३  
 सीम ६४४४  
 सीमन् ४६४ २६५ ६४४५ ४६२६  
 ५३ २  
 सीमतिनी २२२  
 सीमतोलयनाख्यसंस्कारकमन् १ ६३  
 सीमा ६ ६६ १६६६ ४२ ३ ४ ६१  
 ६४४५  
 सीमात ४२४२  
 सीमिक ६ ४६  
 सीर ४ ६४४  
 सीरक ४७ ७  
 सीरयोगिबोडादि ६५२५  
 सीरसम्बधिन् ६५२४  
 सीरा ६४४७  
 सीरिन् ३ ४२

सीरी ६ ४  
 सीरोपकरण ३ ११  
 सीवन ६ ४  
 सीवनी ६४४  
 सीत १५ २५१६ ४६२ ५ ५५  
 ५१ ५  
 सीसक २६ ४ ३३२ ३ ५१३  
 सीसकाख्यलोह ३ २  
 सुकव ६  
 सुकवकवमात्र ३२१६  
 सुकववशाजतिभव ३२१६  
 सुकमन् ३ १  
 सुकुल ५६  
 सुकृत २ ६ ६४४६  
 सुकृतिन् ३४२३  
 सुकेयी ६ ६  
 सुख ४२५ ५३२ ६ ५ १ ६ २३२४  
 २५ २६ २ ३ ६६ १ २६६३  
 ५ ५१ ४१ ६ ५५३६ ५ ६६  
 ५६१ ६ २ ६१ २ ७७ ६३ ५  
 ६४५ ६६२६  
 सुखसाधन ६४५ ६६२६  
 सुखा ६४५१  
 सुखोदय ६ ५१  
 सुखसदाष्टमुरमि ६ ३  
 सुगत ३६५ २ ३ ६६ ३६३३ ५७१७  
 ६४५२  
 सुगतालय ५५३  
 सुगध ३४२  
 सुगधि ६७६ १६ ६१६६  
 सुगधिप्रख्यकान्तर २६३  
 सुगधि यवहारिन् १  
 सुगण ३२५  
 सुग्रीव १ १ ६४५३  
 सुग्रीवसचिव १ ७४

सुग्रीववध ६४ ६  
 सुग्रीवा ६४५  
 सुचरित्रवती ६४५५  
 सुचरित्रा ६४५५  
 सुचेष्टा ५४ १  
 सुजग्ध ६६४  
 सुत ५१५ २६२६ ५५४६ ६४५५  
 सुता २ २१  
 सुति ६३६१  
 सुवशन ६४५ ५  
 सुवर्शना ६४५  
 सुधा ६ ५६  
 सुधाकर ४६६१  
 सुधाशक्लीकृतगोह ६५३२  
 सुधासम्बन्धिन ६५३२  
 सुधोज्ज्वल २६१  
 सुनार ६४६  
 सुनाल ६४६१  
 सुनिबन्ध ५४ ६ ५६२६ ६४६१  
 सुनिब नाट्यमलशाक २६६  
 सुनिबन्धोवधि २५१६  
 सुब ६ ६२  
 सुबर २ ६६ २१ २ २२६ २७६  
 ३ ६६ ३४३४ ३७६४ ७१ ३ २६  
 २६ ३६ ४ ४ ६६ ३५ ५१६५  
 ५३१६ ६१ २ २ ६४ २ ३ ६५३४  
 सुबरपीठ ३३६२  
 सुबराकार ३३६  
 सुन्दरीकठ वस् ५६६६  
 सुपक्वकलिक ३५६२  
 सुपरीक्षण ७६  
 सुपण ६४६२ ६ २  
 सुपर्णी ६४६३  
 सुपाश्व ६४६४  
 सुपाश्वीकृपशिवस्थानस्थशिवा २६३४

सुप्त ६४६५  
 सुप्तविज्ञान ६६४५  
 सुप्ता ६४६६  
 सुप्तिङत ३१३२  
 सुप्रतीक ६४६६  
 सुप्रतीकिनी १५  
 सुबत २ ६६  
 सुबादि ३६७२  
 सुबहाण्या ६४६७  
 सुभग २ ४  
 सुभ ४३१३  
 सुभवा २११२  
 सुभिक्षा ६४६ ६६  
 सुम १११६  
 सुमनस् ६ ६  
 सुमुखी ५५१  
 सुमेधा ६४  
 सुमय १६५  
 सुयामन ६४  
 सुर ६ २ २३ ४२१ ४६६ ५४ ४  
 ६ ७१ ६५२  
 सुरगठ २३३६  
 सुरङ्ग ६२ ५  
 सुरत ७ २७६४ २६६२ ३ ५ ४४६६  
 ४६३ ३६ ५७६ ६३१ ६६६  
 सुरतताली ६४७१  
 सुरतयोगिन् ६५३६  
 सुरदुमेव ३२६५  
 सुरमाव २४४४  
 सुरमि १ ३४२ १२३ १६६६ १६३७  
 २२ २७६३ ३७४२ ४६२ ५२ ४  
 ६४७२ ६५३७  
 सुरमो ३ ५५  
 सुरव लभ ६४ ४  
 सुरसा ६४७४

सुरा २ ६ ३ ३ ६६६ १२१ १ ४५  
 ४ २ ७६ २३६ ३ २३ ४३५४  
 ५३३ ५५४ ६४ १ ६ २५  
 सुरागह १ १६  
 सुराजन् २ ३५  
 सुरातर ३३२ ६१६५  
 सुरापान २ ६६  
 सुरापानगोष्ठी ५  
 सुराम १३ ६  
 सुराष्ट्र ६ ५  
 सुराष्ट्रक ६ ६  
 सुराष्ट्रकाह्वयमषज २  
 सुरास्त्रावणपान १३१  
 सुरी ६४ १  
 सुवङ्गा ६२  
 सुरूप २७ ६ ६४७७  
 सुरूपस्त्री ५१६  
 सुरूपा ६ ७  
 सुलवणा ६४७  
 सुलोह ६४ ६  
 सुवयमय ६५१  
 सुवचला ६४ ६  
 सुवण ६ ७ ११७६ २२६१ २ ६६  
 ३३७ ६ ३५६१ ३६५२ ४ ३५  
 ४ २ ४६२१ ५१२२ ३ ५२४२  
 ५६१ १६ ६ ६४ ६३६७ ६६६७  
 ६ १६ ३६  
 सुवर्णा ४६६१ ६४  
 सुवर्ण्य ६१४२  
 सुवहा ६४ १  
 सुवहाय ५४३४  
 सुवाक्यमषज ४७१६  
 सुवाप्र १ ७३  
 सुविदत्त ६४ २  
 सुविद्या ६४ २

सुविश्वास ३ २६  
 सुवलात्रि २५२६  
 सुवष ६१२५  
 सुव्रता ६४ ३  
 सुषमा ६ ३  
 सुषि वत ६ ५  
 सुषिर ६ ४  
 सुषिरा ६ ५  
 सुषण ६ ६  
 सुषणा ६४  
 सुष्ठवष १ ६  
 सुष्ठकृत ६ ४६  
 सुष्ठहित ६  
 सुस्तुत १  
 सुस्तर ६  
 सुस्थिति २६६३  
 सुहित २ ६६ ६  
 सुहृत् ३ ६२ ४३६ ५५६१ ५ ४  
 ६२४ ६४  
 सुहृत्तल ६२५  
 सुह्य ६४ ६  
 सुकर १३६ १ ५३ १५६  
 १६३ ५१ २  
 सुकरमखाय ३५६६  
 सुक्म ६ ६  
 सुक्मकेश १५ ५  
 सुक्मजीरक १३३३ ६ ७  
 सुक्मजीरकमद ३४  
 सुक्मतीरक ६४  
 सुक्मवसन २६६३  
 सुक्मार्ग ४६ १  
 सुक्मा ६४६  
 सुक्मला ६६१ ७ १ ७ १२ ३  
 २४७ २ २५३६४ ४४ ३ ५ ६३  
 ५६६३

सूच ६४६२  
 सूचक २ ५ ३३५ ४१७७ ६४६  
 सूचन ६४६२  
 सूचना ६४६१  
 सूचा ६४६२  
 सूचि १५१४ ६४६२  
 सूचिका १३६४ १५  
 सूची ५ ७२ ६४४ ६३  
 सूचीमुख ६४६३  
 सूचीसूत्र ३३५२  
 सूचय ३५४  
 सूत ३ ४४ ५३ ६३ ६ ६४६५  
 सूतक ४ ३ ६४६६  
 सूतका ६४६  
 सूतकाग्नि २ ६  
 सूतमुनि ४६२५  
 सूति ६३६१ ६४६६  
 सूतिका ६४६७  
 सूतिगृह ३२४  
 सूतिमस्त्री ३७३५  
 सूत्या ६३६१  
 सूत्र १७ ७३ २३७४ ६४६  
 सूत्रनिर्विष्टविक्रय ३ १  
 सूत्रवल्ल ५६३  
 सूत्रवष्टन २५२२  
 सूत्रवेष्टशालाका २४  
 सूत्राविसूकमाश १  
 सूत्रित १ ४३  
 सूब ६४६  
 सूबा ६४६  
 सून ६४६६  
 सूना २३६३ ६४६६  
 सूनु ६५  
 सूप ३३११ ६४६ ६५ १  
 सूपकार १६ ७ ३३११ ५१ ६ ६४६६

सूपकृत ६५ १  
 सूपभक्त १४ ६  
 सूम ६५ १  
 सूर ६५ २  
 सूरण ३६३ ६३३ १ १५ १६ ५२६२  
 सूरि ६५ ३  
 सूप ६५ ३  
 सूम ६५ ४  
 सूमी ६५  
 सूय १ २ २७ २६४ ३२७ ३ ३३  
 ४१६ ६ ५५२ ५६ ६७६ १ ३६  
 १२ २ १३७३ १४२६ १७६४  
 १ ६ २१२ २६ २३३१ ६ ६२ ६३  
 २४५६ २६४२ २ ७ ६६ ३ ४४  
 ३१४६ ३२३६ ३३४५ ६१ ३४६५  
 ३५७७ ३६ ५ ६३ ३६१५ ३२ ४ ३  
 ४७ ४४३ ४५४३ ४६३२ ७५ ४७३४  
 ४६१ १ ५१ ५ ५२१४ ५४४७  
 ५१ ५२७१ ६ ६४ ५५ ५ २४ ६३  
 ५६ ६ २१ ५२ ५६ ५७ ५७२६ ६२७४  
 ६५ २ ४ ६६६६ ६७१३ २६  
 सूयकात ४६  
 सूयगतव्यविश ३६ ७  
 सूयग्रह १ १२  
 सूयचन्द्रग्रह ६  
 सूयपत्नी ६३३  
 सूयपत्नीभव २५५७  
 सूयपन्यन्तर ३६६३  
 सूयमार्यान्तर ६२६१  
 सूयरश्मिभिद् २ ६  
 सूयसारणि ३२७ ३७६  
 सूयसुत ४७५४  
 सूया ६५ ४  
 सूयावित्त १ ५६ २२६७ ४ ७४ ४५ ७  
 सूयावित्तक ४ ६

सूर्याख ६ १३  
 सूर्योपराग ४२२७  
 सुक ६५ ५  
 सुगाल ३ ६५ ५  
 सुगालक २२२६  
 सणि ६५ ६  
 सुणिगुण ३२६  
 सुणीक ६५ ६  
 सुणीका ६५  
 सुति ६ ६५  
 सुवन ६५  
 सुवरी ६५  
 सुबाकु ६५ ६  
 सुपा ६५ ६  
 सुप्र ६५१  
 सुप्रा ६५१  
 सुमर ६५११  
 सुष्ट ६५११  
 सुष्टि ६५१२  
 सुष्टिकृन्मात्र ६६३३  
 सेश व ६५१३  
 सेकपात्र ३ ६५  
 सेकमिभ्रात्र १११६  
 सेकतु ६५१३  
 सेवक ६५१३  
 सेवन ३७३६ ६५१४  
 सेतु ५ ५ ३ ७६ ५१३ ५३३ ६५१४  
 सेन ६५१५  
 सेना २३७ २५६६, ३५६५ ६५१५  
 २३  
 सेनाङ्ग ६३६  
 सेनामी ६५१५  
 सेनापति ६५१५  
 सेनाविशेष २ ३  
 सेनासमवायिन ६५२१ २३

सेव ६५१६  
 सेवक १ ४५ २२६६ ३६३ ३ ५ ६  
 ६३ ६ ६५१३ १६  
 सेवन १ २६ ६ ४ ६५१३  
 सेवना ६५१  
 सेवनीय ६५१  
 सेवा ३ २३२३ ३६३ ६१६ ६५१  
 सेवापरायण ३ ४  
 सेवित २३१३ ५ ३  
 सेवित ६५१६  
 सेव्य ६५१  
 सेव्या ६५१६  
 सहिकय २६६५  
 सकत ३२६१ ३ ६५२  
 सनिक १ ११ ६५२१  
 सधव २ ६२ ३ ६ ४४१३ ५४ ३  
 ५६६३ ६ ७२ ६ ६५२१  
 सधवलवण ६२ ७ ६४३  
 सधवनामलवण ३ ६  
 सधवादि ४ २  
 सय १३६ ४५ ६ २ २५ १  
 ५११४ ६५२३  
 समयजन ३६५५  
 समयमात्र १४  
 समयपुष्ट ३६ १४३  
 समयपुष्टभाग ३३ ६  
 समयप्रसर ६२५  
 समयरक्ष ६५२१  
 समयव्यह ६५४४  
 समयार २ १  
 सर ६५२  
 सरिक ६५२५  
 सरिझी ६५२५  
 सरिम १५६१ ४३२५  
 सोष्ठाय ४४४४

सोढव्य ६३७६  
 सोढ ६३ ६  
 सोलव्य ६३६४  
 सोलु ६५२६  
 सोप्रासहास २१६४  
 सामस्तोत्रगतस्तोमलतीर्याश ३२  
 सोवर्थ ६२७  
 सोम्माव ३३५६  
 सोपान ३ ७६ ५६७२  
 सोम ३२२ ५ ३४ ३६ ६२३१ ६५२६  
 ६७२१  
 सोमकनूवृषभ ६५३३  
 सोमवेधतवत्सर ६५३४  
 सोमप २७६१  
 सोमभवा ६५२  
 सोमयाग ६५३४  
 सोमयाजिन ६२६  
 सोमरस ३४७ ६४५५  
 सोमराजि १३२६ ३५४४  
 सोमलता ६५४ ५६  
 सोमवत ६५२  
 सोमवयमातिथि ३४६४  
 सोमवक ६५२६  
 सोमवली ४६ ६ ६५३  
 सोमसक्तप्रकाशानि ३१  
 सोमाशवाविमत् ६७३१  
 सोमोम्मान ३२ १  
 सोमि २३६३  
 सोमण २६१  
 सोमन् २ ४६  
 सोमन्विक ११४६ ६५३  
 सोमण्य ६५३७  
 सोवामनी १६५१ ६५३१  
 सोम ६५३२  
 सोम्वर्थ ४७६२

सोपितक ४१२ ३६ ६ ६५३३  
 सोभाग्य ३११३ ३६३२  
 सोभाग्यभूषण ४७२  
 सोभाग्यवती ३४५१  
 सोमिक ६५३३  
 सोम्य ४४१६ ६५३  
 सोम्यग ३७  
 सोम्या ६५३५  
 सोरत ६५३६  
 सोरभ ११७१ १२२  
 सोरभय ६५३७  
 सोरभयी ४६ ६५३७  
 सोर य ६५३७  
 सोराष्ट्र ६५३  
 सोराष्ट्रभूत १२५  
 सोराष्ट्रभूततर ६४ ६  
 सोराष्ट्री २४३६ ४ २३ ६५३  
 सोरसकान्तिमात् २४३१  
 सोवचल १४ २ ३३ ५४ २६७१ ४७३६  
 सोवचलाक्यलवण ६११६  
 सोवण ५६१६ ६७६  
 सोविवल ५ ६५७६  
 सोवीर ७ ६५३६  
 सोवीराञ्जन १ ७५  
 सोष्ठव ६५४  
 सोहाव ६६  
 सोहावकारिण ५५६१  
 सोहित्य २५ ६४५६  
 सोह्व ३६३  
 स्काव १ १ १६१६ ३ ३६१६  
 ५५४६ ३ ७७ ६४६७ ६५१५ ४ ४१  
 ६७३१  
 स्काववेव ६६६१  
 स्काववेवपृष्ठज ५४  
 स्कावज ६५४१ ४६

स्कन्दकर्तृ ६५४१  
 स्कन्दपत्नी २७ ५  
 स्कन्दोल ६५४२  
 स्कन्द २६५ ५५३ ६५ ३ ४६४  
 स्कन्दक ६५४६  
 स्कन्दकाख्यायामिव ६५४४  
 स्कन्दफल ६५४  
 स्कन्दस ६५४  
 स्कन्दावार ६ १  
 स्कन्दोपनय ६५४  
 स्कन्द ३१ ५ ६५  
 स्कन्दावी ६२ ५  
 स्कन्दवन ६५४६  
 स्कन्दवना ६५४६  
 स्कन्दल ६५५  
 स्कन्दलन ६५५  
 स्कन्दलित २१ ५ ६५५१  
 स्कन्द ३५ २ ३ ४६ ५ ५ ६५५३  
 स्कन्दबुधुक ४ १६  
 स्कन्दन ६५५३  
 स्कन्दपायिनी २७१६  
 स्कन्दभव ६५५४ ५  
 स्कन्दमध्य ६५५५  
 स्कन्दयिस्म ६५५४  
 स्कन्दवत् ३३५४  
 स्कन्दस्मभाविवधव्यवित्त ६५५६  
 स्कन्दातर ६५५५  
 स्कन्दि ६५७६  
 स्कन्दि १ ६६ ६५५६  
 स्कन्द ६५५  
 स्कन्दक १६ ३ ६५५  
 स्कन्द ४ ७ ६६७ २२१ २ ६५५७  
 ६७ १ २  
 स्कन्दकरण ६५६३  
 स्कन्दताहेतु ६५६३

स्कन्दधरोमन् ६५५  
 स्कन्द ६५६१  
 स्कन्द १२५७ १४१३ २२२ ३ ६२  
 ६३७५ ६५५६  
 स्कन्दकरि ६५५६  
 स्कन्दकारिण ६५५६  
 स्कन्दज ६५६  
 स्कन्दजात ६५६  
 स्कन्दभव ६ ३ २६  
 स्कन्दरम ६५६  
 स्कन्द ७ १३ ४ ६५६१  
 स्कन्दक ६५६२  
 स्कन्दकर ६५६२  
 स्कन्दकारिण ६५६२  
 स्कन्दकृत ६५६२  
 स्कन्दन ६५६३  
 स्कन्दनी ६५६३  
 स्कन्दपीठ २४  
 स्कन्दमात्र ५ ४  
 स्कन्दशीव ६ ६२  
 स्तर ६५६४  
 स्तरण ६५६४  
 स्तरि ६५६५  
 स्तरी ६५६५  
 स्तवरक ६५६  
 स्तामु ६५६६  
 स्तावक ५ ४५  
 स्तिमित ६५६६  
 स्तिहिति ६५६  
 स्तीभि ६५६  
 स्तीण ६५६  
 स्तुति ३३४ ६ २१५६ २६६ २ ६४  
 ३६३१ ४१ १ ५ ४२ ४४ ५१२३  
 ५२ ५ ५ ६६  
 स्तुत्य ५ ४२ ४३ ४

स्तूप १५१७ ६५  
 स्तेन ५५३ ६४ ६५७१  
 स्तेय २१७  
 स्तेयिन् ६५७१  
 स्तय ६५७२  
 स्तोक २४११  
 स्तोकाण्डरवण २ ३४  
 स्तोतु २ ६ २६१ ४ ४ ७५ ५ ४२  
 ४४ ५ ६५ ३ ६६ ३  
 स्तोत्र ५ ४ १६३ २५४३  
 स्तोम २५४३ ६५७२  
 स्त्येन ६५७४  
 स्त्रीकटिपूवभाग २२ २  
 स्त्रीकटीवसनप्रधि ३ ४२  
 स्त्रीकरण १६६३ २३१६ २६ ६५७५  
 स्त्रीकरणान्तर २६ ४ ६१४४ ६५४४  
 स्त्रीकृत ६५७५  
 स्त्रीकेशसवभभ २२ ६  
 स्त्रीचिह्न २ १ ३ २६  
 स्त्रीवातु ४६१६  
 स्त्रीधन ६५७६  
 स्त्रीद्वय ५४६६  
 स्त्रीपण २६६६  
 स्त्रीपश्चाकटि २६५४  
 स्त्रीपुण्यगल २७  
 स्त्रीपुसाङ्गनपुंसक ३५६४  
 स्त्रीपुरुषसलाप ३४६३  
 स्त्रीपुष्प १५ ३ २४६३ ४५६ ४६२५ २६  
 स्त्रीप्ति ६५७६  
 स्त्रीप्रिय ६५७७  
 स्त्रीभूमि ४२  
 स्त्रीभूषणांतर ६६५५  
 स्त्रीमात्र ६५६५  
 स्त्रीमात्रक ५ ३  
 स्त्रीमेढ ६३२

स्त्रीयोनि ४५१६  
 स्त्रीस्तन ३१५  
 स्त्रीरत्न ५ ६३४२  
 स्त्रीवास ६५७  
 स्त्रीविशय ३३ ३६६७ ६७४६  
 स्त्रीव्यञ्जनकृता ६१४  
 स्त्रीसग्रह ६२५१  
 स्त्रीसत्कारकमन ३३६५  
 स्त्रीस्वभाव ६५७६  
 स्त्रीगिकारञ्जु ३ १६ ५ ५  
 स्त्रीष्ठिल २ ६५  
 स्त्रीपति ६५ ६  
 स्त्रीपुट १६३६  
 स्त्रील ३५६ ६२५ २६ ३  
 स्त्रीलजा ६५  
 स्त्रीला ६५ १  
 स्त्रीली ६५ १  
 स्त्रीललहा ६५ २  
 स्त्रीलोद्भव ६५  
 स्त्रीवि ६५ २ ३  
 स्त्रीविर २२४ ५५ ५  
 स्त्रीषाणु ६५ ४  
 स्त्रीतव्य ६५ ६ ६६ ४  
 स्त्रीतु ६५६१  
 स्त्रीतन ६ १ २७ २६ १३ १७६१ २५  
 ४ २ ६२ ३१३२ ३२५६ ३३६  
 ३६५२ ५४ ४६ ६ ५७ १ ६५ ६६१  
 स्त्रीतनक ६५  
 स्त्रीतनकृत ४६  
 स्त्रीतनभात्र ५५७ ४ २३ ३२  
 स्त्रीतनवत ३१३५  
 स्त्रीतनहीन ४५७  
 स्त्रीतनात्पर ४५  
 स्त्रीतनीय ६५ ६  
 स्त्रीतने ६५ ६



स्नहपूर ६६ ६  
 स्नहपूरण ६६ ६  
 स्नहयवत ६६ ६  
 स्नहवत ६६ ६ १  
 स्नहवस्ति १२५  
 स्नहशाय  
 स्नहिन् ६६१  
 स्नहु ६६११  
 स्पव ३१६  
 स्पवन ६६११  
 स्पधन ४४ ५ ६२३६  
 स्पधी २ २६ ५ ३  
 स्पधीपिब ६५३  
 स्पश २३ ४२ ५ ६६१२  
 स्पशन २१६ ६६१२ १३  
 स्पष्ट ५ ४२  
 स्पश २ ५ २१ ६६१  
 स्पशातर १२ १ ६६१  
 स्पृक्क ३६२६  
 स्पृक्का १५ २६६ ३३५६ २१  
 २३ ४ २ २ ५ २२ ६३१३  
 स्पष्टमधुनवया २ ६  
 स्पष्टि ६६१३  
 स्पृहा ४ १ ५१६  
 स्पृहायाम ६६१५  
 स्फटिक ६ ३३४  
 स्फटिकवर्णशिव ३४२५  
 स्फान ३ ६४  
 स्फार ६६१५  
 स्फारविपुल २  
 स्फिच ६६३  
 स्फिगु ६६१६  
 स्फीत ६६१  
 स्फु २ ४३ ३६ ६ ६६१७  
 स्फुटन ५५१ ६६१

स्फुति ३ ३  
 स्फोर्वा ६६१  
 स्फोता यवगी ३२  
 स्मयरहित १  
 स्म १ ६ १२ ३ १३५ १ २१  
 १ ३६ २ ६ ३ १३ ६  
 ३ ५१ २१ ५ ६ २१६  
 ६६ ६  
 स्मरण २२१ ३११ २६ २ ४५  
 ६ २  
 स्मरठवा ६६१६  
 स्मरठवजा ६६१६  
 स्मरपती ७  
 स्मरसख ६६२  
 स्मरसम्बन्धिन ६६  
 स्मराङ्गक १२ ६  
 स्मरालस्य १  
 स्मरोत्तव १२  
 स्मार ६६२  
 स्मारकमन् ६६२१  
 स्मारिणी ६६२१  
 स्मित ६६२१  
 स्मितवत् ६६२१  
 स्मृत ६४७  
 स्मृति २५१ १ ६१ ६५ ६ ६१  
 ६६२२  
 स्य ६६२३  
 स्यम्ब २२३६  
 स्यवन ४६४३ ६६२३  
 स्यम्बनकधर ४५७३  
 स्यवनी ६६२४  
 स्यप्र ३१६  
 स्यमिक ६६२५  
 स्यमीक ६६२५  
 स्यमीका ६६२५

स्याल ५१५ ६६२६  
 स्थालक ६६२  
 स्थालिका ६६२  
 स्थाली ६६२६  
 स्थत ३ ५ ३ ३६ ६११६ ६६२  
 स्थूता ६६२  
 स्थूति ३ ६ ५ ३ ६ ६ ६११६ १  
 स्थतिशालाका ६ ६२  
 स्थतिसूत्र ३३५४  
 स्थम ६६२  
 स्थोन ६६२६  
 स्थोनाक ६ ५  
 स्थोनाकपादप ३३ ५ ७  
 स्त्रज् ३ १ ४६२६ ६६६६  
 स्त्र या ६६३  
 स्त्र वन ६६३१  
 स्त्रव २६११  
 स्त्रवण ४ २१ ६६२३ ३२  
 स्त्रवणकतु ६६३३  
 स्त्रवत् ६६३२  
 स्त्रवती ६६३२  
 स्त्रष्ट ६३४६ ६६१३ ३३  
 स्त्रष्टव ४२  
 स्त्रस्तर ६२३१  
 स्त्रावक ६६३२ ३३  
 स्त्रावणाकतु ६६३३  
 स्त्रावित १६६६  
 स्त्रुगाधिक ३२५  
 स्त्रुगमेव २ ४४  
 स्त्रुगविशेष २३१५  
 स्त्रुमुख ३४६२  
 स्त्रु ४६१४ ६६३४ ६ १  
 स्त्रुत ६६३५  
 स्त्रुति ६६३२  
 स्त्रव ४६५ ६६३ ३५

स्त्रवा ६६३६  
 स्त्रोतस ६६३६  
 स्त्रोतस्य ६६३  
 स्त्रोतस्त्व ६६३  
 स्त्रोतास्त्री ६६३  
 स्त्रोतो-जन ५६५ ६५३६  
 स्त्रोतोयोगिन ६६३  
 स्व ६६३  
 स्वकपितवुत्त ३  
 स्वक्ष ६६३६  
 स्वक्षा ६६३६  
 स्वक्षी ६६  
 स्वगह ६६ १  
 स्व ३ २३  
 स्वच्छव ३ ३१  
 स्वच्छव १२६ ६ ६६६  
 स्वज ६६४१  
 स्वजन ३ २६  
 स्वजात ५१३  
 स्वतत्र २१५ १२ ५ ६६६  
 स्वतत्रक १६३२  
 स्वतोबारिनिगम २२५२  
 स्ववत्ताशाविहत्तु २६३  
 स्ववन ६६ ३  
 स्ववमान ४ ३  
 स्वधिति ६६ ३  
 स्वन ५२६ ६६  
 स्वपक्षजभय ६  
 स्वपरचक्रजभय २६६१  
 स्वप्न २ ७६ ३ १ १ ५ ६ ६१  
 ६६४५  
 स्वबलसाधवस २५६  
 स्वभाव ५१ ६६ १२६३ २२६३ २ ६  
 २ २६५३ ३ १ ३६१ ४ २१  
 ६२ ६ ६ ६२२ ६३४५ ६ ६५१२

स्वभावसत्ता ६२६

स्वभ ६६४५

स्वयजाततिल २६ ३

स्वयजाततण १३

स्वयम ६६

स्वयवर ६६४६

स्वयवरणकमन ६६ ६

स्वयवरा ६६ ६

स्वयशीणपुष्पमलक १११ ३५२

स्वर २६ २ २ ६६

स्वर २ ३ २ ३ ३ २६ ५२७५  
५५२२ ६६४

स्वरमवयतर ६६ ३ ६ ११ १५

स्वरमव ६६५

स्वरस ६६४६

स्वराज् ६६४६ ५

स्वराज ६६ ६

स्वराद्यथ २६

स्वराष्ट्रव्यापार २३७

स्वरित ६६५

स्वरितस्वरयक्त ६६५१

स्वर ६६५१

स्वरूप १६२ २३६६ २ १

स्वरूपक ५५

स्वरूपाय २ ५

स्वर्ग ६४६ ६६ ६ १५६ १६३

२४१ २ २५३२ २६५ २७३२

२ ३२६ ३ ६२ ३५७७ ३ ५

४४१३ ४६५१ ५ ३३ ६५२५ ३

६६६६

स्वगङ्गा ५२२६

स्वगत ६६५१

स्वजिकाकार १६६३

स्वज २३ २ २७६६ ४२१ ६७ ४४ ३

४५६ ४६४२ ४ ६२६ ५६६३

६ ६६५२ ६ ६

स्वगकार ४३६ ५१ ६५ १

स्वगकृत ६

स्वगक्षीरी ३१ ३३ ६ ६

स्वगपत्र १२१५

स्वगपुच्छ ३५५

स्वगप्रतिमा ६ १

स्वगभूमिपुरातर ६६ ६

स्वगललाता ३ ६

स्वगस्थ ६ ३

स्वगविहृतवोर्धाछपत्रक ३१ १

स्वगविहृत २

स्वधुनी २ ६४

स्वप १

स्वपकाय १३६

स्वपार्थ ४

स्ववासिनी ६६५२

स्वसत्र ५

स्वसर ६६५३

स्वसु ६६ २२६ ४५६५

स्वसुशास्त्र ६६५३

स्वस्ति ६६५४

स्वस्तिक ६६५ ५६

स्वस्तिकाविपद्युतशाकभव ६ ६१

स्वस्तति ६६५४

स्वस्त्ययन ६६५६

स्वाङ्गमिद्व

स्वातय २१

स्वाति ३ १४

स्वाविष्ठावगीतवष्टसामन ६२३६

स्वाङ्ग ५२१५ ६६५

स्वाङ्गकण्टक ६६५

स्वाङ्गगन्धा ६६५६

स्वाङ्गज्योति २

स्वाङ्गजल ६६५७

स्वाङ्गस ६६६

स्वाकुरसा ६६५६

स्वाभ्या ५६ ३ ६६६

स्वात ६ ५

स्वाप ६२१ ६ ६६ ६६ ५

स्वापतयधारण २ ६६

स्वापव ५ ६

स्वापन ६२२

स्वामिन् ६५२ ३११५ ३६५५ ६६६१

स्वामिभाग ५५३

स्वाम्य ५

स्वाम्यर्थपिहारक २ १६

स्वास्थ्य ३

स्वाहा १ ५ ५६२२ ६६६२

स्वाहावेवी ३३ ५२२६

स्विति ६६६३

स्वित्ति ६६६२

स्वीकरण ३६४३

स्वीकार १६ २ ७ ६२५१

स्वीकृत २२

स्वीकृति ४ २ ६ ३६ २

स्वीय १

स्वच्छा १२ ५

स्वेह ५ १

स्वेवज ५६

स्ववज्जल २ २३ ६६६२

स्ववन ६६६२ ६३

स्वेदना ६६६३

स्वेदनी ६६६३

स्ववयत्यथ ६६६३

स्वेदाम्ब २६५६

स्वैर ६६६४

स्वैराचार २१ २

स्वैरिणी ३३६ ४२५७ ६६६

स्वरिन ६६६४

स्वैरिपुण ३३६४

५१ क

ह

हस ११ ३ १२३४ १६ २२ ६ २३२

२ १ ३ २ ३ १ २ ३ ४

३१४ ५ १ ६२ ५ ६४२ ६६६६

६ ५ ६

हसव ६६ २

हसका ता ५१

हसपक्षिन् २ ६

हसपनी २ ३५

हसपव ६६ ३

हसपवा ६६ ३

हसपवी ६६ ३ ५

हसपावी ६६ ४

हसमिव १२५६

हसमेव २ १४ २१५

हसमत्र १

हसमाला ६६

हसयोषित ५ ६

हसवत् ६६ ५

हसवती ६६ ५

हससारसकावि ३

हसाह्मि ६६ ६

हसाह्मि ६६७६

हसाविगणोद्विष्टपक्षिमव ३ १

हसी ३ ३

हसीपति ३ ३

ह ६६६५

हकार ६६ १

हवक ६६ ७

हज्जिका ६६

हट्ट २२२३ ४२६४

हट्टविलासिनी २ ५

हठ ६६

हठि ६६ ६

हत्त ५५६ १५२४ १६५२ २६ ३ २५  
३२ ६ ३ ६ ६६ ६

हत्तक ६६ १

हत्तपुत्र ३४३१

हत्तसत्त्व ६६ १

हत्ति ६३४

हत्तौजस ६६ १

हत्त ६६ २

हत्ता ५ २३

हत्थ ६६ २

हत्थ ४६२६ ५३२

हत्तन ५ १ ६२५३

हत्तनीय ५ २३

हत्तु १३६५ ४२६५ ६ ३ ६६ ३

हत्तुमञ्जनी ६

हत्तुमत १ ७१ ४२२ ४३६६

हत्तुष ६६ ५

हत्तुमा ४२१६ ५२ २

हत्त ६६ ५

हत्तकार ६६ ६

हत्तकृति ६६ ६

हत्त १६६७

हत्तुवा ५५२२

हत्तुवातर ६६६

हत्तुवाभव १

हत्त १ ५१ २३१४ २४३३ ३ ४५ ३६ ६

१ ३६ ५२६३ ५३३ ५६२

६६ ७

हत्तगघ ६६ ६

हत्तगघा ६६ ६

हत्तग्रीव ६६६ ६२

हत्तग्रीवा ६६६

हत्तघोणा ३७ ६

हत्तघ ६६६१

हत्तप्रिय ६६६१

हत्तप्रिया ६६६१

हत्तप्रोथ २ ३

हत्तवालधि ३ ६६

हत्तवाहन ६ ६२

हत्तशिरस ६६६२

हत्त ६६

हत्तातर २४५५

हत्तारि ६६६३

हत्त ६६

हत्त १६६ १७५१ २ ४३ ३ ५ ३५

५३१७ ५४ १ ५६२१ ६६६३

हत्तक ६६६

हत्तण ६६६

हत्ततिकमन् ६६६६

हत्तवष २५६४

हत्तगळर ६६६

हत्तगळरा ६६६

हत्तस ६६६६

हत्तसम्बधिन् ६७५४

हत्ताहत्त ६७

हत्त ५३ ४६५ १५७ २ ४३ ३५२६

४२२१ ४३५३ ४५६६ ५ ३ ५५१३

५६ ६२१ ६५ ५ ३६ ६६३३ ४६

६ १

हत्तिकमन् ६७१७

हत्तिकेश ६ ६

हत्तिसवन ६७ ७ २२ २५

हत्तिण १४६ ४२११ १३ २६ ५ ३३

४ ६७ ६

हत्तिणाख्यमुगातर ४७

हत्तिणाधि ५ १४

हत्तिणि ६७१२

हत्तिणाक्षी ६ १२

हत्तिणी ६७१

हत्तिन् ६७१३

हत्ति २५११ ६७१३ १४

हरितक ५ २ ६ १

हरितकी ६७१

हरितपीतवर्ण ६ २

हरितवर्ण ६१

हरितवर्णयुक्त ६ १६

हरितवर्णावित ६१ ६

हरितसस्य ६ १

हरिता ६ १

हरिताल २४३ २ ५५ २६ ६ ३३३२

७१ ३ ३ ६५३ ५ ६६ ५५२

६७१

हरितालक ३६६ १७५६ ६ ५६

हरितालक २४३

हरिताली ६ १

हरिताश्म ६ २

हरिविश ३ ५१

हरिदय २५११

हरिद्र ६ २२

हरिद्रव ६७२१

हरिद्रा ३ १२५३ १३४३ १६ ६

२३६३ २५१७ २६६६ ३३३२ ६७ ६

७ ३ ६ ४ ६ ४४६१ ४६२

३४ ५ १ ६२ ५१२६ ५३५१

५४ ३ ६ ३६ ६६७ ६ १५ २२

हरिद्रण २५११ ३२१७ ४६५६ ६

हरिद्रणयुक्त ६ ४

हरिद्रणसयुक्त ३२१

हरिनामन् ६७२२

हरिन्न ६७२३

हरिपूजक ६३ ६

हरिप्रिय ६ २४ २५

हरिप्रिया ६७२४

हरिभाज ६७१७

हरिमथ ६७२६

हरिमथज ६ २६

हरिमन्त्रसमूह ६ २

हरिरोमन ६ २

हरिलोचन ६ २

हरिचष ३ ५

हरिवलमा ६ २६

हरिवाहन ६ २६

हरिमाय ६ ३

हरिशी ६ ३

हरिसठ ६४२१

हरिसम्बन्ध ६ ५

हरिन्नज ५६६१

हरिहय ६ ३१

हरिहरकन ६७३२

हरिहरामक ६७३१ ३२

हरिहेति ६ ३२

हरीतकी २३ १२६५ २२३ २

३१२६ ३२३६ ३५३६ ३६६६ ३७६

५३ ५ २ ६३ ५ ५५

५६१ ५ ५ ६ ६६ ६१ ६ ६३

६

हरीतक्यय ६ १

हरेणु १६१३ २७५६ ३६२६ ४ २

६ ३३

हर्त ६ ३४ ५४

हम्य ६७३

हयक ६७३५

हय ५२ १६१ ५५१ २२ ६६६ १ १६

१२१ १६१२ २६४६ ३६६ ४१३५

६१६ ४६ ६६ ५ ६ १

हयक २ ६६

हयति ६७७६

हयध्वनि १३ १

हयनविन् ६६ ६

हययिन् ६ ३६



हस्तिप २६ २६११  
 हस्तिपक ५३  
 हस्तिपका प ३ ६  
 हस्तिपाशव ३ १  
 हस्तिपिप्पली १२५६ ५२ १ ६१  
 हस्तिपु छमलोपात्त ३५ ५  
 हस्तिबालधि ३ ६६  
 हस्तिमव २६२३ ३ १६  
 हस्तिमल ६ ५  
 हस्तिमस्तकभक्षण २ ५२  
 हस्तिमठ ६  
 हस्तिरव १ १  
 हस्तिवातिङ्गन ६६५ २५  
 हस्तिवाह ५  
 हस्तिशाला २ ५५  
 हस्तिशिक्षाविचक्षण १३६  
 हस्तिशिरोमध्यपाशव ३३  
 हस्तिभुति ६  
 हस्तिस्तमह १ १४  
 हस्तिस्तय १ १६  
 हस्तिहस्त ६१ ३ ६३२  
 हस्तिहस्तोद्भूतवानजल ६ १  
 हस्त्यङ्गि ३ ७  
 हस्त्यारोहाङ्गिकमन ५५ १  
 हाटक ६ ५१  
 हाटकपुत्री ११६५  
 हानि २३२६  
 हान ६ १२  
 हायन ६६६१ ६ ५२  
 हायनसप्तकघाग्न ४३ ५  
 हार २३६ ४१ ४३ २ ६२६  
 ६७५३  
 हारक ६६६३ ६ ५४  
 हारणा ६७५५  
 हारभव २ ५३ ३ ४ ४

हारम यगरस्त २३६  
 हारमध्यमणि २६२  
 हारययथ ६ ५५  
 हारलता ५५३  
 हारा ६७५३  
 हारित ६ ५६  
 हारिता ६ ५५  
 हारिग्रामवण ३३६५  
 हारी ११ ६७५३  
 हाल ६ ५६  
 हाला ६ ५  
 हालिक ५६ १  
 हाली ६७५  
 हावक ६ ६२  
 हास ५ २ ५ ४ ६ ३  
 हासमात्रक ६ ४३  
 हासशाल ६ ३७  
 हासिन ६ ४३  
 हास्तिनपुरी  
 हास्त्यवाक्यक २  
 हिसन ३५ ६५ १५२६ २४६ १६१  
 २ ३५ १ ५६ ३  
 ६ ५  
 हिंसा १ ५ ११ २ १६६ १७३१  
 २ ६६६ ३६६७ ३ ४५ ३  
 ५ ६ ५१२१ ५५३१ ५ ६३ ६५ ६  
 ६६ ६७५७ ५  
 हिंसाज्ञा २५ १  
 हिसित ३५ ५६ १३ ३ १६  
 २४६ ४ ७ ४ १  
 हिसितु ६ ५ ४७५७  
 हिसीर ६ ५  
 हिंसा ६४ १२५६ १५३६ २ २४  
 ३२११ ३३ ५ ४ ३५ ६६ २  
 हिंसा १६ २४५६ ६ ५६



हिक्का ६ ६  
 हिक्कान ६ ६  
 हिक्का १५२ ६७५६  
 हिङ्गु २२१२ ३३२१ ४३ ३ १ ६१५  
 १ ५६६  
 हिङ्गुनिर्यास ६ ६  
 हिङ्गुपत्री ६६३५  
 हिङ्गुप-याव्यभवज ३ ७४  
 हिङ्गरस ६७६  
 हिङ्गुल १ ६ २६३ ५६६ ६५६  
 ६७६१  
 हिजल २ ६१  
 हिजलाख्यद्रुम २६५२  
 हिडिम्ब ६ ६२  
 हिडिम्बमगिनी ६ ६२  
 हिडिम्बा ६७६२  
 हिण्डक २६१६  
 हित १६५६ ३१२ ६२६७ ६७६३  
 हिता ६ ६३  
 हिताशसा ६ ६  
 हिताल २४६६  
 हिम २ ६ ३३४२ ३६ ६७६४  
 हिमजा ६७६५  
 हिमवत्त २५६२  
 हिमवत्सम्बन्धिमाल ६७६१  
 हिमवद्भिन् ६७६१  
 हिमा ६७६  
 हिमाधलहेमकठम यपुर ३४१५  
 हिमानिलनिवारण ३ २१  
 हिमास्तर २४ ५  
 हिमाराति ६७६६  
 हिमारि ६७६६  
 हिमालयोपसका ४७४३  
 हिमोत्थ ६७६५  
 हिरण्य ६७६७ ७

हिरण्य ६ ६ ६  
 हिरण्यकशिप ६ ६  
 हिरण्यचित्रितकुय ६  
 हिरण्यबाहु ६ १  
 हिरण्यमानभव ३५ ५  
 हिरण्यवर्णा ६ १  
 हिरण्यवाह्याख्यनवभव ६१३  
 हिलमोची २४ ४  
 हीन ११४ ४१ ६ २  
 हीनवण २३१२  
 हीनाथ ४  
 हीर ६ २  
 हीरक ३४ १ ४६ ६ २  
 हुडक ६७ ३  
 हुडकहिक्का ५२ ३  
 हुतशव ३४  
 हुताश ५२ २ ३ ६३३२  
 हुताशन २६६५ ३२  
 हुतुक ६७७३  
 हुति ६७ ६१ ३५  
 हुच्छय ६ ३  
 हुज ६ ७७  
 हुणि ६ ७  
 हुत ४३३  
 हुत्प्रिय ६७७  
 हुव ६७७४  
 हुवय ३४५ ४१४ २११६ २६१ ४ २  
 ६५६ ६७ ५  
 हुवययत ६३  
 हुवयावरण ३४५  
 हुवित ६७  
 हुविव ६७७६  
 हुव ६७ ५  
 हुवगय ६७७  
 हुवा ६७७७

हृद्रजातर ६  
 हृलख ६  
 हृलखा ६ ६  
 हृषि ६ ६  
 हृषित ६  
 हृषीक ६६४  
 हृषीकेय ३६१  
 हृष्ट ३६६ १२५ ६ १  
 हृष्यति ६ ६  
 हेठ ६७ २  
 हेठा ६ २  
 हेति ६ ३  
 हेतु ६४ १२६ २६६ ३६ १ ६  
 ३ ६ ३ ६३ ५३ २ ६७ ३  
 हेतुकृत ३ ६  
 हेतुशास्त्र २४ ३  
 हेमन २ ३४१ १ ३ ११५  
 १२५४ १ ५६ १५ ४ १ १६२  
 १६३५ २१ ७ २५७७ २६२ २ ६  
 ३ ६ ३२२६ ३४१ ४६५ ७६  
 ६१ ६६५२ ६७५१ ६ ४  
 हेमकटापराह धवध १३६५  
 हेमकुण्ड २ ६६  
 हेमत ६३ ६ ४  
 हेमन्तरा २१२२  
 हेमपल ३ १  
 हेमपलाष्टक २  
 हेमपुत्री १३६६  
 हेमपुष्पी ६७ ६  
 हेममल ६१४६  
 हेमल ६७ ६  
 हेमाक्ष ७५२  
 हेमाविषय ३२६७

हेरण्यमयज १ ६  
 हेरम्ब ५ ३३ ६ ७  
 हेरक ६  
 हेला १३ ६ ७२ ६  
 हेलि ६ ६  
 हैमवत २१३ ४ ५२ ६ ६१  
 हैमवती ६७६  
 होत ६११ ६२३१ ६ ६२  
 होत्र ६७६२  
 होत्रा ६ ६२  
 होत्रव ६ ६३  
 होम २ २ ६ ४ १ ६३  
 होमधन ३६  
 होममब २२३४  
 होमाभिस् २३३१  
 होरा ६ ६४  
 ह्रव ३४६५ ५१६५ ५२१२ ६ ६  
 ह्रस्व १ ६ २५ २ १ ५३२२  
 ६ ६५  
 ह्रस्वखञ्ज ३ ३२  
 ह्रस्वनालिकेर १ ६  
 ह्रस्वासिपुत्रिका ३४३२  
 ह्राविनी ६ ६५  
 ह्रीक ६ ६६  
 ह्रीक ६ ६६  
 ह्रीवर १ ६ ३ ३ ३६५ १ ६३  
 १५६६७ २१ ५ ६४५ २३२  
 ३३२६ ३ ६६ ५३५३ ५५ ५ ६३  
 ६५६१  
 ह्रीवरक २ ५३५  
 ह्रीर ६ ६६  
 ह्रीक ६ ६६

## शुद्धि पत्रम्

पृष्ठसंख्या	श्लोकसं	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	१	ताया	तापा
१	२	दिप	दि प
१	२	योम	यो म
३	९	अकूपाराङ्गि	(अकपारा आङ्ग)
३	१	दि स	दिस
३	१३	शताङ्गल	शताङ्गल
५	४	पुरस्तादुरि पलमानयु	पुरस्तादुपरिपलमानषु
६	४२	दिधिषू लुढा	दिधिषलुढा
६	३	ना व	ना व
	६१	वच्चाङ्ग	वच्चाङ्ग
	६२	बहुस्पतौ	बहुस्पतौ
	६	पुस्यङ्गल	पस्यङ्गल
८	१	त्रिपुर	त्रिपुरा
८	९	यष्टा	यष्ट
९	८६	क्षऽप्याणिवदेवना	क्षऽप्याणिवदेव ना
१	९९	इव ऋया	इव वा
१	१ १	मति वष	मति वष
१	१ ६	भद	वेद
१	१	अद शा व	अद शब्द
११	१ ८	माथ स	माथस
११	१ ९	दि वै	दिद
११	१ ९	स्यात्त्रि व	स्यात् त्रि व
११	११	म्यक्ष	म्य क्ष
११	१११	त्रि वा	त्रि वा
११	११५	रेप्य केपि	रेऽप्य केऽपि
१२	१२२	णप्या लपि	णऽप्या लऽपि
१२	१२३	प्रगल्भप्य	प्रग भेऽप्य
१२	१२४	येपि	यऽपि
१२	१२९	नाशि	ना शि

पृष्ठसंख्या	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१२९	सा य गधव म	गा गगधव
१२	१३१	भाव	ग वृ
१२	१३	तेनर	तन र
१३	१३९	क्षा वि	क्षावि
१३	१४	मश	मऽण
१४	१५३	राम्भ	रम्भ
१४	१६	पुसव	पुरव
१५	१ २	वद्द्वी	वे द्वी
१५	१ ४	अतरस्था	अतस्था
१५	१ ५	दो वि	दोवि
१५	१ ६	णोप	णनोप
१५	१	पि चा	पि च चा
१५	१	दी भु	दीभु
१६	१८३	अभ्रस्त्यन	अभ्रस्त्यन
१६	१८	वदेन्नाथ पुभू	वदेहनाथ पु भू
१६	१८४	भवेद्व	भवेद् द्व
१६	१८६	दाऽज्ञा	दना
१६	१८९	ति स्व	तिस्व
१	१९५	ऋचि	ऋचि स्मृतम्
१८	२ ५	नना	न ना
१९	२२२	त्रित्व	त्रि च
१९	२२२	स्त्रियामषा	स्त्रिया देव्या
१९	२२	भवत्क्लीब	भवेत् क्लीब
१९	२३१	अब्धिम	अभि ध म
१९	२३१	वब्धिव	त्वब्धि व
२२	२६५	भि व	भिषव
२२	२६	त्रिव	त्रि च
२३	२ ३	अभीसु	अभीष
२३	२७	घातो द्वित्र	घातोद्वित्र
२३	२७	स्वीका	स्वीका
२३	२७८	भ प	भ पे
२३	२७९	मभय	मभय
२३	२८	गमने	गगने

पृष्ठसंख्य	श्लो०	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२८१	भिघाते	मिघातौ
२४	२८९	मागवी प । गढच्या	मागधीपध्याग या
२	२८९	मिक्ष	मिक्ष
२	२९५	भ्रष्टमहाभ्राष्ट	भ्राष्ट्रमहाभ्राष्ट्र
२५	२९९	मध्यमिकाना	माध्यमिकाना
२५	३ २	वतसेना	वेतसे ना
२५	टिप्पणी	द म द	दम द
२५		क्षु धा	क्षु घ
२५		छात लग्न	छवातलग्न
२१		फाण्टवाढानिम	फाण्टवाढानि म
२५		स्तम	स्तम स
२१		शश	भुशष
२६	३१३	नम	नमे
२६	३१६	ङ्ग	ङगल
२	३३३	चि तदिना	चितरि ना
२१	३४२	त्रिग्यग्रे	त्रिष्वग्न
२८	३४६	वतव	वती वे

---